Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

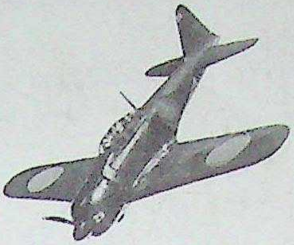

युद्ध और शान्ति

गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167972

श्री गुरुदत्त के कुछ चुने हुए उपन्यास

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, (महाभारत पर) परित्राणाय साधूनाम्।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, भगवान भरोसे, घर की बात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध और शान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध और शान्ति

Central Library
167972
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

081
167972

हिन्दी साहित्य सदन
www.hindisahityasadan.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© ईशान दत्त

R
009.9143
GUR-Y

मूल्य : 400/-
प्रकाशक : बी एस एस एजन्सीज़
वितरक : हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी. डी. चैम्बर्स, 10/54
देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग, नई दिल्ली- 05
वैबसाईट : www.hindisahityasadan.com
ई–मेल : hindisahityasadan@gmail.com
दूरभाष : 23553624, 23551344, 9213527666
संस्करण : 2016
पुस्तक : युद्ध और शान्ति
लेखक : गुरुदत्त
ISBN : 978-93-85743-05-4
मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, जगतपुरी एक्स०, दिल्ली

YUDDH AUR SHANTI
By GURU DUTT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

भारतीय समाज-शास्त्र में समाज चार वर्णों में विभक्त किया गया है। यह विभाजन ईश्वरीय है।

चातुर्वर्ण्या मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः।

परमात्मा ने जब मानव की सृष्टि की तो उसको गुण, कर्म तथा स्वभाव से चार प्रकार का बनाया। ये वर्ण भारतीय शब्द कोष में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र नाम से जाने जाते हैं।

शासन करना और देश की रक्षा करना क्षत्रियों का कार्य है। ब्राह्मण स्वभाववश क्षत्रिय का कार्य करने के अयोग्य होते हैं। ब्राह्मण का कार्य विद्या का विस्तार करना है। मानव समाज में ये दोनों वर्ण श्रेष्ठ माने गये हैं।

वर्तमान युग में ब्राह्मण और क्षत्रिय, मानव समाज के सेवक मात्र रह गये हैं। समाज का प्रतिनिधि राज्य है और राज्य स्वामी है क्षत्रिय वर्ग का भी और ब्राह्मण वर्ग का भी। शूद्र उस वर्ग का नाम है जो अपने स्वामी की आज्ञा पर कार्य करे और उस कार्य के भले-बुरे परिणाम का उत्तरदायी न हो। आज उत्तरदायी राज्य है। ब्राह्मण (विद्वान वर्ग) और क्षत्रिय (सैनिक वर्ग) राज्य की आज्ञा का पालन करते हुए भले-बुरे परिणाम के उत्तरदायी नहीं हैं। इसी कारण वे शूद्र वृत्ति के लोग बन गये हैं।

यह बात भारत-चीन के सीमावर्ती झगड़े से और भी स्पष्ट हो गई। तत्कालीन मंत्रिमण्डल, जिसमें से एक भी व्यक्ति कभी किसी सेना कार्य में नहीं रहा, 1962 की पराजय तथा 1952-1962 तक के पूर्ण पीछे हटने के कार्य का उत्तरदायी है क्योंकि राज्य-संचालन में क्षत्रियों (सेना) का तथा ब्राह्मणों (विद्वानों) का अधिकार नहीं था।

भारत का विधान ऐसा है कि इसमें 'अंधेर नगरी गबरगण्ड राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा' वाली बात है। एक विश्व-विद्यालय के बाइस-चांसलर अथवा उच्चकोटि के विद्वान को भी मतदान का अधिकार है। उसी प्रकार उसके घर में चौका-बासन करने वाली कहारन को भी मतदान का अधिकार है। देश में अनपढ़ों, मूर्खों और अनुभव विहीनों की संख्या बहुत अधिक है। वयस्क मतदान से राज्य इन्हीं लोगों का है। दूसरे शब्दों में ब्राह्मण वर्ग (पढ़े-लिखे विद्वान) और क्षत्रिय वर्ग के लोग इनके दास हैं।

यह कहा जाता है कि यही व्यवस्था अमेरिका, इंग्लैंड इत्यादि देशों में भी है। यदि वहाँ कार्य चल रहा है तो यहाँ क्यों नही चल सकता? परन्तु हम भूल जाते हैं कि प्रथम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और द्वितीय विश्वव्यापी युद्ध और उन युद्धों के परिणामस्वरूप संधियाँ एवं युद्धोपरान्त की निस्तेजता इसी कारण हुई थी कि इन देशों का राज्य जनमत से निर्मित संसदों के हाथ में था।

प्रथम विश्व युद्ध में सेनाओं ने जर्मनी को परास्त किया, परन्तु संधि के समय अमरीका तो भाग कर तटस्थ हो बैठ गया। वुडरो विलसन चाहता था कि अमरीका 'लीग ऑफ नेशंज' में बैठकर विश्व की राजनीति में सक्रिय भाग ले, परन्तु अमरीका की जनता ने उसको प्रधान नहीं चुना। इसी प्रकार वे वकील जो योरोपियन राज्यों के प्रतिनिधि बन वारसेल्ज़ की संधि करने बैठे तो उनमें न ब्राह्मणों की-सी उदारता थी, न क्षत्रियों का-सा तेज। वे बनियों (दुकानदारों) और शूद्रों (मजदूर वर्ग) के प्रतिनिधि वारसेल्ज जैसी अन्यायपूर्ण, अयुक्तिसंगत और अदूरदर्शितापूर्ण संधि पर हस्ताक्षर कर बैठे।

दूसरे विश्व युद्ध का एक कारण था वारसेल्ज की संधि। इसके साथ-साथ इंग्लैंड की पार्लियामेंट तथा फ्रांस की कौंसिल की मानसिक और व्यवहारिक दुर्बलता दूसरा मुख्य कारण था।

द्वितीय विश्व युद्ध में अमरीकन मिथ्या नीति के कारण ही स्टालिन मध्य और पूर्वी युरोप तथा चीन पर अपने पंख फैला सका था।

इस समय भी प्रायः संसदीय प्रजातंत्रात्मक देशों में शूद्र और बनिये स्वभाव वाले राज्य करते हैं। हमारा कहने का अभिप्राय है, वे लोग राज्य करते हैं जो शूद्र और बनिया मनस्थिति वालों को प्रसन्न करने की बातें कर सकते हैं। ब्राह्मण (विद्वान वर्ग) और क्षत्रिय (सैनिक वर्ग) तो इन शूद्र मनस्थिति वाले नेताओं के सेवक मात्र (वेतनधारी दास) हो गये अनुभव करते हैं। यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन विश्व की दशा बिगड़ती जाती है।

संसार में दुष्ट लोगों का अभाव नहीं हो सकता। आदि सृष्टि से लेकर कोई ऐसा काल नहीं आया, जब आसुरी प्रवृत्ति के लोग निर्मूल हो गये हों। इसका स्वाभाविक परिणाम यह निकलता है कि संसार में युद्ध निःशेष नहीं किये जा सकते। युद्ध इन आसुरी प्रवृत्ति के मनुष्यों की करणी का फल ही होते हैं। अतः दैवी स्वभाव के मानवों को, उन असुरों को नियंत्रण में रखने के हेतु सदा युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए।

युद्ध में विजय क्षत्रिय स्वभाव के लोगों में शौर्य, शारीरिक तथा मानसिक बल और ईश्वर-परायणता के कारण प्राप्त होती है।

इसी प्रकार जाति की शिक्षा तथा नीति का संचालन देश के विद्वानों के हाथ में होना चाहिए। उनके कार्य में स्वभाव से बनियों और शूद्र मनस्थितिवालों का हस्तक्षेप, यहाँ तक कि क्षत्रिय प्रवृति वालों का नियंत्रण भी, विनाशकारी सिद्ध होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का संविधान ऐसा होना चाहिए कि गुण, कर्म स्वभाव से ये मानव वर्ग अपने-अपने क्षेत्र में स्वतन्त्र कार्य करते हुए भी, देश के न्यायशास्त्रियों द्वारा समन्वय से कार्य करें। न्याय-परायण लोग सदा यह देखें कि कोई वर्ग किसी दूसरे वर्ग के कार्य-क्षेत्र में अनुचित हस्तक्षेप न कर सके।

संविधान में यह किस प्रकार हो, यह इस पुस्तक का विषय नहीं है। इस पुस्तक का विषय है कि युद्ध और शांति किस प्रकार परस्पर आश्रित हैं। युद्ध लड़े जाते हैं शान्ति स्थापना के लिए, परन्तु शान्ति काल में वैश्य तथा शूद्र प्रवृत्ति के लोग ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग पर प्रभुत्व जमा कर पुनः युद्ध के लिए क्षेत्र की तैयारी में लग जाते हैं। ये दोनों वर्ग युद्ध से भयभीत, आसुरी प्रवृत्ति के मनुष्यों को नियंत्रण में रखने में अशक्त होते हैं। ऐसे शान्ति काल में असुर फलते-फूलते हैं और श्रेष्ठ लोगों को कष्ट देना अपना अधिकार मानने लगते हैं।

सर्वत्र और सदा शान्ति, मानव समाज में श्रेष्ठ प्रवृत्ति के लोगों के निरंतर आधिपत्य से ही प्राप्त हो सकती है। श्रेष्ठता ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, वैश्य-वृत्ति और शूद्रों बुद्धि में संतुलन से प्रस्फुटित होती है। इस संतुलन के लिए शान्तिप्रिय लोगों को यत्नशील रहना चाहिए। इस संतुलन को रखने में न्याय शास्त्री ब्राह्मण (विद्वान) ही योग्य हैं, अतः वयस्क मतदान से इनका निर्माण अथवा निर्वाचन नहीं होना चाहिए।

यह है इस पुस्तक का विवेच्य विषय। यह उपन्यास है। इसमें पात्र काल्पनिक हैं। इस उपन्यास में कुछ ऐतिहासिक पुरुषों का भी उल्लेख है। उनके विषय में यह यत्न किया गया है कि उनके कार्य और वाक्यों को उनकी जीवन वृतांत तथा प्रसिद्ध प्रकाशित कार्यों में से लेकर ही लिखा जाये।

जो कुछ भी लिखा गया है, प्रस्तुत विषय की पुष्टि में ही लिखा गया है। अतः किसी के मान-अपमान से उपन्यास का सम्बन्ध नहीं है।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी पुस्तक में से

"हिन्दू-मुसलमान या किसी अन्य जाति के विचार से तो बात होनी ही नहीं चाहिए। जो भी नौकरी अथवा कोई पदवी प्राप्त करे, अपनी योग्यता से करे, हिन्दु अथवा मुसलमान होने के नाते नहीं।"

"परन्तु मुसलमानों में योग्यता बहुत कम है?"

"उनको अपने में योग्यता पैदा करनी चाहिए।"

"वे गरीब अपने बच्चों को पढ़ा नहीं सकते।"

"तो चन्दा इकट्ठा कर, उनके लिए स्कूल-कॉलेज खोलने चाहियें। उनको वजीफे दिलवाने चाहियें। परन्तु एक अयोग्य को योग्यों के सिर पर बैठाने से तो शत्रुता बढ़ेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

पंजाब के जिला होशियारपुर में बीस-तीस घरों के एक गाँव जमादार पुर के मालिक जमादार सूरतसिंह का लड़का लाहौर सरकारी कॉलेज में पढ़ता था। नाम था मथुरासिंह। इस वर्ष वह बी. ए. की परीक्षा देकर घर आया तो उसके काम-धन्धे के विषय में विचार होने लगा। बाप सेना में नौकरी कर चुका था। इस कारण उसको सेना का काम ही पसन्द था। उसने अपने लड़के से कहा, "मथुरे! बाप-दादाओं का काम छोड़ना धर्म नहीं। तुम्हारा परदादा महाराजा रणजीतसिंह की सेना में सूबेदार था। तुम्हारा बाबा, अंग्रेजों का राज्य आ जाने पर अंग्रेजी सेना में था। मैं भी तो अंग्रेजी सेना में जमादार रहा हूँ। जमादारी से मुझको उन्नति नहीं मिल सकी। कारण यह है कि मैं अपने कैप्टन को एक बार 'वंदे मातरम्' कह बैठा था। उन दिनों वंदे मातरम् बंगाल के क्रान्तिकारियों का अभिवादन शब्द था। इससे हमारी रेजिमेंट के कैप्टन संडरसन के सामने मेरी पेशी हो गई। वह मेरा कोर्ट-मार्शल करने वाला था। उस भले व्यक्ति ने मुझसे पूछा, 'तुमने हमको क्या सलाम किया था?'

"मैंने कहा, 'सर! यह सिविलियन' सलाम है।"

"उसका प्रश्न था, 'इसका मतलब क्या होता है?"

"मैंने बताया, 'मैं अपने 'मदर लैण्ड' को नमस्कार करता हूँ।"

"उसने पूछा, 'यह सलाम है क्या?"

"मैंने कहा, सलाम करने का यह हिन्दुस्तानी ढंग है साहब! जब हम परस्पर मिलते हैं तो राम-राम करते हैं। राम परमात्मा का नाम है। जब सेना में एक दूसरे से मिलें तो वंदे मातरम् कहना चाहिए। यह इस लिए कि हम अपने देश के लिए लड़ने तथा अपनी जान तक देने को तैयार रहते हैं, इसलिए अपने देश को नमस्कार करते हैं।"

"कैप्टन मेरा मुख देखने लगा। फिर बोला, 'मगर ये बंगाली बाबू भी तो वंदे मातरम् करते हैं।"

"मैंने कह दिया कि मैं उनको मना नहीं कर सकता। न ही उनके कामों का मैं जिम्मेवार हूँ। मैं तो सरकार का वफ़ादार नौकर हूँ और अपने पेशे की वफ़ादारी के लिए यह कहता हूँ।"

"मेरे कथन पर कैप्टन मुस्कराकर कहने लगा, 'यह कैसे हो सकता है? तुम सरकार के वफ़ादार हो और अपने मुल्क के भी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने पूछ लिया, 'तो क्या सरकार हिन्दुस्तान की रक्षा नहीं करेगी? हुजूर! अगर चीन, जो तिब्बत तक आ गया है, भारत पर आक्रमण करे तो क्या सरकार इसकी रक्षा में सेना नहीं भेजेगी? मुझको तो विश्वास है, भेजेगी।"

"कैप्टन संडरसन मेरी बात का उत्तर नहीं दे सका। कितनी ही देर तक वह मेरा मुख देखता रहा। फिर कहने लगा, 'जमादार सूरतसिंह! सरकार उन शब्दों में अभिवादन पसन्द नहीं करती, जिनमें इन्कलाब-पसन्द बंगाली अभिवादन करता है। इसलिए मैं हुक्म देता हूँ कि आगे से यह शब्द सेना में नहीं कहा जायेगा। अब तुम जा सकते हो।"

"मैं आ गया, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी फाइल में मेरे नाम के सामने काला निशान लगा दिया गया। मेरी तरक्की नहीं हुई।

"इसके पश्चात् जर्मनी के युद्ध में मैंने बहुत बहादुरी का काम दिखाया। मुझको बताया गया कि मेरा नाम 'विक्टोरिया क्रास' के लिए भेजा गया था, परन्तु मेरी 'सर्विस फाइल' देखकर वह मुझको नहीं दिया गया। हाँ, मुझको यह भूमि मिल गई, जिस पर यह गाँव मैंने बसाया है।"

"भापा!" मथुरासिंह का प्रश्न था, "इस पर भी तुम कहते हो कि मैं सेना में भरती हो जाऊँ।"

"हाँ! वह इसलिए कि यह हमारा 'जद्दी' काम है। हम राजपूत हैं। लड़ना हमारा काम है। अपने कुल के इस काम को छोड़कर हम कोई दूसरा काम भली-भांति नहीं कर सकते।

"एक बात और समझ लो। मेरे पिता ने मुझको यह बताया था और मैं तुमको बताता हूँ। पन्द्रह वर्ष तक सेना का काम करने के बाद ही शादी करनी चाहिए। पहले शादी करने से युद्ध-भूमि में लड़ते समय बाल-बच्चों का विचार आ जाता है तो हाथ चलता नहीं। न ही कदम आगे बढ़ता है। मेरे पिता ने चालीस वर्ष की आयु में विवाह किया था। हम दो भाई थे। दोनों भाई भरती हुए। मेरा भाई अफ्रीका में लाम पर गया था। वह वहाँ मारा गया। मैं उसके बाद सेना में भर्ती हुआ था। सन् 1918 में पेन्शन और यह जागीर लेकर घर आया और सैंतीस वर्ष की आयु में मैंने विवाह किया। तुम मेरे अकेले लड़के हो। इससे तुम हमारे कुल की परम्परा चलाओ।"

"पर भापा! यदि परीक्षा में अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ तो मैं अभी और पढ़ूंगा।"

"वह बात दूसरी है।"

"साथ ही यदि एम. ए. पास हुआ तो कमीशन मिलने की अधिक सम्भावना है।"

"यह तुम सर्विस रूल पढ़ लो। तुमको पता चल जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह की इच्छा सेना में भरती होने की नहीं थी। सेना में जमादार अथवा सूबेदार बनकर जान गंवानी उसको कुछ शोभा की बात प्रतीत नहीं हो रही थी। इस पर भी एक राजपूत का बेटा होकर सेना में भरती होने से न करने का साहस वह नहीं कर सका। मथुरासिंह कॉलिज फुटबॉल की फर्स्ट टीम का कैप्टन था। पूर्ण कॉलिज में उसकी, एक सिद्ध खिलाड़ी के रूप में ख्याति थी और छः फुट दो इंच लम्बा जवान, चुस्त सुदृढ़ शरीर और तीव्र परन्तु मोटी-मोटी आंखें उसकी विशेषता थी।

यह सन् 1939 का जुलाई मास था। मथुरा ने अपना निश्चय बताया कि परीक्षा घोषित होने तक वह कुछ नहीं करेगा और यदि माँ आपत्ति नहीं करेगी तो दो मास पहाड़ की सैर करने जायेगा।

"यह माँ से पूछ लो।" बाप ने कह दिया।

उसी सायंकाल लड़के ने माँ से पूछ लिया, "माँ! एक-दो दिन में धर्मशाला, कुल्लू और फिर चम्बा तथा शिमला तक घूमने चला जाऊँ?"

"बेटा! छः महीने के पश्चात् तुम घर आये हो। अब फिर चल दोगे?"

"और माँ, फिर लौट आऊंगा।"

"अच्छा एक बात करो। दस दिन घर में रहो। पीछे चले जाना।"

"घर रहने पर क्या होगा?"

"पुत्र का मुख देख मेरा दिल ठंडा होगा।"

"सच माँ?"

"हाँ, और मैं तुम्हारी सगाई करूंगी।"

"पर भापा तो कहते हैं कि मुझको सेना में भरती होना चाहिए। साथ ही वे कहते हैं कि सेना की नौकरी छोड़ने के बाद ही विवाह होगा।"

"तो इतने दिन विवाह नहीं होगा?"

"यह भापा से पूछ लो।"

पति-पत्नी में वार्तालाप हुआ और सूरतसिंह ने कुछ डाँट के भाव में कह दिया, "भगवती! तुम्हारे पुत्र-मोह के कारण मैं अपने परिवार की परम्परा को समाप्त नहीं कर सकता। अपने पितरों के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए हमको इस अग्नि-परीक्षा में से लांघना ही पड़ेगा। मथुरा सेना में भरती होगा। फिर पन्द्रह वर्ष की सेवा के पश्चात् आकर विवाह करेगा। जैसे मैंने किया है, वैसे ही वह करेगा।"

भगवती अपने पति की बात को काट नहीं सकी। परिवार की परम्परा के सम्मुख नत-मस्तक हो गई। आस-पास के दस-बीस गांवों में उसके पति की ख्याति थी। जमादार सूरतसिंह जिस भी समारोह में चला जाये, सब मान-प्रतिष्ठा से उसका स्वागत एवं अभिनन्दन करते थे। जिले का डिप्टी कमिश्नर अथवा कमिश्नर उधर से निकलते समय उससे मिलने आता था। सब जानते थे कि जमादार ने जर्मन के युद्ध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत वीरता दिखाई थी और उस अकेले ने एक समय, पूरी गोरा रेज़ीमेंट का त्राण किया था।

इस पर भी काल परिवर्तनशील था और सूरतसिंह के युद्ध से लौटने तथा सेना की नौकरी त्यागने के पश्चात् गांधीजी के दो भारी आन्दोलन चल चुके थे। उन आन्दोलनों की गूंज जमादार सूरतसिंह के गाँव तक भी पहुँच चुकी थी।

सूरतसिंह गांधीजी के आन्दोलनों की बात सुन-सुनकर हँसा करता था। उसने कभी भी गांधीजी के प्रति अश्रद्धा अथवा अपमानयुक्त बात नहीं कहीं थी। परन्तु वह मन-ही-मन विचार करता रहता था कि इस प्रकार की बातों से राज्य बदलेगा नहीं।

गाँव में एक देवीदयाल महेश्वरी नाम का लाला रहता था। उसने एक दुकान कर रखी थी तथा गाँव-भर के प्राणियों की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति करता था। जमादार से उसने दस एकड़ भूमि ले रखी थी और उस पर खाने-पीने के लिए अन्न-अनाज तथा शाक-भाजी उत्पन्न करता था। मास में एक दिन दुकान का सामान लेने होशियारपुर जाता था और फिर महीना-भर उसको उचित मूल्य पर बेचता था।

होशियारपुर से वह देश में चल रहे आन्दोलनों का समाचार लाया करता था और फिर जमादार की चौपाल पर बैठ, गाँव के समझदार लोगों को सुनाया करता था।

मथुरासिंह अभी छोटा ही था कि वह देवीदयाल से सत्याग्रह के समाचार सुनने लगा था। वह अपने पिता को सत्याग्रह के समाचारों पर मुस्कराते भी देखा करता था। उस समय वह न तो लाला के इस कथन का अर्थ समझ सकता था कि पाठशालाओं, विद्यालयों एवं न्यायालयों के बहिष्कार से अंग्रेजी सरकार भाग जायेगी और न ही वह अपने पिता के मुस्कराने का अर्थ समझ पाता था।

लाला की जोशीली बातें 'ये फिरंगी गये' सुन, मथुरासिंह विस्मय किया करता था। इस सब का तात्पर्य उसको नमक सत्याग्रह के समय समझ में आया।

उस समय मथुरासिंह पाँचवी श्रेणी में पढ़ रहा था। गाँव से तीन मील के अन्तर पर बरौड़ा गाँव में हाई स्कूल था और मथुरा वहाँ पढ़ने जाया करता था।

एक दिन वह पाठशाला से लौटा तो उसने अपनी माँ और पिता को बताया, ''भापा! आज बहुत मजा रहा।''

''क्या हुआ?'' जमादार सूरतसिंह ने पूछा।

मथुरा ने बताया, ''बरौड़ा के एक लाला सरदारीलाल ने खारी कुएँ के जल से नमक बनाया और पुलिस उसे पकड़ कर ले गई।''

''कैसे नमक बनाया है?'' भगवती ने पूछ लिया।

''आज स्कूल पहुँचा तो सब लड़के और मास्टर स्कूल बन्द कर स्कूल के बाहर खड़े थे। पूछने पर पता चला कि लाला कुएँ के पानी से नमक बनायेंगे और सब लड़के तथा मास्टर देखने जा रहे हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फिर क्या देखा?"

"माँ! गाँव के बाहर बड़े कुएँ का पानी खारा है। कोई उसका पानी पीता नहीं। हम सब वहाँ इकट्ठे हो गये। गाँव के भी बहुत लोग वहाँ थे। लाला आया, उसके गलें में फूलों की मालाएँ थीं और माथे पर तिलक था। उसके पीछे आठ लड़के थे। एक हमारे स्कूल की दसवीं क्लास में पढ़ने वाला भी था। ये सब कुएँ के समीप खड़े हो महात्मा गांधी की जय के नारे लगाते रहे। फिर एक अंगीठी लाई गई। उसमें कोयले जलाये गए। उस पर रखी कड़ाही में खारा जल डाला गया और तपाया गया।

"जल सूखने पर, चाकू के खुरच कर नमक एक कागज पर रखा गया और फिर महात्मा गांधी की जय के नारे लगाये गए।

"लाला सरदारीलाल नमक चखने लगा तो भीड़ को हटाती हुई पुलिस और थानेदार वहाँ आ गये और लाला को हथकड़ी लगाकर ले जाने लगे तो लोगों ने नारे लगाने आरम्भ कर दिये। इस पर पुलिस के सिपाही लाठियाँ लेकर लोगों को मारने दौड़े। हम सब भाग खड़े हुए। दो मोटे-मोटे लाला भाग नहीं सके और एक का पुलिस की लाठी से सिर फूटा और दूसरे के कन्धे पर बहुत सख्त चोट आई।

"लोग भाग गये और हमने स्कूल से छुट्टी कर दी। आज कबड्डी खेल कर घर लौट रहा हूँ।"

आज भी सूरतसिंह मुस्कराकर चुप कर रहा।

जब मथुरासिंह ने पिता को मुस्कराते हए देखा तो पूछ लिया, "क्यों भापा! क्या बात है?"

"ये लोग नमक क्यों बनाते हैं?"

"कहते थे हम स्वराज्य लेंगे।"

"इससे स्वराज्य नहीं मिलेगा।"

मथुरासिंह इस अल्पायु में न तो स्वराज्य के अर्थ समझा था और न ही नमक बनाने से स्वराज्य मिलने की बात को समझ सका था।

भगवती ने पूछ लिया, "इससे स्वराज्य कैसे मिलेगा?"

सूरतसिंह लाला देवीदयाल से पूरी बात सुन आया था। इससे उसने अपनी पत्नी के समक्ष व्याख्या कर दी। उसने कहा, "देवीदयाल भी आज यह तमाशा देखने बरौड़ा गया हुआ था। उसने बताया कि गांधीजी कहते हैं—अंग्रेज़ हिन्दुस्तान को लूट रहे हैं। नमक-कर भी लूटने का एक तरीका है। अतः हम नमक-कर नहीं देंगे। इससे सरकार का काम नहीं चलेगा और अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायेंगे। फिर गांधीजी यहाँ हिन्दुस्तानियों का राज्य कायम कर देंगे। यह स्वराज्य होगा।"

"तो यह हो जाएगा?"

"नहीं होगा। राज्य इस प्रकार नहीं बदला करते। मैंने देवीदयाल से पूछा था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कितना नमक बना था?' वह बोला, 'दो तोले-भर।'

"मेरा कहना था, 'दो तोले नमक पर एक कौढ़ी से भी कम टैक्स लगता है। इससे क्या सरकार का दिवाला पिट जायेगा?'

"इस पर वह पूछने लगा, 'दिवाला नहीं पिटना था तो सरकार ने उनको पकड़ा क्यों है?'

'मैंने कहा, 'बद-अमनी फैलाने से रोकने के लिए ही उसे पकड़ा है। नमक-कर के न मिलने से सरकार नहीं डरती। सरकार डरती है टैक्स देने से इंकार की प्रथा चलाने से। जना-खना उठे और टैक्स देने से ना करने लगे तो एक प्रकार की बद-अमनी फैल जायगी। इससे सरकार को हानि तो होगी, परन्तु सरकार से अधिक जनता की हानि होगी। बद-अमनी फैलने से भले लोगों को कष्ट होगा और दुष्टों की बन आयेगी।

"सरकार इस अवस्था के फैल जाने से देश को बचाना चाहती है।"

मथुरासिंह को बात समझ आ गई। तब से उसका विचार करने का दृष्टिकोण भिन्न हो गया।

2

अब सन् 1939 आ गया था और मथुरासिंह बी. ए. की परीक्षा दे आया था। उसकी आयु इस समय उन्नीस वर्ष की थी। वह समझ रहा था कि देश में क्या हो रहा है? कांग्रेस और गांधी जी यह कहते-फिरते थे कि उनके आन्दोलन से ही सन् 1936 का विधान मिला है, जिससे तीन-चौथाई स्वराज्य मिल चुका है और यह गांधी जी की नीति का ही फल है। एक सैनिक परिवार की परम्पराओं को जानते हुए वह समझता था कि यदि स्वराज्य मिल रहा है तो यह गांधीजी के चर्खे और खद्दर से नहीं हो सकता। इसमें कुछ अन्य कारण होगा। वह कारण अवश्य भय से सम्बन्ध रखता होगा।

अंग्रेजी पढ़े होने से वह एक शब्द सीख चुका था। वह शब्द था 'पब्लिक ओपिनियन'। इसी का पर्यायवाचक एक शब्द था—प्रजातन्त्र। इन शब्दों का खेल ही महात्मा गांधी खेल रहे थे और इस खेल में ही अंग्रेज़ पराजित हो रहे थे। अंग्रेज़ अपनी पार्लियामेन्ट को बन्द नहीं कर सके। वहाँ विरोधी पक्ष का मुख बन्द नहीं हो सकता था और इधर भारत में पैंतीस करोड़ जनता थी, जो इंग्लैण्ड की पूरी जनसंख्या से आठ-नौ गुणा अधिक थी।

वह मन में विचार करता था कि यह तो ठीक है, परन्तु संसार में ऐसे भी देश हैं जहाँ प्रजातन्त्र नहीं है और जिनकी जनसंख्या अपने अधीनस्थ देशों से अधिक है। रह-रहकर उसको जापान का चीन पर आक्रमण स्मरण आ रहा था। पार्लियामेंट तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन में भी थी, परन्तु जापान का शासक-दल सैनिक प्रवृति का था। साथ ही चीन के लोग अपने में सन्तुष्ट रहने के कारण सैनिक-उन्नति नहीं कर सके थे।

इस बार अध्ययन के उपरान्त उसके जीविकोपार्जन पर विचार विनिमय होने लगा। जमादार सूरतसिंह, जो लाला देवीदयाल से नगरों के समाचार सुनता रहता था, देश की परिस्थिति से परिचित था। वह अपने लड़के की सेना में भर्ती होने की अरुचि पर विस्मय करता था। इसी कारण उसने एक दिन अपने लड़के से पूछा था, "तुम सेना में भर्ती होने से डरते हो?"

"मैं मरने से नहीं डरता भापा! मैं अंग्रेजो की सेना में भरती होने में संकोच अनुभव करता हूँ। ये हम पर शासन करते हैं और हमको अपने से छोटा समझ, हम से घृणा करते हैं। इससे मेरा स्वाभिमान मुझको अंग्रेज की सेना में भरती होने की आज्ञा नहीं देता।"

"यह ठीक है, परन्तु सेना में भरती होने से ही तो देश की स्वतन्त्रता प्राप्त की जा सकेगी और फिर स्वतन्त्रता की रक्षा की जा सकेगी।"

"भापा! यह विचार प्राचीन हो गया है। इंग्लैण्ड में राज्य पार्लियामेन्ट का है। पार्लियामेन्ट में वकील एवं व्यापारी बैठकर निश्चय करते हैं कि हिन्दुस्तान पर राज्य किनका और कैसा हो। यही कारण है कि गांधीजी का सार्वजनिक आन्दोलन पार्लियामेन्ट को प्रेरणा दे रहा है कि भारत को स्वराज्य मिलना चाहिये। कहते हैं कि तीन-चौथाई स्वराज्य मिल भी चुका है और गांधीजी शेष एक-चौथाई के लिये रूठे हुए हैं।"

"तो तुम भी समझते हो कि गांधीजी के रूठने से अंग्रेज यहाँ से जा रहे हैं।"

"भापा! देश के सब समाचार-पत्र और नेतागण यही कह रहे हैं।"

"पर मैं तुमको कहता हूँ, यह इस प्रकार नहीं है जैसा ये समाचार पत्र और नेतागण कहते हैं। इनका दिमाग एक गलती कर रहा है। अंग्रेज इसलिये नहीं जा रहे कि वे देवीदयाल-जैसे बनियों के नारों से भयभीत है। अंग्रेज़ सेना के सिपाहियों से डरते हैं। वे जानते हैं कि सैनिकों में यदि देश-प्रेम की भावना जागी ओर स्वतन्त्रता की इच्छा पैदा हो गई तो फिर वे सैनिक चर्खा चलाने तक सन्तोष नहीं करेंगे। वे बन्दूक और तोप चलायेंगे।"

"और सेना में देश-प्रेम कैसे जागेगा?"

"यह सत्याग्रह, अहिंसा, शान्ति की भावना से नहीं; अपितु देश की भावना को साथ लिये हुए सेना में भर्ती होने से होगा। यह पढ़े-लिखे समझदार युवकों के सेना में भर्ती होने से होगा।"

"परन्तु गांधीजी के आन्दोलन से कुछ तो मिला है?"

"कुछ नहीं मिला। बल्कि मिलते-मिलते रुका है। जो कुछ मिलना था, वह विकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection; Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर ही मिल रहा है।''

जमादार की यह बात मथुरसिंह की समझ में नहीं आई। वह पिता का मुख देखता हुआ बैठा रहा। पिता बहुत पढ़ा-लिखा व्यक्ति नहीं था। केवल उर्दू भाषा और उसमें निकलने वाले समाचार-पत्र ही पढ़ता था। उसके पास मासिक-पत्रिका, 'सैनिक' आया करती थी। यह पत्रिका सरकार की ओर से, सेना तथा सेना से पेंशन-प्राप्त सैनिकों को भेजी जाती थी। इसके द्वारा ही उसके विचार बनते थे। साथ ही परमात्मा पर अगाध विश्वास और पूजा-पाठ में चित्त लगाने के कारण वह अपनी बुद्धि का प्रयोग करता रहता था। लाला देवीदयाल की बातें, जो लाला एक तोते की भांति होशियारपुर से रटकर आता था, जब वह सुनता था ओर उनको अपने सेना के अनुभव से परखता था, तो मूर्खतापूर्ण समझने लगता था।

सूरतसिंह ने पुत्र के मुख पर असन्तोष देखा तो पूछने लगा, ''विश्वास नहीं आया न?

''देखो! मैं बताता हूँ। कांग्रेस में प्रायः वकील लोग हैं। उनका सम्पर्क सेना से नहीं है। वे बातें भी ऐसी करते हैं, जो सैनिक लोग समझ नहीं सकते। जब बंगाली बम चलाते थे जो हम सेना के लोग समझते थे कि कोई शूरवीर जान हथेली पर रखकर बात करता है। परन्तु लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। एक गोखले आये और अंग्रेजी में डेढ़ घंटा व्याख्यान झाड़ गये। लाहौर और बाहर के वकील सुनते रहे और तालियाँ बजाते रहे। बस उन्होंने समझा हम आजाद हो गए।

''मैं लाहौर में ही था। हमारा सूबेदार एक सिख था। वह सिविल मिलिटरी गजट पढ़ा करता था। एक दिन वह अपनी बैरक के बाहर बैठा समाचार-पत्र पढ़ रहा था तो मैं वहाँ जा पहुँचा। उसने कहा, 'सूरतसिंह! सुना है शहर में एक बहुत बड़ा लीडर आया है?'

''मेरे पूछने पर उसने बताया, 'कोई गोखले-गोखले है। कहता है, हम सबको मिलकर सरकार से अर्जी करनी चाहिये और सरकार हमारी अर्जी मान जायेगी।'

'क्या अर्जी है हमारी?' मैंने पूछा।

''वह बोला, 'यही कि बड़े-बड़े ओहदों पर हिन्दुस्तानियों की तरक्की होनी चाहिए।'

'और किससे मिलकर अर्जी करें?'

'मुसलमानों से।'

'तो सरकार मान जायेगी क्या?'

'सरकार ने मान तो ली है। मगर एक बात वह कह रही हैं, मुसलमानों को मुसलमान होने से हिन्दुओं के बराबर नौकरियाँ मिलेंगी।'

''मैंने पूछा, 'चाहे मुसलमान कुछ भी पढ़ा-लिखा न हो?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसने हँसते हुए कहा, 'मुसलमान तो हिन्दुओं के बराबर पढ़ ही नहीं सकता। परन्तु नौकरी बराबर पायेगा।'

'तो हमारी सेना में भी यही होगा?'

'सेना में एक सीमा तक यह पहले ही है। मुसलमानों की रेजिमेन्ट पृथक् है। जाटों की पृथक्। राजपूतों और डोगरों की भी पृथक्-पृथक् हैं। बनियों और सूदों को तो सेना में लिया ही नहीं जाता। अब ऐसा सिविल नौकरियों में भी होगा।'

'यहाँ एक गनीमत है कि रेजिमेन्ट पृथक्-पृथक होने से एक कौम का आदमी दूसरे पर अफ़सर नहीं बन सकता। परन्तु सिविल में तो दफ्तर हिन्दू-मुसलमान, जाट, बनियों के लिए पृथक्-पृथक नहीं हो सकते। परिणाम यह होगा कि एक कौम का थर्ड रेट आदमी दूसरे कौम के बढ़िया और योग्य आदमियों पर शासन करेगा। इससे द्वेष, कलह और परस्पर शत्रुता बढ़ेगी।'

"बेटा! उस समय तो सूबेदार की बात मुझको समझ नहीं आई। परन्तु उसकी सच्चाई का अनुभव मैं अब कर रहा हूँ। पंजाब, में हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा मुख्य रूप से इस कारण ही है। मुसलमान अफ़सर जो योग्यता के कारण नहीं, वरन मुसलमान होने के कारण अफ़सर बने हैं, मुसलमानों की हिमायत करते हैं। हिन्दू इससे दुःखी होते हैं। झगड़े हो रहे हैं और इसका परिणाम अच्छा नहीं हो सकता।

"मथुरा! मैं तो यह कहता हूँ कि इन वकीलो के कारण ही झगड़े बढ़ रहे हैं। यदि गांधी वकील की जगह पर कोई सैनिक नेता होता तो वह कभी भी यह मेल-जोल की बात न करता। वह योग्यता की बात करता।"

"तो हिन्दू-मुसलमानों में मैत्री नहीं होनी चाहिए?"

"हिन्दू-मुसलमान या किसी अन्य जाति के विचार से तो बात होनी ही नहीं चाहिए। जो भी नौकरी अथवा कोई पदवी प्राप्त करे, अपनी योग्यता से करे, हिन्दु अथवा मुसलमान होने के नाते नहीं।"

"परन्तु मुसलमानों में योग्यता बहुत कम है?"

"उनको अपने में योग्यता पैदा करनी चाहिए।"

"वे गरीब अपने बच्चों को पढ़ा नहीं सकते।"

"तो गांधीजी को चन्दा इकट्ठा कर, उनके लिए स्कूल-कॉलेज खोलने चाहियें। उनको वजीफे दिलवाने चाहियें। परन्तु एक अयोग्य को योग्यों के सिर पर बैठाने से तो शत्रुता बढ़ेगी।"

"तो फिर स्वराज्य कैसे होगा?"

"पढ़े-लिखे योग्य युवकों को सेना में भर्ती कराने से।"

"परन्तु उनको सेना में सूबेदार और जमादार से अधिक पदवी मिल नहीं सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब पढ़े-लिखे युवक सेना में जाने लगेंगे तो सरकार को उन्हें 'कमीशन' देनी पड़ेगी।"

"यह कैसे?"

"मथुरा! तुम भर्ती हो जाओ और तुमको तरक्की करने से कोई रोक नहीं सकेगा।"

"परन्तु स्वराज्य तो इन वकीलों की करनी से ही होगा?"

"प्रथम तो इनके करने से न कुछ हुआ है न होगा। जो हुआ दिखाई भी देता है, वह राज्य का बिगड़ा हुआ रूप ही है। हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, सिख और जाट हैं। हिन्दी बोलने वाले तथा पंजाबी बोलने वाले हैं। मराठी, गुजराती, तेलुगू और बंगाली बोलने वाले हैं। ये सब झगड़े इन वकीलों के पैदा किये हैं।"

"परन्तु सैनिक लोग सब को क्या सुझाव देते हैं?"

"प्रथम तो सैनिकों के सामने अयोग्य होने पर अपने साथ रियायत के लिए कोई कहेगा नहीं। यदि कोई कहेगा तो भी वह अनाधिकार बात कहने से गोली से उड़ा दिया जायेगा। कोई भी, सही दिमाग व्यक्ति किसी अयोग्य को जात-पात अथवा मज़हब के नाते पदवी की बात नहीं करता।"

"यह बात अंग्रेज वकीलों की चलाई हुई है और हिन्दु वकीलों की मानी हुई है।"

"परन्तु मुसलमान तो यहाँ पहले भी मजहबी झगड़े करते थे।"

"हाँ, यह तो है, परन्तु हिन्दुओं की उनसे शत्रुता भी तो इसी कारण थी। वह शत्रुता अब भी है और इन वकीलों के कारण भविष्य में बढ़ेगी भी।"

3

इन सब बातों को सुनकर भी मथुरासिंह को सेना में भर्ती हो सकना न सम्भव प्रतीत होता था और न ही उचित। वह मन में विचार करता था कि जब उसका भापा सेना में भर्ती हुआ था, उस समय से अब बहुत काल व्यतीत हो गया है। उस समय भापा का अपमान कैप्टन संडरसन ने किया था और भापा ने यह अनुभव भी नहीं किया था, परन्तु अब वह जानता है कि 'वंदे मातरम्' पर आपत्ति सहन नहीं हो सकेगी। कम-से-कम वह इसको सहन नहीं कर सकेगा।

उसने सोचा वह अवश्य फर्स्ट डिवीजन में पास होगा। अतः वह अभी दो वर्ष तक एम. ए. में पढ़ेगा। तब उसको इतनी अच्छी नौकरी मिल सकेगी कि उसका पिता भी उसको सेना में भरती होने की बात नहीं कहेगा। वह अपने मन में एक धुंधला-सा चित्र अपने नेता बनकर, देश को ठीक दिशा देने का खींच रहा था।

वह जब भी गाँव में आता, गाँव के प्रायः सब लोगों से मिला करता था। उसका विशेष लगाव लाला देवीदयाल से था। देवीदयाल भी घर में ले जा, उसको खिलाया-पिलाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता था। इस बार भी वह जब आया तो लाला की दुकान पर जा पहुँचा। दुकान बन्द थी। दुकान के पीछे उसका मकान था। उसका अनुमान था कि लाला घर पर ही होगा। वह दुकान के पीछे जा आवाज देने लगा, "लालाजी! लालाजी!!"

भीतर से एक लड़की निकली। यह लालाजी की दूसरी पुत्री राधा थी। राधा की बड़ी बहिन का विवाह हो चुका था। राधा का एक छोटा भाई था, रमणीक। रमणीक स्कूल गया हुआ था। स्कूल गाँव से तीन मील दूर बरौड़ा में था।

राधा को देख, मथुरासिंह के हृदय में एक विचित्र प्रकार की गुदगुदी उठा करती थी। वह गुदगुदी आज सदा से अधिक ही थी। आज एक बात और हुई थी। राधा ने एक दृष्टि-भर उसकी ओर देखा और इसके बाद आँखे नीची कर ली थीं। उसके कपोलों पर सुर्खी दौड़ गई और सदा के विपरीत वह चुपचाप खड़ी रह गई। इस पर मथुरासिंह ने ही उससे पूछा, "राधा! लालाजी घर पर हैं?"

"नहीं।" बहुत धीमी आवाज में उसने उत्तर दिया और लौटने लगी तो राधा की माँ द्वार पर आ गई और बोली, "आओ मथुरे! आ जाओ। कब आये हो?"

"चाची!" मथुरासिंह ने द्वार के बाहर खड़े-खड़े ही कह दिया, "आज ही आया हूँ। चाचा से मिलने आया था।"

"तो आओ न। चाय-पानी पियो।"

"चाची, फिर आऊंगा।" आज मथुरासिंह के हृदय में भी संकोच हो आया था। पहले तो राधा और रमणीक उससे चिपट ही जाया करते थे। पिछले वर्ष से राधा ने पकड़कर भीतर ले जाना छोड़ दिया था। वह मौखिक ही निमन्त्रण दिया करती थी और आज तो उसने यह भी नहीं किया था। कदाचित् राधा के इस व्यवहार ने ही मथुरासिंह के हृदय में संकोच उत्पन्न कर दिया था। उसने पूछा, "चाची! चाचा कब तक आने वाले हैं?"

"आज शाम तक लौटने का विचार है। कल प्रातःकाल के गए हुए हैं।"

"तो सवेरे आऊंगा।" इतना कह मथुरासिंह लौट गया। वह मन में सोच रहा था—राधा अब सज्ञान हो गई है। यह सज्ञान शब्द उसके मन में आते ही, राधा के संकोच का कारण उसके मन में स्पष्ट हो गया। युवा लड़की है। एक युवक को घर में, जब उसका पिता अथवा भाई घर में नहीं, बुलाने में संकोच होना स्वाभाविक ही है। वह अपने मन के संकोच का कारण भी समझ रहा था। उसने सोचा ठीक ही किया है उसने, जो इस प्रकार उनके घर में नहीं गया। कोई ऐसा व्यक्ति देख लेता, जिसको विदित है कि लाला और उनका लड़का घर में नहीं हैं तो कुछ गलत अर्थ भी लगा सकता था। परन्तु क्या चाची मक्खनी इस बात को नहीं समझती? मथुरा ने सोचा। बेचारी सरलचित्त है और आज संसार में हो रही बातों को जानती नहीं। उसको चाची मक्खनी के व्यवहार का अर्थ समझ आ गया। वह घर लौटा तो उसका, पाठशाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दिनों का, एक मित्र केहरसिंह उसके गाँव आने का समाचार पा, उससे मिलने आया हुआ था। भापा और केहरसिंह में बातें चल रही थी। मथुरा ने उसे देख कहा, "ओह, केहर! सुनाओ भाई, राजी हो?"

"हाँ, मथुरा! बताओ पढ़ाई खत्म कर आये हो या नहीं?"

"अभी नहीं।"

"और पढ़ कर क्या करोगे? भापा तो कह रहे थे कि तुमको सेना में भर्ती होना चाहिए।"

"केहर! तुम स्वयं क्यों नहीं भर्ती होते?"

"मैं भर्ती होने होशियारपुर गया था, परन्तु मुझे अस्वीकार कर दिया है।"

"अस्वीकार! पर क्यों?"

"मेरा कद आधा इंच कम है।"

"ओह!" मथुरा मन में विचार करने लगा कि यह कोई कारण नहीं अस्वीकार किये जाने का। वह केहरसिंह से केवल तीन इंच ऊँचा था, पर केहर शारीरिक योग्यता के विचार से, सब प्रकार से ठीक था।

जमादार ने कह दिया, "मथुरा! तुमको इंकार नहीं किया जा सकता।"

"हाँ, परन्तु मैं अभी और अधिक पढ़ना चाहता हूँ।"

"अच्छी बात है।"

कुछ देर बैठकर केहरसिंह ने सुझाव दिया, "आओ मथुरा! तनिक घूम आयें। आज तो बादल हैं, और खेत बहुत सुहावने लग रहे हैं।"

मथुरासिंह उठकर उसके साथ चल पड़ा। छोटा-सा गाँव था, और उसमें से निकल बाहर खेतों में जाना एक-डेढ़ मिनट का काम था। गाँव के बाहर एक शिव-मन्दिर था। मन्दिर के साथ ही एक कुआँ था। पशुओं के पीने के लिए जल का कुण्ड बना था और कुएँ से जल निकालने के लिए रहट लगा था। मन्दिर के पुजारी के बैल उस रहट को चलाते थे और मन्दिर के साथ लगी भूमि की सिंचाई करते थे।

जब रहट चल रहा होता था, तो उसकी चीं-चीं की आवाज सुन गाँव की स्त्रियाँ जल भरने आती थीं और जब बैल इसे चला नहीं रहे होते थे, तो जो स्त्रियाँ आती थीं, स्वयं रहट को चला, गगरे भरकर ले जाती थीं।

केहर और मथुरा सिंह बचपन से ही उस कुएँ की जगत पर आ, जल भरने का दृश्य देखा करते थे। कुएँ की जगत पर बैठ, दूर-दूर तक दृष्टि जाने से खुले मैदान का दृश्य भी दिखाई देता था। वर्षा के दिनों में घास फूस उग आता था। इससे मैदान का दृश्य और भी अधिक सुहावना हो जाता था।

आज वे कुएँ की जगत पर बैठे तो पुजारी की लड़की सरस्वती जल भरने आई हुई थी। उसने अपना गगरा जल निकलने वाले स्थान पर रख दिया और इन दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवकों की ओर देखने लगी। वह सोच रही थी कि वे थोड़ा-सा रहट को चला दें तो गागर भर जायेगा।

मथुरासिंह ने उसको खड़े देखा तो रहट चलाने के लिए उठ खड़ा हुआ, परन्तु केहर ने उसकी बाँह पकड़ ली।

मथुरासिंह ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो केहर ने उंगली के संकेत से गाँव की ओर देखने को कह दिया।

मथुरासिंह ने देखा कि गगरा लिए राधा आ रही है। इससे उसने पूछ लिया, "तो?"

Central Library 167972 Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"वे दोनों मिलकर चला लेंगी।"

"तो मैं नहीं चला सकता क्या?"

"पर तुम क्यों चलाओगे?"

"मैं क्यों? इसलिए कि वह चाहती है कि मैं चलाऊँ।"

इतना कह मथुरा ने हाथ छुड़ाया और रहट के जूए को धकेलना आरम्भ कर दिया। रहट चीं-चीं कर चलने लगा। इस समय राधा भी आ गई और सरस्वती ने गगरा उठाया तो राधा ने रख दिया। मथुरासिंह ने दो चक्कर और लगाये और राधा का गगरा भी भर दिया।

राधा ने देखा था कि मथुरा रहट चला रहा है। वह उसके हृष्ट-पुष्ट तथा लम्बे-चौड़े शरीर को देख मुग्ध हो रही थी।

जब दोनों गगरे भर गये तो मथुरासिंह रहट छोड़ खड़ा हो, दोनों लड़कियों की ओर देखने लगा। वह देख रहा था कि राधा सरस्वती से अधिक सुन्दर और उससे दो इंच ऊँची है।

दोनों गगरे भर चुके थे। दोनों लड़कियाँ गगरों को उठाकर घर तक जाने का विचार कर रही थीं। केहरसिंह ने कह दिया, "सरस्वती! मैं छोड़ आऊँ?"

"चमार का हाथ लगने से जल पूजा लायक नहीं रह जायेगा।"

"धत् तेरे बामनी की! मैं चमार हूँ क्या?"

राधा दोनों का वाक्-युद्ध देख मुस्करा रही थी। मथुरा केहर के पास आ बैठा था। वह राधा का मुस्कराता हुआ मुख देख, अपने हृदय में गुदगुदी अनुभव कर रहा था।

सरस्वती ने कहा, "सूद और कौन होते हैं?"

"ओह! तो तेरी माँ ने बताया है कि मैं चमार हूँ?"

"सब गाँव वाले जानते हैं।"

"देखो! मैं चमार का बेटा कैसे प्यार कर सकता हूँ?"

केहरसिंह उठकर उसको पकड़ने दौड़ा। सरस्वती गागर वहीं छोड़, मन्दिर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर भागी। मथुरा ने केहर की बाँह पकड़ ली।

केहर को चमार कहा जाने पर क्रोध चढ़ आया था। राधा ने सरस्वती का गगरा उठाया और मन्दिर में ले गई। मथुरासिंह ने केहर को कहा, ''दोस्त! यह क्या करने लगे थे?''

''कुछ नहीं। केवल उसका मुख चूम लेता। ऐसा तो मैं बचपन में कई बार कर चुका हूँ।''

''परन्तु अब वह बच्ची नहीं है।''

''हाँ और मैं इसका अपहरण करूंगा।''

मथुरासिंह इस बात को सुन, रोमांचित हो उठा। वह कुछ कहने ही वाला था कि राधा गगरा छोड़ मन्दिर से बाहर आ गई। वह अपना गगरा उठाकर चल दी। जब तक वह सुनने से दूर नहीं चली गई, वे बैठे रहे। मथुरासिंह ने अभी भी केहर की बाँह पकड़ी हुई थी।

केहर ने अपनी सफ़ाई देते हुए कह दिया, ''मथुरे! मैं इस लड़की से प्रेम करने लगा हूँ। मेरा विवाह तो इससे हो नहीं सकता। इसलिए मैं इसे एक दिन उठाकर ले जाऊंगा।''

''तुम गाँव में रह नहीं सकोगे?''

''मैं कल ही दूसरे गाँव में चला जाऊंगा और फिर एक दिन आऊंगा और इस बामन की बेटी को उठाकर ले जाऊंगा और अपनी बीबी बना लूंगा।''

''तुम जेल जाने की बात कर रहे हो।''

''इससें दो-तीन साल से अधिक की जेल नहीं होगी। पीछे यह मेरी ही बनकर रहेगी। न बाप रखेगा, न ही इससे कोई विवाह करेगा।''

''परन्तु यह कुकर्म मैं इस गाँव में होता देख नहीं सकूंगा।''

''मैं तुम्हारे साथ उसको बाँटकर भोग कर सकता हूँ।''

''क्या मतलब?''

''मतलब यह कि मैं इसको ले जाऊंगा तो तुम भी वहाँ आकर इससे प्यार कर सकोगे।''

मथुरासिंह नौ मास के उपरान्त गाँव में आया था और उसको इस छोटे-से काल में ही दो परिवर्तन दृष्टिगोचर हो गए थे। एक तो राधा का संकोची एवं लज्जाकुल हो जाना और दूसरा केहरसिंह का उच्छृंखल हो जाना।

मथुरासिंह ने वहाँ कुएँ पर बैठना उचित नहीं समझा। वह विचार कर रहा था कि सरस्वती का पिता घर पर नहीं है, इसी कारण सरस्वती स्वयं जल भरने आई है। जब वह आयेगा और सरस्वती की बात सुनेगा तो हो-हल्ला करेगा। यह ठीक है कि पंडित जगदम्बाप्रसाद केहर से झगड़ा नहीं करेगा। वह शारीरिक शक्ति में उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बराबर नहीं है। परन्तु गाँव में उसकी मान-प्रतिष्ठा केहर से अधिक थी।

केहर का पिता करतारचन्द जाति का सूद और हर समय शराब पीकर बदमस्त पड़ा रहता था। किसी समय वह होशियारपुर जिला कचहरी में डिप्टी-कमिश्नर का पेशकार था। इससे वह पन्द्रह वर्ष नौकरी कर, पर्याप्त धन उपार्जित कर, गाँव में आकर रहने लगा था। उस समय उसका लड़का केहरचन्द पाँच वर्ष का था और वह तथा मथुरा इकट्ठे बरौड़ा के स्कूल में पढ़ने जाया करते थे। एक ही गाँव के, एक ही श्रेणी में पढ़ने वाले नित्य इकट्ठे तीन मील जाने और आने से गहरे मित्र हो गए थे। यह मित्रता रही पाँचवी श्रेणी तक। केहर पाँचवी श्रेणी में अनुर्तीण हुआ तो पढ़ाई छोड़, घर बैठ गया था। मथुरासिंह अध्ययन करता रहा। स्कूल के उपरान्त मथुरा लाहौर कालेज में प्रवेश पा गया। इन्ही दिनों केहर ने 'पौल' ले ली और केहरचन्द से केहरसिंह हो गया। मथुरा तो राजपूत था और इनके नामों के पीछे 'सिंह' का प्रयोग शताब्दियों से हो रहा था। अब केहर केशधारी हो गया और केहर सिंह होकर, अपने को मथुरासिंह के बराबर जाति का समझने लगा था।

केहर एक दिन होशियारपुर सेना में भर्ती होने भी गया था। परन्तु उसको स्वीकार नहीं किया गया। केहरसिंह का कथन था कि छोटे कद का होने के कारण उसको अस्वीकार किया गया। वास्तविक बात यह थी कि उसने लिखाया था कि सिख होने से पूर्व वह हिन्दू और सूद था। तब उसे कारण बताये बिना ही अस्वीकार कर दिया गया था।

केहरसिहं ने यही विख्यात कर दिया था कि आधा इंच ऊँचाई कम होने के कारण उसको भर्ती नहीं किया गया।

केहरसिंह ने बरौड़ा गाँव में एक सिख युवक से मिलकर एक मोटर ट्रक ले लिया था और उसमें होशियारपुर से बरौड़ा तक माल ढोता था। रुपया करतारचन्द का लगा था और काम केहर तथा सुरेन्द्रसिंह करते थे। सप्ताह में तीन दिन केहर ट्रक चलाता था और तीन दिन सुरेन्द्र। एक दिन छुट्टी रहती थी। पूर्ण व्यवसाय में तीन पत्तीदार थे। करतारचन्द पूंजी के कारण, केहरसिंह तथा सुरेन्द्रसिंह काम करने के नाते।

केहरसिंह की जेब में रुपये छनछनाने लगे तो गाँव के पुरोहित की लड़की सरस्वती पर वह डोरे डालने लगा।

सरस्वती से यह पहली झड़प नहीं थी। उससे नोंक-झोंक पहले भी होती रहती थी। इस पर भी उसको लपककर पकड़ने का यत्न पहली बार ही हुआ था। यदि मथुरासिंह न होता तो सम्भवतः केहरसिंह क्रोध एवं कामाभिभूत क्या कर बैठता, कहना कठिन था।

मथुरासिंह ने उठते हुए कहा, "केहर! तुम ठीक नहीं कर रहे। चलो घर लौट चलें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम जाओ। मैं इस छोकरी को मुझे चमार कहने का मज़ा चखाना चाहता हूँ।"

"तो इसके घर में घुस जाओगे?"

"कौन रोक सकता है मुझको?"

"उसका बाप घर पर होगा।"

"मैं जानता हूँ, नहीं है। वह प्रातःकाल का बरौड़ा गया हुआ है।"

"तो मैं रोकूंगा तुमको?"

"तुम क्यों रोकोगे?"

"गाँव की लड़की पर बलात्कार नहीं होने दूंगा।"

केहर ने विस्मय में मथुरासिंह की ओर देखा। मथुरासिंह खड़ा उसकी आँखों में देख रहा था।

केहर ने देखा कि वह सत्य ही उसका विरोध करने को तैयार खड़ा है। वह नरम पड़ गया।

"मथुरा भापा! बस इस छोकरी के पीछे दोस्ती बह गई।"

"नहीं केहर! मैं तुमसे दोस्ती ही निभा रहा हूँ। तुम जेल की ओर जा रहे हो। मैं तुमको बचा रहा हूँ।"

केहर ने इसका उत्तर नहीं दिया और उठकर गाँव की ओर चल पड़ा। मथुरासिंह उसके साथ था। इस पर भी दोनों चुप थे।

4

केहर अपने घर की ओर चला गया। मथुरासिंह को सन्देह हो रहा गया कि वह पुनः लौटकर पुरोहित के घर की ओर जा सकता है। यदि पुरोहित घर नहीं तो सरस्वती और उसकी माँ घर पर अकेली ही होंगी और वह उनको तंग कर सकता है। इस कारण वह गाँव के उस किनारे पर बैठ गया, जो मन्दिर की ओर पड़ता था। वह मन्दिर से दूर बैठा, दो औरतों की रक्षा करने का विचार कर रहा था।

सायं हो गई थी। पण्डित जगदम्बाप्रसाद सिर पर एक गठरी उठाये, बरौड़ा की ओर से आता दिखाई दिया। वह मन्दिर में चला गया तो मथुरा निश्चिंत हो अपने घर को लौट गया।

उसका पिता उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। लाला देवीदयाल वहाँ बैठा मथुरा के विषय में बातचीत कर रहा था। मथुरा आया तो सूरतसिंह ने पूछ लिया, "किधर गये थे बेटा?"

"भापा! गाँव में बहुत परिवर्तन हो रहे हैं।"

"क्या?"

"यह केहरसिंह बहुत बदमाश हो गया है। अब वह गाँव की लड़कियों को तंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगा है।''

''हाँ।'' लाला देवीदयाल ने उसकी बात का समर्थन कर दिया, ''जैसा बाप है, वैसा ही बेटा है।''

''नहीं चाचा! बाप तो किसी की बहू-बेटी पर बुरी दृष्टि नहीं रखता, परन्तु बेटा तो यह भी करने लगा है।''

''हाँ।'' देवीदयाल ने पुनः उसकी बात का समर्थन कर दिया, ''राधा कुछ बता रही थी। परन्तु मैंने ध्यान नहीं दिया। मैं तुमसे मिलने की शीघ्रता में था।''

सूरतसिंह ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, ''तो उसका साहस हो गया है कि राधा की ओर आँख उठाये।''

उत्तर मथुरा ने दिया, ''राधा नहीं भापा! वह पुजारी की लड़की सरस्वती से बलात्कार करने वाला था। मैंने उसको रोक दिया। उस समय तो वह घर लौट गया, परन्तु मुझको भय था कि मेरे टल जाने पर वह पुनः वहाँ जा, उसको तंग करेगा। इस कारण भगाई के घर वाली पुलिया पर बैठा पुरोहित के घर की रक्षा कर रहा था।''

''तो यह बात है?''

''हाँ। अब पुरोहितजी घर पहुँच गये हैं और मैं आ गया हूँ।''

सूरतसिंह गम्भीर हो गया। देवीदयाल ने कहा, ''मैं अभी पुरोहितजी के घर जाऊंगा और देखूंगा कि क्या किया जा सकता है। मैं इस गाँव में यह बात नहीं चलने दूंगा।''

सूरतसिंह कह रहा था, ''यह लड़का मोटर-ड्राइवरों की संगत में रहकर खराब हो गया है इसको गाँव से निकालना पड़ेगा।''

देवीदयाल होशियारपुर से कांग्रेस के कार्यालय से देश के समाचार लेकर आया था और वह सूरतसिंह को सुना रहा था। उसने बताया, ''भापा! यह सुना जा रहा है कि जर्मनी से पुनः युद्ध होने वाला है।''

''सच? परन्तु तुमने छः महीने पहले भी तो बताया था कि युद्ध होने वाला है और हुआ नहीं।''

''मेरी बात ठीक थी, परन्तु अंग्रेज-प्रधानमंत्री ने और फ्रांस ने अपने मित्र चेकोस्लोवाकिया को धोखा दिया, समय पर उसकी सहायता नहीं की। परिणाम में उस समय जर्मनी ने इस छोटी-सी कौम को आत्मसात कर लिया और लड़ाई नहीं हुई।

''परन्तु अब जर्मनी पोलैण्ड से कुछ भूमि चाहता है और पोलैण्ड देना नहीं चाहता।''

''क्यों चाहता है?'' सूरतसिंह ने पूछ लिया।

''इसलिए कि जर्मनी बलवान है।''

''यह तो कोई कारण नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर भापा! अंग्रेज़ अब बहुत दुर्बल हैं। वे किसी की भी सहायता नहीं कर सकते। महात्मा गांधी ने अंग्रेजों की कमर तोड़ दी है।"

"कैसे?"

"तीन सत्याग्रह-आन्दोलन चलाकर।"

सूरतसिंह हँस पड़ा। "भला यह नमक सत्याग्रह से कैसे इंग्लैण्ड दुर्बल हो गया है?" उसने हँसकर पूछ लिया।

"भापा! अंग्रेज़ जानता है कि पहले युद्ध की भांति इस बार हिन्दुस्तानी सिपाही न तो भरती होंगे, न लड़ेंगे। सुभाष बोस ने भी घोषणा कर दी है कि युद्ध आरम्भ होते ही भारत में सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जायेगा।

"तो क्या होगा?"

"होगा यह कि सरकार नेताओं पर अत्याचार करेगी और जनता भड़क उठेगी। सेना भी विद्रोह कर देगी। यह अंग्रेज़ जानते हैं और वे हिटलर से लड़ने का साहस नहीं कर सकते।"

सूरतसिंह राजनीति नहीं समझता था। इस पर भी सेना में रहने से वह सैनिक-मन की भावनाएँ समझता था। उसने कह दिया, "सेना तो उसका साथ देगी, जो देश के लिए लड़ने का साहस रखता है। गांधी सेना का कमाण्डर-इन-चीफ़ बन सकेगा क्या?"

"भापा! गांधीजी ने एक पत्र हिटलर को भी लिखा है कि शान्ति ही अनुकरणीय है। इसी से लोक का कल्याण हो सकेगा।"

"तो हिटलर मान गया है?"

"यह तो पता नहीं चला। हाँ, गांधीजी ने अपना कर्तव्य-पालन कर दिया है।"

"तो क्या यदि अब हिटलर ने लड़ाई की तो गांधी उसके विरुद्ध लड़ेगा।"

"वह क्यों लड़ेगा?"

"देखो देवीदयाल! अगर समझाने पर भी केहर पुरोहित की लड़की को तंग करे तो समझाने वाले का यह कर्तव्य नहीं हो जाता क्या, कि वह सरस्वती की रक्षा करे?"

लाला देवीदयाल भौंचक हो, मुख देखता रह गया। इस पर सूरतसिंह ने कह दिया, "अंग्रेज़ ने चेकोस्लोवाकिया को हिटलर की तानाशाही के सम्मुख बलि चढ़ा दिया है और यदि इस पर भी वह सन्तुष्ट नहीं हुआ तो उसको सबक सिखाना चाहिए न?"

"बिना शक्ति के सबक कैसे सिखाया जा सकता है?"

"तो शक्ति पैदा करनी चाहिए।"

"गांधी जी कहते हैं कि असली शक्ति मन और सच्चाई की है।"

"हाँ, यह तो गांधी ठीक कहता है मगर मन और सच्चाई की शक्ति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकटीकरण तलवार और बन्दूक से होता है, इसका दर्शन चरखे में नहीं होता। चरखा तो हिजड़े भी घर बैठ, कात सकते है।''

''तो हम लोग हिजड़े हैं?''

''अरे यह नहीं कि चर्खा कातने वाले नपुंसक है। मेरा तो कहना है कि नपुंसक भी चर्खा कात सकते हैं। इस कारण चर्खा शक्ति का चिह्न नहीं है।''

''देखो, जमादार! ये चर्खा कातने वाले राजा बनेंगे।''

''और सुनो, लाला! कहीं ऐसा हुआ तो देश में ऐसी दुर्व्यवस्था फैलेगी कि तबाही मच जायगी। हजारों मारे जायेंगे तथा लाखों भूख से तड़प-तड़प कर मर जायेंगे। चोर-ठग, जुआरी पनपेंगे और भले लोग दुःखी हो रोया करेंगे।''

लाला देवीदयाल हँस पड़ा। हँसते हुए कहने लगा, ''नेकी से नेकी पैदा होती है। जैसे आम के पेड़ पर आम ही लगते हैं। गांधी के राज में सब गांधी होंगे।''

सूरतसिंह सैनिक-प्रवृति रखने से गांधीवाद को एक थोथा सिद्धान्त मानता था। वह कुछ अभी बता ही रहा था कि पुरोहित वहाँ आ गया। उसके साथ उसकी पत्नी तारा और लड़की सरस्वती भी थीं। माँ-बेटी भीतर भगवती के पास चली गयीं और पुजारी जमादार के पास बैठक में आ गया। पुजारी ने कहा, ''ठाकुर! में कल यह गाँव छोड़ रहा हूँ। यहाँ मेरी लड़की का मान सुरक्षित नहीं।''

''पण्डित! केहर की बात माथुरा ने बताई है। मैं समझता हूँ कि सुबह तक सब ठीक हो जायगा।''

''मैं तो अपना घर छोड़ रात यहाँ तुम्हारे द्वारे सोने आ गया हूँ।''

''ठीक है। रात तुम यहीं रहो और सुबह पंचायत बुलाऊंगा इस पापी को दण्ड दूंगा। नाक से लकीरें निकलवाऊंगा इससे।''

लाला देवीदयाल ने कह दिया, ''पण्डित ही तो हो न? डर कर भाग आये। हिम्मत करो। जिसका मन निर्भय है, उसको संसार में कोई भी कष्ट नहीं दे सकता।''

''लाला!'' पण्डित ने कहा, ''दुष्ट को परास्त करने के लिए दुष्ट जितना बल पैदा करना पड़ता है। जब अकेले में बल न हो तो दूसरों से सहायता माँगी जा सकती है।''

''हाँ।'' देवीदयाल ने गम्भीर हो कहा, ''सहायता माँगी जा सकती है और सहायता मिलनी भी चाहिये। परन्तु नैतिक बल की सहायता ही काम आ सकती है। लड़ाई-झगड़ों से कुछ नहीं हो सकता।

''जमादार तो कहते हैं कि उसको गाँव से निकलवा देंगे? परन्तु मेरा कहना है कि गाँव से निकाल देने से क्या केहर सरस्वती अथवा किसी अन्य लड़की से जबरदस्ती नहीं करेगा?''

पुरोहित इन दो देहातियों से कुछ अधिक बुद्धि रखता था। उसने कहा, ''लाला! मैं जानता हूँ कि आप गांधीजी के चेले हैं और विचार परिवर्तन में विश्वास रखते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु गांधीजी नीति-शास्त्र नहीं पढ़े हुए। इससे वे मन की पूर्ण कहानी को नहीं जानते। नीति में सफलता के पांच ढंग बताये हैं—शम, दम, दान, दंड, भेद। इनमें शम, दम, दान एवं भेद शान्ति के उपाय हैं और दंड अशान्ति का उपाय है। गांधीजी तो शान्ति के भी सब उपायों को नहीं जानते। वे केवल शम के प्रयोग के विषय में ही कहते रहते हैं। इसलिए वे सफल नहीं हो रहे।''

''वाह, पंडित! सफल तो हो रहे हैं। पूर्ण देश उनके पीछे लग रहा है।''

''पूर्ण देश हिन्दू था। मुसलमान कुछ सहस्र इस देश में आ गए और सात सौ वर्ष तक यहाँ राज्य करते रहे। हिन्दू बहादुर थे, नेक थे, बुद्धिमान थे, परन्तु केवल शम ही जानते थे। नीति के अन्य उपायों से अनभिज्ञ थे। अतः कुछ नहीं कर सके। शेर शिवा ने दम, दान, दंड, भेद की नीति चलाई तो मुसलमानों को परास्त कर दिया।

''परन्तु लाला! मैं एक बात पूछता हूँ। क्या तुम्हारी पंचायत बातों से केहर को समझा सकेगी?''

''केहर भी इन्सान है। वह समझ जायेगा।''

''अच्छी बात है, समझाओ। समझ जाये तो ठीक है। इस पर भी जब तक उसका मन शुद्ध पवित्र नहीं होता, मुझको अपनी रक्षा का प्रबन्ध करना ही चाहिये। आज रात तो जमादार के घर रहकर रक्षा करूंगा। इसके उपरान्त अपनी रक्षा इस गाँव से भाग कर और कहीं अन्यत्र छिपकर करूंगा।''

''तो यहाँ के शिवालय का क्या होगा?''

''गाँव वाले किसी अन्य पुरोहित को यहाँ बैठा लेंगे।''

''अन्य से क्या मतलब?''

''संसार में एक मैं ही पुरोहित तो नहीं रह गया?''

''तो तुमको हम पर विश्वास नहीं है?''

''आप पर तो विश्वास है। परन्तु आपके उपायों को सफल होने में समय लगेगा और उससे पूर्व भी तो कोई खराबी हो सकती है।''

इतनी देर तक सूरतसिंह देवीदयाल की बातें सुनता रहा। जब उसने देखा कि पंडितजी की रक्षा आवश्यक है तो वह बोल उठा, ''पंडितजी! इस घर में रहते हुए तुम्हारे ऊपर कोई उंगली भी नहीं उठा सकता। तुम कुछ दिन यहाँ रहो इस काल में लालाजी को अपने ढंग से यत्न करने दो।''

इस पर पंडित गम्भीर भाव से विचार करने लगा। अब मथुरासिंह ने आश्वासन दे दिया। उसने कहा, ''पंडितजी, आप सरस्वती और सरस्वती की माँ को यहाँ रहने दो। आप स्वयं भी मंदिर में पूजा-पाठ कर यहाँ आकर रहना आरम्भ कर दें। जब आप समझें कि सब ठीक है और किसी प्रकार का भय नहीं रहा, तो आप मन्दिर वाले मकान में जा सकते हैं। हमारे मकान में अपना कुआँ है। इससे सरस्वती बहिन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल भरने बाहर नहीं जाना होगा।''

पंडित को जमादार और उसके लड़के की बातों से अधिक आश्वासन मिला।

लाला देवीदयाल गाँव की पंचायत का मुखिया था। वह पैसे वाला व्यक्ति था। इससे उसकी बात चलती थी उसको विश्वास था कि वह अपने धन-बल के आश्रय केहर को समझा सकेगा।

अतः उसने घर जा, अपने लड़के रमणीक को करतारचन्द के घर भेज, बाप-बेटा दोनों को बुला भेजा।

रमणीक उत्तर लाया कि करतारचन्द सो रहा है और केहर बरौड़ा चला गया है। कल उसकी काम पर जाने की बारी है।

विवश अगले दिन देवीदयाल ने पंचायत बुलाई और उसमें करतारचन्द के उपस्थित होने की आज्ञा भेज दी। करतारचन्द आया और पूछने लगा, ''किसलिए बुलाया है, लाला!''

''तुम्हारे लड़के के विरुद्ध मुकद्दमा है।''

''और तुम कौन हो मुकद्दमा सुनने वाले?''

''मैं यहाँ का मुखिया हूँ। यह पंचायत बैठी है।''

''मैं न तुमको मुखिया मानता हूँ, न इसको पंचायत।''

''तब तो पुलिस में रिपोर्ट लिखानी पड़ेगी।''

''जरूर लिखानी चाहिए और हाँ, याद रखना, झूठी रिपोर्ट करने वाले को दो वर्ष तक कैद का दंड भी मिलता है।''

''यह सब देख लेंगे।''

''तो ठीक है। मैं चलता हूँ। सुनलो लाला! मुझको लड़के ने पुरोहित की छोकरी की सब करतूत सुनाई है। वह केहर को पसन्द करती थी और उसके साथ भाग जाने की बात किया करती थी। कल जमादार के बेटे मथुरा को देख, उसका विचार बदल गया है। बस यही बात है, और कुछ भी नहीं।''

इतना कह करतारचन्द पंचायत-घर से निकल गया।

पंचायत के बाहर मथुरासिंह बैठा था। करतारचन्द को भय लग गया कि मथुरा ने उसका लांछन सुन लिया है। मथुरा उसकी ओर घूरकर देख रहा था। इससे करतार थर-थर कांपने लगा। फिर एकाएक भयभीत वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

मथुरासिंह इस भागने का अर्थ नहीं समझ सका। वह अभी उसके भागने के विषय में सोच ही रहा था कि पंचायत उठकर बाहर आ गयी। देवीदयाल ने बताया, ''करतार कह गया है कि हमारी सूचना गलत है। उसके लड़के ने कुछ खराबी नहीं की। लड़की स्वयं बदमाश है। वह केहर के साथ भाग जाने की योजना बना रही थी, परन्तु तुमको देख उसने अपना विचार बदल लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पंचायत का विचार है कि करतार की बात मे भी तथ्य प्रतीत होता है। जब तक लड़की से बातचीत न की जाये, तब तक पंचायत इस विषय में कुछ भी कर नहीं सकती।"

मथुरा देवीदयाल का यह वक्तव्य सुन, आश्चर्यचकित रह गया। फिर उसने आवेश में कहा, "चाचा! करतार झूठा है। पूर्ण बात मैंने अपनी आँखों से देखी और कानों से सुनी है। राधा भी तो सब सुन रही थी।"

"परन्तु मथुरा! तुम तो अभी कल ही आये हो। करतार कल से पहले की बात बता रहा है। राधा चौबीस घंटे सरस्वती के पास बैठी नहीं रहती। वह तो वही बात बता सकती है, जो कल हुई है। उससे तो मुझको करतार की बात में सच्चाई प्रतीत होती है।"

मथुरा इस प्रकार बात बदलती देख, चुपचाप घर लौट आया। घर पर पहुँच, वह पुरोहित को पंचायत की बात बताने के हेतु बैठक में जा पहुँचा। वहाँ उसका पिता हुक्का पी रहा था। मथुरासिंह ने पूछ लिया, "पुरोहित जी कहाँ है?"

"वे मन्दिर में पूजा-पाठ के लिए गए हैं। क्यों, इतनी जल्दी कैसे आ गये हो?"

"पंचायत समाप्त हो गई है।" मथुरासिंह ने देवीदयाल की बात बता दी। सूरतसिँह हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "यह गांधी का चेला कुछ कर नहीं सकेगा। सबसे बड़ी बात तो यही है कि इनमें विचारशक्ति नहीं रहती। पहले ये भले और बुरे को एक ही स्तर पर खड़ा कर देते हैं। फिर इनके लिए यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि सच्चा कौन है, और झूठा कौन।

"देखो, एक घटना मैं तुम्हें सुनाता हूँ। सन् 1922 की बात है। महात्मा गांधी सत्याग्रह अर्थात् टैक्स न देने का आन्दोलन आरम्भ करने वाले थे। यह आन्दोलन तंजोर के एक ताल्लुका में आरम्भ होने वाला था। इस समय यू. पी. के एक गाँव में बलवा हो गया। कुछ पुलिस वाले मारे गये और गांधीजी ने पूर्ण भारतवर्ष में अपना आन्दोलन बन्द कर दिया। तंजोर में सत्याग्रह बन्द हो गया।

"इसके विपरीत मालाबार के मुसलमानों ने एक बहुत बड़े इलाके में हजारों **हिन्दुओं को मारा-पीटा, उनकी बहू-बेटियों को बेइज्जत किया तो उन मुसलमानों पर गांधीजी को दया आ गयी और उनको सरकार से छुड़ाने के लिए यत्न करने लगे। यही महात्मा गांधी की अहिंसा है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जबरदस्त से रिआयत और भले पर दोषारोपण।** गोरखपुर के चौराचौरी गाँव में एक भीड़ ने पचीस के लगभग पुलिस वालों की हत्या कर दी तो महात्मागांधी ने पूर्ण देश को दण्डित कर दिया। यह कह दिया कि देश अहिंसात्मक आन्दोलन चलाने के योग्य नहीं और जब हजारों हिन्दू मारे गये, हजारों स्त्रियों का अपहरण हुआ तो कह दिया, ये मुसलमान बेचारे भूले-भटके हैं। उन पर दया होनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। देवीदयाल करतारचन्द से भयभीत हो गया है और इस भय को छिपाने का यत्न करने लगा है।'' इसका मथुरासिंह पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। वह विचार करता था कि उसके पिता के कथन में भी तो कुछ तत्त्व प्रतीत होता है।

मथुरासिंह रविवार के दिन देवीदयाल के घर गया। छुट्टी होने के कारण रमणीक पाठशाला नहीं गया था। आज राधा में भी वह संकोच नहीं था, जो प्रथम दिन उसने प्रकट किया था।

राधा ने खाना बनाया। पराठे थे, दही-भल्ले थे। अरबी और मटर का साग था। खीरे का रायता था। सब-कुछ बहुत यत्न से बनाया गया था। मथुरासिंह को बहुत स्वादिष्ट लगा। देवीदयाल, रमणीक और मथुरासिंह खा रहे थे, राधा खिला रही थी। मथुरासिंह ने पेट भर कर खाया और कह दिया, ''चाचा! सब-कुछ बहुत स्वादिष्ट बना है। पेट भर गया है, पर तृष्णा नहीं मिटी।''

देवीदयाल ने मुस्कराकर कहा, ''हमने दो थाल तुम्हारे माता-पिता के लिए तुम्हारे घर पर भी भेज दिये हैं।''

''यह तो चाचा, बहुत कृपा की है। मैं कभी यही विचार करता हूँ कि चाची मुझसे इतना स्नेह रखती है। मैं इसका क्या प्रतिकार दे सकूंगा?''

''हाँ! चाची तुमको अपना ही बेटा समझती है और पुत्रों के साथ जो कुछ किया जाता है वह किसी प्रकार के प्रतिकार के लिए नहीं किया जाता। परन्तु मथुरासिंह! आज का सब-कुछ तो राधा ने बनाया है। आज प्रातः ही उसने कह दिया था, 'माँ! तुमको बनाना तो आता नहीं, सब खराब कर देती हो। आज मैं खाना बनाऊंगी।' तुम्हारी चाची ने कहा, 'अच्छा देखें, मथुरे को पसन्द भी आता है अथवा नहीं?''

''बस, वह बनाने लगी और मक्खनी देखने लगी। तुमने पसन्द किया है तो ठीक है।''

राधा गिलासों में जल भर रही थी। मथुरा ने कह दिया, ''राधा बहित तो अब बहुत सुघड़ हो गयी है। चाचा! इसका कहीं ठिकाना करो न?''

राधा वहाँ से भाग खड़ी हुई। भागने में रमणीक के गिलास को ठोकर लग गयी ओर जल उसकी थाली में गिर गया।

रमणीक ने कह दिया, ''अरे, सब गोबर कर दिया है।''

परन्तु राधा वहाँ नहीं थी। वह तो रसोई-घर में जा छिपी थी।

देवीदयाल हँस रहा था। चाची के माथे पर त्योरी चढ़ गई थी और रमणीक अपनी थाली बदलने के लिए शोर मचाने लगा था। माँ ने कहा, ''तो तुम्हारा पेट अभी नहीं भरा?''

''माँ! पेट तो भर गया है। अब तो मैं चटनी चाट-चाटकर खाया- पिया हजम कर रहा था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो हल्ला क्यों मचाया है? चटनी आ जाती है।"

"पर राधा अब नहीं आयेगी।"

मक्खनी के मुख पर भी मुस्कराहट आ गयी। उसने कहा, "तो स्वयं जाकर ले आओ।"

रमणीक चटनी की प्लेट लेकर रसोई-घर में जा पहुँचा। राधा किवाड़ के पीछे खड़ी खाने वालों की ओर देख रही थी। रमणीक ने कह दिया, "दी-दी! थोड़ी चटनी दे दो।"

"ले लो। हल्ला किसलिए कर रहे हो?"

"मैं सब बात बता दूंगा।"

"क्या बता दोगे?"

"तुमको बताऊंगा तो कान मरोड़ दोगी। तुमको नहीं बताऊंगा।"

"अच्छा जाओ बता दो। पीटे जाओगे।"

"मथुरा भापा से न?"

"नहीं, बाबा से?"

"मैं तो केवल मथुरा भापा को ही बताऊंगा।"

"तो मैं तुमको पीटूंगी।"

"और मैं हल्ला कर दूंगा।"

"अच्छा बाबा, चटनी देती हूँ। बताओ, अब तो किसी को कुछ नहीं कहोगे।"

राधा और सरस्वती की बातें रमणीक ने सुन ली थीं। उस वार्तालाप में राधा ने कुछ बताया था और रमणीक उसको सुनकर राधा को चिढ़ाया करता था।

यों तो प्रत्येक युवक एवं युवती अपने मन में कल्पना के घोड़े दौड़ाया करते हैं और वे उनको कभी अपने सखा-सखियों से बताते भी हैं। इसी से हँसी-ठट्ठा का कारण बन जाता है।

रमणीक चटनी लेकर आया तो माँ ने पूछ लिया, "बहिन से क्या कह रहे थे?"

"माँ! कह रहा था कि इतनी बड़ी हो गयी है और चलने का शऊर नहीं।"

"ओह! और उसने क्या कहा है?" देवीदयाल ने पूछ लिया।

"कहती थी, जब उसकी भाभी आयेगी तो मुझको शऊर का पता लगेगा।"

"तो उसकी भाभी आयेगी?" देवीदयाल ने पूछ लिया।

"हाँ, बाबा! जरूर आयेगी।"

"और रमणीक भैया!" मथुरासिंह ने पूछ लिया, "कहाँ से लाओगे?"

"भैया! तुमको बता सकता हूँ, यदि माता-पिता से न कहने का वचन दो।"

"अच्छा, नहीं कहूंगा।"

"तो फिर तुमको एकान्त में बताऊंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय राधा सबके हाथ धुलाने के हेतु लोटे में जल एवं तौलिया लेकर आ गई।

सब उठकर हाथ धोने लगे। देवीदयाल मथुरासिंह को बैठक-घर में ले गया और वहाँ बैठा, पूछने लगा, "भैया! तुम्हारा विवाह कब होगा?"

मथुरा ने बताया, 'भापा कहते हैं कि मुझको सेना में भर्ती होना चाहिए और पन्द्रह वर्ष वहाँ नौकरी कर, रिटायर होने के उपरान्त विवाह करना चाहिए।"

"तब तक तो तुम बूढ़े हो जाओगे।"

"नहीं चाचा! वही तो पूरी जवानी का काल होता है। अभी तो मुझको अक्ल ही नहीं कि विवाह किसलिए किया जाता है।"

देवीदयाल हँस पड़ा। रमणीक और मक्खनी समीप बैठे थे। राधा बाहर बर्तन एकत्रित कर रही थी। मक्खनी ने कह दिया, "विवाह की बात तो बहू सिखा देगी। परन्तु तुम सेना में भर्ती होगे, मथुरा?"

"चाची! भापा कहते हैं, यह हमारा जद्दी काम है। अपने पितरों का ऋण उतारने के लिए घर के सब मर्दों को सेना में जाना चाहिए।"

"और कहीं वहाँ गोली लगने से मौत हो गई तो?"

"जीना-मरना अपने भाग्य से होता है। गोली, बन्दूक इत्यादि तो बहाना-मात्र है। मरने वाले चलते-चलते धूप खाकर भी मर जाते हैं।"

"तुम राजपूत, मानव-रक्त बहाकर क्या मजा लेते हो?" देवीदयाल ने पूछा।

"कुछ तो मजा आता है। देखो मैं बताऊँ, उस दिन जब पंचायत बैठी थी और करतार जब सबको अंगूठा दिखा गया तो तीसरे पहर मैं बरौड़ा चला गया। वहाँ जाकर मैंने केहर का पता किया। वह सुरेन्द्रसिंह के घर पर मिल गया। मैंने उससे पूछा कि उसने मेरे विषय में अपने पिता से क्या कहा है? वह कहने लगा कि उसको मेरा व्यवहार देखकर, यही समझ आया कि मैं सरस्वती को अपने लिए सुरक्षित रखना चाहता हूँ। इससे वह उसका विचार छोड़ गयी है।

"मैंने केहर को, सुरेन्द्रसिंह के देखते-देखते इतना पीटा कि वह आज भी मरहम-पट्टी करा रहा होगा।"

"यह तो बहुत बुरा किया है तुमने?" देवीदयाल ने कह दिया।

"क्यों बुरा किया है?"

"उसके सुधार में बाधा खड़ी कर दी है।"

"नहीं चाचा! उसको इतना भयभीत कर दिया है कि मेरे रहते, वह गाँव में कदम नहीं रखेगा।"

"और तुम्हारे सेना में भर्ती हो जाने के उपरान्त?"

"तब तक सरस्वती का विवाह हो जायेगा और उसकी ससुराल में इसकी पहुँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो सकेगी।''

''कहाँ विवाह हो रहा है उसका?''

''पुरोहितजी गये हैं। आशा है सब प्रबन्ध करके ही लौटेंगे।''

''तो तुम जरूर भर्ती होवोगे? हमारे नेता तो यह कहते हैं कि अंग्रेज़ की सेना में भर्ती नहीं होना चाहिए।''

''तो वे अपनी सेना बनायेंगे क्या?''

''नहीं; वे तो अहिंसा का व्रत लिए हुए हैं।''

''वह क्या होता है?''

''किसी के प्रति वैर न रखना, किसी को हानि न पहुँचाना। किसी को मारना तो महापाप है।''

''केहर-जैसे कामी, क्रोधी और झूठ बोलने वालों को भी?''

''भैया! कौन कह सकता है कि वह झूठा है?''

मेरे विषय में उसने झूठ बोला है। मेरे मन में सरस्वती के प्रति बुरा विचार कभी नहीं आया।''

''पर जब वह कहता है तो कैसे कहा जाए कि वह झूठ कह रहा है। उसका विचार गलत हो सकता है, परन्त जो उसके मन में था, वही तो उसने कहा है। उसने झूठ नहीं कहा।''

''चाचा! मेरे विषय में गलत विचार हैं या नहीं परन्तु उसको बिना उन विचारों की जांच-पड़ताल किए, किसी को कहना नहीं चाहिए था। यह उसकी दुष्टता है कि बिना प्रमाण के वह मुझको अपराधी बताने लगा है। सरस्वती के विषय में जो-कुछ उसने कहा है कि वह उसके साथ भाग जाने को तैयार थी, झूठ है।''

''हाँ, राधा भी यही कहती है।''

''तो ऐसे आदमियों से वैर भी होगा। लड़ाई भी होगी और फिर उनका रक्त बहाकर मजा भी आयेगा।''

''महात्माजी कहते हैं कि यही तो मनुष्य की गलती है।''

''महात्मा गांधी बड़े हैं या भगवान् कृष्ण?''

''भगवान् कृष्ण पुराने जमाने के जीव थे। महात्मा आज के हैं। आज क्या करना चाहिए, वही बता सकते हैं जो आज जीवित हैं।''

लाला की बात वजनदार प्रतीत होती थी। इस पर भी मथुरासिंह का विचार था कि इस युक्ति में भी दोष है। उसने गम्भीर हो विचार किया और फिर पूछ लिया, ''क्या मानव-मन में इस युग में परिवर्तन आ गया है? क्या अब लोग पूर्व काल से अधिक युक्ति युक्त व्यवहार एवं विचार रखते हैं?''

उसको केहरसिंह के व्यवहार ऐसी कोई बात युक्ति युक्त प्रतीत नहीं हुई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु लाला देवीदयाल ने यह कह दिया, "हाँ आज मानव ने रेल, तार बना ली है ओर इससे देश-देश, सीमाएँ पार कर एक होते जा रहे हैं।"

मध्याह्नोत्तर तीन बजे वह लाला के घर से निकला तो उसको अपने से कुछ आगे राधा गगरा लिए, कुएँ की ओर जाती हुई दृष्टिगोचर हुई। इस विचार से कि वह रहट को चला दे तो राधा को पानी भरने में सुभीता रहेगा, वह भी कुएँ पर जा पहुंचा। उसके जाने से पूर्व ही राधा ने रहट के जुए को धकेलना आरम्भ कर दिया था। उसको पर्याप्त बल लगाना पड़ रहा था ओर उसका मुख बल लगाने से लाल हो रहा था। मथुरा ने राधा को कहा, "छोड़ो, जाओ गगरे को पकड़ो।"

राधा ने कृतज्ञता-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा और मुस्कराकर गगरे को, जिसमें पड़ता हुआ जल बहुत-सा बिखर रहा था, पकड़कर सीधा कर दिया।

एक ही चक्कर में गगरा भर गया। मथुरा ने जूए को छोड़ा और राधा के समीप आ खड़ा हुआ। राधा तनिक साँस ले रही थी और जल प्रवाही के पास बैठी थी।

"तुम रमण को साथ लेकर क्यों नहीं आती?"

"वह नहीं आता।"

"तो फिर कैसे किया करोगी?"

"पहले सरस्वती होती थी तो दोनों मिलकर चला लेती थीं। अब वह आपके घर में है।"

"तो उसको साथ ले आतीं।"

"वह डरती है कि पुनः कहीं केहरसिंह न आ जाए।"

"और तुमको भय नहीं लगता।"

"नहीं।"

"क्यों? तुम केहर से अधिक बलवान हो क्या?"

"मैं संसार के सब युवकों से बलवान हूँ।"

"मुझसे भी?"

"परन्तु आप तो बहुत ही भले जीव हैं।"

"कैसे जानती हो?"

"आपकी आँखें देखकर।"

"ओह! राधा बहिन! किसी दूसरी औरत के साथ आया करो। यह काम तुम्हारे अकेले का मान का नहीं है।"

"मैं समझती हूँ कि कुछ दिनों में मुझको इसके चलाने का अभ्यास हो जायेगा।"

"फिर भी अकेले में ठीक नहीं।"

"तो आप साथ आ जाया करिये।"

"पर मैं तो कल जा रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहाँ?"

"यहाँ से धर्मशाला, वहाँ से कुल्लू। कुल्लू से शिमला जाऊंगा।"

"कैसे?"

"पाँव से चलकर।"

"कितने दिन लगेंगे?"

"एक महीना।"

राधा मुख देखती रह गई।

"क्यों?"

"आपसे मिलकर जी नहीं भरा।"

"यदि मैं पास हो गया तो फिर तुरन्त लाहौर जाना पड़ेगा और यदि फेल हो गया या कम अंक लेकर पास हुआ तो फिर, गाँव में ही रह जाऊंगा।"

राधा ने एक ठंडी सांस ली और गगरा उठा चलने लगी। मथुरासिंह ने पूछ लिया, "क्यों, क्या बात है?"

"मैं मन में विचार करती हूँ कि मैं रमणीक होती तो आपके साथ घूमने चलती और बहुत मजा रहता।"

मथुरा समझ गया कि लड़की एवं लड़के में सीमा-रेखा वह अनुभव करने लगी है। इससे उससे कह दिया, "राधा! तुम्हारा विवाह होगा। जीजाजी आयेंगे और फिर उनके साथ घूमने जा सकोगी।"

राधा की आँखें तरल हो गयी। उसने अपने होठों में ही कह दिया, "यह नहीं होगा।"

मथुरा ने इस वाक्य को कानों से नहीं सुना। वह तो उसके होठों के चलने को देख समझ सका था। इस कारण उसने पूछ लिया, "क्यों?"

राधा ने उत्तर नहीं दिया। वह गागर कमर पर रख कर चल पड़ी। मथुरासिंह वहीं कुएँ के जल-कुण्ड के समीप खड़ा, उसे जाते देखता रह गया।

वहाँ से घर लौटा तो पुरोहित लाहौर से वापस आ गया था। वह सूरतसिंह से कह रहा था, "मैं सरस्वती के विवाह का प्रबन्ध कर आया हूँ।"

"कहाँ तय किया है?"

"पंडित गिरिधर शर्मा 'सनातन धर्म महामण्डल' में क्लर्क हैं। उनका एक लड़का है। वह एक स्कूल में अध्यापक है। पंडितजी की पत्नी दूर के रिश्ते में तारा की मौसी है। वह लड़की को देख चुकी है। कुछ बातचीत पहले भी हुई है। अब बात पक्की कर आया हूँ। विवाह आगामी मास की बीस को लाहौर में ही होगा।

"पंडितजी, यह बहुत अच्छा किया है।" सूरतसिंह ने कह दिया।

"तो जमादारजी! आप विवाह पर चलेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जरूर चलूंगा।"

"क्यों भैया, मथुरा?"

"पंडितजी! मैं शिमला जा रहा हूँ। वहाँ से सीधा लाहौर पहुँच जाऊंगा। आप पता बता दीजियेगा।"

"अस्पताल रोड, हिन्दी भवन के सामने है उनका मकान। वे ही मेरे लिए मकान की व्यवस्था करेंगे।"

"ठीक है। पहुँच जाऊंगा। बीस अगस्त को न!"

"हाँ।"

5

केहरसिंह को सत्य ही बहुत बुरी तरह पीटा गया था। जब मथुरासिंह उसको रक्त में लथपथ वहीं छोड़ चला गया तो सुरेन्द्रसिंह, जो यह सब-कुछ देखता हुआ सामने खड़ा था, केहर से पूछने लगा, "पुलिस में रिपोर्ट लिखाओगे?"

केहरसिंह ने विचार किया और कह दिया, "नहीं।"

"क्यों?"

"तुम-जैसे साथी के रहते रिपोर्ट लिखाने से क्या लाभ होगा?"

"मैं क्या करता?"

"तुम मेरे साथ सम्मिलित हो जाते तो उसको नानी याद आ जाती।"

"दो जने एक पर पिल जाते?"

"मैं दुर्बल जो था।"

"दुर्बल होते हुए तुमने उससे झगड़ा क्यों किया?"

"मेरा विचार था कि वह मेरा मित्र है और बात हँसी-मजाक में उड़ जायेगी।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि वह तुम्हारा मित्र है। मित्र-मित्र लड़ें तो बीच में क्यों दखल दूँ?"

"ठीक है। इसी कारण मैं रिपोर्ट नहीं लिखा रहा। मैं उससे सुलह कर लूंगा।"

तीन दिन तक मरहम-पट्टी करने के पश्चात् केहरसिंह ठीक हुआ। एक दिन और प्रतीक्षा कर, वह अपने गाँव जमादारपुर में जा पहुँचा। गाँव में पहुँच, वह सीधा जमादार के घर पहुँचा। वहाँ जाकर उसने जमादार से माथुरासिंह के विषय में पूछा।

"वह तो घर पर नहीं है।" सूरतसिंह ने कह दिया।

"कहाँ गया है?"

"धर्मशाला, कुल्लू, शिमला को!"

"क्या करने?"

"सैर करने।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उससे मिलने आया था।"

"तुमने यहाँ आकर ठीक नहीं किया।"

"क्यों?"

"गाँव वाले सरस्वती के साथ तुम्हारे व्यवहार को पसन्द नहीं करते।"

"मैं गाँव वालों की परवाह नहीं करता। भापा! मैं तुम्हारा मान करता हूँ। मथुरा से मेरा प्यार है। परन्तु लाला देवीदयाल और उसकी पंचायत को मैं अंगूठा दिखाता हूँ।"

"परन्तु हम भी तो तुम्हारे व्यवहार को पसन्द नहीं करते।"

"मैं सरस्वती से प्रेम करता हूँ।"

"तुम मूर्ख हो? एक सूद का लड़का बामन की लड़की से विवाह नहीं कर सकता।"

"भापा! आज बीसवीं सदी भी आधी खत्म होने जा रही है। यह बामन-खत्री की बात आज चल नहीं सकती।

"परन्तु क्या इस जमाने में बलपूर्वक अपहरण भी क्षम्य हो गया है?"

"नहीं। मैं भिन्नत-समाजत कर उसके पिता को मना लूंगा।"

"तो जाओ मन्दिर में उससे मिल लो। मगर यहाँ इस घर में न आना।"

"क्यों?"

"सरस्वती यहाँ रहती है।"

"अकेली?"

"नहीं। माँ के साथ। पुजारी भी रात यहीं सोता है।"

"तो मैं पंडितजी से मिलकर बात कर लूंगा।"

"हाँ।"

"आप भी मेरी सिफारिश कर दें।"

"मैं जो-कुछ कहना चाहता हूँ, वह पुरोहित को कह दूंगा। तुमको नहीं बता सकता।"

"तो मेरे विपरीत कहोगे?"

"यह तुम्हारे व्यवहार पर निर्भर करता है।"

"भापा! मेरे किस व्यवहार से आप मेरे सहायक हो सकेंगे?"

"जैसे तुमको स्वतन्त्रता है किसी से प्यार करने की, वैसे ही सरस्वती को भी स्वतन्त्रा है कि वह जिससे चाहे, प्यार न करे।"

"परन्तु मुझको तो उससे बात भी करने नहीं देते। फिर उसके मन की बात कैसे जानूँ?"

"तुमको जानने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं स्वयं जान लूंगा। वह अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पव्यस्क है। इससे उसके बाप के विचार उसके विचार हैं।''

''तो क्या उसका पिता उसका विवाह उसके व्यस्क होने तक नहीं करेगा?''

''हाँ, यदि वह कहेगी कि वह अभी विवाह नहीं करना चाहती तो नहीं करेगा।''

केहरसिंह सूरतसिंह की बात को गलत नहीं कह सका। वह उठकर जाने लगा तो सूरतसिंह ने उसको कह दिया, ''और सुन लो, यदि तुमने कुछ भी बात बलपूर्वक करने का यत्न किया तो मेरे पास भरी बन्दूक पड़ी रहती है और मैं बहुत ही ठीक निशानेबाज हूँ।''

केहरसिंह ने इस धमकी का उत्तर नहीं दिया और मन्दिर में पहुँच गया। पुरोहित जगदम्बाप्रसाद शिव-पूजन कर मन्दिर से निकला ही था कि केहर उसके सामने जा खड़ा हुआ। पंडित पहले तो डरा। पीछे साहस बांध उसकी आँखों देख, पूछने लगा, ''किधर जा रहे हो केहर!''

''आपसे मिलने आया हूँ।''

''किसलिए?''

''आप गाँव के मुखिया के पास चलें।''

''किसने बनाया है उसको मुखिया।''

''गाँव वालों ने।''

''मैं उसको अपना मुखिया नहीं मानता।''

''पण्डितजी! चले चलिये। भले ही बात न मानिये।''

''तो उसको यहाँ ले आओ। मैं उसके द्वार पर नहीं जाऊंगा।''

''क्यों?''

''मैं बताना नहीं चाहता। बस इतना ही समझ लो कि मेरा चित्त नहीं करता।''

''तो आप यहीं मिलेंगे?''

''हाँ। यदि उसने आना है तो मैं आधा घण्टा तक यहाँ प्रतीक्षा कर सकता हूँ।''

केहर गया तो उसके साथ देवीदयाल और उसका एक साथी-पंच कर्मू जुलाहा आ गये। पंडित जगदम्बाप्रसाद मन्दिर के बाहर पीपल के वृक्ष के नीचे बैठा था। उसने स्वयं कोई कपड़ा आसन इत्यादि नहीं बिछाया था और इन आने वालों के लिए भी कुछ बिछाया नहीं गया। तीनों बैठे तो पुरोहित ने पूछ लिया, ''हाँ, लाला! बताओ, क्या कहना चाहते हो?''

''यह केहर मेरे पास आया था और कहता था कि यह सरस्वती से विवाह करना चाहता है?''

''मैंने इसको कहा है कि तुम यह विवाह नहीं करोगे। लड़की नाबालिग है। इस कारण भी विवाह हो नहीं सकेगा।''

''यह कहता है कि यह आपके हृदय-परिवर्तन के लिए यत्न करना चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं समझता हूँ, यह ऐसा करने का अधिकार रखता है।''

''तो फिर?''

''यह अपने मन की बात आपको मेरे सम्मुख बताना चाहता है।''

''बता सकता है।''

अब केहरसिंह ने कहा, ''पंडित जी! मैं सरस्वती से विवाह करना चाहता हूँ। इस समय मैं मोटर-ट्रक की आय के आधे का मालिक हूँ। इस प्रकार सब खर्चे देकर मुझको पन्द्रह-बीस रुपये नित्य बचते हैं, अर्थात् मुझको पाँच सौ रुपये महिने की आय होती है।

''मैं केहरसिंह हूँ। गुरु का प्यारा हूँ। नियम से रविवार के दिन गुरुद्वारे जाता हूँ। पाठ सुनता हूँ और प्रसाद लेकर आता हूँ।

''मैं अपनी पिछली बातों के लिए क्षमा चाहता हूँ और चाहता हूँ कि मेरी अर्जी मंजूर की जाये। इस समय गाँव में सबसे ज़्यादा कमाता हूँ। इस समय भी मेरे पास पाँच-छः हजार जमा हैं।''

इतना कह केहर प्रश्न-भरी दृष्टि से पुरोहित की ओर देखने लगा पंडित ने पूछा, ''बस या और कुछ?''

''बस।''

''मैं तुम्हारी यह बात मान नहीं सकता।''

''क्यों?''

''सीधी बात है। तुम जाति के सूद हो। एक ब्राह्मण की कन्या जो संस्कृत पढ़ती है, सन्ध्योपासना करती है, पुरोहित का कार्य कर सकती है, तुमसे विवाही नहीं जा सकती। ये अधर्म होगा।''

''परन्तु आज महात्मा गांधी इस जात-पांत के झगड़ों को देश के लिए हानिकारक समझते हैं।''

''मैं महात्मा गांधी का चेला नहीं हूँ।''

''पर आप खद्दर तो पहनते हैं?''

''यह गांधीजी के कहने पर नहीं। बल्कि इसके अपने गुणों के लिये है।''

''तो फिर मैं गांधीजी द्वारा बताया गया उपाय प्रयोग करूंगा।''

''क्या?''

''मैं इस मन्दिर के द्वार पर आज से भूख-हड़ताल कर दूंगा।''

''तो क्या होगा?''

''परमात्मा आपको प्रेरणा देगा कि आप मेरे हृदय की सच्चाई देख, मेरी बात मान जायें।''

''जो मन में आये करो। मैं यह विवाह नहीं मानूंगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ठीक है, लाला देवीदयालजी!" केहरसिंह ने कहा, मैं यहाँ इसी पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर भगवद्भजन करूंगा।"

देवीदयाल के साथ आये कर्मू जुलाहे ने अपनी कमर से चादर खोल बिछा दी और केहरसिंह उस पर लेट गया।

पंडित ने उठते हुए कहा, "भगवान् जानता है कि मैं धर्मानुकूल बात कर रहा हूँ। मैं तुमको अपनी लड़की के उपयुक्त वर नहीं समझता।"

पंडित गया तो देवीदयाल ने कह दिया, "शाबाश केहर! डटे रहोगे तो अपने उद्देश्य में सफल हो जाओगे।"

पुरोहित ने सूरतसिंह की सम्मति से सरस्वती की लाहौर में सगाई का समाचार किसी को भी बताया नहीं था। इस कारण देवीदयाल तथा गाँव के दूसरे लोग नहीं जानते थे कि लड़की की सगाई हो चुकी है। पुरोहित इस नई परिस्थिति से चिन्ता अनुभव करने लगा था। उसका अनुमान था कि यदि कुछ दिन भी केहर की भूख-हड़ताल चल गई तो गाँव में और कदाचित् दूसरे गाँव के लोग इसको देखने आने लगेंगे और उसकी लड़की के चरित्र के विषय में, भगवान् जाने क्या-क्या चर्चा होने लगेगी।

वह जमादार के घर केहर की बात बताने के लिए जा पहुँचा। सूरतसिंह भूख-हड़ताल की बात सुन, हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "मैं समझता हूँ, यह सब झगड़ा, देवीदयाल की राय से हो रहा है। वह संसार में सबको गांधी का अनुयायी मानता है।"

फिर कुछ विचारकर, उसने कहा, "पंडित जी! मेरी राय मानो तो लड़की को लेकर आज ही लाहौर चले जाओ। विवाह कर ही वहाँ से लौटना। विवाह पर चलने का निमंत्रण किसी को मत दो। मैं और मथुरा सीधे वहाँ पहुँच जायेंगे।"

"ठीक है। मैं कल बहुत प्रायः काल यहाँ से निकल जाऊंगा, और बरौड़ा से होशियारपुर जाने वाली पहली बस में ही चला जाऊंगा।

"सामान की बात है। वह यजमान, तुम पीछे होशियारपुर से लाहौर के लिए बुक कर देना।"

"हो जायेगा। तुम सब बाँधकर रख जाओ। और देखो, जाने की बात किसी से मत कहना।"

अगले दिन देवीदयाल केहरसिंह के भूख-हड़ताल की, दूर-दूर के गाँवों में डुग्गी पीटने लगा। पहले तो लोग इसको हँसी समझते रहे, फिर धीरे-धीरे तमाशे के विचार से आने लगे, और एक सप्ताह में लोग केहरसिंह के, लड़की के प्रेम में बलि चढ़ने की बात सुन, उसको देवता मान, उसकी पूजा करने लगे।

बात पुलिस तक पहुँची। बरौड़ा से पुलिस मोटर-वैन लेकर आ गयी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केहरसिंह को उठाकर ले गयी। उन्होंने उसको सरकारी अस्पताल में रखा और बलपूर्वक भोजन देने लगे। कुछ दिन में ही वह स्वेच्छा से भोजन लेने लगा। अब उसके विपरीत आत्महत्या करने का यत्न करने के अपराध में मुकद्दमा चलाया गया।

मुकदमे की पैरवी केहरसिंह का बाप करने लगा। इस समय सरस्वती के विवाह के लिए जमादार सूरतसिंह अपनी पत्नी-सहित लाहौर चला गया। निश्चित तिथि के दिन मथुरासिंह भी वहाँ पहुँच गया।

6

मथुरासिंह लाहौर एक अन्य साथी के साथ पहुँचा। यह लाहौर का एक प्रख्यात वकील था। नाम था त्रिलोकचन्द्र।

त्रिलोकचन्द्र 1921 से राजनीति में सक्रिय भाग ले रहा था। 1922 में वह छः मास का कारावास का दण्ड भी पा चुका था। सन् 1927 में वह लाहौर की एक संस्था 'नौजवान भारत सभा' के आन्दोलन में पकड़ा गया और उसे दो वर्ष का कारावास का दण्ड मिला, परन्तु अपील करने पर दण्ड छः मास का रह गया था। इसके उपरान्त वह राजनीति, विशेष रूप में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययनकर्ता एवं प्रवक्ता हो गया।

त्रिलोचन्द ने नमक-सत्याग्रह और उसके उपरान्त के 1932 के सत्याग्रह में भाग नहीं लिया था। वह अब लाहौर में वकालत करता था। और विदेशों की राजनीतिक स्थिति पर लेख लिखा करता था। इस वर्ष वह शिमला घूमने गया हुआ था। वहाँ उसकी इच्छा हुई कि पैदल मार्ग से मनाली जाये। जाते हुए, मार्ग में मथुरासिंह मिल गया। परिचय हुआ और तदुपरान्त मित्रता हो गयी।

दस दिन मनाली में दोनों इकट्ठे रहे। त्रिलोकचन्द्र का शिमला में अपना एक मकान था और वहाँ उसका परिवार गया हुआ था। उसने मथुरासिंह को निमन्त्रण दिया और वह उसी के साथ उसके मकान में ठहर गया।

मथुरासिंह को यह जान, विस्मय और प्रसन्नता हुई कि पंजाब हाई कोर्ट में वकालत करने वाला एक वकील भी उसी प्रकार विचार करता है, जैसे उसका पिता करता है। मथुरासिंह ने बताया, "मेरे पिताजी आठवीं श्रेणी तक पढ़े हैं। वह अंग्रेजी की वर्णमाला और कुछ दस-बीस शब्दों से अधिक नहीं जानते; परन्तु गांधी जी के आन्दोलन के विषय में वह कुछ वैसा ही विचार करते हैं, जैसा आप कहते हैं।"

दोनों शिमला में 'माल' पर घूम रहे थे। त्रिलोकचन्द्र ने कहा था, "योरुप में युद्ध होने वाला है।"

"यह तो समाचार-पत्रों के पढ़ने से कोई भी अनुमान लगा सकता है।" मथुरासिंह ने कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैंने 1933 में लाहौर के 'ट्रिब्यून' में एक लेख लिखा था। लेख था, 'कमिंग वार ऐण्ड गांधी जी।'

''उस लेख में मैंने जहाँ यह बताया था कि योरोप में युद्ध अवश्य होगा, वहाँ मैंने यह भी लिखा था कि क्यों होगा। युद्ध तब होते हैं, जब संसार में 'इविल फोरसिज' प्रबल हो जाती हैं। ये दो प्रकार से प्रबल होती हैं। एक जब दुष्टशक्तियों के पास साधन बढ़ जाते हैं। दूसरे, जब श्रेष्ठ शक्तियाँ आलस्य, प्रमाद अथवा विषय-वासना में लिप्त होकर अपने को दुर्बल कर लेती हैं। कभी-कभी भले लोग मानवता की मिथ्या परिभाषा द्वारा भी अपने-आपको दुर्बल बना लेते हैं।

''सन् 1914 से 18'' के युद्ध के उपरान्त ये दोनों ही बातें हुई थीं। संसार की डेमोक्रेटिक शक्तियाँ युद्ध में विजयी हुईं। वे चाहती थीं कि जर्मनी पुनः शक्तिशाली न हो। उन्होंने इसके लिए यत्न भी किए। जर्मनी पर प्रतिबन्ध लगाए। दूसरी ओर उन्होंने 'लीग ऑफ़ नेशन्ज' बनाई, जिससे सँयुक्त सुरक्षा की व्यवस्था हो सके।

''परन्तु दोनों बातों में सैद्धान्तिक भूल हुई थी। वे भले और बुरे लोगों का बँटवारा देशों की सीमाओं से करते थे। वे मानने लगे थे कि जर्मन देश की सीमाओं में रहने वाले सब दुष्ट और मूर्ख हैं और फ्रांस तथा इंग्लैंड की सीमाओं में रहने वाले सब भले एवं बुद्धिमान हैं।

''लीग ऑफ नेशन्ज' में 'भला' होने के कुछ लक्षण निश्चय होने चाहिये थे और यह उन भले लोगों अथवा राज्यों की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था होनी चाहिये थी। अन्तराष्ट्रीय विषयों में इन्हीं रेखाओं पर कार्य होता तो भावी युद्ध की सम्भावना कम हो जाती।

''दूसरी भूल थी, प्रजातन्त्र के विषय में? क्या प्रजातन्त्र का अर्थ प्रजा द्वारा प्रजा के लिये और प्रजा का राज्य है? मैं समझता हूँ कि यह परिभाषा गलत है। प्रजातन्त्र का अर्थ है, प्रजा में से योग्य व्यक्तियों द्वारा, प्रजा के साझे-हित के लिये राज्य। इसको, प्रजा का राज्य कहते है।

''प्रजा के योग्य व्यक्ति का निर्वाचन प्रजा के मताधिकार द्वारा नहीं हो सकता। इससे तो प्रायः बक-झक करने में योग्य निर्वाचित होते हैं। जाति के योग्य एवं कार्य कुशल नेताओं का चयन करने का यह ढंग गलत है। साथ ही जाति के सांझे हित बहुत कम हैं और पार्लियामेंट के मूढ़ सदस्य अपनी शक्ति को विस्तार देने के लिए उन कार्यो को भी अपने हाथ में लेते चले जा रहे हैं, जो सांझे हित के नहीं। तीसरे जातीय विषयों में भी भले और बुरे का विचार वैसे ही रखना चाहिये, जैसे अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में।

''जन-जन में, देश के भीतर और बाहर, भले लोगों का संगठन बनना चाहिए। यह संगठन दुष्टों के संगठन से सदैव अधिक शक्तिशाली रहना चाहिये।

''योरोप के नेताओं ने सब जर्मनों को दुष्ट समझा और सब फ्रांसीसियों तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजो को भला आदमी। परिणाम यह हुआ कि जर्मन जातीय गर्व, मिथ्या अभिमान और ईर्ष्या में बदल गया।

"साथ ही इंग्लैंड तथा अन्य राष्ट्रों ने अपने को जर्मनी से दुर्बल हो जाने दिया।

"इस कारण युद्ध होना ही था और अब होने जा रहा है।

"उस लेख में मैंने गांधीजी के विषय में लिखा था कि वह महात्मा जी भारतीयों को दुर्बल कर रहे हैं। अतः भारत को युद्ध की ओर धकेल रहे हैं।"

"परन्तु हम तो दास हैं न?" मथुरासिंह ने कह दिया।

"नहीं। हम दास नहीं हैं। मानसिक रूप में हम पयार्प्त स्वतन्त्र हैं परन्तु दिन-प्रतिदिन हम अधिक और अधिक परतन्त्र हो रहे हैं। हाँ, राजनीतिक रूप में हम पहले से अधिक स्वतन्त्र है। जितनी कुछ भी परतन्त्रता इस विषय में है, वह अपने में योग्यता प्राप्त करने से स्वयमेव लुप्त हो जायेगी। इस पर भी हम विचार करते हैं, परतन्त्र व्यक्ति की भांति। हमको स्वतन्त्र व्यक्ति की भांति विचार करना चाहिये।"

"क्या विचार हो सकता है वह? और फिर कैसे वह किया जा सकता है?" मथुरासिंह का प्रश्न था।

"हमको जितनी राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, उतनी का प्रयोग करना चाहिए। उसका प्रयोग करते हुए हमको शेष स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिये।

"हमको अपने शिक्षित युवक समुदाय को सेना में भर्ती होने को कहना चाहिये। इससे शक्ति अपने हाथ में आयेगी। हम सबल होंगे और विजयी होंगे। गांधीजी सेना से घृणा करते हैं, उन्होंने युवकों को असैनिक बनने की प्रेरणा दी है। अतः हम दुर्बल हो रहे हैं और भावी युद्धों में पराजित होंगे।

मथुरासिंह चकित हो, मुख देखता रह गया

"क्यों क्या बात है?" वकील साहब ने पूछा लिया।

"मैं जाति से राजपूत हूँ। हमारी पारिवारिक परम्परा है सेना में कार्य करना। मेरे परबाबा महाराजा रणजीतसिंह की सेना में थे। बाबा अंग्रेज़ की सेना में सूबेदार रहे। मेरे पिता सन् 1914-18 के युद्ध में लड़ते रहे हैं। वे मुझको कह रहे हैं कि मैं भी सेना में भरती हो जाऊँ। आप क्या राय देते हैं?"

"जरूर होना चाहिये। मैं बताता हूँ। मेरा छोटा भाई हवाई सेना में है। मैंने अपने लड़के को देहरादून मिलिटरी अकादमी में भरती करा दिया है। मैं समझता हूँ कि हमें देश को सबल बनाना चाहिये। जिस समय हिन्दुस्तान इतना प्रबल हो जायेगा कि अपने पड़ोसियों को पीछे छोड़ दे, उस समय हम स्वतन्त्र होंगे। युद्ध-जैसी भयंकर अवस्था से बच सकेंगे और आवश्यकता पड़ने पर विजयी होंगे।"

"हमारे गाँव में एक लाला देवीदयाल हैं। वे कहते हैं कि आत्मिक बल ही शक्ति है। सेना और हिंसा करने की सामर्थ्य तो दुर्बलता के लक्षण हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह जाति का बनिया और गांधीजी का चेला होगा!"

"हाँ।"

"तब ठीक है। वह तो यह कहेगा ही। उसने नर-रक्त तो दूर रहा, किसी चूहे-बिल्ली के रक्त के भी दर्शन नहीं किये होंगे। वह नहीं जानता कि संसार में खूंखार जानवरों की संख्या बहुत अधिक है।

"देखो मथुरासिंह! कहते हैं कि आज से दो-तीन सौ वर्ष पूर्व पृथ्वी पर वन बहुत थे और उन वनों में ब्संख्य पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, साँप-बिच्छू रहते थे। मनुष्य ने उन वनों को काटकर जन्तुओं को मर जाने दिया। उन जन्तुओं की आत्माएँ मानव-शरीर में आ गयी हैं। परन्तु वे आत्माएँ अपने कर्म-फल से पशु-प्रवृत्ति रखती हैं। अतः अधिक मनुष्य पशु प्रवृति वाले हो गए हैं। वे हिंसक पशु ही हिटलर, मुसोलिनी तथा स्टालिन के कलेवर में अब बर्लिन, रोम और संसार के नगरों में रहते हैं। पर ये वास्तव में सिंह अथवा बाघ हैं और अपनी प्रवृति से अपार हत्याएँ करा रहे हैं।

"पृथ्वी पर बसी मानव-आत्माओं का यह कर्तव्य है कि संगठित होकर पुशओं का वैसे ही शिकार करें, जैसे शिकारी लोग वनों में किया करते थे।"

मथुरासिंह ने मुस्कराते हुए पूछा, "परन्तु वकील साहब! कैसे पता लगे कि कौन-कौन मानव-आत्माएँ हैं और कौन-कौन पशु-आत्माएँ।"

"हमारे शास्त्रों ने इस बात का उत्तर दिया है। देखो, एक उपनिषद् में यह लिखा है—

'असुर्यानाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः।'

'अन्धे की भांति अन्धकार में विचरने वाली असुर योनियाँ हैं। अन्धा अन्धकार में कैसे विचरता है? पूर्व-संस्कारों से। यही हिटलर, स्टालिन, मुसोलिनी कर रहे हैं। अन्धकार में टटोल-टटोल कर चलते हुए वे जिस किसी को भी छू जाते हैं, उसको चीर-फाड़कर खा जाते हैं। उनमें देखने की इतनी भी शक्ति नहीं कि कोई उनकी रक्षा और सहायता करने आ रहे हैं अथवा उनका विरोध करने। यह सर्वथा पशुपन है।

"भगवद्‌गीता में तो व्याख्या से लिखा है—

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पौरुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।।

"पाखण्ड, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोर वाणी तथा अज्ञान, आसुरी स्वभाव के लक्षण हैं।

"तुम ध्यान से देखोगे तो आज के तानाशाहों में ये सब लक्षण दृष्टिगोचर होंगे। उन्होंने अपने साथी भी अपने जैसे स्वभाव वाले बना लिये हैं और उनके साथ इस संसार में विनाश सम्पन्न कर रहे हैं।

"इसके विरोध के लिए हमको दैवी अर्थात् मानवीय आत्माओं का संगठन तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहिए। दैवी स्वभाव को इस प्रकार लिखा है–

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत।।

"निर्भयता, शुद्ध, सात्त्विक बुद्धि, ज्ञानयोग में दृढ़ स्थिति, दान, मन और इन्द्रियों को नियंत्रण में रखना, कल्याणकारी कार्य करना, वेद-शास्त्रों का निरन्तर अध्ययन, सरलता, अहिंसा, सत्य-भाषण, अक्रोध, त्याग, शान्ति, निन्दा न करना, सब प्राणियों पर दया, अनासक्ति, चित्त की स्थिरता, क्षमा, धैर्य, शौर्य, शत्रुता का अभाव, अपने को बड़ा न मानना–ये दैवी स्वभाव हैं।

"हमको इस स्वभाव वाले मानवों का एक सुदृढ़ संगठन बनाना चाहिये।"

जब तक मथुरासिंह त्रिलोकचन्द्र के साथ शिमला में रहा, वह नित्य नये-नये विषयों पर वार्त्तालाप करता रहा।

मथुरासिंह ने बताया, "मुझको बीस तारीख को लाहौर पहुँचना है।"

"कुछ काम है वहाँ?"

"हाँ, हमारे एक पुरोहित जी है। उनकी लड़की का विवाह है। पिता जी तथा माताजी भी वहाँ आयेंगे। साथ ही मेरा बी. ए. का परीक्षा फल घोषित होने वाला है।"

"वैसे तो कचहरी पहली सितम्बर को खुलेगी। जब तुम जा रहे हो तो हम भी चलेंगे।"

"माताजी को तो बहुत निराशा होगी।"

"नहीं। वे तो पहले ही कह रही हैं कि छुट्टियां समाप्त होने से कुछ दिन पूर्व चलना चाहिये। घर की व्यवस्था करने में कुछ दिन लग ही जाते हैं। इतने दिन से मकान बन्द पड़ा है।"

वकील साहब की पत्नी मथुरासिंह के छोटे-मोटे घर के काम कर देने से बहुत प्रसन्न थी। वकील साहब का एक लड़का पाँच वर्ष का था और लड़की दस वर्ष की। लड़का था रघुनाथ और लड़की थी गार्गी। यह मथुरासिंह का काम हो गया था कि वह उनको साथ लेकर प्रातःकाल पाँच बजे 'जाकू राउंड' के लिए निकल जाता था। पन्द्रह दिन में वह बच्चों से बहुत हिल-मिल गया था। अतः जब उनको ज्ञात हुआ कि मथुरासिंह लाहौर जा रहा है तो वे भी चलने के लिए तैयार हो गये।

बीस को प्रातःकाल की गाड़ी से वे लाहौर पहुँच गये। मथुरासिंह थर्ड क्लास में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा कर रहा था और वकील साहब एवं उसका परिवार फर्स्ट क्लास में थे।

लाहौर स्टेशन पर पहुँच वह अपना संक्षिप्त-सा सामान अपने कंधे पर उठाये हुए वकील साहब से विदा माँगने उनके डिब्बे के बाहर जा पहुँचा।

त्रिलोकचन्द्र तो उसको अपनी कोठी का पता बताकर कहने वाला था कि वह कभी-कभी मिलता रहे, परन्तु वकील साहब की पत्नी स्नेहलता ने पूछ लिया, "तो अब कहाँ जाओगे?"

"पहले किसी होटल में ठहरने की व्यवस्था करूंगा, उसके बाद पुरोहितजी को ढूंढूंगा। जब तक परीक्षा-फल नहीं निकलता और आगे की पढ़ाई का निश्चय नहीं होता, तब तक होटल में ही रहूंगा।"

"तो हमारी कोठी में चलकर रहो न?"

"आपको कष्ट होगा।"

"नहीं होगा।"

मथुरासिंह प्रश्न-भरी दृष्टि में वकील साहब की ओर देखने लगा। वकील साहब ने कह दिया, "हम लोअर माल नम्बर पैंसठ में रहते हैं। अभी हमारे साथ ही चलो। हमारी गाड़ी स्टेशन के बाहर आयी हुई है। यह ड्राईवर है।"

बात निश्चय हो गयी। मथुरासिंह ने वकील साहब का टाइप राइटर और पोर्ट-मैन्यू उठा लिया और स्टेशन के बाहर ड्राईवर के साथ चल पड़ा।

मोटर में सवार हो वे लोअर माल पर जा पहुँचे। वहाँ उसने स्नानादि कर वस्त्र बदले और पुरोहितजी के बताये पते पर पहुँच गया। उसके माता-पिता एवं परोहितजी वहीं थे। उसी सायं-काल विवाह सम्पन्न हुआ और अगले दिन सरस्वती की विदाई हो गयी।

जमादार सूरतसिंह और भगवती गाँव को लौट जाना चाहते थे और मथुरासिंह परीक्षा-फल के घोषित होने की प्रतीक्षा में था। मथुरासिंह ने पिताजी को शिमला में वकील त्रिलोकचन्द्र के साथ रहने की बात बताई और कहा कि वकील साहब की सम्मति भी यही है कि मुझे सेना में भरती होना चाहिये। मैं यहाँ रह, इस विषय में मालूम करना चाहता हूँ।" .

"तब तो वकील साहब बहुत अच्छे आदमी हैं।"

"उनका भाई हवाई सेना में है और लड़का देहरादून मिलिटरी अकादमी में पड़ता है।"

"बेटा! मैं वकील साहब से मिलना चाहूंगा।"

"आज चलकर मिल लीजिए।"

उस दिन सरस्वती ससुराल को विदा हुई और मथुरासिंह अपने माता-पिता को लेकर त्रिलोकचन्द्र की कोठी पर जा पहुँचा। वकील साहब की कोठी में सफेदी हो रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। सब सामान बाहर निकाल, बरामदे और लॉन में रखा हुआ था।

त्रिलोकचन्द्र बरामदे में बैठा था। बच्चे लॉन में खेल रहे थे। वकील साहब की पत्नी मजदूरों से उन कमरों में सामान लगवा रही थी, जिनमें सफेदी हो चुकी थी। बच्चों ने मथुरासिंह को देखा, तो अपना खेलना छोड़, मथुरासिंह की बाँह पकड़, अपने पिता की ओर ले जाने के लिए घसीटने लगे। गार्गी ने पूछ लिया, ''भापा! ये कौन हैं?''

''मेरे माता-पिता।''

गार्गी और रघुनाथ ने माता-पिता का नाम सुना तो हाथ जोड़, जमादार और भगवती को नमस्कार करने लगे। भगवती ने गार्गी की पीठ पर हाथ फेर प्यार दिया।

7

सूरतसिंह अपनी सरल और सीधी भाषा में वकील साहब को बताने लगा, ''जब दुष्ट प्रकृति के लोग नेता बन जाते हैं तो युद्ध हो जाते हैं। युद्ध में जीत होती है साधनों से। जब दुष्टता पराजित होती है तो उसका खुर खोज मिट जाता है परन्तु कभी श्रेष्ठ लोग, अपनी मूर्खता के कारण, उपयुक्त साधन नहीं जुटा पाते और पराजित होते हैं। इस पर भी श्रेष्ठता कभी निःशेष नहीं होती। जहाँ-जहाँ श्रेष्ठ लोगों का रक्त गिरता है, वहाँ-वहाँ श्रेष्ठजन पुनः उत्पन्न होते हैं।''

वकील इस अपनढ़ देहाती की सूझ-बूझ पर विस्मित रह गया। उसने कह दिया, ''हाँ, जमादार! युद्ध में जीत साधनों की होती है। इस कारण भले लोगों को भी अपनी रक्षा के लिए साधन जुटाने चाहिएँ। मानवता और बुद्धिमत्ता दो पृथक्-पृथक् बातें हैं। मानवता संस्कारों की देन है और बुद्धिमता शिक्षा एवं अनुभव की। साधन जुटाये जाते हैं बुद्धिमत्ता से। इस कारण स्वभाव से भले लोग बुद्धि से साधन-सम्पन्न होने में यत्नशील रहें, यही सफलता-प्राप्ति का उपाय है। परन्तु विचारणीय बात यह है कि साधनों में क्या-क्या होना चाहिए।''

''मैं तो साधनों में सेना और अस्त्र-शस्त्र मुख्य मानता हूँ।''

''हाँ, सेना और सैन्य-सामग्री—ये जीत के लिए परम साध्य हैं। इनके बिना तो संसार के वन्य पशु, जो मनुष्य के रूप में उत्पन्न हो गए हैं, भले लोगों को कच्चा ही चबा जायेंगे।''

''देखो मथुरे! वकील साहब क्या कह रहे हैं?'' जमादार ने अपने लड़के को सम्बोधन कर कहा।

''हाँ, भापा! सुन रहा हूँ और मैं अब सेना में भर्ती होने के विरुद्ध नहीं हूँ।''

''तो होओगे न?''

''हाँ भापा!''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भगवान् तुम्हारा कल्याण करे।"

सूरतसिंह और भगवती जमादारपुर लौट गये। मथुरासिंह लाहौर में ही रह गया। जिस दिन उसका परीक्षा-फल घोषित हुआ वह सेना में भरती होने के कार्यालय का पता मालूम कर, वहाँ पहुँच गया। उसने फार्म भरकर दे दिया तो उसकी पहली पेशी हुई।

एक सिख अधिकारी बैठा था। जब मथुरासिंह ने खड़े होकर सैल्यूट किया तो अफ़सर ने पूछा, "तुम सिख तो नहीं हो?"

"नहीं, मैं राजपूत हूँ।"

"ओह! परन्तु तुमने लिखा है तुम बी. ए. फर्स्ट क्लास हो।"

"जी।"

"तो फिर सेना में भर्ती किसलिए हो रहे हो?"

"यह हमारा पारिवारिक कार्य है। मैंने लिखा है कि कई पीढ़ियों से हम सेना का काम करते रहे हैं।"

अफ़सर ने उसके फार्म को पुनः ध्यान से देखा और सम्मुख रखी घंटी बजा दी। दो सैनिक अन्दर आये तो उनको मथुरासिंह की परीक्षा के लिए कह दिया। उन्होंने मथुरासिंह की ऊँचाई, छाती की चौड़ाई और दूसरी बातें नोट कर लीं। परीक्षा के उपरान्त अफसर ने कहा, "तुम्हारे लिखे पते पर सूचना भेज दी जायेगी।"

मथुरासिंह लौट आया। कोठी में पहुँचकर उसने अपनी पेशी की बात कही तो वकील साहब ने कह दिया, "तुम भर्ती नहीं हो सकोगे।"

"क्यों?"

"दुर्भाग्य से आज जिस अफसर की वहाँ ड्यूटी है, वह महाँमूर्ख है। वह तुमको सिख और राजपूत के विचार से देखता रहा है।"

"तो राजपूत होने के कारण मैं सेना में नहीं लिया जाऊंगा?"

"कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है।"

वकील साहब की भविष्यवाणी का प्रमाण मथुरा को कॉलेज खुलने से दो दिन पूर्व मिला। उसको यह उत्तर आया, "तुम्हारा नाम वेटिंग लिस्ट में है। जब तुम्हारी बारी आयेगी, बुला लिया जायेगा।"

"इसका क्या तात्पर्य है?" मथुरासिंह ने वकील साहब से पूछ लिया।

इस उत्तर से त्रिलोकचन्द्र को भी विस्मय हुआ। इस समय यूरोप में युद्ध आरम्भ हो गया था। पहली सितम्बर 1939 को हिटलर की सेना पोलैंड में घुस गई थी। मथुरासिंह ने समाचार-पत्रों में पढ़ा था कि हिटलर और स्टालिन में सन्धि हो गई है। इससे पूर्व यह समाचार छपा था कि इंग्लैंड और फ्रांस के प्रतिनिधि मास्को में रूस से संधि करने के लिए गये हुए हैं। उनसे सन्धि बार्ता होते-होते रूस की जर्मनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सन्धि हो गयी। यह सन्धि 23 अगस्त 1939 को हुई थी।

इस समय ही त्रिलोचन्द्र ने मथुरासिंह को बताया था, युद्ध होगा और यदि उसको कुछ सीखना है तो यह समय है भरती होने का। उसी दिन मथुरासिंह का परीक्षा-फल घोषित हुआ था और वह फर्स्ट डिवीजन में पास हुआ था।

इस पर भी वह 24 अगस्त को भरती के कार्यालय में, लाहौर छावनी गया था। अफ़सर से हुए वार्तालाप से तो त्रिलोकचन्द्र को यही समझ आया था कि मथुरासिंह सेना में नहीं लिया जायेगा। परन्तु जब हिटलर ने 1 सितम्बर को पोलैंड पर आक्रमण कर दिया और पोलैंड ने बहुत वीरतापूर्वक उसका सामना किया तो त्रिलोकचन्द्र का विचार था कि इंग्लैण्ड पोलैंड की सहायता करेगा।

परन्तु पहली तथा दूसरी सितम्बर तक कुछ नहीं हुआ। मथुरासिंह को इस युद्धारम्भ से आशा हो गयी थी कि उसको सेना में ले लिया जायेगा, परन्तु इंग्लैण्ड की ओर से युद्ध की घोषणा में दो दिन की देरी से यह अनुमान लगाया जाने लगा था कि अंग्रेज इस अन्तिम समय में भी किसी प्रकार से इस लड़ाई से बचना चाहते हैं।

इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट में युद्ध पर बहस की रिपोर्ट छपी और उसमें इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री मिस्टर नेवल चैम्बरलेन के व्याख्यान के कुछ अंश छपे।

प्रातः के समय लॉन में खड़ा मथुरासिंह समाचार-पत्र पढ़ रहा था। त्रिलोचन्द्र अपना चुरुट पीता हुआ वहाँ आ गया। उसने दूर से ही पूछ लिया, "क्या समाचार है, मथुरासिंह!"

मथुरासिंह ने बताया, "अभी युद्ध की घोषणा नहीं हुई। कल सायंकाल पार्लियामेंट की बैठक हुई थी और प्रधान मंत्री चैम्बरलेन ने कहा है कि हम सबकी यह इच्छा है कि इस समय भी जर्मन सरकार को अपनी भूल स्वीकार हो जाये और वह अपनी सेनाएँ वापस बुला ले।"

त्रिलोचन्द्र हँस पड़ा। उसने कहा, "चैम्बरलेन शान्तिप्रिय व्यक्ति है। संसार के लाखों मानवों की हत्या का भार इसके मत्थे चढ़ेगा क्योंकि यह युद्ध में ढिलाई करता आ रहा है। युद्ध की धमकी तो 1933 में दी जानी चाहिए थी और यदि हिटलर न मानता तो 1934 में युद्ध आरम्भ होना चाहिए था। 1939 से बहुत पूर्व हिटलर सेंट हेलिन के द्वीप में बन्दी होना चाहिए था और एक अंग्रेज बाइसराय बर्लिन में बैठा होना चाहिये था।

"मिस्टर बाल्डविन और मिस्टर चैम्बरलेन ने अपनी नम्र नीति से जर्मनी को सन्धियाँ तोड़ने का अवसर प्रदान किया। रूस को अंग्रेजों और पोलैंड के विरुद्ध जर्मनी से सन्धि करने का साहस हुआ और अब रूस हिन्दुस्तान की ओर बढ़ेगा।"

"परन्तु भापा! इंग्लैण्ड अब भी लड़ेगा अथवा नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लड़ेगा। नहीं लड़ेगा तो इंग्लैंड में बगावत हो जायेगी।"

"तो मैं आशा कर सकता हूँ कि मैं भर्ती हो सकूंगा।"

"हाँ, निश्चय ही।"

तीन तारीख को युद्ध की घोषणा हो गई। चार तारीख को भारत के बाइसराय ने भी भारत की ओर से युद्ध की घोषणा कर दी। इन दो दिनों में पोलैंड की सुरक्षा की पंक्ति टूट चुकी थी और पोलैंड की सेना पीछे हट रही थी।

इस दिन से ही मथुरासिंह अपने सेना में भर्ती किये जाने के स्वप्न लेने लगा। वह अपने मन में विशेष प्रकार की उत्सुकता एवं उल्लास का अनुभव करने लगा। उसने अब सेना में ट्रेनिंग को जाने के लिए अपना किट तैयार करना आरम्भ कर दिया। वह एक चमड़े का सूटकेस खरीदकर ले आया और उसमें पहनने की पाँच पोशाकें रख, एक छोटा-सा बिस्तर, जो कन्धे पर उठाया जा सके, बनाकर तैयार हो गया। स्नेहलता ने यह देखा तो पूछ लिया, "यह क्या हो रहा है, मथुरासिंह?"

"सेना में जाने की तैयारी कर रहा हूँ।"

"तुमको डर नहीं लगता?"

"डर किस बात का?"

"मर जाने का अथवा लंगड़ा-लूला हो जाने का?"

"माताजी! नहीं। वह इसलिए कि बिना युद्ध के भी तो लोग मरते हैं ओर अपाहिज भी हो जाते हैं। यह मरना-जीना अथवा अपाहिज होना भाग्य की बात है। मेरे पिताजी सुनाते हैं कि वे एक बार बढ़ रही सेना के मार्ग में बिछी बारूद की सुरंगों को निकालने में लगाये गये थे। इनके साथ बीस सैनिक और थे। आज्ञा थी कि बारह बजे तक मार्ग साफ कर दिया जाये। पिताजी अपने साथियों के साथ चल पड़े। शत्रु की सेना उन सुरंगों को बिछाकर पीछे हट गई थी। मित्र-सेना के तोपखाने ने उनकी धज्जियां उड़ा दी थीं। इस पर भी सेना के बढ़ने के लिए इन सुरंगों को निकालना अत्यावश्यक था।

पिताजी ने प्रातः पाँच बजे से काम आरम्भ किया। छः बजे तक बीस में से दस आदमी उन सुरंगों के फट जाने से मृत्यु के ग्रास हो चुके थे उनमें प्रायः की हड्डियों का भी पता नहीं चला था। दस बजे तक केवल दो आदमी रह गये थे—पिताजी और उनका एक साथी। वह साथी भी साढ़े दस बजे उड़ गया। पिताजी अकेले ही रहे। बारह बजे तक इन्होंने बीस गज चौड़ा और पाँच मील लम्बा मार्ग खोल दिया था। ठीक बारह बजे पिताजी ने हरी झंडी दिखा दी। सेना लगे निशानों के बीच बढ़कर निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गयी। जब सेना वहाँ पहुंची तो पिताजी से रेजीमेन्ट के कमांडिग अफ़सर ने हाथ मिलाया। ठीक इस समय एक सुरंग जो पिताजी की दृष्टि से बच गयी थी, दिखाई दे गयी। पिताजी उसकी ओर लपके, परन्तु उनके वहाँ पहुँचने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पूर्व ही वह फट गयी। पिताजी धमाके के धक्के से भूमि से बीस फुट ऊंचे उड़े और पचास गज़ दूर जा गिरे। वे अचेत हो गये। उनको इसी अवस्था में अस्पताल पहुँचाया गया। उनके मस्तिष्क को भारी धक्का लगा था। दो दिन तक तो उनके बचने की आशा ही नहीं थी। उनके लिए विक्टोरिया क्रॉस की सिफ़ारिश की गयी थी, परन्तु उनकी फाइल में यह बात लिखी थी कि वे बंगाल के क्रांतिकारियों से सम्बन्ध रखते रहे हैं। उनको वह पदक नहीं मिला।

"वे बच गये और युद्ध से लौट, सेना से छुट्टी पा, उन्होंने विवाह किया।

"माताजी! मरना-जीना अपने कर्म-फल से होता है। इस पर भी युद्ध में जाना तो अपनी प्रवृति के अनुसार है। मैं अब समझता हूँ कि सैनिक जीवन हमारे परिवार के रक्त में है। जिस दिन से युद्ध आरम्भ हुआ है और मेरे सेना में भर्ती होने की सम्भावना बढ़ी है, मेरा चित बहुत प्रसन्न रहता है और मेरा भार बढ़ रहा है।"

"अच्छा! देखो भाग्य क्या दिखाता है!" स्नेहलता ने कह दिया।

तेरह सितम्बर को मथुरासिंह को रिक्रूटिंग अधिकारी का पत्र प्राप्त हुआ। लिखा था—"तुम्हारा नाम प्रतीक्षा-सूची में है। जब तुम्हारा नम्बर आयेगा, तुमको बुला लेंगे।"

"त्रिलोकचन्द्र ने भी यह पत्र पढ़ा और पढ़कर हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "आज इंग्लैंड में बौनों का राज्य है।"

"बौनों का?"

"हाँ। यह बाल्डविन, चैम्बरलेन आदि बुद्धि के विचार से बौने हैं। यही कारण है कि जो बात सामान्य बुद्धि वालों को आज से छः वर्ष पूर्व दिखाई देती थी, वह उनको आज भी दिखाई नहीं देती।"

"क्या दिखाई नहीं देती?"

"जब दुर्बल मन वाले लोग अपनी दुर्बलता को वाग्जाल में छिपाते हैं, तब युद्ध होते हैं। कभी-कभी विपक्षी उनके वाग्जाल में धोखा खा जाते हैं। परन्तु वह धोखा सदैव नहीं चल सकता। जब मालूम हो जाता है तो भयंकर युद्ध होते हैं।

"देखो! मैं समझाता हूँ, अंग्रेज़ी ढंग के प्रजातंत्र में एक दोष यह है कि इसमें उत्तरदायी व्यक्ति प्रधान मंत्री है। उसको यह विदित है कि उसका पद एक फिसलनी भूमि है। उसको उस भूमि पर खड़ा रहने के लिए अपना संतुलन बनाये रखना आवश्यक होता है। एक ओर उसके दल के सदस्य हैं। दूसरी ओर उसके दल को सहायता देने वाले धनीमानी लोग हैं। साथ ही विरोधी दल हैं, जो उचित-अनुचित आलोचना तो करते हैं परन्तु किसी भी काम का उत्तरदायित्व नहीं रखते। सबसे अधिक समाचार-पत्र हैं और जनता है। जनता के विचार एवं मनोद्गार समाचार-पत्र बनाते हैं और समाचार-पत्रों की भाषा, उनके पैसे वाले मालिक अथवा उनको चलाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले दल बनाते हैं।

"इस प्रकार विभिन्न शक्तियों के दबाव में प्रधान मंत्री को अपना सन्तुलन रखना पड़ता है। ऐसे स्थान पर कोई दुर्बल व्यक्ति अपनी बुद्धि से काम कर ही नहीं सकता। वह जिधर, बल पड़ा, उधर ही झुक जाता है।

"पिछले युद्ध के समय जन और धन की बहुत हानि हुई थी। इससे धनी लोग एवं जन-साधारण युद्ध से उपराम हो गये थे। धन वालों की दृष्टि अपने धन पर केन्द्रित होती है। वे अपने सामयिक लाभ-हानि से अधिक देख ही नहीं सकते। इन्होंने समाचार-पत्रों द्वारा जन-साधारण में युद्ध का भय उत्पन्न कर दिया। परिणाम यह हुआ कि प्रधान मंत्री और उसका दल अपने मतदाताओं, तदर्थ धनियों की अदूरदर्शिता से प्रभावित शान्ति का दिखावा करने पर विवश हो गया।

"इस दिखावे के लिए उसे अपने देश को अस्त्र-शस्त्र और सैनिक साधनों से विहीन करना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि शत्रु इनको दुर्बल समझ, युद्ध जीत लेने के लोभ में तैयारी करने लगा।

"शत्रु को इंग्लैंड के दुर्बल होने का प्रमाण तो तब मिला, जब उसने सन्धि को निस्तेज कर, राइनलैंड पर अधिकार कर लिया था। इंग्लैंड के नेताओं का बुद्धूपन भी हिटलर को मालूम हो गया, जब उसने सात मार्च 1936 को प्रातः दस बजे अंग्रेजी, फ्रांसीसी, बैल्जियम और इटैलियन दूतों को बुला कर युरोप में पच्चीस वर्ष तक शान्ति की सन्धि करने का प्रस्ताव कर दिया और उसी दिन बारह बजे उसने अपनी रीख (जर्मन पार्लियामेंट) के सम्मुख घोषणा कर दी कि राईनलैंड पर जर्मनी का अधिकार किया जा रहा है। राईनलैंड वारसैल्ज की सन्धि के अनुसार सेना-रहित क्षेत्र था।

"इस प्रकार एक ओर उसने नई सन्धि का प्रस्ताव किया और दूसरी ओर उसने पुरानी सन्धि के विरुद्ध आचरण कर दिया। इस पर भी इंग्लैंड के प्रमुख-प्रमुख समाचार-पत्र सर लॉयड जॉर्ज, लार्ड स्नोडाउन हिटलर की ओर से सफाई उपस्थित करते रहे और इंग्लैंड को सर्वथा शस्त्र-विहीन न कर देने का दोषारोपण अपने ऊपर लेते रहे।

"यह नहीं कि इंग्लैंड में कोई व्यक्ति था ही नहीं, जो हिटलर की बदमाशी को समझता न हो। कम-से-कम दो नेता थे—एक सर विन्सेन्ट चर्चिल और दूसरे ऐन्थनी ईडन। परन्तु इंग्लैंड के अदूरदर्शी धनी लोग, विपक्षी दलों के अनुत्तरदायी नेता और इनके प्रभाव में समाचार-पत्र, इन दोनों को गालियाँ देते रहे।

"यदि 1933 में हिटलर की उच्छृंखलता को रोकने का यत्न किया जाता तो युद्ध कभी होता ही नहीं। इस वर्ष 12 नवम्बर को हिटलर चांसलर बना था।"

"आपके विचार में क्या करना चाहिए था?"

"जब हिटलर शक्ति-सम्पन्न हुआ था तो राईनलैंड में फ्रांस और इंग्लैंड को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी सेनाएं भेज देनी चाहिए थीं और हिटलर के चुपचाप इस पर अधिकार करने का विरोध करना चाहिए था। इसकी तैयारी सन् 1933 में ही आरम्भ हो जानी चाहिए थी।"

"पर वकील साहब! चर्चिल तो 'बुल डौग' है जो हिन्दुस्तानियों को और गांधीजी को गालियाँ देता रहता है। वह गांधीजी को नंगा फ़कीर कह कर पुकारता है।"

"आज वह गांधीजी को ग़लत कहता है, कल को हिन्दुस्तान के लोग भी उसको मिथ्या मार्ग का राही कहेंगे। गांधीजी का मार्ग निवृत्ति का है। यह राजसी क्षेत्रों में चल नहीं सकता।"

"परन्तु चल रहा दिखाई तो देता है।"

"कैसे?"

"स्वराज्य मिल रहा है।"

"देखो मथुरासिंह! शान्ति-शान्ति करने वाले सदा घाटे में रहते है। यही बात गांधीजी के साथ हो रही है। हिन्दुस्तान गांधीजी को नेता मानता है और इन्होंने हिन्दुस्तान के साथ क्या किया है? गांधीजी उनको रियायतें दे रहे हैं, जो उनको अपना नेता नहीं मानते और उनके हाथ बांधते जा रहे हैं, जिन्होंने इनको अपना नेता माना हुआ है, अर्थात हिन्दुओं के अधिकार मुसलमानों के हाथों में दिये जा रहे हैं।

"दूसरे, मुसलमानों में भारतवर्ष की सीमाओं के अन्दर पाकिस्तान बनाने का विचार बल पकड़ रहा है और गांधीजी इसको अभी से प्रोत्साहन दे रहे हैं।

"तीसरे, गांधीजी कांग्रेस में सामान्यतया हिन्दुओं में उनको नेता बनने में सहायता दे रहे हैं, जो विचारों में अंग्रेज़ हैं, संस्कृति से मुसलमान हैं और घटनावश तथाकथित हिन्दू के घर में जन्म पा गये हैं। मेरा मतलब पंडित जवाहरलाल नेहरू से है। पंडितजी न तो धर्म-संस्कृति में और न ही राजनीति में गांधीजी से सहमत हैं। वे नास्तिक हैं, गांधीजी ईश्वरभक्त हैं; नेहरू हिन्दू-विरोधी हैं और गांधीजी अपने को हिन्दू मानते हैं। वह अन्तर्राष्ट्रीयता के उपासक हैं और गांधीजी अपने को भारतीय मानते हैं। पंडितजी मार्क्सवादी हैं और गांधीजी प्रजातन्त्र के भक्त। इस पर भी गांधीजी सदा पंडितजी को हिन्दुओं, भारतीयों, प्रजातंत्रवादियों और देश-भक्तों पर अधिमान देते रहते हैं। 1929 में पंडितजी को प्रधान बनाने में वे सहायक हो गये। 1936 में सरदार पटेल के विरुद्ध, पुनः पंडितजी को सहायता देने वाले बन गये। 1931 में भी कराची में पंडितजी के कहने पर वे समाजवाद की नींव रखने में सहायक हुए थे। मैं समझता हूँ कि यह उनकी अहिंसात्मक नीति का परिणाम है कि वे डटकर किसी का भी सामना नहीं कर सकते।

"यदि इनके नेतृत्व में स्वराज्य मिला तो वह न केवल लंगड़ा स्वराज्य होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपितु बिगड़ा हुआ भी होगा। उसमें पंडित जवाहरलाल की चलेगी और गांधीजी अपने बनाये नेता से अपने ही सिद्धान्तों की हत्या होते देखेंगे।

"हिन्दुस्तान की आत्मा लापता होगी और उसके मुख पर भीरुता, मूर्खता और निर्लज्जता अंकित होगी। यह गांधीजी की करनी का फल होगा।"

"बहुत भयंकर चित्र चित्रित कर रहे हैं आप?"

"हाँ, इसके घटने को रोक सकते हैं—पढ़े-लिखे देश-भक्त, एक बहुत बड़ी संख्या में सेना में भर्ती होकर।

"स्वराज्य मिलेगा। इस कारण नहीं कि गांधीजी और कांग्रेसी चरखा कात रहे हैं, प्रत्युत इस कारण कि सेना का भारतीयकरण हो रहा है। ये अंग्रेज भारतीय सेना में हिन्दुस्तानी पढ़े-लिखे युवकों को लेने पर विवश हो रहे हैं। अतः मैं समझता हूँ, यह युद्ध भारतीयों के भाग्योदय का लक्षण है।"

8

मथुरासिंह गवर्नमेंट कॉलेज में भर्ती हो गया। वह चाहता था कि कॉलेज के बोर्डिंग हाउस में जाकर रहने लगे। इसके लिए उसको स्थान भी मिल गया, परन्तु स्नेहलता ने मना कर दिया। मथुरासिंह का कहना था, "माताजी! यहाँ रहता हुआ मैं अनधिकार-युक्त कार्य करता अनुभव करता हूँ। आपके यहाँ भोजन करता हूँ। एक पृथक् कमरा अधिकार में ले रखा है और फिर नौकर-चाकर और अनेकों अन्य सुविधाएँ प्राप्त कर रहा हूँ। क्यों? मुझे इस क्यों का उत्तर समझ में नहीं आ रहा।

"मुझको समझ में आ रहा है।"

"सत्य? तो मुझको बता दीजिये।"

त्रिलोकचन्द्र अपनी पत्नी की ओर देखकर मुस्करा रहा था। मानो वह उसको अपने मन की बात कह देने के लिए उत्साहित कर रहा हो। स्नेह ने कह दिया, "मेरा तुम्हारे प्रति स्नेह हो गया है।"

"परन्तु यह तो आपका स्वाभाविक गुण है। आपका यह नाम ही इस बात का सूचक है कि आप सबसे स्नेह रखती हैं। इसमें मैं कहाँ से आ गया हूँ?"

"यह नहीं मथुरासिंह! मैं सबसे स्नेह नहीं करती। मुझको भले, नेक, सत्य-हृदय वाले और भय-रहित मनुष्यों से ही स्नेह होता है। ऐसे लोग संसार में बहुत कम हैं और तुम उनमें एक हो।"

"यह तो मैं जानता नहीं। मैं आपके स्नेह का पात्र बनने का यत्न करता रहता हूँ। परन्तु इसका मेरे बोर्डिंग हाउस में जाने के स्थान, यहाँ रहने से कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता। वहाँ जाने पर भी आपके स्नेह का भाजन बनने का यत्न करता रहूंगा।

"मथुरासिंह! तुम यह बताओ, इस तरह रहने में कुछ कष्ट है?" वकील साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने वार्त्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए पूछ लिया।

"मैं अपने कष्ट की नहीं कह रहा। भापा! मुझको यहाँ, बोर्डिंग हाउस और फिर अपने घर की अपेक्षा अधिक सुख और शान्ति प्राप्त है। परन्तु मैं अपने को इसका अधिकारी नहीं समझता।"

"तो फिर इसके लिए अधिकारी बनने का यत्न करो। यह तो बुद्धिमता नहीं कि जब कुछ भाग्य से अनायास मिले तो उसको पाने का अधिकारी बनने के स्थान, उसको फेंक दो।"

"इस सौभाग्य को प्राप्त करने का अधिकारी कैसे बनूँ? यही तो मैं अभी तक समझ नहीं रहा।"

स्नेहलता ने कह दिया "इतना पढ़-लिख गये हो, मस्तिष्क से काम लो। और देखो, अनायास ही सब-कुछ मिलने पर फेंककर चले जाने से तुम मेरे मन में अपना मूल्य कम करके ही जाओगे। कुछ ऐसा करो कि स्नेह का पात्र बनना, न तुमको, न किसी अन्य को अखरे। स्नेह फेंककर चले जाना मुझको पसन्द नहीं।"

स्नेह की इस वकालत ने मथुरासिंह का मुकदमा उसके विरुद्ध तय करा दिया। वह बोल नहीं सका। इस पर भी इसका प्रतिकार सोचता रहा।

सन् 1940 आ गया। ग्यारह मई को चैम्बरलेन ने प्रधानमन्त्री पद से त्याग-पत्र दे दिया और चर्चिल ने इंग्लैंड का प्रधानमन्त्री-पद स्वीकार किया। सब दलों की संयुक्त सरकार बनी।

बारह मई को हिन्दुस्तान के समाचार-पत्रों में इस घटना का विवरण छपा। वकील साहब कचहरी जाने से पूर्व मथुरासिंह से कहने लगे, "मैं विचार करता हूँ कि तुम्हारा नम्बर भर्ती किये जाने के लिए आने वाला है।"

"कैसे पता चला?"

"चर्चिल के प्रधान मंत्री बन जाने से।"

"चर्चिल का क्या सम्बन्ध है, मेरे भर्ती होने के साथ?"

"चर्चिल की नीति और चैम्बरलेन की नीति का सम्बन्ध है। चैम्बरलेन अपनी शान्तिप्रियता में ब्रिटिश साम्राज्य को सुदृढ़ करने की चिन्ता नहीं करता था। चर्चिल ब्रिटिश साम्राज्य को सुदृढ़ करेगा और परिणामसस्वरूप हिन्दुस्तान भी सुदृढ़ होगा और उस सुदृढ़ीकरण में मथुरासिंह एक ईंट का काम करेगा।

"तो आपका अभी भी विचार है कि मुझको भर्ती होना चाहिए?"

"क्यों, अब क्या हो गया है?"

"भारत का घोर शत्रु चर्चिल प्रधान मंत्री बन गया है।"

"इस अभिमानी परन्तु ईमानदार व्यक्ति से निपटना अधिक सुगम होगा। चैम्बरलेन लोमड़ी का स्वभाव रखता था और उससे तो कभी भी नेकी की आशा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखी जा सकती थी। मैं विचार कर रहा हूँ, यदि किसी प्रकार से मैं भी युद्ध-कार्य में सहायक हो सकूँ तो अपनी सेवाएँ अर्पित कर दूँ।''

''मेरे मन में संशय है कि इस समय चर्चिल के नेतृत्व में सेना में भर्ती होना उचित भी है अथवा नहीं?''

''देख लो। मैं तो यह समझता हूँ कि चर्चिल हो अथवा कोई अन्य 'डाईहार्ड', हमको सैनिक-कार्य अपने देश के लिए सीखना चाहिए। इसका लाभ हिन्दुस्तान को होगा और अन्त में देश के सैनिक ही होंगे, जो देश में अपने राज्य की स्थिरता को बनाये रख सकेंगे।''

मथुरासिंह समझ नहीं सका कि यह कैसे होगा। भारतवर्ष में जन-साधारण में यह बात प्रख्यात थी कि अंग्रेज़ हार रहे हैं। जीत जर्मनी वालों की होने वाली है। इस कारण इस समय अंग्रेज़ की सेना में भर्ती होना डूबती नौका में सवार होने के तुल्य है। सब मर जायेंगे, कोई नहीं बचेगा।

जर्मनी ने अंग्रेजों को नौरवे' से मार-मारकर निकाल दिया था। पौलैंड का बँटवारा रूस और जर्मनी में हो चुका था और चर्चिल के प्रधान मंत्री बनने के साथ-साथ होलेंड और बेल्जियम पर आक्रमण और वहाँ के विनाश के समाचार आने लगे थे।

इसके कुछ ही दिन पश्चात् फ्रांस में मित्र सेनाओं की पराजय प्रारम्भ हो गयी। प्रथम जून को ये सेनाएँ डेनकिर्क के तट से अपने टैंक, तोपें, बारूद इत्यादि सब सामान जर्मनों के हाथ में छोड़, इंग्लैंड लौट आयीं।

हिटलर ने एक मास में फ्रांस को विजय कर वहाँ एक कठपुतली सरकार बना दी। फ्रांस के साधन जर्मनी के हितों में प्रयुक्त होने लगे। अब जर्मनी के विचार से केवल इंग्लैंड ही रहा था, जिसको जर्मनी का विरोधी कहा जा सकता था।

जून की बीस तिथि आ गयी थी। लाहौर में कॉलेज बन्द हो रहे थे और मथुरासिंह घर जाने की तैयारी में था। उसको अभी तक सेना की ओर से बुलाया नहीं आया था।

रात्रि के भोजन के समय उसने स्नेहलता से कह दिया, ''माताजी! मैं कल गाँव जाने का विचार कर रहा हूँ।''

''और इस वर्ष किसी पहाड़ पर घूमने नहीं जाओगे?''

''विचार तो है।''

''मैं समझता हूँ कि कल छावनी में भर्ती के दफ्तर में चले जाओ और पता कर आओ कि तुम्हारी अर्जी का क्या बना?'' त्रिलोकचन्द्र ने कह दिया।

''मैं समझता हूँ कि मैं एक नई अर्जी दे दूँ।''

''मैंने पिछले मास एक पत्र चीफ़ रिक्रूटिंग ऑफ़िसर को लिखा था कि मैं अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवाएँ सेना विभाग के युद्ध-काल के लिए अर्पित करता हूँ। मैंने अपनी आयु और योग्यता लिख दी थी। मुझको आज एक रस्मी पत्र आ गया है। उसमें मेरा धन्यवाद किया गया है और यह कहा है कि जब आवश्यकता होगी, मुझको बुला लेंगे।''

''मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ सैनिक अधिकारी कल्पना लोक में रहते हैं। वे मुसलमानों को हिन्दुओं से अधिक निष्ठावान समझते हैं। मेरे एक साथी बैरिस्टर इश्तियाकहुसैन ने भी अपनी सेवाएँ दी थीं। उसको तुरन्त उत्तर आया और उसे रावलपिंडी डिवीजन का रिक्रूटिंग अफ़सर नियुक्त कर, काम पर लगा दिया गया है।''

''मैं समझता हूँ;''मथुरासिंह ने कहा, ''यदि प्रार्थना को अभी तक स्वीकार न करने का यही कारण है तो ठीक ही है। सामान्य रूप में एक हिन्दू अपने देश के हित को सदैव प्रथम स्थान देगा। मुसलमान तो भाड़े का टट्टू है। अंग्रेज यह जानकर तो बुद्धिमत्ता का परिचय ही दे रहे हैं।''

''हाँ, एक विचार से तुम ठीक ही कहते हो। हम भी तो अपने देश का हित विचारकर ही सेना का काम करने का निश्चय कर रहे हैं। परन्तु जो बात अंग्रेज़ के जानने की है, वह यह कि हिन्दू उनको कभी भी घोखा नहीं देगा। हम मित्र बनेंगे तो सत्य-हृदय से बनेंगे। मुसलमान तो किसी समय भी धोखा दे सकता है। हिन्दू मित्र एक मुसलमान नौकर से कहीं अधिक वफादार व सहायक सिद्ध होगा।''

इस पर भी मथुरासिंह अगले दिन रिक्रूटिंग आफ़िस में गया। वहाँ वह अधिकारी से मिला और अपने प्रार्थना-पत्र के विषय में पूछने लगा। आज उस दिन वाले सिख अधिकारी के स्थान पर एक मराठा अधिकारी था। नाम था, भोंसले। उसने पूछा, ''कब प्रार्थना-पत्र दिया था?

मथुरासिंह ने तिथि बताई और वह उत्तर जो उसको मिला था, दिखा दिया। मिस्टर भोंसले ने क्लर्क को बुला, पत्र ढूंढ़ने के लिए कहा। इसी बीच में भोंसले ने पूछा, ''अब क्या करते हो?''

''गवर्नमेंट कॉलेज में एम. ए. में पढ़ता हूँ।''

''क्या विषय लिया हुआ है?''

''इतिहास।''

''तो पढ़ाई छोड़कर सेना में जाना चाहते हो?''

''मैंने पढ़ा है कि इंग्लैंड में स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटियाँ बन्द हो रही है। मैं समझता हूँ कि इस समय नेकी और बदी में युद्ध हो रहा है। इस कारण सब नेक लोग एकत्रित हो जाने चाहियें। इसी विचार से मैं कॉलेज छोड़ने के लिए भी तैयार हूँ।''

भोंसले विस्मय में मथुरासिंह का मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर पूछने लगा, ''श्री सुभाष बोस का वक्तव्य पढ़ा है?''

''जी हाँ, पढ़ा है। मैं उनके मन की भावना को पसन्द करता हूँ, परन्तु उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाय को असामयिक समझता हूँ।''

''क्यों? अपने शत्रु को भीड़ के समय तंग करना ही तो कुशल नीति है।''

''परन्तु श्रीमान! मैं अंग्रेज़ को शत्रु नहीं समझता। मैं इसे एक मूर्ख मालिक समझता हूँ। हम इस मालिक से मुक्ति चाहते हैं और यह अपनी मूर्खता के कारण हमको अपना शत्रु समझ बैठा है। इसके साथ ही हिटलर को मानवता का शत्रु मानता हूँ और इस पराधीनता के काल में भी अपने को उसके अधीन नहीं करना चाहता।''

''परन्तु हिटलर तो भारत को अंगेज़ी साम्राज्यवाद के बन्धन से मुक्त करना चाहता है।''

''उसने पोलैंड, फिनलैड, नार्वे, बैल्जियम और डेनमार्क से विश्वासघात किया है। उसने संधियाँ तोड़ी हैं और विचार में विरोधी से सन्धि कर, एक मित्र देश का राज्य आधा-आधा बाँट लिया है। उस तानाशाह की दृष्टि में मानवता एक पाप है। वह साधु-स्वभाव चैम्बरलेन को मूर्ख समझता था और धूर्त स्टालिन को मित्र बना बैठा है। वह भारत का भला कैसे कर सकेगा?''

''तुम एक सैनिक अधिकारी से बहुत अधिक जानते हो।''

''मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ। राजनीतिक विषयों में इतिहास पथ-प्रदर्शन करता है। मैं समझता हूँ कि मेरे ज्ञान का लाभ उनको हो सकता है, जिनकी सेवा के लिए मैं प्रार्थना कर रहा हूँ।''

इस समय वह क्लर्क एक फाइल उठा लाया। परन्तु फाइल में मथुरासिंह का प्रार्थना-पत्र नहीं था भोंसले इससे बहुत घबराया। उसने कहा, ''देखो! कहीं ऊपर-नीचे लग गया होगा।''

''सर! मैंने पूरी फाइल देख डाली है।''

''तो मिस्टर सिंह! तुम एक नवीन प्रार्थना-पत्र दे सकते हो।''

इतना कह भोंसले ने एक फार्म वहीं मंगवा लिया और मथुरासिंह को भरने के लिए कह दिया। मथुरासिंह ने वहीं बैठे-बैठे भर दिया। उसी समय अधिकारी ने मथुरासिंह को शारीरिक परीक्षा के हेतु कार्यालय के दूसरे कक्ष में भेज दिया।

आधे घंटे में परीक्षा की रिपोर्ट लेकर मथुरासिंह पुनः मिस्टर भोंसले के पास लौट आया। वह इस समय कुछ अन्य लोगों से वार्त्तालाप कर रहा था। इस पर भी उसने उठकर मथुरासिंह से हाथ मिलाया और कहा, ''तुमको लाहौर के पते पर रहना चाहिए। शीघ्र ही तुमको ट्रेनिंग पर भेजने की आज्ञा आ जायेगी।''

''यदि कुछ अधिक दिन लगने हों तो मैं अपने माता-पिता से मिलने गाँव में जाना चाहता हूँ।''

''पन्द्रह दिन से कम क्या लगेंगे? पुलिस की रिपोर्ट मंगवाई जायेगी।''

''तो मुझको मेरे गाँव के पते पर सूचित किया जाये।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह ने त्रिलोकचन्द को बात बताई तो उसने नवीन स्थिति पर सन्तोष प्रकट किया। उसने बताया, "मैं समझता हूँ कि छः मास लगे हैं इनको रिक्रूटिंग कार्यालय से कूड़ा-कर्कट साफ़ करने में। जब उच्च अधिकारी ठीक आते हैं तो सब अधीनस्थ कर्मचारी भी सर्तक हो जाते हैं। जो सर्तक नहीं हो सकते, वे दीवार की ओर धकेल दिये जाते हैं।

"देखो मथुरा! मेरे सेना-कार्य में न लिये जाने का शोक अब हमको, मेरा तात्पर्य है मुझको और स्नेह को नहीं रहा। तुम्हारे लिए जाने से हमें सन्तोष हुआ है कि तुम्हारे द्वारा हम भी इस महान् यज्ञ में कुछ सहयोग दे रहे हैं। मेरे भाई किशोरचन्द का भी पत्र आया है कि उसे फ्लाइंग ऑफ़िसर का सर्टिफिकेट मिल गया है और उसकी नियुक्ति शीघ्र ही होने वाली है। मेरा लड़का रमेश तो अभी भरती होने के योग्य है नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

केहरसिंह को आत्म-हत्या करने के प्रयत्न में पकड़ा गया था। सरस्वती के विवाह की बात देवीदयाल से भी चोरी रखी गयी थी। एक दिन वह होशियारपुर से केहर के मुकद्दमें की पेशी देखकर लौटा तो उसको पता चला कि जमादार सूरतसिंह अपनी पत्नी के साथ लाहौर गया हुआ है।

देवीदयाल ने समझा कि मथुरासिंह सेना में भर्ती हो गया है और उसके माता-पिता उसे विदा करने लाहौर गये हैं। वह गाँव-गाँव में सूरतसिंह को टोडी सरकार का पिट्ठू तथा देश-द्रोही विख्यात करने लगा था।

पाँच दिन अनुपस्थित रह, सूरतसिंह लौटा तो वह उससे मिलने जा पहुँचा। सूरतसिंह ने देवीदयाल का स्वागत करते हुए पूछा, "सुनाओ लाला देवीदयाल! क्या हुआ है केहरसिंह का?"

"उस पर पुलिस ने मुकद्दमा चलाया है, आत्म-हत्या के प्रयास के अपराध में। वह ज़मानत पर है।"

"किसने दी है उसकी जमानत!"

"जमानत तो मैंने ही दी है।"

"और वह है कहाँ!"

"बरौड़ा में है। अपना ट्रक चला रहा है।"

"उसको अपनी भूल का ज्ञान हुआ है या नहीं?"

"भूल तो उसने की नहीं। फिर उसके ज्ञान का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।"

"देखो देवीदयाल! एक नाबालिक लड़की से उसके माता-पिता की रुचि के विरुद्ध विवाह के लिए दबाव डालना तो भूल भी थी और अपराध भी।"

"दबाव तो कुछ नहीं था। वह तो स्वयं कष्ट सहन कर सरस्वती के माता-पिता को अपने अनुकूल करने की प्रेरणा दे रहा था।"

"नहीं। यह लड़की और लड़की के माता-पिता को बदनाम करने और स्वयं को देवता प्रख्यात करने का प्रयास था। दूर-दूर गाँव के लोग आकर उसकी पुष्प इत्यादि से अर्चना करने लगे थे। औरतें बच्चों को उससे आशीर्वाद दिलवाने लगीं थीं और पुरोहित की लड़की के चरित्र की चर्चा होने लगी थी।"

"यह तो जनसाधारण की भूल है, केहर की नहीं।"

"इस भ्रम का फैलाने वाला वही था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीदयाल ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "मथुरा कहाँ है?"

"उसका कॉलेज खुलने वाला है। इससे वह लाहौर ही रह गया है।"

"मैंने समझा था कि वह सेना में भर्ती हो गया है।"

"उसके लिए तो उसने अभी प्रार्थना-पत्र भेजा है।"

"जमादार साहब! यह देश-द्रोह का कार्य मत करना। हमको कानों-कान यह संकेत मिला है कि हमने सरकारी भर्ती में बाधाएँ खड़ी करनी हैं।"

"किसने सह संकेत भेजा है?"

"मेरा सम्पर्क फारवर्ड ब्लॉक वालों से भी है। यह उन्ही की ओर से है। बाबू सुभाषचन्द्र बोस ने तो स्पष्ट शब्दों में कलकत्ता में कहा है कि यदि युद्ध हुआ तो हम यद्ध-प्रयास का विरोध करेंगे।"

"देखो देवीदयाल! देश की सेवा और देश की स्वतन्त्रता के लिए मैं सुभाष बाबू तथा गांधीजी से सहमत हूँ, परन्तु मैं सेवा और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए उनके उपायों से सहमत नहीं हूँ।"

"तो आपका क्या उपाय है?"

"मैं यह जानता हूँ कि हमारे देश को अंग्रेजों की परतन्त्रता इस कारण स्वीकार करनी पड़ी थी कि रण-भूमि में हमारी सेनाएँ वह दृढ़ता, नियन्त्रण और सामर्थ्य नहीं दिखा सकी थीं, जो अंग्रेज सेनाओं में थी। उनकी सेना के सिपाही, अंग्रेज और हिन्दुस्तानी, दोनों ही, नियन्त्रण और रण कौशल में मराठों और सिखों की तुलना में श्रेष्ठ थे। ठीक तो यह है कि हमारी सेनाओं के अधिकारी देश-प्रेम के स्थान, स्वार्थ के लिए लड़ रहे थे, और अंग्रेज अधिकारी इंग्लैण्ड की मान-प्रतिष्ठा के लिए लड़ते थे। इस पर भी यह स्पष्ट ही है कि हमारी सेनाओं और राजाओं में कुछ ऐसे थे, जो स्वार्थ से ऊपर देश और जाति से प्रेम रखते थे। परन्तु मुख्य बात सेना की थी।

"मैं अब भी यही समझता हूँ कि सेना में भाड़े के टट्टू भर्ती होने के स्थान, देश के पढ़े-लिखे, और देश-प्रेम रखने वाले युवक भर्ती होंगे तो वे अधिक शीघ्र स्वराज्य ला सकेंगे। अंग्रेज इस बात को जानते है। यही कारण है कि वे सेना में भंगी, चमार तो भर्ती कर लेते हैं, परन्तु पढ़े-लिखे और उच्च जाति के युवकों को नहीं लेते। वे यह समझते हैं कि यदि सेना में देश के स्वाभाविक नेता पहँच गए तो अंग्रेज अधिकारियों को, या तो उनके बराबर होकर कार्य करना पड़ेगा अन्यथा इंग्लैंड का वापसी टिकट कटवाना पड़ेगा।

"सुभाष बाबू और गांधीजी में कोई अन्तर नहीं। दोनों सत्याग्रह और अहिंसा के लिए कटिबद्ध हैं। किसी अच्छे उद्देश्य के लिए हिंसा भी क्षम्य होनी चाहिए। देश को स्वतन्त्र कराने के लिए सहस्रों और लाखों के भी रक्त से मातृ-भूमि को सींचा जा सकता है। यह पाप नहीं पुण्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा! तुम बहुत पुराने जमाने की बातें करते हो। आज गांधीजी ने एक नया युग आरम्भ किया है। गांधीजी ने तो हिटलर को भी पत्र लिखा है कि युद्ध न करे।"

"और हिटलर मान गया है?"

"वह हिन्दुस्तान का हाकिम होता और उसको सत्याग्रह का सामना करना पड़ता, तो मान जाता।"

सूरतसिंह हँस पड़ा। देवीदयाल सूरतसिंह को अंग्रेज़ी सरकार का पिट्ठू समझने लगा था और उसको देश-भक्ति का पाठ पढ़ाने का यत्न करने का विचार करता था।

सूरतसिंह का चरित्र और गाँव वालों से व्यवहार सदा श्रेष्ठ रहा था। किसी को जमादार के विरुद्ध कहने को कोई बात नहीं होती थी, परन्तु जब से वह पुरोहित की लड़की का विवाह कर आया था, लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें लेकर जमादार के पास आने लगे थे।

एक दिन गांव का एक किसान सूरतसिंह के पास आया और कहने लगा, "भापा! मथुरासिंह नहीं आया?"

"उसका कॉलेज खुल गया है और वह अपनी पढ़ाई कर रहा है?"

"कितनी पढ़ाई करेगा वह?"

"अभी दो वर्ष और पढ़ेगा।"

"सरस्वती उसके पास ही है।"

"कौन सरस्वती?"

"पुरोहितजी की लड़की।"

"उसका विवाह लाहौर के एक स्कूल मास्टर से हो गया है।"

"स्कूल मास्टर अथवा मथुरासिंह से?"

"तुमको यह किसने कहा है?"

"कुछ लोग कह रहे हैं कि जब सरस्वती आपके घर में थी, तब ही वे मथुरासिंह से सम्बन्ध रखती थी। बात छिपाने के लिए वे लाहौर चले गए हैं और मजे में रहते हैं।"

"पता नहीं ये कौन हैं, जो ऐसी बातें कहते हैं। कल साधू बढ़ई आया था और कहता था कि बरौड़ा में उसका समधी आया है। वह कहता है, सरस्वती का मुझसे सम्बन्ध था और मैंने उसको अपने लड़के के पास रखा हुआ है।"

"तब यह सब बात गलत है?"

"तुम सब लोग कुछ मूर्ख होते जा रहे हो। वह मेरी लड़की समान है। मेरी गोद में खेली है, भला मुझसे तुम लोग इस प्रकार की नालायकी की आशा करते हो?"

सूरतसिंह के अपनी सफाई देने पर भी बात बढ़ती गयी। गाँव के प्रायः लोग सूरतसिंह की शक्लें देख, गम्भीर हो जाते थे। पुरोहित को लोगों ने पूजा-पाठ के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाना बन्द कर दिया था। कभी कोई भूला-भटका आ जाता और कुछ फल इत्यादि दे जाता। पुरोहित इस परिवर्तन को अनुभव करने लगा था। वह गाँव वालो के इस परिवर्तित मनोभावों को समझ नहीं सका।

जमादार और पुरोहित की निन्दा घूम-घुमाकर देवीदयाल के घर पर भी पहुँची। राधा का भाई रमणीक स्कूल से आया तो माँ से पूछने लगा, ''माँ सरस्वती कहाँ गई है?''

''अपनी ससुराल गयी है।''

''वह कहाँ है?''

''लाहौर में।''

''माँ नहीं। तुम नहीं जानती। सरस्वती का विवाह पहले जमादार से हुआ था, अब मथुरा भैया से हो गया है।''

राधा भी बैठी सुन रही थी। माँ-बेटी दोनों अवाक् रह गयी। राधा ने पहले मुख खोला। उसने पूछा, ''कौन कहता है यह?''

''स्कूल के लड़के कह रहे थे कि जमादारपुर गाँव का जमादार पुरोहित की लड़की को घर में रखकर अपनी पत्नी बना बैठा था। उसके गर्भ ठहर गया तो उसका विवाह जमादार ने अपने लड़के से करा दिया है।''

''रमणीक! राधा ने क्रोध में कहा, ''यह गलत है। जमादार भापा और उसका लड़का ऐसे नहीं है।''

''पर राधा! सब लोग यही कह रहे हैं।''

''सब कौन?''

''कर्मू का लड़का मेरे साथ स्कूल जाता है और साथ ही आता है। वह कहता था कि उसका दादा भी यही कहता है।''

''अच्छा रमणीक!'' माँ ने गम्भीर हो कह दिया, ''तुम किसी को मत कहना। यह बात गलत है। झूठी बात कहने में बहुत पाप लगता है।''

रमणीक छठी श्रेणी से पढ़ता था और वह अभी विवाहादि विषयों पर बहुत कम जानकारी रखता था। इससे वह चुप रहा।

राधा की माँ ने रात खाना खाते समय अपने पति से पूछ लिया, ''कर्मू का बेटा जमादार के विषय में लड़कों को कुछ झूठ बात कह रहा है। उसके बाप को मना कर दो।''

''क्या झूठ बात कह रहा है?''

''यही कि जमादार और सरस्वती का अनुचित सम्बन्ध रहा है।''

''और तुम कैसे जानती हो कि यह झूठ है?''

''जमादार इतने वर्षो से हमारे साथ इतना अच्छा व्यवहार रखता है। हम उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक बात को जानते है। भला कौन इसको मानेगा?"

"मक्खनी! दाल में काला कुछ जरूर है। सरस्वती और पुरोहित एक दिन चुपचाप गाँव से लापता हो गए। फिर जमादार और मथुरा की माँ भी चले गए। मथुरा कई दिन पहले से ही चला गया था। कहते हैं सरस्वती का विवाह हो गया है, परन्तु गाँव में किसी को सूचना तक नहीं दी। पुरोहित की लड़की को, सबका कुछ-न-कुछ देना बनता था, परन्तु उसने लेने की चिन्ता भी नहीं की।

"फिर कर्मू का बड़ा बेटा किसी काम से लाहौर गया था और वह वहाँ सरस्वती और मथुरा को ठंडी सड़क पर घूमते देख आया है।"

"कर्मू का बेटा सुन्दर?" राधा ने नाक चढ़ाकर पूछ लिया।

"हाँ।"

"वह झूठा है।"

"तुम कैसे जानती हो?"

"पहले वह भी सरस्वती से छेड़-छाड़ करता था। उसको तो मैंने और सरस्वती ने खूब पीटा था। वह भाग खड़ा हुआ था।"

देवीदयाल ने हँसते हुए कहा, "तो तुम भी झूठ बोलने लगी हो? भला तुम कैसे पीट सकती थीं उस हट्टे-कट्टे युवक को?"

"तो उससे पूछ लो। मैं झूठ नहीं कहती।"

राधा की माँ ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं कल सुबह जमादार की पत्नी भगवती से पूछने जाऊंगी। वह कभी झूठ नहीं बोलती।"

"अपने पति के मान की रक्षा के लिए तो झूठ बोल ही सकती है।"

"तो धर्म-ईमान कुछ भी नहीं है?"

"ये सब बड़े-बड़े आदमी अन्दर से काले ही होते हैं।"

मेरा मन नहीं मानता। न तो मैं जमादार भापा को इतना पतित समझती हूँ, न ही भगवती को झूठ बोलने वाली।"

देवीदयाल चुप कर रहा। अगले दिन देवीदयाल होशियारपुर अपनी दुकान की मासिक खरीद के लिए चला गया। मक्खनी जमादार के घर जाने के लिए तैयार होने लगी तो राधा भी साथ जाने को तैयार हो गयी। मक्खनी ने पूछ लिया, "तुम किधर जा रही हो?"

"तुम्हारे साथ।"

"क्यों?"

"मैं भी देखना चाहती हूँ कि भगवती मौसी कैसे झूठ बोलती है।"

"तो वह झूठ बोलेगी?"

"नहीं बोलेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम देखकर क्या करोगी?"

"यदि यह सत्य है कि जमादार और उसका बेटा इतने बड़े पापी हैं, जितना रमणीक ने बताया है तो...।" वह कहती-कहती रुक गयी।

माँ उसे एकाएक चुप कर गयी देख, पूछने लगी, "हाँ तो फिर क्या?"

"मैं इस गाँव में नहीं रहूंगी।"

"तुमको इस गाँव में रखता ही कौन है? तुम्हारे लिए होशियारपुर में प्रबन्ध हो रहा है।"

"किसलिये?"

"पगली! तुम्हारी ससुराल वहाँ बन रहे हैं।"

"कौन बना रहा हैं?"

"ससुराल परमात्मा बनाता है। वही तुम्हारे पिताजी को प्रेरणा दे रहा है।"

"यह ग़लत है।"

"क्या ग़लत है?"

"फिर बताऊंगी। पहले भगवती मौसी के घर चलना चाहिए। मैं रात-भर सो नहीं सकी।"

"क्यों?"

"मुझको रमणीक की बात सुन कर बहुत दुःख हुआ है।"

मक्खनी अपनी लड़की के मनोद्गारों को समझ नहीं सकी। इससे वह अनमने भाव में लड़की का मुख देखती रह गयी। फिर कुछ सोच वह बोली, "अच्छा चलो?"

दोनों घर को ताला लगा चल पड़ी। रमणीक पाठशाला चला गया था।

देवीदयाल की दुकान घर के आगे ही थी। मक्खनी तथा राधा घर के पिछले द्वार से निकल दुकान के सामने आयी तो कर्मू जुलाहा उनकी बन्द दुकान पर बैठा था। उसने लाला की पत्नी और लड़की को कहीं जाते देखा तो उठकर पूछने लगा, "भाभी! भैया कहाँ हैं?"

"होशियारपुर गए हैं, माल खरीदने।"

"और तुम कहाँ जा रही हो?"

"जमादार के घर।"

"क्यों, कुछ काम है?"

मक्खनी बताना नहीं चाहती थी। उसने टालने के विचार से कह दिया, "ऐसे ही, बहुत दिन हो गये भगवती से मिले हुए।"

"पर भाभी...।"

"क्यों, क्या है?"

"गाँव वालों ने जमादार और पुरोहित का बॉयकाट कर रखा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह क्या होता है?"

"मेल-वर्तन बन्द। गाँव की पंचायत ने जमादार को अपने में से निकाल दिया है।"

"तो फिर?"

"तो यह कि गाँव के मुखिया को उसके घर नहीं जाना चाहिए। पंचों ने मुझको इस बात पर नियुक्त किया है कि मैं उनके घर में भंगी-कहार को भी जाने से रोकूँ।"

"पर मैं भंगी-कहार नहीं हूँ।"

"मक्खनी पहले तो कुछ मन में डरी, फिर कुछ विचारकर जमादार सूरतसिंह के घर को चल पड़ी। पीछे-पीछे कर्मू भी था। कुछ दूर जाकर मक्खनी ने कहा, "तुम अपना काम करो।"

"मैं अपना काम ही कर रहा हूँ।"

"क्या काम कर रहे हो?"

"जमादार के घर जाने वालों को वहाँ जाने से मना कर रहा हूँ।"

"तो कर लिया है न मना? अब जाओ।"

"नहीं भाभी, यदि तुम उनके मकान में जाने लगोगी तो मैं वहाँ लेट जाऊंगा और भीतर जाने नहीं दूंगा।"

"अच्छी बात है।"

जमादार के द्वार पर गाँव के चमार, जुलाहे, कहार एकत्रित हो रहे थे। बीस के लगभग बच्चे और युवक थे। वे द्वार के चारों ओर लेट रहे थे। कोई कूदकर भी नहीं जा सकता था।

मक्खनी वहाँ खड़ी हो गयी। कर्मू उनके समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। राधा को मजाक सूझा। उसने माँ से कहा, "माँ! मैं अन्दर जाऊंगी।"

"कैसे जाओगी?"

"यहाँ भूख-हड़ताल कर बैठ जाऊंगी। जब तक ये लोग मार्ग नहीं छोड़ेंगे, तब तक कुछ नहीं लूंगी।"

"नहीं, राधा बेटी! यह काम तुमको शोभा नहीं देता।" कर्मू ने कहा।

"तुम लोग जब झगड़ा करते हो तो क्या किया जाये?"

इस पर लेटे हुओं में से एक बोल उठा, "हम जमादार को भूखों मार डालेंगे।"

"और मैं यहाँ बाहर भूखी मर जाऊंगी।"

राधा जमादार के घर के द्वार के सामने लेटे हुओं के दूसरी ओर भूमि पर बैठ गयी। उसकी माँ भी वहीं बैठ गयी।

कर्मू इस सत्याग्रह के विरुद्ध भूख-हड़ताल का अर्थ नहीं समझ सका। इस पर भी वह चुप था। वह विचार कर रहा था कि जब लाला की पत्नी और लड़की भूख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से व्याकुल होंगी तो स्वयमेव उठ जायेंगी। धरना देने वाले स्वयंसेवकों की तो उसने तीन मण्डलियाँ तैयार की थीं और आठ-आठ घंटे प्रत्येक को धरना देना था। इस प्रकार चौबीस घंटे जमादार को मकान में बन्द करने का प्रयत्न किया गया था।

मक्खनी और राधा को वहाँ बैठे एक घंटा के लगभग हो गया था। इस समय तक गाँव की बहुत-सी स्त्रियाँ और कुछ घरों के लोग भी वहाँ एकत्रित हो गए थे।

जमादार के विरुद्ध प्रचार को तो सब जानते थे, परन्तु उसके प्रतिकार में इस धरने का अर्थ वे समझ नहीं सके। उसमें भी कम समझ में आने वाली बात थी राधा और राधा की माँ का वहाँ आना और धरने के विरुद्ध धरना देना।

इस समय तक जमादार के द्वार पर पचास-साठ के लगभग आदमी एकत्रित हो गए थे। उनमें से कुछ औरतें भी थीं। मध्याह्न के बारह बज रहे थे। इस समय दो लड़के भागे-भागे वहाँ आए कर्मू से बोले, "पुलिस आ गयी है।"

"पुलिस! क्या करने?"

"जमादार साथ है।"

इससे तो कर्मू कुछ समझ नहीं सका कि क्या करे। वह अभी विचार ही कर रहा था कि जमादार सूरतसिंह पुलिस के लट्ठबन्द दस सिपाहियों के साथ वहाँ आ खड़ा हुआ।

जमादार ने वहाँ भूमि पर देवीदयाल की पत्नी और लड़की को बैठे देखा तो चिन्ता अनुभव करने लगा। उसने समझा के वे भी सत्याग्रहियों में सम्मिलत हैं। इससे उसको पुलिस बुलवाकर उनको पकड़वाने का शोक लगा। उसने आगे बढ़कर राधा से पूछ लिया, "राधा बेटी! तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

"भापा! हम भीतर जाना चाहती हैं और ये लोग जाने नहीं देते।"

थानेदार ने आगे बढ़कर पूछ लिया, "कौन रोक रहा है भीतर जाने से?"

राधा ने कर्मू की ओर संकेत कर दिया। थानेदार ने कर्मू को बुलाया और पूछा, "तुम इनको भीतर जाने से रोकते हो?"

"नहीं, रोकते नहीं। हाथ जोड़ विनती करते हैं कि ये भीतर न जायें।"

"ये लेटे हुए लोग हाथ जोड़ रहे हैं क्या?"

कर्मू कुछ उत्तर नहीं दे सका। थानेदार ने सबसे समीप लेटे हुए-से पूछ लिया, "यहाँ क्यों लेट रहे हो?"

उसने स्वयं उत्तर देने से बचने के लिए कहा, "कर्मू पंच से पूछ लो।"

थानेदार ने कर्मू को हथकड़ी लगाने को कह दिया और वहाँ सब खड़े हुओं को कहा, "देखो! सब सुन लो। मैं घड़ी में समय देख रहा हूँ। दो मिनट के भीतर सब रास्ते से एक ओर हट जाओ, नहीं तो मैं सब पर मुकद्दमा चलाऊंगा।"

सब एक-दूसरे का मुख देखने लगे पर उठा कोई नहीं। थानेदार ने बड़ों-बड़ों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथकड़ी लगा दी और बच्चों को धकेलकर एक तरफ कर दिया। मार्ग साफ हो गया तो राधा और मक्खनी अन्दर चली गईं। पुलिस वालों ने चौदह लोग पकड़े थे। उनको मोटर वैन में बैठाकर बरौड़ा ले गये।

कर्मू के पकड़े जाने से गाँव में शान्ति हो गई। कर्मू को एक बात का शोक था। वह यह कि लाला देवीदयाल वहाँ नहीं था। वह होता तो थानेदार से दो बातें कर सकता।

2

पिछली रात पंचायत में इस बात का निर्णय करने के उपरान्त ही देवीदयाल घर आया था कि जमादार का सामाजिक बहिष्कार कराया जाये। बहिष्कार की रूपरेखा भी बना ली गई थी। पैंतालीस के लगभग स्वयंसेवक भर्ती किये गए थे और उनकी मंडलियाँ बनाकर प्रत्येक मंडली को आठ-आठ घंटे तक धरना देने पर नियुक्त कर दिया था।

प्रातःकाल जब प्रथम मंडली ने मकान का मार्ग रोका तो जमादार भ्रमण को जाने वाला था। उसने एक स्वयंसेवक से पूछा, "यहाँ क्या कर रहे हो?"

उस स्वयंसेवक ने बताया, "हम पंचायत की आज्ञा से आपके मकान पर धरना दे रहे हैं।"

"धरना देने से क्या होगा?"

"आपका बाहर के लोगों से सम्पर्क बन्द कर, आपका बहिष्कार कराया जायेगा।"

जमादार पुनः घर में चला गया। उसने द्वार भीतर से बन्द कर लिया। मकान के पिछवाड़े की दीवार, फांदकर, बाहर हो, वह सीधा बरौड़ा जा पहुँचा। वहाँ उसने पुलिस में रिपोर्ट लिखाई और कर्मू पर यह आरोप लगा दिया कि उसके परिवार को मकान में कैद कर दिया है। थानेदार ने इस रिपोर्ट पर कार्रवाई करने के लिए तुरन्त एक दर्जन सिपाही एक हैड-कान्सटेबल के अधीन जमादारपुर भेज दिये।

चौदह लोग पकड़े गये और जब बरौड़ा में उनके बयान हुए तो लाला देवीदयाल के भी वारंट निकल गये।

मक्खनी और राधा जब भीतर पहुँची तो भगवती ठाकुरजी के समक्ष सिर झुकाये, आखों को मूंदे बैठी थी। उनको देख भगवती ने आँखें खोलीं और पूछने लगी, "आओ, मक्खनी बहिन! बैठो! मैं भीतर से देख रही थी कि गाँव वाले तुमको भी मेरे पास आने नहीं देते। मैं आतुर हो ठाकुरजी से सहायता के लिए प्रार्थना करने लगी थी। भगवान् का लाख-लाख धन्यवाद है कि तुम आ सकी हो।"

"मौसी!" राधा ने कहा, "पर बात क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेटी! तुम्हारे पिताजी, न जाने हमसे क्यों नाराज हो रहे हैं और यह सब उन्होंने ही कराया है।"

"तो भापाजी पुलिस लेने गये थे?"

"उनको घर के द्वार में से जाने नहीं दिया गया। इस कारण वे पिछले अहाते की दीवार फांदकर निकल गये थे।"

"पर भगवती बहिन! यह सरस्वती और मथुरा के विषय में क्या बात है? लोग बहुत बातें बना रहे हैं।"

" तो यह बात तुम तक भी पहुँची है!"

"रमणीक कहीं स्कूल में सुनकर आया था। उसने हमको बताया है। मैंने लालाजी से पूछा तो वे कहने लगे कि कर्मू का बेटा लाहौर में मथुरा और सरस्वती को बाग में सैर करते देख आया है।"

"बहुत झूठा है कर्मू का बेटा। यह बात बिलकुल गलत है। सरस्वती का विवाह एक स्कूल-मास्टर से हो गया है। वह अपने पति के साथ बड़े दिनों की छुट्टियों में आने वाली है। मथुरा लाहौर कॉलेज में पढ़ता है।

"परन्तु बहिन! कर्मू में तो इतनी अक्ल है नहीं कि इस प्रकार की कहानी बना सके। यह तो लालाजी की करनी प्रतीत होती है।"

राधा इस झूठ में अपने पिता का हाथ देख, क्रोध से भर गई। अगले दिन देवीदयाल सायं–काल लौटा तो आते ही पकड़ लिया गया। दो दिन पश्चात् उसकी तथा उसके साथियों की ज़मानत हो सकी।

इस समय केहरसिंह को छः मास का दण्ड हो गया। उसकी अपील उच्च न्यायालय में कर दी गई। वहाँ उसका दण्ड कम हो गया। बहुत सिफ़ारिशों से पंचायत के विरुद्ध पुलिस का मुकद्दमा भी वापिस ले लिया गया। देवीदयाल और सब पकड़े हुए लोगों ने जमादार से क्षमा माँगी और मुकद्दमा उठाया गया।

मुकदमे से छुट्टी पा, जब देवीदयाल पुनः शान्तिपूर्वक दुकान का कार्य करने लगा तो एक दिन राधा ने, जो अब नित्य भगवती से मिलने जाया करती थी, पिता से पूछ लिया, "पिताजी! आपने यह सब क्यों किया?"

"मेरी सूचना सही थी और उस सूचना के आधार पर कष्ट सहकर भी सूरतसिंह को सबक सिखाना था।"

"परन्तु सबक तो आपको मिल गया है। दो मास आपकी दुकान बन्द रही। माताजी का कथन है कि इस दौरान, एक हजार से ऊपर व्यय हो गये हैं और फिर लिखित क्षमा माँगनी पड़ी है।"

"परन्तु राधा! इससे एक लाभ हुआ है, अपने गाँव के लोगों को सत्याग्रह का ढंग आ गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सत्याग्रह था क्या? यह झूठ पर आधारित हठ था। कारण यह कि एक ग़लत बात के लिए सब-कुछ था। आपने भली-भांति जाँच नहीं की और लोगों को भी बिना विचार किये दूसरों को कष्ट देने का स्वभाव डाला है।"

"आम लोग तो ऐसे ही होते हैं। भूल मेरी थी और उसका फल मैंने पा लिया है। जहाँ तक लोगों का सम्बन्ध है, वे तो सत्याग्रह की महिमा जान गये हैं।"

"क्या महिमा जान गए है? झूठ बोलना, दूसरों को व्यर्थ में कष्ट देना और पीछे क्षमा माँग-लेना।"

"परन्तु राधा! तुमको अब गाँव की बातें छोड़, होशियारपुर की बातें सुननी चाहियें। लड़का समझदार और सुन्दर है। परिवार लखपति है। पाँच भाई हैं और साँझा परिवार है। गजेन्द्र सबसे छोटा है। पिताजी अभी जीवित हैं।"

राधा चुप-चाप यह सुनती रही। जब पिता अपनी बात समाप्त कर चुका तो वह उठकर अपने कमरे में चली गई। उसी रात को मक्खनी ने लाला को बताया, "राधा कहती है कि वह इन लाला के घर में विवाह नहीं करेगी।"

"क्यों?"

"वह बताती नहीं। वह कहती है कि यदि विवाह किया गया तो वह घर से भाग जायेगी।"

"तो कहाँ विवाह करना चाहती है?"

"वह कुछ नहीं बताती।"

"वह किससे मिलती रहती है?"

"आजकल वह भगवती से मिलने जाती है।"

"क्यों जाती है?"

"मुझको तो यही कहती है कि गाँव में और है ही कौन, जिससे बातचीत की जा सके।"

"तो भगवती बड़ी पढ़ी-लिखी है, जो उससे बातें करने जाती है।"

"जमादार भापा उसको युद्ध की बातें बताया करते हैं और वह बहुत रुचि से सुनती है।"

"भला एक बनिये की बेटी का क्या सम्बन्ध है युद्ध की बातों से?"

"तो आप स्वयं पूछ लीजिएगा।"

अगले दिन देवीदयाल ने राधा से पूछ ही लिया, "सुना है तुम रोज़ जमादार के घर जाती हो?"

"हाँ।"

"क्यों?"

"मैं उनके घर का चलन सीखना चाहती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या है उस चलन में?"

"मुझको कुछ भला प्रतीत होता है।"

"कुछ बताओं भी। क्या बात है, जो यहाँ नहीं है।"

"एक तो वहाँ ठाकुरजी का मन्दिर है। उसमें सदैव धूप-दीप जलता रहता है। वहाँ चन्दन घिसा पड़ा रहता है। मौसी मुझको वहाँ ले जाती है। मुझको ठाकुरजी के सामने वन्दना करने को कहा करती है। वह मुझको कहती है कि मैं अपने लिए सुख-कारक वर माँगा करूँ।

"वहाँ हम बैठती हैं तो भगवती मौसी रामायण-पाठ करती है। कभी मुझको समझ नहीं आता, तो समझाती भी है। कभी-कभी जब रामायण पाठ हो रहा होता है, तो भापाजी आ जाते हैं और सुनते हैं। कथा के बाद वे अपनी आप-बीती सुनाने लगते हैं।"

"किस समय जाया करती हो वहाँ?"

"मध्याह्न का भोजन करके जाती हूँ और तीसरे पहर चाय पी लौट आया करती हूँ।"

"तो वहाँ और कोई भी जाता है?"

"नित्य तो मैं ही जाती हूँ। वैसे कुछ अन्य स्त्रियाँ भी आती हैं, परन्तु पाँच-दस मिनट तक बैठकर चली जाती हैं। उनको कथा में रस नहीं आता।"

"यह सब ढोंग है।"

"इसमें ढोंग क्या है?"

"देखो राधा! ढोंग किसी झूठ को सत्य प्रकट करने का नाम है। परमात्मा तो है नहीं और उसकी मूर्ति बना, उसका श्रृंगार कर धूप-दीप जला, चन्दन लगाकर सामने रखना और फिर उसके सामने मस्तक नवाना, मानो वह कोई राजा-रईस हो और उसका भोग लगाना, मानो वह खाता हो, यह सब असत्य को सत्य बताना है और मैं इसको ढोंग कहता हूँ।"

"परन्तु पिताजी! इस ढोंग से उनको क्या लाभ होगा?"

"यह मैं जाकर देखूँ तो पता चले।"

"भापा जी को कहूँ कि वे आपको अपने ठाकुरजी दिखायें।"

"देखो राधा! ठाकुर हमारे घर में भी रखे थे। तुम्हारे बाबा बहुत पूजा-पाठ करते थे। मैं भी नित्य प्रातः ठाकुरजी के दर्शन करता था, परन्तु मेरे मन में उन पत्थर की मूर्तियों के लिए कभी भी श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न नहीं हुई। और जब से मुझको गांधीजी के दर्शन हुए हैं, मैं उन पत्थरों के ठाकुरों को भूल गया हूँ। पिताजी का देहान्त हुआ तो मैं ठाकुरजी को यहाँ से उठाकर ले गया और बड़े कुएँ के पास बरगद के पेड़ के नीचे भूमि में दबा आया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि जब से मैं ठाकुरजी को वहाँ, जहाँ के वे योग्य हैं छोड़ आया हूँ, मैं उन्नति ही करता जा रहा हूँ।"

"क्या उन्नति की है आपने?"

"तुम हमारे घर में आयीं। फिर रमणीक आया। तुम्हारी बहिन सीता तो पहले ही आ चुकी थी। तब से मैं न बीमार होता हूँ, न ही काम से थकता हूँ। देश का काम भी करता हूँ। मैं जिला कांग्रेस कमेटी का सदस्य भी हूँ।"

"यह तो, ठाकुरजी घर में रह जाते, तब भी हो जाता।"

"परन्तु तुम्हारे बाबा की तो यह उन्नति हुई नहीं।"

"सुना है वे बरौड़ा में बहुत बड़े धनी आदमी थे।"

"परन्तु अन्त समय में वहाँ का सब कारोबार मेरे बड़े भाई को दे, यहाँ आ गए। तब उनको जमादार की यह बीस एकड़ भूमि मिली थी। उनको यह स्थान बहुत रमणीक लगा और वे इस वीरान स्थान में बीस एकड़ भूमि लेकर रहने लगे। मैं उनकी सबसे छोटी सन्तान था। वे मुझको भी यहाँ ले आये।

"वे स्वयं और मैं भी निर्धन हो गए। उनके जीते-जी हम बाजरे की रोटी और सरसों का साग खाते थे। चने की दाल तो किसी उत्सव के दिन प्राप्त होती थी। जब तक वे जीवित रहे, हमारी यही दशा रही। उनके देहान्त के उपरान्त मैंने ठाकुरजी को भूमि में दबाया तो मेरे ज्ञानचक्षु खुल गए। अब तुम देखती हो कि जमादार, जो यहाँ का मालिक है, वह भी मेरे नाम से डरता है।

"जब स्वराज्य हुआ तो जमादार की सब भूमि काश्तकारों में बाँट दूंगा। मैं यहाँ का नम्बरदार बनूंगा और भूमि उन काश्तकारों के नाम दाखिल खारिज कर दूंगा।"

राधा को यह सब कथा जमादार ने एक दूसरे रूप में सुनाई थी। वह रूप उसने अपने पिता को नहीं बताया, परन्तु जब लाला दुकान पर चला गया तो राधा ने वही बात माँ को बताई।

"माँ! भापा कहे थे कि मेरे बाबा का दिवाला पिट गया था। वे अपनी सब सम्पत्ति सरकारी रिसीवर के हाथ सौंप, सर्वथा अकिंचन हो इस नये गाँव में आ गये थे। हमारे तायाजी बरौड़ा में ही रह गए थे। पिताजी यहाँ आये थे सन् 1920 में। उस समय बाबा दिवाला निकालने के शोक के कारण बहुत दुर्बल और हतोत्साह थे। भापा ने उनकी और पिताजी की बहुत सहायता की। भूमि दी, दुकान बनवाने के पैसे दिये। इसके बाद पिताजी का विवाह हुआ। सीता बहिन पैदा हुई तो पिताजी को बहुत क्रोध चढ़ गया। वे लड़के की आशा करते थे। साथ ही सीता अपंग थी।

"1925 में जब सीता दो वर्ष की थी, तब बाबा का देहान्त हो गया था। पिताजी गांधी-वादी बन गए। नास्तिक हो गए। पूजा-पाठ त्याग, धन कमाने में लग गए। उसी वर्ष मेरा जन्म हुआ। तब से पिताजी आस-पास के गाँवों के गुण्डों-शोदों को अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास रखे हुए हैं। उन्होंने एक कांग्रेस कमेटी बनाई हुई है और एक पंचायत बना ली है। उन गुण्डों के बल-बूते पर धमका-डराकर आस-पास बीस-पच्चीस गाँवों में चौधरी बने हुए है और लोगों में झगड़ा कराते हैं, और फिर सुलह कराते समय कांग्रेस के नाम पर चन्दा लेते हैं और सुख का जीवन व्यतीत करते हैं।''

अब मक्खनी ने जमादार की कहानी का समर्थन कर विस्तार से वर्णन कर दिया। उसने बताया, ''मेरे पिता बरौड़ा में एक बहुत ही निर्धन दुकानदार थे। मेरा विवाह जमादार भापा के कहने से हुआ। मैं आयी तो घर में भांग भुजती थी। मैंने तुम्हारे पिता से मिलकर घर की अवस्था सुधारने का यत्न किया। मेरे आने के पूर्व घर में कोई औरत नहीं थी। तुम्हारे पिता रोटी बनाते थे, और बाप-बेटा खाते थे।

''मैंने अच्छा खाना बनाना आरम्भ किया। घर की सफ़ाई रखनी आरम्भ कर दी। तुम्हारे पिता को दुकान पर बैठने और होशियारपुर से बेचने के लिए माल लाने का अवसर मिलने लगा। दुकान पर बिक्री होने लगी। सीता हुई तो लड़की और वह भी अपंग। इससे तुम्हारे पिताजी मुझसे नाराज होकर भाग गए। तब मैं दुकान और घर पर बैठने लगी। जमादार भापा ने यह अवस्था देखी तो वे होशियारपुर गए और इनको पकड़ लाए। इनके लौटने के पश्चात् तुम्हारे बाबा का देहान्त हो गया। तब से मैं यहाँ हूँ। ये दुकान पर, और घर के बाहर क्या करते हैं और क्या नहीं करते, मैं नहीं जानती। घर की अवस्था तो सुधरी है। अब मेरे पास आभूषण हैं। तिजोरी सदा भरी रहती है। परन्तु यह बात ठीक नहीं कि ठाकुरजी को गाड़ आने के बाद हमारी अवस्था सुधरी है। ये ठाकुरजी की मूर्ति को बरगद के पेड़ के नीचे दबाकर आए थे और उसको मैं जाकर निकाल लायी थी। वे अभी तक मेरे सन्दूक में रखे हैं। अब उनकी नित्य पूजा नहीं होती, परन्तु मैं मन में परमात्मा का चिन्तन करती हूँ। मेरा विचार है कि यह भगवान् की कृपा है कि हमारी अवस्था सुधर रही है।''

''माँ! उन मूर्तियों को पुनः प्रतिष्ठित कर दे तो कैसा रहे?''

''मेरे मन में कई बार विचार आया है, परन्तु तुम्हारे पिता उनका अपमान भी कर सकते हैं। क्या लाभ होगा इससे, परमात्मा सब स्थान पर व्यापक है। वह हमारे हृदय में भी रहता है। इसलिये उसकी पूजा-भक्ति अथवा उसका चिन्तन करने के लिए मूर्ति की आवश्यकता नहीं।''

''तो फिर उन मूर्तियों को किसलिए रख छोड़ा है?''

''मैं जब विवाहकर इस घर में आई थी, तो तुम्हारे बाबा मुझको इन ठाकुरों के समक्ष ले गये थे। मुझको उन्हें प्रणाम करने को कहा गया और मेरा मन कहता है कि जिनके सामने मैंने श्रद्धा-भक्ति से सीस नवाया है, उनका अपमान होने नहीं दूंगी।''

''तो उनका क्या करोगी?''

''पहले जब उनको उठाकर लायी थी, विचार था कि घर में पुनः प्रतिष्ठित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूंगी। परन्तु जब तुम्हारे पिता की इस कार्य में अरुचि देखी तो फिर बाहर निकालने का साहस नहीं कर सकी। अब कई वर्षों से यह विचार कर रही हूँ कि कभी हरिद्वार जाऊँ तो उनको गंगा में विसर्जित कर आऊँ। मेरे जीवन-काल में ये केवल दो बार ही हरिद्वार गये हैं। जब से मैंने इनके विसर्जन का विचार किया है, ये वहाँ जाने के लिए तैयार ही नहीं होते।''

परिवार की इस कथा ने राधा के हृदय में विचित्र प्रभाव उत्पन्न किया। जब से जमादार के घर के बाहर गाँव की पंचायत की ओर से सत्याग्रह और धरना हुआ था, तब से ही नित्य राधा उस घर में जाती थी। उसने भगवती को ठाकुरजी को नमस्कार करते देखा था और वह वहाँ की बातों को और अधिक जानने की लालसा करने लगी थी।

जब अपने घर में माँ को यह कहते सुना कि उसका कार्य बिना ठाकुरजी की मूर्ति का चिन्तन करने के भी चल जाता है, तो वह इस दिशा में विचार करने लगी कि वह क्या चाहती है? राधा इस विषय में मनन करने लगी। भगवती से मिलने से पूर्व तो वह मन की प्रेरणा से कार्य करती थी। मन संस्कारों के अधीन प्रेरणा देता है। राधा के संस्कार इस जन्म के शून्यमात्र थे। वह किसी पाठशाला अथवा विद्यालय में पढ़ी नहीं थी। रमणीक की पुस्तकों को देखकर ही उसने हिन्दी पढ़नी और लिखनी सीख ली थी। वह अंग्रेज़ी के अक्षर तो पहचानती थी, परन्तु शब्द जोड़ पढ़ नहीं सकती थी। अतः इस जन्म के संस्कार तो सामान्य ही थे, जो एक हिन्दू परिवार में हो सकते थे; मन्दिर में जाना, शिवद्वारे जल चढ़ाना, कभी पीपल की, जो मन्दिर के बाहर था, पूजा करना, घर में माता-पिता का कहा मानना और बस। इस सामान्य-सी प्रेरणा के अतिरिक्त जो कुछ भी वह करती थी, वे कदाचित् पूर्व-जन्म के संस्कारों के अधीन ही होता था। उसको अच्छाई और बुराई का नैसर्गिक ज्ञान था। जब केहरसिंह सरस्वती के पीछे लगा था तो वह सरस्वती को बताया करती थी कि उससे बातचीत करना ठीक नहीं। क्यों ठीक नहीं, वह समझा नहीं सकती थी। केहरसिंह ने सरस्वती से भी भाग जाने का प्रस्ताव किया था। उसने राधा से राय की, परन्तु राधा ने उसको इस बात से मना किया।

दिसम्बर की छुट्टियों में सरस्वती अपने पति के साथ जमादारपुर आई। राधा ने उससे पूछ लिया, ''सरस्वती! बहुत प्रसन्न हो!''

''बहुत।''

''जीजाजी कैसे हैं?''

''बहुत प्रेममय हैं। मेरी प्रत्येक बात मानते हैं।''

''केहरसिंह याद है क्या?''

''वह तो मूर्ख था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसके साथ भाग जाती तो?"

सरस्वती को कम्पकपी हो गई और बोली, "राधा बहन! तुम ठीक कहती थीं। पति एक साथी के अतिरिक्त बहुत कुछ होता है।"

"और वह बहुत-कुछ मास्टरजी हैं।"

"बहुत-कुछ से भी अधिक। उनसे अधिक मेरी सास है। मुझको अपनी माँ भूल गई है।"

अनायास ही राधा ने गहरा श्वास लिया।

"क्यों, क्या बात है?"

"कुछ नहीं।"

सरस्वती ने गले में बाँह डालकर कहा, "ससुराल जाने की बहुत इच्छा होती है।"

राधा के मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। फिर कुछ विचारकर बोली, "वह तो मैं नित्य जाती हूँ। अपनी सास के चरण छू आती हूँ।"

"और वह क्या कहती है?"

"कहती है, चिरंजीव रहो। सौभाग्यवती रहो। सौ वर्ष तक सौभाग्य का भोग करो। साथ ही पीठ पर हाथ फेर देती है।"

"बहुत अच्छी है वह?"

राधा आंखें मूंद चिन्तन करने लगी। सरस्वती उसका मुख देख रही थी। जब राधा ने सरस्वती के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो उसने पूछ लिया, "क्या सोच रही हो राधा?"

"यही कि तुम्हारे पेट में कोई बात रह सकेगी अथवा नहीं?"

"मेरे पेट में तो एक और बात है? परन्तु तुम्हारी बात के लिए भी स्थान है। क्या बात है?"

"तुमने पूछा है कि मेरी सास अच्छी है? मैं विचार कर रही थी कि अभी मैंने सास को बताया नहीं कि वह मेरी सास है। जब वह जानेगी तो फिर अच्छी बनी रहेगी अथवा नहीं, यही सोच रही थी।"

"तो बिना उसको बताये ही उसकी पतोहू बन गई हो?" सरस्वती ने भय की मुद्रा में पूछ लिया। राधा चुप थी। इस पर सरस्वती ने कहा, "जिस बात से मुझको मना करती थीं, वह कर बैठी हो?"

राधा सरस्वती की बात समझ, खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसने कहा, "ओह! यह नहीं सरस्वती! देखो मैं बताती हूँ। परन्तु किसी से कहना नहीं।

"मैं भापा के सुपुत्र से बचपन से प्रेम करती हूँ। पिछले वर्ष मुझको समझ आया कि मेरा उससे विवाह होगा। इससे मैं उससे डरने लगी और उससे दूर रहने लगी। एक ओर बात है, मैं उनको पति के रूप में देखती हूँ और दूसरी ओर एक ठाकुर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में, एक बनिये की लड़की का विवाह असम्भव प्रतीत होता है।

"मैं इसी दुविधा में भटक रही थी। एक दिन पुरोहितजी ने उमापार्वती की शिवजी से विवाह की कथा कही। मैं भी कथा सुन रही थी। मुझको यह समझ आया कि पार्वती-जैसी दुर्बल मानव-कन्या शिवजी-जैसे बलवान और देवों में महादेव से विवाह कर सकती है तो एक बनिये की लड़की कैसे एक ठाकुर के घर नहीं जा सकती? बस मेरे मन ने निर्णय कर लिया है और मैं तपस्या करने लगी।

तुम ससुराल गयीं और तुम्हारे पीछे यहाँ पंचायत ने बहुत झगड़ा किया। पिता का, भापा और उनके लड़के से विरोध हो गया। मेरे मन में पिताजी के प्रति ग्लानि भर गई। तब से मैं नित्य भगवती मौसी के घर जाती हूँ और अपने मन में उनको अपनी सास मान, उनसे सौभाग्य का आशीष ले आती हूँ।"

" तो यह कोई नहीं जानता?"

"मेरा मन जानता है और अब तुम जान गई हो। एक दिन भापाजी कहते थे कि युरोप में युद्ध आरम्भ हो गया है। उनका लड़का उसमें जायेगा। वहाँ यश कमाकर लौटेगा और तदुपरान्त विवाह करेगा।

"मैं अपने मन को तब तक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार कर रही हूँ।"

सरस्वती भी युद्ध के समाचार सुनती रहती थी। उसने अपने पति से जर्मनों की क्रूरता के समाचार सुने थे। जर्मन टैंको, तोपों और हवाई जहाजों से बरसाने वाले बमों से विनाश की बातें उसने सुनी थीं। इससे वह मथुरासिंह के युद्ध पर जाने की बात सुन काँप उठी।

सरस्वती ने कहा, "पर माँ कह रही है कि तुम्हारी सगाई होशियारपुर में करने का यत्न कर रहे हैं।"

"कुछ सन्देह तो मुझको भी है।"

"तो फिर क्या करोगी।"

"मैं कोई ठिकाना बना रही हूँ। जहाँ सगाई से पूर्व ही भागकर जा सकूँ।"

सरस्वती चुप रही, परन्तु वह अपनी सखी के मन की बात सुन चिन्ता अनुभव करती रही। उसने भगवती से इस विषय में बात करने का निश्चय कर लिया। लाहौर लौटने से दो दिन पूर्व सूरतसिंह ने सरस्वती और उसके पति को अपने घर मध्याह्न के खाने के लिए आमन्त्रित किया। भोजन हुआ। जब मास्टर मदनमोहन जमादार से युद्ध की चर्चा करने लगा तो भगवती एवं सरस्वती भीतर कमरे में जा बैठीं। सरस्वती ने राधा की बात चला दी। उसने कहा, "मौसी! राधा का विवाह कब होगा?"

"जब उसकी माँ करेगी।"

"मैं विचार करती हूँ कि उससे छः मास छोटी हूँ और मैं तो माँ बनने वाली हूँ। उसके विवाह की बात भी नहीं होती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सरस्वती बेटा! विवाह, सन्तान और मृत्यु—ये अपने-अपने भाग्य के अधीन होते हैं।"

"मौसी, तुम ही कुछ यत्न कर दो। बेचारी का भाग्य खुल जाएगा।"

"क्यों? उसने कुछ कहा है?" भगवती ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया।

"कहा तो है। परन्तु बेचारी बहुत ही निराश है।"

"निराशा किस बात की है? राधा बहुत ही प्यारी लड़की है। उसके विचार भी बहुत अच्छे हैं। कोई भी लड़का उससे विवाह करके अपना सौभाग्य मानेगा।"

"पर मौसी! मैं लड़के की बात नहीं कर रही। मैं तो सास की बात कर रही हूँ। पति से पहले सास की प्रसन्नता होनी चाहिए न? मेरी सास कहती है कि उन्होंने मुझको गोद में ले खिलाया है और तब से ही पसन्द किया हुआ है।"

"सच! परन्तु राधा को गोद में खिलाने वाली सास कहाँ मिलेगी?"

"वे तो कई हैं। इस गांव में भी हैं। परन्तु कोई राधा को अपनी पतोहू बनाने के लिए मानेगी क्या?"

"पर वह कौन मूर्ख है, जो राधा-जैसी मीठा बोलने वाली लड़की को अपने घर नहीं ले जाना चाहेगी?"

"पर एक बात है, मौसी! जात-बिरादरी न मिले तो क्या होगा?"

"पर यहाँ...।" भगवती कहती-कहती रुक गयी। उसको कुछ सन्देह हो गया। इससे वह सर्तक हो, पूछने लगी, "लड़की के लिए अपने से ऊंची जात में हानि नहीं।"

"मौसी! बनिया ऊँची जात है या ठाकुर?"

"ठाकुर।" भगवती सब समझ गयी। वह सरस्वती की बात करने में चतुराई पर विस्मय कर रही थी। उसने अनुभव किया, चार मास के वैवाहिक जीवन में ही यह लड़की बात करने का ढंग सीख आई है।

सरस्वती ने कह दिया, "तो ठीक है। राधा ने अपनी सास का निर्वाचन किया है और वह ठाकुर जाति की है। परन्तु मौसी! लड़की को क्या करना चाहिए, जिससे ऊंची जाति की सास प्रसन्न हो जाये?"

"सरस्वती!" भगवती ने हँसते हुए कहा, "लाहौर जाकर तुम वकालत पढ़ने लगी हो क्या?"

"नहीं मौसी!"

"परन्तु तुमने अपनी सखी की वकालत बहुत खूबी से की है।"

"मौसी! मैं तो तुम्हारी बच्ची हूँ। तुमसे ही सब-कुछ सीखी हूँ।"

"अच्छा सुनो। वह राधा की ठाकुर सास, राधा को बहू बना बहुत प्रसन्न होगी। परन्तु बेटी! राधा अभी अल्प-वयस्क है। उसको अपने माता-पिता को प्रसन्न करना चाहिए। इसके लिए उसे तपस्या करनी चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती ने भगवती का कथन राधा को बता दिया। राधा इससे बहुत प्रसन्न थी और वह बिना चूके नित्य भगवती के पास जाने लगी। भगवती उसको गृह मंदिर में ले जाती। राधा ठाकुरजी के चरणों में शीश नवाती, उन पर पुष्प चढ़ाती, फिर चन्दन से अपने मस्तक पर तिलक लगाती और तब भगवती के चरण-स्पर्श करती।

सरस्वती ने जाने से पूर्व राधा को बताया था कि उसकी अवस्था में अपने शिवजी को प्रसन्न करने की इतनी आवश्यकता नहीं, जितनी अपने माता-पिता को राज़ी करने की है। एतदर्थ वह इस दिशा में विचार करने लगी।

राधा ने अपनी माँ से भगवती के गुण-गान करने आरम्भ कर दिये थे। एक दिन माँ ने पूछ लिया, "राधा! बहुत प्रशंसा करती हो, मौसी की?"

"इसलिए की वह बहुत अच्छी हैं। बहुत मीठा बोलती है। सबको आशीर्वाद देती हैं और किसी का बुरा नहीं चाहती।"

"राधा! तुम्हारे पिता तुम्हारा विवाह होशियारपुर में करना चाहते हैं।"

"क्यों?"

"एक धनी-मानी परिवार है। पाँच भाई हैं। पिता जीवित हैं। सब इकट्ठे हैं। तुम वहाँ सुखी रहोगी।"

"माँ! मैं वहाँ विवाह नहीं करूंगी।"

"क्यों?"

"बस, कह दिया।"

"परन्तु विवाह तो माता-पिता के करने से होता है।"

"हाँ, परन्तु मैं घर से भाग तो सकती हूँ।"

"भागकर कहाँ जाओगी?"

"जहाँ उस समय मन करेगा।"

इसके पश्चात् मक्खनी और देवीदयाल में वार्तालाप हुआ और फिर देवीदयाल और राधा में। राधा से बात करने के बाद देवीदयाल ने मक्खनी को कह दिया, "तुम लड़की के साथ जमादार के घर जाया करो। उस घर का चलन हमारे घर के चलन से मेल नहीं खाता।"

उसी दिन मध्याह्न के भोजनोपरान्त राधा जाने लगी तो मक्खनी ने पूछ लिया, "भगवती के घर जा रही हो?"

"हाँ।"

"मैं भी चलूँ?"

"हाँ, बहुत मज़ा रहेगा।"

"क्या मज़ा रहेगा?"

"बेटी के साथ माँ को भी अक्ल आने लगेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो वह अकल सिखाने का स्कूल है?"

"हाँ माँ! नित्य रामायण की कथा होती है। हरि-कथा और सत्संग दोनों दुर्लभ हैं। ये वहाँ प्राप्त होते हैं। इनसे बुद्धि निर्मल होती है। जब निर्मल बुद्धि से विचार किया जाता है तो फिर भूल नहीं होती।"

माँ के जाने में उद्देश्य न तो हरि-कथा सुनने का था, और न ही सत्संग करने का। वह तो अपनी लड़की पर जासूसी करने जा रही थी।

वह गई और फिर नित्य जाने लगी। भगवती को राधा की पीठ पर हाथ फेरते हुए आशीर्वाद देते देख, उसके मन में गुदगुदी होती थी। उसकी सन्तान को आशीर्वाद मिलता था।

दिन पर दिन व्यतीत होते गए। जनवरी में यह क्रम आरम्भ हुआ और अब मार्च आ गया था। इतने काल में मक्खनी की रुचि कथा सुनने में राधा से भी अधिक हो गई थी।

देवीदयाल होशियारपुर राधा की सगाई की तिथि निश्चित कर आया तो मक्खनी ने कह दिया, "वहाँ सगाई नहीं होगी।"

देवीदयाल ने विस्मय में पूछा, "क्यों?"

"लड़की नहीं चाहती।"

"पर मैं तो तिथि निश्चित कर आया हूँ।"

"तो अब उसको रद्द कर आइये।"

"इससे बिरादरी में भारी अपमान हो जायेगा।"

"तो फिर क्या होगा? कह दीजिए कि लड़की पढ़ती है। उसकी जिद्द कि है वह एक-दो वर्ष बाद सगाई तथा विवाह करेगी।"

"नहीं, मक्खनी! यह नहीं होगा। अगले सप्ताह पंचमी को सगाई होगी और होली के बाद के दिनों में विवाह हो जाएगा।"

"मैं बता देती हूँ कि लड़की भाग जायेगी।"

"मैं उसको ताला लगाकर बन्द कर रखूंगा।"

"और मैं ताला खोल दूंगी।"

"क्यों?"

"इसलिए कि यह अपराध है। भूल गए है आप, भापा को मकान में रोकने के लिए आपको क्षमा माँगनी पड़ी थी। इस पर छूटे भी थे तो भारी सिफ़ारिश से।"

"वह बात दूसरी थी। भापा और राधा में बहुत अन्तर है।"

"पर बात एक ही है।"

"पर मैं पूछता हूँ बात क्या है?"

"आप कुछ दिन ठहरिये। मैं जान सकी तो बता दूंगी। वर्तमान अवस्था में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की या तो विष खाकर मर जाएगी, अन्यथा घर से भाग जाएगी और मैं उसके भाग जाने में सहायक हो जाऊंगी।''

''क्यों!''

''मैं उसका मर जाना पसन्द नहीं करती।''

देवीदयाल इस नई परिस्थिति से घबरा उठा। उसने तो पत्नी को राधा पर जासूसी करने के लिए भेजा था, परन्तु वहाँ जाकर माँ और लड़की में अधिक मतैक्य हो गया, और पति-पत्नी में मत-विरोध।

देवीदयाल ने बहाना बनाकर सगाई रोक दी। इस पर भी वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि जमादार के घर में क्या जादू खेला जाता है, कि उसकी लड़की के साथ उसकी पत्नी भी उसका विरोध करने लगी है।

एक दिन वह जमादार सूरतसिंह की बैठक में जा पहुँचा। जमादार अपनी बन्दूक साफ कर रहा था। देवीदयाल बन्दूक की सफाई होती देख, विस्मय में मुख देखता रह गया।

सूरतसिंह ने कहा, ''आओ लाला देवीदयाल! बहुत दिनों के बाद दर्शन दिए हैं। गाँव में भी रहते हो अथवा नहीं?''

''नहीं भापा।''

''कहाँ रहते हो?''

''अंग्रेज़ बहुत बदमाश कौम है। इस युद्ध-काल में भी टरका देना चाहती है।''

''देखो देवीदयाल! बनियों को तो सब टरका देते हैं। कोई शूरवीर मुकाबले में हो तो उसको टरकाया नहीं जाता। उससे लड़ा जाता है।''

''हिन्दुस्तानी शूरवीर तो हैं।''

''क्या शौर्य दिखाया है तुम्हारे गुरु ने? देखो, मैं मथुरा को मिलने लाहौर गया था। वह आजकल एक ऐडवोकेट त्रिलोकचन्द की कोठी में रहता है। बहुत बड़ा वकील है। पाँच सौ रुपया एक पेशी का लेता है और दिन में दो-तीन पेशियाँ हो जाती हैं।

''उसने बताया कि वाइसराय ने कांग्रेस-को युद्ध में सहयोग देने के लिए कहा था और कहा था कि युद्ध के पश्चात् देश में विधान बनाने के लिए सभा बना दी जायेगी। गांधीजी तो मान रहे थे, परन्तु पंडित जवाहरलाल और मौलाना आजाद नहीं माने। गांधीजी की आत्मा तो यह कहती है कि हिटलर अधर्मी है और उसका विरोध करना चाहिए, परन्तु हिटलर ने रूस से सन्धि कर ली और पंडितजी रूस के हक में हैं। इसी कारण वे हिटलर का भी विरोध करना नहीं चाहते।

''इस सौदेबाजी के लिए और सौदेबाजी में अधर्म का पक्ष लेने के लिए गांधीजी भी तैयार हो गये हैं।''

''वह वकील कोई पागल है जो ऐसी बातें करता है। अपने देश की वकालत कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर्म का पक्ष हो गया।"

"देखो, मैं बताता हूँ। यह कर्मू जुलाहा मेरा विरोधी है। इसने एक दिन मुझको मेरे मकान में ही कैद कर रखने का यत्न किया था। यह अभी भी मेरे विपरीत वकवास करता रहता है। यदि कल इसके घर में डाका पड़ जाये और डाकू इसकी स्त्री और लड़की को उठाकर ले जाना चाहें, तो मुझको अपनी बन्दूक ले, उसकी सहायता के लिए कहोगे अथवा मेरे यह कहने को पसन्द करोगे कि मरने दो साले को। गाँव में मेरा एक शत्रु कम हुआ।

"यही गांधीजी और कांग्रेस कर रही है। इंग्लैंड ने हमारे साथ शत्रुता की है। इस पर भी वे जर्मनों और रूसियों से भले लोग हैं। इन दोनों ने मिलकर इंग्लैंड पर आक्रमण कर दिया है। दिन-रात हवाई जहाज़ों से बम गिराते रहते हैं। इस समय यह कहना कि हिन्दुस्तान छोड़ जाओ, हमको इंग्लैंड के शत्रुओं से भी सुलह कर लेने का अधिकार मिल जाये, यह न नीति है न ईमानदारी।

"भगवान् जाने जब कभी भारत स्वतन्त्र हो और उस पर शत्रु आक्रमण करे और हमारे पड़ोसी देश भी हमारे शत्रु के साथ सन्धियाँ करते फिरें, तो हम कैसा अनुभव करेंगे?"

"जब हम स्वतन्त्र होंगे, तब देख लेंगे।"

सूरतसिंह ने यह कह दिया, "भगवान् न करे कि इन बनियों के हाथ में देश का राज्य आये। ये स्वयं मरेंगे और देश तथा सारी प्रजा को मुसीबत में डाल देंगे।"

"तो भापा! तुम अंग्रेजों के साथ मिल, इन बनियों का कचूमर निकाल दो।"

"मैंने तो कल 'वार ऑफिस' को अपना पूर्व परिचय देकर, अपनी सेवाएँ युद्ध-काल के लिए अर्पित कर दी हैं। मेरा रक्त जर्मनी और इटली के अत्याचारों के समाचार सुन-सुन खौलने लगा है। कल मैंने पत्र लिखा है ओर आज मैंने बन्दूक निकाल साफ़ करनी आरम्भ कर दी है।

"मैं एक छोटा-सा रेडियो लाहौर से खरीद लाया हूँ और शाम को युद्ध समाचार सुना करता हूँ। यह कहा जा रहा है कि जर्मनी और रूस मिलकर भारत पर आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं और मैं इन खुंखार दरिंदों से अपने देश की रक्षा करने के लिए तैयार हो रहा हूँ।"

"हम तो रूस का स्वागत करने की तैयारी कर रहे हैं।"

"भगवान् आपकी तैयारी से ही पहले ही आपको संसार से उठा ले। आप जानते नहीं कि आप किनका स्वागत करने के लिए तैयार हैं।"

देवीदयाल आया था मक्खनी और राधा के विषय में जानकारी प्राप्त करने और फंस गया राजनीति में। इससे जमादार की बद्दुआ को मन-ही-मन पी गया और पूछने लगा, "भापा! आपके घर में नित्य मध्याह्न के समय क्या होता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों? किसलिए पूछ रहे हो?"

"भापा! नित्य राधा और राधा की माँ घर को ताला लगा, इधर आ जाती हैं।"

"ओह! भाई, राधा की मौसी नित्य रामायण की कथा करती है। वे भी सुनने आ जाती हैं।"

"तो कथा पंडिताइन से क्यों नहीं कराते?"

"इसलिए कि पंडिताइन पढ़ी तो है परन्तु अर्थ ठीक नहीं लगा सकती। यह तुम्हारी भाभी खूब लगाती है।"

"मुझको सन्देह होने लगा है कि वे गलत अर्थ लगाती हैं।"

"क्या गलत अर्थ लगाए हैं उसने?"

"राम-रावण के युद्ध की बातें सुन-सुन बेटी बाप से और पत्नी पति से लड़ने लगी है।"

सूरतसिंह हँस पड़ा। हँसते हुए उसने पूछ लिया, "और इस युद्ध में राम कौन है और रावण कौन है?"

देवीदयाल इस व्यंग का अर्थ नहीं समझ सका। इसलिए टुकर-टुकर मुख देखता रह गया। जमादार ने अर्थ समझा दिया—"देवीदयाल! युद्ध सदा भले और बुरे में होता है। बुरे लोग रावण का प्रतीक होते हैं और भले राम का। दो भले लोग कभी नहीं लड़ते और दो बुरे भी परस्पर नहीं लड़ते। लड़ने वालों में सदा अच्छाई और बुराई का अन्तर रहता है। भले ही अन्तर की मात्रा कुछ भी हो।

"देखो, हिटलर और स्टालिन एक ओर हैं। ये दोनों रावण के प्रतीक हैं। और इग्लैंड तथा फ्रांस दूसरी ओर हैं। आज ये राम, लक्ष्मण का प्रतीक हैं।"

"भापा! फ्रांस तो गया।"

"नहीं, गया नहीं। लक्ष्मण को मेघनाथ की शक्ति से मूर्छा आ गयी। हनुमान, मेरा मतलब है 'डीगाल' उसके लिए संजीवनी लेने गया हुआ है। फ्रांस जी उठेगा, और फिर दोनों भाई रावण और कुम्भकर्ण का सामना करेंगे।"

"भापा! मक्खनी को कहला दो कि मुझसे न लड़ा करे। न मैं रावण हूँ न ही कंस हूँ।"

"क्या लड़ाई की बात की है उसने?"

"मैं राधा की सगाई होशियारपुर में झांगीमल्ल करोड़ीमल्ल वालों के छोटे लड़के से कर आया था। माँ-बेटी दोनों बागी हो गयी हैं और कहती हैं वहाँ विवाह नहीं होगा, और यदि मैंने बलपूर्वक किया तो घर छोड़कर भाग जायेंगी।"

"तो देवीदयाल! किसी अन्य स्थान पर विचार कर लो। आखिर घर में झगड़ा खड़ाकर, विवाह कैसे कर सकोगे?"

"भापा! इतना अच्छा रिश्ता मिलेगा नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या अच्छाई है उनमें?"

"वे लखपति हैं।"

"इससे कोई अच्छा-बुरा नहीं होता।"

"तो किससे होता है?"

"देखो देवीदयाल! तुम कांग्रेस में काम करते हो। काम का ढंग अच्छा हो चाहे बुरा, है तो देश का। अपना धन, समय और परिश्रम व्यय करते हो और कैद होने के लिए भी तैयार हो। बताओ, उनके परिवार वालों ने भी कोई जनता के हित का कार्य किया है? कोई मन्दिर बनाया है? कोई अस्पताल, स्कूल खुलवाया है? किसी सभा-समाज को लाख-दो लाख रुपया दिया है? उनके परिवार में कभी किसी ने धर्म, देश अथवा जाति के लिए कोई त्याग किया है? बताओ क्या किया है उन्होंने, अच्छेपन का काम?"

देवीदयाल मुख देखता रह गया। सूरतसिंह ने उसे चुप देख, कह दिया, "राधा तुम्हारी लड़की है। वह समाज-कल्याण का कार्य करने वालों को अच्छा समझती है। इससे वह वहाँ विवाह पसन्द करेगी, जहाँ अच्छे लोग होंगे।"

"तो यह बात भाभी ने माँ-बेटी को पढ़ा दी है?"

"नहीं देवीदयाल! भगवती ने कुछ नहीं सिखाया। उसने तो रामायण की कथा सुनाई है। हरि-कथा सुनने में बुद्धि निर्मल होती है और निर्मल बुद्धि ऐसे ही विचार करती है, जैसे मैंने बताए हैं।"

4

देवीदयाल ने अपनी पत्नी से पूछ लिया, "आखिर कब तक प्रतीक्षा करनी होगी?"

"कितना रुपया व्यय करने वाले है आप राधा के विवाह पर?"

"बीस-पच्चीस हजार तो करूंगा ही।"

"तो रुपया मुझको दे दीजिए और समझिए कि विवाह हो गया।"

"क्या मतलब?"

"बात यह कि एक बड़ा भारी युद्ध हो रहा है। सारे संसार में आतंक छाया हुआ है। यहाँ लोग विचार कर रहे हैं कि रूस हिन्दुस्तान पर आक्रमण करेगा। तब कौन मरेगा और कौन जीएगा। इस कारण युद्ध का भय मिट जाने पर विवाह होगा।"

"पर होगा कहाँ?"

"यह अभी कैसे बता सकती हूँ! जहाँ ईश्वर को स्वीकार होगा।"

देवीदयाल बहुत परेशान था। उसकी सब सम्पत्ति घर के एक तहखाने में एक लोहे के सन्दूक में रखी थी और सन्दूक तथा तहखाने की चाबी मक्खनी के पास रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। इससे उसने कह दिया, "रुपया तो तुम्हारे पास ही रखा है। परन्तु मेरी इच्छा थी कि जमादारपुर में बारात आये। नाच-गाने हों, बाजे बजें, खाना-पीना और सब-कुछ बड़ी शान से हो।"

"यह तो ठीक है। परन्तु इसकी बहुत जल्दी है क्या?"

"हाँ, युद्ध आ रहा है और कौन जीएगा कौन मरेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। जी करता है एक जलसा तो कर जाऊँ?"

"तो ऐसा करिए, एक अपना विवाह और रचा लीजिए और यह जलसा-जुलूस उस पर कर दीजिए। राधा का विवाह युद्ध का भय मिट जाने पर ही होगा।"

"सारे संसार में विवाह हो रहे हैं। एक मक्खनी की लड़की को ही मरने का भय लग रहा है।"

"मरने का नहीं, विधवा हो जाने का।"

"तो उसका पुनः विवाह हो जाएगा।"

"वह मानेगी नहीं।"

"पहले तुम मानो तो उसको एक दिन में मना लूंगा।"

"जी नहीं! पहले उसको मना लो, फिर एक दिन में मैं मान जाऊंगी।"

देवीदयाल हँस पड़ा। इसी प्रकार बात चलती रही और जून 24 तारीख आ गई। मक्खनी और राधा भगवती की कथा सुनने गयीं तो बैठक में मथुरासिंह बैठा, पिताजी को कुछ कागजात दिखा रहा था।

मथुरासिंह के आने की प्रतीक्षा इक्कीस जून से ही हो रही थी, परन्तु रिक्रूटिंग अधिकारी मिस्टर भोंसले के कहने पर वह दो दिन लाहौर में ही रहा था। भर्ती होने की स्वीकृति आ गई थी और अस्थायी कमीशन पाने के लिए उसको पाँच जुलाई को प्रारम्भिक परीक्षा पास करने के लिए देहरादून जाना था।

मथुरासिंह कमीशन मिलने की बात से प्रसन्न था। इस पर भी वह उत्तीर्ण न हो सकने की आशंका से चिन्तित अवश्य था। पिता ने सरकारी पत्र देखा। पत्र अंग्रेजी में था। वह पढ़ नहीं सका। इस पर मथुरासिंह ने पढ़कर सुना दिया।

सूरतसिंह ने राधा और मक्खनी को भीतर आते देखा तो कह दिया, "राधा और उसकी माँ आ गई हैं।"

मथुरासिंह उठकर उनके पीछे-पीछे भीतर चला गया। भगवती मन्दिर वाले कमरे में रहल पर रामायण की पोथी रख, पढ़ना आरम्भ करने के लिए तैयार बैठी थी। मथुरासिंह ने वहाँ पहुँच कह दिया, "चाची! पाँय लागूँ।"

"ओह, मथुरा! छुटिट्यों पर आये हो?"

"हाँ चाची! और सेना में भर्ती होने देहरादून जा रहा हूँ।"

"कब?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पाँच जुलाई को वहाँ पहुँचना है। लिखा है तीन दिन तक परीक्षा होगी। यदि ले लिया गया, तो सेना में अफ़सर बन जाऊंगा।"

"सच? भापा से भी बड़ा अफ़सर?"

"हाँ चाची! परन्तु कहते हैं, परीक्षा बहुत कठिन होती है। देखो, पास होता हूँ या नहीं।"

"तुम पास हो जाओगे।"

"चाची! तुम्हारा आशीर्वाद चाहिए और बहिन राधा की शुभ कामना।"

राधा का मुख लाल हो गया और वह भूमि की ओर देखने लगी।

"आओ मथुरा! तुम भी कथा सुनो।" भगवती ने कह दिया। मथुरासिंह भी कथा में बैठ गया। भगवती ने कथा आरम्भ कर दी। युद्ध का ही प्रसंग था। लक्ष्मण और मेघनाथ के युद्ध की कथा थी।

कथा के बाद भगवती ने प्रसाद में बताशे बाँटे और सब उठ खड़े हुए। मक्खनी भगवती से बातें करने लगी। गाँव की अन्य स्त्रियाँ चली गयीं। मथुरासिंह ने राधा से पूछ लिया, "राधा, ठीक हो?"

राधा ने स्वास्थ्य-समाचार देने के स्थान कह दिया, "मैं आपसे एक बात पूछना चाहती हूँ।"

"हाँ, पूछो।"

"यहाँ नहीं, एकान्त में।"

"क्यों, क्या बात है?"

"कुछ है।"

"तो मैं तुम्हारे घर आऊंगा। रमणीक से भी तो मिलना है और चाचा को नमस्ते करनी है।"

"हाँ आइयेगा। कब आयेंगे?"

"आज तीसरे प्रहर। चाचाजी से तो दूकान पर ही मिल लूंगा।"

"हाँ। रमणीक पाँच बजे स्कूल से लौटता है।"

मक्खनी घर जाने को तैयार हुई तो मथुरासिंह से पूछने लगी, "हमारे घर भोजन के लिए कब आओगे, बेटा।"

"चाची! वह तो रविवार के दिन ही ठीक रहेगा। वैसे चाचा और रमणीक से मिलने, आज तीसरे प्रहर आऊंगा।"

"अच्छा चाय वहाँ ही पीना।"

तीसरे प्रहर मथुरासिंह राधा के घर पहुँच गया। देवीदयाल घर पर नहीं था। वह किसी से मिलने पड़ोस के एक गाँव में गया हुआ था। उसने घर का द्वार खटखटाया तो राधा द्वार खोलने आ गई। पूर्व इसके कि मथुरासिंह भीतर जाए, राधा ने मार्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रोकते हुए कहा, "मैं आपको यह कहना चाहती हूँ कि आप मुझको बहिन मत कहा करो।"

"क्यों?"

"मैं बहिन बनना नहीं चाहती। मैं...मैं...।" वह कह नहीं सकी और रक्ताभ मुख से भूमि की ओर देखने लगी। दो क्षण तक आगे कहने का यत्न कर वह लौट पड़ी और मकान में चली गयी। मथुरा इसका अर्थ समझ गया था, परन्तु वह उसकी इच्छा की पूर्ति में अनेक बाधाओं को समझ, उसका समाधान चाहता था। वह अभी कुछ कह भी नहीं सका था कि राधा भीतर चली गई। मथुरासिंह ने द्वार में घुसते हुए आवाज दे दी, "चाची! चाची!"

मक्खनी भीतर के कमरे से चली आयी। मथुरासिंह को देख, उसने कहा, "आओ बेटा! आओ।" वह उसको बैठक-घर में ले गई ओर वहाँ बैठा, दीवार से लगी घड़ी में समय देख बोली, "रमणीक अभी आधे घंटे में आएगा। रमणीक के पिजाजी भी कहीं गए हुए हैं। वे भी आने ही वाले हैं।"

मथुरासिंह बैठा तो मक्खनी ने बैठते हुए कहा, "राधा चाय का सामान ठीक करने गयी है।"

"अभी जल्दी क्या है? चाची! रमणीक के आने तक तो ठहरूंगा ही।"

मक्खनी ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "सुना है वहाँ तुम किसी बड़े वकील की कोठी में रहते हो।"

"हाँ चाची! एक हाईकोर्ट के वकील श्री त्रिलोकचन्द्र हैं। पिछले वर्ष मैं पहाड़ पर भ्रमण करने गया तो वकील साहब भी सैर करने गए हुए थे। मार्ग में हम दस दिन इकट्ठे रहे तो परस्पर घनिष्ठता हो गयी। शिमला में उन्होंने मुझे अपने मकान में रख लिया। वहाँ उनकी पत्नी और बच्चों से परिचय हो गया। बच्चे मुझसे पढ़ने लगे और उनकी माँ मुझको अपने पुत्र के समान समझने लगीं। जब हम लाहौर गए तो उन्होंने मुझको अपनी कोठी में रख लिया। मैं दोनों बच्चों को पढ़ा देता हूँ और उन्होंने मुझको अपनी कोठी में एक कमरा दे रखा है। भोजन भी उनके साथ ही करता हूँ।"

"तब तो बहुत आराम से रह रहे होगे, इस बार?"

"हाँ, बोर्डिंग हाउस के खाने से, अच्छा खाना मिलता है और पढ़ने की अधिक सुविधा रहती है।"

"पर बेटा! तुम सेना में किस लिए भर्ती हो रहे हो?"

"पिताजी कहते थे कि यह हमारा पारिवारिक कार्य है। इसको करना ही चाहिये। मैं अभी निश्चय नहीं कर सका था कि वकील साहब से बात चीत हो गई। उन्होंने बताया कि देश के युवकों को देश की रक्षा के लिए सैनिक कार्य सीखना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चाची! आज सेना का कार्य एक इंजीनियर के कार्य से भी कठिन हो गया है। इसमें बहुत कुछ सीखने और अभ्यास की आवश्यकता रहती है। स्वराज्य मिलेगा तो हमको देश की सेना में भर्ती हो, इसकी सेवा के लिए तैयार रहना चाहिए।"

"पर रमणीक के पिता कहते हैं कि स्वराज्य सरकार में सेना और पुलिस की आवश्यकता नहीं रहेगी। यहाँ रामराज्य होगा।"

"परन्तु चाची! रामराज्य में भी सुभट्ट और सैनिक थे। दशरथ और राम भी तो युद्ध लड़ते थे। यदि विश्वामित्र ने राम को युद्ध के लिए अस्त्र-शस्त्र न दिये होते तो रावण और मेघनाथ मरते कैसे?"

मक्खनी आश्चर्यवत् मुख देखती रह गई। फिर कुछ विचार कर बोली, "मेरा जी डरता है।"

"किस बात से?"

"युद्ध से और सुना है जर्मनी वाले अंग्रेज़ी सेना का ऐसा सफाया कर रहे हैं, जैसे ये मच्छर-मक्खियाँ हो।"

"ये सब कहने की बातें हैं। जर्मनी पिछले छः-सात वर्ष से छिपे-छिपे शस्त्रास्त्र बनाने की तैयारी करता रहा और अंग्रेज तथा फ्रांसीसियों से बड़ी मीठी-मीठी बातें कर, उनको धोखे में रखता रहा है। इस कारण आरम्भ में जीत उसकी हो गई है। परन्तु अन्त में उसकी पराजय होगी, यह निश्चय है।

"अब पूर्ण अंग्रेज़ी राज्य में शस्त्रास्त्र बनने लगे हैं और एक-दो वर्ष में ही जर्मनी पीछे रह जायेगा। तब अंग्रेज़ विजयी होंगे।"

"तुम्हारे चाचा तो बहुत भयंकर बातें करते हैं।"

"चाची! तुम चिन्ता मत करो। मैं युद्ध से जीवित लौटूंगा। तुम्हारा आशीर्वाद चाहिये।"

बात पुनः वकील साहब की पत्नी, उनकी कोठी और खाने-पीने के विषय में होने लगी। अभी कॉलेज की पढ़ाई और खेल-कूद की बातें हो रही थीं कि देवीदयाल आ गया। गर्मी से व्याकुल वह आया तो मक्खनी ने उठ कर अपने पति के लिए ठंडा शर्बत बना दिया। देवीदयाल ने मथुरासिंह को देख पूछा, "मथुरासिंह! कब आये हो?"

"आज प्रातः काल ही पहुँचा हूँ।"

"मैंने तो सत्याग्रह के लिए अपना नाम दर्ज करा दिया है।"

"सत्याग्रह? कैसा सत्याग्रह?"

गांधीजी व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ करने वाले हैं। इस बार एक-एक स्वयंसेवक सरकारी अधिकारियों को सूचना देकर युद्ध के कार्यों में विघ्न डालने का यत्न करेगा। सूचना में सत्याग्रही वह स्थान, जहाँ तोड़-फोड़ का कार्य करना होगा, वह समय और दिन, जब वह कार्य करना होगा, बता देगा और फिर वह वहाँ पहुंच, तोड़-फोड़ करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का यत्न करेगा। इसलिये पूर्ण देश में स्वयं-सेवक भर्ती हो रहे हैं। मैंने अपना नाम दे दिया है।''

''चाचा! इससे क्या होगा?''

''होगा यह कि सरकार को ज्ञात हो जायेगा कि हिन्दुस्तान के लोग उनके साथ युद्ध में सम्मिलित नहीं हैं।''

''कितने लोगों ने नाम दे दिये है?''

''अभी तो पाँच सौ के लगभग हैं। परन्तु इनकी संख्या बढ़ेगी।''

''चाचा! जानते हो पिछले छः-सात मास में सेना में भर्ती कितनी हुई है?''

''कितनी हुई है?''

''दो लाख के लगभग।''

''ठीक है। ये लोग भाड़े के टट्टू हैं। इधर लोग स्वेच्छा से भर्ती हो रहे हैं।''

''सेना में भी तो स्वेच्छा से भर्ती हो रहे हैं। यहाँ हिन्दुस्तान में 'काँस्क्रिप्शन' नहीं हो रही। हाँ, सेना में एक बहुत साधारण-सा वेतन मिलता है। परन्तु चाचा। मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि यदि पाँच-छः सौ स्वयं-सेवकों के युद्ध-विरोधी अभियान से देश में युद्ध का विरोध प्रकट होता है, तो दो लाख सैनिकों की भर्ती से क्या प्रकट होगा?''

''कुछ नहीं। अधिक-से-अधिक यह कहा जायेगा कि सरकार के पास धन बहुत है और हिन्दुस्तान में गरीबी बहुत है।''

मथुरासिंह हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, ''चाचा, बात यह है कि देश में एक बहुत बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो गांधीजी के उपायों को ठीक नहीं मानते। इस पर भी वे गांधीजी की निन्दा नहीं करते। यह तो गांधीजी ही हैं, जो उन लोगों की निन्दा करते हैं, जो उनके ढंग को ग़लत समझते हैं।''

''परन्तु देश के समाचार-पत्र गांधीजी की बपौती नहीं। वे भी तो गांधीजी की प्रशंसा करते हैं।''

''प्रशंसा करने में मुझको आपत्ति नहीं, परन्तु देश में कांग्रेस के अतिरिक्त देश का काम करने वालों की निन्दा करने से तो कोई प्रयोजन नहीं। यह एक अनाधिकार-चेष्टा है। गांधीजी की ओर से हो अथवा समाचार-पत्रों की ओर से। यह निन्दा अशोभनीय है।''

''परन्तु उन्होंने कभी ऐसी निन्दा नहीं की।''

''की क्यों नहीं! पंडित जवाहरलाल को सदा अन्य नेताओं पर अधिमान देते रहे। 1929 में अपने पर, 1936 में सरदार पटेल पर और फिर 1939 में बाबू सुभाष बोस पर। हिंसावादी क्रान्तिकारियों की निन्दा में उन्होंने सभा की, परन्तु मेरठ-केस के कम्यूनिस्ट क्रान्तिकारियों से उन्होंने सहानुभूति प्रकट की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब भी कांग्रेस में उनसे मतभेद रखने वालों का बल बढ़ा, वे राजनीति त्याग बैठे और ज्यों ही लोग उनकी हाँ-में-हाँ मिलाने वाले आये, वे राजनीति में आ गये।''

''मथुरा! तुम्हें किसी ने बरग़ला दिया है?''

''नहीं चाचा! मैं स्वयं बुद्धि से विचार कर कहता हूँ कि इस समय सेना में भर्ती होना देश की सेवा है और यदि कोई युद्ध-कार्य में विघ्न डालता है तो वह उन भर्ती हो रहे सैनिकों को हानि पहुँचाने वाला सिद्ध होगा।''

''परन्तु युद्ध में तो भर्ती नहीं होना चाहिए। तुम्हारे पिता ने भी अपने को सेना-कार्य के लिए उपस्थित किया था। मुझे मालूम नहीं, क्या परिणाम हुआ है?''

''उनको धन्यवाद का पत्र आ गया है और लिखा है कि देश के युवारक्त रहते हुए वृद्ध रक्त की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। हाँ, उनका नाम रजिस्टर कर लिया है और यदि आवश्यकता पड़ती है तो उनको बुला लिया जायेगा। चाचा, मैं जा रहा हूँ। पाँच जुलाई को मेरी पेशी है।''

''कहाँ?''

''देहरादून में। ऐसा प्रतीत होता है कि मैं ले लिया जाऊंगा मैं युवा हूँ, स्वस्थ हूँ और फुटबाल का खिलाड़ी हूँ। मुझे कमीशन मिलेगा और मैं सेना में अधिकारी बनूंगा। स्वराज्य होने तक सेना-कार्य सीख लूंगा। तब स्वतंत्र भारत की सेना में कार्य करूंगा।''

''स्वतंत्र भारत को सेना की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हमारा विचार किसी भी दूसरे देश पर आक्रमण करना नहीं होगा। अतः कोई दूसरा भी हम पर आक्रमण नहीं करेगा।''

''ठीक है। तब मुझको अवकाश मिल जायेगा और मैं अपना शेष जीवन, विवाह कर गाँव में व्यतीत करूंगा।''

''तो पहले विवाह नहीं करोगे?''

''युद्ध पर जाते हुए मैं यह मोह का फंदा गले में डाल नहीं सकता।''

5

रमणीक आया तो चाय लग गयी। चाय के साथ राधा ने पकौड़े और नमकीन उबले चने बनाकर रख दिए। जब मथुरा चाय पी रहा था तो राधा माँ के पास चुप-चाप बैठी थी। मथुरा ने कह दिया, "चाचा! मेरे युद्ध से लौटने तक राधा का विवाह कर देंगे न?"

"विचार तो यही है।"

"तो मैं जाने से पूर्व ही आशीर्वाद देकर जाऊँ?"

"मैं तो चाहता हूँ कि तुम्हारे युद्ध-क्षेत्र जाने से पूर्व ही राधा का कन्यादान हो जाए! परन्तु राधा की माँ झगड़ा कर रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों चाची क्या कहती हो?"

"मैं तो केवल यह कहती हूँ युद्ध के बाद विवाह होगा। लोग कह रहे है कि अंग्रेज दुर्बल है और रूस तथा जर्मनी दोनों मिलकर हिन्दुस्तान पर आक्रमण करेंगे। ये दोनों भारत के हिस्से का आपस में बँटवारा कर लेंगे । उस समय यहाँ घोर उपद्रव मचेगा। अतः विवाह भी उसके बाद ही हो सकेगा।''

"चाची! तुम व्यर्थ में डर रही हो। राज्य परिवर्तन से सब लोग मरेंगे नहीं और संसार की सब स्त्रियाँ विधवा नहीं होंगी।"

"तो फिर ऐसा करो। पहले अपना विवाह कर लो। फिर हम राधा का भी कर देंगे।"

"पर चाची मैं तो युद्ध में लड़ने जा रहा हूँ।"

"क्या जाने राधा का घर वाला भी युद्ध को चल पड़े तब क्या होगा?"

"पर चाची अग्रवालों की भर्ती नही हो रही।"

"जब देश पर कठिनाई की घड़ी आएगी तो कौन-कौन युद्ध करेंगे और किसको कितना त्याग करना पड़ेगा, कैसे कहा जा सकता है।"

"सुना है न मथुरासिंह!'' अब देवीदयाल बोल पड़ा, "यह औरत किस दिशा में विचार कर रही है? इसलिए मैं सत्याग्रह में नाम दे आया हूँ। अब के कैद हुआ तो युद्ध बंद होने से पूर्व छूटूंगा नहीं। तब यह जाने, इसका काम जाने। न मैं यहाँ रहूँगा, न देखूंगा कि क्या खराबी होती है और क्या नहीं होती ?"

मथुरासिंह ने पति-पत्नी को लड़ने के लिए तैयार देख, कह दिया, "चाची! युद्ध तो दस वर्ष तक भी चल सकता है। क्या तब तक राधा को घर बैठा रखोगी?"

"बेटा! जब तुम बिना विवाह के दस वर्ष तक रह सकते हो तो कोई और भी रह सकता है। रही रमणीक के पिता की बात। ये सत्याग्रह आदि में नहीं जायेंगे। सत्याग्रह इनके मान की बात नहीं है। यदि कहीं जेल मे चले गए तो नमक-सत्याग्रह वाले दिनों की भांति इनकी सुख-सुविधा का प्रबंध जेल के बाहर से करना पड़ेगा। तब कर्मू जुलाहे ने छः मास में दो हजार रुपया व्यय कर बाहर से इनके खाने पीने का प्रबन्ध किया था। रोज़ भोजन जाता था और...अच्छा छोड़ो। तुम यहाँ से कहाँ जा रहे हो?"

"चाची, तीन तारीख को चलकर मैं चार को देहरादून पहुँच जाऊंगा। पाँच को वहाँ उपस्थित होना है। फिर आठ तारीख को वहाँ से लौट आऊंगा यदि मैं चुन लिया गया तो जुलाई मास की पन्द्रह तारीख तक जहाँ आज्ञा होगी, जाना होगा।"

देवीदयाल ने कह दिया, "मथुरासिंह! तुम युद्ध पर जाने की बात इस प्रकार कर रहे हो, मानो तुम किसी बारात पर जा रहे हो।"

मथुरासिंह हँस पड़ा। हँसकर बोला, "बरात पर तो नही। हाँ वैसे कर्तव्य-पालन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए जा रहा हूँ।"

मथुरासिंह के पूर्ण वार्त्तालाप का प्रभाव सुनने वालों पर भिन्न- भिन्न हुआ। देवीदयाल को समझ आया कि राजपूतों की मूर्खता अभी भी इनके रक्त मे उपस्थित है। इनके पूर्वज केवल-मात्र शौर्य दिखाने के लिए भाले ले एक-दूसरे को बींध डालते थे। उसको मथुरासिंह का व्यवहार कुछ ऐसा ही प्रतीत हो रहा था और उसे युद्ध में जाना मूर्खता के अतिरिक्त अन्य कुछ समझ नहीं आ रहा था।

मक्खनी को मथुरासिंह की अकाल-मृत्यु, उसको युद्ध में खेंचती हुई ले जा रही प्रतीत हो रही थी। यद्यपि उसको राधा की मथुरासिंह से विवाह की इच्छा का ज्ञान नहीं था। इस पर भी वह स्वयं मथुरासिंह को एक सुन्दर, पढ़ा-लिखा बुद्धिमान् और ओजस्वी युवक समझती थी। साथ ही वह उसके प्रति पुत्र की सी भावना रखती थी। इससे वह उसके इतने भय के कार्य में जाने से भयभीत थी।

राधा मथुरासिंह के युद्ध पर जाने से गर्व अनुभव करती थी। वह मन में समझ रही थी कि उसका प्रेम एक शूरवीर एवं बुद्धिशील युवक से है। यह भावना उसके हृदय में उल्लास उत्पन्न कर रही थी।

आज राधा ने मथुरा को अपने मन की बात बताने का यत्न किया था और वह समझती थी कि मथुरा समझ गया है। अब वह समझती थी कि उसने अपना कर्तव्य पालन कर दिया है और यह उसका काम है कि वह उसका हाथ पकड़ने का यत्न करे।

राधा ने मन मे यह धारण कर लिया था कि उसके लिए अब प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं और वह अनन्त काल तक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार थी।

मथुरासिंह ने राधा के माता-पिता के सामने राधा के विवाह की चर्चा चलाकर यह जानने का यत्न किया था कि राधा ने जिस बात की और संकेत किया है, वह क्या उसके माता-पिता से स्वीकृत योजना है? उसको समझ आया था कि देवीदयाल राधा के मन की बात से सर्वथा अनभिज्ञ है। राधा की माँ के मनोभाव स्पष्ट नही थे। वह मन में विचार करता था कि राधा की माँ किस लिए राधा का विवाह अभी करना नहीं चाहती, वह युद्ध-काल मे विवाह करने से इन्कार क्यों करती है? क्या उसका भी विचार उसे अपना दामाद बनाने का है?"

वैसे वह समझता था, राधा पत्नि के रूप मे सर्वथा ग्रहण करने योग्य है; परन्तु जात-पात की बाधा, शिक्षा में अन्तर, राजनीतिक दृष्टिकोण में भी अन्तर था। वह अपने माता पिता के मान जाने की बात भी नहीं जानता था। एक स्वाभिमानी राजपूत, जो युद्ध मे दूसरों का रक्त बहाना और अपना बलिदान देना बच्चों का खेल समझता हो, कैसे एक बनिया और वह भी विकृत बुद्धि वाले के परिवार से सम्बन्ध बनाना स्वीकर करेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सब-कुछ विचार करने पर ही वह इस दिशा में अग्रसर होना नहीं चाहता था। अब तो वह युद्ध पर जाने की तैयारी में था। इसलिए उसका ध्यान इस ओर नहीं था।

यद्यपि अपने परिवार की परम्परा और वकील त्रिलोकचन्द्र जी की प्रेरणा बहुत प्रबल सिद्ध हो रही थी परन्तु देश का वातावरण जो गांधीवादियों ने बना रखा था, कम प्रभावयुक्त नहीं था। गांधीजी दिन-रात अपनी पत्रिका 'हरिजन' में कह रहे थे कि अहिंसा ही संसार को दुःख और कष्टों से मुक्ति दिला सकती है। युद्ध करना पशुओं की प्रकृति है।

अहिंसा एवं तपस्या का मार्ग तो पत्थर को भी मोम कर सकता है। इस कारण भारत को भी अपनी आध्यात्मिक परम्पराओं के अनुरूप अपना व्यवहार रखना चाहिये।

गांधीजी के ये मनोदगार कभी उसके मन मे संशय उत्पन्न कर देते थे परन्तु जब वह गांधीजी के आन्दोलन का पूर्ण इतिहास पढ़ता था तो उसे अपने मन के संशय छिन्न भिन्न होते दिखाई देने लगते थे।

वह पाँच जुलाई को देहरादून जा पहुँचा। वहाँ एक सौ से ऊपर पढ़े-लिखे युवकों को बुलाया गया था। इन लोगों में से कुछ, सेना में कमिशण्ड ऑफ़िसर बनने वाले थे। तीन दिन तक कठोर परीक्षा होती रही तीसरे दिन सबको एकत्रित कर वहाँ ही बता दिया कि केवल पन्द्रह युवकों का चुनाव किया गया है। शेष को साधारण पदवियों पर काम करने के लिए कहा गया।

मथुरा सिंह का नाम पन्द्रह की सूची में तीसरे नम्बर पर था।

इन पन्द्रह युवकों को जब्बलपुर मे बीस जुलाई को ऐमरजेन्सी ट्रेनिंग के लिए उपस्थित होने को कहा गया। सबको कमिशन वाइसराय के हस्ताक्षरों से मिलने वाली थी।

छः दिन अनुपस्थित रह मथुरासिंह घर पहुँचा और जब उसने पिता को बताया उसे सेना में कमिशन मिल गयी है, तो पिता ने प्रसन्नता से झूमते हुए पुत्र को गले लगाया और उसकी माँ के पास ले गया।

भगवती इस समय कथा कर रही थी । सूरतसिंह ने मक्खनी और अन्य स्त्रियों के सामने ही अपनी पत्नी को कह दिया, "लो भगवती! तुम्हारा पुत्र अब सेना मे मुझसे भी बड़ा अफसर बन गया है।"

भगवती ने मथुरा को एक कोने में बैठने का संकेत कर, कथा जारी रखी।

राधा का मुख अलौकिक दीप्ति से चमकने लगा था। मथुरासिंह यह देख रहा था कि वह उसके भर्ती हो जाने से प्रसन्न है।

कथा समाप्त हो गयी। मथुरा को नौकरी मिल जाने से अति प्रसन्नता थी, इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर नौ-दस स्त्रियाँ जो उस दिन कथा सुनने आयी थीं, मथुरा और उसकी माँ को बधाई देने लगीं।

भगवती ने मथुरा को बुलाकर ठाकुरजी के समक्ष दंडवत्-प्रणाम करने के लिए कहा। मथुरा ने भूमि पर लेट प्रणाम किया तो माँ ने उसकी पीठ पर हाथ फेर कर आशीर्वाद दे दिया, और जब वह उठा तो ठाकुरजी के आगे रखे चन्दन से उसके माथे पर तिलक लगा दिया।

इसीलिए पिता उसको वहाँ लाया था। मथुरासिंह चन्दन-चर्चित मस्तक से बाहर बैठक मे आया तो स्त्रियाँ विदा हो गयीं। पीछे रह गयीं मक्खनी और राधा। मक्खनी ने आज राधा को कहा, "तुम घर जाओ। मैं भगवती बहन से किसी विषय मे राय करना चाहती हूँ।"

राधा समझ गयी कि उसके तथा मथुरासिंह के विषय में बातचीत होगी। राधा ने अपनी माँ से अपने मन की बात कह दी थी। यह मथुरासिंह के देहरादून जाने के पश्चात हुई थी।

उसकी माँ ने बात स्पष्ट बात करने के लिए उससे पूछा था, "देखो राधा! तुमने मुझको कहा था कि तुम होशियार पुर वाले लड़के से विवाह नहीं करोगी, यद्यपि तुमने कारण नहीं बताया था परन्तु मैने तुम्हारा पक्ष लेकर तुम्हारे पिता से झगड़ा करना आरम्भ कर दिया है। वे नाराज़ हो वर्धा गए हैं और गांधीजी के आश्रम में एक मास रहने के पश्चात् सत्याग्रह करेंगे। यदि वे पकड़ लिए गए तो फिर हम अकेले ही रह जायेंगी। बताओ तब क्या करेंगे?"

"माँ! हम अकेली नहीं है।"

"तो और कौन है, हमारे साथ? रमणीक अभी बच्चा है। वह कुछ कर नहीं सकता।"

"रमणीक है। परन्तु माँ! एक और है। वह रमणीक और पिताजी से भी अधिक बलवान, सामर्थ्यवान और दयालू है। मेरा तात्पर्य भगवान से है।"

"परन्तु अब तक तुम्हारा विवाह हो जाता, तो एक धनी-मानी से हमारा सम्बन्ध हो जाता और समय-कुसमय पर आश्रय बन जाता।"

"परन्तु क्या परमात्मा से भी अधिक धनवान हैं वे?"

"हैं तो परमात्मा का रूप।"

"नहीं माँ! तुम नही जानती। परमात्मा ही मुझसे कहता है कि वहाँ विवाह नहीं होना चाहिए।"

"कैसे कहता है, वह?"

"जब मैं प्रातः काल स्नानादि कर माला फेरती हूँ तो राम-राम कहते ही राम मेरी आंखों के सामने धनुष-बाण लिए आते हैं। मुझको आर्शीवाद देते हैं और कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मेरा घर वहाँ नहीं है।"

मक्खनी राधा का मुख देखती रह गयी। उसको सन्देह हुआ कि राधा को भ्रम हो रहा है। इससे उसने पूछ लिया, "राधा! तूँ पागल तो नहीं हो गई?"

"नहीं माँ! वे मुझको यह भी कहते है कि मेरा सुहाग बना रहेगा। उसको कोई मिटा नहीं सकता।"

"यह तो ठीक है, परन्तु तुम्हारा घर होशियारपुर मे नहीं तो कहाँ है?"

"यहीं इस गाँव में! वे मुझको कभी उस घर की और संकेत भी करते हैं।"

"किस घर की ओर?"

"वे कहते है कि मौसी का घर मेरा घर है।"

"क्या भगवती बहन का?"

"हाँ माँ!"

"राधा यह कैसे हो सकता है?" मक्खनी ने आवेश में कहा।

"क्यों माँ! हो क्यों नहीं सकता!

"वे राजपूत हैं, हम वैश्य। भला जाति से बाहर भी कहीं विवाह होते हैं।"

"माँ! मैंने सरस्वती की माँ से पूछा था। उन्होंने पंडितजी से पूछकर बताया था कि हिन्दुओं में छोटी जात की लड़की बड़ी जात के घर जा सकती है। तब से मैं इस बात को असम्भव नहीं मानती। पंडिताइन ने कहा था कि जैसे मानव-कुल पार्वती को देव कुल महादेवजी से विवाह करने के लिए तपस्या करनी पड़ी थी, वैसे ही छोटी जाति की लड़की को बड़ी जाति में विवाह करने के लिए तपस्या करनी आवश्यक है।

"इसलिए माँ! मै तपस्या कर रही हूँ।"

"कैसे तपस्या कर रही हो?"

"एक तो मैं अपनी माँ को सन्तुष्ट कर रही हूँ। दूसरे, मौसी से नित्य आर्शीवाद ले लेती हूँ। माँ! तुम दोनो प्रसन्न हो गयी हो। अभी तक अपने पिता और मौसाजी के बारे मे कुछ नहीं कह सकती। मैं निरन्तर यत्न कर रही हूँ। शेष भगवान भरोसे ही है।"

"परन्तु मैं इस सम्बन्ध को मानी नहीं। साथ ही एक व्यक्ति और है। मथुरा मान जायेगा क्या? वह इतना पढ़-लिखकर और इतनी बड़ी नौकरी पाकर तुम जैसी अनपढ़ देहातिन, गँवार लड़की से विवाह करेगा क्या?"

"माँ तुम और मौसी राजी हो जाओगी तो वे मान जायेंगे।"

"कैसे जानती हो?"

"मैं उनके मन की बात अपने मन से जानती हूँ। वे माँ का कहा कभी टालेंगे नहीं।"

"तो उससे इस विषय पर कभी बात हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं बात तो नहीं हुई। इस पर भी मै बचपन से जानती हूँ।

माँ को सन्तोष नहीं हुआ। यही कारण था कि उस दिन भगवती से पूछने बैठ गयी। राधा गयी तो मक्खनी ने पूछ लिया, "भगवती बहिन! इस लड़की का अपने घर मे चित्त नहीं लगता! तुमने इसको मोह रखा है।"

"हाँ यह इतनी अच्छी है कि मेरा चित्त इसको यही रख लेने को करता है। परन्तु मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हो ही जायेंगी, कोई नहीं कह सकता।"

"क्यों क्या बाधा है तुम्हारी इच्छा की पूर्ति में?"

"एक तो तुम्हारी इच्छा का प्रश्न है। फिर तुम्हारे पति, राधा के पिता, की भी इच्छा का प्रश्न है। आपके अतिरिक्त मथुरा के मन का भी मुझको पता नहीं।

"सबसे बड़ी बात है, भगवान् की इच्छा। उसकी इच्छा हुई तो सब कुछ हो सकेगा।"

"तो लड़की से तुम्हारी बातचीत हुई है?"

"नहीं। इस पर भी मैं जानती हूँ, वह इस घर में आकर रहना चाहती है।"

"कैसे जानती हो?"

"राधा के प्रत्येक व्यवहार से यही बात प्रकट होती है। मैं न तो उसको अपने विचारों से उत्साहित कर सकती हूँ, न ही उसको किसी प्रकार आशा दिला सकती हूँ। कारण यह है कि इस में बहुत कुछ है, जो मेरे आधीन नहीं है। अतः मैंने घटनाओं को भगवान् के आश्रय छोड़ दिया है। जैसे वह रखेगा, वैसी ही रहने का मेरा अधिकार है।"

"परन्तु बहिन! तुमने मथुरा को भर्ती होने से मना क्यों नहीं किया?"

"वह और उनके पिता मरने से कभी भयभीत नहीं होते। युद्ध करना वे अपना जातीय कार्य समझते हैं और उनके मस्तिष्क में यह बात बैठी हुई है कि पढ़े-लिखे भारतीय सेना में भर्ती होंगे तो भारत का उद्धार होगा।"

मक्खनी के मन का संशय निवारण हो गया। उसको एक स्थिर कार्यक्रम दिखाई देने लगा। वह समझ गयी थी कि भगवती राधा और मथुरा के विवाह का यत्न करेगी। भापा भगवती का कहा मान लेंगे। इस पर भी वह मथुरा के युद्ध से लौटने से पूर्व न तो राधा को बांधना चाहती थी, न ही मथुरा को।

इससे वह अपने व्यवहार के विषय में विचार करती हुई घर आ गई। राधा उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह माँ से बातचीत का परिणाम जानना चाहती थी। इस कारण वह अपनी माँ का मुख देखने लगी।

माँ ने उसके मन के भाव को समझकर, कह दिया, "राधा! अब तुम्हारे सुहाग और मथुरा के जीवन के लिए हम सब को भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिए।"

"माँ! मैं जानती हूँ, वे युद्ध में सम्मानित हो लौटेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6

मथुरा देहरादून से लौटा तो लाला देवीदयाल भी वर्धा से लौटा आया। मथुरासिंह ने बीस जुलाई को जबलपुर मे उपस्थित होना था। उसके जाने में चार दिन थे कि देवीदयाल से भेंट हो गई। मथुरासिंह देवीदयाल से मिला तो पूछने लगा, "चाचा! सत्याग्रह नहीं हो रहा क्या?"

"सत्याग्रह तो हो रहा है, परन्तु मुझको भर्ती नहीं किया गया। महात्माजी पढे-लिखों के अतिरिक्त किसी मेरे जैसे व्यक्ति को इस व्यक्तिगत सत्याग्रह की स्वीकृति नही दे रहे। दो हजार स्वयंसेवक वहाँ गये थे। महात्माजी ने केवल बीस आदमी चुने हैं। वे प्रति सप्ताह एक आदमी को इसके लिए भेजना चाहते हैं।"

"इतने कम क्यों?"

"वे कहते हैं, "सैनिक तो शत्रु के शरीर को जीतने जाते हैं और हम शत्रु के मन और आत्मा पर विजय प्राप्त करने का विचार रखते हैं। इस कारण सत्याग्रह संख्या की गणना नहीं होती। इसमें आत्मबल मुख्य होता है।"

"तब तो ठीक है। महात्माजी ने हिटलर के मन और आत्मा पर विजय पाने का यत्न किया था, उन्होने हिटलर को एक पत्र भी भेजा था। परन्तु वे अपने उद्धेश्य में सफल नही हुए। जहाँ वे सफल नहीं हुए वहाँ हम यह प्रयत्न कर रहे हैं। हम उसके शरीर पर विजय पाकर महात्माजी के चरणों में ला बैठायेंगे, जिससे वे उनके मन और आत्मा को जीत सकें।"

देवीदयाद समझा नहीं। इस पर जमादार सूरतसिंह ने रामायण में से एक बात सुना दी। उससे सुनाया, रावण मरते समय भी ललकार कर कह रहा था—

'गर्जेउ मरत घोरव भारी, कहाँ रामु रन हतौं पचारी।।

अर्थात् मरता-मरता भी वह यही कह रहा था, कहाँ है राम? मैं उसकी रण में हत्या कर दूंगा।

"कुछ आसुरी आत्माएँ ऐसी होती है, जो शरीर छोड़ जाती है पर परास्त नहीं होतीं।"

देवीदयाल का विचार था कि वह सत्याग्रह कर जेल में चला जायेगा और फिर वह राधा के विवाह के विषय में अपनी पत्नी से झगड़ा करने से बच जायेगा। परन्तु सत्याग्रह में उसे सम्मिलित नहीं किया गया। इससे वह निराश हो, पुनः गाँव में आया और लड़की के विवाह का यत्न करने लगा।

अब तो मक्खनी का राधा के विवाह के विषय में विरोध स्पष्ट और दृढ़ हो गया। मक्खनी ने कह दिया, "मुझको एक ज्योतिषि ने बताया है कि यदि लड़की का विवाह तीन वर्ष के भीतर किया तो वह शरीर त्याग देगी।"

"किस ज्योतिषि ने बताया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बहुत बड़े महात्मा मुझको मिले थे।"

इस सूचना पर कुछ काल के लिए तो देवीदयाल घबराया। तत्पश्चात् मन मे कुछ विचारकर, कहने लगा, "मुझको ऐसी बातों में किंचित भी विश्वास नहीं।"

"परन्तु मुझको तो है। मुझसे अधिक राधा को है और वह अभी मरना नहीं चाहती।"

इस पर लाला मुख देखता रह गया। मक्खनी ने आगे कह दिया, "मैंने कहा था कि विवाह युद्ध के उपरान्त ही होगा। इसी कारण मैंने अपना विचार बताया था कि युद्ध तीन वर्ष में समाप्त हो जायेगा।"

"मक्खनी! महात्माजी कहते थे कि युद्ध सात वर्ष तक चलेगा। तब तक वे बिना स्वराज्य के रह नहीं सकते।"

"यह उनको किस ज्योतिषि ने बताया है?"

"वे स्वयं बहुत बड़े महात्मा हैं। ज्योतिषियों से भी बड़े हैं। उनका कथन असत्य नहीं हो सकता।

"कुछ भी हो उन्होंने यह ज्योतिष नहीं लगाया कि राधा विवाह कर जीवित रहेगी।

इस प्रकार मक्खनी ने पति का मुख बन्द कर दिया। इस पर भी उसका हृदय शान्त नहीं किया जा सका। वह मक्खनी के व्यवहार को एक माँ के व्यवहार के विपरीत समझता था।

जिस दिन मथुरासिंह ने गाँव से जबलपुर के लिए विदा होना था, सूरतसिंह ने गाँव के मुख्य-मुख्य आदमियों को भोज दे दिया। बीस के लगभग पुरुष और दस स्त्रियाँ भोज पर आमंत्रित थीं। इसमें राधा और मक्खनी भी थीं, लाला देवीदयाल भी वहाँ आया था। खीर, पूड़ी, साग चटनी, आचार तथा मिठाई थी। सबने पेट भर कर खाया और सूरतसिंह को धन्यवाद दिया। मथुरासिंह को पुष्प-मालाएँ पहनाकर सबने विदा किया।

मथुरासिंह को जब स्त्रियाँ तिलक दे रही थीं, तो राधा भी उसमें तिलक लगाने आयी। तिलक लगाते समय उसने धीरे से कह दिया "कब दर्शन होंगे?

"युद्ध पर जाने से पूर्व एक बार आऊंगा। तीन मास की शिक्षा के बाद एक-दो दिन के लिए।"

"मैं आपकी प्रतीक्षा में रहूंगी।"

"धन्यवाद, राधा।"

बस, इतना ही कहा और सुना जा सका। राधा का विचार था कि यह उसके आशय को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है।

मथुरासिंह भी प्रतीक्षा का अर्थ समझता था। इस पर भी वह इस समय धन्यवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से अधिक कुछ नहीं कह सका। इस समय उसका मन राधा से अपने सम्बन्ध के विषय मे पहले से अधिक स्पष्ट था, वह भी उससे विवाह की इच्छा करने लगा था।

जबलपुर मे मथुरासिंह को एक बैरक मे दस अन्य शिक्षार्थियों के साथ रखा गया। वैसे तो तीन सौ अफसर शिक्षा के लिए आये हुए थे। वे सब भिन्न-भिन्न बैरकों मे ठहरे हुए थे। प्रायः सब-के-सब ग्रैजुएट थे और देश के भिन्न-भिन्न स्थानों से आये थे। मथुरासिंह की बैरक में दस-के-दस पंजाब के रहने वाले थे। इन दस में दो मुसलमान, तीन सिख तथा एक ऐंगलों इण्डियन था और शेष चार हिन्दू भिन्न-भिन्न जाति के थे। सब का एक ही मैस था। ऐंगलों इण्डियन था—कार्ल माइकल। वह अम्बाला का रहने वाला था। इसका पिता वहाँ की कैन्टीन का मैनेजर था।

यों तो सब दस के-दस आपस मे बहुत सुहृदय से रहते थे, परन्तु माइकल का मथुरा से सम्बन्ध अन्य से अधिक घना होने लगा।

मथुरासिंह ने एक दिन बताया, "मैं लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज में एम. ए. की श्रेणी मे पढ़ता था।"

"तो पढ़ाई छोड़ क्यों आये हो?" माइकल ने आश्चर्य में पड़कर पूछा।"

"पढ़ाई तो युद्ध के पश्चात् भी हो सकती है, परन्तु युद्ध पढाई के पश्चात् रहेगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता।"

माइकल मुस्कुराया। उसने समझा कि कोई मोटी बुद्धि का आदमी है। पुनः हँसी-हँसी से पूछ लिया, "तो युद्ध कोई मिठाई है जो कुछ दिनों में बासी हो जाती है।"

मथुरासिह का सतर्क उत्तर था, "बासी तो नहीं मित्र! इसके तो समाप्त हो जाने की बात है।"

"ओह, नो। यह युद्ध दस वर्ष तक चलेगा।"

"सत्य! इस पर भी यह एक सौभाग्य का अवसर है, जिसमें मैं भी भाग ले रहा हूँ।"

"सौभाग्य ! कैसा सौभाग्य?"

"हमारे धर्म शास्त्र में लिखा है, मथुरासिंह ने गीता मे से एक श्लोक, जो त्रिलोकचन्द्र प्रायः सुनाया करता था, का अर्थ सुना दिया। उसने कहा, "इस प्रकार का युद्ध क्षत्रियों के लिए स्वर्ग का द्वार है।"

"स्वर्ग का द्वार?"

"हाँ। हम जिस युद्ध को धर्म युद्ध समझते हैं उसको स्वर्ग का द्वार कहते हैं। इसी शास्त्र में लिखा है कि धर्म के निमित किया हुआ युद्ध से बढ़कर अच्छा कार्य एक क्षत्रिय के लिए अन्य कोई नहीं।"

"परन्तु तुम समझते हो कि यह तुम्हारे धर्म का युद्ध है? क्या इससे बर्लिन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे मन्दिर स्थापित होने वाले हैं?''

''धर्म का अर्थ मन्दिर स्थापित करना-कराना नहीं। देखो माइकल! धर्म के दस लक्षण बताये हैं। ईसाइयों में उनको 'टैन कमान्डमैन्टस' कहते हैं। उनके पालन करने वालों को धर्मात्मा कहते हैं और उनका विरोध करने वालों को अधर्मी। युद्ध तब होता है जब एक पक्ष अधर्माचरण करने लगता है। उस समय अधर्माचरण करने वालों को नियंत्रण में करना धर्म होता है। मैं समझता हूँ कि यही करने, मैं जा रहा हूँ।"

माइकल इस व्याख्या को सुन हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, मैं ऐसा नहीं समझता। मैं न तो अंग्रेज़ो को धर्मात्मा मानता हूँ, न ही जर्मनी को। दोनों में युद्ध हुआ है, इस कारण कि दोनो के स्वार्थ एक दूसरे को काटते हैं।

"अग्रेंज़ो ने एक लम्बी चौड़ी 'एम्पायर' बना रखी है। ये बलपूर्वक उसमें अपना राज्य रखे हुए हैं। जर्मनी भी अपना साम्राज्य बनाना चाहता है। वे भी साम्राज्य बलपूर्वक ही बनायेंगे। इस कारण दोनों स्वार्थों में 'क्लैश' उत्पन्न हो गया है। यह है कारण, युद्ध से दोनो अधर्मी हैं। दोनों आततायी हैं दोनों स्वार्थी हैं।"

"परन्तु मिस्टर माइकल! यदि तुम ऐसा समझते हो तो इस जान जोखम के कार्य मे क्यों भर्ती हुए हो,?"

"जस्ट टू हैव ए फन इन लाइफ।"

"वाह! भला क्या मज़ा है गोली से किसी मनुष्य को मारने में?"

"यह तो तुम जब भी कभी मैदानेजंग में जाओगे तभी अनुभव कर सकोगे। कभी शिकार खेलने गये हो?"

"हाँ, एक बार चीते का शिकार खेलने गया था। कुल्लू के मार्ग पर एक चीता हर दूसरे तीसरे दिन किसी राही को चट कर जाता था। मेरे पिता ने उसके शिकार के लिए अपनी सेवा अर्पित कर दीं। तब मैं, मेरे पिता और धर्मशाला के एक मजिस्ट्रेट बन्दूक लेकर गए और वहाँ छिपकर बैठ गये। वह चीता आया तो सबसे पहले मैंने बन्दूक चलाकर उसे चित कर दिया।"

"चीते के शिकार से अधिक मजा खरगोश और लूमड़ के शिकार में आता है।"

"क्या मज़ा आता है?"

"जब वे चीं-चीं करते भागते है और शिकारी बन्दूक लिए उनके पीछे भागता है तो चेज़ का लुत्फ, करके देखने की ही बात है।"

"मेरा मत इससे भिन्न है। मगर विचार अपना-अपना है। मुझको अपने से अधिक बलशाली जीव से लड़ने में आनन्द आता है। जब कोई मुकाबले का शत्रु हो और मैं यत्न कर उसको परास्त करूँ तो जो आनन्द आता है, उसकी तुलना मे भला किसी दुर्बल जीव को, जिसमें मुकाबला करने का सामर्थ्य नहीं हो, और जो विरोध भी न कर सके, मारने में क्या रस आ सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब शत्रु दुर्बल हो तो इसमें अपना क्या दोष है?"

"परन्तु वह शत्रु हो तब न।"

"जिसके साथ लड़ पड़े, वही शत्रु बन गया।"

"नहीं लड़ने अथवा न लड़ने से कोई शत्रु नहीं बन जाता। शत्रु तो वही हैं जो अधर्माचरण करता है। कभी नीति के विचार से हम शत्रु से भी नहीं लड़ते। इस पर भी वह शत्रु तो रहता ही है।"

मथुरासिंह ने देखा कि माइकल युक्ति करने में बहुत ही दुर्बल है। इसका कारण यह था कि माइकल मात्रा से अधिक मद्य का सेवन करता था। सैनिक मैस में मद्य सस्ती मिलती थी और न्युनाधिक मात्रा में लगभग सभी लोग पीते थे।

रात के भोजनोपरान्त एक बोतल सामने रख, उसे पीते हुए माइकल ने मथुरासिंह को बताया, सैनिक जीवन मे अनेकानेक आनन्दों में से यह भी एक है। बाज़ार में ह्विस्की की बोतल अट्ठारह रुपये में मिलती है और यहाँ केवल नौ रुपये में।

"तब तो मैं इस मज़े से वंचित हूँ। इस पर भी मैं अपने आपको किसी प्रकार से घाटे में नहीं समझता।"

"जब तुम पीने लगोगे तो तब समझोगे कि तुम घाटे में थे और इससे आने वाले रस का भी अनुभव करने लगोगे। सिंह! मैंने तुम्हारा कल वाला वार्तालाप अपने अन्य साथियों को बताया था। उनका मानना है कि तुम फिलासोफर हो, इस कारण तुम अच्छे सिपाही नहीं बन सकते।"

"परन्तु हमारा ट्यूटर कल कह रहा था कि वर्तमान 'लौट' में से मैं सबसे श्रेष्ठ हूँ। इस लौट मे हम तीन सौ आफिसर हैं।"

"तुम्हारी हँसी उड़ाने के लिए वह इस प्रकार कह रहा होगा।"

"हाँ हो सकता है। लेकिन किसी दिन तुम उससे मेरे सम्बन्ध में बात करके पता करना कि वह भी मुझे मूर्ख समझता है अथवा कुछ और।"

"तो और कौन मूर्ख समझता है?"

"वे सब, जो मुझे फिलॉसोफर मानते हैं। फिलॉसोफर के अर्थ सम्भवतया उनके मस्तिष्क में मूर्ख ही होते हैं।"

"ओह! नो।" गिलास मे पड़ी सारी शराब को अपने पेट मे डालते हुए माइकल ने कहा, "बस, आज इतनी ही पीऊंगा।" बोतल को कार्क लगा, उसने जेब मे रख लिया। उस दिन उसने चौथाई बोतल ही पी थी। कहने लगा, "दोस्त! अगर तुम भी पीने लगो तो बहुत मजा रहे।"

"क्या मजा होगा?"

"मुझे एक साथी मिल जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"साथी तो मैं बिना पीये तुम्हारा हूँ ही।"

"मेरा मतलब शराब पीने में साथी से है।"

"ऐसे साथी हमारे ग्रुप में अनेक हैं।"

"वे सब गँवार है। जब सब मिलकर बैठते हैं, औरतों के अतिरिक्त और कोई विषय उनकी बात का नहीं होता।"

"तब तो वह एक एडीशनल मज़ा रहता होगा।"

"नहीं सिंह! तुम नहीं समझते। तुम्हारा दिल अभी किसी सुन्दरी के सुनयनों मे उलझा नहीं।"

मथुरासिंह अपनी प्रेमिका का नाम, इन अर्ध चरित्रहीन साथियों में लेना भी नहीं चाहता था। इस कारण उसने कह रखा था कि उसकी कोई प्रेमिका नहीं है। माइकल ने एक दिन यह भी पूछा था कि अभी तक उसने किसी स्त्री का रसपान भी किया है अथवा नहीं? मथुरासिंह ने अपने उत्तर में अपनी अनभिज्ञता ही व्यक्त की थी। उसके साथ रहने वाले बैरक के अन्य साथी हँसी में उसे साधु कहा करते थे।

औरतों के विषय में माइकल की बातें सुनकर मथुरासिंह हँस दिया करता था। आज भी उसने बात को समाप्त करने के लिए अपने दोस्त के कटाक्ष का उत्तर नहीं दिया। वह केवल मुस्करा दिया। उनके सब साथी बैरक में जा चुके थे, किन्तु वे अभी भी मेज़ पर ही बैठे थे। माइकल ने आज औरतों के विषय को नहीं छोड़ा। बातें करते हुए उसने कहा, "हमारी बैरक के अन्य साथी तो सैमी-ब्रूट्स हैं। मैं उनके सामने एलिस की बात नहीं करना चाहता। वह भले घर की लड़की है। उसकी माँ मसूरी के सेंट जोज़फ हाई स्कूल में अध्यापिका है। मेरे लिए वह आदर्श नारी है। मैंने उसके साथ प्रेम किया और वह मुझको प्रेम करने लगी। परन्तु उसके पिता ने मुझे आवारा समझकर मेरे साथ उसकी शादी स्वीकार नहीं की। एलिस अभी अल्पायु है। दो वर्ष में ही वह वयस्क हो जावेगी, तब हमें स्वेच्छा से विवाह करने की स्वतंत्रता होगी। उसकी स्मृति में मैं अब किसी भी औरत की संगति पसन्द नहीं करता। ये कटरे की औरतें तो उसकी तुलना में मुझे बदसूरत दिखाई देती हैं। व्यवहार और स्वभाव में ऐलिस साक्षात् गॉडेस ही है। इस कारण अब मैं किसी बाज़ारी औरत को देख भी नहीं सकता। वास्तव में दो वर्ष प्रतीक्षा में निकालने के लिए ही मैं सेना में चला आया हूँ।

"मुझे कमीशन मिल जाने से ऐलिस और उसके माता-पिता की दृष्टि में मेरा मूल्य बढ़ गया है। मैं इससे बहुत प्रसन्न हूँ।"

"माइकल! यदि तुम यह शराब पीनी छोड़ दो, तो निश्चय जानो कि अपनी प्रेमिका की दृष्टि में तुम और भी उच्च हो जाओगे।"

"उसने मुझसे ऐसा कभी कहा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब अगली बार मिलो तो उससे इस विषय मे पूछकर देख लेना कि वह क्या कहती है?"

माइकल उसका मुख देखता रह गया। बैरक के अन्य साथी इन दोनों को अर्ध-विक्षिप्त मानते थे। वे समझ नहीं पाते थे कि वे दोनों परस्पर बैठकर किस प्रकार की बातें करते हैं। जब ये दोनों मैस में रह जाते तो वे यही समझते थे कि बोतल खाली किये बिना ये लोग सोने के लिए नहीं आयेंगे।

शिविर का जीवन अत्यन्त व्यस्त जीवन होता था। सब प्रातः चार बजे उठ, शौचादी नित्य-कर्म से निवृत हो, ठीक पाँच बजे मैदान में पंक्ति बद्ध खड़े हो जाते थे। मथुरासिंह तो इस एक घण्टे में स्नान कर, दस मिनट जाप भी कर लिया करता था। दो घण्टे के शारीरिक-परिश्रम के अनन्तर, सवा सात से सवा आठ बजे तक एक घण्टा चाँदमारी का अभ्यास होता था। फिर दो घंटे वे लोग पढ़ाई करते थे। पढ़ाई में 'पोलिटिकल साइँस', 'वारस्ट्रैटेजी', 'रीडिंग मैप्स' आदि-आदि की शिक्षा होती थी।

साढ़े दस बजे ब्रेकफास्ट के लिए ये लोग मैस में आते थे। ग्यारह बजे प्रैक्टिकल फाइटिंग की शिक्षा के लिए जाना होता था। वहाँ से साढ़े बारह बजे बैरकों मे लौटते। एक से दो तक लंच होता, फिर आधा घंटा विश्राम के अनन्तर उनको हिन्दूस्तान की मुख्य भाषाओं में से एक भाषा सीखनी पड़ती थी। मथुरासिंह गोरखाली सीख रहा था। चार बजे अपने शिविर में युद्ध पर कोई-न-कोई पुस्तक पढ़ते थे। छः बजे के बाद उनकी छुट्टी होती थी। तब वे प्रायः अपने मित्रों के साथ घूमने चले जाया करते थे।

प्रति सप्ताह शनिवार के दिन उनकी परीक्षा हुआ करती थी। उसमें प्रयोगिक और लिखित दोनों ही सम्मिलित होते थे। इस प्रकार सप्ताह के बाद सप्ताह बीत रहे थे। साथ ही दिन-प्रतिदिन मथुरासिंह और माइकल में घनिष्ठता बढ़ती जा रही थी।

7

रविवार का दिन था। माइकल का खाना, वार स्ट्रैटेजी, के शिक्षक के साथ था। वह स्कॉटलैंडवासी अंग्रेज़ था और अपनी पत्नी तथा कन्या-सहित बैरकों से कुछ दूर एक बंगले में रहता था। मध्याह्न के पश्चात् माइकल कर्नल स्टैनले के बंगले से लौटा, तो उसमें देखा कि मथुरासिंह अपनी प्रिय पुस्तक गीता का अध्ययन कर रहा है। कभी-कभी मथुरासिंह उसके कुछ अंश पढकर माइकल को समझाया भी करता था। आज माइकल आया तो उसको समीप बैठाकर मथुरासिंह ने बताया, देखो क्या सुन्दर बात लिखी है–

'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय
युद्धाय कृतनिश्चयः।।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धर्म युद्ध में मारा जाये तो स्वर्ग प्राप्त होता है। और यदि युद्ध जीत ले तो भूमि का भोग प्राप्त होगा। अतः उठो और युद्ध करो।"

"उसके समीप बैठे माइकल ने कहा, मेरे मन मे यह संशय बना रहता है कि जर्मनी को परास्त करना धर्म है अथवा अंग्रेज़ो को परास्त होने देना?"

"इस विषय में मैंने तुमको अपना मत बता दिया था और तुम उस समय समझ भी गये थे। देखो, जहाँ तक की हिटलर की अपनी जाती का सम्बन्ध है, हिटलर उसकी उन्नती में सदा धर्म युक्त व्यवहार करता रहा है। संसार की कोई भी जाति दूसरी जाति पर यह प्रतिबन्ध नहीं लगा सकती कि वह अमुक कार्य न करे अथवा इतनी सेना न रखे। परन्तु जब सेना का दुरुपयोग होने लगा तो निःसन्देह इसमें दोष हिटलर का था। मुसोलिनी का ऐबिसीनिया पर आक्रमण हिटलर का चैकोस्लोवाकिया और पोलैंड पर अधिकार तथा पोलैंड का रूस के साथ बंटवारा, ये बातें तो किसी प्रकार भी क्षम्य नहीं। राइनलैंड को बलपूर्वक अपने अधिकार में कर लेना भी कोई स्तुत्य कार्य नहीं समझता।"

"परन्तु अंग्रेज़ो ने भी ऐसा ही कुछ किया हुआ है।"

"जब अंग्रेज़ों के विरुद्ध उसके उपनिवेश लड़ेंगे तो हम अंग्रेज़ो का विरोध करेंगे। परन्तु अंग्रेज़ अपने अधीनस्थ उपनिवेशों को बिना युद्ध के भी स्वतन्त्र करते जा रहे हैं। यह युद्ध उन उपनिवेशों को स्वतन्त्र कराने के लिए नहीं हो रहा है। यह स्वतन्त्र देशों को अपने अधीन करने के लिए किया जा रहा है। फिर हिटलर का यहूदियों के साथ जो व्यवहार है, वह तो नितान्त लज्जास्पद है।"

"परन्तु सिंह! क्या हम पोलैंड को स्वतन्त्र करने के लिए युद्ध कर रहे हैं? हम तो अंग्रेज़ की महिमा बढ़ाने के लिए लड़ रहे हैं।"

"मैं ऐसा नहीं समझता। अंग्रेज़ो ने पोलैंड के साथ संधि की हुई थी कि वे एक दूसरे की सहायता करेंगे। सहायता की आवश्यकता पोलैंड को तब पड़ी जब जर्मनी ने उस पर अकारण आक्रमण कर दिया। अतः इस समय, इस युद्ध में हम धर्म की स्थापना का पक्ष ले रहे हैं। मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।"

"तुम्हारी समझ की बात मैंने मिस्टर स्टैनले को बताई थी। वे कहते थे कि इस ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट के शिक्षकों का मत है कि तुम अति प्रतिभाशाली शिक्षार्थी हो और तुमको इंग्लैन्ड के स्कूल ऑफ मिलिटरी साइंसिज़ में तीन मास के प्रशिक्षण के लिए भेजा जावेगा।"

"सच! तब मुझे मिस्टर स्टैनले का धन्यवाद करना चाहिए।"

मैंने जब यह बताया कि तुम हिटलर को अधर्मी मानते हो, इस कारण तुम उसकी सेना से लड़ने के लिए जा रहे हो-मिस्टर स्टैनले ने मुझसे कहा कि वह तुम से मिलकर बहुत प्रसन्न होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह चुप रहा। माइकल ने ही बात आगे चलाते हुए कहा, "आज खाने के सारे समय में तुम्हारी बातें होती रही हैं। मैं समझा था कि मिसेज़ स्टैनले मुझसे अपनी लड़की का परिचय कराना चाहती हैं, परन्तु वहाँ जाकर विदित हुआ कि किसी ने उनको बताया है कि मैं और तुम घनिष्ठ मित्र हैं और वे तुम्हारे विषय में व्यक्तिगत सूचना प्राप्त करना चाहती हैं। मुझे कुछ सन्देह हो रहा है कि फ्लोरा तुम पर मुग्ध हो गई है।

"श्रीमती स्टैनले ने मुझसे तुम्हारे विवाह के विषय में पूछा था। तुम्हारी सगाई वगैरह की बात भी पूछी और फिर यह भी जानना चाहा कि तुम किसी लड़की से प्रेम तो नहीं करते।"

"कर्नल स्टैनले अंग्रेज़ो के विषय में तुम्हारे विचार गांधीजी के विषय में तुम्हारी धारणा आदि बातें पूछते थे। इसी कारण मुझे विश्वास सा हो रहा है कि 'दैट गर्ल इज फ्राम हैड टू टेल इन लव विद यू'।"

"इससे तुम्हें तो भारी दुःख और निराशा हुई होगी ?"

"निराशा किसलिये?"

"तुम स्वयं उस लड़की से परिचय करने के लिए गये थे और निकल आई बात कुछ दूसरी ही।"

"दोस्त! मैं सच कहता हूँ कि मिस स्टैनले में मेरी कोई रुचि नहीं है। मेरी ऐलिस मुझे पसन्द है। यों तो फ्लोरा भी अपने ढंग की सुन्दर लड़की है, पर मेरे मन मे ऐलिस ही समाई हुई है।"

"तो तुमने सब-कुछ बता दिया है अथवा कुछ छिपाकर भी रखा है?"

गांधी के विषय में तुम्हारे विचार मैंने उन्हें नहीं बताये। क्योंकि मुझे डर था कि वे तुम्हें कहीं विद्रोही न मान बैठें। मैंने कहा कि राजनीति के विषय में हम परस्पर कोई बात नहीं करते।"

मथुरासिंह चुप रहा। माइकल बोला, माँ अथवा लड़की, कोई-न-कोई तुमसे सम्पर्क स्थापित करेगी। लड़की तो उसी समय मुझसे पूछ रही थी कि मैं तुम्हें वहाँ ला सकता हूँ क्या? मेरे उत्तर देने से पहले ही स्टैनले ने कहा कि वह स्वयं तुम्हें बुलायेंगे, मुझे कष्ट करने की आवश्यकता नहीं।

ट्रेनिंग स्कूल में हॉकी और फुटबाल के मैच भी होते थे। इसके लिए कई मंडलियाँ बनी हुई थीं। उनमें परस्पर प्रतियोगिता होती रहती थी। परन्तु एक दिन गोरा रेजिमेंट की 'ससैक्स तीन सौ सात' की फुटबाल टीम को ऑफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल की ओर से चुनौती भेजी गई। इस प्रकार दोनो फुटबाल टीमों में प्रतियोगिता निश्चित हो गई।

मथुरासिंह ऑफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल की टीम का कैप्टन था। रविवार के दिन शाम को पाँच बजे मैच था। स्कूल के शिक्षक एवं शिक्षार्थी सभी मैच देखने के लिए एकत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गये थे। कर्नल स्टैनले का परिवार भी मैच देखने के लिए आया।

यह समझा जाता था कि गोरा रेजिमेंट की टीम बहुत अच्छा खेलने वाली है। हिन्दुस्तान-भर की सभी छावनियों में उस टीम ने नाम कमाया था।

मैच आरम्भ हुआ और खेल आरम्भ होने के दो मिनट बाद ही मथुरासिंह की टीम ने गोरा टीम पर एक गोल कर दिया। मथुरासिंह सेंटर फार्वर्ड खेल रहा था। और टॉस के बाद ज्यों ही गेंद उसके पास आई कि वह उसको ले उड़ा और विपक्षियों के गोल में डालकर ही उसने गेंद को छोड़ा। मथुरासिंह का शरीर मज़बूत और लचकदार था। अतः उसने ड्रिबलिंग से सबको मात कर दिया।

पुनः खेल आरम्भ हुआ। इस बार वह पुनः गेंद लेकर जा रहा था कि गोरा टीम के एक खिलाडी ने 'फाउल प्ले' दे दिया। ट्रेनिंग स्कूल को 'फ्री किक' तो मिल गयी पर इससे कुछ बना नहीं।

अब खेल आरम्भ हो गया और दोनों ओर से ही भली प्रकार खेला जाने लगा। ट्रेनिंग स्कूल की टीम में यह दोष था कि वह भानुमति का पिटारा जैसे थी। भिन्न-भिन्न स्थानों से आये खिलाड़ी केवल मैच के लिए एकत्रित हो गये थे। इस कारण टीम के खिलाड़ीयों में परस्पर समन्वय नहीं हो सका। दूसरी और गोरी टीम के सब खिलाड़ी परस्पर मिल कर खेलते थे। गोरी टीम ने पन्द्रह मिनट में गोल उतार दिया। दोनों पक्ष फिर बराबर-बराबर खेलने लगे।

आधा समय समाप्त होने से पूर्व पुनः गेंद मथुरासिंह के पास आई तो इस बार भी उसने गोल करके ही छोड़ा। आधे समय के समाप्त होते-होते मथुरासिंह ने एक गोल फिर कर दिया।

इस पर गोरा टीम सतर्क हो गयी और उसके तीन खिलाड़ी सिर्फ मथुरासिंह के पीछे ही लगे रहे।

गोरा टीम के लाख प्रयत्न करने पर भी शेप आधे समय में मथुरासिंह ने उस पर पाँच गोल कर दिए। गोरा टीम ने बहुत प्रयत्न करके केवल एक गोल उतारा।

खेलने वाले और देखने वाले सभी अनुभव कर रहे थे कि खेल का निर्णय मथुरासिंह ने ही किया है। अपने पक्ष के सभी सात गोल उसने ही किये थे। जब भी उसके पाँव मे गेंद आई, उसने गोल किये बिना उसे नहीं छोड़ा। दो गोल हो जाने के बाद तो सभी यह समझ रहे थे कि सारे खेल में एक वही जादूगर है।

खेल के अन्त में गोरा टीम के कैप्टन ने उससे हाथ मिलाया और ट्रेनिंग स्कूल की टीम ने उसे कंधों पर उठा लिया। शिक्षक वर्ग ने उसको बधाई दी। कर्नल स्टैनले और उसकी पत्नि ने हाथ मिलाया और रात को भोजन पर अपने घर आने का निमन्त्रण दे दिया।

मुस्कराती हुई पास खड़ी फ्लोरा की और दृष्टि जाने पर मथुरासिंह को समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया कि यह सब उसके लिये ही किया जा रहा है। कर्नल ने अपनी लड़की का परिचय करते हुए कहा, "मिस्टर सिंह! यह है मेरी लड़की फ्लोरा स्टैनले। यह तुम्हारे खेल की बहुत ही प्रशंसक है।"

मथुरासिंह ने भारतीय रीती से हाथ जोड़े, किन्तु फ्लोरा ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया विवश मथुरा को भी हाथ मिलाना पड़ा।

मैच के बाद माइकल मथुरासिंह से मिला और पूछने लगा, "कहो कैसी लगी फलोरा?"

"अच्छी है।"

"उसकी मुस्कराहट मे एक विचित्र सम्मोहन है।"

"तुम तो कहते थे कि ऐलिस इससे भी अच्छी है?"

"वह बहुत ही मीठा बोलती है।"

"और यह?"

" यह तुम स्वयं ही सुनकर बताना।"

मथुरासिंह ठीक साढ़े आठ बजे कर्नल स्टैनले के बंगले पर जा पहुँचा। वहाँ जाकर उसने देखा कि भड़कीले वस्त्र धारण किये हुए स्टैनले माता, पुत्री बरामदे में बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं। कर्नल स्टैनले अपने ड्राइंग रूम मे बैठा सिगार पी रहा था।

परस्पर हाथ मिलाए गये और उसके हाथ में अपना डाथ डाले फ्लोरा मथुरासिंह को भीतर ले गयी। कर्नल ने उठकर मथुरासिंह से हाथ मिलाया। उसने उसे अपने पास बैठाया तो फ्लोरा दूसरी ओर बैठ गयी।

ह्स्किी और सोडा मंगवाया गया। जब दोनों को मिलाकर कर्नल ने एक गिलास मथुरासिंह के आगे किया उसने हाथ जोड़ क्षमा याचना करते हुए कहा, "मैं तो इसका पान नहीं करता।"

"वट।"

"सर! मैंने इसको आज तक चखा नहीं। मैं इसको पीना बिलकुल पसन्द नहीं करता।"

एक मिनट तक तीनो मथुरासिंह का मुख देखते रहे। कुछ देर बाद मिसेज स्टैनले ने कहा, "परन्तु तुम्हारा मित्र माइकल तो खूब पीता है।"

"जी हाँ, मित्रता का आधार पीना अथवा न-पीना नहीं है। उसमें कुछ 'गोल्डन क्वालिटीज' हैं और मैं उसके उन गुणों पर मुग्ध हूँ।"

फलोरा पूछने लगी, "क्या गुण है उसमें?"

"वह सत्य बोलता है। जुआ नहीं खेलता। क्रोध नहीं करता। हमारे अन्य साथियों के अपेक्षा मन, वचन और कर्म पर नियंत्रण रखता है। पर-स्त्री की ओंर दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करता। इस कारण मैं उसे बहुत पसन्द करता हूँ।"

"परन्तु वह पीता तो है?"

"यह उसका स्वभाव है।"

"आप शराब पीना नापसन्द करते हुए भी उसको पीने के लिए मना नहीं करते कर्नल ने पूछा।"

"मैं किसी को भी मना नहीं करता।"

"तो मैं पी सकता हूँ?"

"बड़ी खुशी के साथ।"

"तुम इसको सिन नहीं समझते न?"

"शराब पीने को?"

"हाँ।"

"पाप तो समझता हूँ, परन्तु अपराध नहीं।"

"क्या मतलब?"

"पाप उन कर्मों को कहते हैं जो स्वयं तथा दूसरों को मानसिक, शारीरिक और आत्मिक हानि पहुँचावें।"

"अपराध वे कृत्य हैं, जिनको समाज और सरकार ने वर्जित घोषित किया हुआ हैं। ये सभी दूसरों को हानि पहँचा सकते हैं।"

"उदाहरण के रूप में कोई व्यक्ति किसी सार्वजनिक स्थान पर मूत्र त्याग कर दे। मूत्रत्याग करना निरापद कार्य है, परन्तु सार्वजनिक स्थान पर मूत्रत्याग करने से नागरिक-जीवन में खराबी आती है। इससे यह पाप तो नहीं, परन्तु अपराध है, अर्थात् दण्डनीय है।"

"इसी प्रकार कोई व्यक्ति वेश्यागमन करता है। वेश्या तो रजिस्टर्ड है। वेश्यागमन से किसी के भी नागरिक अधिकारों में बाधा नहीं पड़ती। इस कारण इसे अपराध नही कह सकते, परन्तु यह व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इस कारण यह पाप है।

"यह कृत्य यदि किसी औरत से उसकी स्वीकृति के बिना किया जाय तो अधर्म है तथा अपराध है और यदि औरत स्वस्थ है तथा उसकी स्वीकृति है, दोनो के स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं पड़ता और वह उनके दुःख का कारण भी नहीं बनता तो यह न पाप न अपराध।

"अधर्म दण्डनीय है, किन्तु पाप कभी कभी राज्य की ओर से दण्डनीय नहीं भी होता। इस पर भी परमात्मा तो उसका दण्ड देता ही है।

"किसी की हत्या करना पाप भी है और अपराध भी।"

कर्नल स्टैनले सुरकियाँ लेकर पी रहा था। वह जब पीने लगा तो फ्लोरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मथुरासिंह से बातें करने लगी। उसने पूछा, "मिस्टर सिंह! पाप अधिक खराब होता है या अपराध?"

"खराब तो दोनो ही हैं। अपने-अपने क्षेत्र में दोनो हानिकर हैं। परन्तु सब पाप अपराध नहीं होते और राज्य, कुछ उन कामों को भी अपराध घोषित कर देता है जो पाप न हो। यह अस्वाभाविक बात समय पर बदलनी पड़ जाती है।

"उदाहरण के रूप में अमेरिका में शराब बन्दी थी। शराब-घर में बैठकर अपने पैसे से पीना पाप होते हुए भी अपराध नहीं। यह किसी दूसरे व्यक्ति को हानि नही पहुँचाती। इसको अपराध घोषित किया गया तो जनता ने इसका विरोध किया।

"एक व्यक्ति झूठ बोलता है। वह कहता है कि उसने परमात्मा देखा है। और इस कथन मात्र से किसी को हानि नही पहुँचती। इस कारण यह अपराध नहीं, परन्तु पाप है। यदि इसको भी अपराध मान लिया गया तो लोग आपत्ति करेंगे।

"अतः कोई क़ार्य पाप और अपराध दोनों होने से दण्डनीय होते हैं, परन्तु अकेला पाप होने से सरकार द्वारा दण्डनीय नहीं हो सकता।"

इतनी व्याख्या में पाप और अपराध के विषय मे उसके मुख से सुनकर फ्लोरा मथुरासिंह की विश्लेषणात्मक प्रतिभा पर चकित रह गई। उसने कहा, "आपका मित्र ठीक ही कहता था कि आप फिलॉसफर हैं।"

"इस पर भी मैं सर्वथा प्रेक्टिकल हूँ। प्रेक्टिकल हम उस व्यक्ति को कहते हैं, जो निश्चयात्मक बुद्धि और कार्यकुशल बुद्धि रखता है। मेरा मन डिसाइसिव है और मैं अपने विचारों को कार्य में ला भी सकता हूँ। जो बात कार्य में परिणत नहीं की जा सकती, उसकी सच्चाई के विषय में सन्देह बना रहता है और वह केवल फिलॉसफी की रील्म (विचार क्षेत्र) में ही रहता है।"

इतने में बैरे ने आकर भोजन की सूचना दी। वे सब उठकर भोजन करने के कमरे मे चले गए।

भोजन करने बैठे तो बातचीत का विषय बदल गया। कर्नल स्टैनले ने कहा, "हिन्दुस्तान मे बड़े विचित्र लोग है। आज पंडित जवाहरलाल ने वार ऐफर्ट्स में बाधा डालने की घोषणा की है।"

"हाँ, मैंने भी समाचार पत्र में पढ़ा है।"

"इसके विषय में तुम क्या समझते हो?"

"मैं हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानियों का राज्य चाहता हूँ। परन्तु उसके लिए गांधी इत्यादि जिस ढ़ंग से कार्य कर रहे हैं, उसे मैं उपयुक्त नहीं समझता।"

"क्यों उसमें क्या कमी है?"

"यह तो किसी को उसकी कठिनाई में तंग करके उससे अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाली बात है। यह नैतिक दृष्टि से गलत है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किन्तु वे तो कहते हैं कि व्यक्तिगत सत्याग्रह केवल सिम्बौलिक है। यह सरकार को तंग करने के लिए नहीं। यह तो सब दिखाने के लिए है कि भारत के लोग युद्ध में स्वेच्छा से अंग्रेज़ो की सहायता नहीं कर रहे।"

"इतनी-सी बात के लिए इतना नाटक करने की आवश्यकता नहीं होती। केवल समाचार-पत्रों में घोषणा-मात्र कर देना भी उतना ही प्रबल सिद्ध होता, जितना कि इस कार्य से होगा। वास्तव में गांधीजी का यह कहना कि हिन्दुस्तान अंग्रजों की विजय नहीं चाहता, सर्वथा ठीक नहीं है। साधारण हिन्दुस्तानी जानता ही नहीं कि वह क्या चाहता है।"

"देखिये मैं आपको अपने विचार बताता हूँ। वैसे तो जितने भी लोग हैं, उन सबके अपने अपने विचार हैं। इस पर भी तीन प्रकार के विचार मुख्य है प्रथम सुभाष बोस और उनके साथियों का विचार जो आर्म्ड रिवोल्ट के हैं। दूसरे गांधीजी हैं, वे अंग्रेज की विजय तो चाहते हैं, परन्तु उन्हें अंग्रेजों पर विश्वास नहीं कि वे अपना वचन पूरा करेंगे अथवा नहीं। तीसरे हैं पंडित जवाहरलाल के साथी। उनका न तो अंग्रेज की जीत-हार से सम्बन्ध है, न गांधीजी के सत्याग्रह से। वे रूस की जीत और उसी प्रकार के राज्य में रुचि रखते हैं। ये लोग इस समय अति दुर्बल हैं। इस कारण गांधीजी की हाँ-में-हाँ मिलाते हैं। वास्तव मे वे प्रतीक्षा कर रहे हैं और अवसर मिलते ही कुछ कार्यवाही करेंगे।"

"इन तीनों के अतिरिक्त एक बहुत बडी संख्या में जनता है जो स्वराज्य तो चाहती है, परन्तु विश्वास और अविश्वास में भटक रही है। वह न तो बोलना जानती है और न संगठित ही है।"

"तो सरकार को क्या समझना चाहिए?"

"सरकार को इस विशाल जनता का विश्वास प्राप्त करना चाहिए। सरकार अल्पसंख्यकों का विश्वास प्राप्त करने का यत्न करती है। इससे बहुसंख्यक जनता सरकार को चालबाज़ समझती है।"

"परन्तु गांधीजी तो कहते हैं कि वे बहुसंख्या में हैं।"

"वे बहुसंख्या में नहीं हैं। हाँ, यदि सरकार ऐसा समझती है तो फिर उसे उनका विश्वासपात्र बनना चाहिए।"

"तो कौन है बहुसंख्या में?"

"वे इस देश के हिन्दू विचार के लोग हैं। सरकार मजहबी विचार से अल्पसंख्यक मुसलमानों को संगठित होने में सहायता देती है। सैक्युलर विचार से यह मजहब विहीन अल्प-संख्यकों को पसन्द करती है। राजनीतिक विचार से सरकार कम्युनिस्टों को, जो अति अल्प संख्या में हैं, सहायता दे रही है। ये तीनों प्रकार से अल्पसंख्यक लोग सरकार को धोखा देने का अवसर देख रहे हैं। बहुसंख्या के लोग स्वराज्य तो चाहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है, परन्तु सरकार को मिथ्या पथगामी जान, समझ नहीं पा रहे कि क्या करें।"

"तो तुम क्या सुझाव देते हो?"

"मेरे विचार से सरकार ने 1858 से अब तक जो-जो किया है और पग-पग पर जिस प्रकार यहाँ के लोगों को अधिकार दिए हैं, इन सबका उल्लेख एक घोषणा द्वारा वह करे। वह अपनी घोषणा में यह भी कहे कि वह मुसलमानों को तथा सैक्युलर विचारों के लोगों को और राजनीतिक अल्पसंख्यकों को प्रोत्साहन देकर भूल करती रही है। वह युद्ध समाप्त हो जाने पर, धर्म-स्वतन्त्रता को स्वीकार करती हुई, इग्लैंड-जैसा पूर्ण स्वराज्य यहाँ पर भी दे देगी। वह पूर्णरूप से हिन्दुस्तानी राज्य होगा। भारत के टुकड़े नहीं होंगे, किसी भी मजहब पर प्रतिबन्ध नहीं होगा। सबको योग्यता और परिश्रम के अनुसार उन्नति का अवसर मिलेगा।"

कर्नल स्टैनले समझता था कि सरकार ऐसा नहीं चाहती। उसने इंग्लैंड के राजनीतिज्ञ मिस्टर चर्चिल का वक्तव्य सुनाते हुए कहा, इंग्लैंड अपना साम्राज्य छोड़ना नहीं चाहता। हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करने का अर्थ है, साम्राज्य का छिन्न-भिन्न होना। ऐसा वह नहीं कर सकता।

"परन्तु मैं तो कह रहा हूँ कि जो कूटनीति इस समय चली जा रही है, अर्थात अल्पसंख्यकों की आड़ लेकर बहुसंख्यकों पर शासन करना, अधिक काल तक चल नहीं सकेगी। गांधी और जवाहर की चले अथवा न चले, यह कूटनीति नहीं चलेगी। यह विफल होगी और परस्पर मैत्री भी समाप्त हो जाएगी। स्पष्ट सरल और सत्य नीति के अवलम्बन से भारत और इंग्लैंड की मैत्री बढ़ेगी और इससे इंग्लैंड को वही लाभ होगा, जो इसको एक उपनीवेश के रूप मे रखने से मिल रहा है।"

"परन्तु अंग्रेज़ यह समझता है कि हिन्दु, जो इस देश से प्रेम करता है, कभी भी अंग्रेज़ के पक्ष में नहीं होगा।"

"ऐसा इसलिए है कि प्रारम्भ से ही अंग्रेज़ों ने हिन्दुओं को हानि पहुँचाने का कार्य किया है। यहाँ अस्सी प्रतीशत से अधिक हिन्दू हैं। हिन्दुओं को दबाने के लिए अंग्रेज़ों ने सदा मुसलमानों को उभारा है। हिन्दुओं को दुर्बल करने के लिए अंग्रेज़ों ने उनमें परस्पर झगड़ा उत्पन्न करने का यत्न किया है।"

"एक शक्तिशाली और भली जाति को अपना मित्र बनाने की अपेक्षा अंग्रेज़ों ने उनको मित्र बनाया है, जिनकी न तो कोई परम्परा है, न इतिहास। जो सदा धोखे और फरेब का व्यवहार करते हैं। अंग्रेज़ ने यह समझ लिया है कि वह अल्पसंख्यकों के बल पर बहुसंख्यकों पर राज्य कर सकेगा।"

"संसार में कभी ऐसा हो नहीं पाया। कभी होगा भी नहीं। और इसका स्वभाविक परिणाम यह है कि बहुसंख्यक अंग्रेज़ों के शत्रु हैं।"

"परन्तु अब क्या हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुसलमानों में अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधि जिन्ना हैं। मुसलमान स्वयं देश में अल्पसंख्या में हैं। अंग्रेज़ देश की बहुसंख्यक जाति को छोड़ अल्पसंख्यक मुसलमानों और उससे भी अल्पसंख्यक जिन्ना-ग्रुप को अपना आश्रय बनाना चाहते हैं।"

"फिर हिन्दुओं में भी जब वे गांधी और अन्य खुशामदी राय साहबों को अपना आश्रय बनाते हैं, तो दुर्बल आधारों पर अपना अस्तित्व बनाना चाहते हैं।

"हमारा इस विषय में मतैक्य नहीं है। क्या गांधीजी हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं?"

"यद्यपि मैं इसको मानता नहीं। इस पर भी यदि अंग्रेज़ सरकार का यह मत है, तो उसे गांधी के साथ समझौता करना चाहिए था, न कि अल्पसंख्यक मुसलमानों के साथ।"

"मैं यह समझता हूँ कि हिन्दुओं में एक भारी संख्या ऐसे लोगों की है, जो ईमानदार अंग्रेज़ों का मान करते हैं। परन्तु जब अंग्रेज़ लोग केवल उससे बात करते है, जो उनको तंग कर सकता है अथवा जो उनको धोखा दे सकता है, तो उन अंग्रेज़ों के सहायकों को ये गांधीवादी मूर्ख सिद्ध कर देते हैं।"

मिस्टर स्टैनले मथुरासिंह से सहमत नही हो सका और उसने बात बदलकर कहा, "कल तुमने अपने परीक्षा-पत्र में लिखा था कि युरोप का युद्ध अफ्रीका और बालकान में लड़ा जाना चाहिए। तुमने अपने उत्तर में नक्शे भी खींचकर दिखाए हैं। मैं उस विषय में तुमसे व्याख्या में बात करना चाहता हूँ।"

"जब भी आप आज्ञा करे मैं उस विषय में विस्तारपूर्वक बताने के लिए तैयार हूँ।"

"हमने पाँच अध्यापकों की एक उप-समिति बनाई है। वह समिति गुप्तरूपेण तुम्हारे विचार जानना चाहती है।"

"कब?"

"कल मध्याह्न के समय।"

"मैं तैयार हूँ।"

इस दावत के अवसर पर स्टैनले-परिवार पर मथुरासिंह का प्रभाव सामान्य रहा। उसके फुटबाल के खेल ने मथुरासिंह को स्टैनले-परिवार की दृष्टि में एक नेता के रूप मे उपस्थित किया था। उसके पाप और अपराध की व्याख्या ने उसे एक मीमाँसक के रूप में उपस्थित किया था। परन्तु हिन्दुस्तान की राजनीति के विषय में उसके विचारों से उसको भ्रान्तमन समझा गया।

फ्लोरा को इतनी बात से संतोष नहीं हुआ। वह उससे और अधिक बात करना चाहती थी।

खाने के बाद जब मथुरासिंह विदा होने लगा तो फ्लोरा ने कहा, "मैं आपसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलकर बहुत खुश हूँ। क्या फिर कभी इस प्रकार मिलने का सुअवसर सुलभ हो सकता है?"

"मेरे लिए आपसे मिलकर बातें करना सदा प्रसन्नता का ही सूचक होगा। मैं नित्य सायं पाँच बजे के बाद खाली रहता हूँ।"

तो कल मिस्टर माइकल के साथ मैं आपको चाय के लिए आमन्त्रित करती हूँ।

8

अगले दिन प्रातः परेड के बाद मथुरासिंह के ट्यूटर ने इंस्टिट्यट के उच्चाधिकारी ब्रिगेडियर कोलवेल की एक लिखित आज्ञा उसके हाथ मे दी। उसमें लिखा था, "मिस्टर मथुरासिंह को आज्ञा दी जाती है कि आवश्यक विषय पर वार्त्तालाप करने के लिए वह आज मध्याह्नोत्तर ठीक दो बजे स्टाफ-रूम में उपस्थित हो जाये।"

मथुरासिंह जानता था कि उसे किस बात के लिए बुलाया जा रहा है। परन्तु जब उसके साथियों ने जब उक्त 'नोट' पढ़ा तो लम्बा-सा मुँह करके उससे पूछने लगे, "क्या कोर्ट मार्शल हो गया है?"

मथुरासिंह हँस पडा। उसने किसी प्रकार का उत्तर नहीं दिया। सबसे अधिक चिन्ता माइकल को लग गई थी। जब लोग इधर-उधर हुए तो उसने एकांत देख पूछा, "यह क्या हुआ है सिंह!"

"तुमने पढ़ा तो है कि मुझे स्टाफ-रूम में उपस्थित होने की आज्ञा है।"

"पर क्यों?"

"इस विषय मे कुछ लिखा नहीं है।"

"सभी का यह अनुमान है कि कल तुमने अपने साधुपन में फ्लोरा को नाराज़ कर दिया है।"

अपनी जानकारी में मैंने ऐसी कोई बात नहीं की। उसने तो आज सायं पाँच बजे तुम्हें और मुझे एक साथ ही, चाय पर आमन्त्रित किया है।

"सत्य! परन्तु यह क्या है? सिंह! मैं सच कहता हूँ। कि यदि तुम्हारे साथ कोई गडबड़ हुई तो मैं त्याग पत्र देकर चला जाऊंगा।"

परन्तु दोस्त! बीमारी से पहले ही इस प्रकार की चिकित्सा ठीक नहीं।

"मेरा दिल डरता है। तुमने या तो राजनीति पर खुलकर बात की है या अनिच्छुक फ्लोरा को बलपूर्वक चूमने का यत्न किया है। दोनों को मैं एक जैसा अपराध मानता हूँ।"

"मेरी समझ से ऐसी कोई बात नहीं है।"

"तो एक तीसरी बात भी हो सकती है। फ्लोरा ने प्रेम प्रकट किया होगा और तुमने ठुकरा दिया होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसते हुए मथुरासिंह बोला, "खूब! या तो मैंने उसके सम्मान पर आधात किया है या उसने मेरे सम्मान पर। दोनों सर्वथा परस्पर विरोधी बातों का एक ही परिणाम?

"हाँ ऐसा भी होता देखा गया है।"

"परन्तु मित्र! यह कोर्ट-मार्शल नहीं है। यदि ऐसा होता तो मुझे इस आज्ञा के साथ आरोप पत्र भी मिलता।"

इससे माइकल की चिन्ता कम हुई। इस पर भी पिछले दिन के फुटबाल मैच का हीरो सबकी चिन्ता का विषय बन गया। मथुरासिंह के लौटकर आने तक चिन्ता सबके मन में बनी रही।

मध्याह्नोत्तर दो बजे की गोष्ठी में मथुरासिंह को दुनिया के मानचित्र के सामने खड़ाकर कहा गया कि वह अपने कथन को समझाए कि यूरोप का युद्ध अफ्रीका और बालकान में किस प्रकार जीता जा सकता है।

मथुरासिंह ने संक्षेप मे अपना आशय समझा दिया। हाथ मे 'प्वाइंटर' लेकर उसने बताया, "जर्मनी और इटली मित्र है। इनके दूसरे दर्जे के मित्र है रूस और जापान। इनकी मित्रता संदिग्ध है। इस पर भी ये मित्र ही समझे जाते हैं परन्तु ये दोनों अंग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध नहीं कर रहे हैं।"

"मेरी यह योजना केवल वर्तमान स्थिति के लिए ही है।"

"ऐक्सिस शक्तियों में इटली जर्मनी से दुर्बल है। अफ्रीका की ओर फैलने वाले इटली के हाथों को अंग्रेज़ी साम्राज्य काट सकता है।"

"दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्युजीलैंड और हिन्दुस्तान अपनी सुदृढ सेनाएँ मिस्र में भेज, इटली के इन उपनिवेशों पर आक्रमण कर सकते हैं। इसके लिए दो लाख सिपाही, दो सहस्त्र लड़ाकू जहाज और दो सहस्त्र टैंक चाहिएँ। इसके अतिरिक्त मरुभूमि पर चल सकने वाली मोटर गाडियाँ भी चाहिएँ।"

"मिश्र और लीबिया की सीमा पर युद्ध होगा। इस युद्ध की सहायता के लिए भूमध्यसागर का समुद्री बेड़ा तैयार करना चाहिए।"

"यदि आक्रमण तेजी और दृढ़ता से किया जाए तो ऐक्सिस की अजेयता को मिथ्या सिद्ध किया जा सकता है। एक बार ऐसा सिद्ध किया तो हमारे मित्रों की संख्या बढ़ेगी।"

"मुझे विश्वास है कि यह 'ऐक्सिस शक्तियों का दुर्बलतम स्थान है। और हम इटली के ऐबिसीनिया उपनिवेश को दो मास में मुक्त करा सकते हैं। वहाँ से एक बड़ी मात्रा मे सैन्य-सामग्री प्राप्त हो जायेगी। इससे एक लाभ यह भी होगा कि ऐबिसीनिया के साधन हमको उपलब्ध हो जायेंगे।''

"तीन मास में हम भूमध्यसागर के ट्यूनिशिया अथवा ट्रिपोली के सागर पर पहुँच जाएंगे। मौराको से डीगाल की सेनाएँ, अलजीरिया में बढ़ती हुई हमारी सेनाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिल सकेंगी और हम सिसिली पर आक्रमण कर देंगे।"

"ग्रीक की रक्षा का उत्तरदायित्व हमें अपने पर लेना चाहिए। सिसिली पर आक्रमण के साथ ही यूनान के द्वारा रूमानिया और बलगारिया को जर्मनी से स्वतंत्र कराने का प्रबन्ध करना चाहिए।"

"इन दो आक्रमणों का पाणिाम यह होगा कि जर्मनी का इंगलैंड पर दबाव कम होगा, इग्लैंड से जर्मनी के औद्योगिक क्षेत्रों पर बमबाजी अधिक उग्रता से हो सकेगी।"

"यदि रूस और जापान पूरे तौर पर शत्रु के रूप मे हो गये तो योजना में अन्तर पड़ सकता है। इस पर भी मेरा विचार है कि रूस जर्मनी से पूरे तौर पर नहीं मिलेगा। जापान का जर्मनी से मिलना अधिक सम्भव है। उस अवस्था में अमेरिका अवश्य मित्र राष्ट्रों से मिलेगा।"

"इस नई परिस्थिति में भी अफ्रीका और इटली का युद्ध तो होगा। शेष योजना रूस के मन को जानने के बाद बनाई जा सकती है।"

मथुरासिंह की संक्षिप्त योजना की व्याख्या में भी एक घन्टे से अधिक समय लग गया। फिर उससे प्रश्न पूछे जाने लगे–

स्टैनले ने पूछा, "आप यह किस आधार पर कह रहे हैं कि रूस पूरे तौर पर जर्मनी से नहीं मिलेगा।"

"क्योंकि दोनों की विचारधारायें भिन्न हैं। वे एक दूसरे का विश्वास नहीं करते। वे एक दूसरे के शत्रु हैं। साथ ही रूस बिना युद्ध के ही अपनी स्थिति सुदृढ़ करने में लाभ समझता है।"

"रूस अंग्रेजों से क्यों नहीं मिल सका?"

"जहाँ तक विचार धारा का सम्बन्ध है, इंग्लैंड रूस के अधिक समीप था। परन्तु वह जर्मनी से बहुत दुर्बल था। रूस को एक दुर्बल देश की मित्रता में लाभ प्रतीत नहीं हुआ।"

"स्वेच्छा से तो रूस जर्मनी से लड़ेगा नहीं। वह बलवान शत्रु से लड़ने की इच्छा नहीं रखता।"

एक अन्य आफिसर ने पूछा, "जापान के युद्ध मे सम्मिलित होने से अमेरिका क्यों युद्ध में सम्मिलित होगा?

"क्योंकि दोनों प्रशान्त महासागर के प्रतिद्वन्द्वी है। अभी तक अमेरिका ने युद्ध के विचार से आवश्यक स्थानों पर अधिकार जमा रखा है। यदि जापान ने अपने को सुदृढ़ करने का यत्न किया तो अमेरिका इसको पसन्द नहीं करेगा।"

इस व्याख्यान तथा प्रश्नोत्तरों को टेपरिकार्ड कर लिया गया था। परिणाम यह हुआ की इस व्याख्यान की गूंज हिन्दुस्तान के केन्द्रीय सैनिक कार्यालय और फिर इग्लैंड तक जा पहुँची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन मास के प्रशिक्षण के बाद जब मथुरासिंह की नियुक्ति का प्रश्न उपस्थित हुआ तो उसे 'चीफ आफ दी स्टाफ' के केन्द्रीय कार्यालय में नियुक्त कर दिया गया। वह लेफ्टिनेंट पद का अधिकारी माना गया।

मथुरासिंह को दिल्ली छावनी में आये अभी पन्द्रह दिन भी नहीं हुए थे कि अपनी पत्नि, लड़की तथा लड़के के साथ लाला देवीदयाल उससे मिलने के लिए आ पहुचें।

सैनिक वेश में मथुरासिंह बहुत ही आकर्षक प्रतीत होता था। तांगे से उतर राधा ने जब उसे देखा तो मन्त्र-मुग्ध सी मूर्तिवत् उसे देखती खड़ी रह गयी।

मथुरासिंह अपने बंगले के बरामदे में खड़ा था। उसने देखा कि देवीदयाल और मक्खनी तो आगे बढ़े परन्तु राधा वहीं निश्चल खड़ी है। एकाएक उसको खयाल आया कि अभ्यागतों का स्वागत करने के लिए उसे तांगे तक जाना चाहिए था। इससे वह उनकी ओर चला। देवीदयाल ने उसे तांगे की ओर आता देखा तो हाथ में पकड़ा ट्रंक भूमि पर रख दिया।

समीप पहुँच मथुरासिंह ने उनको पाँय लागूँ कही और राधा से कहा, "राधा! यहाँ खड़ी क्या कर रही हो? आओ न।"

राधा सचेत हुई और अपने सामने मथुरासिंह को खड़े देखा तो उसने उसके चरणों को स्पर्श किया। फिर मुस्कराकर साथ चलते हुए बोली, "आप तो बिल्कुल ही बदल गये हैं।"

" हाँ, कुछ दुबला हो गया हूँ। शरीर की चर्बी ढल गई है।"

"मैं यह नहीं कह रही। आप बहुत...। कहती-कहती रुक गई। अब तक वे लाला देवीदयाल के समीप पहुँच गये थे। रमणीक ने हाथ जोड़ नमस्कार किया तो मथुरासिंह ने उसकी पीठ पर हाथ फेर उसे प्यार दिया। बोला,"रमण! पढ़ाई कैसी चलती है?"

बात करते हुए सड़क से ड्राइंग रूम में जा पहुँचे। मथुरासिंह कहने लगा, "मैं देख रहा था कि भापा और माता जी क्यों नहीं आये? वे तो एक मास से लिख रहे थे कि वे आने वाले हैं।

"वे हरिद्वार गये हैं। मुझे वर्धा जाना है। इस कारण मैंने सोचा कि मैं पहले ही मिल लूँ।"

"पर चाचा तुम्हारी खद्दर की टोपी कहाँ है?"

"मुझे ऐसा बताया गया था कि किसी खद्दर की टोपीधारी के तुमसे मिलने आने पर तुम्हारे अफसर तुमसे नाराज भी हो सकते हैं। इस कारण मैंने दिल्ली स्टेशन पर ही खद्दर के कपड़े अपने ट्रंक में बन्द करके, ये दूसरे कपड़े पहन लिये थे।"

"तो चाचा! तुम्हें सरकारी अफसरों की नौकरी की भी चिन्ता रहती है?"

देवीदयाल मुस्करा दिया। वह कुछ बोला नहीं। उसने राधा को मथुरासिंह के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण-स्पर्श करते देखा था। इससे उसको किसी प्रकार की परेशानी भी नहीं हुई। मक्खनी ने उसको राधा के मन की भावना का परिचय दे दिया था। इस पर पहले तो वह परेशान हुआ था, परन्तु जब मक्खनी ने उसकी स्वीकृति के बिना भी राधा का विवाह मथुरासिंह से करने की धमकी दी तो वह शांत हो गया। उसका विचार था कि वह दो-तीन मास गांधी-आश्रम मे रहेगा और वहाँ जाने से पूर्व वह राधा की सगाई का निश्चय कर जाये।

यों तो मथुरासिंह के दिल्ली आने से पूर्व सूरतसिंह उससे मिलने की इच्छा कर रहा था। परन्तु उनका विचार था कि किसी रेजिमेंट में जाने से पूर्व वह जमादारपुर में आयेगा और वे उसको लेकर गंगा-स्नान करा कर ही नौकरी पर भेजेंगे। परन्तु एकाएक उनको समाचार मिला कि उसकी ड्यूटी दिल्ली के सैनिक कार्यलय में लगी है और उसका 'पद' लेफ्टिनेन्ट का है। साथ ही उन्हें यह भी बताया गया कि उसे घर आने का अवकाश नहीं मिला, इसलिए वह गाँव नहीं आ पाया। इस पर वे अपने पूर्व निश्चयानुसार हरिद्वार चले गये। वहाँ उन्होंने अपने लड़के की दीर्घायु की कामना के लिए यज्ञ का अनुष्ठान रखा हुआ था।

देवीदयाल को वर्धा में जाकर रहने की स्वीकृति मिली और वह वहाँ जाने के लिए तैयार होने लगा तो मक्खनी ने कहा कि दो दिन दिल्ली चलकर मथुरासिंह से जाकर मिलेंगे। इस कारण वे भी साथ ही चल दिये। देवीदयाल ने मथुरासिंह को तार भेज दिया था मथुरासिंह का विचार था कि उसके माता पिता आ रहे होंगे और देवीदयाल तो वैसे ही उनके साथ आ रहा है।

देवीदयाल को बिना अपने माता-पिता के आया देख, मथुरासिंह को विस्मय हुआ। परन्तु राधा के अपने माता-पिता के सामने ही उसके चरण स्पर्श करने से उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही।

इस पर भी उसने प्रथम प्रश्न खद्दर के वस्त्रों के विषय में किया और देवीदयाल का उत्तर सुन, उसकी हंसी निकल गई। उसने कहा, "तो चाचा को मेरी नौकरी की चिन्ता है?"

राधा और उसकी माँ मथुरासिंह का बंगला देखने के लिए भीतर चली गई थीं। देवीदयाल ने मुस्कराते हुए कहा, "देखो बेटा! मैं तुमको अपने अब पुत्र के समान मानता हूँ। इसलिए मुझे तुम्हारा हित प्रिय है।"

"इससे पूर्व मैं तुम्हे बेटा-जैसा नहीं दिखाई देता था क्या? अब तक क्या यों ही मैं तुम्हें चाचा कहता रहा हूँ?"

"तब तो मैं रस्मी तौर पर चाचा था, अब मैं वास्तव में चाचा हूँ। समझे हो न? क्या राधा की चरण वंदना स्वीकार नहीं की? मैं सब देख रहा था।"

"तो चाचा! तुम आर्शीवाद देते हो न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बिल्कुल मैंने भापा और भाभी से पूछ लिया है। दोनों राजी हैं।"

"परन्तु मुझसे तो पूछा नहीं?"

"उसकी तुमने अभी तांगे के पास घोषणा कर दी है कि तुम जमादारपुर गाँव के निवासी लाला देवीदयाल के जामाता हो।"

"लेकिन चाचा मेरा तो यह कहना है कि युद्ध समाप्त होने से पूर्व मैं विवाह नहीं करूंगा।"

"यह तुम राधा से बात करना। तुम मेरे दामाद हो? राधा को तुम कब अपने घर ले जाओगे, यह तुम दोनों के निर्णय करने की बात है।"

"तो ठीक है। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि चाचा एक स्वतंत्र व्यक्ति की भांति विचार किया करते हैं।"

मक्खनी और राधा बंगला देखकर आईं तो मक्खनी बोली, "अच्छी और साफ सुथरी और पक्की कोठी है।

"हाँ, चाची! पर नौकरी ऐसी है मुझे कभी भी युद्ध भूमि पर भेजा जा सकता है। इस कारण मेरे सामान में यहाँ पर केवल ट्रंक और बिस्तरा ही है। शेष सब सरकारी सामान हैं।"

"तो यह धर्मशाला है?"

"हाँ, चाची! मैं अपनी यात्रा में जाते कुछ दिन यहाँ पर रह रहा हूँ।"

"अच्छा देखो, तुम्हारे चाचा तो कल प्रातःकाल चले जायेंगे। मैं और राधा यहाँ दो-तीन दिन ठहरेंगे। तब तक तुम्हारे माँ और भापा जी आ जायेंगे और हम उनके साथ ही गाँव को लौट जायेंगे।"

"चाची! यह तो बहुत प्रसन्नता की बात हैं। अभी भोजन करो, आराम करो और फिर मैं आपको दिल्ली की सैर कराने ले चलूंगा।"

"दिल्ली की सैर हम भापा और बहन भगवन्ती के आने पर उनके साथ ही करेंगे।"

"और चाचा?"

"वे तो बीसियों बार दिल्ली देख चुके हैं।"

मथुरासिंह के कार्यालय के साथी उससे मिलने के लिए आये और वहाँ उसके गाँव वालो को बैठा देख उससे उनका परिचय प्राप्त करने लगे। उसने कहा कि ये उसके गाँव के महाजन लाला देवीदयाल है, उसके परिवार पर उनकी बड़ी कृपा रहती है। मथुरासिंह के साथियों ने समझा कि उसके परिवार को ये लालाजी आवश्यकता के अवसर पर रुपया उधार देते होंगे। खूब अच्छा ब्याज लेते होंगे और कदाचित आज भी वे किसी प्रकार के लेन देन की बात करने के लिए आये होंगे। इस कारण उनकी दृष्टि में एक अति तुच्छ जीव ही आया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर भी सभ्यता कि नाते वे देवीदयाल से मिले और उसकी बातें सुनते रहे। देवीदयाल उनको अपने जमादारपुर में साधारण स्थिति में आकर रहने से लखपति बनने तक की कथा सुनाने लगा। इस कथा से मथुरासिंह के साथी और भी स्पष्ट रूप से लाला को गरीबों का रक्त चूसने वाला समझने लगे।

इस प्रकार वे मथुरासिंह को मकड़ी के जाले में फंसी हुई मक्खी समझकर उससे सहानुभूति रखने लगे। सहसा उठते हुए उनमें से एक व्यक्ति ने कहा, "सिंह! आज टैनिस खेलने नहीं चलोगे?"

"टैनिस क्या खेलना! फुटबाल खेलना हो तो चलूँ?"

आफिसर लोग फुटबाल को गँवारो का खेल समझकर खेला नहीं करते थें। सिंह के साथी कौल ने उसकी बाँह-में-बाँह डालते हुए उसको अपने साथ घसीटकर कहा, "इन देहाथियों को यहाँ देख तुम्हें भी देहातियों के खेल का स्मरण हो आया है क्या?"

"जब कोई शहरी अपनी दुर्बलता के कारण कोई काम न कर सके तो उसको गँवारू काम कहकर उसकी हँसी उड़ाता हैं।"

"सत्य?"

"मिस्टर कौल! इसकी परीक्षा हो सकती हैं। मैं टैनिस खेलता हूँ और तुम आधा घंटा फुटबॉल खेलकर देखो। फुटबॉल खेलने वाला तो टैनिस खेल लेगा किन्तु टैनिस खेलने वाला फुटबाल नहीं खेल सकता।"

कौल इस कथन की सत्यता समझता था। वह यह भी जानता था कि मथुरासिंह दोनों खेलों को बड़ी योग्यता से खेल सकता है। इतने में उसका एक साथी भीतर जाकर उसका टैनिस का बल्ला उठा लाया सब, क्लब की और चल पड़े। मार्ग में कौल ने अपने मन की बात बताते हुए कहा, "मिस्टर सिंह! लाला देवीदयाल तुम्हारे सम्बन्धी हैं कोई?"

"हाँ, ये लालाजी पिताजी के घनिष्ठ मित्रों में से हैं।"

"मैं तो समझा था कि कोई सूदखोर महाजन होगा।"

"सूदखोर भी हो सकता है मुझे पता नहीं है। हमको कभी रुपया लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी। पिताजी की आय सदा इतनी रही है कि वे मेरे कॉलेज का बोझ सुगमता से सहन कर सकते थे।"

"परन्तु इस लाला की पत्नी खूब भूषणों से लदी हुई है। इतनी सम्पत्ति देहात में ईमानदारी से एकत्रित नहीं हो सकती।"

"यह प्रश्न यदि लाला के सम्मुख कर देते तो मैं उन्हें अपनी जीवनकथा सुनाने के लिए कह देता।"

"तो क्या वे सब सत्य बता देते?"

"हाँ वे हमारे परिवार के सम्मुख झूठ नहीं बोल सकते। पिताजी उनकी सब बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानते हैं''

9

देवीदयाल अगले दिन वर्धा जाने के लिए तैयार हो गया। उसके परिवार के शेष सभी व्यक्ति मथुरासिंह के पास रह गए। वे लोग दिन को कोठी पर रहते थे और मथुरासिंह अपने कार्यालय चला जाता था। वह छावनी से सरकारी जीप में अपने कार्यालय जाता-आता था।

मथुरासिंह के 'मिलिटरी स्ट्रैटेजी' के अध्यापक कर्नल स्टैनले को हाई कमाण्ड ने दिल्ली बुलाया था। एक दिन पहले ही लन्दन से हिन्दुस्तान के कमाण्ड-इन-चीफ को तार आया था और उसके अनुसार स्टैनले को जबलपुर से दिल्ली बुलाया गया। प्रातःकाल के हवाई जहाज से वह दिल्ली आ पहुँचा। स्टैनले बुलाए जाने का कारण नहीं जान सका।

मथुरासिंह कार्यालय में पहुँचा ही था कि कमाण्डर-इन-चीफ ने उसको बुला लिया। वहाँ पहुँच मथुरासिंह ने कमाण्डर-इन-चीफ को सैल्यूट किया तो उसे बैठने का संकेत मिल गया। स्टेनले भी वहाँ पर उपस्थित था।

कमाण्डर-इन-चीफ ने उसको बुलाने में कारण बताते हुए कहा, "पिछले महीने जबलपुर में रिकार्ड किया लैफ्टिनैन्ट मथुरासिंह का व्याख्यान हमको यहाँ मिला। मैंने वह चीफ ऑफ दी आर्मी स्टॉफ को सुनाया था। एक के अतिरिक्त जिसका कि मैं परिचय नहीं देना चाहता, सबने उसको हौर्स इन द एयर' समझा था। हम मिस्टर स्टैनले का वह आग्रह कि अपने कमेन्ट्स के साथ उस व्याख्यान को लन्दन भेज दें, स्वीकार न करते, यदि वही सदस्य उसके भेजे जाने का हठ न करते।

"रिकॉर्ड को वहाँ भेजे जाने के पाँच दिन बाद हमें केबल मिला है कि लैफ्टिनैन्ट सिंह को दिल्ली के केन्द्रीय कार्यालय में रखा जाये। उसकी किसी समय भी आवश्यकता पड़ सकती है। अतः हमने सिंह की नियुक्ति दिल्ली में कर दी।

"कल हमें एक और केबल मिला है कि कर्नल स्टैनले और लैफ्टिनैन्ट सिंह को हिन्दुस्तान से बाहर जाने की तैयारी की आज्ञा दी जाये। लन्दन से डिस्पैच चल पड़ा है और हमें आशा है कि तीन-चार दिन में यहाँ पहुँच जायेगा। तदनुसार आप दोनों को जाना होगा।"

मथुरासिह कल्पना करने लगा था कि क्या आज्ञा हो सकती है। स्टैनले ने तुरन्त कह दिया, "सर! मैं समझता हूँ कि लै०सिंह की योजना को कार्यान्वित करने योग्य समझा गया है।"

"मुझे बहुत दुःख है। कमाण्डर इन चीफ ने कहा, "यदि लन्दन वालों की व्यवहारिक बुद्धि होती तो हमको इस पराजय का मुख नहीं देखना पडता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह समझ रहा था कि दिल्ली के अधिकारियों को उसकी योजना स्वीकार्य नहीं थी। इस पर भी उसको अपनी योजना पर विश्वास था। आज उसको यह पता लगा कि उस जैसे सर्वथा अनुभवहीन नवीन लेफ्टिनेन्ट को चीफ ऑफ द स्टाफ के समीप क्यों रखा गया है? पिछले पन्द्रह दिन से उससे किसी प्रकार का काम नहीं लिया गया था। आज उसको इसका रहस्य विदित हुआ कि उसको तो लन्दन के चीफ ऑफ दि आर्मी स्टॉफ की आज्ञा के आधार पर दिल्ली में रखा गया है। वास्तव में दिल्ली कार्यालय वाले उसकी योजना को अभियान के योग्य नहीं समझते थे।

कमाण्डर-इन-चीफ ने दोनों को आज्ञा सुना दी। उसने कहा, "आप लोग दुनिया के किसी भी कोने में जाने के लिए तैयार रहिए।" इतना कह उनको जाने का सकेंत देने के लिए उसने हाथ बढ़ाया। स्टैनले ने हाथ मिलाया। कमाण्डर ने मथुरासिंह से हाथ नहीं मिलाया। मथुरासिंह ने सैल्यूट किया और बाहर चला आया। बाहर आकर मथुरासिंह ने स्टैनले से पूछा, "आप कब पहुँचे हैं?"

"कल रात आठ बजे मुझे सूचना मिली थी कि मुझे तुरन्त दिल्ली पहुँचना चाहिए। सुबह चार बजे एक हवाई जहाज़ आ रहा था, मैं उसमे बैठकर चला आया। मुझे सन्देह हो रहा था कि कदाचित् इंग्लैंड जाना पड़ेगा अतः मैंने अपनी पत्नी और लड़की को तुरन्त दिल्ली के लिए रवाना होने के लिये कह दिया था। वे भी आज सायंकाल मेल ट्रेन से यहाँ पहुँच जायेंगे।"

"कहाँ ठहने का विचार है?"

"अभी तक तो मेरा 'किट' बाहर वेटिंग-रूम में रखा हुआ है। यहाँ पहुँचते ही मैंने 'एस्टेब्लिशमेंट' वालों से कहा है कि मेरे लिए किसी होटल मे दो रूम वाले सैट का प्रबन्ध कर दें। आशा है अब तक प्रबन्ध हो गया होगा।"

"मैं आपको अपने बंगले में चलने के लिए कहता, परन्तु गाँव से मेरे कुछ सम्बन्धी आये हुए हैं। इस कारण बंगले मे भारी भीड़-भाड़ लगी हुई है। "

"मैं समझता हूँ कि किसी होटल मे स्थान मिल ही जायेगा और मुझे वहाँ सुविधा भी अधिक रहेगी। इस पर भी मिस स्टैनले तुमसे मिलने के लिए उत्सुक प्रतीत होती है।"

"हम उनके स्वागत के लिए शाम को स्टेशन पर एक साथ ही चलेंगे।"

"यह ठीक ह रहेगा। परन्तु सिंह! यह कमाण्डर तो मूर्ख प्रतीत होता है। उसको इंग्लैंड के अधिकारियों की शान मे वह कुछ कहना नहीं चाहिए था, जो उसने कहा है।"

मथुरासिंह इसमें अपनी सम्मति नहीं देना चाहता था। अतः वह चुप ही रहा। उसे चुप देख स्टैनले ने कहा, "मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तान के सैनिक व अधिकारी स्वयं गधे हैं। यदि इनमें कुछ भी बुद्धि होती तो हिन्दुस्तान की यह हालत न होती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो आज है।"

"आज मुझे तुम्हारी वह बात ठीक प्रतीत हुई है कि हम हिन्दुस्तान के गलत नेताओं के साथ बातचीत करते हैं। 'हम गलत 'इंटरैस्ट' के साथ समझौता कर रहे हैं।"

आखिर में मथुरासिंह को मुख खोलना ही पड़ा। उसने कहा, "ठीक साथी तो तभी मिलते हैं, जब अपना व्यवहार उचित दिशा में हो। यदि अंग्रेज यहाँ के श्रेष्ठ श्रेणियों को एकत्रित कर उनको हिन्दुस्तान के नेता मान कर, अपना व्यवहार निश्चय करते, स्वराज्य अवश्य जल्दी देना पड़ता, परन्तु हिन्दुस्तान की स्वराज्य सरकार सदा अंग्रजों की सहायक रहती।

"मेरे पिताजी कहा करते हैं कि अंग्रेज़ी पार्लियामेंट में वकीलों का जोर है। इस प्रकार वे हिन्दुस्तान के वकीलों से ही बातचीत और सौदा करना चाहते हैं। दोनों देशों के वकील एक-दूसरे को धोखा दे अपना काम निकालना चाहते हैं और दोनों ही असफल हो रहे हैं। इस धोखादेही को सभ्य भाषा में 'डिप्लोमैसी' का नाम दिया जाता है।

"यदि दोनों कौमों की बातचीत सैनिकों द्वारा हो तो उसमें डिप्लोमैसी कम होगी और वह स्थायी होगी।"

स्टैनले मुस्कराता रहा। वह मन मे विचार कर रह था कि राज्यकार्य मे डिप्लोमैटिक व्यवहार एक आवश्यक वस्तु है। सत्य ही इसके अभिप्राय स्पष्टवादिता नहीं, अपितु छल, फरेब हैं।

मथुरासिंह स्टैनले को अपने घर ले गया। तब तक देवीदयाल बम्बई जा चुका था और उस दिन मक्खनी रमणीक को लेकर घूमने गई हुई थी। राधा भी साथ जाती, किन्तु घर को अकेला छोड़ना ठीक न समझ, वह नहीं गई। यह सोचा गया था कि मथुरासिंह चार बजे से पहले आयेगा नहीं और मक्खनी एक घंटे तक लौट आयेगी। राधा अब भलीभांति हिन्दी पढ़ने लगी थी और एक पुस्तक जो वह स्टेशन से खरीदकर लाई थी, बैठी पढ़ रही थी।

वह मथुरासिंह को किसी अंग्रेज के साथ आया देख, विस्मय में मुख देखती रह गई। मथुरासिंह ने कहा, "राधा! चाची कहाँ है? "

"वे रमणीक के साथ जरा आस-पास की बस्ती देखने के लिए गई हैं।"

"तुम साथ क्यों नहीं गई?"

"माँ कहती थी की नौकरों के हवाले घर छोड़ना ठीक नहीं है।"

"परन्तु मैं तो नित्य ही इनके हवाले छोड़कर जाया करता हूँ।"

"हमें यह विदित नहीं था।"

"अच्छा तुम भीतर बैठो। ये मेरे अध्यापक हैं। जबलपुर में मैं इनसे पढ़ता था।"

राधा पिछले कमरे मे चली गई। मथुरासिंह ने घंटी बजाई और बैरा आया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको चाय बनाकर लाने के लिए कह दिया। स्टैनले ने बैठते हुए कहा, "यह लड़की तुम्हारी क्या लगती है?"

"यह मेरी रिश्तेदार है।"

"बहुत सुन्दर है।"

"सत्य?"

"हाँ यदि मैं युवा होता तो इससे विवाह करने का यत्न करता।"

"परन्तु यह अंग्रेजी का एक अक्षर भी नहीं जानती।"

"क्यों इसकी शिक्षा किसी स्कूल में नहीं हुई?"

"हमारे गाँव में कोई स्कूल नहीं है। मैं भी तो गाँव के बाहर जाकर पढ़ा हूँ।"

"परन्तु अभी यह कोई पुस्तक तो पढ़ रही थी?"

"वह हमारी अपनी भाषा की पुस्तक थी। यह भाषा इसने अपने भाई और मेरी माँ से सीखी है।"

"फिर भी यदि मेरे वश की बात होती तो मैं इसका अपहरण कर लेता।"

"ओह! परन्तु इसकी इच्छा से अथवा बलपूर्वक?"

"औफकोर्स। उसकी इच्छा से।"

"तब तो वह आपके साथ भागना कभी स्वीकार नहीं करती।"

"मैं युवा होता तब भी नहीं?"

"हाँ, तब भी नहीं?"

"मगर लोग कहते हैं कि मैं ख़ूबसूरत व्यक्तियों में से हूँ?"

"मैं जानता हूँ कि वह आपसे भी सुन्दर युवक से प्रेम करती है।"

"'एण्ड हू इज़ दैट डैविल'?"

"वह व्यक्ति हमारे ही गाँव का रहने वाला है।"

"आई एम सौरी फार दि गर्ल' मुझे विश्वास है कि वह मुझ जितना धनी नहीं हो सकता। मैं एक जागीर का मालिक हूँ। हमारे मेन्शन में बीस लिविंग रूम हैं। इस समय भी मेरी आय पाच हजार पौंड प्रतिवर्ष है।"

"परन्तु कर्नल! उस बात को कहने से लाभ ही क्या जो असम्भव हो? आप युवा नहीं आपकी शादी हो चुकी है। आपकी पत्नी भी सुन्दर है। आपकी एक कन्या है। इसलिये आपको तो अब नये विवाह का विचार मन में भी नहीं लाना चाहिये।"

"'एनी वे मैं समझता हूँ कि तुमको अफ्रीका चलने के लिए तैयार रहना चाहिये।"

"मैं दुनिया के दूसरे छोर तक जाने के लिए तैयार हूँ।"

"मैं सोच रहा हूँ कि जब तक कहीं निश्चय नहीं हो जाता, मैं पत्नी और लड़की को यहाँ छोड़ जाऊँ। यदि तुम्हारे पीछे यह मकान खाली रहता है। तो मेरी पत्नी और लड़की यहाँ रह सकती हैं क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम कल पता करेंगे। कदाचित् मेरी नियुक्ति दिल्ली में ही रहेगी और हमारा मिशन पूर्ण हो जाने के बाद मैं यहाँ ही लौटूंगा। इस प्रकार यदि यह बंगला मुझसे छीना न गया तो आपकी पत्नी और पुत्री यहाँ रह सकती हैं।"

"ठीक है, मैं इसमें तुम्हारी सहायता कर दूंगा।"

"वे अभी चाय पी रहे थे कि मक्खनी और रमणीक लौट आये। किसी गोरे व्यक्ति को वहाँ बैठे देख, दोनों सीधे भीतर चले गये। स्टैनले ने चाय पी और फोन करके टैक्सी मंगवाई। मथुरासिंह के साथ अपना समान उठा, वह मैरीना होटल मे चला गया। उसके लिए वहीं कमरों का प्रबन्ध किया गया था। कुछ देर आराम कर, वे नई दिल्ली स्टेशन पर जा पहुँचे।"

गाड़ी आने पर मिसेज़ ऐण्ड मिस स्टैनले को लेकर वे पुनः होटल में आ गये। रात चारों ने साथ ही खाना खाया और जब मथुरासिंह अपने निवास को वापस जाने के लिए नीचे उतरा तो मिस स्टैनले उसके साथ नीचे आई। चलते-चलते उसने पूछा, आप फ्रन्ट पर जा रहे हैं?

"अभी कुछ पता नहीं। मुझे तथा तुम्हारे पिताजी को आज्ञा हुई है कि हमें हिन्दुस्तान से बाहर जाने के लिए तैयार रहना चहिये।"

"मैं समझती हूँ कि पापा तो लन्दन जायेंगे और आप किसी फ्रन्ट पर।"

"परन्तु अभी तो कहीं फ्रन्ट बना नहीं?"

"यदि आप इंग्लैंड गये तो मैं आपके साथ जाऊंगी। और यदि आप कहीं अन्यत्र गये तो मैं हिन्दुस्तान में ही आपकी प्रतीक्षा करूंगी।"

"किसलिये?"

फ्लोरा ने इसका उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप सीढ़ियाँ उतरती रही। मथुरासिंह ने बात बदलकर कहा, "मैंने तुम्हारे पापा मम्मी को कल का लंच अपने घर पर लेने का निमंत्रण दिया है। मेरी इच्छा है कि तुम भी आओ। वहाँ मेरे कुछ सम्बन्धी आये हुए हैं, मै तुमको उन से मिलवाऊंगा।

"मैं आऊंगी।"

"थैक यू फ्लोरा! तुम अपने पापा के साथ इंग्लैंड चली जाना। हिन्दुस्तान का जलवायु स्कॉटलैंड के जलवायु की भाँति अच्छा नहीं हो सकता।"

"मेरा भाई जौन हवाई सेना में पायलॉट है। आजकल पायलॉट भारी संख्या में मारे जा रहे हैं।"

"हम सभी ईश्वर की दया पर आश्रित हैं।"

"मैं समझती हूँ कि पापा आपको अपनी ऐस्टेट पर देखकर बहुत प्रसन्न होंगे।"

"कर्नल स्टैनले की मुझ पर बड़ी कृपा है। युद्ध के बाद यदि आपका निमंत्रण आया तो मैं अवश्य आऊंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह अपने बंगले में पहुँचा तो अपने माता-पिता को आया देख, बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उनके चरण-स्पर्श किए और माता-पिता ने उसे आशीर्वाद दिया।

मथुरासिंह ने अपनी स्थिति के विषय मे बताया, "मैं किसी भी क्षण देश से बाहर जाने की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आप आ गये, यह बहुत ही अच्छा हुआ। मुझे तो यहाँ एक सप्ताह की भी छुट्टी नहीं मिली।"

उसकी माँ बोली, "हमें राधा और मक्खनी को यहाँ बंगले में बैठे देखकर विस्मय हुआ है।"

"हाँ, ये लोग कल चाचा के साथ एकाएक आ पहुँचे थे।"

फिर गाँव तथा अन्यान्य विषयों पर बातें होती रहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

काहिरा के अंग्रेजी सैनिक-शिविर में एक कमरे में लगभग पन्द्रह सैनिक अधिकारी बैठे थे। मथुरासिंह उनके सम्मुख अपनी योजना बता रहा था। उसके पीछे दीवार पर उत्तरी अफ्रीका का मान-चित्र टंगा था।

मथुरासिंह को सुनने वाले ईस्टर्न कमाण्ड के कमाण्डर-इन-चीफ और चीफ ऑफ दि स्टॉफ थे। साथ ही वहाँ भूमध्यसागर के एडमिरल और पूर्वी हवाई सेना के चीफ भी थे।

मथुरासिंह कह रहा था, "जब तक शस्त्रास्त्रों से सज्जित रूस, हिटलर की पीठ पर खड़ा है, हिटलर सुख का साँस नहीं ले सकता। यह मेरा निश्चित मत है। उसने उसे इंग्लैंड का भय दिखाकर और आधे पोलैंड, लिथूनियाँ, लैटबिया, इस्टोनिया और फिनलैंड-रूपी भेंट तश्तरी में प्रस्तुत कर, शान्त रखने का यत्न किया है। परन्तु वह जानता है कि रूस इससे न तो सन्तुष्ट रहेगा और न ही वह जर्मनी की पश्चिम में प्रगति देख, निश्चिंत रह सकेगा। इस कारण मेरा मत है कि हिटलर ने सत्य हृदय से जुलाई मास में अंग्रेजों के साथ संधि कर लेने का यत्न किया था।

"इंग्लैण्ड को हिटलर पर विश्वास नहीं है। साथ ही इंग्लैंड, युरोप के महाद्वीप पर किसी अन्य बड़ी शक्ति के होने को, अपनी सुरक्षा के लिए ठीक नहीं समझता। अतः उसकी हिटलर अथवा युरोप की किसी भी एक महान्-शक्ति से स्थायी संधि नहीं हो सकती।

"इंग्लैंड की इस राजनीतिक मनोवृति को सफल बनाने के लिए हम सैनिक क्या कर सकते है, यह एक प्रश्न है।

"इससे मैं हिटलर-मुसोलिनी संयोग को तोड़ना प्रथम कर्त्तव्य समझता हूँ। दोनों में मुसोलिनी दुर्बल है। उसकी दुर्बलता है उसकी औद्योगिक शक्ति का सर्वथा स्वतन्त्र न होना। 1914 और 1936 में अन्तर यह पड़ गया है कि जहाँ 1914 सेना का दस प्रतिशत यंत्रसज्जित (मैकेनाइज्ड) था, वहाँ अब 1936 में वह पचानवें प्रतिशत हो गया है। इस यन्त्रीकरण का प्राण है पैट्रोल। और मुसोलिनी इस के लिए निर्भर करता है रूमानिया और बलगेरिया पर। ऐबिसीनिया में तेल कि खोज मे उतनी सफलता नहीं मिली, जिससे कि वर्तमान युग की यंत्रसुसज्जित सेना को चालू रखा जा सके।

"अतः इसके लिए मेरी दो योजनाएँ हैं। ऐबिसीनिया के आन्नादि से इटली को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वंचित कर, वहाँ के नागरिकों को भूखे मार, अपने नेता की नीति के औचित्य पर विचार करने के लिए उनको विवश करना।

"इस कार्य के लिए हमको इटली और ऐबिसीनिया का सम्बन्ध विच्छेद कराना होगा। यह मिश्र में से लीबिया पर आक्रमण करने से हो सकता है।

"मिश्र में आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, हिन्दुस्तान और कुछ सीमा तक कनाडा और दक्षिण अफरीका से सेना पहुँचाई जा सकती है। सैनिक उपकरण बिना किसी बाधा के अमेरिका से प्रशान्त तथा हिन्दमहासागर द्वारा यहाँ आ सकते हैं। यदि इसके लिए यत्न किया जाय तो दो मास में हम यहाँ दो लाख सेना एकत्रित कर सकते हैं और नवम्बर दिसम्बर तक आक्रमण कर सकते हैं। मरुभूमि और वहाँ की जलवायु हमारे कार्य में बाधक हो सकती है, परन्तु इस क्षेत्र में शत्रु की दुर्बलता हमारे लिए बहुत सहायक होगी। इस क्षेत्र में शत्रु को प्रबल होने से रोकने के लिए हमको भूमध्यसागर के समुद्री बेड़े को सजग और सतर्क करना चाहिए।

"मेरा विचार है कि मुसोलिनी यूनान में परास्त हो रहा है। इससे यह स्पष्ट है कि मुसोलिनी शत्रु का दुर्बल अंग है। कदाचित् युरोप में उसकी प्रगति को रोकने के लिए हिटलर उसकी सहायता करना नहीं चाहता।

"इस योजना से हमें यह लाभ होगा कि हम युरोप मे घुसने के लिए एक ऐसा द्वार पा जायेंगे जो हम फ्रांस में नहीं पा सके। नार्वे में हम अपने पाँव नहीं जमा सके। फ्रांस से हमको वापस आना पड़ा है। परन्तु मुझको विश्वास है कि सिसली में हम पाँव जमा लेंगे, साथ ही वहाँ से डनकिर्क की भांति धकेले नहीं जा सकेंगे।

"इस विजय से इंग्लैंड के मान में वृद्धि होगी। हमको नए मित्र मिलेंगे। युरोप मे जर्मनी को घेरने के लिए हमें एक नया मोर्चा मिल जायेगा। तब हम पुनः फ्रांस में अपनी सेनाएँ ले जा सकेंगे।

"इस व्याख्यान के साथ सामान्य वाद-विवाद हुआ। छः घंटे की इस बैठक के बाद दो घंटे आराम कर पुनः तीन घंटे बैठक हुई, जिसमें उस सामग्री की सूची तैयार की गयी, जिसकी उपलब्धि पर यह समर आरम्भ किया जा सकता था।

सिंगापुर में ब्रिटिश सेना का कमाण्डर-इन-चीफ जनरल वेवल भी इस कान्फरेंस में सम्मिलित था। इंग्लैंड से मिस्टर ईडन उपस्थित था।

एक दिन हवाई जहाज में बैठाकर मथुरासिंह को काहिरा पहुँचा दिया गया था। कर्नल स्टैनले को लंदन बुला लिया गया था और वह भी अपने परिवार के साथ उसी हवाई जहाज में सवार हुआ, जिसमें मथुरासिंह अपनी यात्रा कर रहा था।

मथुरासिंह को जब जाने की आज्ञा मिली तो उसके माता-पिता अभी उसके पास ठहरे थे। मक्खनी, राधा और रमणीक भी गये नहीं थे।

जाते हुए सूरतसिंह ने कहा, "क्या हम तुमको छोड़ने के लिए हवाई अड्डे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आ सकते?

"आप लोग आ सकते हैं। आइए।

वह उन सबको अपनी सैनिक जीप में बैठाकर पालम हवाई अड्डे पर ले गया। स्टैनले परिवार भी वहाँ खड़ा था। जिस दिन स्टैनले परिवार मथुरासिंह के निमन्त्रण पर मध्याह्न भोजन के लिए आया था, उस दिन फ्लोरा के हाव-भाव देखकर राधा समझ रही थी कि उसके मथुरासिंह के साथ घनिष्ट सम्बन्ध हैं। परन्तु अपने संदेह को निराधार समझ वह चुप रही थी। आज जब फ्लोरा ने मथुरासिंह को जीप में से उतरते देखा तो लपककर उसके पास जा, उसकी बाँह-में-बाँह डाल, उसे एक ओर ले गई।

उसने कहा, "मुझे यहाँ आकर विदित हुआ कि आप भी इसी हवाई जहाज़ में यात्रा कर रहे हैं।

"सच! तब तो आनन्द की बात है। एक लम्बी यात्रा हँसी-हँसी में कट जायेगी।

"मैं अपने मन में यह इच्छा कर रही हूँ कि आप लन्दन में आइये?"

"यह तो अधिकारियों की इच्छा पर निर्भर करता है।"

"मैं चाहती हूँ कि...।"

"क्या?"

"यही कि आप वहाँ आइये।"

"फ्लोरा! मैं सरकारी मुलाजिम हूँ। सरकार की आवश्यकताओं पर ही मेरा आना-जाना निर्भर है।"

"फिर भी मैं चाहती हूँ...।"

"क्यों चाहती हो आप?"

"आप वहाँ आयेंगे तो बताऊंगी।"

"अच्छा, अब मुझे अपना सामान जहाज़ में रखवा लेने दो।"

"अपका किट काउटन्र पर गया ।"

मथुरासिंह काउंटर पर गया और उसने अपने काहिरा जाने की आज्ञा दिखाई तो उसका सामान तोला गया और उसके हस्ताक्षर इत्यादि करवा लिये गए। उसके किट पर उसका नाम नम्बर आदि लिखकर चिपका दिया गया।

इसी समय घंटी बजी। वह अपने माता-पिता आदि से विदा लेने के लिए माता-पिता के चरण-स्पर्श करने लगा। माँ ने पीठ पर हाथ फेर आशीर्वाद दिया। पिता ने पीठ थपथपाकर कहा, "मान और सम्मान-सहित शीघ्र लौटकर आना।"

मक्खनी को नमस्कार कर, जब वह राधा की ओर मुड़ा तो उसकी आँखो में जल छलकता देख पूछने लगा, "क्या ब़ात है राधा?

राधा ने तुरन्त आँखें पोंछ लीं और मुस्कराते हुए बोली, "वह लड़की आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही जा रही है?''

"हाँ, क्यों?''

मथुरासिंह का उत्तर सुन, राधा मुख देखती रह गई। मथुरासिंह को कुछ संदेह हुआ तो उसने पूछा, "क्यों, तुम्हें ईर्ष्या होती है क्या?''

उसने सिर से इस बात से इन्कार किया किन्तु आँखों ने उसके विपरीत बात बताई। उसके आँसु अविरल बह रहे थे। मथुरासिंह ने हाथ जोड़ नमस्कार करते हुए कहा, "राधा! व्यर्थ में रो-रोकर आँखें खराब कर रही हो? वह लड़की मेरी कुछ भी नहीं लगती।''

"मैं यह नहीं कह रही।''

"तो रो क्यों रही हो?

"कुछ नहीं, यो ही । अब आप हिन्दी में पत्र लिखेंगे तो मैं पढ़ सकूंगी।''

इससे अधिक बात करने के लिए अवकाश नहीं था। जहाज की सीढ़ियों मे चढ़ते हुए मथुरासिंह ने एक बार पीछे मुड़कर जंगले के साथ खड़े अपने सम्बन्धियों की ओर देखा तथा हाथ हिला उनको विदा का संकेत किया। उन्होंने भी उसके उत्तर में संकेत किया।

हवाई जहाज पालम से कराची, बगदाद और इराक होता हुआ दूसरे दिन काहिरा पहुँचा। काहिरा के हवाई अड्डे पर जब वह स्टैनले परिवार से विदा ले रहा था तो फ्लोरा ने सहसा उसके बराबर में खड़ी होकर उसके होंठों का चुम्बन ले लिया। मथुरासिंह बे-खबर खड़ा था। इस एकाएक आक्रमण से वह घबरा उठा। स्वयं को उसकी बाँहों से छुड़ाते हुए वह कहने लगा, "यह हमारा हिन्दुस्तानी तरीका नहीं है।

"परन्तु मैं तो अँग्रेज लड़की हूँ, हमारे सीने में हिन्दुस्तानियों से अधिक अग्नि है।''

"परन्तु...'' इससे अधिक कुछ नहीं कह पाया। मिसेज़ स्टैनले वहाँ आ गई थी।

मथुरासिंह जीप में चढ़ा तो फ्लोरा ने अपना रूमाल हिलाकर विदा किया।

ब्रिटिश सैनिक-शिविर में पहुँचते ही कान्फरेंस आरम्भ हो गई। कान्फरेंस के अगले दिन कमाण्डर-इन-चीफ़ मिडल ईस्ट और जनरल आकिनलेक लैफ्टिनैन्ट मथुरासिंह को साथ लेकर काहिरा से पश्चिम की ओर चले गये। मिस्र की सीमा पर पहुँचने में उनको पाँच घंटे लगे। सालूम में इटालियन छावनी थी। उससे तीन मील पूर्व की ओर अंग्रेज़ी छावनी थी। वे वहाँ पहुँचे तो समाचार मिला कि बैनगाजी से सालूम तक पक्की सड़क बन गई है। इसका यह अर्थ था कि किसी भी दिन इटली की सेना धड़ाधड़ सालूम पर पहुँच सकती है। सारे मिस्र में अंग्रेज़ी सेना की केवल एक डिविजन थी। मिस्र की रक्षा के लिए यह पर्याप्त नहीं थी। सिदी बरानी एक समुद्री बन्दरगाह था, जहाँ से सामान आता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैनिक भेदियों ने बताया कि सालूम में इटेलियन सेना दो रेजिमेन्ट से अधिक नहीं। ये सैनिक किसी बड़ी सेना के खाने-पीने के लिए प्रबन्ध कर रहे हैं।

इतनी सूचना पर्याप्त थी। उन लोगो ने मध्याह्न का भोजन किया और शाम को वापिस काहिरा पहँच गये।

उसी साँयकाल पिछली कान्फरेंस में तैयार किया डिस्पैच चीफ ऑफ दि आर्मी स्टॉफ को लन्दन भेज दिया गया। मथुरासिंह आक्रमण की योजना बनाकर जनरल आकिनलेक के पास गया। उसको कुछ ऐसा लगा कि इस युद्ध-अभियान का कमाण्डर वही बनने वाला है।

कान्फरेंस से पांचवें दिन लन्दन से मथुरासिंह को बुलावा आया व उसी डिस्पैच में जनरल आकिनलेक को मिडल ईस्ट का कमाण्डर-ईन-चीफ़ बनाने की आज्ञा भी आई। जैसे ही मथुरासिंह लन्दन पहुँचा तो उसे सीधे प्रधानमंत्री के कमरे में पहुँचा दिया गया।

प्रधान-मंत्री ने उससे हाथ मिलाते हुए अपने साथ सोफे पर बैठाकर कहा, "तो आप है लैफ्टिनैन्ट एम. सिंह?"

"जी।"

"मुझे बताया गया था कि आप मिश्र की सीमा पर निरीक्षण करने के लिये गए थे।"

"जी, मैं जनरल आकिनलेक के साथ गया था।"

"क्या देखा है?"

"आज दस नवम्बर है। यदि हम इन सर्दियों में बैनगाजी तक अधिकार नहीं कर लेते, तो मिस्र इटानियन सेना के अधिकार में हो जायेगा।"

"जनरल कितनी सेना चाहता है?"

"वह उसने अपने डिस्पैंच में लिखा है। मेरे विचार में उसके अतिक्ति भी कुछ सेना संकट-काल के लिए सुरक्षित रखनी चाहिए।"

"हिन्दुस्तान में कितनी लायल (विश्वसनीय) सेना है?"

"ठीक-ठीक तो 'कमाण्डर-इन-चीफ़ फार इंडिया' ही बता सकता है। मेरे ज्ञान में यह संख्या बारह लाख से कम ही होगी परन्तु यंत्र-सज्जित सेना बीस डिवीजन के लगभग है।"

"उसमें से कितने डिवीजन हिन्दुस्तान भेज सकता है।

"यदि मैं प्रबन्ध करने वाला होऊँ तो बर्मा की सीमा पर रक्षा करने के लिए तीन डिवीजन और अतिरिक्त सुरक्षा के लिए तीन डिवीज़न, ये छः डिवीजन छोड़कर शेष चौदह डिवीजन भेजे जा सकते हैं।

"यदि गांधी ने बगावत कर दी तो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसके लिए पुलिस पर्याप्त है।"

प्रधान-मंत्री मुस्कराया। फिर पूछने लगा, "तुम फ्रन्ट पर लड़ने के लिए जाना चाहते हो, या यहाँ चीफ ऑफ दि आर्मी स्टॉफ के कार्यालय में रहना चाहते हो?

"मैं सेना में लड़ने के लिए भर्ती हुआ था। परन्तु जबलपुर पहुँचकर मुझे बताया गया कि लड़ने की अपेक्षा लड़ाने वाले अधिक जिम्मेदार और योग्य व्यक्ति होने चाहिये। अतः मेरे आफिसर्स को यह निश्चय करना चाहिए कि युद्ध विजय हेतु मैं किस कार्य के लिए अधिक उपयुक्त हूँ।"

"कहाँ ठहरे हो?"

"मुझे एयरोड्रोम से सीधा यहाँ लाया गया है। मेरा किट बाहर जीप में रखा है।"

"अभी तो मिलिटरी होस्टल में ठहरने का प्रबन्ध हो जयेगा। कल तक वहाँ आगे की आज्ञा की प्रतीक्षा करिए।"

मथुरासिंह सैल्यूट कर बाहर आ गया।

2

लन्दन का मिलिटरी होस्टल टेम्ज के दक्षिण तट पर मैहकम में था।

मथुरासिंह को अनुभव हुआ कि इंग्लैंड में अधिकारी अधिक समझदार और काम करने में चुस्त हैं। वह होस्टल के बाहर ही जीप से उतर रहा था कि होस्टल की एक वेटरेस ने आकर उसको कार्ड और कमरे का नम्बर देकर बताया, "मैं वेटरेस नम्बर इक्कीस हूँ।" मुझे आज्ञा है कि आप के आराम का प्रबन्ध करूँ।"

एक तीस-बत्तीस साल की स्त्री सैनिक वेश में मथुरासिंह के सामने खड़ी थी। मथुरासिंह ने कार्ड लिया, कमरे का नम्बर देख वेटरेस को धन्यवाद किया और अपना किट और सूटकेस उठाकर बोला, "क्या आप मुझे बता देंगी की कमरा नम्बर तीन सौ चालीस किधर होगा?

"आइये, आप अपना सूटकेस मुझे दे दीजिये।

"नेवर माइंड, चलिए।"

उसका कमरा तीसरी मंज़िल पर था और वहाँ से कुछ ही अन्तर पर रैस्टोराँ था। वेटरेस ने उसका सामान कमरे में रखवाया और स्वयं उसको लेकर रैस्टोराँ में चली गई वहाँ उसने मथुरासिंह को कहा, "यहाँ कार्ड दिखाकर अपना नाम दर्ज करा दीजिए।

फिर वह उसको उसके कमरे में ले गई और उसको स्नानागार इत्यादि दिखाकर बोली, "मैं सायं चार बजे तक अपने कमरे में रहूंगी। मेरे बाद नम्बर पन्द्रह आयेगी, तब मैं उसको अपना चार्ज दे जाऊंगी

मथुरासिंह ने पुनः धन्यवाद किया और अपने भाग्य के विषय में विचार करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा। कॉलेज में भर्ती होने के समय सेना, राधा अथवा फ्लोरा का विचार तक नहीं था। परन्तु सेना में भर्ती हो गया था। अब न केवल वह सेना में प्रतिष्ठित पद पर ही था बल्कि दो सुन्दर लड़कियाँ उससे प्रेम भी कर रही थीं। वह देख रहा था कि फ्लोरा उस पर आक्रमण कर उसके हृदय पर अधिकार जमाने का प्रयास कर रही है। उसने स्नान किया और रैस्टोराँ में भोजन किया। फिर वह अपने कमरे में आराम करने चला गया।

सायं की चाय पीने वह रेस्टोराँ में गया तो उसे वहाँ स्टैनले मिल गया। मथुरासिंह खाने के कमरे में प्रविष्ट हो ही रहा था कि उसने उसे देख लिया। "हैलो, लैफ्टिनैन्ट सिंह!" उसने आगे बढ़कर उसका अभिवादन किया, "आ गये हो?"

"यस सर!" वेयर आर मिसेज़ एण्ड मिस स्टैनले?"

"वे आज एडनबरा पहुँच गये होंगे। यदि उनको लेने के लिए वहाँ मोटर आयी होगी तो इस समय तक वे अपने 'मैन्शन' में होंगे।

"तो मैंने उनको मिस कर दिया है?"

"तुम कमाण्डर-इन-चीफ से मिले हो?"

"अभी नहीं। कैयरो में वहाँ के कुछ अधिकारियों से बातचीत हुई है।"

मथुरासिंह ने नहीं बताया कि वह प्रधान-मंत्री से मिला है।"

"तुम्हारी योजना नम्बर एक का रहस्य है।" स्टैनले ने उसको बतलाया।

"सत्य? कौन कहता है?"

"मैं कह रहा हूँ। तुमको इस विषय में किसी से बात नहीं करनी चाहिए।"

"तो उस विषय में कुछ किया जाने वाला है?"

"यह तो मैं कुछ नहीं जानता। चीफ आफ दि स्टाफ ने मुझसे अनेक प्रश्न किये थे। जब मैंने सब का उत्तर दे दिया तो मुझे कहा गया कि मुझे इस विषय में किसी से बात नहीं करनी है।"

मथुरासिंह मुस्कराता रहा। स्टैनले ने पूछा, "कहाँ ठहरे हो?"

"कमरा नम्बर तीन सौ चालीस में।"

"इसी होस्टल में?"

"जी।"

"मैं भी इसमें ठहरा हूँ। कल रात रॉयल होटल में ठहरा था। मेरा परिवार गया तो मैं यहाँ आ गया हूँ। कम-से-कम मेरे पिछले कुछ साथी यहाँ मिल जाते हैं। अब तुम भी आ गये हो। यह बहुत अच्छा हो गया है।"

दोनों ने चाय पी। स्टैनले ने कई अफसरों से मथुरासिंह का परिचय कराया। फिर वह मथुरासिंह के साथ उसके कमरे में चला गया। वहाँ वेटरेस खड़ी थी। उसके हाथ में मथुरासिंह के लिए एक चिट्ठी थी। मथुरासिंह ने चिट्ठी ले ली। उस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कान्फिडेन्शियल' का लाल लेबल चिपका था। मथुरासिंह ने उसे पढ़ा। पत्र में लिखा था—'दिसम्बर बीस निश्चित है। तैयार रहो और आज्ञा की प्रतीक्षा करो—'लार्ड इज़्में, कमाण्डर-इन-चीफ।'

"कमाण्डर-इन-चीफ को तुम्हारे यहाँ आने का ज्ञान है? "स्टैनले ने पूछा।"

"मैं समझता हूँ, है।"

स्टैनले इस परिस्थिति से प्रसन्न था। वास्तव में उसने ही मथुरासिंह की योजना को लन्दन में भेजा था। दिल्ली में तो उस योजना ने कोई उत्साह उत्पन्न नहीं किया। कदाचित् इसका कारण यह था कि युद्ध में दिल्ली के अधिकारी केवल-मात्र दर्शक बन रहे थे। युद्ध की गतिविधियों में उनका कोई हाथ नहीं था। पूर्ण युद्ध का संचालन लन्दन से हो रहा था।

उस दिन छः बजे के लगभग स्टैनले गया तो पुनः वेटरेस नम्बर पन्द्रह एक पत्र लाई। उसमे लिखा था—'पत्रवाहक के साथ चले आओ—इज़्मे।'

मथुरासिंह ने पूछा, "कौन लाया है पत्र?"

"एक सैनिक लाया है। वह नीचे जीप में बैठा है।"

"उससे जाकर कहें, मैं कपड़े बदल रहा हूँ। पाँच मिनट में नीचे आता हूँ।"

वेटरेस के जाने पर मथुरासिंह ने कपड़े बदले और होस्टल के नीचे आ गया। बाहर निकलकर उसने देखा कि लन्दन कोहरे से भरा हुआ है। उसने अपनी टार्च से संकेत किया तो पत्रवाहक वेटरेस के साथ उसको लेने के लिए आया और कहने लगा, "दिस वे सर!"

मथुरासिंह को चीफ ऑफ दि स्टाफ की मीटिंग में जाकर बैठा दिया गया। वहाँ पर इस बात पर चर्चा होती रही कि आक्रमण किस प्रकार किया जाय। इसके लिए कितने सैनिक चाहियें, कितनी सामग्री की आवश्यकता होगी। मरू-भूमि में वाहन कौन से चलेंगे, इत्यादि।

कान्फरेंस के बाद लार्ड इज़्मे ने मथुरासिंह को बताया कि उसको दस दिसम्बर को लन्दन से काहिरा जाना चाहिए। वहाँ वह जनरल आकिनलेक के सम्मुख उपस्थित हो जाये। इस प्रकार कान्फरेंस समाप्त हो गई। मथुरासिंह वहाँ से निकला तो उसे दस डाउनिंग स्ट्रीट पर रात के भोजन का निमन्त्रण मिल गया। वह उसी जीप में वहाँ के लिए चला गया। वहाँ ऐन्थनी ईडन, मिस्टर ऐटली, सर ए. वी. एलेक्जेंडर और सर जोन साइमन उपस्थित थे।

प्राइम मिनिस्टर ने मथुरासिंह का परिचय कराया, "हमारी हिन्दुस्तानी सेना का एक युवक लफ्टिनेंट, जिसके युद्ध के विषय में कुछ नये विचार हैं।"

वास्तव में वे लोग भी मथुरासिंह का जबलपुर वाला व्याख्यान टेप—रिकार्ड से सुन चुके थे। खाना लग जाने पर जब बैरे बाहर चले गए तो तो प्राइम-मिनिस्टर ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्तालाप आरम्भ किया। सिंह से ही उसने कहा, "लैफ्टिनैन्ट सिंह! हमको तुम्हारी एक बात समझ में नहीं आयी। तुमने अपने जबलपुर वाले भाषण में कहा है कि प्रायः शन्ति में भावी युद्धों के बीज छीपे होते हैं। इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय था?"

"हमारी हिन्दुस्तानी जीवन-मीमाँसा में" मथुरासिंह बताने लगा, "मानव बुद्धि को त्रिगुणात्मक माना है। त्रिगुण का अर्थ है सात्विक, राजसी और तामसी। सात्विक का अर्थ है गौडली, राजसी का अर्थ है फाइटिंग अर्थात अधिकारों को प्राप्त करने में लीन और तामसी का अर्थ है ईविल अर्थात् भोगों में रत।

"युद्ध में वे लोग ही जीतते हैं, जिनमे प्रथम दो गुण होते है। ईश्वरीय गुण और अपने अधिकारों को प्राप्त करने की सामर्थ्य। इन दो प्रकार की बुद्धियों के लोग ही युद्ध में लड़ा और मरा करते हैं और फिर जाति में से ये दोनों गुण कम होकर रह जाता है, तामसी गुण।

"युद्धों के उपरान्त प्रायः ऐसे लोग ऊपर उभर आते है, जो भोग प्रधान होते हैं। सुस्त, प्रमादि, विषय-वासना में लिप्त और खतरे से बचने वाले अर्थात् एस्केपिस्ट प्रवृति वाले। ये लोग ही दुष्टों को पुनः उभरने का अवसर देते हैं।

"ये प्रमादी लोग अपने को धर्मात्मा, शान्ति प्रिय और दयालु प्रकट करते हैं। वास्तव में संसार में दुष्ट व्यक्तियों को फलने-फूलने तथा संगठित होने का अवसर देते हैं।"

इंग्लैंड के प्रधान-मंत्री को ऐसा अनुभव हुआ कि यह हिन्दुस्तानी नवयुवक कदाचित् उसकी पार्लियामेंट की वक्तृताएँ पढ़ता रहा है। इस कारण बोला, "तुम मेरी नीति को पसन्द करते हो अथवा नहीं?"

"युद्ध में चार-पाँच वर्ष पहले के आपके दिये हुए व्याख्यान मैंने पढ़े हैं। यदि वे ठीक उद्धृत हुए हैं तो मैं उनमें व्यक्त विचारों से सर्वथा सहमत नहीं हूँ।"

"तुम्हारा किस बात से मत-भेद है?"

"आपका कहना है कि वारसेल्ज की संधि का पालन करने के लिए जर्मनी को विवश किया जाय।"

"मेरा कहना है कि वह संधि ही गलत थी। इसलिए कोई भी आत्माभिमानी जाती उसके पालन के लिए तत्पर नहीं हो सकती। उस संधि में यह होना चाहिये था कि जर्मनी मे प्रजातन्त्र राज्य होगा; और प्रतिनिधियों के लिए दो तीन शर्तें होनी चाहिए थी। एक तो यह कि जर्मनी स्वेच्छा से शस्त्रास्त्र बना सकता है, परन्तु उन्हें छिपाकर नहीं बनायेगा। जब जर्मनी अपनी सैनिक तैयारी में किसी प्रकार का भी लुकाव छिपाव करेगा, तुरन्त मित्र-राष्ट्रों की सेनाएँ जर्मनी पर अधिकार कर लेंगी।

"इसके साथ ही अपनी तैयारी प्रबल रखनी चाहिए थी। जिस समय हिटलर ने चोरी-चोरी हवाई जहाज बनाने आरम्भ किये थे, उससे पहले अपने पास बढ़िया हवाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाज होने चाहिए थे और हिटलर पर तुरन्त आक्रमण कर देना चाहिए था।

"सात्त्विक प्रकृति के लोग न झूठ बोलते हैं, न ही झूठ को सहन करते हैं। उनमें शक्ति होनी चाहिए, जिससे कि वे अधर्मी लोगों को दण्ड दे सकें।"

"परन्तु इसमें तो शस्त्रास्त्र बनाने की होड़ लग जाती और हम बिना युद्ध के ही बर्बाद हो जाते?"

"मैं उस बर्बादी का अर्थ नहीं समझ सकता। हम तो अब बरबाद हो रहे हैं, उस अवस्था में बहुत कम बरबादी होती।"

"परन्तु उनकी चोरी-चोरी की जाने वाली तैयारी का पता किस प्रकार लगता?"

"इंग्लैंड के उस समय के साधारण नागरिक मिस्टर चर्चिल को भी उसका पता था? यदि इंग्लैण्ड के शासक यह भी नहीं जान सके, तो वे राज्य के एक परमावश्यक कर्त्तव्य का भी पालन नहीं कर सके।

"वारसेल्ज की संधि में सबसे आवश्यक शर्त यह होनी चाहिए थी कि जर्मनी अपने शस्त्रास्त्रों का भण्डार छिपाकर नहीं रख सकेगा। यदि उसने ऐसा किया तो एक पराजित शत्रु की भांति उस देश पर अधिकार कर लिया जायेगा। लीग आफ नेशन्ज शांति स्थापित करने के लिए नहीं प्रत्युत शांति की रक्षा के लिए एक सैनिक गुट होना चाहिए था।

"ऐसा करने में यदि मित्र राष्ट्रों को त्याग और तपस्या का जीवन भी व्यतीत करना पड़ता तो उसको बरबाद होना नहीं कहा जा सकता। त्याग और तपस्या से जातियां बरबाद नहीं होती, प्रत्युत वे सुदृढ़ और श्रेष्ठ होती हैं।

"मान लीजिए, इग्लैंड में जन साधारण के पास मोटरें कम होती और जाति के पास हवाई जहाज अधिक होते तो कौन-सा अनर्थ हो जाता?"

"इससे तो जाति में असंन्तोष उत्पन्न हो जाता।"

"सन्तोष और असन्तोष मन की अवस्था का नाम है। इसका शारीरिक सुख सुविधा के साथ किसी प्रकार भी सम्बन्ध नहीं। एक निर्धन, केवल आलू खाकर निर्वाह करने वाली जाति अधिक संतुष्ट रह सकती है और मुर्गा मछली खाने वाले लोग दुःखी तथा असंतुष्ट हो सकते हैं। प्रायः ऐसा ही होता है। मन की अवस्थाएँ तो बनाई जाती हैं।"

मिस्टर एटली ने प्रश्न किया, "परन्तु दूसरे देशों में सुख-साधनो की प्रचुरता देख, लोग अपनी सरकार से असंतुष्ट हो जाते हैं।"

"यदि राज्य, समाचार पत्रों द्वारा जनता को ठीक परिस्थिति का ज्ञान करा सकता तो ऐसा कुछ नहीं होता।

"भले लोगों को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए सुसंगठित होना तथा सुदृढ़ होना आवश्यक है और उसके लिए राज्य के पास धन होना चाहिए। धन लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते हैं। केवल उनको विश्वास होना चाहिए कि उस धन द्वारा प्रस्तुत साधनों से सरकार देश की भलाई ही करेगी।''

''ऐसा सन्तोष हिन्दुस्तानियों को क्यों नहीं होता? वे इस युद्ध के समय अशान्ति क्यों उत्पन्न कर रहे हैं?''

''इसलिए कि अंग्रेज शासक वहाँ के जन साधारण के मन में यह विश्वास नहीं बैठा सके कि उनका शासन उन लोगों के लिए हितकर है। वहाँ के शासक जब इस प्रकार की बातें कहते हैं, तो उनके कथन निराधार अथवा वस्तुस्थिति के सर्वथा विपरीत होने के कारण, वहाँ के लोगों को मान्य नहीं होते।

''एक अन्य भी कारण है। अंग्रेज वहाँ का शासन जनहिताय बनाना नहीं चाहता, प्रस्तुत वहाँ फूट डलवाकर वह शासक रहना चाहता है। वहाँ के अल्पसंख्यकों के गुटों को भड़काकर वह बहुसंख्यकों के हितों का विरोध करता है।''

''यह तो डिप्लोमेसी है, बहुसंख्यक लोगों को इससे बचना चाहिये।''

''जब शासक गलत नीति से राज्य चलाना चाहते हैं, तो शासितों के विरोध से उनको गिला भी नहीं करना चाहिए। मेरा कहना है कि धोखेबाजी का प्रतिकार सरलता से कभी भी नहीं हो सकता है।''

''परन्तु हम उनको मटियामेट कर सकते हैं।''

''ठीक है, परन्तु उनको अपनी रक्षा के लिए हाथ-पाँव मारने का अधिकार तो है ही। यदि शासक प्रजा की दुर्बलता, अर्थात् हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य से लाभ उठाकर अपना शासन दृढ़ करना चाहते हैं तो प्रजा भी उनका अनुकरण कर सकती है। वे शासन की दुर्बलता का लाभ उठाकर उसे उलटना चाहते हैं।''

मिस्टर एटली ने बात बदलते हुए कहा, ''अब क्या होगा?''

''कुछ नहीं होगा। शासन को सत्य-हृदय से भारत की जनता को विश्वास दिलाते रहना चाहिए कि युद्ध के पश्चात् वहाँ पूर्ण स्वराज्य मिलेगा और युद्ध-प्रयास चालू रखना चाहिए। परिणाम यह होगा कि युद्ध प्रयास मे विघ्न डालने वालों का पक्ष दुर्बल होता जायेगा?''

''परन्तु स्वराज्य अभी क्यों न दे दिया जाय?''

''इस समय वहाँ ऐसी शक्तियों में संगठन नहीं है, जो कि ठीक राजनीतिक सूझ-बूझ रखते हो। इस समय वहा दो संगठन हैं—एक तो मुस्लिम लीग का, जो अवसर मिलते ही अंग्रेज़ों को धोखा देगा और दूसरा है, इंडियन नेशनल कांग्रेस। यह संगठन राजनीति में सर्वथा अनभिज्ञ है।

''सैद्धान्तिक विचार से कांग्रेस वालों में भी परस्पर मतभेद है। वहाँ दो गुट हैं—एक है पंडित नेहरू का और दूसरा सरदार पटेल का। महात्मा गांधी उन दोनों गुटों में सुलह करने के लिए उस गुट को बढ़ावा दे देते हैं, जो विरोधी विचार रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह उनके दूरदर्शी न होने के कारण है।

"वे शान्ति के मोह में अशान्ति उत्पन्न करने वाले गुट की सहायता करते रहते हैं। यदि उनके हाथ में राज-सत्ता गई तो वे जर्मनी और रूस से सन्धि कर उनकी सहायता कर देंगे। यदि नेहरू गुट के हाथ में राज्य गया तो वह रूस के साथ ही हो जायेगा। पटेल गुट अंग्रेजों के पक्ष में युद्ध को प्राथमिकता देगा, परन्तु गांधीजी उसका विरोध करेंगे और पटेल में यह साहस नहीं कि गांधीजी के विरोध को सहन कर सके।"

अब प्रधान-मंत्री ने पुनः बात बदलते हुए कहा, "यदि जापान हमारे विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दे तो क्या होगा?"

"रूस से सन्धि किये बिना जापान युद्ध में सम्मिलित नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि रूस की जर्मनी से सन्धि है। जापान के युद्ध में सम्मिलित होने पर रूस सारा बालकान जर्मनी के हाथ में छोड़, चीन को सहायता दे, जापान को पछाड़ देगा। अमेरिका, इग्लैंड और रूस इन तीनो से जापान एक साथ नहीं जूझ सकता।"

"रूस हमारे साथ मिल सकता है क्या?"

"मिल सकता है, किन्तु तभी, जब जर्मनी उसको विवश कर दे। अभी जापान और रूस की सन्धि की सम्भावना है। यदि ऐसी अवस्था हो कि जर्मनी रूस पर आक्रमण कर दे तो जापान मित्र-राष्ट्रों से युद्ध छेड़ देगा। तब रूस आप लोगों से सन्धि करना चाहेगा। परन्तु यह सन्धि अमेरिका और इग्लैंड के लिए अत्यन्त हानिकारक होगी। यह विश्व-शान्ति के लिए घातक होगी।"

इस प्रकार भिन्न-भिन्न राजनीतिक विषयों पर उस डिनर पर बातें होती रही। उस वार्तालाप में मथुरासिंह मुख्य रूप से भाग लेता रहा। उसको विदा करते समय प्रधान-मंत्री ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "मिस्टर सिंह! तुम कुशल कूटनीतिज्ञ हो। युद्ध संचालन के विषय में तो अभी तुम्हारी परीक्षा होनी शेष है। हाँ, राजनीतिक विषय में तुम प्रवीण प्रतीत हो सकते हो।"

"यह इस कारण कि मैंने इतिहास को एक विशेष दृष्टिकोण से पढ़ा है।"

"किस दृष्टि से पढ़ा है?"

"मैंने ऐतिहासिक नेताओं पर दृष्टि रखकर इतिहास की विवेचना की है। इतिहास जनता का होता है, परन्तु उसके निर्माता नेता लोग होते हैं। नेता न निर्वाचित होते हैं, न ही निर्मित। वे रूवयंभू होते हैं। नेता होने में उनके पूर्व-जन्म के कर्म-फल, माता-पिता द्वारा उनके शरीर की बनावट, उनके गुरुओं की शिक्षा मुख्य कारण होते हैं।

"नेता दैवी भी होते है और आसुरी भी। जिसके जैसे संस्कार होंगे, वैसा ही वह नेता बनेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3

अभी पन्द्रह नवम्बर थी और मथुरासिंह के मोर्चे पर जाने में बीस दिन शेष थे। लॉर्ड इज़मे से मिलकर वह बीस दिन की छुट्टी ले आया।

फ्लौरा उसको 'एडनबरा' ले जाने के लिए लन्दन में आई हुई थी। वह स्टैनले के गाँव जाने के लिए तैयार हो गया। स्टैनले भी अब तक कई बार उसको वहाँ चलने के लिए कह चुका था।

मथुरासिंह को छुट्टी मिली तो वह स्टैनले के साथ 'एडनबरा' जा पहुँचा। स्टेशन पर स्टैनले की पत्नी अपनी मोटर में उनके स्वागत के लिए आई हुई थी। वहाँ से बोनैस पन्द्रह मील के अन्तर पर था। सब मोटर गाड़ी से वहाँ जा पहुँचे।

वास्तव में स्टैनले मैन्शन एक विशाल, सुदृढ और सुन्दर भवन था। वह एक पहाड़ी के ऊपर बना था और 'फर्थ ऑफ फोर्थ' का सागर वहाँ से बहुत लुभायमान दिखाई देता था। मैन्शन के चारों ओर चीड़ का जंगल था। उस जंगल में चलती हुई मोटर उनके फाटक तक पहुँचती थी। फाटक के अन्दर पुष्प-वाटिका थी। उसमें एक ग्लास रूम भी था, जिसमें गरम देशों के पुष्प लगे हुए थे। महल का द्वार बहुत ऊँचा था। उस तक पहुँचने के लिए काले पत्थरों की पन्द्रह सीढियाँ पार करनी पड़ती थीं।

द्वार में घुसते ही एक बरामदा था और उसके पीछे हॉल था। इस हाल मे कभी कभी उस स्थान के रहने वालों के उत्सव अथवा नाच इत्यादि हुआ करते थे। नीचे की मंजिल पर हॉल के तीन ओर दफ्तर और मालिक के कारोबार-सम्बन्धी प्रबन्ध करने के लिए कमरे थे।

पहली मंजिल पर रहने के कई सैट थे। प्रत्येक सैट में तीन कमरे स्नानघर आदि थे। इसी मंजिल पर रसोई घर व भोजन कक्ष भी था। यहाँ आने वाले अतिथि रहा करते थे। कभी-कभी तो सब सैट भर जाया करते थे और मैन्शन में बहुत चहल पहल रहती थी। इन्हीं सैटों मे एक मथुरासिंह को भी मिल गया। उससे ऊपर वाली मंजिल पर घर के लोग रहते थे। यदि कोई बहुत ही निकट का सम्बन्धी आता तो उसे भी उसी मंजिल में स्थान दे दिया जाता था।

मिसेज़ स्टैनले स्वयं मथुरासिंह को उसके कमरे मे ले गयी। प्रातः छः बजे ये लोग एडनबरा पहुँचे थे। ठीक दस बजे ब्रेकफास्ट के लिए घंटी बजी तो फ्लोरा स्वयं सिंह को साथ ले जाने के लिए उसके पास आई।

मथुरासिंह उचित कपड़े पहन डाइनिग हॉल में जाने के लिए तैयार हो रहा था कि फ्लोरा आई और हाथ जोड़ नमस्कार करने लगी। मथुरासिंह को विस्मय हुआ। उसने मुस्कराते हुए उत्तर में हाथ जोड़े तो फलोरा ने कहा, "यह ग्रीट करने का हिन्दुस्तानी तरीका है न!"

इतना कहने के क्षण भर बाद ही वह लपककर मथुरासिंह के निकट पहुँची और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका आलिगंन करते हुए उसके होठों का चुम्बन कर बोली, "यह है ग्रीट करने का अंग्रेजी तरीका।"

फ्लोरा ने उसे छोड़ा तो मथुरासिंह ने उसे कह दिया, "यह तो बहुत ही भयानक तरीका है।"

"भयानक! भला, क्या भय है इसमें?"

"इस प्रकार तो हम केवल अपनी विवाहिता के साथ ही कर सकते हैं।"

"तो मैं आपकी विवाहिता हो जाऊंगी।"

"तुम भला कैसे हो जाओगी?"

" 'सिम्पली इन दि नैचुरल वे'।"

"विवाह तो प्रकृतिक वस्तु नहीं है। यह प्रथा समाज द्वारा निर्माण की गई है और समाज प्रकृतिक नहीं, कृत्रिम है।"

दोनों कमरे से निकल खाने के हॉल की ओर चल पड़े थे। उन दिनों एक अन्य परिवार वहाँ अतिथि के रूप में ठहरा हुआ था। यह पड़ोस का एक जमींदार परिवार था। लार्ड एसक्विथ गौर्ट की पत्नी थी, पुत्री थी और उसका पुत्र विलियम गौर्ट था। विलियम चौबीस-पच्चीस वर्ष का युवक था। उसकी छोटी बहिन प्रमिला गौर्ट थी। वह इक्कीस वर्ष की युवती फ्लोरा की सहेली थी। गौर्ट और स्टैनले परिवारों की परस्पर पुरानी मैत्री थी। लार्ड गौर्ट नौसेना में एक जंगी जहाज़ का कमाण्डर था और इस समय एटलांटिक सागर में उसका जहाज व्यापारी जहाजों के काफ़िलो की रक्षा के कार्य में लगा हुआ था।

फ्लोरा का बडा भाई जॉन स्टैनले हवाई बेड़े में एक फाइटर जहाज का पायलट था और वह लन्दन की रक्षा में लगा हुआ था।

मथुरासिंह के खाने के कमरे में पहुँचने पर स्टैनले ने उसका उन अतिथियों के साथ परिचय कराया। उसने कहा, 'यह हैं लैफ्टिनैन्ट सिंह? एक हिन्दुस्तानी नवयुवक प्रतिभाशाली सैनिक-अधिकारी। यह एक विशेष कमीशन पर ब्रिटिश सरकार के निमंत्रण पर लन्दन आये हुए हैं।"

इसके बाद गौर्ट-परिवार का परिचय कराते हुए उसने कहा, "लार्ड गौर्ट मेरे बचपन के मित्र हैं। इस समय वह नेवी में काम कर रहे हैं। उनका यह लड़का कान्स्क्रिप्शन से छूट गया है। डाक्टरों ने इसे सेना के अयोग्य समझा है। यह प्रमिला हमारी फ्लोरा की परम सहेली है।"

नाश्ते के बाद पुरुष-वर्ग उठकर बैठक में चला गया। वहाँ शराब के दौर चलने लगे। मथुरासिंह पीता नहीं था। उसके लिए कॉफी मंगवा दी गयी।

मिस्टर गौर्ट मथुरासिंह से परिचय बढ़ाने के लिए उसके पास आ बैठा। उसने बैठते ही पूछा, "तो आप टी-टोटलर हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं, मैं तो नॉन-एलकोहोलिक हूँ। एलकोहोल के अतिरिक्त मैं बहुत से पेय पदार्थ पीता हूँ। सबसे अधिक तो मैं जल पीता हूँ, चाय, कॉफी, कोको, चॉकलेट, दूध, आसव, जूस इत्यादि अनेक पदार्थ पान करता हूँ।"

"टी-टोटलर से हमारा ये ही अभिप्राय है।"

"हम पढ़े-लिखे लोग भाषा को उसके अर्थों से दूर नहीं रख सकते। इससे सोच व समझ में विकृति आ जाती है और हम दुनिया के बहुत से अनुभवों से वंचित हो जाते हैं।"

मिस्टर गौर्ट मथुरासिंह का अभिप्राय समझ नहीं सका। इस कारण वह उसका मुख देखने लगा। मथुरासिंह ने बात बदलते हुए कहा, "आपको अपनी सेना में भर्ती न हो सकने का बड़ा मलाल रहा होगा?"

विलियम मुस्कराता हुआ बोला, "माँ ने पिताजी को कहकर मुझे फ्रन्ट पर जाने के अयोग्य घोषित करवा दिया था। इस पर भी मैं इस क्षेत्र में सिविल सुरक्षा में सहयोग दे रहा हूँ।"

"यह अच्छा कर रहे है आप, परन्तु लाखों माताओं के पुत्र देश के लिए मरने को तैयार हैं। जो आज सेना में नहीं जा सका वह लज्जा तो अनुभव कर रहा होगा।"

"न तो सब के सब युवक मोर्चे पर जा सकते हैं और न ही युद्ध प्रयास केवल मोर्चे पर ही हो रहा है। मैं घर पर रहकर भी इस युद्ध को सफल बनाने में सहायता करता हूँ।"

मथुरासिंह को इससे सन्तोष नहीं हुआ। वह समझता था कि कौन किस काम के योग्य है, इसका निर्णय अधिकारी करते हैं। यही जबरी भर्ती का अर्थ है। यदि यह निश्चय है कि कौन क्या काम करे, व्यक्ति की इच्छा और सुविधा पर छोड दिया जाये, तो जातीय युद्ध प्रयास चल ही नहीं सकता।

इस पर उसने बात को बदलकर पूछा, "यहाँ सिविल गार्डस् की संख्या कितनी है?"

"चालीस से पचास की आयु के भीतर के लोग सिविल गार्डस् बन सकते हैं। मैं उनको संगठित कर, रक्षा के लिए शिक्षित करता हूँ।"

मथुरासिंह समझ गया कि मिसेज गौर्ट कोई दुर्बलात्मा है। वह उसकी तुलना अपनी माँ से करता था और उससे वह इसे बहुत घटिया पाता था। उसे अपनी माँ का व्यवहार अति श्रेष्ठ प्रतीत हो रहा था।

मिस्टर स्टैनले ने बातों-ही-बातों में बताया, "लार्ड गौर्ट और मुझमें यह निश्चय हुआ था कि यदि बच्चे पसन्द करें तो दोनो परिवारों में विवाह-सम्बन्ध बन सकते हैं। विलियम फ्लोरा से विवाह की इच्छा करता है। मेरे हिन्दुस्तान जाने से पूर्व लगभग दोनों में निश्चय हो चुका था कि इनका परस्पर विवाह होगा। फ्लोरा ने यह इच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट की थी कि विवाह युद्ध-समाप्ति के बाद हो। परन्तु अब विलियम तो फ्रण्ट पर जा नहीं रहा है। इस कारण यह और इसकी माँ विवाह के विषय में बात करने के लिए आये हैं।"

मथुरासिंह को विलियम गौर्ट कुछ मोटी बुद्धि का व्यक्ति प्रतीत हुआ। वह यह समझ गया था कि क्यों फ्लोरा एक धनी बाप के बेटे और सजातीय युवक को छोड़कर उसके पीछे पड़ी है? विलियम शरीर से स्वस्थ और रूप में सुन्दर तो था, परन्तु उसमें बुद्धि और साहस की कमी थी।

अगले दिन बहुत प्रातःकाल जब मथुरासिंह विस्तर पर ही था कि फ्लोरा नौकरानी के हाथ चाय उठाकर कमरे में आ गई। मथुरासिंह नाइट-सूट-पहने हुए था। कमरे का द्वार भीतर से बन्द नहीं था। फ्लोरा ने द्वार पर थाप दी और भीतर चली आई। अभी प्रातःकाल के चार बजे थे। मथुरासिंह उठा तो फ्लोरा ने कहा, "यहाँ अभी आधी रात है, परन्तु आप तो घड़ी से उठने वाले हैं न।"

"धन्यवाद मिस स्टैनले! कई दिनों बाद इस इस प्रकार आनन्ददायक बिस्तर पर लेटने के कारण गहरी नींद आ गई थी। मैं उठ तो चुका था केवल सुस्ती थी।"

फ्लोरा नाइट-सूट-पहने हुए थी। वह एक स्टूल लेकर उसके पलंग के पास बैठ गई। नौकरानी ने पलंग पर नैपकिन बिछाकर उस पर चाय रख दी और फिर प्रश्न भरी दृष्टि से फ्लोरा की ओर देखने लगी। फ्लोरा ने कह दिया, "ठीक है सूसन! अब तुम जा सकती हो। मिस्टर गौर्ट तो नौ बजे से पहले नहीं उठेंगे। पापा और मम्मी आठ बजे उठते हैं। उनको उनके समय पर चाय दे देना।"

सूसन के चले जाने पर फ्लोरा ने मथुरासिंह को कहा, "कल हम बात समाप्त नहीं कर सके थे। दिन भर मैं गौर्ट परिवार वालों से बातें करती रही हूँ। आपसे मिलने का अवसर ही नहीं मिला। मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ। आपने कहा कि विवाह की रस्म अप्राकृतिक है। अतः यह कृत्रिम है। रात-भर मैं इस पर विचार करती रही हूं कि इस प्रकार की आर्टिफिशल बात की चिंता की क्या जरूरत है। हम अपना व्यवहार स्वाभाविक क्यों नहीं बना लेते?"

फ्लोरा चाय बना रही थी। मथुरासिंह ने उसका समाधान करने के लिए कहा, "फ्लोरा! हम एक समाज में रहते हैं। उस समाज में हमारे माता-पिता, भाई-बन्धु, मित्र-परिचित सभी लोग हैं। ये सब सम्बन्ध भी कृत्रिम हैं परन्तु इन सब सम्बन्धों को हम तोड़ नहीं सकते, इस कारण इस कृत्रिम समाज के अन्य कृत्रिम नियमों को भी हम नहीं तोड़ सकते।"

"मैं इन नियमों को पार कर जाना चाहती हूँ। मैं इन बनावटी सम्बन्धों में बंधना नहीं चाहती। मेरे सम्बन्धी मेरे स्वाभाविक व्यवहार को स्वीकार करेंगे अथवा नहीं, मैं यह नहीं जानती। इस पर भी मैं ऐसा करना चाहती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु फ्लोरा! यह महल, यह साजो-सामान यह सुख-सुविधा भी उसी कृत्रिम समाज की देन है। समाज ने यह नियम बनाया है कि बाप की सम्पत्ति का अधिकारी पुत्र बने। पुत्र के अभाव में पुत्री भी उस सम्पत्ति की अधिकारीणी मानी जाती है। यह 'इनहैरिटेन्स' की प्रथा समाज की देन है। हालांकि स्वभाविक तो ये है कि जो कमाए वह खाये। जो न कमाए उसे कुछ न मिले।"

"तो यह 'इनहैरिटेन्स' की प्रथा अस्वभाविक है? इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि सोशलिज्म ठीक है।"

"नहीं, ये दोनों ही कृत्रिम है। समाजवाद में व्यक्ति की सरप्लस आय की मालिक सरकार बन जाती है। व्यक्तिवाद में इस आय का मालिक वह है, जिसे आय करने वाला नियुक्त कर दे। दोनों के आधार भिन्न-भिन्न होने से दोनों भिन्न-भिन्न प्रभाव उत्पन्न करने वाले हैं। इन दोनों नकली प्रबन्धों में, मैं व्यक्तिवाद के प्रपंच को ठीक मानता हूँ। मैं समाज को मानव का मालिक बनाना पसन्द नहीं करता। मैं मानव को समाज का मालिक मानता हूँ। हम कुछ विशेष प्रयोजन के लिए समाज को अपनी आय का अंश देते हैं। हम यह पसन्द नहीं करते कि समाज सबका मालिक हो और जन उसका सेवक। मालिक मानव है। समाज अर्थात् सरकार उसकी सेविका हैं।"

फ्लोरा इस स्पष्ट विश्लेषण को समझ रही थी। वह यह समझी कि किसी जागीर का उत्तराधिकारी बनाना कानून का अधिकार नहीं। यह किसके पास जाय, इसका निर्णय जागीर के मालिक की इच्छानुसार होना चाहिए।

परन्तु वह तो विवाह के विचारों से भरी हुई थी। इस कारण उसने सम्पत्ति का प्रश्न छोड़कर पूछा, "परन्तु इसका विवाह से क्या सम्बन्ध है?"

"यह कि समाज में विवाह की प्रथा प्रचलित है। समाज द्वारा बनाई प्रथा का पालन करने वाले को, समाज उत्तराधिकार दिलाकर पुरस्कृत करता है। विवाह के अतिरिक्त सन्तान को माता-पिता के उत्तराधिकार से समाज वंचित कर देता है।"

"अर्थात् यदि मैं माता-पिता की इच्छा के विपरीत सम्बन्ध बनाऊंगी तो वे मुझे मेरे अधिकारों से वंचित कर देंगे।"

"हो सकता है। क्योंकि उनके मन की बात जितना मैं जान पाया हूँ कि वे तुम्हारा विवाह लार्ड गोर्ट के सुपुत्र विलियम से करना चाहते हैं।"

"किसने कहा है यह?"

"कर्नल स्टैनले ने।"

"बात यह है कि मैं जब एक वर्ष की बालिका-मात्र थी, मेरे पिता ने हँसी-हँसी में अपने मित्र लार्ड गौर्ट को कह दिया था कि वे मुझे विलियम से विवाह देंगे। परन्तु उस समय यह भी बात हो गई थी कि यदि हम दोनों पसन्द करेंगे तो, तब ही उनकी ओर से इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो ठीक है, तुम्हे उससे विवाह करने में क्या आपत्ति है?"

"हिन्दुस्तान जाने के समय तक मैं अपने पिता का कहना मानने की इच्छा रखती थी। उस समय विलियम का युद्ध में जाने से आनाकानी करना मुझको उसकी चतुराई प्रतीत हुई थी। और मैं समझती थी कि वह मेरे लिए ही अपनी रक्षा करना चाहता है। परन्तु जबलपुर में पिताजी ने मुझे आपका परिचय देते हुए बताया था कि यह युवक है जो माता-पिता का इकलौता बेटा होते हुये भी युद्ध में जाना अपना कर्तव्य मानता है। मैं विस्मय में आपके विषय में जानने की इच्छा करने लगी। मैं आपको अर्द्ध-विक्षिप्त मानती थी। हिन्दुस्तान में तो 'जबरी भर्ती' थी नहीं।

"बाद में आपसे भेंट हुई। आप पागल प्रतीत नहीं हुए। आप मुझे एक औसत युवक से अधिक समझदार और सूझ-बूझ रखने वाले तथा कर्त्तव्य का पालन करने वाले दिखाई दिए। आपने बताया कि आत्मा मरती नहीं। मरने पर शरीर बदलता है, वैसे ही जैसे वस्त्र बदलते हैं। धर्म युद्ध करना क्षत्रियों का काम है। आप भी क्षत्रिय हैं, इस कारण युद्ध में जर्मनी को अधर्म का पक्ष लेते देख, आप स्वेच्छा से और माता-पिता की अनुमति से अंग्रेजी सेना में भर्ती हुए हैं।"

"आपके इस कथन ने मेरे मन में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। मैं उसी दिन से आपसे प्रेम करने लगी हूँ। आपका अपनी प्रति शीतल व्यवहार देख, मैं उसमे उष्णता लाना चाहती हूँ।"

"परन्तु मैं तो अभी विवाह कर ही नहीं सकता। मैं युद्ध पर जा रहा हूँ। और नहीं जानता कि वहाँ क्या हो जाय? इस कारण मैं अपने पीछे विधवा छोड़ना नहीं चाहता।"

"इसलिए मैं स्वभाविक विवाह अभी कर लेना चाहती हूँ। नियम से फिर पीछे होता रहेगा।"

"नो! नो" मथुरासिंह ने सतर्क होते हुए कहा। वह कूदकर पलंग से नीचे उतर आया और कुर्सी पर बैठ गया।

"अब आप क्या करेंगे?" मुस्कराकर फ्लोरा ने पूछा।

"स्नान करूंगा और पूजा पाठ करूंगा।"

"पूजा-पाठ में क्या करते हैं?"

"मैं यत्न करता हूँ कि ईश्वर की उपासना करूँ।"

"इस कार्य से कब तक निवृत्त हो जायेंगे?"

"लगभग दो घंटे लग जायेंगे।"

"ठीक है, मैं छः बजे आऊंगी, जिससे आपके 'कम्यूनियन विद गॉड' के पश्चात् देखूँ कि मेरे लिए कोई स्थान है अथवा नहीं?"

"अच्छी बात है।" इतना कह मथुरासिंह उठा और स्नानागार में चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4

पिछली रात मिस्टर स्टैनले और उनकी पत्नी में फ्लोरा के विवाह के विषय में बातचीत होती रही थी। स्टैनले की पत्नी और फ्लोरा ने लेडी गौर्ट को अपने हिन्दुस्तान से लौटने की सूचना नहीं दी थी। इस पर भी डेढ़ वर्ष के बाद 'मैन्शन' में प्रकाश हुआ तो वह दूर-दूर तक दिखाई दिया। गौर्ट परिवार का महल बिलकुल समुद्र के तट पर था और वहाँ से स्टैनले मैन्शन दिखाई देता था। माँ पुत्र ने उसमें प्रकाश देखा, तो विस्मय करने लगे कि स्टैनले ने अपने लौटने की सूचना क्यों नहीं दी। अगले दो दिन तक वे सूचना की प्रतीक्षा करते रहे। फिर वे विचार करने लगे कि उन्हें स्वयंमेव बिना सूचना के वहाँ जाना चाहिए अथवा नहीं। एक दिन उन्होंने अपना नौकर भेज कर यह पता करवाया कि कौन-कौन आया है। उसने समाचार दिया कि मिसेज और मिस स्टैनले आई हैं। मिस्टर स्टैनले अभी नहीं आये।

इस पर माँ बेटा विचार करते रहे कि वे अपने आप मिलने जाएँ अथवा नहीं। बहुत विचारोपरान्त और विलियम के हठ करने पर माँ बेटा और मिस गौर्ट वहाँ चले आये। जब वे आये तो फ्लोरा पुनः लन्दन गयी हुई थी। वे मिसेज स्टैनले से मिलकर लौटने वाले थे कि फ्लोरा का तार आ गया कि वह अपने पिता और लैफ्टिनैन्ट सिंह के साथ कल प्रातःकाल की गाड़ी से आ रही है, उनके लिए स्टेशन पर मोटर भेज दी जाए।

इस सूचना पर उन्होंने वहीं टिक जाना उचित समझा।

स्टैनले ने अपनी पत्नी से कहा, "विलियम आया है। मैं समझता हूँ कि यह विवाह का प्रबन्ध करने के लिए आया है।"

"परन्तु यह विवाह होगा नहीं।"

"क्यों?"

"फ्लोरा विलियम को पसन्द नहीं करती।"

"पहले तो करती थी?"

"हाँ, करती थी। परन्तु अब अवस्था बदल गई है। लैफ्टिनैन्ट सिंह एक नया 'फेक्टर' उसकी दृष्टि में आ गया है?"

"तो क्या वह सिंह से विवाह करना चाहती है?"

"हाँ, उसने मुझे हिन्दुस्तान में ही बताया था कि वह एक 'डिजायरेबल' युवक है। अब वह उसको यहाँ लाने के लिए लन्दन गई थी। और जाने से पहले उसका कमरा ठीक ढंग से सजा गई थी। मुझे विश्वास है कि वह उससे प्रेम करती है और इन दिनों उससे किसी न किसी प्रकार का वचन ले लेगी।"

"यह तो बहुत बुरा होगा।"

"क्या बुरा होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या स्टैनले रक्त, अब हिन्दुस्तानी रक्त से मिलेगा?"

"कुछ हानि है इसमें? क्या दोनों के रक्त में कुछ अन्तर है?"

"तो तुम 'एग्नोस्टिक' हो गई हो?"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि जो आंखों से न दिखाई दे, वह है अथवा नहीं, तुम नहीं मानती।"

"मैं तो साइँस में विश्वास रखती हूँ। जो कुछ साइँस बताएगी मैं वही मान सकती हूँ।"

"तो फिर हिन्दुस्तानी गुलाम क्यों हैं?"

"यह खून की खराबी के कारण नहीं। यह साइँस की कमी के कारण है। जिस दिन वे हमारे बराबर साइँस पढ़ लेंगे, वे स्वतंत्र हो जायेंगे।"

"तो हमें उनको कुछ नहीं पढ़ाना चाहिए।"

"वे स्वयमेव पढ़ रहे हैं। देखा नहीं कि लैफ्टिनैन्ट सिंह के मस्तिष्क से ऐसी योजना निकली है कि इंगलैंड के विशेषज्ञ भी उसे मान गये हैं।"

"यदि मैं उसे आगे नहीं बढ़ाता तो वह आगे नहीं बढ़ सकता था।"

"इससे उसको क्या हानि होती? हानि तो इंग्लैंड को होती।"

स्टैनले निरुत्तर हो चुप रहा। उसे चुप देख, पत्नी ने कहा, "मैंने लड़की को कहा है यदि लैफ्टिनैन्ट सिंह मान जाये तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।"

"परन्तु फ्लोरा अकेले ही तुम्हारी लड़की नहीं है?"

"मेरा यह मतलब नहीं। मेरे कहने का अभिप्राय तो यह है कि यदि वह सिंह से विवाह कर ले तो भी मेरी सम्पत्ति की वह उत्तराधिकारिणी रहेगी।"

स्टैनले ने फिर कुछ नहीं कहा। दोनों चिरकाल तक इसी प्रकार चुप-चाप बैठे रहे। अन्त में उसकी पत्नी ने पूछा, "अब आपको क्या आपत्ति है?'

"मैं तो अपने परिवार को शुद्ध पवित्र अंग्रेजी परिवार रखना चाहता हूँ।"

"वह आप अपने लड़के के परिवार से रखिएगा।"

वास्तव में वह अपने लड़के जॉन के जीते जी लड़की को कुछ भी देना नहीं चाहता था। लड़की को जो कुछ भी मिलने वाला था, वह उसकी माँ से ही था। अतः वह समझ रहा था कि फ्लोरा के विवाह में उसकी ओर से की जाने वाली आपत्ति कुछ भी महत्व नहीं रखती।

इस पर भी उसका अंग्रेजी अभिमान भड़क रहा था। वह एक अधीनस्थ जाती के लड़के से अपने परिवार का सम्बन्ध पसन्द नहीं कर सका।

रात वह बहुत देर तक इस विवाह को रोकने के विषय में विचार करता रहा। उसने ही सिंह की भूरी-भूरी प्रशंसा कर उसको उच्च-से-उच्च अधिकारी से मिलाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने विचार प्रकट करने का अवसर दिलाया था। अब वह अपने कहे के विपरीत प्रचार नहीं कर सकता था।

उसको एक सन्तोष था कि उसका लड़का जॉन भी उन्नति कर रहा है। पाइलट से वह स्क्वैड्रन लीडर की पदवी पर पहुँच गया था। वह नित नये कारनामे दिखा रहा था।

एकाएक उसके मन में एक विचार आया और उसको वह कार्य में लाने के लिए लन्दन जाने की सोचने लगा। उसने शीघ्रातिशीघ्र मथुरासिंह से पहले ही लंदन जाने का निर्णय कर लिया।

उस दिन स्टैनले दम्पति आठ बजे उठे। इस समय तक मथुरासिंह और फ्लोरा डेढ घण्टे तक मैनर के जंगल में घूम आये थे और जंगल के एकान्त में, फ्लोरा, मथुरासिंह को अपने साथ विवाह के लिए तैयार करने में सफल हो गयी।

मथुरासिंह पूजा से उठा ही था कि फलोरा सर्वथा श्वेत फलैनवल की पोशाक पहने और होंठो तथा गालों पर लाली लगाये उसके सामने आ खड़ी हुई।

"आओ बैठो फ्लोरा।" सिंह ने कहा।

"मैं आपको यहाँ के 'पाइन वुड' की सैर कराने के लिए ले जाने को आई हूँ।"

"सत्य?"

"ब्रेकफास्ट तो यहाँ दस बजे मिलेगा। उससे पूर्व हम लौटकर आ जायेंगे।"

वे दोनों चल पड़े। अभी उषा की लालिमा दिखाई नहीं पड़ रही थी। चांदनी का प्रकाश फैला हुआ था। फ्लोरा के हाथ में टार्च थी। वे दोनों रिज में घूमते हुए दूर निकल गये। पेड़ो से छन-छनकर आने वाली चांदनी के प्रकाश में वे दोनों चले जा रहे थे। मथुरासिंह ने इससे प्रभावित होते हुए कहा, "बहुत रमणीक है?"

"आजकल तो दस बजे सूर्य निकलता है। कभी हवा में धुन्ध हो तो ग्यारह बजे तक भी अंधेरा ही रहता है। आज आसमान साफ है और चांदनी छिटकी हुई है।"

दोनों बाँह-में-बाँह डाले जा रहे थे। फ्लोरा बाएँ हाथ में टार्च पकड़े अंधेरा आने पर प्रकाश कर रही थी। वे दोनों एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जो पहाड़ी का पूर्वी किनारा था। यह स्थान सपाट था और पत्थर बडे साफ थे। उसे देख, फ्लोरा ने कहा, "यह है वह स्थान जहाँ मैं आपको लाना चाहती थी।"

"क्या है यहाँ?"

"बैठ जाइए फिर बताऊंगी।"

वहाँ की शीतल वायु से मथुरासिंह भी स्वयं में स्फूर्ति अनुभव करने लगा था। वह बैठ गया। फ्लोरा ने वहाँ बैठते हुए कहा, "यह स्थान है, जहाँ मेरे माता-पिता ने विवाह किया था।"

"तुम्हे कैसे मालूम हुआ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक दिन माँ ने बताया था। वह इस महल में अपने माता-पिता के साथ आकर ठहरी हुई थी। पिताजी उसको वन-भ्रमण के लिए यहाँ ले आए और उन्होंने बातों ही बातों में विवाह का निश्चय कर लिया और फिर स्वाभाविक विवाह कर लिया। इस स्थान को देखकर मेरी माँ मधुर स्मृतियों में लीन हो जाती है।"

"तो उन दोनों में विवाह से पहले ही समागम हो गया था?"

"ऐसा यहाँ प्रायः हो जाता है। हम लोग अपने विवाह का साथी स्वयं ढूंढते हैं। फिर इस प्रकार की घटना प्रायः हो जाया करती है।"

"ठीक है, परन्तु जहाँ परस्पर विवाह हो जाय, वहाँ ठीक है, किन्तु जिनका विवाह नहीं हो पाता, उनके लिए तो वह दुःख का कारण भी बन सकता है?"

"हाँ, मगर स्कॉटिश लड़के ऐसे बहुत कम हैं, जिनके मन चलायमान हो जाते हैं।"

"तुम कभी इस स्थान पर विलियम के साथ आई हो?"

"नहीं, इण्डिया जाने से बहुत पहले ही मेरा मन उससे ऊब गया है। वास्तव में मैं विलियम को प्रेम-बन्धन में बांधने का यत्न ही नहीं कर रही थी। मुझे किसी बलि के बकरे की भांति ले जाया जा रहा था। परन्तु वेदी पर पहुंचने से पूर्व ही मुझे ज्ञान हो गया कि वह युवक मानवोचित गुणों से रहित है। इसी कारण मैंने उससे पीछा छुड़ाने का यत्न किया है। अब आप इसमे मेरी सहायता कर दीजिए।"

"अर्थात् तुम से विवाह से पूर्व ही मैं तुम्हारे साथ सम्बन्ध बना लूँ, जिससे कि तुम अपनी माँ की परम्परा को स्थायी कर सको।"

फ्लोरा हँस पड़ी। उसने मथुरासिंह की कमर में हाथ डालते हुए कहा, "यह आवश्यक नहीं है। मैं तो आपसे अपने जीवन भर के लिए साथी होने का वचन माँग रही हूँ। शेष बात गौण है।"

"ठीक है।" उस एकान्त में प्रेम-याचना करने वाली को शान्त करने के लिए मथुरासिंह ने मार्ग ढूंढ लिया। उसने फिर कहा, "पहले हम यह देखें कि हमारा विवाह सम्भव भी है या नहीं।"

"इसमे असम्भव क्या है?"

"मैं हिन्दुस्तानी हूँ। मैं जानता हूँ कि स्टैनले परिवार स्कॉटलैंड के विशिष्ट परिवारों में से है। मैं सेना के एक साधारण सिपाही का लड़का हूँ। मेरी आय मेरे पिता के अनन्तर दस हजार रुपया अर्थात् आठ-नौ सौ पौंड वार्षिक से अधिक नहीं होगी।

"इसके अतिरिक्त हमारे विवाह में एक और बाधा है। मैंने अपनी पत्नी का निर्वाचन किया हुआ है। तुमने मेरे दिल्ली वाले बंगले में अपनी माँ के साथ आई हुई एक लड़की को देखा होगा। मैं उससे विवाह करने के लिए वचनबद्ध हूँ।

"एक तीसरी बाधा है। मेरे पिता का मकान, जिसमे मेंरी पत्नी को रहना होगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मैन्शन के एक अथवा दो कमरों के बराबर भी नहीं है। वह स्थान तुमको अनुकूल नहीं बैठेगा।''

''आप यह बताइए कि यदि ये तीनो बाधा मार्ग में न होती तो क्या आप मुझसे विवाह करने के लिए तैयार हो जाते?''

''हम हिन्दुस्तानी किसी लड़की को अपनी रक्षा में लेने से इन्कार नहीं कर सकते। वह रक्षा का हाथ बहिन के लिए भाई का भी हो सकता है और पत्नी के लिए पति का भी। परन्तु मैं उक्त बाधाओं को उल्लंघनीय नहीं मानता।''

इतना कह मथुरासिंह वहाँ से उठने लगा तो फ्लोरा ने उसके गले में हाथ डालकर कहा, ''मेरी बात सुनेंगे भी नहीं?''

''वह तो इस वासनामय स्थान से लौटने पर ही सुनी जा सकती है। मेरे विचार से यह स्थान किसी कुमार अथवा किसी कुमारी के परस्पर मिलकर एकान्त में बैठने के लिए उपयुक्त नहीं है।''

''नहीं मैं इसको पवित्र स्थान मानती हूँ। आप शान्ति से सुन तो लीजिए कि मैं आपकी आपत्तियों को आपत्ति नहीं मानती।''

मथुरासिंह स्वयं को पराभूत होता सा अनुभव कर रहा था।

''आपने प्रथम आपत्ति की है हमारे परिवार के विषय में। कोई भी लड़की अपने पिता के परिवार का अंग नहीं होती। लड़कियाँ पति के घर में जाती हैं और उसी परिवार का अंग बन जाती हैं।

''दूसरी आपत्ति थी उस लड़की की, जिससे मैंने दिल्ली में संकेतों से बातचीत करने का यत्न किया था। परन्तु हिन्दुस्तान मे तो पति दो पत्नियाँ रख सकते हैं। मैं उसके साथ उसकी भागीदार बनने को तैयार हूँ।''

''इसके लिए उसकी स्वीकृति लेनी भी तो आवश्यक है। मुझे इसकी कोई सम्भावना प्रतीत नहीं होती।''

''मैं उसको मना लूंगी।''

''परन्तु फ्लोरा! हम बहुत ही निर्धन हैं?''

''मुझे अपनी माता से आधे मिलियन की डोअरी मिलने वाली है उससे हम दुनिया के किसी भाग में आनन्द पूर्वक रह सकते हैं।''

''परन्तु यदि तुम्हारी माता ने यह सम्बन्ध पसन्द न कर वह डोअरी न दी तो?''

''मैं जानती हूँ कि उन्हें इससे प्रसन्नता होगी।''

''यह जानना आवश्यक है।''

''मैं आपकी उनसे प्रत्यक्ष बात करा सकती हूँ।''

''हिन्दुस्तान में माता-पिता की स्वीकृति विवाह की रस्म के समय होती है।''

''वह भी हो जायेगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दो विवाह हिन्दुस्तानी रीति से विवाह करने पर ही हो सकते हैं ऐसा यहाँ हो नहीं सकता।"

"मैं आपके साथ हिन्दुस्तान चलूंगी।"

"यह सब-कुछ अभी तो नहीं हो सकता। इसके लिए युद्ध के बाद ही समय मिल सकता है।"

"तो आप मुझे स्वीकार करते हैं?"

"उक्त बाधाओं की उपस्थिति में किस प्रकार कर सकता हूँ?"

"आप उन्हें मुझ पर छोड़िए। मैं उन्हें दूर कर लूंगी।"

"पहले ऐसा कर लो, तभी विवाह के विषय में निश्चयात्मक बात हो सकती है।"

"ओह! धन्यवाद!" कहकर मथुरासिंह का आलिगंन करते हुए फ्लोरा ने कहा।

मथुरासिंह ने उसके बाहुपाश से स्वयं को मुक्त करते हुए कहा, "आओ अब चलते हैं।"

"अब यहाँ पर बैठने से क्या हानि है?"

"इस स्थान की परम्पराएँ ठीक नहीं है।"

"अब तो ठीक हो गईं। आपने मुझे विवाह के मार्ग में उपस्थित बाँधाओं को दूर करने की स्वीकृति दे दी है।"

"आओ हम किसी अन्य स्थान पर चलें।"

"साढ़े सात बजे यहाँ पर पूर्व की ओर से 'ट्वाईलाइट' का दृश्य बहुत सुन्दर होता है। बैठिए, हम उसे देखकर चलेंगे।"

"परन्तु मैं विवाह से पूर्व इस प्रकार का आलिंगन पसन्द नहीं करता। मेरे लिये यह एक पवित्र सम्बन्ध है। मैं इसे अपवित्र करना नहीं चाहता।"

वे दोनों पुनः उसी पत्थर पर बैठ गए, किन्तु एक-दूसरे से कुछ दूर हटकर। मथुरासिंह अनुभव कर रहा था कि वहाँ वायुमण्डल में, और वहाँ से पश्चिम की ओर जाने वाले चांद के प्रकाश में एक विचित्र मादकता है। इस पर भी वह अब आत्मविश्वास से भर रहा था। वह समझता था कि उसने वासना पर न केवल स्वयं नियन्त्रण पा लिया है, अपितु फ्लोरा को भी उसने शान्त कर दिया है।

मथुरासिंह अब फ्लोरा को अपने युद्ध पर जाने की बात बताने लगा था। उसने कहा, "हम लीबिया की भूमि को इटली वालों के रक्त से रंजित करने के लिए जा रहे हैं। हमारे देश में एक स्थान कुरूक्षेत्र नाम से विख्यात है। आज से पाँच सहस्त्र वर्ष पूर्व वहाँ एक बहुत बड़ा युद्ध हुआ था। ऐसा लिखा हुआ मिलता है कि उस मैदान में अठारह दिन तक दो सेनाएँ परस्पर घोर युद्ध करती रहीं थी, और वहाँ पर लगभग एक करोड़ मानवों की हत्या हुई थी। उस युद्ध में वहाँ की भूमि में इतना नर-रक्त समा गया था कि पांच हजार वर्ष बाद भी वहाँ की भूमि में उपज के लिए खाद डालने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आवश्यकता नहीं पड़ती।

"अब हम भी लीबिया की मरू-भूमि को हरा-भरा मैदान बनाने जा रहे हैं।"

फ्लोरा को एकाएक कंपकंपी हो उठी। मथुरासिंह ने पूछा, "क्यों क्या हुआ है?"

"मैं विचार करती थी कि यदि आपको कुछ हो गया तो?"

"सेना में भर्ती होने वाला प्रत्येक सैनिक इतना भय सदा अपने सिर पर लेता ही है। इस युद्ध में चालीस-पचास लाख के लगभग युवक अवतीर्ण हुए ही हैं। कौन मरेगा और कौन नहीं, यह कोई नहीं जानता। इसके जानने की आवश्यकता भी नहीं है। मैं तो यह जानता हूँ कि संसार में इतनी बुराई बढ़ गई है कि उससे लड़ना, जीवन के भोग से अधिक आवश्यक हो गया है।"

इसके बाद मथुरासिंह ने अपने पिता से सुने हुए पिछले युद्ध में उनके कई कारनामें फ्लोरा को सुनाये। युद्ध-क्षेत्र में अपने साथियों को मरता देख कर कोई भी सैनिक भयभीत अथवा अस्थिर नहीं होता। मरने वाले मरते हैं और अन्य सैनिक आगे बढ़ते जाते हैं। कोई नहीं कह सकता कि अगले पग पर उसकी भी मृत्यु हो जायेगी।

इस प्रकार बातें करते-करते आठ बज गये। इस समय पूर्व की ओर से धीमा सा प्रकाश ऊपर उठता दिखाई देने लगा। यह मधुर चांदनी का प्रकाश नहीं था। उससे अधिक बलशाली और तीव्र प्रतीत होता था। चांदनी फीकी पड़ रही थी।

वे दोनों उठे और घर के लिए वापस चल पड़े। आते हुए फ्लोरा गम्भीर थी और मथुरासिंह अपनी विजय पर गर्व अनुभव कर रहा था।

जब वे घर पहुँचे मिस्टर तथा मिसेज स्टैनले कोठी के बाहर घास के मैदान में चहलकदमी कर रहे थे। दोनों नाइट गाउन पहने हुए थे। स्टैनले सिगार पी रहा था और उसकी पत्नी गुलाब की क्यारी के पास खड़ी खिले हुए गुलाब की शोभा निहार रही थी आकाश में धुंधला प्रकाश फैल रहा था। फ्लोरा और सिंह उनके पास पहुँचे तो सिंह ने उनको प्रणाम किया। स्टैनले ने पूछा, "कहाँ से आ रहे हो?"

"मिस स्टैनले मुझे 'पाइन फौरेस्ट' में घुमाने के लिए ले गईं थीं।"

"कैसा लगा वह स्थान?"

"बहुत मोहक है।"

"घूमने से भूख लग आई होगी?"

"हाँ, भूख तो लगी है।"

"फ्लोरा!" स्टैनले ने आवाज दी, परन्तु माँ-बेटी बातें करती हुई वहाँ से निकल गई थीं। स्टैनले की आवाज उन तक नहीं पहुँची। उसने फिर सिंह को कहा, "अच्छा तुम अपने कमरे में चलो। वहाँ बैरा तुमको कोई हल्का सा ब्रेकफास्ट दे जायेगा। शेष तुम हमारे साथ दस बजे कर लेना।"

"थैंक यू" यह कहकर मथुरासिंह मैन्शन की ओर चल पड़ा। वह मन में विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा था कि बेटी माँ को अपनी सफलता अथवा असफलता का समाचार सुना रही होगी। उसने फ्लोरा को सर्वथा निराश तो किया नहीं था। इस पर भी ऐसी शर्तें लगाईं थीं कि जिनका युद्ध से पूर्व, पूर्ण होना सम्भव नहीं था। युद्ध में कौन जियेगा और कौन मरेगा, यह वह कैसे जान सकता था? युद्ध तक तो वह किसी को भी आशाविहीन नहीं करना चाहता था।

इस प्रकार विचार करता हुआ वह अपने कमरे में पहुँचा। वह अभी बैठा ही था कि बैरा एक ट्रे में उबले अण्डे, पौरीज और कॉफी ले आया। मथुरासिंह ने खाया और फिर स्वाध्याय करने लगा। वह मिलिटरी साइँस पर कोई पुस्तक पढ़ रहा था कि श्रीमती स्टैनले ने कमरे में प्रवेश किया। मथुरासिंह ने उठकर उसका स्वागत किया। उसने बैठते ही मथुरासिंह से पूछा, ''मिस्टर सिंह! किसी प्रकार कोई कष्ट तो नहीं हो रहा?''

''नहीं मोम! मैं यहाँ का आनन्द ले रहा हूँ। चाँद की रोशनी में मुझे रिज का दृश्य बहुत अच्छा लगा है। मैं आज की इस सैर को कभी भूल नहीं सकता। फ्लोरा कदाचित् सबसे सुन्दर स्थान पर ले गयी थी।''

''मैं उसे कह रही हूँ कि वह तुम्हे स्काटलैंड के कुछ अन्य सुन्दर स्थानों पर ले जाये। वे स्थान यहाँ से एक-एक दो-दो दिन की यात्रा पर हैं।''

''यदि वह इतना कष्ट कर सके तो मैं उसका आभारी रहूंगा।''

''उसने मुझे वे सब बातें बताई हैं जो तुमने विवाह के विषय में उससे की हैं। तुमने तीन आपत्तियाँ की हैं। एक तो फ्लोरा के पिता का आत्माभिमान, हिन्दुस्तानी से अपनी कन्या का विवाह पसन्द नहीं करेंगे। तम्हारा विचार ठीक है। परन्तु सिंह! यह इंग्लैंड है। यहाँ के युवक और युवतियाँ अपने माता पिता के विचारों की परवाह नहीं करते। लड़कियाँ पिता के धन की मोहताज नहीं होतीं। मैं इतना कुछ दे रही हूँ की वह अपना जीवन बहुत मज़े में निकाल सकेगी। उसको अपने पिता से कुछ नहीं लेना है।''

''तुम्हारी दूसरी आपत्ति है कि हिन्दुस्तान में तुमने किसी लड़की को विवाह का वचन दिया है। मैं इसको पसन्द नहीं करती। कोई भी औरत 'बाईगैमी' पसन्द नहीं करेगी। परन्तु इसमें विवाह करने वाली की रुचि पर छोड़ती हूँ। फ्लोरा को तुमने बता दिया है, यह ठीक ही किया है। इसका उत्तर वह स्वयं देगी। तीसरी बात है कि युद्ध समाप्त होने पर विवाह हो सकेगा।

''मुझे तो इसमें भी कोई आपत्ति नहीं, परन्तु इस विषय में भी फ्लोरा ही तुमसे बात करेगी।''

''अच्छी बात है। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि यदि मुझसे विवाह होना है तो वह हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान की रीति से ही हो सकेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बात भी फ्लोरा के विचार करने की है।"

"बस, फिर तो केवल एक बात रह जायेगी। वह यह कि उस हिन्दुस्तानी लड़की से राय करनी आवश्यक है।"

"परन्तु सिंह! यह बताओ कि तुम फ्लोरा को पसन्द करते हो अथवा नहीं?"

"मौम! मैं उसको बहुत अच्छी लड़की समझता हूँ। मैं उसके अच्छी पत्नी बनने में विश्वास करता हूँ। परन्तु कुछ वचन हैं, जो मैं पहले ही दे चुका हूँ। उनका मूल्य अन्य सब बातों से अधिक मानता हूँ।"

"भूल से ही यदि तुमने कोई वचन दे दिया हो तो उसका पालन करना किस प्रकार आवश्यक होगा?"

"वह वचन मैंने भूल से नहीं दिया था। जब मैंने उसको वचन दिया था, तब फ्लोरा के विषय में मैं कुछ नहीं जानता था। यह ठीक है कि शारीरिक और कुछ मानसिक गुणों में फ्लोरा राधा से श्रेष्ठ है, परन्तु वचन तो वचन ही होता है, उसे बदला नहीं जा सकता।"

श्रीमती स्टैनले टुकर-टुकर सिंह का मुख देखती रह गयी। फिर कुछ विचार कर उसने कहा, "ये आजकल हमारे अतिथि मिस्टर गौर्ट और उसकी माँ फ्लोरा से विवाह का निश्चय करने के लिए आये हुए हैं। हिन्दुस्तान जाने से पूर्व तक फ्लोरा ने इससे विवाह के लिए कभी असहमति व्यक्त नहीं की थी, किन्तु हिन्दुस्तान जाकर उसके विचारों में परिवर्तन हुआ है और अब तो वह उससे घृणा करने लगी है।"

"परन्तु मौम! वह अच्छा, स्वस्थ और सुन्दर युवक है। उसमें क्या खराबी देखी है, फ्लोरा ने?"

"वह सेना मे भर्ती नहीं हुआ। वह झूठ बोलकर और झूठा सर्टिफिकेट बनवाकर सेना में भर्ती होने से बच गया है।"

"ऐसा उसने क्यों किया है?"

"उसकी माँ और वह दोनों ही भीरू हैं। वे दोनों मरने से डरते हैं।"

"परन्तु लार्ड गौर्ट तो नौसेना में है।"

"हाँ, है तो। पर वह लार्ड गौर्ट है और यह लार्ड गौर्ट की पत्नी का पुत्र है।"

मुस्कराकर मथुरासिंह बोला, "युद्ध की बात छोड़ दें तो वैसे वह सभी प्रकार से स्वस्थ मस्तिष्क वाला युवक प्रतीत होता है।"

"फ्लोरा उसे ऐसा नहीं मानती।"

दस बजे तक फ्लोरा की माँ मिस्टर सिंह से बातें करती रही। आखिर में यह निश्चय हुआ कि वह और फ्लोरा चार-पाँच दिन का पर्यटन का कार्यक्रम निश्चित कर लें। फ्लोरा का कहना था कि यदि सिंह पसन्द करे तो वे लोग ग्लासगो, एडनबरा, लीथ और वहाँ से सागर के मार्ग से वारविक जायें। वहाँ पर उसके नाना नानी अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धवस्था व्यतीत कर रहे थे। फ्लोरा के प्रति उनका बहुत स्नेह था। फ्लोरा भी उनसे मिलने के लिए लालायित थी।

मिसेज स्टैनले ने कहा, "परन्तु मिस्टर सिंह! यदि तुम लोग परस्पर विवाह का निश्चय कर लो तब तो यह भ्रमण उचित है, अन्यथा मैं इसको पसन्द नहीं करती।"

"हाँ, विवाह का निश्चय इससे पूर्व ही हो जाना चाहिए।"

5

उस दिन फिर ब्रेकफास्ट और डिनर के समय के अतिरिक्त फ्लोरा और मथुरासिंह को परस्पर मिलने का अवसर नहीं मिला। यह तो रात को खाने के बाद सिंह के मिस्टर स्टैनले के शराब पीने में सम्मिलित न हो सकने और उसे तथा मिस्टर विलियम को ड्राइंग-रूम में छोड़कर अपने शयनागार में चले जाने पर ही सम्भव हो सका। उसने मिस्टर स्टैनले से कहा, "मैं प्रातः चार बजे उठा करता हूँ। अतः रात्रि में शीघ्र ही सोना पसन्द करूँगा।"

मिस्टर स्टैनले से अवकाश ग्रहण कर जब वह अपने कमरे में पहुँचा तो वह फ्लोरा को बैठे देख विस्मय करने लगा। वह द्वार पर ही ठिठक गया। उसे विस्मय में खड़ा देख फ्लोरा बोली, "आइए, वहीं क्यों रुक गये?"

"आपको इस समय यहाँ देखकर मुझे विस्मय हो रहा था।"

"क्या प्रातः चार बजे या रात के दस बजे मथुरासिंह में कोई भिन्नता होती है?"

हँसता हुआ कहने लगा, "मेरे लिए तो नहीं। परन्तु इस घर में तुम्हारी मान प्रतिष्ठा की बात कह रहा हूँ।"

"मैं इसकी चिन्ता नहीं करती। मैं माँ को बताकर आई हूँ कि मैं आपके साथ भ्रमण का कार्यक्रम बनाने के लिए जा रही हूँ।"

"हाँ, मैं तो चलने के लिए तैयार हूँ। मेरे विचार से यह बहुत ही मनोरंजक कार्यक्रम होगा। परन्तु मौम कहती थीं..."

"हाँ, वे कह रही थी कि हमको इससे पूर्व अपने विवाह का निश्चय कर लेना चाहिए।"

"मैं जितना ही इस विषय पर विचार करता हूँ, उतना ही इसको असम्भव समझने लगा हूँ।"

"आप विवाह की बात पर विचार कर रहे हैं अथवा किसी व्यापार की बात पर? युद्ध और प्रेम के विषय पर जो लोग विचार करते रहते हैं, वे लोग पिछड़ जाया करते हैं। इंग्लैंड की यही दशा हुई है। मैं अपनी भी वैसी दशा करना नहीं चाहती।"

"तो क्या करना चाहती हो?"

"एक बात तो मैंने कर दी है। वह यह कि मिस्टर गौर्ट को मैं स्पष्ट शब्दों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी अस्वीकृति बता आई हूँ। साथ ही मैंने उसके विषय में अपने मन के विचार भी साफ-साफ बता दिए हैं।''

''क्या बताये हैं?''

''यहि, कि वह भीरू है, देशद्रोही है, वह किसी अंग्रेज की सन्तान नहीं... इत्यादि।''

''तुमने व्यर्थ में ही एक धनी पड़ौसी को अपना शत्रु बना लिया है।''

''मुझे उससे किसी प्रकार का भय प्रतीत नहीं होता।''

फ्लोरा की बात सुनकर मथुरासिंह गम्भीर विचार में डूब गया। फ्लोरा ने फिर बताया, ''मैं आपकी सब शर्तें मानती हूँ। युद्ध के अन्त तक मैं विवाह के लिए प्रतीक्षा करने को तैयार हूँ। मैं आपके साथ हिन्दुस्तान चलूंगी। आपकी प्रेमीका से अनुनय विनय करके मैं उसको अपने साथ आपकी सह पत्नी बनने के लिए तैयार कर लूंगी और फिर हिन्दू रीति से विवाह कर लूंगी।''

मथुरासिंह मन में विचार करने लगा कि तब क्या होगा। इसकी चिन्ता करना व्यर्थ है। इस कारण वह कुछ बोला ही नहीं। फ्लोरा ने ही आगे कहा, ''कल ठीक ग्यारह बजे हम मोटर में ग्लासगो के लिए प्रस्थान करेंगे, वहाँ हम दो दिन रहेंगे और फिर दस दिन का भ्रमण कर यहाँ लौट आयेंगे।''

''ठीक है।''

''बहुत खूब आपने अब वचन दे दिया है, इसलिए कल दस बजे ब्रेकफास्ट से पहले तैयार रहियेगा।''

इतना कहकर वह जाने के लिए उठ खड़ी हुई। मथुरासिंह उसे कमरे के द्वार तक छोड़ने आया तो फ्लोरा एकाएक घूमी और उससे लिपट गई। इस बार उसने मथुरासिंह को अधिक मीठा और प्रेममय पाया।

जी-भर आलिंगन करने के बाद खुशी से नाचती हुई वह कमरे से बाहर निकल गई।

उधर बैठक में बैठे हुए गौर्ट और स्टैनले फ्लोरा द्वारा गौर्ट को दी गई अस्वीकृति पर विचार कर रहे थे। स्टैनले ने कहा, ''फ्लोरा इस हिन्दुस्तानी युवक से प्रेम करने लगी है।''

''आपको जब यह विदित था तो आपने उसे रोका क्यों नहीं?''

''मैं तो हिन्दुस्तानियों को अंग्रेजों से निम्न श्रेणी का व्यक्ति मानता हूँ। मेरा विचार था कि मेरी लड़की भी इसी प्रकार के विचारों वाली होगी परन्तु मैं देख रहा हूँ कि मेरा अनुमान बिलकुल गलत निकला है। इस युवक के गुणों ने उसके मस्तिष्क पर भारी प्रभाव डाला है।

''क्या गुण हैं उसमें?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मिलटरी स्ट्रैटेजी के विषय में उसके अपने विलक्षण विचार हैं। उसके विचारों को सुनकर इंग्लैंड के चीफ आफ दी स्टाफ बहुत प्रभावित हुए हैं। यह युवक इतिहास का ज्ञाता है और युद्ध विषय में उसको बहुत जानकारी है। पोलिटिकल साँइस के विषय में भी उसके विचार विशेष हैं। भाषा पर इसका अधिकार है अतः यह अपने विचारों को भली प्रकार समझा सकता है। साथ ही वह सुन्दर और स्वस्थ युवक है। अधिकांश हिन्दुस्तानियों की अपेक्षा इसका वर्ण भी गोरा है और रूप-रेखा भी अच्छी है।"

"तो आप समझते हैं मुझे अपने विवाह के लिए अन्य लड़की का चयन करना चाहिये?"

"मैं तो इतना कर सकता हूँ कि इस नवयुवक को यहाँ से विदा करवा उसे युद्ध के मोर्चे पर भिजवा दूँ। लार्ड इज़्मे मेरे मित्र हैं। मैं इसको आक्रमण करने वाली सेना की हरियावल के साथ भिजवा सकता हूँ। किन्तु अपनी इच्छाओं में तुम इतने मात्र से सफल नहीं हो सकते। सफलता प्राप्त करने के लिए तुम्हे स्वयं को उससे श्रेष्ठ प्रकट करना होगा। ऐसा तुम घर बैठे हुए नहीं कर सकते।"

"तुम्हारा स्वयं को हृदय का रोगी घोषित कर देश और जाति को धोखा देना फ्लोरा का विदित हो गया है। इसका प्रभाव तो तुम अपने श्रेष्ठ आचरण से ही मिटा सकते हो।"

"यह तो मेरी माँ की ममता ने मुझसे ऐसा कार्य करवाया है, अन्यथा मैं भर्ती होने के लिए तैयार था।"

"तो अब पुनः 'मेडिकल' परीक्षा में जा सकते हो। दुर्भाग्य से तुम वकील हो, सेना में वकील के लिए कोई कार्य नहीं होता।"

स्टैनले का विचार था कि वह अगले ही दिन लंदन जाकर वहाँ से सिंह के लिए काहिरा के मोर्चे पर जाने की आज्ञा दिलवा देगा। इससे विलियम को अवसर प्राप्त हो जायेगा।

अगले दिन ब्रेकफास्ट के समय अपनी पूरी यूनिफार्म पहने हुए मथुरासिंह मेज पर बैठा था। स्टैनले ने उसे इस परिधान में देखकर पूछ लिया, "लैफ्टिनैन्ट सिंह! कहीं जा रहे हो क्या?"

"जी, फ्लोरा मुझे अपनी मोटर में स्कॉटलैंड के कुछ मुख्य-मुख्य स्थानों को दिखाने के लिए ले जा रही है।"

"कहाँ ले जा रही हो, फ्लोरा?"

"यहाँ से ग्लासगो, वहाँ से एडनबरा, फिर लीथ और अन्त में वार-विक।"

"सिंह को अपने नाना-नानी से मिलवाओगी?"

"हाँ, वे भी हम दोनों को आशीर्वाद देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम लोगों ने विवाह करने का निश्चय कर लिया है?"

"जी, इन्होंने स्वीकृति दे दी है।"

मथुरासिंह केवल मुस्करा रहा था। उसने कुछ कहा नहीं। स्टैनले ने अपनी लड़की से ही पूछा, "कब कर रही हो विवाह?"

"युद्ध के पश्चात।"

"यदि तुम्हे विलियम से विवाह नहीं करना था तो उसको इतने दिनों तक क्यों बांधकर रखा?"

"हम दोनों ही अपने को बांधकर रखे हुए थे। पर पापा! वह तो सर्वथा भीरू निकला। वह देश-जाति के लिए लड़ने से भी डरता है।"

"तुम नहीं डरती लड़ने और मरने से?"

"मरने से डरती तो थी। परन्तु जब से इनके साथ मेरा सम्पर्क हुआ है मैं यह समझ गई हूँ कि मरना वस्त्र बदलने के समान है, इससे डरने की आवश्यकता नहीं।"

"तो तुम्हे यह विश्वास हो गया है कि मरने के बाद तुम फिर जन्म लोगी?"

"हाँ, पहले थी और बाद में भी रहूंगी। यही युक्तियुक्त सिद्धांत है। इसमे संदेह के लिए स्थान नहीं रहता।"

"तो फिर यह स्मरण क्यों नहीं रहता कि पहले हम कहाँ थे, और क्या थे?"

"ऐसा इसलिए है कि वह इन्स्ट्रूमेंट जो स्मरण रखता है, शरीर के साथ टूट जाता है। इनका कहना है कि इस मस्तिष्क के अतिरिक्त एक अन्य यन्त्र है जो मरने पर टूटता नहीं और आत्मा के साथ-साथ नए जन्म में भी जाता है। उसको मन कहते हैं। उस पर प्रभाव देरी से पड़ता है और उसमें, पूर्व घटित घटनाओं को स्मरण रखने के लिए अधिक समय और योग्यता की आवश्यकता है।"

"तो तुम वैसा देख रही हो अब?"

"नहीं, अभी नहीं। परन्तु मैं जब हिन्दुस्तान में जाऊंगी तो उस यंत्र से काम लेना सीखूंगी।"

स्टैनले मुख देखता रह गया। खाना समाप्त हुआ तो फ्लोरा अपनी अमेरिकन गाड़ी, गैरेज से निकालकर ले आई। उसमें जब मथुरासिंह ने किट और फ्लोरा का सूटकेस रखा गया तो फ्लोरा ने अपने माता-पिता से विदा ली। मथुरासिंह ने भी छुट्टी ली और दोनों मोटर कार में सवार हो कर चल दिए।

आज विलियम, उसकी माँ और बहिन ने प्रातःकाल का अल्पाहार अपने कमरे में ही लिया। जब फ्लोरा की मोटर चली गई तो वे लोग भी जाने के लिए नीचे उतर आये। विलियम और उसकी माँ का विचार था कि स्टैनले अपनी लड़की को समझाएगा। परन्तु जब उन्होंने खिड़की में से मथुरासिंह को फ्लोरा की मोटर में जाते देखा, तो वे समझ गए कि उनकी आशा फलीभूत नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टैनले दम्पति उनको विदा कर अभी हॉल की ड्योढी पर ही खड़े थे कि गोर्ट परिवार ऊपर से उतर आया। उनकी नौकरानी उनका सामान भी नीचे उतारकर ले आई थी।

"तुम भी जा रहे हो, विलियम?"

"मैं समझता हूँ कि अब यहाँ ठहरने में हमारा कोई लाभ नहीं।"

"जैसा मन में आये करो। तुम मेरे बचपन के मित्र के सुपुत्र हो, इस कारण जब भी तुम्हारी इच्छा हो आ सकते हो। यहाँ सदा तुम्हारा स्वागत ही होगा।"

"पामिला!" स्टैनले ने लड़की को सम्बोधित कर कहा, "तुम आजकल क्या करती हो?"

"अभी तक तो 'हसबैंड हंटिग' का काम करती थी और अब कुछ सैनिक कार्य करने का विचार कर रही हूँ। माँ मना कर रही है, परन्तु मैं इसे अपना कर्त्तव्य समझती हूँ।"

"बहुत सुन्दर! तुम जाओगी तो हम सबको बहुत गर्व और प्रसन्नता होगी।"

विलियम इससे स्वयं को और अधिक लज्जित अनुभव करने लगा था। उसने बात बदलने के लिए अपनी माँ से कहा, "माँ! अब चलो न।"

सब मकान से बाहर आ गये। उनकी नौकरानी सामान उठाकर ले गई थी। उसने सामान मोटर में रखा और गौर्ट परिवार भी मोटर में बैठ वहाँ से चल दिया।

उन सबके चले जाने पर स्टैनले ने अपनी पत्नी से कहा, "मैं आज रात की गाड़ी से लन्दन जा रहा हूँ।"

"कुछ काम है क्या?"

"मै भी ड्यूटी पर रिपोर्ट करना चाहता हूँ।"

"कहीं भेजने वाले हैं आपको?"

"मै अब ऐक्टिव सर्विस पर नहीं भेजा जाउंगा।"

"विश यू गुड लक।"

"तुम्हे, फलोरा को अकेले मिस्टर सिंह के साथ नहीं भेजना चाहिए था।"

"लड़की अब सज्ञान हो चुकी है। मैं उसे किस प्रकार मना कर दूँ?"

कन्धों को झटकते हुए स्टैनले ने असन्तोष व्यक्त किया और फिर अपने कमरे में जाकर पुस्तक पढ़ने लगा।

शाम की चाय पीकर उसने ड्राइवर से गाड़ी निकलवाई और एडनबरा स्टेशन के लिए चल दिया।

मथुरासिंह और फ्लोरा एक सप्ताह के भ्रमण के बाद लौटे। दोनों अति प्रसन्न थे। एक बात विशेष हुई। फलोरा ने अपनी माँ से कहा, "मामा! मैने नर्सिंग का काम सीखा हुआ है। मैं रेड क्रास के अधीन कार्य करने वाली एम्बुलैंसकार्प में अपना नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखवाना चाहती हूँ।''

''बहुत अच्छा है। ईश्वर तुम्हारा भला करेगा।''

''हम कल ही लन्दन को चले जायेंगे।''

अगले दिन फ्लोरा और मथुरासिंह भी लन्दन जा पहुँचे। मथुरासिंह तो अपने मिलिटरी होस्टल मे चला गया और फ्लोरा एक होटल में ठहर गई। भर्ती हाने तक उसने होटल में रहने का निश्चय किया था। स्टैनले होस्टल में ही ठहरा हुआ था।

रात के खाने के समय मथुरासिंह स्टैनले से मिला। स्टैनले ने पूछ लिया, ''तो तुमको तार मिल गया है, मिस्टर सिंह?''

''कैसा तार?'' विस्मय में उसने पूछा।

''तुमको समय से पहले जाने की आज्ञा हो चुकी है।''

''तार नहीं मिला। मैं तो स्वयंमेव पन्द्रह तारीख तक काहिरा मे उपस्थित होने के लिए यहाँ चला आया हूँ।''

''क्यों बोनेस में दिल नहीं लगा?''

''लगा तो था। परन्तु फ्लोरा आ रही थी, इसलिए मैं भी आ गया हूँ''

''ओह! फ्लोरा कहाँ ठहरी है।''

''अभी रॉयल होटल में ठहरी है। आप उसे टेलीफोन कीजिये, वह आपसे मिलने के लिए उत्सुक है।''

''क्यों, मुझसे क्या काम है उसको?''

''सर्टिफाइड नर्स होने से वह अपनी सेवाएँ किसी अस्पताल अथवा एम्बुलैंस कौर्प क़ो देना चाहती है।''

''तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ?''

''आप सिफारिश करके किसी मोर्चे पर लगवा सकते हैं।''

''आजकल लंदन ही मोर्चा बना हुआ है। बिना सूचना के बमबारी होने लगती है और सैकड़ो उसमें घायल हो जाते हैं।''

''तो उसकी ड्यूटी यहीं लगवा दीजिए।''

''मैं समझता हूँ कि बदलती परिस्थिति में तुम्हारी योजना विलीन होती जाती है।''

''क्यों?''

''हिटलर ने अब मुसोलिनी को पीछे कर, स्वयं बलकान पर अधिकार करने का निश्चय किया है।''

''उसका मेरी योजना से क्या सम्बन्ध है?''

''इसी सम्बन्ध में तो तुमको यहाँ बुलाया गया है।''

अच्छी बात है, मैं अभी अपने आने की सूचना भेज देता हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6

खाना समाप्त कर, मथुरासिंह ने चीफ आफ दी स्टाफ के सचिव कर्नल बैंक को टेलीफोन कर दिया। उसने कहा, "यहाँ आकर मैंने सुना है कि मुझे वापस बुलाने के लिए बोनैस को तार भेजा गया है।"

"किसने बताया है?"

"कर्नल जे. डब्लू. स्टैनले ने।"

"आप इस समय आ सकते हैं क्या?"

"हाँ मैं आ सकता हूँ।"

"मैं आपके लिए गाड़ी भेज रहा हूँ, तुरन्त आ जाइए।"

पाँच मिनट में एक जीप उसको लेने के लिए आ गई और आध घण्टे में वह सैनिक कार्यालय पहुँच गया।

कर्नल ने बताया, "हमारी सेना का जमघट देख, टयुनीशिया में शत्रु सेना की विशेष हलचल देखी गई है। इस कारण आक्रमण शीघ्र करने का निश्चय किया गया है। आक्रमण की तिथि बीस दिसम्बर की अपेक्षा दस दिसम्बर कर दी गई है। इससे आपको तुरन्त काहिरा पहुँच जाना चाहिए। यहाँ से दोपहर बाद ढाई बजे जिब्राल्टर के लिए हवाई जहाज मिलेगा। वहाँ पर आगे का प्रबन्ध होगा। यदि आप समय पर पहुँच गए तो अपनी कमान सम्भाल सकेंगे।"

मथुरासिंह ने बताया कि वह तुरन्त जाने के लिए तैयार है। अतः दस मिनट में उसके कागजात तैयार किये गए और उसको 'क्रायडन' पहुँचने के लिए कह दिया गया।

मथुरासिंह होस्टल में पहुँचा। उसने अपना किट लिया और उसी जीप में क्रायडन को चल पड़ा। वह अभी मार्ग में ही था कि ब्लैक-आउट का सायरन बज गया। ड्राइवर ने जीप को एक शैल्टर में ले जाकर खड़ा कर दिया। अंधेरे में जीप चलानी कठिन हो गई थी।

जर्मन बॉम्बर हवाई जहाजों ने एक बहुत बड़ा हवाई आक्रमण कर दिया था। नगर पर सैकड़ो बॉम्ब फेंके जाने लगे और अंग्रेजी लड़ाकू तथा 'स्पिट फायर' उनका सामना करने के लिए आकाश में पहुँच गए। जहाँ भूमि पर धमाकों और स्थान-स्थान पर आग लगने से प्रकाश हो रहा था, वहाँ आकाश में भी जुगनू की भांति चकमक हो रही थी। सारे आकाश में घोर गर्जन तर्जन सुनाई दे रहा था। यह गोलबारी लगभग बीस मिनट तक रही और फिर पाँच मिनट बाद 'क्लियर आउट' का साइरन बज गया। लन्दन में रोशनी हो गई, लोग शैल्टरों से निकलकर काम धंधो पर जाने लगे।

आधा घन्टा विलम्ब से मथुरासिंह भी क्रायडन पहुँच गया। जाने से पूर्व उसके मन में फ्लोरा से मिलने, अथवा कम-से-कम उससे फोन पर बात करने की इच्छा थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु इसके लिए समय नहीं था। एयरोड्रोम पर पहुँचते ही उसको, जाने के लिए तैयार खड़े, हवाई जहाज में बैठा दिया गया।

आगे समय पर हवाई जहाज मिलते गए और अगले दिन सायंकाल वह काहिरा जा पहुँचा। हवाई अड्डे से उसे सीधे कमाडिंग आफिसर जनरल आकिनलेक के सामने उपस्थित किया गया। उसने मथुरासिंह से सामने पहुँचते ही पूछा, ''यात्रा में बहुत थक गए हो?''

''बहुत तो नहीं हाँ साधारण थकावट है।''

''ठीक है, जीप में सो जाना। रात सालूम के फ्रन्ट पर आक्रमण की योजना है। तुम सैन्ट्रल सेना के कक्ष के ब्रिगेडियर नियुक्त किये गए हो। जाओ और अपना काम सम्भालो।''

मथुरासिंह ने सैल्यूट किया और जिस जीप में वह हवाई अड्डे से आया था, उसी जीप में सालूम के लिए चल पड़ा। अपने किट में से बिस्कुट निकाल कर उसने खाये और जल पिया। इस प्रकार कुछ आधार हो गया। लगभग तीन बजे वह मोर्चे पर पहुँच गया और उसने सेना के अपने विंग में जाकर अपना चार्ज ले लिया। उसके अधीन पाँच सौ जीपों में दो सहस्त्र सैनिक, बन्दूकों, हथगोलों से सुसज्जित तैयार खड़े थे। यह हिन्दुस्तानी सेना थी। उसके स्थानापन्न अधिकारियों ने उसे आक्रमण सम्बन्धी सब कागज, आज्ञाएँ और मानचित्र दिये। उसने टार्च के प्रकाश में वे सब देखीं, पढ़ीं और समझकर शत्रु के विषय में सूचना ज्ञात की। तब वह कार्य के लिए तैयार हो गया।

ठीक साढ़े चार बजे हवाई जहाजों ने आक्रमण आरम्भ किया। शत्रु के रक्षा-स्थानों पर हवाई जहाजों से बॉम्ब गिराये गए। आधे घन्टे की इस बॉम्ब बाजी के बाद हवाई जहाज लौटे तो सेना आगे बढ़ी। शत्रु के शिविर में हवाई आक्रमण से फैली घबराहट अभी शान्त नहीं हुई थी कि दनदनाती हुई सेना आगे बढ़ने लगी।

तीन ओर से सालूम पर आक्रमण हुआ। मध्यवर्ती सेना की कमान मथुरासिंह के हाथ में थी, शत्रु सेना ने बाधा उपस्थित की परन्तु यह सब कुछ इतनी शीघ्रता से हुआ कि शत्रु के पाँव उखड़ गए।

नगण्य-सी हानि से ही सालूम विजय कर लिया गया। आठ बजे से पहले ही वह शत्रु सेना से खाली हो गया। मित्र सेना के तीनों विंग के अधिकारी मिले और आगे की योजना पर विचार हो गया। दो घन्टे विश्राम करने के बाद उनकी सेना बैनगाजी की सड़क पर चल पड़ी। यहाँ का मार्ग रेतीला था। केवल सड़क पर ही मोटर इत्यादि चल सकती थीं। अतः तीनों पक्ष एक दूसरे के पीछे सड़क पर चलने लगे। मथुरासिंह का विंग सबसे आगे था। अन्य दोनों विंग पीछे थे। यह निश्चय था कि यदि कहीं शत्रु सेना का विरोध हुआ तो पिछले विंग दोनों बगलों में फैलकर शत्रु सेना को घेरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का यत्न करेंगे।

आगे बढ़ते समय हवाई जहाज़ों की एक टुकड़ी उनके आगे-आगे थी। उसका स्थल-सेना के कमाण्डरों के साथ रेडियो द्वारा सम्पर्क बना था और उन्होंने शत्रु सेना की हलचल के बारे में बता दिए था।

सालूम से सेना का अभियान दिन के दस बजे आरम्भ हुआ था और तीन घन्टे तक वे निर्विघ्न-रूप से आगे बढ़ते गये। सालूम से तीस मील आगे गाड़ियो को आराम दिया गया। वहाँ जल का एक स्त्रोत था। वहाँ पर गाड़ियों के इंजन को ठंडा किया गया और आधा घन्टा ठहर कर वे पुनः आगे के लिए चल पड़े। तीन बजे के लगभग हवाई जहाज के रेडियो से सूचना प्रसारित हुई कि आधा मील के अन्तर पर शत्रु सेना छिपी हुई है। मथुरासिंह ने सड़क छोड़, फैल जाने के लिए कह दिया। प्रगति धीमी तो पड़ गई, परन्तु जो शत्रु सेना मित्र-सेना को घेर लेने के लिए छिपी पड़ी थी, वह स्वयं ही घिर गई। योजनानुसार मथुरासिंह का विंग तुरन्त ही शत्रु सेना से जूझ गया। पीछे आने वाले विंग दायें-बायें फैलने लगे, ताकि बीच वाला विंग घेरे में न आ जाए। परन्तु शत्रु की सेना ब्रहुत अधिक थी। उसके पास टैंक थे और तोपखाना था। इस कारण मित्र सेना के पिछले विंग उस तेजी के साथ नहीं बढ़ सके, मथुरासिंह वाला दल बहुत तेजी से बढ़ रहा था।

रात के दस बजे तक घमासान युद्ध होता रहा। मथुरासिंह अपनी सेना के साथ शत्रु सेना पर मार-धाड़ करता हुआ सेना के पार चला गया। परन्तु दोनों अन्य पक्षों की टुकड़ियाँ कई कारणों से आगे नहीं बढ़ सकीं। वे आक्रमण-पर-आक्रमण करती रहीं, परन्तु शत्रु-सेना के पाँव नहीं उखाड़ सकीं।

रात के दस बजे शत्रु की सेना ने मथुरासिंह की टुकड़ी के लिए मार्ग छोड़ दिया। उन्होंने अपना पूरा बल दाहिने, बायें विंग्स पर डाल दिया। वे दोनों पीछे हटने लगे तो मथुरासिंह समझ गया वह घिर गया है। उसके लौटने के लिए मार्ग नहीं था।

मित्र-सेना के दोनों पक्ष भारी क्षति उठाकर लौट गये। मथुरासिंह के लिए आगे बढ़ने के अतिरिक्त चारा नहीं था। एकाएक मथुरासिंह को अपनी भयावह स्थिति का ज्ञान हुआ तो उसने उस स्थान का मानचित्र निकाला और दाहिनी ओर घूम गया। शत्रु इस चाल को समझ नहीं सका। वह समझने लगे थे कि मध्यवर्ती टुकड़ी हथियार डालने का यत्न कर रही है, परन्तु मथुरासिंह ने वहाँ से तीन मील पर स्थित छोटे-सी बन्दरगाह बारडी की ओर दौड़ लगाई। सैनिक-दृष्टि से वह एक अनावश्यक स्थान था। इससे वहाँ पर आक्रमण की आशंका नहीं की जा रही थी।

अपनी दिन-भर की थकी-माँदी टुकड़ी के साथ मथुरासिंह उस बन्दरगाह पर जा पहुँचा। थोडा-सा झगड़ा हुआ, परन्तु ये वहाँ जाकर विद्युत की भांति झपट पड़े और वहाँ के संरक्षको को थोड़े समय में ही परास्त कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रु का विचार था कि मित्र-सेना तबरूक की ओर जा रही है। तबरूक की ओर बहुत बलशाली सेना खड़ी थी। मथुरासिंह उधर जाता तो सब के सब या तो मारे जाते या युद्ध बन्दी बना लिये जाते। बारडी की ओर जाना अप्रत्याशित चाल थी। मथुरासिंह की टुकडी की पाँच सौ जीपों में से दो सौ ही बची थीं। दो सहस्त्र सैनिकों में से केवल आठ-नौं सौ सैनिक बचे थे। थके माँदे घायल और अल्प-सामग्री के साथ ये वहाँ जा पहुँचे। इस पर भी वहाँ पहुँचते ही इन्होंने किलाबन्दी आरम्भ कर दी। साथ ही रेडियो से चारो ओर एस. ओ. एस. भेजने आरम्भ कर दिये।

शत्रु ने बारडी पर घेरा डाल दिया था। मथुरासिंह ने समुद्र की ओर से मार्ग खुला रखने के लिए भारी यत्न जारी रखा।

शत्रु सेना ने पुनः सालूम पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजी आक्रमण ग्यारह की प्रातः आरम्भ हुआ था, बारह की रात को मथुरासिंह की हिन्दुस्तानी सिपाहियों की टुकडी बारडी पहुँची थी। तेरह तारीख को मथुरासिंह ने किलाबन्दी की और उसी दिन सायंकाल शत्रु सेना ने इस किलेबन्दी को तोड़ने का यत्न आरम्भ कर दिया। मथुरासिंह के एस. ओ. एस. का भी परिणाम निकला। अठारह तारीख को एक 'एयर क्राफ्ट कैरियर' वहाँ आ गया और मथुरासिंह से सम्पर्क बना घेरा डालने वाली शत्रु सेना पर हवाई जहाजों से आक्रमण करने लगा। एक घन्टे के हवाई आक्रमण के फलस्वरूप घेरा डालने वाली शत्रु सेना भागी तो समुद्री मार्ग से मथुरासिंह की सेना को वहाँ से निकाल लिया गया।

दिनांक इक्कीस को मथुरासिंह और उसके साथी सिकन्दरिया में उतार दिए गए। लन्दन और काहिरा में इस आक्रमण के विषय में लिखा-पढ़ी हो रही थी। जब मथुरासिंह की मिडिल ईस्ट फोरसेज के क़माण्डर-इन-चीफ के सामने पेशी हुई तो उसने इस पूर्ण घटना के विषय में अपने बयान दिये। बयान हो जाने पर उसको बताया गया, "दिनांक ग्यारह का आक्रमण लन्दन के आदेश पर अपरिपक्व तैयारी पर किया गया था। यह आदेश किसने दिया था और क्यों दिया था, इसकी जाँच हो रही है।"

"मेंरा निवेदन है," मथुरासिंह का कहना था, "कि प्रथम जनवरी को पुनः आक्रमण किया जाय। इस बार यदि आज्ञा दी जाय तो आक्रमण की योजना के विषय में मैं अपने विचार उपस्थित करूँ।"

"हाँ, बताओ।"

दीवार के साथ लगं मानचित्र के पास जाकर मथुरासिंह ने बताना आरम्भ किया, "अपनी योजना मैंने अपने प्रथम डिस्पैच में लन्दन के 'चीफ आफ दि स्टाफ' के सम्मुख रखी थी। उसमें मैंने तीन दिशाओं से आक्रमण करने के विषय पर लिखा था। एक तो भूमध्य सागर के किनारे-किनारे सालूम, बार, तबरूक, गजाला इत्यादि होते हुए। इस मार्ग की रक्षा के लिए एक एयर क्राफ्ट कैरियर और एक बैटलशिप इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किनारे पर गोला-बारी करे।

"दूसरा मार्ग है कापूजो, नी हाजीन, वीर टैंगाडीर से मिचिल्ली तथा डरना और तीसरा मार्ग होना चाहिए सिदिऊमर से आरम्भ होकर गियाराबून, अनजीला से बैनगाजी को।

मुझे विश्वास है कि इस तीसरे मार्ग से हम शत्रु को पीछे से घेर डालेंगे। प्रथम मार्ग पर घोर विरोध होगा। परन्तु यदि हमारे समुद्री बेड़े ने ठीक ढंग से सहयोग दिया तो सब-के-सब शत्रु युद्ध बन्दी हो जायेंगे, बीच के अर्थात् दूसरे मार्ग पर हमारे टैंक उनका सैण्डविच बना देंगे। परन्तु जिस समय हमने तीसरे मार्ग से बढ़ना आरम्भ किया तो पहले से घायल दोनों शत्रु सेनाएँ हथियार डाल देंगी।

कमाण्डर-इन-चीफ बहुत देर तक विचार करता रहा। फिर उसने पूछा, "इस तीसरे मार्ग में कौन जायेगा?"

"हिन्दुस्तानी सेना जाएगी।"

"और उसका नेतृत्व तुम सम्भालोगे?"

"हाँ, यदि आज्ञा हो तो मैं कर लूंगा।"

अब इसी योजना पर तैयारी होने लगी। ग्यारह तारीख और पहली जनवरी में भारी अन्तर था। दो लाख सेना को एक साथ चालना दी गई। इस बार मथुरासिंह को पचास हजार सैनिक देकर सिदिउमर की ओर से किरेसिरीन के दक्षिण में सर्वथा मरूभूमि में बढ़ने की आज्ञा दे दी गई। मथुरासिंह ने तीन सौ मील के मार्ग पर जाना था। इस कारण उसने अपना सामान और सेना सिदिऊमर में एकत्रित कर ली। उसने अपना आक्रमण अन्य दो सेनाओं के चलने से एक दिन पीछे आरम्भ किया।

मथुरासिंह का विचार ठीक निकला। शत्रु, उस ओर से आक्रमण की आशा नहीं करता था। मथुरासिंह का विचार था कि इस मार्ग से जल का प्रबन्ध न होने से किसी बड़ी सेना के आक्रमण की आशा नहीं की जायेगी।

जब हिन्दुस्तानी सेना जराबूब पहुँची तो बेनगाज़ी में इधर से आक्रमण की सूचना भेजी गई। परन्तु वहाँ यह समझा गया कि उनको धोखा देकर सेना को बरगलाने के लिए उस ओर झूठा आक्रमण है। अगले दिन यह आक्रमण अंजीला पहुँच गया। इस पर शत्रु सेना में चिन्ता व्यक्त की जाने लगी। इस पर भी आक्रमण का सबसे अधिक बल समुद्र तट के मार्ग पर था। शत्रु ने भी उसी मार्ग पर अपनी पूर्ण शक्ति से विरोध आरम्भ किया हुआ था। उस ओर से सेना का बल हटाकर तीसरे मार्ग पर ले जाने से वे प्रथम मार्ग पर अपनी पराजय निश्चित समझते थे।

इसी प्रकार के विचार में एक दिन और कट गया। हिन्दुस्तानी सेना अजेदाविया पहुँच गई। इस समाचार से तो बेनगाजी में चिन्ता फैल गई। इस समय एक जबरदस्त हवाई-आक्रमण किया गया। हवाई-आक्रमण से सेना में हानि तो हुई, परन्तु उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगती नहीं रुक सकी। बेनगाज़ी से सेना की एक टुकड़ी अजेदाविया के मार्ग पर भेजी गई। परन्तु वह इतनी सुदृढ़ नहीं थी कि हिन्दुस्तानी सेना की प्रगति को रोक सके। इस समय एक 'एयर-क्राफ्ट' कैरियर से हवाई गोलाबारी आरम्भ हो गई। एक बैटलशिप भी वहाँ आ पहुंचा। और उन्होंने दिन भर नगर पर गोलाबारी कर, पैट्रोल के टैंको को फूँक डाला। बारूद के गोदाम में आग लगा दी। यह सब योजनानुसार हो रहा था।

7

अफ्रीका में प्रथम आक्रमण की असफलता पर वाद-विवाद छिड़ गया। एन्थनी ईडन काहिरा पहुँचा और वहाँ के कमाण्डर-इन-चीफ से मिलकर उसने सब वृतान्त जाना। लन्दन से आक्रमण की तिथि बदलकर पन्द्रह दिन पहले करने में बहुत बड़ा रहस्य माना गया। उस समय तक मथुरासिंह बारडिया में घिरा हुआ था। जब वह काहिरा में पहुँचा तब तक ईडन लन्दन जा चुका था। और वहाँ पर उस आक्रमण के विषय में जाँच आरम्भ हो चुकी थी।

चीफ आफ दि स्टाफ के पास जब ईडन का वक्वव्य पहुँचा तो आक्रमण की तिथि बदलने का उत्तरदायित्व कोई नहीं लेता था। अफ्रीका की इस योजना में इंग्लैंड का प्राइम-मिनिस्टर बहुत रुचि प्रकट कर रहा था और इसकी असफलता की सूचना पर इसे बहुत चिन्ता हुई। यद्यपि जनरल आकिनलेक ने आश्वासन दिया था कि नियत दिन तक पुनः आक्रमण की तैयारी पूर्ण हो जायेगी, परन्तु यह रहस्य, कि तिथि किसने और क्यों बदली, एक समस्या बनी रही।

प्राइम-मिनिस्टर ने इस घटना की जाँच के लिए तीन सदस्यों की एक कमेटी नियुक्त कर दी। प्राइम-मिनिस्टर ने यह भी पूछा कि एक युद्धनीतिज्ञ को मोर्चे पर और वह भी सबसे आगे क्यों भेजा गया?

सारे कागजों की जाँच पड़ताल से विदित हुआ कि युद्ध सूचना विभाग से एक पत्र आया था, जिसमें यह सूचना थी कि इटली और सिसिली के बन्दरगाह पर अफ्रीका के लिए एक अति विशाल सेना का अभियान हो रहा है। उसके कुछ घन्टे पश्चात दूसरा समाचार आया कि चीफ आफ दि स्टाफ की यह सम्मति है कि अफ्रीका की योजना बनाने वाले हिन्दुस्तानी अधिकारी को तुरन्त अफ्रीका भेजना चाहिए। इसके पश्चात एक तीसरी सूचना आयी कि आक्रमण की तिथि बीस दिसम्बर की अपेक्षा दस दिसम्बर कर दी गई है।

ये सब सूचनाएँ दस डाउनिंग स्ट्रीट से प्रसारित की गई थी। किन्तु उन दिनों न तो चीफ आफ दि स्टाफ की कोई मीटिंग उस स्थान पर हुई और न ही कोई अधिकारी उनके विषय में जानता था। इन बनावटी सूचनाओं का स्रोत वह कार्यालय विदित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ, जिसमें कई दिनों से जे. डब्ल्यू स्टैनले काम कर रहा था। परन्तु उसके साथ एक दुर्घटना हो गई थी।

जिस समय मथुरासिंह लन्दन से चलने वाला था, एक बहुत प्रबल जर्मन एयर रेड हुई थी और उस रेड से स्टैनले का लड़का स्क्वैड्रन लीडर जॉन स्टैनले मारा गया था। उसके हवाई जहाज को हवा में ही आग लग गई थी। जलता हुआ हवाई जहाज टेम्ज़ नदी में गिर पड़ा। यद्यपि बचाने वाले जहाज ने उस हवाई जहाज के पायलॉट्स को बचाने का यत्न किया था, किन्तु केवल एक आदमी को जीवित बचा सके थे। शेष सब जलकर भस्म हो गये थे। स्टैनले को जब यह सूचना मिली तो वह अचेत हो गिर पड़ा। उसे अस्पताल पहुँचा कर सचेत करने का यत्न किया जाने लगा।

इस प्रकार आक्रमण की तिथि बदलने की जाँच एक बन्द गली में जाकर रुक गई। इसी समय अफ्रीका के नवीन आक्रमण के समाचार आने लगे। यह आक्रमण पहली जनवरी को आरम्भ हुआ था। इस तिथि तक स्टैनले सचेत तो हो गया था, परन्तु उसका मस्तिष्क ठीक प्रकार से काम नहीं कर रहा था। वह सबसे यही कहता था, "मैंने अपने लड़के की हत्या कर दी। मैंने ही अपने लड़के की हत्या की है।"

कर्नल बैंक को चीफ आफ दि स्टाफ के सचिव-पद से हटाकर किसी अनावश्यक कार्य पर लगा दिया गया। इसके अतिरिक्त स्टैनले के अर्द्ध-पागल हो जाने के कारण, अन्य किसी पर कोई कार्यवाही नहीं की जा सकी।

स्टैनले के अचेत होते ही फ्लोरा और उसकी माँ को सूचना भेज दी गई और अगले दिन वे भी उसके पास आ पहुँची। ठीक पन्द्रह दिन बाद स्टैनले सचेत तो हुआ, परन्तु उसका मदात्यय जारी रहा। इस समय उसको बोनैस में ले जाया गया, जहाँ उसकी सेवा-शुश्रूषा होने लगी।

समाचार-पत्रों में बेनगाजी से आक्रमण की सूचनायें आने लगी। प्रथम सूचना तो यही थी कि तबरूक के आस-पास बहुत घमासान युद्ध हो रहा है। फिर एकाएक समाचार आया कि हिन्दुस्तानी सेना ने इटैलियन सेना को आउट फ्लैंक कर बेनगाजी बन्दरगाह पर आक्रमण कर दिया है। इसके कुछ समय बाद ही समाचार आया कि बेनगाजी पर मित्र-सेनाओं का अधिकार हो गया है।

इसके अगले दिन समाचार आया कि इटैलियन सेनायें तबरूक के पास घिर गई हैं। उन्होंने हथियार डाल दिये हैं। लगभग बीस हजार सैनिकों को बन्दी बना लिया गया है।

अगले दिन समाचार मिला कि इस चमत्कारक विजय का श्रेय उस हिन्दुस्तानी अधिकारी की योजना के कारण है, जो बेनगाज़ी पर अधिकार करते हुए मारा गया है।

दुनिया भर में बेनगाज़ी की विजय की धूम मच रही थी। जानकार क्षेत्रों में इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिटलर की पराजय का श्रीगणेश समझा जा रहा था। परन्तु फ्लोरा अपने रुग्ण पिता की सेवा करती हुई यह समाचार पढ़कर कि वह हिन्दुस्तानी अधिकारी जो अफ्रीका के आक्रमण की योजना बनाने वाला था, बेनगाज़ी में मारा गया है, व्याकुल हो उठी। उसका भाई मारा जा चुका था। पिता का मस्तिष्क खराब हो गया था और उसका मंगेतर भी मारा गया था। उसके लिए तो संसार ही अंधकारमय हो गया था।

उसने पूरा समाचार जानने के लिए लन्दन जाने की इच्छा प्रकट की। उसकी माँ ने मना नहीं किया। फ्लोरा उसी दिन एडनबरा से लन्दन को रवाना हो गई। अगले दिन वह युद्ध कार्यालय में जा पहुँची।

युद्ध-कार्यालय में वह पूछताछ के कार्यालय में जाकर वहाँ के अधिकारी से पूछने लगी, "बेनगाजी युद्ध के मृतकों की सूची आप लोगों के पास आ गई है क्या?"

"नहीं अभी नहीं आई।"

फ्लोरा चिन्ता व्यक्त करती हुई निस्तब्ध सी रह गई। लोगों की भीड़ देखकर लार्ड इज़्मे वहाँ आ गया था। वह उस क्लर्क से पूछने लगा, "ये लोग क्या पूछ रहे हैं?"

"इन लोगों के सम्बन्धी अफ्रीका युद्ध में गये हुए हैं और आज के समाचार पत्रों में यह समाचार पढ़कर कि तबरूक में घमासान का युद्ध हुआ है, जिसमें इटैनियन सेना की पराजय हुई है। ये लोग सम्बन्धियों के विषय में जानने को मृतकों की सूची देखने के लिए एकत्रित हुए हैं।"

"तुम यह सूचना प्रसारित कर दो कि इस युद्ध में हिन्दुस्तानी सैनिक सबसे आगे लड़े हैं और मित्र सेना की बहुत कम हानि हुई है। मृतकों की सूची आते ही उनके सम्बन्धियों को सूचित कर दिया जायेगा।'

इतना कह लार्ड इज़्में ने पूछताछ की खिड़की में से झाँककर देखा। वह चाहता था कि बाहर एकत्रित व्यक्तियों में से किसी को मौखिक रूप से यह सूचना दे दे, जिससे कि समाचार प्रसारित होने से पूर्व ही उन लोगों को सान्तवना मिल जाय। यह देखते हुए उसकी दृष्टि फ्लोरा पर जा पड़ी। वह कमरे से निकला और अनिश्चित मन खड़ी फ्लोरा के पास जाकर पूछने लगा, "मिस स्टैनले! तुम यहाँ पर खड़ी क्या कर रही हो?"

फ्लोरा ने लार्ड इज़्मे को सामने खड़े देखा तो सहम सी गई। उसने उसे अभिवादन कर उसके प्रश्न के उत्तर में कहा, "मैं अपने एक मित्र के विषय में जानने के लिए आई थी।"

"तुम्हारे पिता का स्वास्थ्य अब कैसा है?"

"धीरे-धीरे ठीक हो रहा है।"

"भीतर आ जाओ, तुम किसके विषय में पूछना चाहती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह लार्ड इज़्मे के पीछे-पीछे उसके कमरे में चली गई। उसने आराम से बैठाकर पुनः अपना प्रश्न दोहराया, "हाँ, बोलो। किसके विषय में पूछ रही हो?"

"मैं हिन्दुस्तानी लेफ्टिनेंट एम. सिंह के विषय में पूछने के लिए आई थी।"

"ओह! ठीक है, तुम्हारा परिवार उसके विषय में सीमा से अधिक रुचि व्यक्त कर रहा है।

"वह अब लेफ्टिनेंट नहीं, ब्रिगेडियर जनरल बन गया था। अभी तक तो यही समाचार मिला है कि वह आक्रमणकारियों में सबसे आगे था। एक बात वह कहा करता था कि शस्त्रास्त्रों में भले ही कितनी ही उन्नति हो जाय, परन्तु उनसे लड़ने वाला मानव का मस्तिष्क ही होगा। इसलिए मानव मन को युद्ध जीतने के लिए अति कठोर, क्रूर, साहसी और सम्वेदनाविहीन बनाना पड़ेगा। मानव जीवन का उद्देश्य है सत्य। परन्तु खूंखार जानवरों के इस संसार में सत्य उद्देश्यों के रखने वालो को भी उक्त रूप धारण करना पड़ेगा।

"यदि तुम चार दिन बाद आओ तो तुम्हे उसके विषय में पूर्ण जानकारी दे सकूंगा।

"और हाँ मैं समझता हूँ कि तुम अपने पिता को वहीं बोनैस में ही रखो। यहाँ की अपेक्षा वहाँ उसकी चिकित्सा भली प्रकार से हो सकेगी।"

लार्ड इज़्में ने गम्भीर दृष्टि से फ्लोरा की ओर देखते हुए कहा।

फ्लोरा जानती थी कि लन्दन में योग्य-से-योग्य डाक्टर मिल सकते हैं। यदि लार्ड इज़्में उसके पिता को वहीं रखने के लिए कह रहा है, तो इसमे कुछ रहस्य होगा। वह प्रश्न भरी दृष्टि से लार्ड की ओर देख रही थी।

फ्लोरा को अपने पिता का यह कहना कि उसने ही जॉन की हत्या की है, रहस्यमय प्रतीत होने लगा था। सहसा वह उठी और इज़्में को धन्यवाद कर कमरे से बाहर निकल गई।

फ्लोरा वापस बोनैस में जा पहुँची। लन्दन में उसके लिए कुछ भी आकर्षण नहीं रहा था। मथुरासिंह के निधन का सर्मथन तो हुआ था, परन्तु कैसे, वह जान नहीं सकी। जब वह बोनैस में पहुँची तो उसका पिता, जो उस समय लॉन में बैठा हुआ था, उसके पहुँचने पर घबराकर उठा और मैन्शन की ओर भाग खड़ा हुआ था, फ्लोरा की माँ ने पूछा, "क्यों, क्या बात है?"

"पुलिस आई है।" घबराकर स्टैनले ने जवाब दिया।

"पुलिस क्यों आयेगी?" मोटर से उतरते हुए फ्लोरा ने अपने पिता से पूछा।

"मुझे पकड़ने के लिए।"

"क्यों, आपने क्या किया है?"

"मैंने जोन की हत्या की है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर वह तो जीवित है।" फ्लोरा ने उसके मस्तिष्क का बोझ हल्का करने के लिए झूठ बोल दिया।

स्टैनले यह सुनकर गम्भीर सा हो गया। उसने फिर कुछ नहीं कहा। इस प्रकार का व्यवहार वह कई दिनों से कर रहा था। जब भी अपने मस्तिष्क में विद्यमान विचारों के विपरीत कोई बात सुनता तो उसी समय गम्भीर सा बनकर ऐसा भाव बनाता, मानों वह उस समस्या को समझ नहीं पा रहा हो।

फ्लोरा अपनी माँ को अलग में ले गई और उसने उसको लार्ड इज़्में की बात बताई। उसकी माँ ने सुनकर कहा, "तुम उससे पूछती कि लन्दन में क्यों नहीं हो सकती?"

"मेरे मन में यह विचार तो आया था कि पूछ लूँ। परन्तु यह विचार कर कि उसकी चेतावनी और पापा का बार-बार जॉन की हत्या की बात करने का सम्बन्ध, किसी युद्ध रहस्य के साथ न हो, इस कारण उनसे न पूछ, मैं सीधी तुमसे राय करने के लिए यहाँ चली आई हूँ।"

"वर्तमान परिस्थिति में तुम्हारे पिता कह रहे थे कि अब तुम्हे विलियम से विवाह कर लेना चाहिए। मैंने जब इसका कारण पूछा तो चुप हो गये, जैसे अभी जॉन के जीवित होने की बात सुनकर उन्होंने किया था। लन्दन से क्या समाचार लाई हो?"

"मिस्टर सिंह के विषय में पूछने के लिए मैं वार ऑफिस में गई थी। बेनगाज़ी पर आक्रमण करने वाली सेना के हताहतों की सूची अभी तक उस कार्यालय में नहीं पहुँची है। उसे देखने के लिए मुझे पुनः लन्दन जाना पड़ेगा। लार्ड इज़्मे कह रहे थे कि एक सप्ताह के भीतर पूर्ण सूची हमारे पास आ जायेगी।"

"ठीक है, एक सप्ताह बाद पुनः लन्दन जाकर पता कर लेना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

बेनगाज़ी के युद्ध में मित्र-राष्ट्रों के दस सहस्त्र सैनिक काम आये। इनमें अधिकांश सैनिक हिन्दुस्तानी थे। बेनगाजी में प्रवेश करते ही आमनें–सामनें का युद्ध शुरू हो गया और मकान-मकान, गली-गली पर अधिकार करने के लिए युद्ध करना पड़ा। कठिनाई यह उत्पन्न हुई कि मित्र-सेना ने इटली वालों की जितनी तैयारी समझी थी, उससे कहीं अधिक तैयारी वहाँ थी। पिछले बीस-बाईस दिन में इटली ने बीस सहत्र सेना केवल बेनगाजी भेज दी थी और उस सेना ने वहाँ अधिकांश नागरिकों के घरों पर अधिकार कर रखा था।

इटली के सैनिक भी देख रहे थे कि बेनगाज़ी पर मित्र-सेना के अधिकार हो जाने पर उन्हें पूर्ण अफ्रीका से निकलना पड़ेगा। इस कारण वे यहाँ पर दिल से लड़ने के लिए कटिबद्ध थे।

जनवरी पाँच को जब बेनगाज़ी पर आक्रमण हुआ तो इटालियन सैनिक लड़ने-मरने को तैयार हो गये। एक मोर्चा शिविर के बैरियर पर ही लगा था। टैंकों के सामने सैनिकों के कुछ भी न कर सकने के कारण, वे टैंकों के लिए मार्ग छोड़ एक और को हट गए। परन्तु ज्यों ही हिन्दुस्तानी सैनिक व टैंक आगे बढ़े, इन्होंने युद्ध आरम्भ कर दिया। घोर युद्ध छिड़ गया। इस पर भी हिन्दुस्तानियों के साहसी आक्रमण को रोका नहीं जा सका। बहुत से इटैलियन खेत रहे और बाकी हटते हुए नगर में प्रविष्ट होने लगे। हिन्दुस्तानी सिपाही उनका पीछा करते हुए नगर की गलियों तथा बाज़ारों में पहुँच गए। इटैनियन सिपाही मकान की छतों से गोलियां और हथगोले चला रहे थे। मथुरासिंह ने इस स्थान पर मोटर-गाडियों में बैठकर लड़ाई करना असम्भव जाना, अतः बाजार के एक कोने से मकान-मकान पर आक्रमण कर उस पर अधिकार करने की योजना चालू कर दी।

बाज़ार के एक कोने पर सशस्त्र गाड़ियाँ खड़ी कर, वहाँ पर तोपे लगा दी गयीं। उन तोपों से मकानों पर गोलाबारी होने लगी। नगर के दूसरे सिरे पर इटैलियन सेना की तोपें आकर खड़ी हो गयीं। उनकी ओर से भी गोला बारी होने लगी।

अब मथुरासिंह ने मकानों को गिराना आरम्भ कर दिया। साथ ही फ्लेम-थ्रोअर यंत्रों से मकानों पर पैट्रोल फेंक कर आग लगानी आरम्भ कर दी।

तोपें और फ्लेम-थ्रोअर काम तो कर रहे थे, परन्तु इसमें सैनिक प्रगति बहुत कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रही थी। परिणाम यह हुआ कि दो दिन तक वे कुछ विशेष प्रगति नहीं कर सके। इन दो दिनों में उन्होंने वैसे शत्रु-सेना को काफी क्षती पहुँचाई थी। तीसरे दिन कार्य सुगम हो गया। मित्र-सेना की प्रगति होने लगी और नगर के उस ओर खड़ा शत्रु का तोपखाना बन्द हो गया। तोपची भाग गये थे अब मथुरासिंह ने अपने सैनिकों को मोटर गाड़ियों से उतार, पैदल नगर पर अधिकार करने की आज्ञा दी।

इस समय तक समुद्र तट से मित्र-सेना पहुँच गई अब इटैलियन सैनिक हथियार डालने लगे और बन्दी बनाए जाने लगे।

मथुरासिंह शेष कार्य अपने अधीनस्थों को सौंपकर लौटने लगा तो एक गली से कई स्त्रियों के चीखने-पुकारने का शब्द सुनाई दिया। मथुरासिंह ने यह शब्द सुना तो यह समझकर कि नागरिकों पर शत्रु के सैनिक किसी प्रकार का अत्याचार कर रहे हैं, वह अपनी संगीन चढ़ी बन्दूक को ले उस मकान के नीचे जा खड़ा हुआ।

सैनिकों ने नीचे का द्वार खटखटाया तो एक युवती ऊपर की मंजिल पर खुली खिड़की में से नीचे झाँकने लगी। वह अर्द्ध-नग्नावस्था में थी और संकेतो से तथा अपनी अरबी भाषा में सहायता के लिए आह्वान कर रही थी।

मथुरासिंह ने अपने साथियों को द्वार तोड़ने की आज्ञा दे दी। द्वार तोड़ते हुए द्वार के समीप लगी सुरंग फट गई।

इसमें उस मकान का अग्रिम भाग धड़ाम से नीचे गिर गया। जो हिन्दुस्तानी सैनिक द्वार तोड़ रहे थे, वे इस धमाके से टुकड़े-टुकड़े हो गये। मकान तीन मंजिल वाला था, मकान का अग्र भाग जो गिरा तो तीस फुट के लगभग एक ढेर वहाँ पर लग गया। मथुरासिंह और उसके कुछ साथी मकान के आगे गिरने वाले मलबे के नीचे दब गए।

इस समय तक कैनेडियन और आस्ट्रेलियन सैनिक दोनों ओर से घुस आये। पूर्ण नगर अधिकांशत ईंट और चूने का ढ़ेर-सा हो गया था। योजनानुसार बहुत बड़ी संख्या में युद्ध-बन्दी बने और युद्ध सामग्री हाथ आई।

हिन्दुस्तानी सेना को बेनगाज़ी में ही रह जाने की आज्ञा थी। ब्रिगेडियर-जनरल मथुरासिंह लापता था अतः यह अनुमान लगाया गया कि वह मारा गया है। लगभग बीस सहस्र से अधिक शत्रु-सेना के सैनिक मरे और दस सहस्र हिन्दुस्तानी काम आये। शत्रुओं के बीस सहस्र के लगभग सैनिक बन्दी भी बनाये गये।

नगर के प्रबन्ध में एक सप्ताह लग गया और उसके बाद शवों को ढूंढा जाने लगा। मित्र-सैनिकों के लगभग सभी शव और आहत सैनिक ढूंढ लिए गए। इन शवों और घायलों में मथुरासिंह का शव नहीं मिला।

उसे मृत अथवा किसी अग्निकांड में भस्म हो गया समझ, रिपोर्ट कर दी गई कि उसकी मृत्यु हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमध्यसागर में अंग्रेजी क्रूजरों और बैटल-शिप्स ने अपना अधिकार जमा रखा था और इटली के जहाज अपने देश के बन्दरगाहों में छिपे बैठे थे।

बेनगाज़ी में तीनों सेनाओं का समागम हुआ और वे वहाँ से आगे बढ़ने का विचार करने लगे। दरना, इलर्मज़ और तारीफ इत्यादि समुद्रतट के नगरों पर अधिकार कर वे दूसरी ओर त्रिपोली पर जा पहुँचे।

इटली की इस पराजय का परिणाम यह हुआ कि इथोपिया में, जिस पर इटली ने 1935 में बलपूर्वक अधिकार जमा लिया था, बगावत हो गई और थोड़े से ही हिन्दुस्तानी तथा अमरीकन सैनिकों के वहाँ भेजने से वह देश स्वतन्त्र हो गया। एक बहुत बड़ी संख्या में इटली के सैनिक वहाँ भी बन्दी बनाए गए।

इथोपिया के स्वतन्त्र हो जाने से हिटलर घबरा उठा। मुसोलिनी लज्जित हुआ। हिटलर नये साथी ढूंढने में लग गया। हिटलर जानता था कि साथी तो वही बन सकता है, जो उसके समान ही बलशाली हो। दुर्बल को साथी बनाने में कोई लाभ नहीं, सहायता देने की अपेक्षा वह उस पर बोझ बन जाएगा। इस समय जापान के अतिरिक्त अन्य कोई भी राज्य इस योग्य नहीं था कि जिसे हिटलर अपना बनाने में लाभ समझे। एक बार पुनः इंग्लैंड से सुलह करने का यत्न हुआ।

यदी बाल्डविन अथवा चैम्बरलेन इंग्लैंड का प्राइम-मिनिस्टर होता तो यह सम्भव था कि इंग्लैड और जर्मनी में सन्धि हो जाती, परन्तु चर्चिल को यह योजना पसन्द नहीं आई। इसके विपरीत चर्चिल ने अपने एक विशेष दूत सर स्टैफर्डक्रिप्स को रूस से सन्धि के लिए मास्को भेज दिया और रूस को मित्र-राष्ट्रों से सन्धि का निमन्त्रण दे दिया।

167972

2

मथुरासिंह की मृत्यु का समाचार हिन्दुस्तान के जमादारपुर और स्कॉटलैंड बोनैस में जा पहुँचा। दोनों स्थानों पर इसकी प्रतिक्रिया भिन्न भिन्न हुई। मथुरासिंह की मृत्यु की पक्की सूचना फ्लोरा को तीस जनवरी को मिली और इस अवधि में यह निरन्तर बोनैस और लन्दन के चक्कर काटती रही।

बेनगाज़ी का मलबा उठाया गया तो फिर भी मथुरासिंह का कोई चिन्ह नहीं मिला। लार्ड इज़्मे को जब यह विदित हुआ कि स्टैनले की लड़की उस हिन्दुस्तानी युवक से उत्कट प्रेम करती है तो उसने मथुरासिंह की पूर्ण सूचना प्राप्त करने के लिए अफ्रीका हाई-कमाण्ड से लिखा पढ़ी की।

तीस जनवरी को अन्तिम सूचना मिली। सात जनवरी को जब इटैलियन सैनिक भाग रहे थे, एक मकान में कुछ औरतों की चीख सुनकर मथुरासिंह उन औरतों को बचाने के लिए दस बारह सैनिकों के साथ उस मकान का दरवाजा तुड़वाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया था। दरवाजा तोड़ते हुए एक बहुत बड़ा धमाका हुआ था, जिससे मकान का अग्र भाग गिर गया था। सभी सैनिक, जो वहाँ औरतों की रक्षा के लिए गए थे, या तो धमाके से उड़ गये थे अथवा मलबे के नीचे दब गए थे। दस में से एक सैनिक का शव धुएं में काला पड़ा हुआ मिला। ऐसा प्रतीत होता है कि बिग्रेडियर जनरल मथुरासिंह-सहित शेष सब उस धमाके से टुकड़े-टुकड़े हो गये।

मथुरासिंह मर गया घोषित किया जाता है।

इस रिपोर्ट को फ्लोरा को दिखाया गया तो वह आँखों में आँसू लेकर युद्ध-कार्यालय से लौट आई और वहाँ से बोनैस में जा पहुँची।

इस समय तक मिस्टर स्टैनले सब प्रकार से ठीक हो गया प्रतीत होता था। अब वह अनर्गल प्रलाप नहीं करता था, किन्तु अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की माँग के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं कहता था। जब-जब भी फ्लोरा मथुरासिंह की खबर पूछने के लिए लन्दन जाती थी, वह अपनी पत्नी से उसके विषय में पूछता रहता था।

फ्लोरा अपने पिता की सेवा बड़े लग्न से कर रही थी। उसकी पत्नी समझती थी कि वह इसी कारण उसके विषय में पूछता होगा। इस बार जब फ्लोरा लौटी तो बहुत ही शोक-ग्रस्त होने से, उसका मुख पीला पड़ गया था। जिस समय वह आई मिस्टर स्टैनले उस समय लॉन में बैठा हुआ था। फ्लोरा को गाड़ी से उतरता देख वह उठ खड़ा हुआ। उसकी पत्नी ने पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

"फ्लोरा से सहानुभूति प्रकट करने।"

"सहानुभूति?"

"हाँ, देख नहीं रही हो, उसके मुख पर कालिमाँ छाई हुई है।"

पति पत्नी दोनों ही उठकर फ्लोरा की ओर चल पड़े। फ्लोरा मोटर से उतरकर मैन्शन की तीसरी मंजिल पर स्थित अपने कमरे में चली गई। पति-पत्नी दोनों ही उसके पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँचे।

माँ ने फ्लोरा से पूछा, "क्या समाचार लाई हो?"

फ्लोरा फूट पड़ी। वह विह्वल होकर रोने लगी तो माँ उसकी पीठ को सहलाती रही। फ्लोरा ने यद्यपि कुछ कहा नहीं था परन्तु उसकी मुखाकृति और उसका रुदन मथुरासिंह की मृत्यु के समाचार की पुष्टि कर रहे थे।

फ्लोरा रोती रही और उसके माता-पिता उसको सान्त्वना देते रहे। आज स्टैनले ने उससे एक बात कही, "मैं अब ठीक हूँ और शीघ्रातिशीघ्र अपनी ड्यूटी पर लन्दन चला जाना चाहता हूँ। इस कारण फ्लोरा, अब तुम साहस पकड़कर माँ का इस घर में साथ दो। युद्ध के परिणामों को कौन टाल सकता है।"

"परन्तु डियर!" श्रीमती स्टैनले कहने लगी, "तुम अभी पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं हुए हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं ठीक हूँ, पिछले दस दिन से मुझको अवसाद का दौरा नहीं पड़ा और मैं भी यह समझता हूँ कि देश पर इस कठिनाई के अवसर पर मुझे अपना कार्य करना चाहिए।

"मुझे खेद है कि मैं सक्रिय सेना की आयु से बड़ा हो गया हूँ। अन्यथा मैं बन्दूक कन्धे पर रखकर मोर्चे पर जाता और वीर गति पाने का यत्न करता।"

यह बात सुनकर श्रीमती स्टैनले के पूर्ण शरीर में कम्पकपी छा उठी। इस पर भी वह उठी और अपने पति की बाँह में बाँह डाल, उसे अपने कमरे में ले गई। दो दिन तक फ्लोरा अपने कमरे में ही रही। उसके लिए वहीं पर भोजन आदि का प्रबन्ध होता रहा। दोनों दिन बीच-बीच में उसकी माँ उसको सान्त्वना देने के लिए आती रही। फ्लोरा धीरे-धीरे मथुरासिंह के मृत्यु-समाचार के आघात से स्वस्थ होती जा रही थी। तीसरे दिन जब माँ उसके पास बैठने के लिए आई तो उसने देखा कि फ्लोरा बाहर जाने के लिए तैयार हो रही है। उसने पूछा, "कहाँ जा रही हो?"

" कुछ समय के लिए रिज़ पर।"

"सब व्यर्थ है फ्लोरा! तुम्हारे पिता लन्दन जाकर युद्ध प्रयासों में योगदान का विचार कर रहे हैं। हम दोनों यहाँ अकेली है, इस कारण अब हमें भविष्य के विषय में विचार करना चाहिए। युद्ध-कालीन परिस्थितियों में व्यतीत काल की घटनाओं के लिए रोना-धोना ठीक नहीं।"

"माँ! आज तो मैं वहाँ जा रही हूँ। रिज पर बैठकर मैं उनको अपना अन्तिम नमस्कार करना चाहती हूँ। वहाँ से लौटकर मैं अपने नये जीवन पर विचार करूंगी।"

"तुम्हारे पिता तो आज सायंकाल की चाय के पश्चात् लन्दन के लिए रवाना होने वाले हैं।"

"मैं उनको अपनी मोटर में ले जाकर स्टेशन पर छोड़ आऊंगी?"

"तब तो ठीक है। तुम रिज पर से कब लौट आओगी।"

मध्याह्न भोजन के समय से पहले ही आऊंगी।"

जनवरी मास में वह स्थान पूर्ण-रुपेण हिमाच्छादित हो रहा था। फ्लोरा मार्ग भली प्रकार जानती थी, इस कारण वह वेधड़क चली जा रही थी। धूप निकल आई थी। इस पर भी वायुमण्डल में बहुत शीत था। इससे बचने के लिए फ्लोरा ने नाक-कान पर मफलर लपेटा हुआ था।

यद्यपि रिज को फ्लोरा पैदल ही गई थी, तथापि लौटते समय वह विलियम गौर्ट की कार में थी। लार्ड तथा मास्टर गौर्ट स्टैनले से मिलने के लिए आ रहे थे कि मार्ग में उनको रिज से आती हुई फ्लोरा मिल गई।

लार्ड गौर्ट ने गाड़ी रुकवा दी। विलियम गाड़ी चला रहा था। लार्ड गौर्ट ने संकेत से फ्लोरा को समीप बुलाया। उसने पूछा, "कहाँ घूम रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्लोरा उनका अभिवादन करके मौन हो गई। गौर्ट ने पूछा, ''तुम्हारे पिताजी अब कैसे हैं?''

''लगभग ठीक हैं।''

''जौन की मृत्यु का समाचार और उससे तुम्हारे पिता का अस्वस्थ हो जाने का समाचार सुनकर उनसे मिलने के लिए यहाँ आया हूँ।

मेन्शन में पहुँचकर फ्लोरा उनको सीधे डाइनिंग-हॉल में ले गई। उसकी माँ वहीं खड़ी भोजन की व्यवस्था देख रही थी। मिस्टर स्टैनले आज लन्दन जाने वाला था। इस कारण वह आज भोजन पर विशेष प्रबन्ध करवा रही थी। गौर्ट पिता-पुत्र को आया देख वह हॉल से बाहर आ गई और दोनों का उसने मुस्कराकर स्वागत किया। उसने मिस्टर गौर्ट से पूछा, ''आप घर कब आये हैं?''

''मैं कल ही आया हूँ। हमारे बैटल-शिप की बर्कन हैड के शिपयार्ड में मरम्मत हो रही है। इसमें एक सप्ताह लग जायेगा। अतः अवसर से लाभ उठाने की दृष्टि से मैं घर चला आया हूँ। यहाँ आकर मुझे जॉन के वीरगति प्राप्त करने और उसके आघात से स्टैनले के बीमार होने का समाचार मिला है। मुझे यह सुनकर बहुत दुःख और चिन्ता हुई। मिस्टर स्टैनले अब कैसे हैं?''

''अब कुछ ठीक हैं। आज वे लन्दन जाने की तैयारी कर रहे हैं।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है कि वे स्वस्थ हो गए हैं। रास्ते में मुझे फ्लोरा ने बताया तो था कि वे कुछ ठीक हैं। अब आपके मुख से उसकी पुष्टि सुनकर मुझे बहुत बेहत्तर लगा है।''

वे लोग स्टैनले के कमरे में जा पहुँचे। दोनों बड़े प्रेम से मिले और फिर बैठकर बातें करने लगे। भोजन में अभी आधा घण्टा था। फ्लोरा वस्त्र बदलने के लिए अपने कमरे में चली गई।

स्टैनले बताने लगा, ''अपने पुत्र के वीरगति प्राप्त करने के अनन्तर मुझे सब-कुछ व्यर्थ प्रतीत होने लगा है। मैं आज लन्दन जाने के लिए तैयार हूँ। अपने शोक को भूलने के लिए मैं किसी युद्ध-प्रयास में सक्रिय रूपेण लग जाना चाहता हूँ।''

''तो एक बात करो। मेरे साथ जहाज़ पर चलो। वहाँ अधिक रुचिकर घटनाओं का सामना करना पड़ेगा।''

''बहुत खूब! परन्तु इसके लिए तुम यत्न करो तो हो सकेगा। वैसे मैंने नौ-सेना की शिक्षा कभी ग्रहण नहीं की।''

''मैं तीन दिन में लन्दन जा रहा हूँ। तुम मेरे साथ ही चलो। एडमिरल से मिलकर सब निश्चय कर दूंगा। वहाँ पर कुछ हल्का काम दिलवा दूंगा।''

स्टैनले ने विलियम से पूछा, ''विलियम! तुम आजकल क्या कर रहे हो?''

''मैं भी नौ-सेना में भरती हो रहा हूँ। पांच दिन पूर्व टैस्ट के लिए गया था। उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सफल हो गया हूँ।

"मिस्टर स्टैनले! तुम मेरे साथ ही चलो और मैं समझता हूँ कि मैं तुम्हें शीघ्र ही अपने साथ सागर पर ले चलूंगा।" लार्ड गौर्ट ने कहा।

"तुम्हारी बात है तो ठीक।"

गौर्ट ने फिर उसकी पत्नी से कहा, "मिसेज स्टैनले! तुम और फ्लोरा हमारी अनुपस्थिति में इकट्ठे गौर्ट-मेन्शन में रह जाओ तो अच्छा रहेगा। कभी-कभी यहाँ भी आ जाना, इस प्रकार दिल बहल जायेगा। हम समझ रहे हैं कि यह युद्ध अभी कई वर्षों तक चलेगा।"

"मुझे तो अब इसका शीघ्र अन्त दिखाई दे रहा है। इस समय तक हम बेनगाज़ी पर अधिकार कर चुके हैं और मुझे विश्वास है कि इस वर्ष के अन्त तक इटली परास्त हो जायेगा।"

"तुम युद्ध-विज्ञान के विशेषज्ञ हो। इससे मैं तुम्हें गलत तो नहीं कह सकता। परन्तु मैं इतना जानता हूँ कि मुझे भी भूमध्य सागर में जाने की आज्ञा होगी। कदाचित् रोम पर आक्रमण के लिए मेरा बैटल-शिप जाये।"

"मैं समझता हूँ कि रोम पर आक्रमण करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हम सिसिली में उतरेंगे और फिर स्थल-मार्ग से आगे बढ़ते हुए इटली पर विजय प्राप्त करते जायेंगे।"

"ओह! तो हम बैटल-शिप में 'वाच डौग' की भांति केवल पहरेदारी पर ही रहेंगे?"

"देखें, यह योजना एक हिन्दुस्तानी स्ट्रेटेजियन की है। उसका विचार था कि इससे हम रूस और जर्मनी दोनों को एक ही समय में परास्त कर लेंगे।

"मैं समझता हूँ कि वह सर विन्सैंट चर्चिल का 'अनुयायी' है। वास्तव में बालकान को पराजित कर उसे अपने अधीन रखने की धुन कई सौ वर्षों से अंग्रेज कन्ज़र्वेटिव राजनीतिज्ञों का शौक रहा है।"

"परन्तु वर्तमान परिस्थिति में यही एक कार्यान्वित होने योग्य योजना है।"

"वह हिन्दुस्तानी अधिकारी कौन है?"

"सुना है उसका बेनगाज़ी में देहान्त हो गया है।"

"ओह! तो फिर बात पक्की रही। मैं सात फरवरी तक लन्दन पहुँचूंगा। तुम भी मेरे साथ ही चलो और तुम्हारे लौटने तक के लिए मैं मिसेज और मिस स्टैनले को अपने मेन्शन में आमन्त्रित करता हूँ।"

स्टैनले ने यह सुनकर अपनी पत्नी की ओर देखा तो उसने अपनी पुत्री की ओर देख लिया।

फ्लोरा ने कह दिया, "मैं समझती हूँ कि इससे पापा का स्वास्थ्य ठीक होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम सब लोग हमारे साथ ही चलो। विलियम भी मेरे साथ ही लन्दन जा रहा है। स्त्री-वर्ग वहाँ एक साथ रहेगा और हम लोग पुरुषों के क्रूड खेल, युद्ध में भाग लेने के लिए जायेंगे।"

3

मथुरासिंह के निधन का समाचार तार द्वारा सूरतसिंह को भी मिला। तार में लिखा था—मथुरासिंह ने बेनगाज़ी के युद्ध में बहुत ही मानयुक्त भाग लिया है। उसमें लड़ते हुए उसका पता नहीं चला। जाँच से पता चला था कि एक सुरंग के फटने से उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गये थे। अब पूर्ण जाँच के बाद विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि उसने वीरगति प्राप्त की है। हिन्दुस्तान की सरकार उसके सम्बन्धियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करती है और उसकी सेवाओं के प्रतिकार के विषय में विचार कर रही है।

सूरतसिंह को जब यह समाचार मिला तो वह स्तब्ध रह गया। परमात्मा पर उसका बहुत भरोसा था, परन्तु वह काँपते हाथों से तार को पकड़े हुए किंकर्तव्यविमूढ़-सा हो गया। समाचार सुनाने के लिए वह भगवती के पास गया तो वह उस समय मन्दिर में बैठी चिन्तन कर रही थी। राधा उसके पास ही बैठी थी। यह प्रातःकाल की पूजा का समय था। सूरतसिंह ने ऊपर खड़े होकर आवाज दी, "भगवती..." इससे अधिक वह कुछ कह नहीं सका। उसका गला रूंध गया था।

भगवती ने ठाकुरजी की ओर से मुख उठाकर पति की ओर देखा। वह काँपते हाथों से तार उठाये हुए था और उसकी आँखों से अविरल आँसू बह रहे थे।

भगवती एक क्षण में ही सब समझ गई और उसने हाथ के संकेत से अपने पति को भी भगवान् के चरणों में आ जाने के लिए कहा।

सूरतसिंह भीतर आ, भगवान् की प्रतिमा के सम्मुख साष्टांग प्रणाम करता हुआ भूमि पर लेट गया। कितनी देर तक वह इसी प्रकार लेटा रहा और उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होती रही। फिर वह उठा और अपने आँसू पोंछने लगा।

राधा भी समझ रही थी कि उस तार में क्या दुख भरी सूचना हो सकती है। पीत-मुख परन्तु शुष्क आँखों से वह यह सब देख रही थी। थोड़ी देर में ठाकुर सूरतसिंह पद्मासन लगाकर बैठ गया। भगवती ने गंगाजल ले अपने पति को चरणामृत पान करने के लिए दिया और फिर पति की ओर देखकर पूछा, "मथुरे का कोई अशुभ समाचार है?"

सूरतसिंह ने सिर हिलाकर स्वीकृति-सूचक संकेत किया। इससे उसकी आँखें पुनः डबडबा आयीं। दो क्षण आँखें मूँद भगवती ने फिर कह दिया, "यह समाचार सत्य नहीं हो सकता। किससे पढ़ाया है तार?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राधा के भाई रमणीक से।"

"वह ठीक प्रकार से अर्थ नहीं समझ पाया होगा। आप जाकर बरौड़ा में किसी से पढ़ा लाइये। मेरा मन कहता है कि राधा का सुहाग मिट नहीं सकता।"

सूरतसिंह उठा और अपने कमरे में जा, कपड़े बदल, तार ले, बरौड़ा को चल दिया। सूरतसिंह के जाने के बाद राधा ने भगवती से पूछा, "मौसी! क्या मतलब है इसका?"

"बेटा! लाहौर से तार आया है, परन्तु कुछ भ्रम हो गया है।"

"तो यह सत्य नहीं है?"

"ईश्वर इतना अन्याय नहीं कर सकता।"

तीन घन्टे बाद जब सूरतसिंह लौटा तो उसकी सूरत में कोई अन्तर नहीं था, बल्कि उसकी थकान और बढ़ गई थी। निराशा में बैठता हुआ वह कहने लगा, "भगवती! यह समाचार सत्य है।"

"क्या सत्य है?"

"हम अब सन्तान विहीन हो गये हैं।"

भगवती अन्यमनस्क-भाव से मुख देखती रही। फिर कुछ विचार कर कहने लगी—"परमात्मा! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो।"

रमणीक चार बजे स्कूल से लौटा तो उसने अपने माता-पिता को सूरतसिंह के पास मथुरासिंह की मृत्यु के समाचार का तार आने की बात बताई।

यह समाचार सुनकर उसके माता-पिता सूरतसिंह के घर को चल दिये। रमणीक घर पर ही रहा। वे लोग सूरतसिंह के घर पहुँचे तो वे दोनों पति-पत्नी अभी भी ठाकुर की प्रतिमा के सम्मुख बैठे हुए थे। राधा उसी प्रकार भगवती के पीछे बैठी हुई थी। लाला देवीदयाल और उसकी पत्नी आए तो तीनों को शान्त-चित्त बैठे देख चकित रह गए। वे भी उनके समीप ही जाकर बैठ गए। देवीदयाल ने पूछा, "भापा, कोई तार आया है!"

"हाँ, लाला! बहुत बुरा समाचार है।"

"तो रमणीक का कहना सत्य है?"

"हाँ, तार उसने ही पढ़ा था।"

"दिखाओ तो।"

तार भी वहीं ठाकुरजी के चरणों में रखा था। सूरतसिंह ने उठाकर देवीदयाल को दे दिया। वह उसे खोलकर पढ़ने लगा। वह थोड़ी-सी अंग्रेजी जानता था। उसने भी जब देखा कि उसमें 'हीरोज डैथ' लिखा है तो तार पुनः ठाकुरजी के चरणों में डाल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस-पन्द्रह मिनट तक वे लोग चुपचाप वहाँ बैठे रहे। फिर देवीदयाल ने राधा से कहा, "राधा! चलो घर चलें।"

राधा ने भगवती के मुख की ओर देखा तो वह बोली, "हाँ बेटी! जाओ। तुमने प्रातःकाल से कुछ खाया नहीं। घर जा स्नान कर, कुछ खा-पी लो।"

देवीदयाल ने कहा, "भापा! तुम भी तो उठो। भाग्य के आगे किसी का बस नहीं चलता। अब तो अपना जीवन संतोष और धैर्य से ही व्यतीत किया जा सकता है।"

राधा अपने माता-पिता के साथ घर को चली गई। राधा ने स्नान किया और फिर भोजन किया। फिर वह अपनी खाट पर जाकर लेट गई।

अगले दिन प्रातःकाल उठकर राधा भगवती के घर जाने लगी तो उसकी माँ ने पूछा, "कहाँ जा रही हो?"

"मौसी के घर पर।"

"अब क्या रखा है वहाँ?"

"जो पहले रखा था।"

"पहले तो उसका लड़का था। वह अब रहा नहीं। अब तुमको वह सब भूल जाना चाहिए।"

"माँ! उनके लिए तो जाती नहीं थी। वे तो तब भी घर पर नहीं थे। मैं तो ठाकुरजी की कथा सुनने और उनकी पूजा करने के लिए जाया करती थी।"

"मतलब तो वही था। तुम्हारा विवाह मथुरासिंह से होने वाला था। वह अब हो नहीं सकेगा। अब तुम्हारे विवाह का कहीं अन्यत्र प्रबन्ध करना होगा।"

"वह तो देखा जायेगा। अभी तो मैं पूजा करने के लिए जा रही हूँ।"

"नहीं, तुम्हारे पिताजी मना करते हैं।"

"क्यों, वे मना क्यों करते हैं?"

"जहाँ तुम्हारा विवाह होगा, वे तुम्हारा इस प्रकार उनके घर जाना पसन्द नहीं करेंगे।"

"माँ! आज तो मैं जाती हूँ। इस 'दुःख के समय' मौसी को छोड़ देना मैं उचित नहीं समझती।"

इतना कह वह घर से निकल गई। गाँव की अन्य स्त्रियाँ भी शोक प्रकट करने के लिए आई हुई थीं। राधा आगे जाकर भगवती के पास बैठ गई। भगवती ने उससे कहा, "राधा! तुम भीतर मन्दिर में जाकर बैठ जाओ।"

वह भीतर चली गई। वहाँ बैठ उसने रामायण पढ़नी आरम्भ कर दी। बाहर स्त्रियाँ आती थीं, शोक प्रकट कर चली जाती थीं। घर की बैठक में ठाकुर सूरतसिंह बैठा था। पुरुष-वर्ग उसके समीप शोक व्यक्त करने के लिए आता था। लाला देवीदयाल भी प्रातःकाल आया था और कुछ देर वहाँ बैठकर फिर अपनी दुकान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला गया था। किसी ने सूरतसिंह से कहा, "यह लाला तो कहता था कि महात्मा ने ऐसी विधि निकाली है कि जिससे न युद्ध होंगे और न उसके परिणाम स्वरूप हत्यायें होंगी। उन्होंने युद्ध का विकल्प सत्याग्रह निकाला है।"

इस दुःख के समय भी सूरतसिंह के मुख पर मुस्कान दौड़ गई। बुद्धि से विचार करने पर किसी को भी देवीदयाल की बात समझ में नहीं आती थी। राजा और प्रजा के झगड़ों की बात एक है, परन्तु वहाँ बैठे देहातियों की सहज बुद्धि में यह बात नहीं आती थी कि किसी दुष्ट प्रकृति के शत्रु से सत्याग्रह द्वारा किस प्रकार दुष्टता छुड़ाई जा सकती है।

राधा के आने के कुछ देर बाद मक्खनी आई और भगवती को भीतर ले जाकर कहने लगी, "बहिन! राधा को समझा दो कि वह अब यहाँ न आया करे।"

"वह अभी बच्ची है। उससे नाराज नहीं होना चहिए। उसके सुख स्वप्न चूर-चूर हो गए हैं। प्रेम से समझाओगी तो समझ जायेगी। उसके विवाह के लिए कोई पढ़ा-लिखा युवक ढूंढो। मैं उसको समझा दूंगी।"

उसी रात देवीदयाल से बातचीत हुई। रात के भोजन के समय उस ने राधा को समझाना आरम्भ कर दिया, "राधा! यह सम्बन्ध ईश्वर को स्वीकार नहीं था, इसलिए ही यह दुर्घटना हो गई है।"

"यह तो मैं समझ रही हूँ, परन्तु मैं अभी विवाह नहीं करूंगी।"

"क्यों?"

"मैं अभी कुछ दिनों तक प्रतीक्षा करना चाहती हूँ।"

"किसकी प्रतीक्षा करना चाहती हो?"

"मौसी कहती है कि उनका मन कहता है कि वे अभी जीवित हैं।"

"तुम कुछ मूर्ख होती जाती हो।"

"नहीं पिताजी! प्रतीक्षा करने में कोई हानि नहीं है।"

"किन्तु तुम्हारे वहाँ जाने में तो हानि है।"

"क्या हानि है?"

"यही कि इससे तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करने में कठिनाई होगी।"

"माँ!" उसने अपनी माँ की ओर देखकर कहा, "मैं युद्ध समाप्त होने से पहले विवाह नहीं करूंगी। मेरा मन भी कहता है कि वे लौटकर आ जायेंगे।"

"अच्छा, एक बात का वचन दो तो मैं अभी तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध नहीं करूंगा।"

"कैसा वचन?"

"यही कि तुम उनके घर पर नहीं जाया करोगी।"

"एकदम तो नहीं। हाँ, धीरे-धीरे जाना बन्द कर दूंगी। परन्तु यदि युद्ध समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने से पूर्व आपने विवाह करने का यत्न किया तो मैं घर से भाग जाऊंगी।"

"कहाँ भाग जाओगी?"

"इस विषय में अभी तक कोई विचार नहीं किया किन्तु विचार करने में देर भी कितनी लगती है?"

बात को टालने के लिए मक्खनी ने कह दिया, "हाँ, तुम्हारी इच्छा के विपरीत तुम्हारा विवाह हम नहीं करेंगे।"

"क्या मुसीबत है? सूरतसिंह और उसकी पत्नी ने तो लड़की का मस्तिष्क ही खराब कर दिया है।"

"तो फिर क्या किया जाए? कौन जानता था कि ऐसी दुर्घटना हो जायेगी?"

"जानता क्यों नहीं था? मैं जानता था कि आग में हाथ डालने से हाथ जलेगा।"

"परन्तु युद्ध में जाने वाले सभी तो नहीं मर रहे। आग में तो सबके हाथ जलने चाहिएँ।"

"इस बार सबके हाथ जलेंगे। मथुरासिंह तो मरने वाला ही था। मुझे तो दिल्ली में ही ऐसा लगने लग गया था कि उसके मुख पर मरने के लक्षण विद्यमान थे।

"देखो मक्खनी! लाखों भर्ती हो रहे हैं, वे सब मरेंगे। वे बच नहीं सकते।"

"इस पर भी लोग भर्ती हो रहे हैं। सब तो मरने की आशा से नहीं हो रहे।"

इस व्यर्थ की बात को समाप्त करते हुए राधा ने कहा, "मैं धीरे- धीरे वहाँ जाना बन्द कर दूंगी, परन्तु इस शर्त पर कि आप मेरा विवाह युद्ध समाप्त होने से पूर्व नहीं करेंगे।"

"तुमको उसके, परलोक से तुम्हारे लिए वापस आने की बहुत आशा है?"

"मुझको विश्वास है।"

"तुम पागल हो रही हो।"

"नहीं पिताजी! मैं सत्य कहती हूँ। देख लीजिएगा।"

देवीदयाल चुप रहा। उसका विचार था कि धीरे-धीरे वह यदि भगवती से मेल-जोल बन्द कर देगी तो मथुरासिंह को भूल पायेगी और फिर उपयुक्त वर मिलने पर उसका विवाह कर दिया जायेगा।

राधा उस दिन भी भगवती से मिलने के लिए गई। परन्तु भगवती ने उसे समझा-बुझाकर शीघ्र ही घर वापस भेज दिया। उसने कहा, "छोटे बच्चे किसी का शोक मनाने नहीं जाया करते।"

"परन्तु मौसी! वे परलोक सिधार गये हैं क्या?"

भगवती राधा का मुख देखती रह गई। इस पर राधा ने कहा, "मैं तो शोक प्रकट करने नहीं आती। मैं तो सदा की भांति ठाकुरजी की उपासना करने के लिए आती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर दिन-भर यहाँ बैठी नहीं रहा करो। राधा! जिस बात का मैं प्रमाण नहीं दे सकती, उसको जन-साधारण में कह भी नहीं सकती। वैसे मुझे तो यही प्रतीत हो रहा है कि उसके मरने के समाचार में कहीं कोई भूल है।"

"तो फिर मैं क्या करूँ?"

"अभी कुछ दिन प्रतीक्षा करो। मैं तुम्हारी माँ से भी बात करूंगी।"

4

लार्ड गौर्ट का बैटल-शिप मरम्मत के पश्चात भूध्यसागर की ओर भेज दिया गया। उसी लड़ाकू जहाज पर मिस्टर स्टैनले को किसी साधारण काम पर नियुक्त कर दिया गया।

फरवरी 1941 की बात है कि गौर्ट का बैटल-शिप एच. एम. एस. इलस्ट्रियस भूमध्यसागर में दनदनाता हुआ घूम रहा था। इस जहाज ने जेनेवा पर गोलाबारी की तो उसका समाचार प्रकाशित हो गया। हिटलर और उसके साथी मुसोलिनी तथा जर्मन-अधिकारी उस जहाज के डूब जाने की खुशियाँ मना चुके थे। जर्मन 'लुटवाफ' ने यह सूचना भेजी थी कि इंग्लैंड का सबसे बड़ा बैटल-शिप एच. एम. एस. इलस्ट्रियस डूबो दिया गया है। रोम पर गोलाबारी करते समय इस जहाज का नाम पढ़ा गया तो सब चकित रह गए। कुछ ने तो यह भी कहा कि सम्भवतया पुराना नाम ही किसी नये जहाज पर लिख दिया होगा।

इस पर भी जेनेवा पर की गई गोलाबारी मुसोलिनी की प्रतिष्ठा को धक्का लगाने वाली सिद्ध हुई। सिरेनैका को मित्र-राष्ट्रों की मध्य-पूर्वी सेना ने अपने अधीन कर लिया। वहाँ पर शत्रु-सेना जो मार्शल ग्रिजानी के अधीन लड़ रही थी, उसका सफ़ाया कर दिया गया।

जेनेवा से लार्ड गौर्ट को आज्ञा हुई कि वह सिकन्दरिया को चला जाय। बैटल-शिप एच. एम. एस. इलस्ट्रियस सिसिली के दक्षिण में मालटा को जा रहा था कि जहाज के सागर-निरीक्षक ने टॉवर पर से रिपोर्ट की कि लगभग पांच मील के अन्तर पर एक लाइफ बोट में कुछ लोग दिखाई दे रहे हैं।

कप्तान ने आज्ञा दे दी—जहाज उधर ले चलो। बीस मिनट के बाद यह सूचना मिली कि लाइफ-बोट पर पाँच व्यक्ति हैं, वे सब-के-सब लेटे हुए हैं। सम्भवतः मर गए हों।

इस पर आज्ञा हुई कि उस नौका को पकड़ लिया जाय। जल्द ही बैटल-शिप उस किश्ती के पास जा पहुँचा। रस्सों की सीढ़ियाँ नीचे डाली गईं। नाविक उसके द्वारा उतरकर किश्ती को खींचकर समीप ले आये। उसमें पाँच व्यक्ति ही थे। उनमें चार तो इटैलियन सैनिक-अधिकारी थे और एक अंग्रेज-सेना का हिन्दुस्तानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकारी था। पाँचों अचेत पड़े थे। उनको रस्सों से बांधकर ऊपर खींच लिया गया और उस किश्ती को भी बैटल-शिप पर चढ़ा दिया गया।

डॉक्टर उन अचेत व्यक्तियों की चिकित्सा करने लगा। डॉक्टर का कहना था कि पीने का जल न मिलने के कारण वे लोग अचेत हो गए हैं। उनके पेट में जल पहुँचाया गया। सबसे पहले हिन्दुस्तानी आफिसर को चेतना हुई। चार इटेलियन में से केवल दो को ही सचेत किया जा सका। अन्य दोनों मर गए।

जिस समय वह हिन्दुस्तानी आफिसर अचेत पड़ा था तो उस समय मिस्टर स्टैनले विस्मित दृष्टि से उसको देख रहा था। उसने पहचान लिया, वह मथुरासिंह था। पहले तो स्टैनले सोचता था कि यह भ्रम है। मथुरासिंह बहुत दुर्बल हो गया था। भूख और प्यास के कारण उसका मस्तिष्क भी काम नहीं कर रहा था। सचेत होने पर भी वह अपना परिचय भली-भांति नहीं दे सका।

जल के बाद उसके पेट में हॉरलिक्स पहुँचाया गया और उसको जहाज के अस्पताल में आराम से लेटे रहने के लिए कहा गया। स्टैनले को जब विश्वास हो गया कि वह मथुरासिंह ही है, तो वह गोर्ट को एक ओर ले जाकर बताने लगा, "मित्र! यही वह हिन्दुस्तानी युद्ध-नीति विशेषज्ञ आफिसर है, जिसके विषय में मैंने तुम्हें बताया था। अब वह बच रहा प्रतीत होता है।"

"तब तो हमने अपनी सरकार का बहुत बड़ा हित किया है।"

"परन्तु एक बात मैं बता दूँ। यह अफसर कुछ दिन के लिए मेरा अतिथि बनकर हमारे घर पर रहा था और तब से ही फ्लोरा इसके प्रेमपाश में फँस गयी थी। यही कारण था कि उसने विलियम से विवाह को अस्वीकार कर दिया था। यदि इसे जीवित घोषित किया गया तो निश्चित ही फ्लोरा पुनः विलियम का विचार छोड़ देगी।"

"तो ऐसा करते हैं कि विलियम को लन्दन में सन्देश भेज देते हैं कि वह तुरन्त फ्लोरा से विवाह कर, उसे प्रसन्न रखने का यत्न करे। विवाह के बाद ही हम उसके जीवित होने की सूचना देंगे।

"न जाने विवाह में कितनी देर लगे। क्या तब तक इसको छिपा कर रख सकेंगे?"

"यह तुम मुझ पर छोड़ दो।"

"ठीक है। मेरी तो यही इच्छा है कि स्टैनले-रक्त में काले हिन्दुस्तानी का रक्त न मिल सके।

इसके बाद लार्ड गौर्ट और स्टैनले दोनों अस्पताल की ओर गए। मथुरासिंह के पेट में एक सप्ताह से भी अधिक काल से जल तथा अन्न नहीं गया था। आज हॉरलिक्स पीने से उसे तृप्ति अनुभव हुई और वह सुख की नींद सो गया। डॉक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने जहाज के कप्तान को बताया कि पाँच में से दो तो पेट में जल के पहुँचते ही वमन कर मर गये। दो जीवित तो हैं पर अभी सचेत नहीं हो पाये। यह व्यक्ति सबसे पहले सचेत हुआ है। सचेत होते ही उसने कहा है कि वह युद्ध-बन्दी है। इसके बाद भी वह कुछ कहता रहा जो हमारी समझ में नहीं आया। वह अपनी भाषा में कुछ बोल रहा था। जब मैंने उसको आराम करने के लिए कहा तो वह सो गया है।

"अच्छा देखो", कप्तान ने कहा, "जो कुछ यह कहे उसे लिखते जाना। किन्तु किसी को इसके बारे में कुछ बताना नहीं। इसका नाम-धाम भी किसी को नहीं बताना।"

डॉक्टर को निर्देश कर गौर्ट ने किश्ती पाने की सूचना तो दे दी, पर पाये गए सैनिकों के विषय में केवल यह सूचना भेजी कि दो मर गए हैं और तीन जीवित हैं, परन्तु वे अभी अचेत हैं।

इसके साथ ही उसने एक पत्र अपने पुत्र और एक अपनी पत्नी के नाम भेज दिया। उन पत्रों में उसने लिखा कि शीघ्रातिशीघ्र विलियम का विवाह फ्लोरा के साथ हो जाना चाहिए।

रोम पर बमबाजी और किश्ती की घटना तथा उसके निजी पत्र मालटा से इंगलैंड भेज दिए गए। एक दिन कोयला इत्यादि भरकर उनका जहाज सिकन्दरिया के लिए चल पड़ा।

सिकन्दरिया पहुँचने से पहले ही मथुरासिंह होश में आ गया था। अब स्टैनले उसके सम्मुख नहीं जाता था। उसको उन योरोपियन कैदियों के साथ रखा गया था जो बच गए थे। वे सभी बहुत दुर्बल हो गये थे। उन लोगों को डैक पर आने की आज्ञा नहीं थी। लार्ड गौर्ट को मथुरासिंह ने अपनी कहानी इस प्रकार बताई—"मेरा नाम ब्रिगेडियर जनरल मथुरासिंह है। मैं बेनगाजी के युद्ध में लड़ता-लड़ता सबसे आगे निकल गया था। जब इटैलियनों को भगा दिया गया अथवा बन्दी बना लिया गया, तो मैं पीछे हटने के लिए लौट रहा था कि उस समय नगर की एक गली में से कुछ स्त्रियों की चीख-पुकार मुझे सुनाई दी। मैं अपने साथ कुछ हिन्दुस्तानी सैनिकों को लेकर उस मकान की ओर गया, जिससे वह पुकार सुनाई दे रही थी। हमारे वहाँ पहुँचने पर द्वार के समीप ही लगी सुरंग फट पड़ी और मकान का अगला भाग गिर गया। उस स्थान पर गए हुए सैनिक मलबे में दब गए। पीछे खड़े, मैं और एक अन्य सैनिक बच गए थे। हम उस मकान में औरतों को बचाने के लिए घुस गए।

"मकान गिरने से जो धूल उड़ी उससे कुछ दिखाई नहीं देता था। इस समय मकान के भीतर गोली चलने का शब्द हुआ और एक स्त्री गिरकर मेरे सामने आ गई। हम दोनों ने भी बिना किसी लक्ष्य किये अपने पिस्तौल चला दिये। इतने में किसी ने मुझे पीछे से पकड़कर रस्सों से बांध दिया। मुझे वहाँ से उठाकर उसी मकान के पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी एक जीप में डालकर वे किसी ओर ले गये। इस प्रकार दो घण्टे की भाग-दौड़ के बाद हम 'जैमिनीस' में पहुँचे।

"मुझे पूछा गया था कि मैं कैदी होना पसंद करूंगा या मरना। इसके बाद मेरे सीने पर पिस्तौल तान दी गई। मैंने कहा कि मैं युद्ध में पकड़ा गया हूँ, इसलिए नियमानुसार युद्ध-बन्दी हूँ।

"इस पर मेरे सब हथियार और जेब की अन्य सब सामग्री भी मुझसे छीन ली गई। फिर मुझे एक किश्ती में डाल दूर खड़े युद्ध-पोत में ले जाया गया। हमारा जहाज जेनेवा की ओर ले जाया जा रहा था कि एक अंग्रेज पन्डुब्बी के 'टारपीडो' का निशाना बन गया। जहाज तो डूब गया परन्तु हम किश्तियों में सवार हो गए। दस किश्तियाँ थी परन्तु हवा तथा समुद्र की लहरों ने सबको छिन्न-भिन्न कर दिया। हमको इस किश्ती में तैरते हुए बीस दिन हो गए थे। दो सप्ताह बाद हमारा राशन-पानी समाप्त हो गया और तीन दिन भूखे रहने के बाद हम लोग अचेत हो गए। हम नहीं जानते कि फिर हमको कब बचाया गया।"

यह कथा सुन लार्ड गौर्ट ने कहा, "मैं तुम्हारी कहानी लिखकर लन्दन भेज दूंगा। जब तक वहाँ से कोई आज्ञा नहीं आ जाती, तब तक तुम स्वयं को हमारा कैदी समझो। तुम्हें अपने विषय में किसी को कुछ नहीं बताना होगा। तुम ऊपर डैक पर नहीं जा सकोगे। तुमको इसी कमरे में रखा जायेगा।"

मथुरासिंह को पूर्ण आशा थी कि लन्दन में सूचना पहुँचने पर उसे तुरन्त बुला लिया जायेगा।

सिकन्दरिया से लन्दन रिपोर्ट भेजी गई। इस पर भी किसी प्रकार से मथुरासिंह का नाम-धाम नहीं लिखा गया। केवल यह लिखा गया कि हिन्दुस्तानी अधिकारी इटेलियनों का कैदी प्रतीत होता है। वह किसी प्रकार संगत अथवा युक्ति-युक्त बात नहीं करता।

सिकन्दरिया में एक सप्ताह रहने के बाद एच. एम. एस. इलस्ट्रियस मालटा को वापिस लौट पड़ा। यहाँ से वह जिब्राल्टर पहुँचा। वहाँ पर जहाज के कप्तान को लन्दन से एक डिस्पेच मिला। उसमें लिखा था–इटेलियन और हिन्दुस्तानी कैदियों को लन्दन भेजने का प्रबन्ध कर दिया जाय।

यहीं पर गौर्ट को उसकी पत्नी और पुत्र के पत्र भी मिले। उसमें लिखा था कि बिना किसी आडम्बर के विलियम और फ्लोरा ने परस्पर विवाह कर लिया है। यद्यपि विलियम नेवी में है परन्तु, उसकी नियुक्ति अभी लन्दन हैड-क्वाटर्स में ही हुई है। फ्लोरा उसके साथ है।

स्टैनले को जब यह समाचार मिला तो उसे शान्ति मिली। अब वह स्वयं को मथुरासिंह से छिपा कर रखने में कोई लाभ नहीं समझता था। जिस समय मथुरासिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसके साथियों को जिब्राल्टर के बन्दरगाह पर उतारा जा रहा था उस समय स्टैनले और मथुरासिंह में परस्पर भेंट हो गई। मथुरासिंह ने उसे देख औपचारिक विस्मय व्यक्त किया। स्टैनले ने आगे बढ़कर मथुरासिंह से हाथ मिलाया और प्रसन्नता प्रकट करता हुआ कहने लगा, "तुम जीवित हो, यह बहुत ही विचित्र घटना है!"

"परन्तु मिस्टर स्टैनले! आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

"मैं आज कल इसी एच. एम. एस. इलस्ट्रियस में कार्य कर रहा हूँ।"

"परन्तु मैं तो इस जहाज में पिछले एक मास से बन्दी हूँ?"

"ओह, तो तुम हो वह हिन्दुस्तानी बन्दी जो किसी इटेलियन नौका में समुद्र में तैरते हुए पाये गए थे?"

"तो आपको विदित नहीं था क्या?"

"जहाज के कप्तान ने तो यह समझा था कि तुम इटेलियन सरकार की नौकरी में हो और इस जहाज के रहस्य को किसी प्रकार शत्रु के पास भेज न सको इस कारण तुम्हारे विषय में सब-कुछ गुप्त रखा गया है।"

"आओ, मैं तुम्हारा इस कप्तान से परिचय करा देता हूँ।"

"एक परिचय तो मेरा उससे है।"

"क्या?"

"यही कि मैं एक काली जाति का व्यक्ति झूठ-मूठ का ब्रिगेडियर बनकर अंग्रेजी सेना पर जासूसी कर रहा हूँ।"

"युद्ध-काल में ऐसा सन्देह कर लेना स्वाभाविक है। आओ, मै। तुम्हारा वास्तविक परिचय उससे करा देता हूँ।"

नौ-सैनिकों की देख-रेख में मथुरासिंह को जहाज से उतारा जा रहा था। स्टैनले के कहने पर उसे बन्दी के रूप में ही कप्तान के सम्मुख ला खड़ा कर दिया गया। जब लार्ड गौर्ट ने स्टैनले की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो उसने कहा, "सर कैप्टन! यह बन्दी मेरा परिचित, हमारी अंग्रेजी सेना का एक उच्चाधिकारी है। इनका नाम है मिस्टर एम. सिंह। आपका इन पर शत्रु की ओर से जासूस होने का सन्देह निराधार है। ये वही सिंह हैं जिनकी योजनानुसार अफ्रीका पर आक्रमण चालू है।"

"ओह! तो आप यह बात विश्वास के साथ कह सकते हैं?"

"हाँ, जबलपुर में ये मेरे शिष्य रहे हैं। बेनगाजी के आक्रमण के बाद लन्दन में इनके विषय में यह सूचना थी कि ये युद्ध में मारे गए हैं। इन्हें जीवित देखकर आपको प्रसन्नता होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि लन्दन में भी इनके जीवित होने की सूचना से प्रसन्नता की लहर दौड़ जायेगी।"

लार्ड गौर्ट ने उस डिस्पैच को पुनः खोल लिया, जिसे वह इटेलियन बन्दियों के साथ भेज रहा था। उसने उसमें एक पत्र के पार्श्व में लिख दिया—जिस समय मिस्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह को जिबराल्टर के अधिकारियों के हाथों में सौंपा जा रहा था, ठीक उस समय मिस्टर जे. डब्ल्यू. स्टैनले ने उनको पहचान लिया। अब मिस्टर सिंह के विषय में जानकारी प्राप्त हो जाने के बाद मैं उनको बन्दी बनाये रखने की धृष्टता नहीं कर सकता। अतः मैं यह डिस्पैच मिस्टर सिंह के हाथ ही भेज रहा हूँ।''

डिस्पैच बन्द कर तथा एक अन्य खुला पत्र पार-पत्र के रूप में मिस्टर सिंह को दे दिया गया और लार्ड गौर्ट ने अपनी कुर्सी से उठकर उससे हाथ मिलाया और फिर उसको विदा कर दिया। नौ-सैनिकों को समझा दिया गया कि मिस्टर सिंह ही उन कैदियों को लेकर लन्दन जा रहे हैं।

5

मथुरासिंह अपने साथ जहाज पर किये गए व्यवहार से अन्यन्त ग्लानि अनुभव कर रहा था। किसी-न-किसी प्रकार यह बात उन सैनिकों को भी पता चल गई थी कि वह हिन्दुस्तानी है और कदाचित् इटेलियन सरकार से जहाज पर जासूसी करने के लिए वह इस रूप में भेजा गया है। अतः जहाज पर एक महीने-भर के निवास में उससे घोर अपराधी का-सा व्यवहार किया गया। इटेलियन जहाज पर जो व्यवहार उसके साथ किया गया था इंग्लैंड के जहाज पर उससे भी बुरा व्यवहार किया गया था। उससे अच्छा खाना-पहरना तो उन इटेलियन कैदी सैनिकों को मिलता था, जिनका वह कैदी रहा था।

अब स्टैनले के पहचानने पर जब उसको एक प्रतिष्ठित उच्चाधिकारी घोषित किया गया तो सब उसका मान करने लगे। यह अंग्रेजी नियन्त्रण का चमत्कार था। जो जहाजी अधिकारी उसको देख पहले उसको कच्चा चबा जाने का भाव रखते थे, वे ही अब उसको सैनिक सलामी देने लगे।

जहाज से उतारकर उसे सीधा जिबराल्टर के गवर्नर के पास ले जाया गया और जब उसने लार्ड गौर्ट द्वारा दिया गया खुला पत्र उसको दिखाया तो उसने उठकर मिस्टर सिंह से हाथ मिलाया। उसको पास बैठाकर उसका स्वास्थ्य-समाचार पूछा जाने लगा। फिर गवर्नर ने बताया, ''मुझे आज्ञा हुई है कि आपको तथा आपके साथ उन बन्दियों को शीघ्रातिशीघ्र प्रथम हवाई जहाज से लन्दन के लिए रवाना कर दिया जाय। कदाचित् लन्दन में अभी आपका वास्तविक परिचय नहीं भेजा गया है। खैर, आधे घण्टे में एक प्लेन यहाँ से लन्दन के लिए जाने वाला है मैं आप लोगों के लिए उसमें प्रबन्ध करवा देता हूँ। तब तक आप लोग चाय-पानी लीजिए।''

इसके बाद आँधी की गति के समान उनके भेजने का प्रबन्ध होने लगा। इटेलियन बन्दी भी मथुरासिंह की बदलती स्थिति को देखकर चकित थे।

मथुरासिंह ने चाय पी और फिर वे यथासमय हवाई अड्डे पर जा पहुँचे। वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उसी दिन सायंकाल वे लन्दन पहुँच गये। बन्दियों को मिस्टर सिंह ने बन्दी-कैम्प में पहुँचाया और स्वयं लार्ड इज़्मे के सामने जाकर उपस्थित हो गया। उसे देखकर लार्ड इज़्मे विस्मय करने लगा। सिंह ने लार्ड गौर्ट का डिस्पैच और अपना परिचय-पत्र दिखाया तो उसे पढ़कर लार्ड इज़्में ने मथुरासिंह के जीवित होने पर उसे बधाई दी और उठकर हाथ मिलाया।

मथुरासिंह ने सबसे पहले अपने पिता के पास एक केवल जमादारपुर और एक फ्लोरा को उसके बोनैस के पते पर दे दिया। वह पुनः मिलिटरी होस्टल में ठहरा था।

मथुरासिंह आशा करता था कि अगले दिन फ्लोरा उससे मिलने के लिए आयेगी। परन्तु जब तीन दिन तक भी वह नहीं आई तो उसको विस्मय होने लगा। हिन्दुस्तान से उसके पिता का केबल आ गया था। उन्होंने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए ईश्वर को धन्यवाद किया था।

तीन दिन आराम कर मथुरासिंह चीफ ऑफ दि स्टॉफ के पास जा अपना भावी कार्यक्रम पूछने लगा। उसको बताया गया कि उसको पन्द्रह दिन का अवकाश दिया जा रहा है, जिससे वह किसी एकान्त स्थान पर जाकर विश्राम कर सके।

मथुरासिंह ने सैल्यूट किया और उसके कमरे से निकल आया। द्वार पर ही उसको लार्ड इज़्में मिल गए। उन्होंने बताया कि आज रात के भोजन पर प्रधान मंत्री ने उसको आमंत्रित किया है। लिखित निमंत्रण पत्र होस्टल में भेज दिया गया है।

मथुरासिंह ने कहा, ''मैं होस्टल में जा रहा हूँ। निमंत्रण मिलने पर अवश्य उपस्थित होऊंगा।''

''विश्राम के लिए कहाँ जाने का विचार कर रहे है?''

''मैं चाहता था कि बोनैस चला जाऊँ। परन्तु वहाँ से मेरे तार का कोई उत्तर नहीं आया।''

''वहाँ किसको तार दिया था?''

''मिस स्टैनले को।''

''वह तो लन्दन में है।''

''अच्छा? कहाँ है वह?''

''मिस्टर विलियम गौर्ट से उसका विवाह हो गया है। वह आजकल एडमिलिटरी में कार्य कर रहा है।''

मथुरासिंह भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। इज़्मे ने उसको चुप देख पूछ लिया, ''क्यों, क्या बात है? यदि तुम पसन्द करो तो मैं तुमको अपने कन्ट्री हाउस में रहने का निमन्त्रण दे सकता हूँ। केवल एक बात है। वहाँ नौकर ही हैं, मेरी पत्नी मेरे साथ ही रहती है।''

''मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ। वहाँ कम-से-कम एकान्त और आराम तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलेगा ही।"

"बहुत अच्छी तरह से। इसके अतिरिक्त वहाँ खरगोशों के शिकार की सुविधा भी मिल जायेगी।"

"इटेलियनों के शिकार के बाद इन खरगोशों के शिकार में क्या आनन्द आयेगा?" मुस्कराकर मथुरासिंह ने कहा।

"इसके अतिरिक्त वहाँ और करने के लिए कुछ नहीं होगा।"

"आपके यहाँ कोई पुस्तकालय नहीं है क्या?"

"हाँ, बहुत अच्छा पुस्तकालय है।"

"यदि उसके प्रयोग की मुझे स्वीकृति मिल जाए तो काम बन जायेगा।"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं? रात को भोजन के समय मैं आपको अपने बटलर के नाम पत्र दे दूंगा।"

"धन्यवाद।"

अब मथुरासिंह को बोनैस से तार का उत्तर न आने की बात समझ में आ गई। वह विचार करता था कि कदाचित् श्रीमती स्टैनले भी अपनी पुत्री के साथ ही होंगी। वह मन में विचार करता था कि कितना आग्रह था फ्लोरा का विवाह के लिए! दो मास में ही वह आग्रह विलीन हो गया। यह भी कदाचित् अंग्रेज़ों के स्वभाव में है। वह एच. एम. एस. इलस्ट्रियस में देख चुका था कि किस प्रकार उसके प्रति घृणा का व्यवहार प्रतिष्ठा में परिणत हो गया था।

इस पर भी वह फ्लोरा को दोषी नहीं समझता था। उसको भी विश्वास हो गया होगा कि वह अब इस लोक में नहीं है। आखिर वह करती भी क्या? उसने पुनः विलियम पर दृष्टि डाली होगी और विलियम ने ही उसको पुनः खो जाने की आशंका पर विवाह के लिए जल्दी मचा दी होगी।

इस पर उसको राधा का विचार आ गया। यह मन में विचार करता था कि उस बेचारी पर तो भारी मुसीबत आ पड़ी होगी। उसके माता-पिता ने भी उसको कहीं अन्यत्र विवाह करने का प्रस्ताव किया होगा। क्या वह भी मान गई होगी? अथवा उसके जीवित होने का समाचार समय पर पहुँच गया होगा। क्या राधा भी किसी के घर की शोभा बन चुकी होगी?

इस प्रकार के विचारों को अपने मन से निकाल वह होस्टल के लिए चल पड़ा। वहाँ जाकर उसको पता चला कि रिसेप्शन-हॉल में मिसेज़ स्टैनले उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं।

अपने कमरे में जाता-जाता वह घूमकर रिसेप्शन-हॉल में चला आया। मिसेज़ स्टैनले उसे देखकर उठ खड़ी हुई और उसके जीवित होने पर उसे बधाई देने लगी। उसने उनसे हाथ मिलाया। मथुरासिंह ने जब उनका धन्यवाद किया तो फिर वह पूछने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी, ''कहाँ है तुम्हारा कमरा?''

''सैकेण्ड फ्लोर पर कमरा नं. 220 है।''

''तो चलो, वहाँ बैठकर बातें करेंगे।''

कमरे में पहुँच श्रीमती स्टैनले को बैठाकर उसने बताया, ''यहाँ पहुँचते ही मैंने बोनैस में अपने लन्दन पहुँचने की सूचना तार द्वारा भेजी थी।''

''वहाँ आजकल कोई नहीं है। डाकखाने में हमारा पता था, इसलिए डाक द्वारा उन्होंने वह तार लन्दन भेज दिया है। कल मुझे तार मिला तो मैं आज तुम्हें बधाई देने के लिए चली आई।''

''फ्लोरा कैसी है?''

''बहुत मज़े में है।''

''और उसके पति मिस्टर विलियम गौर्ट?''

''तो तुमको पता चल गया है?''

''हाँ, मुझे आज ही पता चला है कि उन दोनों का विवाह हो गया है।''

''एक बात का तुम्हें कदाचित् ज्ञान न हो। हमारे सुपुत्र जॉन का देहान्त हो गया है। हमारा परिवार अब फ्लोरा के द्वारा ही चल सकता था, इस कारण उसका विवाह करना आवश्यक हो गया था।''

''हाँ, इस परिस्थिति में फ्लोरा को विवाह कर ही लेना चाहिए था। यद्यपि मुझे कुछ भला नहीं लगा। पर भाग्य को कौन टाल सकता है! अच्छा मौम! मेरी ओर से उसको बधाई देना। यदि वह पसन्द करे तो उसके पति के साथ उसको कल लंच अथवा डिनर का मैं निमन्त्रण देना चाहूँगा।''

श्रीमती स्टैनले ने सुख का साँस लेते हुए कहा, ''तुम लिखकर दे दो। यदि उसे स्वीकार हुआ तो वह तुम्हें फोन पर स्वीकृति दे देगी।''

मथुरासिंह ने काग़ज़ लिया और उस पर फ्लोरा को पति-सहित निमन्त्रण दे दिया। फिर इधर-उधर की बातें होने लगीं। मथुरासिंह ने श्रीमती स्टैनले को एच. एम. एस. इलस्ट्रियस जहाज पर उसके पति के मिलने की सूचना दी, जिसका उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

रात को प्राइम-मिनिस्टर के आवास पर भोजन के समय मथुरासिंह पहुँचा तो कई लोग भी वहाँ थे। प्राइम-मिनिस्टर वहाँ पहुँचा तो तुरन्त भावी कार्य-क्रम पर सामान्य विचार होने लगा।

प्राइम-मिनिस्टर ने कहा कि लक्षण कुछ ऐसा प्रतीत होते हैं कि रूस और जर्मन में शीघ्र ही ठन जायेगी।

''यह बहुत ही भयंकर परिस्थिति होगी।'' मथुरासिंह का कहना था।

''क्यों, इससे जर्मन का पक्ष दुर्बल नहीं हो जायेगा क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो हो जायेगा परन्तु रूस के साथ हमारा क्या व्यवहार होगा?"

"हमारे शत्रु-का-शत्रु हमारा मित्र होगा।"

"यही तो इसमें भयंकरता है। यहाँ शत्रु-का-शत्रु मित्र नहीं, प्रत्युत शत्रु ही है।

जर्मनी से इंग्लैंड का मतभेद कोई सिद्धान्त का नहीं, महत्वाकांक्षा का है। इंग्लैंड के विश्वव्यापी साम्राज्य को देख-देख जर्मनों के सीने में आग जला करती है। रूस से हमारा मतभेद है जीवन-मीमाँसा पर। यदि कहीं ऐसा हो गया कि जर्मनी को परास्त करने के लिये आपने रूस का साथ दिया तो आप अजगर की सहायता के लिए साँप को दूध पिलाने की भूल करेंगे।"

मथुरासिंह की बात सुनकर सब मौन हो गये। मन्त्रि-मंडल के एक सदस्य ने पूछा, "रूस से हमारा क्या मतभेद है?"

"इंग्लैंड का विश्वास पार्लियामेन्टरी डेमोक्रेसी में है और रूस का विश्वास मजदूर-वर्ग के नाम से तानाशाही में है। दोनों में दूर का भी मतैक्य नहीं। यहाँ विचार स्वातन्त्र्य का मूल्य आँका जाता है, वहाँ विचार-नियन्त्रण की महिमा है।"

"यह तो उपायों में अन्तर है।" उसी मन्त्री ने कहा, "सिद्धान्त में हम और वे एक ही उद्देश्य के लिए अर्थात् कल्याणकारी राज्य के लिये यत्नशील हैं।"

"परन्तु वे तो लोक-कल्याण के लिए यत्नशील नहीं हैं। वे तो सोशियलिस्टिक राज्य की स्थापना के लिए यत्न कर रहे हैं।"

"तो क्या सोशियलिस्टिक राज्य कल्याणकारी राज्य नहीं माना जाता?"

"दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर है। जन-जन का कल्याण उनकी शक्ति पर अधिकार बंधन में लेने में नहीं, अपितु उनकी शक्ति वृद्धि करने और उनको शक्ति का सदुपयोग सिखाने में है। जन-कल्याण जन-जन में नैतिकता उत्पन्न करने में है न कि उन पर 'डिक्टेटरशिप' स्थापित करने में।

"एक बात और! समाज केवल मजदूर-वर्ग से ही नहीं बना हुआ है। समाज में चार वर्ग होते हैं। एक तो हैं विद्वान लोग, जो अपनी विद्वत्ता से राष्ट्र की सेवा करते हैं। ये लोग सर्वथा स्वतन्त्र होने चाहियें। दूसरा वर्ग है क्षत्रिय वर्ग। यह वर्ग युद्ध-संचालन करने तथा राष्ट्र की, बाहरी और भीतरी शत्रुओं से रक्षा करने के लिये है।

"तीसरा वर्ग राष्ट्र का धन-उपार्जन करने वाला और चौथा वर्ग है मजदूर-वर्ग। इन चारों वर्गों के समन्वय का नाम राष्ट्र है।"

प्राइम-मिनिस्टर ने बात बदलकर कहा, "यदि हम रूस के साथ मैत्री कर जर्मनी को परास्त कर दें तो क्या बाद में युद्ध से दुर्बल हुए रूस को हम परास्त नहीं कर सकतें?"

"ऐसा सम्भव तो है पर इसके लिए सतत सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारधारा एक ऐसा तीखा तथा गुप्त शस्त्र है जो, अपने घर में पहुँचकर भी वार करता है। इस कारण यदि रूस से सहयोग करना हो तो यह सहयोग युद्ध-क्षेत्र तक ही सीमित रखना चाहिए। उसे अपने घरेलू क्षेत्र में घुसने नहीं देना चाहिए।

"इंग्लैंड में युद्ध की स्ट्रेटेजी है इटली को परास्त कर बलकान पर अधिकार करना। यदि इस युद्ध-नीति में परिवर्तन न हो तो रूस से सहयोग हानिकर न होगा।"

इस समय तक प्राइम-मिनिस्टर ने मास्को-स्थित अपने राजदूत को यह आज्ञा भेज दी थी कि रूस और जर्मनी की बढ़ती हुई द्वेषाग्नि में घी डाला जाय।

6

"मैं अपनी मौम के साथ आपके यहाँ लंच के लिए आ जाऊंगी।" फोन पर फ्लोरा कह रही थी।

"क्यों, मिस्टर गौर्ट नहीं आयेंगे क्या?"

"वे इस समय लन्दन में नहीं हैं?"

"अच्छी बात है। मध्याह्न एक बजे प्रिंस होटल के द्वार पर मैं आप लोगों की प्रतीक्षा करूंगा।"

ठीक समय पर माँ-बेटी आईं और मथुरासिंह उनको रिसेप्शन-हॉल में ले गया। वहाँ एक कोने में उसने फ्लोरा से कहा, "मुझे एक बात का संतोष है कि तुमने मेरा निमन्त्रण स्वीकार तो किया।"

फ्लोरा कहने लगी, "यह मेरा दुर्भाग्य है कि परिस्थितियों ने हमारे साथ ऐसा षड्यन्त्र किया कि मैं आसमान से गिरकर भूमि पर रेंगने के लिए विवश हो गई हूँ।"

"देखिये, हमारे एक विद्वान ने लिखा है कि मनुष्य को इस संसार में अपना कर्त्तव्य पालन करते जाना चाहिए। उसके फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। कारण यह है कि फल हमारे अधिकार में नहीं। वह तो परमात्मा की देन है।"

"मुझे परमात्मा में विश्वास नहीं था। कदाचित् अब भी नहीं है। यदि वह है तो उसने मेरे जीवन के साथ खिलवाड़ किया है।

"नहीं आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए। हमको जो कुछ भी प्राप्त होता है वह हमारे कर्मों के फलस्वरूप ही होता है। मेरा विचार है कि तुम एक निर्धन और देहाती के घर में रहकर जीवन-यन्त्रणा सहने से बच गई हो। अब तुम इंग्लैंड के अति प्रतिष्ठित लार्ड और करोड़पति की सम्पत्ति और मान-प्रतिष्ठा की उत्तराधिकारिणी हो। लेडी गौर्ट तुम्हारी उपाधि होने वाली है। हीरे-मोती से लदी हुई तुम लन्दन के समाज का चमकता हुआ सितारा हो जाओगी। मैं समझता हूँ कि यह स्थिति बुरी नहीं है। हिन्दुस्तान में, वह भी, तीस-चालीस घर के गाँव में दो सौ वर्ग-गज पर बने मकान में और अनपढ़ सास-ससुर की संगत में रहने से तो यह अवस्था बहुत अच्छी है। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य-हृदय से तुमको बधाई देता हूँ।''

फ्लोरा की आंखों में सारे समय आँसू भरे रहे। वह समझ नहीं सकी कि मथुरासिंह उससे व्यंग कर रहा है अथवा स्वयं के उससे मुक्त हो जाने पर प्रसन्नता प्रकट कर रहा है। अपने गाँव और अपनी निर्धनता का चित्र तो उसने उसके सामने पहले भी रखा था। परन्तु तब और अब की परिस्थिति में अंतर था। वह समझती थी कि उसकी नानी और माँ उसको इतना कुछ देने वाली हैं कि वह मिस्टर सिंह की निर्धनता को अतीव सम्पन्नता में परिणत कर देती।

वह समझती थी कि माँ के इस कथन ने ही उसको विलियम से विवाह करने के लिए विवश किया था कि उनके परिवार में कोई उत्तराधिकारी नहीं रहा और मिस्टर सिंह भी अब इस संसार में नहीं रहा। कई कारणों से उसको अपनी वर्तमान अवस्था पर प्रसन्नता नहीं थी।

लंच और उसके बाद की विदाई बहुत ही दुःखपूर्ण रही। मथुरासिंह को सन्देह था कि विलियम लन्दन में ही है परन्तु वह मूर्ख उससे मिलकर मित्रता करने की अपेक्षा उसके प्रति अपनी घृणा प्रकट करने वाला बन बैठा था।

उसी सायंकाल मिस्टर सिंह लार्ड इज़्मे के कन्ट्री हाउस के लिए चल दिया। वहाँ बटलर को मालिक का पत्र दिखाने पर उसे प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधा प्राप्त हो गई। तेरह-चौदह दिन मथुरासिंह के वहाँ पर बहुत ही आराम से कटे। वहाँ से उसने अपने पिता को अपने साथ घटित घटना, पूर्ण विवरण-सहित लिखकर भेज दी। उसने यह भी लिखा कि इस समय वह पन्द्रह दिन की छुट्टी एक देहात में व्यतीत कर रहा है। अपने नित्य की दिनचर्या भी उसने लिखी। अन्त में उसने लाला देवीदयाल, चाची मक्खनी व राधा आदि को यथायोग्य नमस्कार लिखा।

अभी उसके अवकाश के पन्द्रह दिन व्यतीत नहीं हुए थे कि उसको लन्दन पहुंचकर लार्ड इज़्में के समक्ष उपस्थित होने की आज्ञा मिल गई। इस प्रकार वह उन्नीस मार्च को लन्दन पहुँच गया। बीस तारीख को वह लार्ड इज़्में के सम्मुख उपस्थित हुआ तो वह उसे 'चीफ्स आफ दि स्टाफ' की विशेष बैठक में लेकर जा पहुँचा। उस दिन प्राइम मिनिस्टर उस मीटिंग में स्वयं उपस्थित हुआ था।

मिस्टर सिंह के वहाँ पहुँचते ही प्राइम-मिनिस्टर भी पहुँचे और सबको बैठने का संकेत कर सिंह से पूछा, ''मिस्टर सिंह! हम आशा करते हैं कि अब आप कार्य करने के लिए स्वयं को सब प्रकार से सबल पाते होंगे।''

''आपका कथन यथार्थ है, श्रीमान्!''

''आप किसी फ्रन्ट पर जाना पसन्द करेंगे अथवा 'चीफ्स आफ दि स्टाफ' की सहायता के लिए लन्दन में रहना?''

''मैंने सेना में कार्य करने के लिए अपनी सेवायें अर्पित की हैं। इस सेना के कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अन्तर्गत क्या-क्या कार्य आते हैं और युद्ध की सफलता के लिए मैं किस कार्य में भली प्रकार सहायक हो सकता हूँ, यह बात मेरे अधिकारियों के विचार करने की है। मुझे जो आज्ञा होगी मैं उसका पालन अपनी पूर्ण सामर्थ्य से करूंगा।''

प्राइम-मिनिस्टर ने कहा, '''चीफ्स आफ दि स्टाफ' का यह विचार है कि बेहतर होगा यदि आप इस आयोग में कार्य करें। अतः आपकी नियुक्ति 'युद्ध-नीति सहायक' के रूप में इस आयोग में की जाती है।''

उसी समय मथुरासिंह को रहस्य गुप्त रखने की शपथ दिलाई गई और फिर आयोग के सचिव ने उस दिन की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा, ''हमें यह सूचना प्राप्त हुई है कि हिटलर अपनी सेनायें ट्यूनेशिया और लिबिया में भेज रहा है। उसकी वर्तमान नीति यह प्रतीत होती है कि रूस पर आक्रमण से पूर्व ही बाल्क़ान राज्यों को अपने अधीन कर लिया जाय।

''लीबिया में इटली की पिछली पराजय का कलंक धोने के लिए हिटलर ने ट्युनेशिया में एक प्रबल सेना भेजी है।''

इस सूचना पर विचार होने लगा। 'चीफ्स आफ दि स्टाफ' का कार्य राजनीतिक निर्णय करना नहीं था। यह अधिकार तो मंत्रिमण्डल तथा पार्लियामेंट का ही था। परन्तु यह आयोग सिफारिश कर सकता था कि अमुक निर्णय सैनिक दृष्टि से हितकर होगा अथवा अहितकर।

प्राइम-मिनिस्टर ने मंत्रि-मण्डल का प्रश्न प्रस्तुत करते हुए कहा, ''क्या यह उचित होगा कि ट्युनेशिया पर लीबिया से आक्रमण किया जाय अथवा लीबिया में अपनी सैनिक स्थिति सुदृढ़ कर ग्रीस की सहायता की जाय?''

कई प्रकार के विचार उपस्थित किये गए। लेबर पार्टी के प्रतिनिधि का यह मत था कि उनको फ्रांस में उतरने की योजना बनानी चाहिए। घर से दूर की दो-चार विजयों से जनता के मन में उत्साह और विश्वास पैदा नहीं किया जा सकता।

इस वाद-विवाद में जब मथुरासिंह की ओर अपेक्षा की दृष्टि से देखा गया तो उसने कह दिया, ''जहाँ तक घर पर विश्वास का सम्बन्ध है, वह सरकार के प्रचार-विभाग का कार्य है। जहाँ तक युद्ध की अन्तिम विजय का सम्बन्ध है, यह तो शत्रु के दुर्बल अंग पर आघात करने से ही हो सकती है।

''यूनान परास्त होगा। वहाँ का राज्य हमारा मित्र है और उसमें कुछ सेना भेज तथा वहाँ की भूमि रक्त-रंजित करने पर भी हम उसकी रक्षा नहीं कर सके तो हम बदनाम हो जायेंगे। अपने मित्रों में बदनाम होना ठीक नहीं।

''जहाँ तक सैनिक-अभियान का सम्बन्ध है, हमने उत्तरी अफ्रीका में एक प्रबल सेना एकत्रित कर ली है। वहाँ सेना भेजने के स्रोत और मार्ग अभी चिरकाल तक खुले रहेंगे। शत्रु को उस क्षेत्र में पहुँचने में हम बाधा खड़ी कर सकते हैं। भूमध्यसागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अभी भी हमारा प्रभुत्व है। यदि हम डिगाल को समझा सके कि इटली को पराजित करने से हम फ्रांस की स्वतंत्रता में सहायक होंगे मैं समझता हूँ कि वह भी हमारी कुछ सहायता कर सकता है।''

''मुझे विश्वास है कि इसी क्षेत्र में हम शत्रु को प्रभावशाली चोट पहुँचाने की क्षमता रखते हैं। साथ ही हम अपने शत्रु नम्बर एक अर्थात् रूस को भी इटली से रोकने में समर्थ हो सकते हैं।''

इस आयोग का बहुमत ट्यूनेशिया पर आक्रमण करने के पक्ष में था। तब प्राइम-मिनिस्टर ने उठते हुए कहा, ''आप लोगों को उचित आज्ञाओं के लिए तैयार रहना चाहिए। आगामी युद्ध कहाँ से होगा, इस विषय में हम आज शाम तक मंत्रि-मण्डल के निर्णय से अवगत कर सकेंगे।''

मीटिंग समाप्त होने पर प्राइम-मिनिस्टर ने मथुरासिंह को उसकी युक्तियुक्त और संक्षिप्त परन्तु स्पष्ट योजना पर बधाई दी और कहा, ''मैं जानता हूँ कि आप भी उसी दिशा में विचार करते हैं, जिसमें मैं करता हूँ। यही कारण है कि मैंने आपको इस आयोग में रखवाया है।''

उसी सायँकाल प्राइम-मिनिस्टर की यह आज्ञा आई कि क्रिनेशिया से आगे बढ़ने का प्रबन्ध किया जाना चाहिए। यूनान में सेना भेजने की आवश्यकता नहीं।

लीबिया में सेना का जमाव बढ़ाने की आज्ञाएँ जारी हो गईं। परन्तु परिस्थितियाँ बदलने लगीं। मास्को से समाचार-पर-समाचार आ रहे थे कि हिटलर स्टालिन पर बल डाल रहा है कि उसको अधिक मात्रा में रूसी तेल भेजा जाए। अब यह दबाव उन दोनों के पारस्परिक मैत्री के सम्बन्धों को तोड़ने ही वाला है।

अभी लीबिया से ट्यूनेशिया के विरुद्ध अभियान आरम्भ नहीं हो पाया था कि 2 जून, 1941 को जर्मनी ने अपनी सेनाएँ रूस के विरुद्ध भेज दीं।

मथुरासिंह की सम्मति थी कि अपने 'पाउडर' को सूखा रखने के साथ हिटलर को रूस के साथ घमासान युद्ध में लगने तक आक्रमण न किया जाय।

रूस के साथ मित्रता का सम्बन्ध बनाने के लिए इंग्लैंड के प्राइम-मिनिस्टर का रेडियो पर एक वक्तव्य प्रसारित किया गया। वह वक्तव्य निम्न प्रकार था—

'हमारा केवल एक उद्देश्य है और वह अटल है। हमारा यह निश्चय है कि हम हिटलर और नाजी राज्य का नामो-निशान तक मिटा देंगे। हमारे निश्चय से हमें कोई डिगा नहीं सकता। हम हिटलर अथवा उसके साथी लुटेरों के साथ बातचीत अथवा संधि-चर्चा नहीं कर सकते।

'जो कोई व्यक्ति अथवा राज्य नाजियों के विरुद्ध खड़ा होगा, वह हम से सहायता की आशा कर सकता है। जो कोई हिटलर के साथ होकर चलेगा, उसे हम अपना शत्रु मानेंगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह वीर भाषा थी। इसको सुनने वालों के रौंगटे खड़े हो जाते थे। मथुरासिंह ने भी रेडियो पर जब वह भाषण सुना तो वह प्राइम-मिनिस्टर को बधाई का तार दिए बिना नहीं रह सका। वह ससैक्स में युद्ध-प्रयास के सम्बन्ध में गया हुआ था। उसने अपने तार में लिखा—जो इस प्रकार की वीर भाषा में बोल सकता है, ऐसे अपने प्राइम-मिनिस्टर पर मुझे गर्व है।

इसके दो दिन बाद लन्दन आने पर मथुरासिंह का प्राइम-मिनिस्टर से प्रथम मतभेद प्रकट हुआ।

प्राइम-मिनिस्टर ने चीफ आफ दि स्टाफ़ से पूछा था कि स्टालिन पर आई हुई इस विपत्ति के समय इंग्लैंड किस प्रकार उसकी सहायता कर सकता है आयोग के सदस्य टैंक, तोप और हवाई जहाजों की गणना कर भिन्न-भिन्न आँकड़ें बता रहे थे। तब मिस्टर सिंह ने कहा, "मौखिक सहानुभूति बहुत बड़ी सहायता हो सकती है। इसके साथ इटली के विरुद्ध अपनी विशाल सेना का अभियान आरम्भ कर हम युद्ध-क्षेत्र में भी सहायता दे सकते हैं। इस मोर्चे को हम जितना ही तीव्र आक्रमण करेंगे, रूस पर हिटलर का दबाव उतना ही कम होता जाएगा।"

"परन्तु रूस तो टैंक, तोप और हवाई जहाज आदि युद्ध-सामग्री माँगता है। उसका कहना है कि जर्मनी के तीन सौ से अधिक डिवीजन रूस की सीमाओं का उल्लंघन कर चुके हैं।"

"श्रीमान्! मथुरासिंह ने कहा, "ये सीमाएँ पोलैंड, आस्ट्रिया और टर्की के रक्त से रंजित हैं। रूस की अपनी स्वाभाविक सीमाओं के अतिक्रमण के समय सहायता करनी चाहिए किन्तु अपने ढंग से।"

"मंत्रिमण्डल का निर्णय है कि कुछ सहायता दी जाय।"

इसका अभिप्राय तो यह था कि चीफ आफ दि स्टाफ को इसकी आज्ञा दी जा चुकी है।

हिटलर का रूस के साथ विरोध तो था किन्तु व्यक्ति की महत्वाकांक्षा के सम्मुख वह विरोध दब गया और हिटलर तथा रूस में संधि हो गई थी। मिस्टर चर्चिल भी रूस में बोलशेविक राज्य का घोर विरोधी था किन्तु उसका विरोध भी हिटलर और नाजी पार्टी को परास्त करने में विलीन हो गया। यह किंवदन्ति सत्य हो रही थी कि युद्ध और प्रेम में लोग विचित्र व्यक्तियों से सहवास करने के लिए विवश हो जाते हैं। किन्तु इन अवसरों पर जो लोग अपनी बुद्धि और उद्देश्यों को नहीं भूलते, अन्त में वे ही सफल होते हैं।

अपनी महत्वकांक्षा के प्रभाव में जर्मनी को सुदृढ़ करने का अपना उद्देश्य हिटलर भूल गया और 1940 में जर्मनी के अधिकार को जो, 'पिरेनीज' से वारसा तक और ओसलो से ट्यूनेशिया तक विस्तृत हो गया था, उसे सुदृढ़ करने के स्थान वह स्टालिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विनाश करने के लिए चल पड़ा। उसका विचार था कि यह तीन मास में स्टालिन को बरबाद कर चर्चिल को पदच्युत करा देगा।

वास्तव में जर्मनी ने चौदह दिन में रूस को परास्त कर भी दिया था। 'हल्डर' नाम के एक जर्मन जनरल ने तीन जुलाई को लिखा था—यह अतिश्योक्ति नहीं है कि रूस के विपरीत किया गया अभियान चौदह दिन में ही पूर्ण हो गया था। केवल मास्को पर अधिकार करना शेष रह गया था। परन्तु डनकिर्क की भांति रूस में भी हिटलर ने बहुत बड़ी भूल की। उसने आक्रमण का बल मास्को पर डालने के स्थान रूस के पूर्ण राज्य पर ही दांत रखने का निश्चय किया।

हिटलर की इस भूल का कारण था अपने साथियों की ओर से हिटलर का अज्ञात भय। इस प्रकार का भय सभी दुष्ट प्रकृति के लोगों में होता है और इसमें ही उनकी पराजय का बीज छिपा रहता है। हिटलर को न तो मुसोलिनी पर विश्वास था, न ही फ्रांस की 'विंची' सरकार पर। उसका स्टालिन पर तो विश्वास पहले ही नहीं था। वह सदा विचार करता रहता था कि वास्तव में उसका हितैषी कोई नहीं है। सब स्वार्थवश उसके चारों और एकत्रित हो रहे हैं। उनमें परस्पर विचार-ऐक्य अथवा उद्देश्य की एकता नहीं है।

उसने मुसोलिनी को दी हुई अपनी सैन्य-सहायता में से कुछ वापस करवा ली। फ्रांस से भी उसने अपनी सेना का एक अंश वापस बुलवा लिया। वास्तव में वह रूस को केवल सबक सिखाना ही नहीं प्रत्युत उसका सर्वनाश करने का निश्चय कर चुका था।

जब हिटलर के सैनिक सलाहकारों ने उसे सम्मति दी कि प्रथम उसे मास्को पर अधिकार करना चाहिए तो उसने वह सम्मति स्वीकार नहीं की। जर्मन सैनिक विशेषज्ञों की सम्मति थी कि मास्को में बैठकर स्टालिन से सन्धि कर ली जाय और फिर पश्चिम की ओर ध्यान दिया जाय। किन्तु हिटलर रूस को परास्त कर प्रशान्त महासागर तक पहुँचने के स्वप्न ले रहा था। उसका विचार था कि यदि वह इसमें सफल हो गया तो एटलांटिक से प्रशांत महासागर तक जर्मन का स्वस्तिक छा जाने से पूर्ण पृथ्वी पर उसका अधिकार हो जायेगा। यह तो सर्वथा वैसा ही था जैसा हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को रसातल में ले जाने का विचार किया था। किन्तु उसका वह स्वप्न अपूर्ण ही रहा।

समय बीता और 1941 से 1942 आ गया। एक ओर लेनिनग्राड पर प्रगति रुक गई तो दूसरी ओर स्टालिनग्राड पर भी रुक गई। जैसा डिक्टेटर के मन में होता है ठीक वैसे ही हिटलर को अपने सैनिक अधिकारियों पर भी सन्देह होने लगा था। वह यह विचार करने लगा कि वह सब मूर्खों का टोला है। वे कुछ समझते नहीं। उनकी कल्पना संकुचित है, वे इस युद्ध को विश्व विजय के हेतु न मान केवल योरुप तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमित रखना चाहते हैं।

जनरल फोन बोक की योजना अस्वीकार हुई और मास्को, जो रूस का हृदय था, उसको छोड़कर ऊपर और दक्षिण से आगे बढ़ने की आज्ञा दे दी। हिटलर की प्रगति रुकते ही जर्मन सैनिक-अधिकारियों में असन्तोष फैल गया।

इन सब परिवर्तनों पर लन्दन में अध्ययन हो रहा था। 'चीफ़्स ऑफ दि स्टाफ़' के अधिवेशन प्रायः शनिवार की सायंकाल हुआ करते थे। इसके अतिरिक्त भी आवश्यकतानुसार किसी भी समय अधिवेशन एक घंटे की सूचना पर बुलाया जाता था।

7

रूस पर आक्रमण के एक मास के भीतर ही स्टालिन ने चर्चिल को सन्देश भेजा और इसमें उसने इंगलैंड को फ्रांस में दूसरा मोर्चा खोलने का आग्रह किया।

यह पत्र मन्त्रिमण्डल के विचारधीन आया तो मन्त्रिमण्डल ने इस विषय में 'चीफ़्स ऑफ दि स्टाफ' से पूछा। उन्होंने पूछा था कि क्या हम दूसरा मोर्चा खोल सकते हैं? यदि खोल सकते हैं तो कहाँ पर तथा कब तक खोला जा सकता है और उसकी सफलता की कितनी आशा है?

जब यह प्रश्न चीफ ऑफ दि स्टाफ की सभा के समक्ष उपस्थित किया गया उस समय प्राइम-मिनिस्टर भी वहाँ पर उनका उत्तर सुनने के लिए विद्यमान था। अधिकांश अधिकारी समझ नहीं पा रहे थे कि वे इसका उत्तर किस प्रकार दें। प्रधान मन्त्री ने जब मथुरासिंह की ओर मुख किया तो उसने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा, "दूसरा मोर्चा यदि खोलना हो तो वह योरुप की भूमि पर ही खोलना चाहिए और उसमें शीघ्रता करनी चाहिए।

"परन्तु फ्रांस में मोर्चा खोलना तो इंग्लैंड की युद्ध-सफलता का सूचक नहीं हो सकता। जब तक हिटलर और स्टालिन परस्पर युद्ध में जुटे हुए हैं, हमें मुसोलिनी को बन्दी बनाकर इटली में राष्ट्रीय सरकार का निर्माण कर मैडिटिरेनियन में युगोस्लाविया, ग्रीस और टर्की को अपना सक्रिय मित्र बना लेना चाहिए। तब हमको अपनी सेनाएँ रूसी सेनाओं के साथ मिलाकर जर्मन के विरुद्ध अभियान आरम्भ कर देना चाहिए। वह समय होगा जब फ्रांस के किनारे पर सेनाएँ उतारने से लाभ होगा।"

अपने चीफ ऑफ दि स्टाफ की सम्मति पर चर्चिल ने मास्को में अपने दूत क्रिप्स को लिखा, "मैं आपकी बात से सहमत हूँ। रूस की संकटावस्था का भी मैं अनुमान लगा सकता हूँ। इस पर भी मैं कहता हूँ कि यह रूस का अधिकार नहीं कि वह हम पर दोषारोपण करे। वास्तव में उसने यह मुसीबत स्वयं उत्पन्न की है। उसने ही रिबनट्रोप से सन्धि कर हिटलर को अपना पशुबल पोलैंड पर छोड़ने का अवसर प्रदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था। जब रूस ने फ्रांस की सेना का चुपचाप विनाश देखा था तब उन्होंने ही योरुप की भूमि पर दूसरा मोर्चा खोलने के लिए कठिनाई उत्पन्न कर दी थी।

"हम अपनी शक्ति के अनुसार युद्ध-सामग्री भेजकर रूस की सहायता कर रहे हैं।"

इस पर भी प्रधानमन्त्री ने मिस्टर क्रिप्स को लिख दिया कि उनके घावों पर अधिक नमक लगाने की आवश्यकता नहीं। हम दूसरा मोर्चा खोल रहे हैं। परन्तु इसका स्थान हमारे विशोज्ञ बतायेंगे। रूस के राजनीतिज्ञ नहीं।"

वास्तवमें जब दिसम्बर 1941 में जापान ने अमेरिका के पर्ल हारबर पर बिना सूचना के आक्रमण कर दिया तब युद्ध का पासा पलटना प्रारम्भ हो गया था। अमेरिका इंग्लैंड का प्रत्यक्ष मित्र बन गया था।

जन, धन और युद्ध-सामग्री के रूप में अमेरिका की शक्ति इंग्लैंड से कई गुना अधिक थी। इस कारण अमेरिका की सम्मत्ति का युद्ध-नीति पर प्रभाव पड़ने लगा।

अमेरिका एक ओर तो जापान की नौशक्ति का विरोध करने पर विवश था, दूसरी ओर योरुप की सहायता करने में। दोनों देशों के सैनिक अधिकारियों की संयुक्त बैठकें हुईं और उसमें दूसरा मोर्चा खोलने की योजना होने लगी।

इस समय अफ्रीका में घोर पराजय हो गई। जनरल आकिनलेक सैनिक-नीति से अनभिज्ञ था और इस बार मथुरासिंह उसके पास नहीं था। अतः आरम्भिक विजय के एक वर्ष बाद रोमैल की अध्यक्षता में इटेलियन सैनिकों ने मित्र-सेनाओं को पुनः इजिप्ट में धकेल दिया।

फिलीपीन पर शत्रु-सेनाओं का अधिकार हो गया था। सन् 1943 में जनरल वेवल के कमाण्ड में और अमेरिकन सहायता से पुनः सिरेनैका ट्रिपोली, ट्यूनिस और सिसिली पर अधिकार कर लिया गया। 1943 के जुलाई और अगस्त में सिसिली पर अधिकार किया गया, तब भी अमेरिका के अधिकारी इसको दूसरा मोर्चा मानने के लिए तैयार नहीं होते थे। इस पर मथुरासिंह और अमेरिकन चीफ ऑफ दि स्टाफ में झड़प हो गई। मथुरासिंह ने प्रश्न किया "रूस दूसरा मोर्चा क्यों चाहता है?"

"अपने ऊपर सैनिक दबाव कम करने के लिए।"

"यह तो इटली में मोर्चा खोलने पर भी हो रहा है।"

"हिटलर मुसोलिनी की कुछ परवाह नहीं करता।"

"मैं समझता हूँ कि हिटलर तो किसी की भी परवाह नहीं करता। वह अपने स्वार्थ के लिये ही मुसोलिनी तथा फ्रांस की चिन्ता कर रहा है। अतः मुसोलिनी की हार उसके ही स्वार्थों का हनन करने वाली होगी।

"जहाँ तक रूस पर सैनिक दबाव के कम होने का प्रश्न है वह कहीं भी दूसरा मोर्चा खोलने से हो सकता है। हम समझते हैं कि जर्मनी को पराजित करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इटली में ही हमारा मोर्चा प्रभावशाली रहेगा।''

किसी के पास इस युक्ति का उत्तर नहीं था। परन्तु अमेरिकन युद्ध-नीतिज्ञ अकारण तोतों की भांति स्टालिन की माँग का समर्थन करते रहे।

मथुरासिंह ने ब्रिटिश 'चीफस ऑफ दि स्टाफ' द्वारा विचारित योजना सुनाते हुए कहा, ''मित्र-राष्ट्रों का प्रथम कार्य अमेरिका से सामान लाने का मार्ग खुला रखने में है और दूसरा कार्य योरुप में इटली पर आक्रमण तथा फारस की खाड़ी के द्वारा रूस को सहायता पहुँचाना है।''

इंगलैंड ने अपनी इस योजना को कार्यान्वित किया। स्टालिनग्राड का बचाव जहाँ रूसी सैनिकों के असीम त्याग और बलिदान के कारण हुआ, वहाँ अमेरिकन और अंग्रेजी युद्ध-सामग्री के कारण भी हुआ जो फारस की खाड़ी से रूस को मिल रही थी।

1943 में ट्यूनिस को जीतकर बाइजर्ट पर अधिकार कर लिया गया। बाइजर्ट से सिसिली और वहाँ से रोम तक अधिकार हो गया। इसका ही परिणाम था कि जर्मनी को स्टालिनग्राड पर से हटना पड़ा।

इस पर भी स्टालिन रूजवैल्ट को लिखता रहा कि योरुप की भूमि पर फ्राँस के किनारे नया मोर्चा खुलना चाहिए। स्टालिन की निरन्तर माँग ने अमेरिकन युद्धनीतिज्ञों के मस्तिष्क भ्रमित कर दिए और वे दो भूलें कर बैठे।

अपनी शक्ति और धन सम्पदा के बल पर अमेरिका के राष्ट्रपति ने चर्चिल को विवश कर दिया कि वह इटली के द्वारा युगोस्लाविया, ग्रीस, हंगरी और रूमानिया की ओर बढ़ने की अपेक्षा फ्रांस में मोर्चा खोलने के लिए तैयार हो जाये।

दूसरे, अमेरिका ने चीन में च्यांग काई शेक को जापान के विरुद्ध सहायता की यह शर्त लगा दी कि वह चीन में संयुक्त सरकार बना ले और उसमें कम्युनिस्टों को सम्मिलित कर ले। दोनों महान भूलें थीं। दोनों स्टालिन के कहने पर की गई थीं और दोनों भूलों में सहायक हुए थे जनरल मार्शल एडमिरल किंग और आरनोल्ड सैल्ड्रोम।

एक भूल से पूर्वी योरुप पर स्टालिन का अधिकार हो गया और दूसरी भूल से चीन कम्युनिस्ट हो गया। दोनों भूलें बीज रूप में थीं। इन बीजों में से 1944 में वृक्ष बनें और उनकी सिंचाई 1944 और 1945 में हुई। वह भी अमेरिका के हाथों से।

जब फ्रांस में 6 जून 1944 को अमेरिका ने और ब्रिटिश सेनाओं ने आक्रमण आरम्भ कर दिया तो अमेरिकन सैनिक और सामग्री अंग्रेजी तथा केनेडियन सेना सामग्री से बहुत अधिक थी। यही कारण था कि अंग्रेज इस आक्रमण की युद्ध-नीति में दब गये।

1944 के दिसम्बर तक युद्ध-क्षेत्र में सब ठीक चलता रहा। परन्तु इसके बाद योरुप के दूसरे मोर्चे पर मतभेद आरम्भ हुआ। उत्तर में अंग्रेजी सेना मौंटगुमरी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीन बढ़ रही थी। दक्षिण में अमेरिकन सेना आइजनहावर के अधीन। मतभेद आरम्भ हुआ आक्रमण के ढंग और तेजी पर और इसका अन्त हुआ 1945 जून में। अंग्रेजी नीति के अनुसार बर्लिन और अधिकांश दक्षिण-पूर्वी जर्मनी पर अधिकार अमेरिका और अंग्रेजों को करना चाहिये था और अमेरिकन अधिकारी चाहने लगे कि बर्लिन इत्यादि पर अधिकार रूसी सेना का होना चाहिये।

यह रूसी नीति के अनुसार था। रूजवेल्ट ने स्टालिन को यह वचन दे रखा था। इस वचन के अनुसार युद्ध-नीति का परिणाम यह हुआ कि बर्लिन से पूर्वी जर्मनी का बहुत-सा भाग रूस के अधिकार में चला गया।

यदि अमेरिका बाधा खड़ी न करता तो मौंटगुमरी बर्लिन तक और कदाचित् उससे भी पूर्व तक अपना अधिकार कर लेता।

इसके अतिरिक्त रूजवैल्ट ने पूर्वी योरूप को रूस के प्रभावाधीन करना स्वीकार कर लिया। एशिया में चीन को भी रूस के प्रभावाधीन रखना मान लिया।

ऐसा क्यों हुआ? इसमें एक ही कारण प्रतीत होता है कि अमरीकी राजनीतिज्ञ रूस के विषय में कम जानते थे। उन्होंने लेनिन की कूटनीति के विषय में कभी जानने का यत्न भी नहीं किया था। इसके अतिरिक्त अमैरिकन प्रैजिडेंट और उसके सम्मतिदाता एशिया के इतिहास से सर्वथा अनभिज्ञ प्रतीत होते थे। अमैरीकी अभिमान और अज्ञान के आधार ने स्टालिन को युद्ध-पश्चात् कम्युनिस्ट प्रसार का सुनहरा अवसर दे दिया।

8

सन् 1943 में जब अमेरिका फ्रांस पर दूसरा मोर्चा खोलने के लिए आग्रह करने लगा और उसका विरोध करना इंग्लैड के लिए असम्भव होने लगा तो मथुरासिंह का कार्य लन्दन में समाप्त समझ लिया गया और उसको वापस हिन्दुस्तान भेजने का प्रबन्ध हो गया।

एक दिन चीफ़्स ऑफ दि स्टाफ के सचिव ने मथुरासिंह को बुलाकर पूछा, "मिस्टर सिंह! अब पूर्व-एशिया में युद्ध की तेजी होने लगी है और हमें भी अब हिन्दुस्तान की रक्षा की चिन्ता अधिक होने लगी है। इंग्लैड से हम किसी भी युद्ध-नीतिज्ञ को खाली नहीं कर सकते। इस कारण मैं जानना चाहता हूँ कि आप हिन्दुस्तान लौटना कैसा समझेंगे?"

"अपने देश की रक्षा के लिए अपनी सेवाओं का योगदान करने में मैं अपना सौभाग्य मानूंगा।"

"तो आप तैयार रहिए। प्रबन्ध होने पर आपको सूचित कर दिया जायेगा। अभी आप अवकाश पर हैं, परन्तु आप जहाँ भी रहें हैडक्वार्टर से सम्पर्क बनाये रखें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे कि आपको तुरन्त बुलाया जा सके।"

यह सन् 1943 के अक्तूबर की बात थी। इस समय तक मित्र राष्ट्रों की सेना रोम के द्वार पर पहुँच चुकी थी। मुसोलिनी जर्मनी की ओर भागता हुआ पकड़ा जा चुका था और रोम में स्वतन्त्र सरकार बन चुकी थी।

मथुरासिंह कहीं घूमने नहीं गया। अब इंग्लैंड में उसकी रुचि भी नहीं थी। हिन्दुस्तान पहुँच वह अपने माता-पिता से मिलने की उत्कट इच्छा करने लगा था।

नवम्बर के मध्य में एक समुद्री जहाज में मथुरासिंह कराची पहुँच गया। वह अनुभव कर रहा था कि उसके जाने और आने में अन्तर हो गया है। जाते समय वह लेफ़्टीनेंट था। उस समय उसको हवाई जहाज़ में ले जाया गया था। आते समय वह ब्रिगेडियर जनरल था, किन्तु उसे सिकन्दरिया से कराची तक समुद्री जहाज में लाया गया था।

सिकन्दरिया तक तो वह हवाई जहाज में ही आया था। एक सप्ताह की प्रतीक्षा के अनन्तर उसको सिकन्दरिया से हिन्दुस्तान आने वाले एक समुद्री जहाज़ में स्थान मिला और आठ दिन की यात्रा के बाद उसे कराची उतार दिया गया। वहाँ से लाहौर के लिए टिकट मिलने में उसे पाँच दिन लग गये और लाहौर पहुँच उसकी प्रगति रुक गई। सेना के हैडक्वार्टर दिल्ली को उसने तार भेजा। उस तार के उत्तर के लिए उसको दो सप्ताह तक लाहौर में ठहरना पड़ा। उसने अपने माता-पिता को लिखा कि वह लाहौर पहुँच गया है। इसका परिणाम यह हुआ कि सूरतसिंह और भगवती लाहौर पहुँच गए। बहुत यत्न करने पर उनको उसका निवास-स्थान मिल पाया। एक साधारण सैनिक की भांति उसको एक बैरक में रखा गया था।

सूरतसिंह और उसकी पत्नी त्रिलोकचन्द एडवोकेट की कोठी पर ठहरे थे। मथुरासिंह की खोज में त्रिलोकचन्द सहायक हुए।

मथुरासिंह की कोठरी देख सूरतसिंह ने पूछा, "तुम तो लिख रहे थे कि तुम ब्रिगेडियर जनरल हो गए हो, किन्तु तुम्हारी यह कोठरी जमादार के योग्य भी नहीं है।"

"पिताजी! मैं ब्रिगेडियर जनरल लन्दन में था। यहाँ मुझको अभी किसी काम पर नहीं नियुक्त किया गया। मेरे यहाँ लौटने की कोई सूचना भी नहीं थी। मैंने अपने पत्र द्वारा जो मुझको लन्दन में मिले थे, कराची से लाहौर पहुँचने में सहायता ली थी, किन्तु यहाँ आकर तो वे भी प्रभावहीन हो गए हैं। यहाँ मैं एक सिपाही की मेहरबानी से रह रहा हूँ।"

"तो तुम गाँव चलो, वहाँ से लिखा-पढ़ी कर लेना।"

"ऐसा नहीं, यदि आप कुछ खर्चा दें तो मैं दिल्ली जाकर स्वयं अपने पहुँचने की रिपोर्ट कर दूँ।"

"ठीक है, इन्तजाम हो जायेगा। कब जाना चाहते हो तुम?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप आये हैं तो दो दिन रहना ही चाहिए। उसके बाद मैं दिल्ली जाना चाहूँगा।

"हम भी तुम्हारे साथ दिल्ली चलेंगे।"

"तब तो ठीक है, दो सप्ताह से यहाँ पड़ा-पड़ा मैं ऊब गया हूँ।"

अगले दिन मथुरासिंह अपने माता-पिता के साथ दिल्ली के लिए जाने ही वाला था कि उसको दिल्ली से निम्न संदेश मिला—"लेफ्टीनेंट मथुरासिंह को यह आज्ञा दी जाती है कि वह दिल्ली हैडक्वार्टर में तीन जनवरी को रिपोर्ट करे।"

इस रिपोर्ट के आधार वह दिल्ली जा पहुँचा और उसके माता पिता भी उसके साथ ही गए।

मथुरासिंह फ्लोरा की घटना से शंकित था। इस कारण वह राधा के विषय में पूछने में संकोच अनुभव करता था। वह समझता था कि उसकी मृत्यु के समाचार पर राधा का विवाह हो जाना भी सम्भव है। उसको अपने माँ-बाप की उस ओर से चुप्पी पर इस सम्भावना का अधिक विश्वास होता जाता था। एच. एम. एस. इलस्ट्रियस द्वारा बचाये जाने के पश्चात् से ही वह राधा का समाचार जानने की इच्छा कर रहा था। उसने एक केबल लन्दन से अपने पिता को भेजा भी था, परन्तु उस केबल के उत्तर में अथवा उसके पश्चात् आने वाले पत्रों में राधा का कोई उल्लेख नहीं था। इस कारण वह समझ रहा था कि राधा का भी विवाह हो गया होगा।

रेल में बैठे-बैठे बात चल पड़ी। सूरतसिंह ने कहा, "महात्मा जी ने जब सत्याग्रह करने की घोषणा की तो सरकार ने कांग्रेसियों को पकड़ लिया। जो लोग पकड़ में नहीं आये, उन्होंने युद्ध-प्रयासों में विघ्न डालने के लिए तोड़-फोड़ करनी आरम्भ कर दी। देवीदयाल भी उन तोड़-फोड़ करने वालों में से था। पुलिस ने तोड़-फोड़ करने वालों पर गोली चलाई। परिणाम स्वरूप देवीदयाल मारा गया। उसकी मृत्यु के पूर्व ही उसकी पत्नी और पुत्र तथा पुत्री होशियारपुर चले गए और डेढ़ वर्ष से उन्होंने अपना कोई समाचार नहीं दिया।"

"यह कब की घटना है?"

"तोड़-फोड़ का यत्न देवीदयाल ने सितम्बर 1942 में किया था और उन्हीं दिनों वह मारा गया था। परन्तु गाँव तो वे, तुम्हारे बुरे समाचार आने के तुरन्त पश्चात् ही छोड़ गए थे और तब से ही उनके समाचार आने बन्द हो गए थे। तुम्हारा शुभ-समाचार भी उनको नहीं भेजा जा सका।"

मथुरासिंह को अपने अनुमान की पुष्टि होती दिखाई दी कि राधा का विवाह हो चुका होगा। इससे उसका मन तो मलिन हुआ परन्तु, बाहर से उसने किसी प्रकार का हर्ष अथवा शोक प्रकट नहीं किया। उसने बात बदलकर कहा, "भापा! तोड़-फोड़ की अब क्या स्थिति है?"

"अब तो शान्ति है। एक बात और है। आसाम की सीमा पर जापानियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता से सुभाष बाबू की सेना ने आक्रमण कर दिया था। उन्होंने कुछ विजय भी प्राप्त की थी, परन्तु उसके बाद कुछ प्रगति नहीं हुई।''

मथुरासिंह इस सूचना का अर्थ समझने में लीन रहा। दिल्ली पहुँचकर ये एक होटल में ठहर गए। मथुरासिंह सेना के हैडक्वार्टर में अपने कागज़ात दिखाने के लिए गया। एक अंग्रेज जनरल मथुरासिंह के कागज देख विस्मय करने लगा। मथुरासिंह को गम्भीर भाव में सर्तक खड़ा देख जनरल वाट्सन ने उससे पूछा, ''यह ब्रिगेडियर जनरल सिंह कौन है?''

''यह जो आपके सामने खड़ा है।''

''किसने तुमको ब्रिगेडियर जनरल बनाया था? तुम तो अभी बीस वर्ष की आयु के भी प्रतीत नहीं होते?''

''इसके नीचे लार्ड इज़्में चेयरमैन ऑफ दि 'चीफ्स ऑफ दि स्टाफ़' के हस्ताक्षर हैं। आप उनसे पूछ सकते हैं कि यह पद मुझे किसने और क्यों दिया है?''

''हमारे पास इन फिजूल की बातों के लिए समय नहीं है। तुम्हारा भारत का रैंक लेफ्टीनेंट है। इससे हम तुम्हें लेफ्टीनेंट मथुरासिंह ही समझते हैं।''

''ठीक है।''

''कहाँ ठहरे हो?''

''मैं अभी लाहौर से आया हूँ और होटल में ठहरा हुआ हूँ।''

''लाहौर से क्यों?''

''इसलिए कि कराची से लाहौर तक का ही रेल का पास मिला था। उससे आगे के लिए न तो वहाँ खर्चा ही था और न पास।''

''तो फिर कैसे आये हो?''

''अपने गाँव से रुपया मंगवाकर फिर टिकट खरीदकर आया हूँ।''

''ब्रिटिश सरकार ने तुम्हारा वेतन दिया है अथवा नहीं?''

''आने के लिए बीस पौंड मिले थे, शेष के लिए इन कागजों में आर्डर लिखा हुआ है।''

जनरल वाट्सन ने पुनः कागज देखने आरम्भ कर दिये। एक कागज पर यह लिखा था—'हिन्दुस्तान की सरकार मथुरासिंह के वेतन का भुगतान कर उसका बिल ब्रिटिश सरकार के नाम लिख दे।''

''द डैविल! प्रश्न तो यही है कि किस हिसाब से बिल बनाया जाय?''

''यह तो मैं बनाकर दे सकता हूँ।''

''हाँ, दे दो।''

''मेरे लिए क्या आज्ञा है?''

''पहले छावनी में चले जाओ। रहने के लिए क्लर्क से मकान का एलॉटमेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करवाओ और फिर वहाँ पर आज्ञा की प्रतीक्षा करो।''

मथुरासिंह ने सलाम किया और कमरे से बाहर आ गया।

उस दिन एलॉटमेंट करने वाला क्लर्क छुट्टी पर था। उसका स्थानापन्न व्यक्ति मथुरासिंह को मकान देने में असमर्थ था। उसके पास न तो मकानों की सूची ही थी और न ही उसे यह ज्ञात था कि वह सूची कहाँ मिलेगी। मथुरासिंह ने अपने कागज जमा कराये और फिर होटल में पहुँचकर अपने वेतन का बिल बना दिया। अलामीन से आगे ब्रिगेडियर जनरल के वेतन का बिल था जिसमें से कुछ पेशगी एलाउन्स मिला था। वह काटकर बिल साढ़े तीन हजार पौंड बन गया। अगले दिन वह पुनः कार्यालय में पहुँचा। उसने अपना बिल क्लर्क को दिया और उससे अपने बंगले के विषय में पूछा। उसको वही मकान मिला जिसमें वह इससे पूर्व रह चुका था। मकान मिलने पर वह अपने माता-पिता को साथ लेकर वहाँ चला गया।

मथुरासिंह ने लन्दन में युद्ध के विषय में बात करते हुए बताया, ''भापा! वहाँ तो बिजली की तेजी से काम होता है। यहाँ के काम की गति इतनी ढीली है, जैसे मोटरकार के सामने बैलगाड़ी की गति हो।''

सूरतसिंह हँस पड़ा। उसने कहा, ''वास्तव में यहाँ कोई युद्ध हो नहीं रहा। यहाँ केवल सेना भर्ती करके उसे विदेशों को भेजा जा रहा है। हिन्दुस्तान सेना भर्ती का क्षेत्र है, युद्ध-क्षेत्र नहीं।''

''मैं यही विचार करता हूँ कि यदि योरुप-जैसा युद्ध यहाँ छिड़ जाय तो हिन्दुस्तान एक सप्ताह में विजय कर लिया जायेगा।''

''इतनी जल्दी तो नहीं। यह बहुत बड़ा देश है। इसका विस्तार ही इसको विजय करने में भारी बाधा बन जायेगा।''

बंगले पर अधिकार कर मथुरासिंह ने हैडक्वार्टर्स में रिपोर्ट कर दी। साथ ही उसने अपने बिल के भुगतान के लिए भी आग्रह किया।

सूरतसिंह का कहना यथार्थ था। वास्तव में हिन्दुस्तान में युद्ध के लिए सामान बन रहा था और सेना भर्ती की जा रही थी। युद्ध तो देश के बाहर हो रहा था। इसके अतिरिक्त यहाँ न तो किसी प्रकार का भय था, न ही युद्ध का विरोध करने के लिए किसी प्रकार का प्रयास। यहाँ के सब कार्य चिऊंटी की गति के समान चलते थे।

एक मास की अवधि के बाद मथुरासिंह को राजपूत रेजिमेंट एक सौ दस में नियुक्त कर, उसे कोचीन भेज दिया गया। तब तक भगवती और सूरतसिंह उसके पास ही रहे। उस सब अवधि में राधा का फिर कभी कोई उल्लेख नहीं आया। उसके पिता ने जो स्थिति बताई थी, उसको ध्यान में रखते हुए मथुरासिंह ने राधा की बात मन से निकाल दी थी।

कोचीन जाने से पूर्व उसने माता-पिता को वापस अपने गाँव भेज दिया। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको छोड़ने के लिए स्टेशन पर गया तो गाड़ी छूटने से कुछ समय पूर्व उसकी माँ ने कहा, ''हम होशियारपुर होकर जायेंगे, सम्भवतया वहाँ राधा की माँ मक्खनी से भेट हो जाय।''

''चाची मिले तो उसको मेरा नमस्कार कहना।''

भगवती चुप रही। वह प्रतीक्षा कर रही थी कि मथुरासिंह राधा के विषय में कुछ कहेगा। जब उसने कुछ नहीं कहा तो वह भी चुप रही और कुछ समय बाद गाड़ी चल पड़ी।

तीन दिन की यात्रा के बाद मथुरासिंह भी कोचीन जा पहुँचा। वहाँ उसको कार्यालय में राशन-इंचार्ज बना दिया गया। कोचीन में तीन हजार सैनिक थे और पाँच रैजिमेंटस् थी। राजपूत एक सौ दस को उन सभी की भोजन-व्यवस्था पर नियुक्त किया गया था। इस काम में लगने पर मथुरासिंह भूल गया कि वह कभी युद्ध-नीति-विशेषज्ञ भी माना जाता था। यहाँ पर कप्तान, जनरल, मेजर-जनरल, ब्रिगेडियर जनरल सभी अंग्रेज थे। वे प्रायः खाना-पीना, खेल-कूद, नाच-रंग में मस्त रहते थे। काम तो प्रायः हिन्दुस्तानी ऑफिसर्स या साधारण सैनिक ही करते थे। वास्तविक काम कुछ था ही नहीं।

सन् 1944 आया और फ्राँस पर दूसरा मोर्चा खुल जाने के समाचार आये। मथुरासिंह का घर से पत्र-व्यवहार चल रहा था। एक वर्ष के बाद उसे एक मास की छुट्टी मिली तो वह घर चला गया।

9

मथुरासिंह कोचीन से मद्रास और वहाँ से दिल्ली जा पहुँचा। वहाँ एक दिन ठहरकर वह होशियार पुर जाने के लिए स्टेशन पर पहुँचा तो उसने देखा कि एक योरुपियन महिला बम्बई से आने वाली गाड़ी के फर्स्टक्लास के कम्पार्टमेंट से अपना बहुत-सा सामान निकाल रही है। उसको वह स्त्री कुछ जानी-पहचानी सी प्रतीत हुई। मथुरासिंह को उसी गाड़ी से आगे जाना था और उसका कुली उसका सामान उसी डिब्बे में चढ़ा रहा था, जिसमें से वह महिला अपना सामान उतार रही थी।

एकाएक मथुरासिंह को याद आया कि वह तो लेडी गौर्ट की नौकरानी है। तो सम्भवतः लेडी गौर्ट भी उसी गाड़ी में हो और नौकरानी के जिम्मे अपना सामान छोड़कर वह बाहर चली गई हो।

उस औरत ने भी मथुरासिंह की ओर ध्यान से देखा तो उसको उससे पूछने का साहस हो आया। उसने पूछा, ''क्षमा करें, यदि मैं भूल नही कर रहा तो मैंने आपको लेडी गौर्ट के साथ देखा था?''

''हाँ आपने अवश्य देखा होगा।'' उसने आगे बताया—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे तो इंग्लैंड में हैं, मैं इस समय उनके लडके कैप्टन विलियम के साथ हूँ।"

"और कैप्टन गौर्ट कहाँ हैं?"

"हम एक बैटल-शिप में बम्बई आए थे। मिस्टर ऐण्ड मिसेज गौर्ट हवाई जहाज से पहले ही दिल्ली आ गए हैं। मैं यह सामान लेकर रेल से आ रही हूँ।"

"ओह! मुझे पहचानती हो?"

"हाँ, क्यों नहीं? आप मिस्टर सिंह है। आपको हमने 'स्टैनले मेंशन' में देखा था।"

"मिसेज गौर्ट जूनियर को मेरा स्मरण कराना। मैं इस समय अपने गाँव छुट्टी बिताने के लिए जा रहा हूँ।"

"मैं अवश्य कहूँगी। वे प्रायः आपका उल्लेख किया करती हैं।"

मथुरासिंह जब कुछ अनुमान नहीं लगा सका कि विलियम किस लिए हिन्दुस्तान आया है तो इस विचार को मन से निकालकर समाचार-पत्र पढ़नें लगा।

होशियारपुर पहुँचकर उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने स्टेशन के प्लेटफार्म पर अपने माता-पिता के साथ मक्खनी और राधा को खड़े पाया। उसने कोचीन से चलते हुए अपने पिता को तार दे दिया था कि वह अमुक दिन होशियारपुर स्टेशन पर पहुँच रहा है। उसको आशा थी कि गाँव में उसकी उस दिन प्रतीक्षा की जायेगी। उसको यह ज्ञात नहीं था कि उसकी मुत्यु के समाचार और फिर जीवित बच जाने के समाचार के पश्चात् उसकी माँ के मन में उसके प्रति ममता में असीम वृद्धि हो जाएगी। पहले भी जब उसको समाचार मिला था कि मथुरा सिंह लाहौर पहुँच गया है तो वही सूरतसिंह को साथ लेकर वहाँ जा पहुँची थी। फिर वह उसके साथ तब तक दिल्ली में रही थी, जब तक कि उसको कोचीन के लिए स्थानान्तरण नहीं कर दिया गया था। इस बार भी तार मिलते ही वह उससे मिलने के लिए चल पड़ी थी।

देवीदयाल के क्रियाकर्म और श्राद्ध के पश्चात् मक्खनी गाँव में रखा सब धन-सम्पदा लेकर होशियारपुर आपने भाई के घर पर चली गई थी। यह बात सितम्बर 1942 की थी। तब से मक्खनी और भगवती की भेंट नहीं हुई थी और न ही उसका कोई समाचार मिला था। इस कारण मथुरासिंह के जीवित होने का समाचार मिल जाने पर भी वह मक्खनी अथवा राधा को बताया नहीं जा सका।

सूरतसिंह और उसकी पत्नी, मथुरासिंह के कोचीन को स्थानान्तरित हो जाने पर जब दिल्ली से अपने गाँव को लौट रहे थे, तो भगवती ने पति से कहा, "इस बार होशियारपुर में मक्खनी का पता करना चाहिए।"

"कैसे पता किया जाए, मैं तो उसके भाई का नाम भी नहीं जानता?"

"किसी अग्रवाल बनिये से पूछने पर शायद पता लग जाये।"

"भगवती। जमादारपुर की तरह होशियारपुर कोई छोटा-सा गाँव तो है नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ पता लगना सम्भव नहीं ब उनकी खोज करने में कोई कारण भी नहीं समझता। ऐसे प्रतीत होता है कि मथुरा को अब राधा में रुचि नहीं है।"

"मैं समझती हूँ कि उसने उसके विवाह हो जाने का अनुमान लगा लिया है, इस कारण उसने उसका कोई उल्लेख नहीं किया होगा।"

सूरतसिंह चुप रहा। उसके मन में मथुरासिंह का बनिये की लड़की से विवाह करने में कोई उत्साह नहीं था। यही बात वह मथुरासिंह के मन में भी समझ रहा था। परन्तु होनि प्रबल है। जब ये लोग होशियापुर से बरौड़ा के लिए बस-स्टेशन पर पहुँचे तो मक्खनी को भी बस में बरौड़ा जाते हुए उन्होंने देखा। भगवती ने सूरतसिंह को बताया, "राधा की माँ मक्खनी भी इसी बस में बैठी है।"

सूरतसिंह ने उसको देखा तो कहने लगा, "उसको यहीं बुला लो।"

भगवती उठी और मक्खनी को अपने पास ले आई। उसने जमादार को हाथ जोड़ अभिवादन किया और भगवती के पास बैठ गई। भगवती ने कहा, "हम दिल्ली से आ रहे है। पिछले एक मास तक मथुरासिंह वहीं था, हम उसके पास ही गए थे। उसकी मृत्यु का समाचार गलत था।"

आश्चर्य से मक्खनी के मुख से निकला,"सत्य? यह तो बहुत ही शुभ समाचार है। बहुत-बहुत बधाई हो। भापा! यह भगवती बहन और राधा के विश्वास की जीत है।" उसने जमादार की ओर देख कहा, "यह किस प्रकार हुआ ?"

"भाग्य की बात है। एक सुरंग फटी और एक मकान गिर पड़ा। मथुरासिंह के अन्य साथी तो उस मकान में दबकर मर गए और वह शत्रुओं के हाथ पड़ गया। उसको बन्दी बनाकर वे उसे अपने देश में समुद्री जहाज में ले जा रहे थे कि अंग्रेजों की एक पनडुब्बी ने तारपीडो मार जहाज को उड़ा दिया। मथुरासिंह और शत्रुओं के चार अफसर एक किश्ती में बैठ गए। बीस दिन तक बिना अन्न-जल के समुद्र में तैरते रहे। इस प्रकार अचेत और मरणासन्न अवस्था में वे अंग्रेजों के एक जहाज के हाथ लग गए। मथुरासिंह बच गया। एक वर्ष वह फिर विलायत में रहकर हिन्दुस्तान आ गया है और कल कोचीन चला गया है।"

मक्खनी कहने लगी, "राधा के मामा ने उसके लिए लाहौर के एक धनी-मानियों के घर रिश्ता ढूंढा था। पहले तो राधा इन्कार करती रही, परन्तु जब सगाई का दिन निश्चित हो गया तो उसने विष पी लिया। बहुत कठिनाई से बची है। उसका मामा इससे डर गया है। और उसने यह वचन दिया है कि युद्ध के अन्त होने तक उसके विवाह की चर्चा नहीं की जायेगी। वह सदा यही कहती है कि आपका पुत्र जीवित है और उसका विवाह उसी के साथ होगा।"

सूरत सिंह बोला, "भगवान की इच्छा के बिना तो कुछ भी नहीं हो सकता।"

मक्खनी अपने एक सम्बन्धी से मिलने के लिए बरौड़ा जा रही थी। वह वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतर गई। उसके जाने पर भगवती ने कहा, मुझे तो इस सब में ईश्वर का हाथ प्रतीत होता है। देखिये, मैंने उससे मिलने की इच्छा की और वह मिल गई।''

इस भेंट का परिणाम यह हुआ कि कुछ दिनों बाद राधा अपनी माँ को साथ लेकर भगवती से मिलने के लिए आ गई। कई दिनों तक वे इनके घर पर रहे और फिर मेल-मुलाकात घनिष्ठ होने लगी।

जब मथुरासिंह के कोचीन से घर आने का समाचार आया तो भगवती तथा सूरतसिंह होशियारपुर जा पहुँचे और रात मक्खनी के भाई के घर पर ही रहे। गाड़ी प्रातः तीन बजे आती थी।

होशियारपुर स्टेशन आने से पहले ही मथुरासिंह जाग गया था। कपड़े पहन उतरने के लिए उसने द्वार खोला तो प्लेटफार्म पर उन सब लोगों को उसने देख लिया।

गाड़ी रुकी। जब तक ये लोग डिब्बे के पास पहुँचे, मथुरासिंह ने तब तक डिब्बे में से अपना सामान उतार लिया था और वह बाहर आ गया। उसने आगे बढ़कर अपने माता-पिता के चरण-स्पर्श किये। माँ ने पीठ पर हाथ फेर प्यार दिया और पिता ने पुत्र को गले लगाया। मथुरासिंह इनसे निपट मक्खनी की ओर बढ़ नमस्कार करने लगा तो राधा ने उसके चरण-स्पर्श कर दिए।

''राधा! कैसी हो?'' उसने पूछा।

वह आँखे नीचे किए खड़ी रही, उत्तर में कुछ नहीं कहा। उसकी माँ ने कहा, ''हमको तुम्हारी बुरी खबर सुनकर कभी विश्वास भी नहीं आता था। ईश्वर की कृपा से मन की साध पूरी हुई। बेटा! अब घर कब तक आओगे?

''चाची अभी मेरा काम पूर्ण नहीं हुआ। इसमें अभी कुछ समय लगेगा।''

सब होशियारपुर से जमादारपुर चले गए। मक्खनी ने अपना घर खुलवाया। उसकी मरम्मत कराई और उसी में रहने लगी। राधा के विषय में यह विख्यात हो गया था कि उसका विवाह मथुरासिंह से होगा। इस कारण वह अब सूरतसिंह के घर पर नहीं जाती थी।

पलक की झपक की भांति एक मास व्यतीत हो गया और मथुरासिंह अपनी ड्यूटी पर जाने की तैयारी करने लगा। राधा ने जाने के पूर्व उससे कहा, ''मैं हिंदी में पत्र लिख और पढ़ सकती हूँ और मैं और माँ अब इसी गाँव में रहने वाली हैं।''

इसका अभिप्राय यह था कि वह उसको पत्र लिखे और वह उसका उत्तर देगी। मथुरासिंह ने कहा, ''अच्छा, मैं तुम्हें पत्र लिखूंगा।''

बस इससे अधिक कोई बात नहीं हुई। मथुरासिंह को राधा के विषपान का समाचार मिल गया था। वह यह समझ रहा था कि अब उसके सभी सम्बन्धी उन दोनों के विवाह में सहमत हो गये हैं। अतः कोचीन पहुँचकर मास में एक पत्र वह राधा को भी लिखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह के कोचीन में रहते-रहते ही योरुप का युद्ध समाप्त हो गया। दूसरी ओर जापान की भी करारी पराजय हो रही थी। इस प्रकार 1945 आ गया। भारत में भी भारी परिवर्तन होने की आशा बांधी जा रही थी। पुनः वर्ष में एक मास की छुट्टी का अवसर आ गया। मथुरासिंह ने जमादारपुर में अपने पिता को लिखा कि उसे छुट्टी मिलने वाली है और वह एक मास के लिए घर आयेगा। पिता का तार आया, "हम दक्षिण घूमने जा रहे हैं, तुम हमें बम्बई कब मिलोगे?"

मथुरासिंह ने छुट्टी ली और पिता को तार दे दिया। उसने अपने बम्बई रवाना होने की सूचना दे दी। इस प्रकार नियत तिथि से एक दिन पहले ही वह बम्बई पहुँच गया। वहाँ मेरीन ड्राइव पर एक होटल में ठहर गया। उस दिन सायँकाल वह समुद्र के तट पर बने प्लेटफार्म पर घूम रहा था कि अपनी नौकरानी के साथ फ्लोरा वहाँ सैर करती दिखाई दी। उस नौकरानी ने ही मथुरासिंह को पहले देखा और उसने फ्लोरा को बता दिया, "मैडम, वह देखिए मिस्टर सिंह जा रहे हैं।"

देखा तो उन लोगों को मथुरासिंह ने भी था, किन्तु वह आँख बचाकर निकल रहा था। परन्तु अब फ्लोरा उसके सामने आकर खड़ी हो गई। मथुरासिंह ने देखा और विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "हलो मिसेज गौर्ट! अभी आप हिन्दुस्तान में ही हैं क्या?"

"हाँ। मुझे 'सारा' ने बताया था कि आप हिंदुस्तान में आ गये हैं और उसको दिल्ली स्टेशन पर मिले थे।"

दोनों साथ-साथ चलने लगे थे। नौकरानी कुछ पीछे थी। फ्लोरा ने बात जारी रखते हुए कहा, "मैंने युद्ध-कार्यालय से आपका पता करना चाहा था, परन्तु यहाँ आप अविख्यात सिपाही मात्र हैं। आपको कोई भी नहीं जानता। मैंने ब्रिगेडियर जनरल मिस्टर सिंह के नाम से पता करना चाहा, आपका नाम उस सूची में नहीं था। मैंने आपकी लन्दन में ख्याति और कार्य-कुशलता का उल्लेख कमाण्डर-इन-चीफ से किया। वह आपकी पूर्ण कथा से अनभिज्ञ था। मैंने लेफ्टीनेंट के रैंक के अधिकारियों की सूची देखी, उसमें भी आपका नाम नहीं था।"

"इस पर भी फ्लोरा! मैं हिन्दुस्तान में हूँ और एक लेफ्टीनेंट के पद पर कार्य कर रहा हूँ।"

"मैं तो यह समझती हूँ कि हिंदुस्तानीयों के काम करने का'ढंग ही अजीब' है। यहाँ कुछ भी काम ढंग से और समय पर नहीं होता। कदाचित् यह यहाँ की गर्मी और सीलवाली हवा का प्रभाव है। लन्दन में इस तरह चलने वाला पाँव के नीचे कुचला जाता है।"

सिंह हँस पड़ा। उसने बात बदलते हुए कहा, "आप यहाँ किस प्रकार आई हैं। आपकी नौकरानी से पता चला कि आप अपने पति के साथ यहाँ आयी हैं? वह कहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है इस समय, और आप यहाँ क्या कर रही हैं?''

''लार्ड गौर्ट का देहान्त हो गया है, इस कारण विलियम गौर्ट अब लार्ड गौर्ट और मैं लेडी गौर्ट हूँ।''

''तब तो बधाई देनी चाहिए।''

''हाँ, मेरे पति रायल इण्डियन नेवी में एडमिरल हैं। वे अरेबियन सी में नेवल एक्सरसाइज़ेज देखने के लिए गये हुए हैं और मैं उनके लौटने की प्रतीक्षा में यहीं ठहरी हुई हूँ। वे एक सप्ताह तक लौटेंगे।''

''कहाँ ठहरी हो?''

''फ़ोर्ट में। वहाँ एडमिरल के लिए एक बंगला बना हुआ है। बंगला बहुत बड़ा है परन्तु फर्नीचर किसी काम का नहीं।''

''मेरा ख्याल है अब तक तो तुम दो बच्चों की माँ बन ही गई होगी?''

फ्लोरा गम्भीर हो गई और पूछने लगी, ''आपके अनुमान से मैं कितने बच्चों की माँ-जैसी दिखाई देती हूँ?''

मथुरासिंह ने उसे सिर से पाँव तक देखकर कहा, ''सूरत-शक्ल में तो तुम वैसी ही फ्रेश और ब्यूटिफुल हो, परन्तु तुम्हारे विवाह को अब तीन साल हो रहे हैं इससे अनुमान है कि एक बेबी तो हो ही जाना चाहिए।''

''मुझे यह सुनाते हुए खेद है कि लार्ड गौर्ट अभी तक मुझे एक भी बच्चा नहीं दे सके।''

''अच्छा?''

''हमारा विवाह एक भूल थी। आप कहाँ ठहरे हैं?''

''मैं यहाँ एक हिन्दुस्तानी होटल मिनर्वा में ठहरा हूँ। दस रुपये प्रतिदिन पर कमरा है। भोजन जहाँ और जितना खा लिया।''

''यह तो काफी सस्ता है?''

''आप तो जानती ही हैं कि मैं एक गरीब लेफ्टीनेन्ट हूँ। आप एक लार्ड और भारत के एडमिरल की पत्नी हैं।''

''किधर जा रहे हैं आप?''

''मैं तो निरुद्देश्य घूमने निकला था। एक मास के अवकाश पर हूँ। यहाँ अपने माता-पिता के आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।''

''चलिए, आपके होटल के दर्शन कर लूँ।''

''आइये, परन्तु देखकर आपको निराशा ही होगी।''

''चलिए, वहाँ से मैं आपको अपने बंगले में ले जाऊंगी। वहाँ हम लंच लेंगे।''

मथुरासिंह लौट पड़ा। उसने टैक्सी पकड़ी और मिनर्वा होटल जा पहुँचा। फ्लोरा ने कमरा देखा। देखकर उसने कहा, ''रुपयों के विचार से तो कमरा अच्छा है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर भी आप की स्थिति के योग्य नहीं है।"

"मेरी स्थिति वालों के लिए यह महंगा है। परन्तु मैंने यह बड़ा कमरा इसी कारण लिया है कि मेरे माता-पिता कल यहाँ आकर ठहरेंगे।"

"मैंने उन्हें दिल्ली में देखा था। उनके साथ एक लड़की भी थी। वह, मुझे सन्देह की दृष्टि से देखती रही थी।"

"उससे मेरी सगाई हो चुकी है। युद्ध-समाप्ति पर विवाह होगा।"

"ओह, परन्तु यहाँ हिन्दुस्तान में कहीं युद्ध के चिह्न भी हैं?"

"हाँ, हैं तो। नगरों, कस्बों, गाड़ियों और सड़कों पर सैनिक घूमते-फिरते दिखाई देते हैं। अमेरिकन तथा ब्रिटिश सैनिकों की भी यहाँ कमी नहीं है।"

"हाँ, भारत सैनिक कैम्प तो है परन्तु यहाँ युद्ध की चहल-पहल नहीं है। एक समय था कि लन्दन का वायु-मण्डल बारूद की गंध से भर गया था। यहाँ तो नाच-रंग, गाना-बजाना, खाना-पीना वैसे ही चलता है जैसे कोई विवाहोत्सव मनाया जा रहा हो।"

मथुरासिंह ने उत्तर नहीं दिया। फ्लोरा ने घड़ी में समय देखा और बोली, "चलिये, अब भोजन का समय हो गया है।"

मथुरासिंह पिछले कमरे में गया और अपनी यूनिफॉर्म पहनकर फ्लोरा के साथ चल पड़ा।

10

मथुरासिंह अपने माता-पिता को लेने के लिए विक्टोरिया टरमिनस स्टेशन पर जा पहुँचा। गाड़ी आई और उसमें से उसके माता-पिता के साथ राधा और मक्खनी भी नीचे उतरे। मथुरासिंह अवाक् खड़ा रह गया। कुछ ही क्षणों में वह प्रकृतिस्थ हो गया और उसने अपने माता-पिता के चरण-स्पर्श किये और चाची को नमस्कार किया। राधा ने उसको प्रणाम किया। राधा ने उसकी हड़बड़ाहट को ताड़ लिया था और जब वे स्टेशन से बाहर को जा रहे थे, राधा ने साथ-साथ चलते हुए पूछ लिया, "मेरा आना ठीक नहीं हुआ न।"

"नहीं राधा! ऐसी कोई बात नहीं। इस पर भी इतनी दूर केवल मुझसे ही मिलने के लिए यात्रा करने की बात समझ मन में कुछ गुद-गुदी अवश्य हुई थी।"

"क्या गुदगुदी हुई थी?"

"यही कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ जो तुम दोनों—माँ-बेटी मेरे प्रति प्रेम और सहानुभूति रखती हो।"

राधा ने बात बदलकर कहा, "महीने में आपका एक पत्र प्राप्त कर मेरा मन भरता नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा तो भविष्य में पन्द्रह दिन में एक लिख दिया करूंगा।"

"नित्य नहीं लिख सकते?"

मथुरासिंह हँस पड़ा। इस समय वे स्टेशन से बाहर आ गये। दो टैक्सी की गयीं और सबको लेकर मथुरासिंह अपने होटल में जा पहुँचा। वहाँ एक अन्य घटना घटी। होटल के रिसेप्शन-रूम में फ्लोरा अकेली मथुरासिंह की प्रतीक्षा कर रही थी। गाड़ी आधा घण्टा लेट आई, इसलिए फ्लोरा को भी प्रतीक्षा करते इससे अधिक समय हो गया था।

राधा ने उसको देखा तो पहचान गई और उसको स्मरण हो गया कि यह लड़की दिल्ली से मथुरासिंह के साथ काहिरा को हवाई जहाज में गई थी। इससे उसको दोनों में घना सम्बन्ध प्रतीत होने लगा। इस पर भी अति संयमपूर्वक उसने अपने हाव-भाव को नियन्त्रित कर अपना व्यवहार किया।

मथुरासिंह ने जब फ्लोरा को आया देखा तो अपने माता-पिता को उसका परिचय हिन्दुस्तान के एडमिरल की पत्नी के रूप में दिया। फ्लोरा बोली, "मुझे कल मिस्टर सिंह से विदित हुआ था कि आज आप लोग आने वाले हैं। मेरे मन में विचार आया कि मैं आप लोगों से पहले भी मिली हूँ, उस समय मैं अपने माता-पिता के साथ थी। इस कारण आज आपके दर्शन करने चली आई हूँ। साथ ही मैं आप सबको मध्याह्न-भोजन का निमन्त्रण भी दे रही हूँ।"

मथुरासिंह ने उसके कहने का अर्थ अपने पिता को समझाया तो उसने उससे पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"

"भापा! इसका पति ऐसी पदवी पर है जैसी सेना के कमाण्डर-इन-चीफ की होती है। इससे इसके निमन्त्रण को अस्वीकार नहीं कर सकते।"

"किन्तु हम माँस आदि तो खा नहीं सकेंगे?"

"यह साग-भाजी बनवा देगी।"

"पूछ लो।"

मथुरासिंह ने कहा, "पिताजी कहते हैं कि आपको बहुत असुविधा होगी। क्योंकि ये लोग न माँसाहारी है और न मद्यसेवी।"

"तो ऐसा करिये, इनको शाम की चाय के लिए मेरी ओर से सायं चार बजे 'ताज' पर निमन्त्रण दे दीजिए। बात यह है कि मैं आपकी मंगेतर से मित्रता उत्पन्न करना चाहती हूँ।"

"परन्तु वह तो तुम्हारी बात समझ नहीं सकेगी?"

"अब मैं टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोलने लगी हूँ।"

"सत्य?"

"हाँ, एक वर्ष से एक शिक्षक रखा हुआ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो तुम दोनों की बात सुनने में आनन्द आयेगा।"

मथुरासिंह ने राधा के समीप जाकर कहा, "फ्लोरा तुमसे परिचय बढ़ाना चाहती है।"

"किसलिए?"

"कहती है कि तुम बहुत प्यारी हो, उसकी तुमसे मित्रता करने की इच्छा है।"

"मुझे तो कुछ और ही समझ में आ रहा है?"

"क्या?"

"कुछ नहीं, चलिए मेरे समीप बैठियेगा। मुझे उससे डर लगता है।"

"नहीं, डर कैसा? वह तुमसे हिन्दुस्तानी में ही बात करेगी।"

राधा उठकर फ्लोरा के समीप जा बैठी। राधा ने हाथ जोड़े तो फ्लोरा ने उसके दोनों हाथ पकड़कर कहा, "बहिन! यह न। हम दोनों...दोस्त।" अब वह आगे कहने के लिए शब्द ढूंढने लगी। उपयुक्त शब्द न पा उसने राधा को अपने समीप खींचकर उसे अपने अंग से लगा लिया।

उसने फिर यत्न करते हुए कहा, "मिस्टर सिंह कहता, तुम...मंगेतर हो...ठीक. ..बहुत...खुश...है।"

राधा की हंसी निकल गई। बोली, "बहिन! क्या नाम है तुम्हारा?"

"नाम...फ्लोरा...फ्लोरा गोर्ट। और तुमको?"

"राधा।"

"कहा रहती..."

"जमादारपुर।"

"गाँव...में।"

राधा ने सिर हिला कर हाँ कहा।

"तुम मेरे...साथ...मेरे...घर आओ। हम बहिन...दोस्त बनेगा।"

राधा मुस्कराकर चुप रही। फ्लोरा ने मथुरासिंह को अपना आशय समझाया तो मथुरासिंह ने कहा कि वह उसकी बात समझ गई है।

"पर उत्तर नहीं दिया?"

"यहाँ कुमारी कन्याएँ किसी के घर अकेली नहीं जाया करतीं।"

"तो अपनी माँ को साथ ले आए।"

मथुरासिंह ने राधा को समझाया। उसने कहा, "यह चाहती है कि तुम्हारी सखी बन जावे। इसलिए तुमको अपने घर चलने का निमन्त्रण दे रही है। घर पर इसका पति नहीं है, केवल नौकरानी है।"

"आप क्या कहते हैं?"

"मैं इसमें कोई हानि नहीं समझता पर अपनी माँ को साथ ले जाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो जाऊंगी। आप भी चलेंगे?"

"मुझे तो निमन्त्रण दिया नहीं।"

"तो फिर क्या करूंगी जाकर?"

"इसको अपने गाँव और समाज की बात बताना।"

"भोजन करके चलेंगे।"

"मैं नहीं जा सकूंगा। मुझे पिताजी से बहुत बातें करनी हैं।"

राधा और मक्खनी के लिए वहीं एक अन्य कमरा ले लिया गया। फ्लोरा और राधा बातें करती रहीं। फ्लोरा ने मध्याहन-भोजन वहीं किया और फिर राधा और उसकी माँ को ले वह अपने बंगले में चली गई।

शाम को चाय-पान से पूर्व रेडियो द्वारा जापान में हिरोशिमा पर एटम बॉम्ब फेंके जाने का समाचार प्रसारित किया जा चुका था। समाचार इस प्रकार था—पिछली रात हिरोशिमा पर अमेरिका ने हवाई जहाज से एटम बॉम्ब गिराया है। इसके फल-स्वरूप पूर्ण नगर ध्वस्त हो गया है। आधे से अधिक नगर का भाग धू-धू कर जल रहा है। यह अनुमान है कि पाँच लाख की आबादी वाले नगर में एक लाख से ऊपर आदमी केवल इस एक बॉम्ब से मारे गये हैं।

फ्लोरा ने चाय पर मथुरासिंह को यह समाचार सुनाया। यह सुनकर वह स्तब्ध रह गया। सूरतसिंह ने उसको इस प्रकार अवाक देख कर पूछ लिया, "क्यों क्या हुआ है?"

"अमेरिका के एक एटम बम ने जापान के एक नगर हिरोशिमा का विध्वंस कर दिया है।"

"तो परेशान किसलिए हो रहे हो? मैं तो इसको यह अर्थ समझ पाया हूँ कि युद्ध शीघ्र समाप्त हो जाएगा और तुमको छुट्टी हो जाएगी और फिर राधा का विवाह हो जायेगा।

फ्लोरा सूरतसिंह की बात कुछ-कुछ समझ रही थी। उसने पूछा, "तुम्हारे पापा इससे प्रसन्न हैं क्या?"

"बहुत।"

"क्यों?"

"इसलिए कि युद्ध शीघ्र समाप्त हो जाएगा? सहस्रों शूरवीर, जो मानव-समाज की श्रेष्ठ विभूति हैं, मरने से बच जायेंगे। युद्ध के समाप्त करने में जो अरबों डालर लगने वाला था, वह बच जाएगा और अनेक वीरों को पत्नियों का सुहाग स्थिर रहेगा।"

"और वे निरपराध जो मारे गए हैं?"

"वे निरपराध कैसे हो गए? उन्होंने अपने देश में असुरों को राजा बना रखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वे ही युद्ध की सामग्री तैयार कर युद्ध को लम्बा कर रहे थे। उनके हित को लक्ष्य करके ही वहाँ के शासक युद्ध चला रहे थे।''

''परन्तु एटम बम तो उनके हाथ में भी आ सकते थे। यह तो घटनावश ही है कि वह अमेरिका के हाथ में आ गया।''

''नहीं फ्लोरा! यह घटना-मात्र नहीं है। यह उन तानाशाह अफसरों की नीति का परिणाम है कि सब विद्वान लोग जर्मनी से भाग गए थे। यह अमेरिका और इंग्लैंड की उदार नीति का परिणाम है कि वे वहाँ संरक्षण प्राप्त कर सके। अंग्रेजी सरकार पर्याप्त साधन न होने के कारण अमेरिका की सहयोगी बन कर उनसे लाभ में भागीदार बन गयी।''

''इस पर भी मिस्टर सिंह! यह घटना ऐसी है कि इससे पूर्ण मानवता काँप उठेगी।''

''कैसी मानवता? जो जर्मनी के इंगलैंड की राजधानी लन्दन पर बम फेंकने पर प्रसन्नता व्यक्त करती थी? देखो फ्लोरा! मैं तुमको एक उदाहरण देता हूं। मुसलमानों में मुर्गी को छुरी से धीरे-धीरे काटने और साथ कलमा पढ़ते जाने को हलाल कहते हैं। मुर्गे की गर्दन पकड़कर उसको एक क्षण में मार डालने को वे हराम समझते हैं। मुर्गा तो दोनों अवस्थाओं में मारा जाता है। परन्तु एक में तड़प-तड़प कर, दूसरे में एक क्षण में। तुम किसको पसन्द करती हो!''

''इसमें पहला तरीका तो बहुत निर्दयतापूर्ण है।''

''परन्तु मुसलमान पहले को पुण्यमय समझते हैं और दूसरे को पापमय। यही बात अब तुम कह रही हो। तुम धीरे-धीरे युद्ध में सैनिकों को मारने को पुण्य कह रही हो और एटमबम जो अब चिरकाल के लिए युद्ध बन्द कर देगा, को पाप कह रही हो।''

फ्लोरा मथुरासिंह की अकाट्य युक्तियों को इस समय पुनः सुनकर प्रसन्न हो रही थी। जबलपुर में उसकी इसी प्रकार की युक्तियों को वह सुन चुकी थी। वही मथुरासिंह अब पुनः उसके सामने बैठा एटमबॉम्ब चलाने को पुण्य कार्य बता रहा था।

अगले दिन से दुनिया-भर समाचार-पत्रों में मानवता की डुग्गी पीटी जाने लगी थी। इन मिथ्या मानवतावादियों के कोलाहल को सुनकर जापान जो हथियार डालने की तैयारी कर रहा था, वह सोचने लगा कि कदाचित् इस कोलाहल के कारण इंगलैंड तथा अमेरिका की सरकारें अपने इस कृत्य पर पश्चाताप करेंगी और पुनः इस भयानक अस्त्र का प्रयोग नहीं करने की घोषणा कर देंगी।

यह आशा थी कि युद्ध पुनः उसी कछुए की चाल से चलेगा, वीर लोग मरते रहेंगे, मजदूर-जन कारखानों में पिसते रहेंगे और वकील लोग मन्त्रि-मंडलों में बैठ व्याख्यान झाड़ते रहेंगे।

परन्तु ऐसा हो नहीं सका। एक सप्ताह के भीतर नागासाकी पर दूसरा एटम बम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिराया गया। साथ ही अमेरिका के प्रधान ने घोषणा कर दी कि उसके पास ऐसे एक दर्जन बॉम्ब तैयार रखे हैं।

इस पर जापान ने हथियार डाल दिये।

11

दूसरा एटम बॉम्ब चलते समय मथुरासिंह के परिवार के लोग कन्याकुमारी के दर्शन कर रहे थे। वहाँ से त्रिवेंद्रम आने पर उन्होंने यह समाचार पढ़ा और साथ ही यह भी पढ़ा कि जापान के प्रधान-मंत्री ने युद्ध-विराम के लिए प्रार्थना की है।

अगले दिन अमेरिका के प्रधान ने कहा कि जापान की युद्ध-विराम की प्रार्थना अस्वीकार की गई है। अमेरिका पूर्ण समर्पण चाहता है। इस घोषणा के कुछ ही घंटों बाद जापान ने हथियार डाल दिये।

जब तक मथुरासिंह अपने अवकाश के दिनों में उनको दक्षिण के तीर्थों का भ्रमण करा तथा जमादारपुर छोड़ कोचीन पहुँचा, तब तक विश्व में पूर्ण शान्ति हो चुकी थी।

जर्मनी तो पहले ही शान्त हो चुका था। जापान को दो एटम बॉम्ब ने शान्त कर दिया।

युद्ध का अन्त हुआ एटम बॉम्बों से, और इसने इंगलैंड की कन्ज़र्वेटिव पार्टी को पराजित करा, लेबर पार्टी को सत्ता पर ला बैठाया। हिन्दुस्तान में गांधी इत्यादि छोड़ दिये गए और विधान में सुधार की बातें होने लगीं। गांधीजी अपनी अहिंसात्मक नीति की विजय की घोषणा करने लगे। भारत सरकार सुभाष बाबू द्वारा निर्मित आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को पकड़कर उनका कोर्टमार्शल करने का विचार करने लगी। पण्डित जवाहरलाल नेहरू उनको छोड़ देने की माँग करने लगे।

जबलपुर, बम्बई कराची तथा कलकत्ता में सैनिकों में बग़ावत फैलने लगी। इन सब हलचलों का परिणाम हुआ भारत को पूर्ण स्वराज्य देने की घोषणा करने के लिए शिमला में कान्फ्रेंस बुलाई गई। इस कान्फ्रेंस के असफल होने पर नव-निर्वाचन हुए। तदनन्तर केबिनेट मिशन आया। वह भी अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हुआ। हिन्दु और मुसलमान वकील बातें बनाते रहे। इस पर मुस्लिम लीग ने कलकत्ता में गृह-युद्ध की चुनौती दे दी। हिन्दुओं की एकमात्र संस्था कांग्रेस ने इस चुनौती को अस्वीकार किया और कबूतर की भांति आँखें मूंद वकीलों की-सी बातें करती रही। हिन्दुओं में गृह-युद्ध की चुनौती को स्वीकार करने के लिए जनमानस तुरन्त तैयार हो गया, कलकत्ता में उन्होंने इसका परिचय भी दिया। बिहार और यू. पी. में भी वैसा ही हुआ। परन्तु वकील नेता इन हिन्दुओं को देश द्रोही ही कहते रहे।

विचित्र बात तो यह थी महात्मा गांधी और उनके चेले, हिन्दू वकील नेता उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानों को, जिन्होंने गृह-युद्ध आरम्भ किया था, भटके हुए किन्तु देशभक्त ही मानते थे और जो हिन्दू उस गृह-युद्ध की चुनौती को स्वीकार कर रहे थे, उनको देश, जाति और धर्म का विरोधी मानते थे।

हिन्दू जनता, जो युद्ध करने के लिए तैयार थी, नेता-विहीन होने से मरती-कटती रही। जहाँ उसका दाँव चला, वह अपनी चलाती रही, परन्तु नेतागण शान्ति-शान्ति की पुकार करते रहे।

परिणाम वही हुआ, जो हो सकता था। घाटे में वे ही रहे, जो आँखें मूंदे कबूतर की भांति शान्ति की कूक लगा रहे थे। पाकिस्तान बना और...और...भारत का राज्य उनके हाथों में चला गया जो बाल्डविन, चैम्बरलेन अथवा एटली की हिन्दुस्तानी प्रतिलिपि थे।

युद्ध लड़े जाते हैं शान्ति स्थापित करने के लिये। शान्ति-काल में जो युद्ध के लिए तैयार नहीं रहते और युद्ध-काल में भी जो युद्ध करने से संकोच करते हैं एवं उसको घृणित कार्य मानते हैं, वे ही एक प्रकार से भावी युद्धों का बीजारोपण करते हैं।

'वीर भोग्या वसुन्धरा।' वसुन्धरा का अर्थ—भूमि, धन, सम्पदा, सुख और शान्ति है। ये सब-कुछ वीरों के लिए भोग्य हैं। वीर मन-वचन-कर्म से होते हैं। केवल बातों के पहलवानों के लिए यह उपाधि नहीं है। परन्तु यह कलयुग है। वकील जो बातों के ही पहलवान है, भोग पर भोग लगा रहे हैं। यह स्थिति भविश्य में विश्व की अशान्ति को आमन्त्रण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

युद्ध-काल में भरती किये गए सैनिकों की छटनी की जा रही थी। मथुरासिंह की रेजिमेंट भी इनमें थी।

उस रेजिमेंट में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं था, जो सेना का कार्य छोड़ना चाहता हो। सभी इस आशय का प्रार्थना-पत्र देने की इच्छा रखते थे कि वे सैनिक जाति के घटक होने से सैनिक कार्य को अपना जातीय कार्य समझते हैं। देश में स्वराज्य स्थापित हो गया है। अतः अब वे अपने देश की सेवा करने की इच्छा करते हैं।

मथुरासिंह की रेजिमेंट इस समय अम्बाला छावनी में ठहरी हुई थी। वहीं उनके लिए सूचना आ पहुँची कि राजपूत एक सौ बीस को 'डिसबैंड' किया जाता है और यदि इस विषय में किसी को कुछ कहना हो तो वह सैनिक मुख्यालय, नई दिल्ली को अपना प्रार्थना-पत्र भेज सकता है। उस सूचना में प्रार्थना-पत्र देने की अन्तिम तिथि की घोषणा भी थी। लेफ्टिनेन्ट मथुरासिंह को पृथक् आज्ञा-पत्र आया। उसमें लिखा था कि अपने सभी कागजात लेकर कमाण्डर-इन-चीफ द्वारा नियुक्त विशेष अधिकारी श्री एस. एन. थापर के समक्ष नई दिल्ली में उपस्थित हो जाय।

एक तो समय कम था और दूसरे सभी सैनिक नई दिल्ली कार्यालय में एक साथ उपस्थित भी नहीं हो सकते थे अतः मथुरासिंह को दिल्ली जाता सुनकर रेजिमेंट के अधिकांश सैनिकों ने एक संयुक्त प्रार्थना-पत्र पर हस्ताक्षर करके उसको दे दिया। उस प्रार्थना-पत्र में उनकी रेजिमेंट के विसंयोजित न करने की प्रार्थना की गई थी।

मथुरासिंह 25 अक्टूबर, 1947 की रात को अम्बाला से चलकर अगले दिन प्रातः दिल्ली पहुँचने वाला था। वह रेल में बैठा था। प्रातः काल होने पर गाजियाबाद स्टेशन पर उसको प्रातः का समाचार-पत्र मिला। उसमें उसने एक समाचार पढ़ा। समाचार था—'कश्मीर पर आक्रमण करने वाले कबाइलियों ने बारामूला में लूटमार मचा दी है। नगर का बहुत-सा भाग जल रहा है, श्रीनगर में इससे भगदड़ मच गई है।'

उक्त समाचार पढ़कर मथुरासिंह गम्भीर विचार में पड़ गया। वह समझता था कि यह आक्रमण कबाइलियों का नहीं हो सकता । उसके विचार में वह पाकिस्तान द्वारा कश्मीर को आत्मसात करने के लिए एक प्रयास था। इस पर वह विचार करता था कि कदाचित सेना को विसंयोजित करने की योजना स्थगित कर दी जाएगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार उसको सेना से मुक्त नहीं किया जाएगा।

प्लेटफार्म पर खड़ा वह समाचार-पत्र के मुख्य-मुख्य समाचार पढ़कर विचारमग्न खड़ा था कि किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा,

"हैलो, सिंह! किधर जा रहे हो?"

मथुरासिंह के कंधे पर हाथ रखने वाला व्यक्ति कार्ल माइकल था। वह मथुरासिंह के बराबर वाले डिब्बे में यात्रा कर रहा था। माइकल को देख, मथुरासिंह को बहुत प्रसन्नता हुई। दोनों मित्र मिले और एक-दूसरे का कुशल-समाचार पूछने लगे। बातें करते हुए वे मथुरासिंह के डिब्बे में चले गये और वहाँ पर बैठ, चाय मंगवाई गई। माइकल ने पूछा, "कहाँ से आ रहे हो और कहाँ जा रहे हो?"

"अम्बाला से आ रहा हूँ और दिल्ली जा रहा हूँ। हमारी रेजिमेंट विसंयोजित कर दी गई है, उसी सम्बन्ध में मैं यह यात्रा कर रहा हूँ।"

"ओह, मैं भी इसी कार्य के लिए जा रहा हूँ। मेरी रेजिमेंट इस समय पठानकोट में है।"

"परन्तु...।" मथुरासिंह कहते-कहते रुक गया।

"परन्तु क्या?"

"मेरे विचार से अब सेना-विसंयोजन की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये।"

"क्यों?"

"पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया है।"

"यह पाकिस्तान का आक्रमण है क्या? यदि है तो भी हमको कश्मीर से क्या?"

"कश्मीर भारत देश का एक स्वभाविक अंग है, उसे उसी प्रकार रहना चाहिये।"

"परन्तु वहाँ के महाराजा ने कश्मीर को भारत के साथ विलय तो किया नहीं।"

"नहीं किया तो अब कर देगा। एक राज्य को अपने पड़ोस के दुर्बल राज्यों की रक्षा का उत्तरदायित्व अपने पर लेना चाहिये।"

"यह पुराने जमाने की बात है, इससे तो युद्ध हो जाते हैं।"

"युद्ध क्यों हो जाते है?"

"दूसरे राज्य यह समझने लगते हैं कि हम अपने पड़ोसी राज्य के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहे हैं।"

"कौन दूसरे? जो स्वयं उस पर आक्रमण कर रहे हैं?"

माइकल जानता था कि मथुरासिंह की युक्ति के सामने परास्त होना पड़ता है। इसलिए वह चुप ही रहा। उसे चुप देख, मथुरासिंह ने बात बदलकर पूछा, "तुम्हारा विवाह हो गया है कि नहीं?"

"ओह! तुम्हें अभी इस विषय में विदित नहीं है? हाँ! तुम्हारे इंग्लैंड से लौटने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद तो हम आज ही प्रथम बार मिल रहे हैं।

"बात ऐसी है कि तुम्हारे जाने के बाद मुझे बर्मा फ्रन्ट पर भेज दिया गया था। वहाँ से हमारी रेजिमेंट जापानियों से चार्ज लेने के लिए सिंहापुर जा पहुँची। इस प्रकार मैं डेढ़ वर्ष तक हिन्दुस्तान से अनुपस्थित रहकर, 1945 में लौटा और छुट्टी लेकर अम्बाला गया तो मुझे विदित हुआ कि ऐलिस ने किसी सिविलियन अधिकारी से विवाह कर लिया था, और अब स्वराज्य मिलने पर वह अपने पति तथा एक बच्चे के साथ इंग्लैंड चली गई है।"

"इससे तो तुम्हें बहुत शोक हुआ होगा?"

"हाँ, निराशा तो बहुत हुई थी, परन्तु अब एक अन्य स्थान पर यत्न कर रहा हूँ।"

"कहाँ?"

"फिर किसी समय बताऊंगा। तुम दिल्ली में कहाँ ठहरोगे?"

"अभी सोच नहीं पाया।"

"तो मेरे साथ ही ठहरो।"

"तुम कहाँ ठहरोगे?"

"वाई. एम. सी. ए. होस्टल में।"

"मुझे वहाँ रहने देंगे?"

"मैंने एक कमरा अपने लिये ले रखा है, एक तुम्हारे लिये ले दूंगा।"

"क्या किराया देना होगा?"

"साठ रुपया मासिक।"

"मुझे महीना-भर तो रहना नहीं होगा।"

"किसी थर्ड क्लास होटल में ठहरने पर भी चार दिन में साठ रुपये लग ही जायेंगे। वहाँ तो मास-भर रह सकोगे। न रहना हो तो ताला लगाकर चले जाना। महीने के भीतर ही यदि पुनः आना पड़ जाय जो उसका उपयोग कर सकते हो।"

मथुरासिंह ने सुझाव स्वीकार कर लिया। फिर माइकल ने कहा, "वहाँ पिछले छः मास से मैंने एक कमरा रखा हुआ है। महीने में एक-दो चक्कर तो लग ही जाते हैं, मेरा किराया वसूल हो जाता है।"

बातों-बातों में दिल्ली स्टेशन आ गया और दोनों अपना सामान लेकर उतर गये। स्टेशन से टैक्सी में वे वाई. एम. सी. ए. जा पहुँचे। कमरा नम्बर इक्कीस माइकल के नाम पर था। वे अपना सामान उठा वहाँ पहुँचे तो मथुरासिंह ने देखा कि कमरा खुला है और उसमें कोई लड़की विराजमान है।

दोनों ही उसको देखकर झिझके। परन्तु माइकल ने तुरन्त स्वयं को संतुलित किया और उस लड़की से कहने लगा, "क्लैरा डार्लिंग! मेरे एक मित्र आये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लैरा ने द्वार पर आकर गुडमार्निंग किया। माइकल ने सिंह का परिचय कराते हुए कहा, " ये मिस्टर सिंह हैं, मेरे मित्र और साथी।"

क्लैरा ने सिर झुकाकर और मुस्कराकर मथुरासिंह का अभिवादन किया। दोनों मित्र जब भीतर पहुँचे तो माइकल ने सिंह को क्लैरा का परिचय देते हुए कहा, "ये हैं मिस क्लैरा क्लीमौंट। मेरी मंगेतर और स्वराज्य सरकार के गवर्नर-जनरल के एक स्टेनोग्राफर की सुपुत्री।"

दोनों ने परस्पर मिलने पर प्रसन्नता प्रकट की और फिर क्लैरा कहने लगी, "मुझे रात ही पता चल गया था कि आप आ रहे हैं।"

"हाँ, मैं तो पठानकोट से आ रहा हूँ, किन्तु मेरे ये दोस्त अम्बाला से बैठे हैं। रास्ते में भेंट हो गई तो मैं इनको अपने साथ ले आया। यत्न करके इनको एक कमरा पृथक् दिलवाना चाहिए। ये भी मेरी ही भांति सरकारी कार्य से आये हैं।"

"इस समय दो-तीन कमरे खाली हैं, इनके लिए कमरे का प्रबन्ध किया जा सकता है।"

"तब तो तुम यह व्यवस्था कर दो। मैं तब तक नित्यकर्म से निवृत्त हो जाता हूँ।"

क्लैरा मैट्रन से मिलने के लिए चली गई। उसके जाने पर माइकल बोला, "यह यत्न कर रही है कि मैं ब्रिटिश सेना में भरती होकर इसके साथ ही इंगलैंड चला जाऊँ।"

"कब होगा तुम लोगों का विवाह?"

"विवाह भी हो जायेगा। उसकी जल्दी न इसको है और न मुझे।"

"मैं तुमको इसके लिए बधाई देता हूँ। क्या मैं तुम दोनों को चाय पार्टी दे सकता हूँ?"

"अभी नहीं। यह नहीं चाहती कि हमारे सम्बन्ध के विषय में अभी किसी को विदित हो।"

"वैसे तो विवाह मेरा भी हो गया है। हमारे ही गाँव की एक लड़की है, मेरी बचपन की जानी-पहचानी।"

"ओह! तो वह भी तुम्हारे साथ अम्बाला में ही है?"

"नहीं, वह गाँव में ही है। महीने में एक-आध बार मैं वहाँ चला जाता हूँ।"

इतने में फ्लोरा एक कमरे की चाबी लेकर आयी और कहने लगी, "मैं चाबी ले आई हूँ। मैट्रन तो वहाँ थी नहीं। चपरासी को कह दिया है और नाम भी बता आई हूँ। मैट्रन आयेगी तो नाम वगैरह लिख लेगी और इनको एक मास का किराया अग्रिम जमा कराना होगा।"

"ठीक है।" अपना सामान उठाते हुए मथुरासिंह ने पूछा, "क्या नम्बर है कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का?"

"उन्नीस, इसी पंक्ति में अन्तिम कमरा है।"

मथुरासिंह गया तो क्लैरा ने कहा, "कमाण्डर-इन चीफ ने वचन दिया है कि वे आपको पाकिस्तानी सेना में भरती कर लेंगे। वहाँ से वे आपको लन्दन भेज देंगे। वैसे तो इंगलैंड में भी सेनाएं विसंयोजित की जा रही हैं। मिस्टर ऐटली शान्तिप्रिय व्यक्ति हैं और वे अब आगामी पचास वर्षों तक इंगलैंड के किसी भी बड़े युद्ध में सम्मिलित होने के पक्ष में नहीं हैं।"

"परन्तु क्लैरा! पाकिस्तान तो भारत से लड़ने के लिए तैयार है। क्या जाने वहाँ जाते ही मुझे फ्रन्ट पर जाना पड़ जाय।"

"नहीं, पाकिस्तान भारत के साथ नहीं लड़ रहा। कश्मीर पर तो कबाइलियों ने आक्रमण किया है। पाकिस्तान सरकार के सैनिक वहाँ नहीं लड़ रहे।"

"कबाइली तो शीघ्र ही परास्त कर दिये जायेंगे?"

"उनको परास्त कौन करेगा? राजा की सेनाएँ? वे हैं ही कहाँ? उनमें दो-तिहाई तो मुसलमान हैं और वे अवसर पाते ही कबाइलियों के साथ मिल जावेंगे। हिन्दू बहुत कम हैं। वे डरकर भाग जाते हैं। बारामूला तक तो कहीं भी जमकर मुकाबला नहीं किया था, उड़ी मे एक डोगरा कप्तान ने विरोध का निश्चय किया था, किन्तु उसके अधीनस्थ मुसलमान सैनिक ही उसको मारकर उसका सिर आक्रमणकारियों के पास ले गये और स्वयं उनकी सेना में जाकर मिल गये।"

"मैं समझता हूँ कि भारत सरकार कश्मीर की रक्षा के लिए आयेगी।"

"और मैं समझती हूँ जब तक भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू हैं, तब तक भारत की सेनाएँ युद्ध नहीं करेंगी।"

"क्यों और कैसे जानती हो?"

"गवर्नर-जनरल के निजी अधिकारियों में यह चर्चा है कि स्वराज्य प्राप्त करते ही पण्डितजी किसी बड़े युद्ध में फँसना नहीं चाहते।"

"तब तो ठीक है। मैं समझता हूँ कि पाकिस्तान की अपेक्षा हिन्दुस्तान बलवान है और यदि कहीं दोनों में युद्ध छिड़ गया तो पाकिस्तान तो पन्द्रह दिन में पराजित हो जायेगा।"

"हाँ, कमाण्डर-इन चीफ भी ऐसा ही कहते हैं। साथ ही वे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सेनाओं की मुठभेड़ नहीं होने देना चाहते। इस समय वे स्वयं ही इन दोनों देशों के कमाण्डर-इन-चीफ हैं।"

माइकल हँस पड़ा। उसने कहा, "यहाँ के नेताओं की बुद्धि बेमिसाल है। भला ऐसा भी कभी हुआ है कि ऐसे दो देश, जिनके नागरिक कुछ ही दिन पूर्व एक-दूसरे के रक्त के प्यासे थे, आज साझा सेनाध्यक्ष नियुक्त कर लें?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सुझाव भी भारत के प्रधान मंत्री का ही था।"

"ये गांधी और उसके चेले वास्तव में विचित्र जीव हैं।"

दोनों हँसने लगे। माइकल ने कहा, "मुझे स्नानादि कर सैनिक मुख्यालय जाना है, तुम तीन के लिए ब्रेकफास्ट का आर्डर कर दो।"

क्लैरा आर्डर देने चली गई और माइकल नित्यकर्म में लग गया।

नौ बजे दोनों मित्र और क्लैरा डाइनिंग हॉल में जा पहुँचे। मथुरासिंह और क्लैरा में बातें होने लगीं। क्लैरा ने पूछा, "मिस्टर सिंह! आपका विवाह हो चुका है?"

"हाँ।"

"कहाँ है आपकी पत्नी?"

"अपने गाँव में।"

"कितनी पढ़ी हुई हैं वे?"

"अंग्रेजी तो वह बहुत कम जानती है। हाँ, हिन्दुस्तानी अच्छी तरह लिख-पढ़ सकती है।"

"अंग्रेजी न जानने पर तो मज़ा नहीं रहेगा अन्यथा मैं उसको यहाँ बुलवा लेती?"

"हाँ, वैसे भी वह देहाती औरत है। उसे गाँव से बहुत प्रेम है, नगरों में रहना उसे भाता नहीं।"

"बहुत ही प्रिमिटिव ढंग की औरत है।"

मथुरासिंह ने मुस्कराते हुए कहा, "इस पर भी वह एप से उतनी ही दूर है, जितने हम और तुम।"

तीनों हँस पड़े। क्लैरा ने अपनी बात की व्याख्या करते हुए कहा, "मेरे कहने का अभिप्राय यह था कि उसका रहन-सहन और विचार प्रिमिटिव होंगे।"

"ऐसी कोई बात नहीं। एटम बॉम्ब की बात वह बहुत अच्छी तरह समझती है।"

"अच्छा, भला बिना विज्ञान पढ़े, वह किस प्रकार समझ लेती है?"

"वह कैसे समझती है यह तो मैं नहीं जानता, परन्तु जब मैंने उसको बताया कि जापान में एटम बॉम्ब गिरने से चिरकाल के लिए युद्ध बन्द हो गया है तो उसने कहा कि दूसरे देश भी इसको बनाना जान जायेंगे। वह कहती है कि एटम बॉम्ब बहुत सस्ते मूल्य पर भी बनाया जा सकता है। ये लोग बनाने का ढंग ही नहीं जानते।"

"ओह, तब तो उसकी कल्पना की दाद देनी ही चाहिए।" माइकल का कहना था।

"मैं उससे मिलने की इच्छा करती हूँ।"

"मैं विचार कर रहा हूँ कि मुझे आज छुट्टी मिल जायेगी। यदि ऐसा हुआ तो यहाँ से मैं अम्बाला जाऊंगा, वहाँ अपने अधिकारियों को चार्ज देकर अपने गाँव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाऊंगा और उसको लेकर दिल्ली आऊंगा। मैंने उसे वचन दिया हुआ है कि छुट्टी मिलते ही मैं उसे देश-विदेश की सैर कराऊंगा।"

इस पर माइकल ने कह दिया, "मिस्टर सिंह को छुट्टी मिल गई तो भारतीय सेना को अपार क्षति पहुंचेगी।"

"क्यों, इनमें ऐसे कौन से गुण हैं?" क्लैरा ने आश्चर्य से पूछा।

"ये युद्धनीति कि विशेषज्ञ हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध में इंगलैंड ने भारत से इनकी सेवाएँ मांगी थीं।"

"परन्तु कमाण्डर-इन-चीफ तो इनको जानता ही नहीं। एक दिन वह कह रहा था कि हिन्दुस्तान में कोई भी युद्धनीति-विशेषज्ञ नहीं है।"

"वह इसलिए कि जब मिस्टर सिंह इंगलैंड गए तो इनकी सर्विस-बुक ही गायब कर दी गई। इस पर भी यह रिकार्ड में है कि इंगलैंड से हिन्दुस्तान आने पर वेतन-स्वरूप कई सहस्र पौंड इनको मिला है।"

"कभी अवसर मिला तो मैं अपने डैडी से कहूंगी।"

"हाँ, हिन्दुस्तानी नौसेना के एडमिरल विलियम गौर्ट और उनकी पत्नी फ्लोरा गौर्ट इनके विषय में जानते हैं।"

माइकल के मुख से इस प्रकार की बात सुनकर मथुरासिंह को विस्मय हुआ। अपना संशय निवारण करने के लिए उससे पूछा, "तो फ्लोरा से तुम्हारी भेंट हुई है?"

"हाँ, एक दिन एडमिरल नई दिल्ली आया हुआ था कि लेडी गौर्ट कनॉट प्लेस में शॉपिंग करती हुई मुझे मिल गई। तुम्हारी वह बहुत प्रशंसा करती थी। एक दिन उसने अपने पति के साथ चाय पर मुझे आमन्त्रित भी किया था।"

2

मथुरासिंह सेना को विसंयोजित करने वाले अधिकारी के सम्मुख उपस्थित हुआ तो रेज़िमेंट के सैनिकों की इच्छा और उनका रिकार्ड देखकर पूछने लगा, "क्या उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जो सेना से मुक्त होना चाहता हो?"

"मैंने एक-एक को बुलाकर पूछा था, प्रायः सभी ने यही कहा कि सेना का कार्य उनका जातीय कार्य है और अब अपनी सरकार की सेवा करने के लिए तो वे हृदय से उत्सुक हैं।"

"परन्तु सरकार इतनी बड़ी सेना रखने की क्षमता नहीं रखती।"

"कितनी बड़ी है सेना?"

"युद्ध-काल में हिन्दुस्तान की सेना पच्चीस लाख थी। देश-विभाजन के समय पूर्ण देश की सेना दस लाख थी। सात लाख भारत की और तीन लाख पाकिस्तान की। हमारा विचार अपने देश में भी तीन लाख से अधिक सैनिक रखने का विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है।"

"यह राजनीति और अर्थनीति का प्रश्न है, किसी सिपाही को इसमें कुछ कहने का अधिकार नहीं। इस पर भी मैं समझता हूँ कि सेना को अपनी सम्मति प्रधान मन्त्री के पास भेजनी चाहिए।"

"उसका समय अब निकल गया है। परन्तु लैफ्टिनैन्ट सिंह! तुम्हारी सूचना के लिए मैं यह बताना चाहता हूँ कि कुछ समय पूर्व एक सैनिक समिति नियुक्त की गई थी। उसका सुझाव है कि यन्त्रादिकों से भली-भांति सज्जित यदि एक लाख सेना भी हो तो वह पर्याप्त है।"

मथुरासिंह कुछ नहीं बोला। इस पर भी उसने मुख पर असन्तोष के लक्षण स्पष्ट प्रतीत होते थे। उसे देख मिस्टर थापर ने कहा, " लैफ्टिनैन्ट! भारत के लिए तुम कितने सैनिक उपयुक्त समझते हो?"

"बीस लाख। दस हजार सब प्रकार के हवाई जहाज। पाँच से दस लाख टन के बैटल शिप्स और दस हजार टैंक इत्यादि।"

"जानते हो, इसका कितना खर्चा होगा?"

"हाँ, कुछ-कुछ ज्ञान तो है। बीस लाख सेना को चालू रखने के लिए लगभग दस अरब रुपया व्यय होगा।"

"और यह रुपया आवेगा कहाँ से?"

"भारतवासी देंगे। लेने का ढंग आना चाहिए।"

"तो तुमको वित्त-मंत्री बना दिया जाय?"

"मै समझता हूँ कि इतना धन तो एकत्रित हो ही सकता है। केवल इसके लिए उचित वातावरण बनाने की आवश्यकता है।"

"अच्छा छोड़ो इस बात को, यह बताओ कहाँ ठहरे हुए हो?"

"वाई. एम. सी. ए. होस्टल में।"

"ठीक है वहीं रहो। एक-दो दिन में आपको रेजिमेंट के विषय में निर्णय बता दिया जावेगा। अपना पता क्लर्क को लिखा दो, जिससे आवश्यकता पड़ने पर तुमसे सम्पर्क स्थापित किया जा सके।"

मथुरासिंह वहाँ से बाहर आया तो उसे माइकल भीतर जाता दिखाई दिया। दोनों की दृष्टि मिली तो मुसकरा दिये। माइकल का विचार था कि मथुरासिंह को सेना से मुक्ति मिल गई है, इसी कारण वह मुस्करा रहा है।

मथुरासिंह जब हैड क्लर्क के पास अपना पता लिखवाने के लिए गया तो वहाँ कश्मीर के विषय पर वार्तालाप चल रहा था। एक अधिकारी कह रहा था, "आज पंडितजी की कोठी पर कश्मीर के प्रधान मन्त्री और शेख साहब आये हुए हैं।"

"किसलिये?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज का प्रस्ताव, कश्मीर के हिन्दुस्तान में विलय के प्रस्ताव पर बात करने के लिये।"

इस पर एक अन्य अधिकारी पूछने लगा, "तो क्या प्रधानमंत्री मान जाएंगे?"

"वे कश्मीरी पंडित हैं। कौन ऐसा होगा जो अपनी मातृभूमि को विदेश बनाना चाहेगा?"

"परन्तु गवर्नर-जनरल नहीं चाहता। उसका विचार है कश्मीर पाकिस्तान में जाना चाहए।"

अम्बाला में हैड क्र्वाटर की चिट्‌टी पढ़कर तो मथुरासिंह ने समझा था कि दिल्ली पहुँचते ही उसको सेना से मुक्ति मिल जाएगी। परन्तु यहाँ पहुँचने पर सैनिक अधिकारी कर्नल थापर ने कह दिया था कि निर्णय में दो-चार दिन लग सकते हैं। इससे वह अनुमान लगा रहा था कि सम्भवतया इसका कारण कश्मीर की समस्या ही हो।

उसने हैड क्लर्क से कहा, "कर्नल थापर सर का कहना है कि मैं आपको अपना दिल्ली का पता लिखा दूँ, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर मुझे सूचना दी जा सके।"

क्लर्क ने अपना रजिस्टर खोल, उसमें निश्चित स्थान पर मथुरासिंह का पता लिख लिया। पता लिखते हुए उसके भाव ऐसे थे, मानो उसको कुछ स्मरण आ रहा हो। वह मथुरासिंह के मुख पर देखने लगा, "आप वही मिस्टर सिंह हैं, जो लन्दन के 'चीफ्स ऑफ़ द स्टॉफ़' में काम करते रहे हैं?" उसने पूछा।

"जी।"

"आपकी सर्विस फाइल मिल गई है।"

"सत्य?"

"हाँ, और आजकल वह फाइल कमाण्डर-इन-चीफ़ साहब के पास है।"

"किसलिये?"

"आपके बिल में कुछ ग़लती थी। उस गलती को ठीक करने के लिए फाइल देखी गई। उसमें कुछ तिथियाँ पहली फाइल में थीं। इससे चीफ साहब ने आज्ञा दी कि फाइल तुरन्त ढूंढ़ी जाय। अतः पाँच आदमी तीन दिन तक खोज करते रहे, तब आपकी फाइल मिली। उसमें लिखा था कि बैनगाजी में आपकी मौत हो गई है। अतः फाइल बन्द कर दी गई। उसमें यह नहीं लिखा गया कि जब आप आये तो नई फाइल बनाई गई। उसमें यह भी नहीं लिखा गया कि आप कहाँ से आ टपके हैं। आपका बिल और उसकी धनराशि देने की बात नई फाइल में अंकित थी, परन्तु यह बिल कैसा है और इंगलैंड ने क्यों अदा किया है, इस विषय में कुछ लिखा हुआ नहीं था। इंगलैंड के ऑडिटर-जनरल ने आपके बिल में तीन सौ पचास पाउंड की भूल निकाली है, वह रुपया आया तो फाइल ढूंढ़ी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपकी फाइल में आपके निधन पर इंगलैंड के प्रधान मंत्री का एक पत्र था। वह पत्र आपके सम्बन्धियों को जाना चाहिए था, परन्तु वह फाइल में रखा और फाइल बन्द कर दी गई। अब उस पर कार्य करने के लिए वह फाइल चीफ साहब के पास गई है।"

"अच्छी बात है, किन्तु वह तीन सौ पचास पौंड मुझे मिलने चाहिये?"

"हाँ, मिलने चाहिएँ।"

"तो कब मिलेंगे?"

"चीफ साहब की आज्ञा पर मिलेंगे।"

मथुरासिंह जब जाने लगा तो हैड क्लर्क ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि आपके विषय में चीफ साहब को सूचित कर दिया जाय।"

"किसलिये?"

"आपके रुपयों के लिये। वे लगभग चार हजार होंगे।"

"मिल जाएंगे, चिन्ता किस बात की है?"

हैड क्लर्क ने उठकर मथुरासिंह को सैल्यूट किया और मथुरासिंह उससे हाथ मिलाकर चला गया। वह दफ्तर से बाहर आया तो माइकल कर्नल थापर साहब के कमरे से बाहर निकल आया था और मथुरासिंह के पास जाकर कहने लगा, "मुझे तो मुक्ति मिल गई है।"

"सत्य?"

"हाँ, तुम बताओ?"

"मुझे अभी कुछ दिन दिल्ली में ठहरने की आज्ञा हुई है।"

"तो अभी तुमको मुक्ति नहीं मिली?"

"नहीं।"

"मैं विचार करता हूँ कि मैं इंगलैंड चला जाऊँ और वहाँ जाकर क्लैरा से विवाह कर लूँ। फिर वहीं कोई कारोबार करने का यत्न करूँ।"

"ठीक है, जब तुम वहाँ पहुँच जाओगे तो हम पर्यटन के लिए वहाँ आएंगे।"

"हम कौन? तुम्हारी पत्नी भी?"

"हाँ, हम दोनों ही। मिसेज स्टैनले का निमन्त्रण है।"

"लेडी गोर्ट तो आजकल दिल्ली में ही हैं।"

"कब देखा था उसे?"

"अभी अभी, जब मैं इस दफ्तर में आ रहा था तो वे मोटर में जा रही थीं।"

"मैं एक दो दिन में पता करूंगा।"

"भाग्यशाली हो मिस्टर सिंह! मुझे सन्देह है कि वह अभी भी तुमसे प्रेम करती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सम्भव है। परन्तु मैंने तो तुम्हें बताया है कि मैं प्रेम और वासना में भेद करता हूँ। प्रेम मन की ऐसी अवस्था को कहते हैं, जिसमें दो व्यक्ति एक-दूसरे को पसन्द करने लगते हैं। वासना-तृप्ति तो कटरे में दो रुपये देकर भी की जा सकती है।

"कभी प्रेम और वासना-तृप्ति के साथी एक भी हो सकते हैं। कभी भिन्न-भिन्न भी। हम हिन्दुस्तानियों में यह बात प्रायः देखी जाती है। हमारे यहाँ विवाह माता-पिता करते हैं। परन्तु अपने मन की प्रेरणा से अन्य स्त्रियों अथवा पुरुषों को भाई, बहिन, भाभी, चाची आदि बनाकर प्रेम कर लेते हैं।"

दोनों कार्यालय से होस्टल की ओर चल पड़े थे। पैदल ही जा रहे थे। बातें करते हुए वे अभी ब्रॉडकास्टिंग कार्यालय के आगे पहुँचे ही थे कि पीछे से लेडी गौर्ट की गाड़ी उनके समीप आ लगी।

"हैलो, लैफ्टिनैन्ट सिंह! फ्लोरा ने गाड़ी से उतरते हुए पुकारा। मथुरासिंह ने आगे बढ़कर हाथ मिलाया और उसका कुशल-समाचार पूछा। उसने लार्ड गौर्ट के विषय में भी जानकारी ली।

"आप कब आये हैं?" फ्लोरा ने पूछा।

"आज प्रातःकाल ही।"

"कहाँ ठहरे हैं?"

"वाई. एम. सी. ए. होस्टल में।"

"लंच के लिए आ सकेंगे??"

"आप कहाँ ठहरी हैं?"

"इम्पीरियल में, रूम नम्बर पैंतालीस है।"

"मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।"

"वैल, मिस्टर माइकल! आप तो क्लैरा के साथ लंच लेंगे?"

"आप ठीक सोच रही हैं।"

"मैं आपके लिए शुभ कामना करती हूँ।"

"आपका लंच टाइम क्या है?" मथुरासिंह ने पूछा।

"ठीक एक बजे। लंच कमरे में सर्व होगा। मैं इसका प्रबन्ध करवा दूंगी।"

"मैं समय पर उपस्थित हो जाऊंगा।"

फ्लोरा चली गई। उसके जाने पर माइकल ने मथुरासिंह की पीठ ठोंकते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि आज वह तुम पर आक्रमण करेगी। इसलिए मुझे तुम्हारे साथ नहीं बुलाया।"

परन्तु सिंह ने बात बदलकर कहा, "यह तुम्हारे और क्लैरा के विषय में जानती है?"

"हाँ, एक बार तो यह हम दोनो को डिनर पर आमन्त्रित भी कर चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी सम्मति है कि क्लैरा अच्छी लड़की है।''

''और तुम्हारी क्या सम्मति है?'' मथुरासिंह ने पूछा।

''मैं तो उसे 'स्प्लैंडिड' मानता हूँ। रूप में तो वह ऐलिस से कुछ उन्नीस ही है, परन्तु अन्य सभी विचारों से वे स्त्रीत्व के गुणों से सम्पन्न है।''

''ओह, परन्तु मित्र! मुझे भय है कि कहीं उसके गर्भ स्थित हो गया तो भारी बदनामी होगी। इसलिए मेरा कहा मानो तो आज सायंकाल ही विवाह कर लो।''

''मैं क्लैरा से कहूँगा।''

''हाँ, तुम एक भयानक स्थिति में विचर रहे हो, यह ठीक नहीं है।''

''मैं उसको तुम्हारी सम्मति से अवगत कर दूंगा।''

इस समय तक वे होस्टल में पहुँच गये थे। दोनों अपने-अपने कमरे में चले गए। मथुरासिंह अभी कमरे में पहुँचा ही था कि होस्टल के चपरासी ने आकर बताया कि उसका फोन है।

मथुरासिंह लपककर होस्टल के कार्यालय में जा पहुँचा। उसका विचार था कि फोन लेडी गौर्ट का होगा। परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसको विदित हुआ कि फोन कमाण्डर-इन-चीफ़ कार्यालय से था।

''मथुरासिंह के 'हैलो' कहने पर उधर से आवाज आई, ''लेफ्टिनेंट सिंह!''

''यस सर।''

''मैं कमाण्डर-इन-चीफ़ कार्यालय से बोल रहा हूँ। सर चाहते हैं कि आज आफ्टरनून टी आप उनके साथ लें।''

''कहाँ?''

''त्रिमूर्ति, उनकी कोठी पर।''

''किस समय?''

''चार बजकर पन्द्रह मिनट पर।''

''मैं उपस्थित हो जाऊंगा।''

फोन बन्द हुआ। वह बात करके अपने कमरे में गया तो उसने देखा कि माइकल और क्लैरा उसके कमरे में बैठे हुए हैं। माइकल ने पूछा, ''किधर गये थे?''

''किसी परिचित का फोन था।''

क्लैरा ने कहा, ''मैं समझती हूँ कि भी आपसे मिलेंगे या बात करेंगे।''

''आपको किस प्रकार विदित हुआ?''

''आपके कार्यालय चले जाने पर मैं घर गई थी। उस समय कमाण्डर-इन-चीफ़ पापा से बातें कर रहा था। उस वार्तालाप में लैफ्टिनैन्ट सिंह का नाम आया तो मैंने पूछ लिया, ''कौन लैफ्टिनैन्ट सिंह?''

''चीफ़ ने बताया, 'एक सैनिक है, जो अम्बाला में राजपूत रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।"

"मैंने उन्हें बताया कि आप आज दिल्ली में है और इस समय वाई०एम०सी०ए० होस्टल के उनतीस नम्बर कमरे में ठहरे हुए हैं।

"कमाण्डर-इन-चीफ़ कहने लगे कि वे आपसे मिलना चाहेंगे। मैंने कहा मैं होस्टल ही जा रही हूँ, यदि आप कहें तो मैं उनको आपका सन्देश दे सकती हूँ। इस पर वे बोले कि मैं स्वयं ही आपसे सम्पर्क स्थापित कर लूंगा।"

"तो ठीक है, वे मुझे बुला सकते हैं।"

उस समय मथुरासिंह ने नहीं बताया कि कमाण्डर-इन-चीफ़ की उससे भेंट तय हो चुकी है। उसने क्लैरा से पूछा, "मिस क्लीवमौंट! आप गईं भी और फिर लौट भी आईं?"

"हाँ, मैंने कार्ल के साथ लंच लेना स्वीकार कर लिया था। मेरा विचार तो आपको भी आमन्त्रित करने का था, परन्तु मुझे विदित हुआ कि आपको लेडी गौर्ट ने निमन्त्रण दे रखा है।"

"हाँ।"

"तो हम यह सौभाग्य किसी और दिन प्राप्त कर लेंगे।"

"माइकल! अब तुम्हारा क्या कार्यक्रम है?"

"अपना चार्ज देने के लिए मुझे पठानकोट जाने की आवश्यकता नहीं, यहीं पर मेरे सब देय दे करके मुक्त कर दिया जायेगा। यह काम कल तक पूरा हो जाएगा। आज रात को मैं कमाण्डर-इन-चीफ़ से मिलूंगा, वहाँ मेरे भविष्य के विषय में विचार होगा।"

"परन्तु क्या तुम सेना की नौकरी अत्यावश्यक समझते हो?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मैं तो किसी स्थान पर दुकानदारी करूंगा। वैसे मैं कहीं होटल अथवा रेस्टोराँ खोलना पसन्द करूंगा।"

"भारत में या कहीं अन्यत्र?"

"मन तो पैरिस अथवा लन्दन के लिए करता है। मेरे पिताजी का देहान्त हो चुका है और मम्मी अभी लन्दन में हैं। वे जन्म से फ्रेंच हैं। इस कारण पेरिस ही ठीक रहेगा। किन्तु क्लैरा का कहना है कि मेरे लिए सेना की नौकरी ठीक रहेगी।"

"किसलिये?"

"स्त्रियों को सैनिक पति सदा प्रिय होता है।"

मथुरासिंह को राधा की बात स्मरण हो आई। उसने एक बार कहा था कि वह अपने मन में उसके लिए पति की भावना तब से ही बनाए हुए है जब उसको पता चला था कि वह सेना में भरती होगा। उसको क्लैरा के कथन में इसी भावना का समर्थन प्राप्त हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अभी विचार कर ही रहा था कि क्लैरा ने मथुरासिंह को कहा, ''अब समय हो गया है, आपको जाना चाहिये।''

मथुरासिंह जब जाने लगा तो क्लैरा ने पूछा, ''चाय आप यहीं पियेंगे?''

''नहीं, शाम की चाय मैं आज अपने एक परिचित के साथ पिऊंगा।''

3

शाम की चाय के समय मथुरासिंह कमाण्डर-इन-चीफ़ की कोठी पर जा पहुँचा। उसका अनुमान था कि वहाँ पर लन्दन के मिशन के विषय पर ही वार्तालाप होगा। हुआ भी यही। कमाण्डर-इन-चीफ़ और उसके साथ उत्तरी भारत के तीन ब्रिगेडियर जनरल थे। इनमें एक अंग्रेज था और दो हिन्दुस्तानी। मथुरासिंह ने वहाँ पहुँचने पर जब अपना नाम भीतर भेजा तो उसको तुरन्त बुला लिया गया। वे लोग पहले ही बैठे हुए थे। चाय से पूर्व वे 'एल' पी रहे थे। बैरा ने जब वह माथुरसिंह के सम्मुख प्रस्तुत की तो उसने गिलास उठाया नहीं।

एक हिन्दुस्तानी ब्रिगेडियर जनरल कहने लगा, ''लैफ्टिनैन्ट सिंह! लीजिये।''

''धन्यवाद सर, मैं यह नहीं पीता।''

''ओह!'' वह मुख देखता रह गया।

कमाण्डर-इन-चीफ़ ने इसको वार्तालाप का विषय न बनाकर अपने गिलास में से एक चुस्की लेते हुए कहा, ''आपकी सर्विस फाइल में संलग्न इंगलैंड के प्रधान मंत्री का पत्र पढ़कर मुझे अति विस्मय हुआ। आपने ऐसा कौन-सा कार्य किया था उस प्रशंसा के लिये?''

''जहाँ तक मुझे ज्ञात है, मैंने इस यूरोपियन युद्ध को जीतने की एक योजना बनाई थी। मेरा विचार है कि इंगलैंड के प्रधान मंत्री को वह योजना उचित प्रतीत हुई थी, उसी के लिए सम्भवतया उन्होंने वह पत्र लिखा होगा।''

''तो फिर आपकी योजना से युद्ध जीता गया है?''

''आरम्भ में तो मेरी योजना पर कार्य हुआ था। परन्तु रूस और अमेरिका के मित्र-वर्ग में सक्रिय भागीदार बनने के बाद वह योजना चल नहीं सकी। जहाँ तक वह योजना चलाई गई थी, वहाँ तक उसका उचित प्रभाव हुआ था। परन्तु बाद में रूस के कहने पर अमेरिका ने उस योजना का विरोध किया और तब उनकी योजना 'ओवर लोड' को चालू किया गया और मेरी योजना अधूरे में रह गई।''

''आपकी योजना पर कहाँ तक कार्य हो सका था।''

'अफ्रीका से रोम तक तो वह योजना चली। उसके बाद ऐड्रियाटिक पार कर युगोस्लाविया, बलगारिया और हंगरी में पहुंचकर रूसी सेनाओं के साथ एक मोर्चा बनाने की योजना थी। परन्तु रूस इसके अर्थ समझता था। इस कारण उसने अंग्रेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना के उस क्षेत्र में जाने पर आपत्ति की और फ्रांस में दूसरा मोर्चा खोलने के लिए माँग करने लगा। अमेरिका ने इस बात का समर्थन किया और इंगलैंड को विवश हो, मेरी योजना छोड़नी पड़ी। इस पर मुझे हिन्दुस्तान वापस भेज दिया गया।''

''यहाँ आकर आपने क्या किया?''

''लंदन में मेरा रैंक ब्रिगेडियर जनरल का था। यहाँ आकर मुझे पुनः लेफ्टिनेंट बना दिया गया और फिर युद्धनीति में कभी मेरी सम्मति नहीं ली गई।''

''अब यहाँ की वर्तमान स्थिति में आपकी क्या सम्मति है।''

''वर्तमान परिस्थिति का मुझे ठीक-ठीक ज्ञान नहीं है। इस कारण इस विषय में मैं कोई सम्मति भी नहीं दे सकता।''

''तीन दिन पूर्व समाचार पत्रों में प्रकाशित भारत के प्रधानमंत्री का वक्तव्य आपने पढ़ा है?''

''पढ़ा है।''

''मैं उसके विषय में पूछ रहा हूँ।''

''प्रधान मंत्री का कथन है कि भारत शान्तिप्रिय देश है। शान्तिमय उपायों से ही हमने स्वराज्य प्राप्त किया है और इन्हीं उपायों से हम उसकी रक्षा भी करना चाहते हैं।''

''ठीक है, अब आप क्या कहते हैं?''

''यह वक्तव्य देश तथा विदेश की जनता के कानों के लिए तो अति प्रिय है। परन्तु हम सैनिकों के लिए नहीं हो सकता।''

''क्यों?''

''इसलिए कि हम जानते हैं कि स्वराज्य न तो शान्तिमय उपायों से प्राप्त किया गया है और न ही ऐसे उपायों से इसकी रक्षा की जा सकती है।''

''परन्तु स्वराज्य तो शान्तिमय उपायों से ही प्राप्त हुआ है।''

''प्रमाण इसके विपरीत है। भारत को स्वराज्य तो यूरोप में इंगलैंड की नीति के सर्वथा असफल होने का परिणाम है। यदि मध्य-पूर्वी यूरोप में इंगलैंड रूस को बढ़ने से रोक देता तो रूस इतना प्रबल नहीं हो पाता, जितना वह हो गया है। इसके विपरीत इंगलैंड जितना आज प्रबल है, उससे कहीं अधिक प्रबल हो जाता। तब इंगलैंड को हिन्दुस्तान से भागने की आवश्यकता न पड़ती।

''साथ ही बम्बई में नेवी का रिवोल्ट और जबलपुर इत्यादि की सेना में बग़ावत न होती तो इंगलैंड अभी हिन्दुस्तान को न छोड़ता। फिर यदि मिलिटरी में 'सीक्रेट पोल' का परिणाम अंग्रेजों के अनुकूल होता तो भी अंग्रेज यहाँ से न जाते।''

''तो फिर गांधीजी के करने से क्या हुआ है?''

''अपने दुराग्रह से गांधीजी ने उन व्यक्तियों के हाथ में राज्य दिलवा दिया, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य करने के योग्य नहीं थे। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि राज्य पण्डित नेहरू के हाथ में चला गया है।''

''मिस्टर सिंह! यह तो तुम बग़ावत कर रहे हो?''

''नहीं साहब! मैंने तो पण्डित नेहरू की नीति की व्यर्थता का वर्णन किया है। देश को स्वराज्य अहिंसात्मक उपायों से नहीं मिला, और न ही इन उपायों से इसकी रक्षा की जा सकती है।''

कमाण्डर-इन-चीफ अपने कंधो को असन्तोष-सूचक झटका देकर कुछ कहने ही वाला था कि साथ के कमरे में फोन की घंटी बजी और वह उठकर उस कमरे में चला गया।

तब ब्रिगेडियर प्रतापसिंह ने मथुरासिंह से पूछा, ''कश्मीर पर होने वाले आक्रमण का हिन्दुस्तान को विरोध करना चाहिए अथवा नहीं?''

''मैं समझता हूँ कि इस समय तक हमें अपनी सेना मोर्चे पर भेज देनी चाहिए थी।''

''किसी गैर मुल्क में हम ऐसा किस प्रकार कर सकते थे?''

''महाराज कश्मीर को अब तक विवश किया जा सकता था कि वे अपनी रियासत का भारत के साथ विलय कर दें।''

''मिस्टर सिंह, आप शायद यह नहीं जानते कि गवर्नर-जनरल ऐसा नहीं चाहते।''

''यही तो मेरा कहना है कि अंग्रेज को गर्वनर-जनरल बनाने में बुद्धिमत्ता नहीं है। हिन्दुस्तान को दुर्बल रखने के लिए अंग्रेजों ने पाकिस्तान बनवाया है। अब पाकिस्तान को भारत पर सदा तानाशाही करने के योग्य बनाने के लिए कश्मीर उसके हाथ में दे देना चाहते हैं।''

अंग्रेज जनरल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''परन्तु भारत में ऐसा कोई व्यक्ति है, जिसको इतने बड़े पद पर प्रतिष्ठापित किया जा सके।''

''जब कहीं एक व्यक्ति राजा बनने के योग्य न हो तो राज्य विदेशीयों के हाथ में नहीं दिया जा सकता। ऐसी अवस्था में होना यह चाहिए कि एक के स्थान पर दस आदमीयों की एक ''शासन परिषद्' बना दी जाती। विदेशियों के हाथ में अपनी नीति देना ठीक नहीं।''

इस समय कमाण्डर-इन-चीफ ने कमरे के दरवाज़े पर आते हुए कहा, ''गर्वनर जनरल ने तुरन्त बुलाया है, मैं वहाँ जा रहा हूँ। आप लोग यहीं रहिए, मैं अपनी बात वहाँ से लौटने पर करूंगा।''

विवश सबको बैठना पड़ा। जब कमाण्डर-इन-चीफ़ चला गया तो उसी अंग्रेज जनरल ने पूछा, ''क्या कार्य हो सकता है इस समय?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनरल प्रतापसिंह बोला, "मेरा विचार है कि कश्मीर में किसी प्रकार की अव्यवस्था हो गई है।"

"क्या अव्यवस्था हो सकती है?"

"यह तो लैफ्टिनैन्ट सिंह ही बता सकते हैं।"

"हाँ, लैफ्टिनैन्ट सिंह! इस विषय में आपका क्या विचार है?"

"मैं समझता हूँ कि भारत सरकार ने कश्मीर का भारत के साथ विलय स्वीकार कर लिया है। इसके परिणामस्वरूप भारत के लिए कश्मीर की रक्षा करना अनिवार्य हो गया है।"

"क्या?" विस्मय में उस अंग्रेज अफसर ने पूछा।

मथुरासिंह मुस्कराता हुआ चुप रहा।

प्रतापसिंह ने पूछा, "यदि लैफ्टिनैन्ट सिंह का अनुमान ठीक निकला तो हम इस विषय में किस प्रकार सहायता दे सकते हैं?"

"पठानकोट से जम्मू के लिए और फिर वहाँ से कश्मीर के लिए सेना भेजी जा सकती है। परन्तु इसके पहले एयर बोर्न ट्रूप्स भेजने चाहिए। श्रीनगर हमको उनके हाथ में नहीं जाने देना चाहिए।"

"किन के?" उसी अंग्रेज अधिकारी ने पूछ लिया।

"जिन्होंने राजा के विरुद्ध आक्रमण किया है।"

"आक्रमण करने वाली तो कश्मीर की जनता ही है?"

"उनको शान्तिपूर्वक अपने अधिकारों की माँग के लिए बातचीत करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए।"

"हम ऐसा क्यों करें?"

"मिस्टर वाटन!" प्रतापसिंह कहने लगा, "लैफ्टिनैन्ट सिंह ठीक कह रहे हैं। हम कश्मीर में अशान्ति नहीं फैलने देंगे। उसे हम पाकिस्तान के हाथ भी जाने नहीं देंगे। यदि राजा मान जाय तब भी, और न माने तब भी।"

"यह बात तो प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों के विपरीत है?"

"प्रजातन्त्र को देश के हित से प्राथमिकता नहीं दी जा सकती।"

मथुरासिंह बोला, "मुझे विश्वास है कि राजा ने भारत के साथ कश्मीर तथा जम्मू का विलय मान लिया है। इस स्थिति में हमको कश्मीर में शान्ति एवं व्यवस्था बनाये रखने का यत्न करना होगा।"

"पाकिस्तान इस बात को कभी पसन्द नहीं करेगा।"

"तो पाकिस्तान हमको ऐसा अवसर देगा, जिससे हम पाकिस्तान को पुनः हिन्दुस्तान के साथ मिला देंगे।"

"ऐसा कैसे हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सेना के बल से हो सकता है।"

"हमारे पास इतनी सेना कहाँ है?"

"सेना को बढ़ाना असम्भव है क्या?"

"गवर्नर-जनरल ऐसा नहीं करने देंगे।"

"गवर्नर-जनरल पाकिस्तान को मना क्यों नहीं करेंगे कि भारत को अपने देश में शान्ति-स्थापन करने में वह विघ्न न डाले?"

"कश्मीरी उनके हम-मजहब हैं।"

"ठीक है, यदि वे भारत में रहना नहीं चाहते तो भारत से बाहर जा सकते हैं। कश्मीर तो भारत का एक अंग है।"

"वैसे तो पाकिस्तान भी भारत का ही एक अंग था, परन्तु यह बात अंग्रेजों के शासन-काल की है। उससे पूर्व तो हिन्दुस्तान में कई राज्य थे और अंग्रेजों के जाने पर फिर हिन्दुस्तान में उतने ही राज्य हो सकते हैं।"

प्रतापसिंह ने अब बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "हम यत्न करेंगे कि भारत में अब उस प्रकार के कई राज्य न बन सकें। उसके लिए ही सेना की आवश्यकता है।"

मथुरासिंह अनुभव कर रहा था कि नेहरू सरकार ने अंग्रेज गवर्नर-जनरल, अंग्रेज सेनापति और अंग्रेज सैनिक अधिकारियों को भारत में रखकर बहुत बड़ी भूल की है। परन्तु इस प्रकार की राजनीतिक बात वह सैनिक अधिकारी होते हुए प्रकट नहीं कर सकता था। बात को समाप्त करने के लिए उसने कहा, "सर! पाकिस्तान बन गया है और बना रहेगा। यह एक राजनीतिक समस्या है। मेरा तो कहना यह है कि यदि पाकिस्तान से झगड़ा हुआ तो हम पाकिस्तान को दो सप्ताह में समाप्त कर देंगे।"

"यदि अंग्रेजों ने पाकिस्तान की सहायता की तो?" वाटसन ने पूछा।

"अंग्रेज यदि सहायता करने की स्थिति में होते तो भारत को ही न छोड़ते। मेरे विचार में तो ब्रिटेन कम-से-कम दस वर्ष के लिए इतना दुर्बल हो गया है कि वह हिन्दुस्तान के साथ झगड़ा नहीं कर सकता।"

"तो आपका यही विश्वास है कि अपनी दुर्बलता के कारण अंग्रेज यहाँ से गये हैं?"

4

एक घंटे तक प्रतीक्षा करने पर कमाण्डर-इन-चीफ़ वापस आया। तब तक वे लोग बातें करते रहे। चीफ साहब के आते ही सब उसके स्वागत के लिए खड़े हो गए। कमाण्डर-इन-चीफ़ ने खड़े-खड़े ही घोषणा कर दी, "मुझे आज्ञा हुई है कि आज रात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ही कश्मीर को सेना भेज दी जाय।"

"किसलिये?"

"वहाँ के उपद्रव को शान्त करने के लिए।"

"यह उचित ही है।" जनरल प्रतापसिंह बोला।

"क्या उचित है?"

"स्वराज्य बिना सैनिक सहायता के प्राप्त हुआ था, जिससे वह पवित्र नहीं हो सका। यद्यपि अब समय निकल गया है, फिर भी न होने से तो देर से होना ही ठीक है। वीरों के रक्त से स्वराज्य की सिंचाई होगी।"

सब खड़े-खड़े ही बातें करते रहे। कमाण्डर-इन-चीफ ने कहा, "कश्मीर जम्मू रियासत का भारत में विलय स्वीकार हो गया है। इस कारण भारत की सेना वहाँ शान्ति स्थापित करने के लिए जा रही है।"

"परन्तु सर!" मथुरासिंह पूछने लगा, "समाचार तो यह है कि पाकिस्तान के कबाइली कश्मीर में घुस गये हैं और वहाँ के हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को लूट रहे हैं, और हत्याएं कर रहे हैं।"

"तो फिर क्या हुआ?"

"हुआ यह कि सेना भेजी जा रही है किसी विदेशी आक्रमण को रोकने के लिए। आक्रमणकारी नवीनतम शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित हैं। अवश्य उनको वे पाकिस्तानी अधिकारियों से मिले होंगे। इससे जहाँ कश्मीर में सेना भेजी जाय, वहाँ साथ ही पाकिस्तान को अल्टीमेटम देना चाहिए कि उनको शस्त्रास्त्र देने बन्द कर दे, अन्यथा पाकिस्तान को आक्रमणकारी माना जाएगा।"

"लैफ्टिनैन्ट सिंह! यह राजनीतिक कार्य है, हम सैनिक इस विषय में हस्तक्षेप नहीं कर सकते।"

"सुझाव तो हम दे ही सकते हैं?"

"वह भी तभी किया जा सकता है, जब कि युद्ध के विषय में हम से सुझाव माँगा जाय।"

"लेकिन साहब! यह बात आपको गवर्नर साहब को सुझानी चाहिए थी।"

"क्यों?"

"इसलिए कि आक्रामकों की ओर तो उनकी छावनियों से लेकर युद्ध-क्षेत्र तक पक्की सड़कें बनी हुई हैं, किन्तु हमारी तरफ सेना का सामान ले जाने के लिए साधारण-सा मार्ग भी नहीं है। इस कारण हमें युद्ध-क्षेत्र ऐसे स्थान पर बना लेना चाहिए, जहाँ लड़ना हमारे लिए सुगम हो। जहाँ शत्रु का मर्म-स्थान हो और जहाँ चोट करने से शत्रु कश्मीर से अपनी सेना और सैन्य-सामग्री वापस करने के लिए विवश हो जाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या अनर्गल बातें कर रहे हो सिंह! हम ऐसा नहीं कह सकते।"

"तो कौन कहेगा!"

"जिनको तुम्हारी मूर्खतापूर्ण युक्ति उचित प्रतीत होगी। मैं तो इसे उचित नहीं समझता।"

मथुरासिंह चुप रहा। उसके बाद कमाण्डर-इन-चीफ ने जनरल प्रतापसिंह को कश्मीर-अभियान के लिए लिखित आज्ञा दे दी और उसको कहा कि तुरन्त ही यह अभियान आरम्भ कर दिया जाय।

आज्ञा मिल जाने पर जनरल ने हाथ मिलाया, सैल्यूट किया और वहाँ से निकल गया। अन्य भी हाथ मिलाकर जाने लगे। मथुरासिंह समझता था कि उसको किसी विशेष कार्य के लिए बुलाया गया है, इस कारण वह सबसे अन्त में आया और पूछने लगा, "मेरे लिए क्या आज्ञा है?"

"तुमको सैनिक-कार्य से मुक्ति मिल जाएगी। इस विषय में कल तक कार्यालय से अधिकृत सूचना प्राप्त हो जाएगी।"

मथुरासिंह ने सैल्यूट किया और कमरे से बाहर निकल आया। वह अपने होस्टल की ओर जाता हुआ विचार कर रहा था कि यहाँ से तो लन्दन में ही उसके साथ अच्छा व्यवहार हुआ था। वहाँ उसको बताया गया था कि युद्ध में अमेरिका का मुख्य हाथ हो जाने से अब युद्ध नीति भी उन्हीं की चलेगी, इस कारण उसकी अब वहाँ आवश्यकता नहीं रही। किन्तु अपने यहाँ से तो उसे मूर्ख बताकर निकाल दिया गया है। इसी प्रकार के विचारों में वह होस्टल में जा पहुँचा। माइकल के कमरे में ताला लगा हुआ था। अपने कमरे में जाकर वह विचार करने लगा कि अगले दिन उसको 'रिलीज आर्डर' मिल जाएगा। यदि जिस प्रकार माइकल को मुक्ति मिली है, उसी प्रकार उसको भी मुक्ति, यहीं से मिल गई तो वह अपने गाँव चला जाएगा। वहाँ जाकर राधा से मिलने की मधुर कल्पना से उसका वर्तमान क्लेश मिट-सा गया। वह उठा और बाजार से उसके लिए कुछ चीजें खरीदने चल पड़ा।

राधा की सबसे प्रिय वस्तु हिन्दी की पुस्तकें थीं। नई दिल्ली में हिन्दी की पुस्तकों की दुकान नहीं थी। अतः वह पुरानी दिल्ली जा पहुँचा। वहाँ से उसने बीस-बाईस के लगभग छोटी-बड़ी पुस्तकें खरीदीं। चांदनी चौक से उसके लिए एक रेशमी साड़ी तथा जम्पर आदि के टुकड़े खरीदे। इसी प्रकार कुछ शृङ्गार-प्रसाधन भी खरीदा। इन वस्तुओं को लेकर वह अपने होस्टल में आ गया। जब वह आफिस से कमरे की ओर जा रहा था तो चपरासी ने आकर कहा, "आपके लिए फोन आया था। नम्बर दिया है और कहा है कि आते ही फोन करें।"

मथुरासिंह ने खरीदी हुई वस्तुएँ बाहर मेज पर रख दीं और भीतर जाकर उस नम्बर पर फोन मिलाकर बोला, "मैं लेफ्टिनेन्ट एम. सिंह बोल रहा हूँ। इस नम्बर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे किसी ने फोन किया था।''

''तनिक ठहरिए।''

दो मिनट बाद फोन पर किसी ने कहा, ''आप एक नम्बर लोधी रोड पर चले आइए, आपसे एक अत्यावश्यक कार्य है।''

''कौन साहब बोल रहे हैं?''

''मैं। होम-मिनिस्टर का पी. ए. बोल रहा हूँ। कितनी देर में आप यहाँ पहुँच जाएंगे?''

''जितनी देर में टैक्सी वहाँ पहुँचा दे।''

''नहीं, आप आने के लिए तैयार रहिए, हम अपनी गाड़ी भेज रहे हैं।''

''बहुत अच्छा।''

मथुरासिंह अपने कमरे में जा सामान रख, नीचे आ रहा था कि उसको जीने पर माइकल ऊपर चढ़ता हुआ मिल गया। उसने पूछा, ''कहाँ भागे हुए जा रहे हो?''

''कमाण्डर-इन-चीफ ने बुलाया है।''

''कश्मीर में सेनाएँ भेजी जा रही है। वहाँ शान्ति-स्थापना के बाद जनता की राय ली जाएगी कि वे पाकिस्तान में जाना चाहेंगे अथवा भारत में।''

''क्या? कहाँ से सुना है यह समाचार?''

''अभी-अभी रेडियो पर प्रधान मंत्री ने घोषणा की है।''

मथुरासिंह कहने ही लगा था कि 'यह मूर्खता है,' परन्तु यह विचार कर कि अभी सैनिक गणवेश उसके शरीर पर विद्यमान है, जिस कारण ऐसा कहना उसकी शपथ के विरुद्ध हो जाएगा, वह कुछ नहीं बोला।

वह द्वार की ओर चला आया। उसने अनुभव किया कि माइकल ने अधिक मात्रा में मद्य का सेवन किया हुआ है।

द्वार पर खड़ा मथुरा सिंह अपने मन में गृह-मंत्री की कोठी पर बुलाए जाने की बात पर विचार कर रहा था। वह अनुमान नहीं लगा पा रहा था कि किस कारण उसको वहाँ बुलाया गया है। यद्यपि वह गृह-मंत्री के अधीन नहीं था तदापि वह समझता था कि सैनिक होने के साथ-साथ वह भारत का नागरिक भी है। अतः अपने गृह-मंत्री के आदेश की वह अवहेलना नहीं कर सकता।

वह जब कोठी पर पहुँचा तो एक भीमकाय किन्तु चुस्त और चपल व्यक्ति मोटर के पहुँचते ही उसका द्वार खोल उसके बाहर निकलते ही कहने लगा, ''आइए, मंत्री महोदय आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।''

कुछ कहे बिना मथुरासिंह उस व्यक्ति के पीछे-पीछे चला गया। उसे कोठी के एक कमरे में ले जाया गया। उसमें बैठे हुए सरदार वल्लभभाई पटेल धोती-कुरता पहने मेज़ पर रखी किसी पुस्तक का अध्ययन कर रहे थे। मथुरासिंह को वहाँ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जे जाने वाले व्यक्ति ने धीरे से उस कमरे का द्वार खोला और मन्द स्वर में सूचना दी, "लेफ्टिनेन्ट सिंह।"

चौंककर सरदार ने द्वार की ओर देखा और बोले, "आइए।"

मथुरासिंह मेज के समीप जा खड़ा हो हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगा। गृह-मंत्री ने अर्द्ध-नीमिलित नयनों से मथुरासिंह को निहारा और उसके नमस्कार के उत्तर में मुस्कराकर समीप रखी कुर्सी पर उसे बैठने के लिए कहा।

उसके बैठ जाने पर सरदार ने पूछा, "कमाण्डर-इन-चीफ ने क्या आज्ञा दी है?"

"लिखित तो उन्होंने अभी कुछ नहीं दिया। हाँ, मौखिक रूपेण उन्होंने बताया कि कल तक मुझे सेना से मुक्ति मिल जाएगी।"

"मुझे विदित हुआ कि सैनिक की अपेक्षा आप नीतिज्ञ अधिक हैं।"

"यदि नीतिज्ञ शब्द के आगे युद्ध शब्द लग दिया जाय तो कदाचित आपकी सूचना किसी सीमा तक उपयुक्त हो सकती है। यह मेरे प्रशिक्षक मिस्टर जे. डब्ल्यू. स्टैनले का कथन था। युद्ध-काल में यही बात इंगलैंड के प्रधान मंत्री चर्चिल ने कही थी।"

"मैंने आपकी फाइल देखी है। मिस्टर चर्चिल का पत्र पढ़ने के लिए सुरक्षा मंत्री ने आज ही वह फाइल मेरे पास भेजी है। यह तो उस व्यक्ति ने जो कि कमाडर-इन-चीफ की कोकटेल पार्टी में विद्यमान था, बताया है कि आप आजकल दिल्ली में हैं और वाई. एम. सी. ए. होस्टल में ठहरे हुए हैं। उसी ने यह भी बताया है कि आपको सेना से मुक्त किया जा रहा है।"

"मैं आशा कर रहा हूँ कि कल तक अवकाश मिल जाएगा।" मथुरासिंह विस्मय कर रहा था कि यह गृह-मंत्री भी विचित्र है, जिसने इस प्रकार अधिकारियों के पीछे अपने भेदिये नियुक्त कर रखे हैं। इससे उसे एक प्रकार से प्रसन्नता ही हुई।

"क्यों, नौकरी छूटने का बहुत दुःख हो रहा है?"

"नहीं, मैं यह कार्य नौकरी समझकर नहीं कर रहा था। ईश्वर की कृपा से घर में खाने-पीने को पर्याप्त है। मुझे नौकरी छूट जाने का कोई दुख नहीं। हाँ, अपने देश की सेवा करने से वंचित हो जाऊंगा, इसका मुझे दुःख अवश्य है।"

"परन्तु सेना से अतिरिक्त भी तो आप किसी अन्य प्रकार से देश की सेवा कर सकते हैं।"

"यह ठीक है, परन्तु सात वर्ष से अधिक सेना का कार्य करने पर मैं कह नहीं सकता कि मैं अन्य किसी प्रकार की सेवा के योग्य हूँ अथवा नहीं।"

"मेरे पास आपके लिए एक काम है। सेना से मुक्ति मिलने पर आप मुझसे मिलिए।"

"मैं उपस्थित हो जाऊंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस गणवेश को बदलकर आइएगा। यह निवासस्थान सुरक्षा मन्त्री का नहीं, गृहमन्त्री का है।"

"मैं समझता हूँ।"

"इस समय अब आप जा सकते हैं।"

मथुरासिंह उठकर नमस्कार करने लगा तो सरदार ने मेज पर लगी घंटी का बटन दबाया। तभी कमरे का द्वार खुला और वही भीमकाय व्यक्ति भीतर आया। गृहमन्त्री ने उससे कहा, "मिस्टर सिंह के जाने के लिए गाड़ी का प्रबन्ध कर दो।"

बातचीत को इस तेजी से होता देख मथुरासिंह का दिल फड़क उठा। उसको इंगलैंड के युद्धकालीन प्रधान मन्त्री का स्मरण हो आया। थोड़ी, अर्थपूर्ण और निश्चयात्मक बात उसको वहीं सुनने को मिली थी। भारत में आने पर पहली बार किसी भारतीय में उसको वैसा ही रूप आज दिखाई दिया था। वह मन में विचार करता था कि वास्तव में 'वह व्यक्ति महान् पुरुष है।'

वह होस्टल में पहुंचा तो उसने देखा कि क्लैरा उसके कमरे के द्वार पर खड़ी है। मथुरासिंह के मस्तिष्क में विद्युत् तरंग की भांति विचार आया कि सम्भवतया यह लड़की उस पर जासूसी करने के लिए आई हो तुरन्त उसने समझ लिया कि इसको बताना नहीं चाहिए कि वह कहाँ से आया है। परन्तु वह विचार करने लगा कि सम्भव है उसने वह मोटर देख ली हो जिसमें वह गृहमन्त्री के घर से आया था। इससे वह सतर्क हो गया।

मथुरासिंह को आया देख उसका स्वागत करती हुई क्लैरा बोली, "हैलो, मिस्टर सिंह! किधर गये थे! मैं पन्द्रह मिनट से आप की प्रतीक्षा कर रही थी।"

"ओह! किसलिये?"

"मेरी इच्छा आपके साथ डिनर लेने की है।"

अपनी घड़ी देखता हुआ मथुरासिंह बोला, "उसके लिए तो अभी एक घण्टा शेष है।"

"तब तक हम बातचीत करेंगे। आज एक विशेष दिन है।"

"चलो, माइकल के कमरे में चलते हैं।"

"वह तो मद्य की मादकता में मदहोश पड़ा है।"

"तब तो बहुत ही आनन्द रहेगा।"

"नहीं, इस अवस्था में मैं उसके समीप नहीं जा सकती। वह सब शिष्टाचार भूल जाता है।"

अपने कमरे का द्वार खोलते हुए प्रश्न-भरी दृष्टि में मथुरासिंह ने क्लैरा की ओर देखा क्योंकि वह यह नहीं जानता था कि अशिष्टता की सीमा कहाँ तक जाती है। किन्तु क्लैरा ने कुछ नहीं कहा और नजरें झुका लीं। इस पर भी उसके मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर की लालिमा मथुरासिंह की शंका का स्पष्ट उत्तर दे रही थी।

5

"मैं माइकल से निराश होती जा रही हूँ।"

"क्यों?"

"वह बहुत शराब पीने लगा है।"

"परन्तु यह तो आपके समुदाय के सभी लोग पीते हैं?"

"मैं तो नहीं पीती।"

"बिलकुल?"

"हाँ, कई वर्ष से मैंने मद्य को छुआ तक नहीं।"

"आपके समुदाय में ऐसे और कितने लोग होंगे जो न पीते हों?"

"इस विषय में तो मैं कुछ बता नहीं सकती। हाँ, मैं इतना जानती हूँ कि माइकल की भांति मदमस्त और बदतमीज होने वाले लोग बहुत कम होते हैं।"

"इस पर भी तुम्हारी उसके साथ घनिष्ठता तो थी ही।"

"मैं वास्तव में उससे प्रेम करती हूँ।"

"इस प्रेम का क्या अभिप्राय है? एक ओर तो तुम उसे उच्छृङ्खल व्यक्ति मानती हो, और दूसरी ओर कहती हो कि तुम वास्तव में उससे प्रेम करती हो।"

"हाँ, मैं उससे प्रेम करती हूँ। किन्तु उस अवस्था में, जब वह शिष्ट होता है। किन्तु जब वह मद्य में उन्मत्त होता है तब मैं उससे घृणा करती हूँ।"

"तुम उसको इसके लिए मना क्यों नहीं करती?"

"करती तो हूँ, परन्तु वह माने तब न।"

मथुरासिंह ने बात बदलते हुए कहा, "आपके पिता इंगलैंड वापस जाने वाले हैं क्या?"

"गर्वनर-जनरल की नियुक्ति-काल तक तो वे यहीं रहेंगे, जहाँ तक मुझे ज्ञान है, गवर्नर-जनरल उनको बहुत चाहते हैं।"

"मेरा पूछने का अभिप्राय यही था कि गवर्नर-जनरल कब तक जा रहे हैं?"

"पंडित नेहरू उनको यहाँ रहने के लिए आग्रह कर रहे हैं। जब तक यहाँ का विधान नहीं बन जाता तब तक तो उनका गवर्नर-जनरल बना रहना सम्भव प्रतीत होता है।"

"विधान बनाने में गवर्नर-जनरल क्या सहायता दे सकता है?"

"विधान बनाने में सहायता तो नहीं, हाँ, इस प्रारम्भिक काल में वे देश में शासन-व्यवस्था रखे हुए हैं।"

"तब तो देश को उनका कृतज्ञ होना चाहिए। परन्तु वर्तमान परिस्थिति में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडितजी और गवर्नर-जनरल में सामंजस्य रह नहीं सकता।"

"क्यों, क्या कठिनाई पड़ रही है?"

"कश्मीर के विषय में पंडितजी ऐसी नीति अपनाने के लिए विवश हो रहे हैं जिसे में समझता हूँ गर्वनर-जनरल पसन्द नहीं करते।"

"आपका अभिप्राय किस बात से है जिसे नेहरूजी कर रहे हों और गर्वनर-जनरल पसन्द न करते हों।"

"कश्मीर का भारत में विलय। मुझको ज्ञात हुआ है कि गवर्नर-जनरल कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाना चाहते थे।"

"नेहरूजी भी तो यही चाहते हैं। उनकी इस घोषणा ने कि शान्ति स्थापित हो जाने के बाद वहाँ का जनमत जाना जायेगा और तब कश्मीर का भारत अथवा पाकिस्तान में विलय का निश्चय हो जायेगा, उनकी नीयत स्पष्ट कर दी हैं।"

"परन्तु इस समय, अस्थायी-रूपेण, तो उन्होंने विलय स्वीकार कर ही लिया है?"

"इसे विलय नहीं कहते। यह तो राज्य में शान्ति-स्थापना के लिए अभियान है। वास्तव में विलय का अधिकार राजा के हाथ से छीनकर जनता के हाथ में दे दिया गया है और हमारा विश्वास है, पंडितजी यह जानते हैं कि वहाँ की जनता का भारत में विलीन होना संदिग्ध है।"

"तो यह घोषणा कि वहाँ जनमत लिया जायेगा, गवर्नर-जनरल की है?"

"उनकी तो नहीं, हाँ उनकी सम्मति लेकर की गई है।"

"तो फिर क्या होगा?"

"होगा क्या? हिन्दुस्तानी सेनाएँ कश्मीर से कबाइलियों को निकाल देंगी और फिर जनमत लिया जायेगा। जनमत पाकिस्तान के पक्ष में जायेगा। कश्मीर का पाकिस्तान में विलय हो जायेगा। गवर्नर-जनरल की नीति सफल होगी?"

मथुरासिंह सचेत था। वह समझता था कि इस लड़की के सम्मुख उसे अपना अभिमत व्यक्त नहीं करना चाहिए। वह अनुभव करता था कि क्लैरा उस पर जासूसी कर रही है।

मथुरासिंह ने बात बदलकर कहा, "मैं समझता हूँ कि माइकल पाकिस्तानी सेना में जाना पसन्द नहीं करेगा।"

"परन्तु वह पाकिस्तानी सेना में भरती होना स्वीकार कर आया है?"

"किसको अपनी स्वीकृति दे आया है वह?"

"कमाण्डर-इन-चीफ को। उन्होंने माइकल को एक पत्र भी दिया है और वह कल या परसों कराची जाने के लिए कह भी आया है।"

"तो आप भी उसके साथ जा रही हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विवाह से पूर्व मैं उसके साथ नहीं जा सकती और वह कल ही विवाह के लिए आग्रह कर रहा है।"

"तो कल हो रहा है, आपका विवाह?"

"अभी तक मैंने निश्चय नहीं किया है।"

"क्यों?"

"अभी मैं अनिश्चित मन हूँ।"

"मैंने तो सुना था कि आप ही विवाह के लिए शीघ्रता कर रही हैं।"

"आज से पहले विचार था। यद्यपि मन में संशय तब भी था।"

"तो आज कोई विशेष घटना हुई है?"

"हाँ।"

"माइकल ने तुमसे झगड़ा किया है क्या?"

"नहीं, झगड़ा तो नहीं। वह तो वैसा ही है जैसा पहले था। परन्तु हमारे सम्बन्धों में एक नई वस्तु आ उपस्थित हुई है।"

"क्या?"

"यदि इस रहस्य को आप अपने मन में रखें तो बता सकती हूँ।"

"माइकल को भी नहीं बताना?"

"उसी से छिपाकर रखने के लिए तो कह रही हूँ।"

"तब मुझे मत बताओ। मैं और माइकल घनिष्ठ मित्र हैं, मैं उससे उसके सम्बन्ध की कोई भी बात छिपाकर नहीं रख सकता।"

क्लैरा मुख देखती रह गई। मथुरासिंह ने उठते हुए कहा, "चलिए, भोजन का समय हो गया है।"

"मैं आपको 'ऐल्प्स' में ले जाना चाहती हूँ।"

"इंपीरियल में क्यों नहीं?"

"वहाँ आपकी प्रेमिका मिल सकती है।"

"फिर क्या हुआ?"

"वह आपसे रुष्ट हो जायेगी।"

"आप इसकी चिन्ता न करें। आप-जैसी सुन्दर लड़की को मेरे साथ देखकर, उसे प्रसन्नता ही होनी चाहिये।"

"मैं क्या ऐसी सुन्दर हूँ।"

"मैं यह बात निश्चय से कह सकता हूँ कि आप सुन्दर हैं।"

क्लैरा उठ पड़ी और दोनों चलने के लिए तैयार हो गये। मथुरासिंह ने अपना पर्स टटोला। इसका अभिप्राय समझ क्लैरा ने कहा, "रुपये की चिन्ता न करें, मेरे पास बहुत हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हैं तो मेरे पर्स में भी। पर मैं समझ रहा था कि कदाचित् कुछ कम हों।"

एकाएक क्लैरा के मुख से निकला, "हम अपना भोजन यहीं न मंगवा लें?"

"कहाँ से?"

"यहीं से।"

"मुझे यहाँ का खाना पसन्द नहीं। प्रातः का अल्पाहार तो बिलकुल नहीं भाया था।"

"तो चलिये।"

दोनों कमरे से निकल आये। मथुरासिंह अपने कमरे को अभी ताला लगा ही रहा था कि माइकल अपने कमरे से निकलकर इधर आता दिखाई दिया। क्लैरा ने उसे आता देखा तो कहने लगी, "आपके मित्र आ रहे हैं।"

मथुरासिंह ने ताला लगाकर मुड़कर देखा तो माइकल आ रहा था। उनके समीप पहुँच कर माइकल ने कहा, "डार्लिंग! क्या कर रही हो यहाँ?"

"आपके मित्र से परिचय बढ़ा रही हूँ।"

"मैं तो बहुत देर से अपने कमरे में प्रतीक्षा कर रहा था?"

"हम उधर ही आ रहे थे।"

माइकल ने मथुरासिंह की आंखों में देखते हुए पूछा, "क्या यह सत्य कह रही है?"

"यह व्यावहारिक झूठ बोल रही है।" मथुरासिंह ने बताया।

"व्यावहारिक झूठ? वह क्या होता है?"

"व्यावहारिक झूठ उसे कहते हैं, जो किसी के मन को दुःखी न करने के लिए बोला जाय।"

माइकल चलते-चलते कहने लगा, "तो क्लैरा ने मुझे दुःखी न करने के लिए झूठ बोला है। मुझे आश्चर्य होता है कि इसकी ऐसी कौन-सी बात है, जिससे मुझे दुःख हो सकता था। मैं तुमसे सच कहता हूँ मिस्टर सिंह! कि यदि यह तुम्हारे साथ तुम्हारे पलंग की भागीदार भी बनी होगी तो भी मुझे इसका दुःख नहीं होगा। यह नहीं जानती कि मैं तुम्हारा कितना मान करता हूँ।"

"परन्तु माइकल! क्या तुम मुझसे इतनी नालायकी की आशा करते हो?"

माइकल खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने कहा, "श्रीमतीजी ने मुझे पाकिस्तान जाने की आज्ञा दिला दी है। मैंने कहा है कि मैं तो इसको साथ लेकर ही कराची जा सकता हूँ। इसका कहना है कि विवाह के बिना यह मेरे साथ नहीं जा सकती। मेरा कहना है कि हम कल विवाह कर लेंगे। मैं कैथोलिक हूँ, इसका एक दिन में प्रबन्ध कर सकता हूँ।

"इस पर यह कहने लगी कि इसने अभी तक मेरे साथ विवाह करने का निर्णय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया। मेरे लिए यह आश्चर्य करने की बात थी। इस पर यह कहने लगी कि तुम मेरे और इसके बीच में आ खड़े हुए हो। पहले तो मुझे क्रोध चढ़ आया और मैंने इसके मुख पर एक चपत लगा दी। बाद में अपने कृत्य पर पश्चात्ताप करने लगा और मैंने इससे इसके लिए क्षमा माँगी और लज्जित-सा अपने कमरे में पड़ा रहा हूँ। मेरा विचार था कि मैं आज तुम्हारे साथ डिनर लूंगा, इस कारण उठकर तुम्हें देखने चला आया था। तुम दोनों को यहाँ खड़ा देख मुझे क्लैरा के कथन पर विश्वास हो रहा था कि वास्तव में तुम हम दोनों के मध्य आ खड़े हुए हो।

"सिंह! तुम कहते हो कि तुम ऐसा नहीं कर सकते। मुझे तुम पर विश्वास है। इससे मैं क्लैरा से सहानुभूति ही रख सकता हूँ।"

इस समय तक वे होस्टल के डाइनिंग हाल के बाहर जा खड़े हुए थे। मथुरासिंह ने कहा, "मैं चाहता था कि आज नगर के किसी होटल में हिन्दुस्तानी खाना खाया जाय।"

"कहाँ चले?"

श्रीमतीजी तो ऐल्प्स के लिए कह रही थीं, मेरा विचार पहले इंपीरीयल जाने का था अब क्वालिटी के लिए इच्छा हो रही है।"

"तो चलो, मगर एक शर्त है।"

"क्या?"

"बिल का भुगतान मैं करूंगा।"

"निमन्त्रण तो मैं दे रहा हूँ, इसलिए भुगतान भी मुझे ही करना चाहिए।"

"जी नहीं।" क्लैरा ने कहा, "निमन्त्रण मैंने दिया है, इस कारण बिल का भुगतान मैं करूंगी।"

"और मेरा कहना है कि क्लैरा को मेरी यह अन्तिम दावत है, इसके पश्चात् मैं इसके जीवन से निकल जाना चाहता हूँ। इस कारण दाम मैं दूंगा।"

मथुरासिंह इस परिस्थिति में परेशान-सा खड़ा रह गया। फिर कुछ विचारकर बोला, "मैं इस निमन्त्रण को अस्वीकार करता हूँ। आप लोगों के प्रथम मिलन का मैं साक्षी नहीं और बिछोह का भी साक्षी बनना नहीं चाहता। मेरे विचार से तुम दोनों जाओ और यत्न करो कि परस्पर का मनोमालिन्य मिट जाय।"

इतना कह मथुरासिंह डाइनिंग हाल में घुस गया। क्लैरा और माइकल एक-दूसरे का मुख देखते रह गए।

6

अगले दिन प्रातः ही माइकल मथुरासिंह के कमरे में आ गया। माइकल ने द्वार धकेला तो वह खुल गया। मथुरासिंह फर्श पर चटाई बिछाए, बैठा हुआ पूजा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। उसे इस स्थिति में देख माइकल द्वार पर ही खड़ा रह गया। मथुरासिंह का ध्यान माइकल के खटके से भंग हो गया था। उसने माइकल को खड़ा देखा तो कह दिया, "आओ, कैसे आये हो?"

"मैं तुम्हारी पूजा में विघ्न डालने के लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ। किन्तु मैं आज जा रहा था, और तुमसे मिले बिना जा नहीं सकता था। इस कारण मुझे ऐसा करना पड़ा है।"

मथुरासिंह चटाई से उठ कुर्सी पर बैठता हुआ पूछने लगा, "और क्लैरा?"

"वह नहीं मानी।"

"किस बात के लिए नहीं मानी?"

"मुझसे विवाह के लिए और मेरे साथ जाने के लिए।"

"तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैंने लन्दन का टिकट खरीदा है। वहाँ से मैं पैरिस जाऊंगा।"

"मुझे दुःख है कि मैं इसमें कारण मान लिया गया हूँ। वैसे मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा उससे किसी प्रकार का भी सम्बन्ध नहीं है।"

"मैं जानता हूँ। मुझे क्लैरा के कहने का किंचित्-मात्र भी विश्वास नहीं आया कि तुम्हारा इससे किसी प्रकार का भी सम्बन्ध है। मेरे पाकिस्तान जाने से इन्कार करने पर ही वह मुझसे रूटी है।"

"किन्तु तुम पाकिस्तान जा क्यों नहीं रहे?"

"हिन्दुस्तान पाकिस्तान के झगड़े में मैं किसी ओर से भी लड़ना नहीं चाहता। मैं कुछ ऐसा समझ पाया हूँ कि इन दोनों देशों में घोर युद्ध छिड़ने की सम्भावना है। इस युद्ध में मुझे कमाण्डर-इन-चीफ का हाथ भी दिखाई देता है। मुझे सन्देह है कि अंग्रेज राजनीतिज्ञ दोनों देशों के परस्पर लड़कर तबाह होने में सहायक होंगे।"

मथुरासिंह भी कुछ इसी दिशा में विचार कर रहा था। उसको कुछ इस प्रकार भी प्रतीत होता था कि कमाण्डर-इन-चीफ और गवर्नर-जनरल हिन्दुस्तान की पाकिस्तान पर विजय को पसन्द भी नहीं करेंगे। कमाण्डर-इन-चीफ समझ रहा था कि मथुरासिंह उनकी नीति के विरुद्ध सम्मति देने वाला है।

इस पर भी अपने मन के विचार मथुरासिंह ने माइकल को नहीं बताए। वह समझता था कि क्लैरा सैनिकों पर जासूसी का कार्य करती है। वह माइकल के पीछे लगी हुई है। किस आशा में? कहा नहीं जा सकता। अब उसको किसी अन्य पर जासूसी करनी है। इस कारण वह उसके साथ पाकिस्तान जाने से इन्कार कर रही है। अपना यह सन्देह भी उसने माइकल को नहीं बताया। उसने केवल यही पूछा, "तुम्हारा जहाज किस समय जाता है?"

"दो बजे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तुम्हें विदा करने हवाई अड्डे पर आने का यत्न करूंगा।"

"परन्तु एक बात का स्मरण रखना कि यदि क्लैरा वहाँ उपस्थित हो तो उसके सम्मुख यह प्रकट होने नहीं देना कि मैं पाकिस्तान नहीं जाऊंगा।"

"क्यों?"

"मैंने उसे बताया है कि मैं पाकिस्तान में भरती होने का प्रार्थना-पत्र देकर ही इंगलैंड जाऊंगा।"

"क्या लाभ होगा इससे?"

"मैं अभी भी आशा करता हूँ कि कदाचित् वह मेरे साथ जाने के लिए तैयार हो जाय।"

मथुरासिंह के मुख पर मुस्कान दौड़ गई, परन्तु वह चुप ही रहा। माइकल ने पूछा, "अब हम फिर कब मिलेंगे?"

"मिसेज स्टैनले के निमन्त्रण पर मेरा विचार पत्नी-सहित इंगलैंड जाने का हो रहा है। यदि वहाँ गया तो मैं तुमसे मिलने का यत्न करूंगा। तुम मुझे अपना पता लिख भेजना।"

"तुम्हें किस पते पर पत्र लिखा जाय?"

मथुरासिंह ने अपने गाँव का पता लिखकर दे दिया।

माइकल के जाने पर मथुरासिंह अल्पाहार करने के लिए डाइनिंगहॉल में गया। उसने अल्पाहार किया और वहाँ रखा हिन्दुस्तान टाइम्स समाचार-पत्र पढ़ने लगा। पत्र में कश्मीर में भारतीय सेनाओं के पहुँचने का समाचार था। भारत के प्रधान मन्त्री की रेडियो-घोषणा थी और पंडितजी की उदारता की प्रशंसा भी की गई थी।

उस घोषणा में जनमत-संग्रह की बात पढ़कर मथुरासिंह के मन में ग्लानि भर रही थी। वह समझ रहा था कि यह निश्चय गवर्नर-जनरल और कमाण्डर-इन-चीफ का कराया हुआ है। इससे वह विचार करता था कि सेना-कार्य से मुक्त होने पर प्रसन्नता होनी चाहिए। इस राजनीति के कीचड़ में न फँसना ही श्रेयस्कर है।

अखबार पढ़ वह अपने कमरे में गया और सैनिक परिधान धारण कर केन्द्रीय सैनिक कार्यालय के लिए चल पड़ा। ठीक दस बजे वहाँ पहुँच कर्नल थापर के कमरे के पास जा, उसने अपना नाम भीतर भेज दिया और स्वयं वहाँ प्रतीक्षा करने लगा। थापर अभी आया नहीं था। एक घंटा प्रतीक्षा करने के बाद उसको भीतर बुलाया गया। भीतर जाने पर कर्नल थापर को सैल्यूट कर वह खड़ा हो गया। थापर ने उसको बैठने के लिए कहा और जब वह बैठ गया तो कहने लगा, "मिस्टर सिंह! मुझे खेद है कि सरकार को तुम्हारी सेवाओं की आवश्यकता नहीं रही।"

"धन्यवाद! परन्तु मेरा कथन है कि आपको खेद प्रकट करने की आवश्यकता नहीं। मुझे इस नौकरी से जाने का कोई शोक-सन्ताप नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सत्य?"

"जी।"

"परन्तु तुम कल तो कह रहे थे कि युद्ध करना राजपूतों का कर्तव्य है। अब युद्ध तो आरम्भ हो गया है, किन्तु तुम्हें भाग लेने का अवसर नहीं प्राप्त हो रहा?"

"मैं कल ऐसा कह रहा था और आज भी मेरे विचार वैसे ही हैं। परन्तु युद्ध में मेरा भाग लेना अनासक्त भाव से ही है। न तो युद्ध में जाकर न मर सकने का मुझे शोक है, न ही अब इस अवसर पर युद्ध से वंचित किये जाने का मुझे शोक है।"

कर्नल थापर ने उसको डिस्चार्ज सर्टिफिकेट दिया और उसकी पूर्ण रेजिमेंट को विसंयोजित करने का आज्ञा-पत्र दिखाकर कहने लगा, "यह आज्ञा मैं आपकी रेजीमेन्ट के अधिकारियों को भेज रहा हूँ, आपको यहीं से मुक्त किया जाता है।"

"मेरा हिसाब कर दिया जाय।"

"वह आप हैड क्लर्क से मिलकर कर लीजिए। इंगलैंड से आया रुपया आपके घर भेज दिया जायेगा।

मथुरासिंह ने देखा कि कल यही थापर निर्णय लेने में कितना विलम्ब कर रहा था, किसी बात को समझने के लिए उसको यत्न करना पड़ता था। परन्तु आज वह विद्युत् की चपलता से कार्य कर रहा है। वह समझ रहा था कि देश के हित में कार्य करते समय ये लोग प्रमादी हो जाते हैं। जब देश के अहित का कार्य समक्ष आता है तो इनकी बुद्धि तीव्रता से कार्य करने लगती है।

अपना वेतन इत्यादि लेते-लेते उसको एक बज गया। अतः बिना मध्याह्न का भोजन किए, टैक्सी लेकर वह पालम हवाई अड्डे की ओर चल दिया।

माइकल उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह आया तो उसकी बाँह में अपनी बाँह डाल, माइकल उसको एक ओर ले गया। उसने कहा, "सिंह! जाते-जाते मैं तुमको एक बात कहे जा रहा हूँ। किसी को बताना नहीं और उचित समझो तो इससे लाभ उठा लेना।"

विस्मित-सा मथुरासिंह उसकी ओर देखने लगा। अपनी घड़ी में समय देख माइकल ने कहा, "पाँच मिनट शेष हैं अतः चुपचाप सुन लो प्रतिप्रश्न करने का लाभ नहीं होगा और कदाचित् मैं बता भी न सकूंगा।

"यह क्लैरा क्लीवमौंट की लड़की नहीं है। हाँ, उसकी कोठी में रहती अवश्य है।"

"लेडी गौर्ट से मेरी मित्रता देखकर इसे जासूसी करने के लिए नियुक्त किया गया था। कदाचित् मिसेज गौर्ट पर ही इसी को नियुक्त किया गया हो। कल उसको विदित हुआ है कि लेडी गौर्ट से तुम्हारा सम्बन्ध अधिक घनिष्ट था और मुझसे लेडी गौर्ट ने सम्बन्ध इसलिए बनाये रखा था जिससे कि वह तुमसे सम्पर्क स्थापित कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सके। अतः उसको नियुक्त करने वालों को यह समझ आया कि मुझ पर जासूसी करने की अब आवश्यकता नहीं, अब तुम पर जासूसी करनी चाहिए।

"क्लैरा की रिपोर्ट है कि कल मध्याह्न दो घंटे तक तुम उसके बैडरूम में रहे हो। वहाँ तुम लोग क्या करते रहे हो, यह तो उसके अनुमान का विषय है। इस पर भी शयनागार में जो कुछ हो सकता है उससे अधिक वह अनुमान भी क्या लगा सकती है। यही उसने रिपोर्ट की है।

"मैं एक व्यर्थ का व्यक्ति समझ छोड़ दिया गया हूँ। परन्तु तुम पर उसका वह अधिकार अभी नहीं बना, जो मुझ पर था। इस पर भी वह निराश नहीं है। कल तो वह तुम पर अपना जादू नहीं चला सकी। मेरा अनुमान है कि आज वह तुम पर अपना आक्रमण करेगी।"

मथुरासिंह मुख देखता रह गया। इतना तो वह सन्देह कर रहा था कि वह उस पर जासूसी करने लगी है। परन्तु यह जासूसी लेडी गौर्ट के सम्बन्ध में होगी, इसका अनुमान उसे नहीं था। मथुरासिंह विचार कर रहा था कि उसकी नियुक्ति किसकी ओर से हो सकती है।

उसे चुप देख माइकल ने कहा, "मुझे सूचना देने वाला व्यक्ति मेरे साथ ही पाकिस्तान जा रहा है। मैं इससे अधिक और कुछ नहीं बता सकता। उस व्यक्ति का ठीक-ठीक परिचय भी मैं अभी नहीं दे सकता। इस विषय में भी उसने ऐसे ढंग से बात कही है कि उस पूर्ण वार्तालाप का कोई दूसरा अर्थ भी निकाला जा सकता है। तुम्हारा नाम उसने बताया नहीं था, यह मेरा अनुमान-मात्र है।"

इस समय हवाई जहाज के जाने का सूचक, साइरन बोला। माइकल मथुरासिंह के गले मिलकर बोला, "सेना से अवकाश मिलते ही मिलने आना, मैं अपना पता लिख भेजूंगा।"

इस प्रकार मथुरासिंह को छोड़ वह हवाई जहाज की ओर चल दिया। जहाज के जाने तक मथुरासिंह वहाँ खड़ा रहा। फिर टैक्सी कर अपने होस्टल आ गया।

होस्टल आते हुए मार्ग में वह माइकल से प्राप्त सूचना पर विचार करता रहा। उसकी एक बात से वह प्रभावित हुआ था। वास्तव में ही वह एक दिन पहले लेडी गौर्ट के शयानागार में कुछ काल के लिए गया था।

किन्तु उसके विचार, अधिकतर, इसी बात पर केन्द्रित रहे कि यह जासूसी किसकी ओर से हो रही है। रह-रहकर उसका ध्यान भारत के गृहमंत्री की ओर जाता था। पिछले दिन वाली गृहमंत्री की सूचना पर उसको विस्मय हो रहा था। माइकल की सूचना से उसे अपने अनुमान की पुष्टि मिली कि गृहमंत्री ने अपने सब छोटे-बड़े अधिकारियों पर जासूस छोड़ रखे हैं।

गृहमंत्री के विषय में विचार करते हुए जहाँ वह प्रसन्न था कि भारत के शासकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक ऐसा व्यक्ति नियुक्त है जिसमें बुद्धि है, वहाँ वह अपने विषय में विचार कर चिन्तित था। कल उसको अपने दिये हुए वचन के अनुसार आज सेना से मुक्ति मिलने पर गृहमंत्री से भेंट करनी थी।

तीन बजे जब वह अपने होस्टल में पहुँचा तो उसको माइकल के कथन के समर्थन में एक प्रमाण मिला। क्लैरा वहाँ बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह अपने कमरे की ओर जा रहा था कि मैट्रन के कमरे से निकलकर क्लैरा ने उससे पूछा, "कहाँ गये थे मिस्टर सिंह?"

"माइकल को विदा करने के लिये।"

"तो वह गया?"

"हाँ।"

"कहाँ गया है?"

"हवाई जहाज से कराची।"

"परन्तु उसने टिकट तो लन्दन का बनवाया है?"

मथुरासिंह को विश्वास हो गया कि निस्सन्देह यह लड़की चतुर जासूसी करने वाली है। वह स्वयं सतर्क था। अतः उसने कह दिया, "मैंने उसका टिकट नहीं देखा।"

"उसने बताया भी नहीं?"

"इसकी आवश्यकता नहीं थी?"

"अच्छे मित्र हैं आप?"

"हमारी मित्रता परस्पर सन्देह प्रेरित नहीं करती।" फिर उसने बात बदलकर पूछा, "पर तुम उसको विदा करने नहीं गई?"

"हाँ, मैं नहीं गई।"

"कल ही तो तुम कह रही थीं कि तुम्हारा उससे बहुत प्रगाढ़ प्रेम है।"

"हाँ, वह तो अब भी है। परन्तु मैं उसके सामने अपने मन पर नियन्त्रण न रख सकने के भय से आज उसको विदा करने नहीं गई। मुझे भय लग रहा था कि मेरी भावना उसके साथ ही भाग जाने के लिए मुझे कहीं विवश न कर दे।"

मथुरासिंह ने अपने कमरे का द्वार खोलते हुए कहा, "यदि तुम ऐसा करती तो यह एक स्वभाविक बात ही तो होती?"

दोनों कमरे में चले गये। क्लैरा ने बात बदलकर कहा, "आप कश्मीर फ्रन्ट पर कब जा रहे हैं?"

"अपनी पूर्ण रेजिमेंट-सहित मैं सेना-विसंयोजन योजना में आ गया हूँ और मुझे आज सेना से मुक्ति मिल गई है।"

"अच्छा, तो अब क्या करेंगे?"

"अभी निर्णय नहीं किया। मुझे घर से आये छः मास हो गए हैं। अतः इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसर पर पहला कार्य तो यही होगा कि घर जाकर अपनी पत्नी तथा माता-पिता से मिला जाये।''

''क्या आपकी पत्नी लेडी गौर्ट से अधिक सुन्दर है?''

''लेडी गौर्ट! उसकी राधा से तुलना का तो मेरे मन में कभी विचार ही नहीं आया था। परन्तु क्लैरा! तुमने कल भी लेडी गौर्ट के विषय में कुछ कहा था और आज भी कुछ इसी प्रकार कह रही हो। मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि मेरा उससे किसी प्रकार का लगाव नहीं है।''

''मैंने लगाव की बात कही है क्या? मेरे यह पूछने में कि आपकी पत्नी उससे अधिक सुन्दर है, लगाव का अर्थ कहाँ निहित था?'' कहते-कहते क्लैरा हँस पड़ी।

''मालूम होता है, या तो लेडी गौर्ट से तुम्हें ईर्ष्या होती है अथवा तुम्हारी उससे घनिष्ट मित्रता है।''

''आपकी दूसरी बात ही ठीक है। जब से लार्ड गौर्ट से उसका विवाह हुआ है, तभी से मेरी उससे मेल-मुलाकात है। अब तो वह मेरी परम सखी है। आपको वह हर समय स्मरण करती रहती है। यह तो मुझे कल ही विदित हुआ है कि उसके निःश्वासों के उत्पन्न करने वाले मिस्टर सिंह आप ही हैं। कल आपके वहाँ से चले आने के बाद वह बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट प्रतीत होती थी। कुछ-कुछ थकी हुई-सी भी लगती थी।''

इतना कह क्लैरा ने वक्र दृष्टि से सिंह को निहारा। मथुरासिंह सोचने लगा कि कहीं लार्ड गौर्ट ने ही क्लैरा को अपनी पत्नी पर जासूसी करने के लिए नियुक्त न किया हो।

''दोनों कमरे में बैठ गये। अपनी बोतल में से जल निकालते हुए मथुरासिंह ने पूछा, ''आप जल पियेंगी?''

''मैं नीचे चाय के लिए आर्डर कर आई हूँ। चाय आती ही होगी।''

''गाँव जाने से पूर्व मैं लेडी गौर्ट से मिलकर जाना चाहता हूँ।''

''उसको आप रात के भोजन पर आमन्त्रित कर लीजिये।''

''रात को कष्ट देना मैं उचित नहीं समझता। कल दिन में किसी समय मिलने का यत्न करूंगा।''

''आपका फिर दिल्ली आना कब होगा?''

''कह नहीं सकता। वास्तव में मुझे नौकरी की कोई अभिलाषा नहीं है। मन में तो यही आता है गाँव जाकर, गुलेल ले, अपने खेतों के पक्षी उड़ाया करूँ।''

क्लैरा हँस पड़ी। उसने कहा, ''इस पर भी आपको दिल्ली और बम्बई की यात्रा करनी ही पड़ेगी। कदाचित् आपको शीघ्र ही इंगलैंड भी जाना पड़ जाय। लेडी गौर्ट आपको अवश्य आमन्त्रित करेंगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इंगलैंड जाने का निमन्त्रण तो मुझे पहले से ही मिला हुआ है। वह लेडी गौर्ट ने नहीं, अपितु उनकी माता ने दिया है।"

"ओह! प्रतीत होता है कि फ्लोरा के परिवार से आपका गहरा सम्बन्ध है।"

"हाँ, मिस्टर स्टैनले मेरे प्रशिक्षक रहे हैं। उनके कारण मुझे बहुत तरक्की मिली है।"

7

मथुरासिंह उसी सायंकाल, साधारण परिधान में गृहमंत्री के निवास-स्थान पर जा पहुँचा। वह बिना सूचना दिये अथवा बिना बुलाये वहाँ गया था। जब वह वहाँ पहुँचा तो उस समय गृहमंत्री घर पर नहीं थे। उसने चपरासी से उनके पी. ए. की उपस्थिति के विषय में पूछा तो उसको बताया गया कि वह बराबर वाले कमरे में बैठा है। मथुरासिंह ने अपना नाम लिखकर भीतर भेजा तो वही भीमकाय व्यक्ति बाहर आया और उसको अपने कार्यालय में ले गया। उसने मथुरासिंह को बैठाकर पूछा, "कहिये, किस प्रकार आना हुआ है?"

"मंत्री महोदय ने कल इच्छा की थी कि आज किसी समय मैं उनसे मिल लूँ।"

"इस समय वे मंत्रिमंडल की विशेष बैठक में हैं। यदि आप चाहें तो उनके लौटने तक प्रतीक्षा कर सकते हैं।"

"मैं सोचता हूँ, आ तो गया ही हूँ, इसलिए कुछ प्रतीक्षा ही कर ली जाय।"

मथुरासिंह को प्रतीक्षालय में बैठा दिया गया। उसे आधे घण्टे से भी अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ी। गृहमंत्री आये तो मथुरासिंह को उनके समक्ष उपस्थित कर दिया गया। गृहमंत्री ने कहा, "मैं सायं साढ़े तीन बजे तक आपकी प्रतीक्षा करता रहा। आपके होस्टल में फोन भी करवाया था, किन्तु आप वहाँ मिले नहीं।"

मैं लगभग तीन बजे होस्टल में पहुँच गया था। उसी समय मैं यहाँ आने वाला था, परन्तु मैं समझता हूँ कि मेरी गतिविधि पर दृष्टि रखी जा रही है। उस जासूस से पीछा छुड़ाने में दो घंटे लग गये।"

गम्भीर भाव से गृहमंत्री उसको देखने लगा। कुछ विचार कर उसने पूछा, "किस विभाग के लोग हैं जो आपका पीछा कर रहे हैं?"

"जब से मैं दिल्ली में आया हूँ क्लैरा क्लीवमौंट नाम की एक लड़की मेरा पीछा कर रही है।"

"क्लैरा क्लीवमौंट?"

"जी।"

गृहमंत्री ने मेज पर लगी घंटी बजाई। पी. ए. आया तो गृहमंत्री ने कहा, "क्लैरा क्लीवमौंट नाम की एक लड़की वाई. एम. सी. ए. में अधिकतर आती-जाती रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उसके विषय में पूर्ण विवरण प्राप्त किया जाय।''

''कब तक?''

''कल मध्याह्न तक।''

पी. ए. के जाने पर गृहमंत्री ने मथुरासिंह से पूछा, ''कश्मीर अभियान के विषय में आपसे परामर्श करना था।''

गृहमंत्री के, आगे कुछ कहने की प्रतीक्षा में मथुरासिंह चुप रहा।

''आप कुछ चाय इत्यादि लेंगे।''

''जी नहीं! धन्यवाद।''

गृहमंत्री ने अपना 'ब्रीफ केस' खोला और उसमें से हाथ से बनाया हुआ एक मानचित्र निकालकर मथुरासिंह के सामने रख दिया और फिर कहा, ''इसका अध्ययन कीजिए। तब तक मैं अल्पाहार कर लेता हूँ।''

वह मानचित्र मंत्रि-मंडल के सदस्यों के लिए तैयार किया गया था। उसमें कबाइलियों की, आगे बढ़ते-बढ़ते श्रीनगर हवाई अड्डे से, दो फर्लांग के अन्तर तक, पहुँच दिखाई गई थी। श्रीनगर की भोगोलिक स्थिति और भारतीय सेनाओं के युद्ध-क्षेत्र तक पहुँचने का लम्बा मार्ग भी अंकित किया गया था। इस मार्ग में नदी-नाले और उन पर बने पुलों की दुर्बल स्थिति का भी प्रदर्शन था।

मथुरासिंह मानचित्र को देख ही रहा था कि गृहमंत्री अल्पाहार करके लौट आये। उन्होंने कहा, ''मैं यह चाहता हूँ कि आप मुझे यह बतायें कि इस परिस्थिति में हम क्या कर सकते हैं, जिससे कि पूर्ण कश्मीर पर हम अधिकार कर सके। मेरे विचार से आप उस मेज पर बैठ जाइए और स्थिति का भली-प्रकार अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट तैयार करिये।''

मथुरासिंह अलग मेज पर जा बैठा और मानचित्रों को देखता हुआ एक कागज पर नोट्स बनाने लगा।

अपनी रिपोर्ट तैयार करने में उसे दो घंटे लग गये। उसके नीचे अपने सुझाव लिखकर वह गृहमंत्री की मेज पर आ गया।

गृहमंत्री ने रिपोर्ट पढ़ी और सिर उठाकर प्रश्न-भरी दृष्टि से मथुरासिंह की ओर देखने लगा। मथुरासिंह ने कहा, ''मैंने छः सुझाव दिए हैं। पहला है, कश्मीर को अपने अधीन कर उसको सुरक्षित करने के लिए पांच डिविजन सेना, दो स्क्वैड्रन हवाई जहाज, दस बाम्बर और एक स्क्वैड्रन टैंक चाहिए। इन सबको कश्मीर ले जाने के लिए पठानकोट से जम्मू तक और उसके आगे भी, पुल तथा सड़कें सुदृढ़ नहीं हैं।

''कश्मीर पर अपना अधिकार रखने के लिए पठानकोट-जम्मू सड़क चौड़ी की जाय और उसकी मरम्मत की जाय। जब तक सड़क ठीक नहीं हो जाती, तब तक हवाई जहाजों पर ही निर्भर रहना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दूसरा सुझाव है कि जिस मार्ग से सेना और उसके लिए खाद्य एवं युद्ध-सामग्री जायेगी, उस मार्ग की सुरक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये। सड़क का एक भाग तो पाकिस्तानी सीमा के समीप से जाता है, वहाँ पर सुदृढ़ चौकियाँ होनी चाहियें।

"तीसरा सुझाव है कि पाकिस्तान को खुलकर इस युद्ध में भाग लेने के लिए विवश कर दिया जाये। जिस समय वे खुलकर युद्ध में भाग लेंगे, तब तीन स्थानों से पाकिस्तान पर आक्रमण कर दिया जाये। एक तो जैसलमेर से सिंध पर, दूसरे अमृतसर से लाहौर पर और तीसरे कलकत्ता से ढाका पर।

"मेरा चौथा सुझाव है कि पाकिस्तान पर आक्रमण करने से पूर्व भारत में मुसलमानों को एक सीमित क्षेत्र में घुस बैठने पर विवश किया जाय।

पाँचवाँ सुझाव है, इंगलैंड और अमेरिका में अपना प्रचार तीव्र किया जाये और वहाँ की सरकार और जनता के मस्तिष्क में अपना दृष्टिकोण भली-भांति बैठा दिया जाये।

"छठा है स्थल, जल और वायु सेना का राष्ट्रीयकरण किया जाये। यही छः निष्कर्ष मेरी रिपोर्ट के हैं।"

इस समय सुरक्षा-मंत्री भी वहीं आ गया था। गृहमंत्री ने जब उसको मथुरासिंह की रिपोर्ट दिखाई तो उसने पूछा, "सेना के राष्ट्रीयकरण से आपका क्या अभिप्राय है?"

"सेना के जिन घटकों पर किंचित मात्र भी संशय हो कि वे देश के हित में कार्य नहीं कर रहे अथवा धोखा दे सकते हैं, उनको मुक्त कर दिया जाये।"

"लैफ्टिनैन्ट सिंह! क्या आपको सन्देह है कि सेना में कोई ऐसा व्यक्ति भी है, जो भारत के हित के विपरीत आचरण कर सकता है?"

"कम-से-कम एक-दो को तो मैं ही जानता हूँ।"

"कौन है वे?"

"एक तो गवर्नर-जनरल हैं। वे देश की तीनों प्रकार की सेनाओं के उच्चाधिकारी हैं। उनका प्रथम व्यवहार देश के हित के विपरीत रहा है।"

"दूसरे..."

"बात को बीच में ही काटकर सुरक्षा-मंत्री ने कहा, "कोई सैनिक राजनीति के विषय पर अपनी सम्मति नहीं दे सकता।"

"मैं कश्मीर में युद्ध-अभियान के सम्बन्ध में बात कर रहा हूँ। यदि कोई राजनीतिक अधिकारी सेना के अभियान के विषय पर गलत हस्तक्षेप करे तो उसको रोकना युद्ध-नीति-विशेषज्ञ का कर्तव्य होता है।"

"क्या अनुचित किया है, गवर्नर-जनरल ने?"

"उन्होंने कश्मीर के भारत में विलय का विरोध किया है। ऐसा उन्होंने भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना के अभियान के बाद भी किया है, उससे पूर्व की तो मैं बात ही नहीं कर रहा।

"दूसरे, पाकिस्तान की सेना का सामान कबाइलियों को देने वाले अफसर को भारत की सेना का सर्वोच्च अधिकारी बनाया हुआ है। मेरा अभिप्राय कमाण्डर-इन-चीफ़ से है।

"तीसरे, कश्मीर में शान्ति-स्थापित होने के अनन्तर वहाँ पर जनमत संग्रह की घोषणा कर सैनिक अभियान को दुर्बल करने का यत्न किया गया है।"

गृहमंत्री और सुरक्षा-मंत्री एक-दूसरे का मुख देखते रह गये। सहसा गृहमंत्री ने मथुरासिंह की रिपोर्ट उठाई और कश्मीर के मानचित्र के साथ लपेटकर उसको अपने थैले में रख मथुरासिंह से पूछा, "आपके पास जाने के लिए वाहन है?"

"जी नहीं, मैं तो टैक्सी में आया था।"

"अच्छा, आप बाहर प्रतीक्षालय में बैठिये। मैं इसका प्रबन्ध करता हूँ।"

मथुरासिंह ने दोनों को नमस्कार किया और प्रतीक्षालय में चला गया। उसके जाने पर सुरक्षा-मंत्री कहने लगा, "मैं समझता हूँ कि गवर्नर-जनरल का इस विषय में इतना दोष नहीं जितना कि हमारे प्रधान मन्त्री का है।"

"क्या दोष है?"

"प्रथम तो उन्होंने लार्ड माउण्डबेटन को गवर्नर-जनरल के पद पर नियुक्त करवाया था।"

"इसमें तो हमने भी उनके प्रस्ताव का समर्थन किया था।"

"वह प्रस्ताव स्वराज्य-प्राप्ति से पूर्व किया गया था और उस समय इसका विरोध करने का अभिप्राय था ब्रिटिश सरकार का विरोध करना।"

"ब्रिटिश सरकार का?"

"जी।"

"हमें महाराज से बात करने के लिये कश्मीर में अपना एक आयोग भेजना चाहिये था।"

"परन्तु महाराज को तो हमारे प्रधान मन्त्री आयोग्य और भारत का शत्रु समझते हैं।"

इसी बीच गृहमंत्री ने घंटी बजाकर अपने पी. ए. को भीतर बुलाया और कहा, "एक लिफाफे में पांच सौ रुपया और उसके साथ एक चिट पर यह लिखकर रख दीजिये—आपकी सेवाओं के लिए भेंट है, अपना रहने का पता हमारे पास छोड़ दीजिये जिससे कि समय पर आपको बुलाया जा सके। दिल्ली में रहने के व्यय का भुगतान किया जाता रहेगा। चिट पर किसी का नाम नहीं लिखना।

"वह लिफाफा मिस्टर सिंह को उस समय देना जब वह मोटर में बैठ जाये। उसके जाने के लिए मोटर का प्रबन्ध भी कर दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले दिन की चुस्ती की तुलना में आज की सुस्ती पर मथुरासिंह विस्मय कर रहा था। दस मिनट प्रतीक्षा करने के बाद गृहमंत्री का पी. ए. आया और उस को मोटर की ओर ले गया। जब मथुरासिंह मोटर में बैठ गया तो उसको वह लिफाफा देते हुए पी. ए. ने कहा, "मंत्री महोदय ने यह आपके विचार के लिये दिया है।" फिर उसने ड्राइवर से कहा, "साहब को आपके निवास स्थान पर छोड़ आओ।"

मथुरासिंह गृहमंत्री की कार अपने होस्टल तक नहीं ले जाना चाहता था। उसने ड्राइवर को जन्तर-मन्तर के चौराहे तक चलने के लिये कह दिया।

8

मथुरासिंह गाड़ी में बैठा हुआ और फिर गाड़ी से उतरने के बाद अपने होस्टल की ओर पैदल चलता हुआ विचार कर रहा था कि उसके सुझावों का दोनों मन्त्रियों पर क्या प्रभाव हुआ है। उनके हाव-भाव और उनके कथन से उसको किसी प्रकार का भी संकेत नहीं मिल पाया। अभी तक उसने वह लिफाफा भी नहीं खोला था, जिसे गृहमंत्री का पी. ए. दे गया था। उसका विचार था कि किसी अन्य समस्या पर गृहमंत्री ने उससे सुझाव माँगा होगा। इस कारण वह उसे अपने कमरे में बैठ एकान्त में खोलना चाहता था।

होस्टल में पहुँचने से पूर्व उसको सड़क पर ही वकील त्रिलोकचन्द मिल गया। वकील साहब से उसका सम्पर्क तभी से टूटा हुआ था, जब वह कराची से लाहौर में आकर रहा था। उस समय वह उनके पास रहने के लिए न जाकर मिलिटरी बैरक्स में रहा था। वह तो उनके पास अपनी अकिंचनता की अवस्था में जाकर ठहरना नहीं चाहता था, किन्तु इस बात ने वकील साहब की पत्नी स्नेहलता को रुष्ट कर दिया था। त्रिलोकचन्द ने यह अनुमान लगाया था कि सैनिक होने के कारण सरकार के विरोधी से सम्पर्क रखने में वह संकोच करता होगा। इसको वह मथुरासिंह की मानसिक दुर्बलता समझता था। वह सोचता था कि अन्य सामान्य अधिकारियों की भांति ही मथुरासिंह भी अपनी सरकारी नौकरी से मोह करता है।

त्रिलोकचन्द पंजाब के उन कतिपय व्यक्तियों में से था, जो विभाजन से पूर्व हिन्दू-मुस्लिम दंगों में हिन्दुओं का नेतृत्व करते रहे थे। इस कारण एक ओर जहाँ उसका नाम अंग्रेजी सरकार की काली पुस्तक में अंकित था, वहाँ दूसरी ओर कांग्रेसी नेताओं में उसको भयानक जीव के रूप में स्मरण किया जाता था।

अपनी कोठी और फरनीचर के अतिरिक्त लाहौर से वह सब कुछ ही निकालकर ले आया था। ऐसा इस कारण नहीं कि वह धनी था और धन के बल पर अपना सब कुछ बचा पाया था। इसमें करणीभूत थी उसकी मनोवृत्ति। जून 3 को ही जब स्वराज्य-प्राप्ति और विभाजन की घोषणा की गई थी, उसी दिन लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ने का निश्चय कर, उस पर विद्युत् गति से वह कार्य करने लगा था।

जून के अंत तक उसकी सब नकदी, मूल्यवान वस्तुएँ दिल्ली पहुँच गई थीं। उस समय तो उसको भय था कि कदाचित् दिल्ली को तो पाकिस्तान वाले ऐसे ही हल्ला बोलकर ले लेंगे, इस कारण अपनी सम्पत्ति का एक भाग उसने बम्बई भी पहुँचा दिया था।

कई लोग त्रिलोकचन्द के इस कार्य को ठीक नहीं समझते थे। किन्तु वह इसे उचित समझता था। 3 जून के बाद उसने हिन्दुओं को भी यही कहना आरम्भ कर दिया था कि वे पाकिस्तान बनने वाले क्षेत्रों को छोड़कर भारतवर्ष में चले जायें। उसकी यह धारणा थी कि मजहबी आधार पर बनने वाले पाकिस्तान में किसी हिन्दू के लिए शान्तिपूर्वक रहना सम्भव नहीं होगा। साथ ही वह उन नेताओं की मनोवृत्ति को भी भली प्रकार जानता था, जिनके हाथों में भारत की बाग-डोर जा रही थी। उसे आशा नहीं थी कि वे हिन्दुओं की पाकिस्तान में रक्षा कर सकेंगे।

देश-विभाजन के बाद सेना की नियुक्ति प्रायः देशी रियासतों की सीमाओं पर की गई थी। कांग्रेसी सरकार को हिन्दू राजाओं और महाराजाओं से अधिक डर था और पाकिस्तान को अपने एहसान से दबा हुआ मानते थे। उनसे वे मित्रता की आशा करते थे। इसलिये भारत पाकिस्तान की सीमायें प्रायः असुरक्षित थीं।

मथुरासिंह की रेजिमेंट विभाजन से पूर्व ही अम्बाला में टिकी हुई थी। अम्बाला की छावनी छोटे-मोटे पहाड़ी राजाओं पर नियन्त्रण रखने के लिये बनी हुई थी और राजपूत रेजिमेंट वहाँ पर इस कार्य के लिये नियुक्त थी। स्वराज्य स्थापित होने के बाद मथुरासिंह दिल्ली में पहली बार सेना से अवकाश ग्रहण करने के लिए आया था। इससे पूर्व उसको आने का अवसर नहीं मिला था, इस कारण त्रिलोकचन्द से मिलने का अवसर मिलना भी सम्भव नहीं था।

त्रिलोकचन्द कर्जन रोड पर एक कोठी किराये पर लेकर रह रहा था और अपनी प्रैक्टिस वह शिमला हाई कोर्ट में आरम्भ करने का विचार कर रहा था। उस की धारणा थी कि देश की अवस्था अभी भी स्थिर नहीं है। इस कारण वह अवस्था सुधरने की प्रतीक्षा कर रहा था।

इस समय वह भगवानदास रोड पर रहने वाले अपने एक मित्र से मिलकर आ रहा था कि फुटपाथ पर सामने से मथुरासिंह को पैदल आता देख उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। मथुरसिंह ने वकील साहब के चरणस्पर्श किये तो त्रिलोकचन्द ने उसे बाहों से पकड़कर उठा लिया और पूछने लगा, ''ऐसा प्रतीत होता है कि तुम भी सेना की विसंयोजन के शिकार बन गये हो?''

''जी।''

''तभी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह इस तभी का अर्थ नहीं समझ पाया। उसके मस्तिष्क में तो उस समय की स्मृतियां उभर आई थीं, जब वह कॉलेज में पढ़ता था और उनकी कोठी पर रहता था उसने पूछा, "माताजी कैसी हैं?"

"यही तो कह रहा हूँ कि, तुम अब सरकारी नौकर नहीं रहे प्रतीत होते। इसी कारण अब माताजी की याद आई है।"

इस लांछन से तो मथुरासिंह भौचक्का-सा उनका मुख देखता रह गया। उसे परेशान देख, त्रिलोकचन्द खिलखिलाकर हंस पड़ा। उसने बात बदलकर कहा, "किधर जा रहे हो?"

"मैं कल ही दिल्ली आया था, यहाँ वाई. एम. सी. ए. के होस्टल में ठहरा हुआ हूँ।

"वह तो यहाँ से समीप ही है, चलो तुम्हारे स्थान पर चलता हूँ।"

दोनों होस्टल की ओर चल पड़े। इस समय तक मथुरासिंह को वकील साहब के उपालम्भ का अभिप्राय समझ में अपने लगा था। वह कहने लगा, "यह तो आपने ठीक ही अनुमान लगाया है कि मैं अब सेना में नहीं रहा, परन्तु आपसे और माताजी से सम्पर्क न रखने में कारण सरकारी नौकरी का भय नहीं अपितु उसमें अत्यधिक व्यस्तता थी। अपने माता-पिता से भेंट किये भी मुझको दो मास से अधिक हो गये हैं और वे भी पिछली बार स्वयं छावनी में मिलने के लिये आये थे।"

"तुम्हारे पिताजी एक बार लाहौर फिर दूसरी बार दिल्ली में मिले थे।"

"दिल्ली आये थे वे?"

"हाँ, एक दिन हमारी कोठी में ठहरे भी थे?"

"किस काम से आये थे?"

"कह रहे थे कि उनके सेना-काल के एक मुसलमान मित्र के सम्बन्धी हिन्दुओं से घिर गये हैं, उनको छुड़ाने के लिये आये थे।"

"ओह! तो कुछ सफलता मिली उनको?"

"मैंने श्री रफ़ी अहमद किदवई से उनकी भेंट करा दी थी। इस प्रकार फाटक हवशखां में बन्द उन सात प्राणियों को निकाला जा सका था। उनके मुसलमान मित्र भी उनके साथ थे। वे अपने सम्बन्धियों को लेकर इलाहाबाद चले गये थे। उनका नाम अब्दुल रशीद सूबेदार था।"

मथुरासिंह अब्दुल रशीद को जानता था। वह होशियारपुर का रहने वाला था और दिल्ली में उसकी लड़की विवाही हुई थी। मथुरासिंह का विचार था कि उस लड़की के परिवार को बचाने के लिये ही वे वहाँ आये होंगे।

जब वे होस्टल में पहुँचे और मथुरासिंह ने उन्हें अपने कमरे में बैठाया तो त्रिलोकचन्द ने पूछा, "तुम यहाँ किस प्रकार रह रहे हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे एक अंग्रेज मित्र हैं, वे मुझे यहाँ ठहरा गये हैं। इसका भाड़ा साठ रुपया मासिक है, भोजन आदि का व्यय पृथक् होता है।"

"यहाँ पर कब से रह रहे हो?"

"कल आया था। आज सेना से मुक्ति मिल गई है। अब विचार करूंगा कि,"

इस समय मथुरासिंह को गृहमंत्री के पी. ए. द्वारा दिए गए लिफाफ़े का स्मरण हो आया। उसने जेब से पत्र निकालकर दिखाते हुए कहा, "तनिक इसको पढ़ लूँ, फिर आपको बताता हूँ।"

लिफाफ़े में सौ-सौ के पाँच नोट थे और साथ में एक चिट थी। इस बिना हस्ताक्षर के आदेश पर वह गम्भीरता से विचार करने लगा। इसका अभिप्राय तो यह था कि गृहमंत्री ने उसके सुझावों को मूल्यवान समझा है और भावी परामर्श के लिए अपने समीप रखने का विचार व्यक्त किया है।

उसे गम्भीर देख, त्रिलोकचन्द ने पूछा, "क्यों क्या बात है?"

"इस रहस्य की बात आपको बताने में मैं कोई हानि नहीं समझता। मैं समझता हूँ कि आप गुप्त ही रखेंगे।"

फिर उसने अपने दिल्ली आने और यहाँ पर घटित सभी घटनाओं का वर्णन कर दिया और फिर वह चिट भी उनको दिखा दी। त्रिलोकचन्द जब चिट देख चुका तो मथुरासिंह ने पूछा, "अब बताइए क्या कहते हैं आप?"

"किस विषय में तुम मेरी सम्मति चाहते हो?"

"यही कि मैं इस प्रकार कार्य स्वीकार करूँ अथवा नहीं।"

"इसमें हानि क्या है? यदि गृहमंत्री तुमको इस कार्य के लिए किसी प्रकार योग्य समझते हैं, तो तुम्हें अपनी सेवाएँ उनको अर्पित कर देनी चाहिये।

"देखो, वर्तमान मंत्रिमंडल में मैं केवल तीन व्यक्तियों को ही योग्य समझता हूँ। उनमें सबसे अधिक योग्य व्यक्ति यह गृहमंत्री हैं। अन्य दो व्यक्ति हैं—डॉक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी और श्री रफी अहमद किदवई। परन्तु इन तीनों में अपने-अपने दोष भी हैं।

"आज हिन्दुस्तान में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो गांधीजी का विरोध कर सार्वजनिक जीवन में रह सके। गांधी का विरोध कर स्वयं को मिटा देने का साहस इनमें भी नहीं है और सरदार का नाम तो गांधीजी ने अपनी काली किताब में लिखा हुआ है।

"रफी अहमद किदवई अति योग्य और स्पष्ट विचारों वाला व्यक्ति है। परन्तु जवाहरलाल नेहरू के परिवार से पुराना सम्बन्ध होने के कारण वह सदा ही यत्न करता रहता है कि नेहरू से झगड़ा न हो जाये। मुसलमान होते हुए भी उसे मुसलमानों का समर्थन प्राप्त नहीं है। उसका पूर्ण सार्वजनिक अस्तित्व हिन्दुओं और एतदर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित नेहरू के आश्रय पर है।

"डॉक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी निर्भीक व्यक्ति है। पद से उसको मोह नहीं है। वह विशुद्ध हिन्दुत्ववादी है । नेहरू की हिन्दू-विरोधी नीति से और गांधी के पिछले तीस वर्ष के प्रचार कार्य के परिणाम-स्वरूप देश में शुद्ध हिन्दू विचार के लोग आज देश-द्रोही माने जाते हैं।

"इस कारण मैं कहता हूँ कि यदि इनमें से कोई भी देश के लिये तुम्हारी सेवाओं की इच्छा रखे तो तुमको अस्वीकार नहीं करना चाहिये।

"अच्छा, यह बताओ, तुमने यहाँ का भाड़ा अग्रिम दिया हुआ है?"

"जी हाँ।"

"ठीक है, इस कोठरी को तो तुम अपने अधिकार में रखो और रहने के लिए हमारी कोठी में चले चलो। गृहमंत्री के पास वहाँ का पता भेज दो। इस प्रकार तुम अपने पर जासूसी करने वालों को कुछ समय के लिए चकमा भी दे सकते हो। तब तक तुम्हें यह भी पता चल जायेगा कि यह जासूसी किसकी ओर से हो रही है और हो भी रही है अथवा नहीं।

9

उसी सायं-काल मथुरासिंह वकील साहब के साथ उनकी कोठी पर चला गया। जब वे लोग पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वकील साहब की पत्नी के पास वायुसेना का कोई व्यक्ति बैठा हुआ बातें कर रहा है। त्रिलोकचन्द्र वहाँ पहुँचा तो उस सैनिक ने उठकर वकील साहब का अभिवादन किया। त्रिलोकचन्द उसको गले लगाकर मिला और पूछने लगा, "किशोर! कब आये हो?"

इस समय मथुरासिंह ने स्नेहलता के चरणस्पर्श किये तो वह हँस पड़ी। त्रिलोकचन्द ने परस्पर परिचय कराने की दृष्टि से किशोर को बैठने के लिए कह बताया, "ये हैं लेफ्टिनेन्ट मथुरासिंह। अब इनको सेना के कार्य से मुक्त कर दिया गया है और मथुरासिंह! ये मेरे छोटे भाई किशोरचन्द हैं। ये हवाई सेना में पाइलैट हैं।"

"कहो, किशोर कैसे आना हुआ है?"

किशोर ने बताया, "कल सायं-काल आज्ञा मिली थी कि पठानकोट से श्रीनगर सेना पहुँचानी है। कल रात दस बजे से यह कार्य निरन्तर कर रहा था। आज सायं-काल पाँच बजे तक मैंने 19 घंटें में छः चक्कर वहाँ के लगाये हैं। अन्तिम बार मुझे दिल्ली भेजा गया है। मुझे अवकाश मिला तो मैं आप लोगों से मिलने के लिए चला आया।"

"यह काम कब तक चलेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा! अभी तो युद्ध आरम्भ हुआ है। हमारी ओर से सड़कें ठीक नहीं बनी हैं। इस कारण सेनाओं को पहुँचाने, उनके लिए खाद्य एवं युद्ध-सामग्री ले जाने का पूर्ण कार्य हवाई बेड़े को ही करना पड़ रहा है। जब तक सड़क और पुल नहीं बन जाते, तब तक यह कार्य चालू रहेगा। इसको कई साल भी लग सकते हैं।"

"तुम्हारा अनुमान है कि कश्मीर में युद्ध कई वर्षों तक रह सकता है?"

"कौन कह सकता है कि कब तक चलेगा?"

"क्यों मथुरासिंह! तुम क्या कहते हो?"

"मैं समझता हूँ कि कश्मीर का युद्ध और कदाचित् अन्य कई युद्ध आरम्भ होंगे और ये तब तक चलते रहेंगे जब तक हमारी स्वराज्य सरकार की नीति नहीं बदलेगी।"

"क्या खराबी है, इस नीति में?" किशोर का प्रश्न था।

"राजनीतिज्ञ सैनिक कार्यों में अनाधिकृत हस्तक्षेप करते हैं और वे राजनीतिज्ञ सैनिक कार्य से सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं।"

"कश्मीर के विषय में राजनीति कहाँ समाप्त होती है और कहाँ से युद्ध-नीति आरम्भ होती है?" त्रिलोकचन्द ने पूछा।

"कश्मीर का भारत में विलय और इस पर आक्रमण करने वालों को वहाँ से निकालना है अथवा नहीं, इसका निर्णय करना राजनीतिज्ञों का काम है। परन्तु उनको निकालने के लिए किस स्थान पर युद्ध करना, शत्रु के दायें पार्श्व में लड़ना उचित होगा या बायें पर। उसे पीछे से घेरना है अथवा आगे से, इसका निर्णय करना युद्ध-नीति विशेषज्ञों का कार्य है।

"साथ ही युद्ध आरम्भ होते ही एक युद्ध परिषद् का गठन कर दिया जाना चाहिये। उसमें राजनीतिज्ञों के प्रतिनिधि रखे जा सकते हैं। इस पर भी युद्ध-सम्बन्धी कार्यों का निर्णय उक्त वार कौंसिल के अधीन ही होना चाहिए।"

"तो क्या तुम यह समझते हो कि युद्धप्रयास में कोई शासक हस्तक्षेप कर रहा है।"

"यह मेरे समझने की बात नहीं। यह तो मेरे ज्ञान की बात है। इंगलैंड की सरकार चाहती है कि कश्मीर पाकिस्तान में जाये। भारत का अंग्रेज गवर्नर-जनरल महाराजा कश्मीर को यही सम्मति देता रहा है। उसी गवर्नर-जनरल की सम्मति से भारत सरकार कश्मीर का भारत में विलय स्वीकार नहीं कर रही।

"हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का साझा अंग्रेज 'कमाण्डर-इन-चीफ' पाकिस्तान द्वारा कश्मीर पर आक्रमण की सहायता कर रहा है। यह सहायता दो प्रकार से दी जा रही है—एक तो कबाइलियों को पाकिस्तान सैनिक-सामग्री देकर और सहस्रों पाकिस्तानी सैनिकों को सेना से अवकाश दे, उनको कबाइलियों का नेतृत्व करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकृति देकर। दूसरे हिन्दुस्तानी सेना के कश्मीर अभियान के मार्ग में रोड़े अटकाकर।

"सरकार का दोष यही है कि इन अंग्रेज़ अधिकारियों की नीति का ज्ञान होते हुए भी वह उनको उच्च पदों पर प्रतिष्ठित किये हुए है।"

"परन्तु तुम यह किस प्रकार कह रहे हो कि सरकार की कश्मीर को भारत के साथ विलय करने की नीयत है या नहीं?"

"यदि ऐसी नीयत न होती तो यह विलय स्वीकार न होता। सरकार में भी कुछ ऐसी शक्तियाँ है, जिन्होंने सरकार को विवश किया है कि वे विलय स्वीकार करें। समाचार-पत्र में आज यह छपा है कि सरकार का निश्चय तो पूर्ण विलय के लिए था। सरकार और महाराजा विलयीकरण पर शर्त नहीं लगा सकते। इस पर भी प्रधान मंत्री की घोषणा, कि कश्मीर में शान्ति स्थापित होते ही वहाँ जनमत लिया जायेगा, गवर्नर-जनरल की सम्मति से कराई गई प्रतीत होती है।"

"मथुरासिंह! मेरा कहना है कि जनमत-सम्बन्धी निर्णय प्रधान-मंत्री की अपनी सूझ है। यह सम्भव है कि इसके निर्णय करने में गवर्नर-जनरल ने अपनी सम्मति दे दी हो, इस पर भी यह प्रधान-मन्त्री ने स्वयं ही किया है। यह निर्णय अवैधानिक है, अदूरदर्शिता का प्रतीक है और भारत की सुरक्षा तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का घोर घातक है। यह बात आज मुझे एक विश्वस्तसूत्र से विदित हुई है, मैं इस सम्बन्ध में एक लेख लिखकर 'टिब्यून' को भेज चुका हूँ। मैंने इसके वैधानिक और राजनीतिक पहलुओं पर भली प्रकार विचार किया है।"

"भापा! तभी तो मैं कहता हूँ कि यह युद्ध और कदाचित् भारत के अन्य युद्ध जिनमें गृह युद्ध भी हो सकता है, अनन्त काल तक चलेंगे। वर्तमान नीति इन युद्धों को अन्तिम परिणाम तक ले जाने में असमर्थ है। **पण्डित नेहरू से एक बहुत बड़ा पाप हो गया है। कश्मीर का भारत अथवा पाकिस्तान से विलय, अब न तो भारत सरकार के हाथ में रहा है, न ही महाराजा कश्मीर के हाथ में। भारत की जनता के हाथों में भी यह नहीं रह गया, अब यह कश्मीर के मुसलमानों के हाथों में चला गया है। इसके लिए धन-जन और अन्तर-राष्ट्रीय उत्तर-दायित्व तो भारत का रहेगा और भारत का अहित करने की शक्ति कश्मीर के मुसलमानों के हाथ में चली गई है।**"

मथुरासिंह की स्पष्ट दूर-दृष्टि देख त्रिलोकचन्द चकित रह गया। सेना से मुक्त इस लेफ्टिनेंट की युक्तियाँ सुनकर किशोर भी विस्मय कर रहा था। यद्यपि उसको यह सिखाया गया था कि प्रत्येक सैनिक का तो एकमात्र कर्तव्य यही है कि सरकार की आज्ञाओं का पालन करे। परन्तु जहाँ तक युक्तियों का सम्बन्ध है उसके पास उनका कोई उत्तर नहीं था। वह अभी मथुरासिंह के कथन के औचित्य पर विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर ही रहा था कि मथुरासिंह ने आगे कहा, ''और भापा! मैं सरकार को इस दूषित नीति द्वारा युद्ध-प्रयासों में हस्क्षेप करते देखता हूँ तो चिन्तित हो जाता हूँ। सरकार युद्ध चालू और रोक तो सकती है परन्तु उसकी चालना में वह हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए अन्यथा शहीद होने वाले सैनिकों की हत्या सरकार के सर पर होगी।

''सरकार को यह बात भली-भांति विदित है कि कश्मीर पर आक्रमण पाकिस्तान सरकार कर रही है। यह बात भी सरकार को विदित है कि युद्ध-क्षेत्र का पाकिस्तानियों ने अपने सुभीते से चयन किया है। परन्तु भारत सरकार के नेता अपनी सेना को युद्ध-क्षेत्र के परिवर्तन की आज्ञा नहीं देते।

''सेना तो यह चाहेगी कि पाकिस्तान को अल्टिमेटम दे दिया जाय कि वह इन कबाइलियों को चौबीस घंटों में रोक दे और इनको पहुँचने वाली खाद्य एवं युद्ध-सामग्री बन्द कर दी जाये अन्यथा पाकिस्तान सरकार इस अपराध में सहयोगी मानी जायेगी। तत्पश्चात् उनसे युद्ध किया जायेगा।

''अब जो बात चोरी-चोरी हो रही है। वह प्रत्यक्ष हो जायेगी। सेना को पाकिस्तान का मर्मस्थल ज्ञात है और वहाँ आक्रमण होते ही पाकिस्तानियों को कश्मीर की सैर सदा के लिए भूल जायेगी। मुझे विश्वास है कि दो सप्ताह में युद्ध समाप्त हो जायेगा और पाकिस्तान घुटनों के बल क्षमा-याचना करने लगेगा।''

किशोर ने प्रश्न किया, ''आपका कहना है कि कश्मीर का भारत के साथ विलय का अधिकार भारत सरकार और कश्मीर के महाराज का है। भला ऐसा क्यों? कश्मीर की जनता को यह अधिकार क्यों नहीं है। क्या अपने विषय में उनकी आवाज का कोई मूल्य नहीं है?''

''किशोरजी! ''इस प्रश्न का एक नैतिक पक्ष है। जो अधिकार भारत और पाकिस्तान की जनता को नहीं दिया गया और दिया भी नहीं जा रहा, वह कश्मीर की जनता को किस प्रकार प्राप्त हो गया? भारत और पाकिस्तान की जनता से यह पूछा नहीं गया कि देश-विभाजन हो अथवा नहीं इस विषय पर कोई जन-मत संग्रह नहीं किया गया। यहाँ ब्रिटिश सरकार की पार्लियामेंट द्वारा बनाए गए कानून को मान लिया गया है। परन्तु कश्मीर की जनता का नैतिक अधिकार मान लिया गया है, क्यों?''

एक अन्य पक्ष है कानून। हिन्दुस्तान को स्वराज्य मिला है, तथा पाकिस्तान का निर्माण हुआ है, एक कानून के अनुसार। यह कानून बना है ब्रिटिश सरकार और हिन्दुस्तान के नेताओं में कई प्रकार की सन्धि के रूप में। उसको अब केवल भारत के प्रधान मंत्री किस प्रकार बदल सकते हैं? यदि पण्डित नेहरू उस सन्धि को जिसको करने वाले वे स्वयं नहीं हैं, अस्वीकार करते हैं तो पाकिस्तान का निर्माण भी अमान्य क्यों नहीं मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिया जाता? उसको अस्वीकार कर पाकिस्तान पर सेना का अधिकार क्यों नहीं होने दिया जाता?

रात के भोजन के समय स्नेहलता ने मथुरासिंह के प्रति अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, ''मथुरासिंह! मेरे प्रति किये गए तुम्हारे व्यवहार से मैं अप्रसन्न हूँ।''

''आप तो माँ हैं, मैं आपसे क्षमा माँग लूंगा और आप अपने नालायक पुत्र को क्षमा कर ही देंगी।''

''उसके कान क्यों नहीं मरोड़ूंगी?''

''यह तो क्षमा करने की एक विधि है। इसके अनन्तर क्षमा मिलती ही है। परन्तु मैंने ऐसा क्या अपराध किया है, जिसके लिए आप इतना कष्ट उठायेंगी?''

''तुमने हमें अपने विवाह का निमन्त्रण भी नहीं दिया।''

''मैंने अपना विवाह नहीं किया। यह तो मेरे माता-पिता और राधा की माँ ने एकदम कर दिया था। माँजी मुझको विदित था कि स्वराज्य प्राप्ति के एक मास के भीतर मैं सेना-कार्य से मुक्त हो जाऊंगा और उसके बाद ही मेरा विवाह करने का विचार था।

''परन्तु एक दिन राधा का तार आया कि माँ सख्त बीमार हैं तुरन्त आ जाइये। मैं अवकाश ग्रहण कर वहाँ गया तो मेरे माता-पिता भी वहाँ पहुँचे हुए थे। यह बात मार्च, 1946 की है। राधा की माँ ने आग्रह किया कि हमारा विवाह उसी समय उसकी खाट के समीप ही वेदी रचाकर कर दिया जाये। मरणासन्न राधा की माँ की इच्छा का विरोध मेरे माता-पिता नहीं कर सके। परिणामस्वरूप पंडित बुलाया गया और एक घंटे में हमारा विवाह हो गया। मैं तीन दिन की छुट्टी लेकर गया था। उन्हीं दिनों मेरी सास का देहान्त भी हो गया। उस समय न तो मुझे लम्बी छुट्टी मिल सकती थी ओर न ही राधा की माँ प्रतीक्षा कर सकती थी।

''उसके बाद तो मैं एक-दो बार ही एक-दो दिन के लिए गाँव जा पाया हूँ। अब मुझे अवकाश मिल गया है। मेरे गाँव जाने पर मेरे पिताजी मेरे विवाह के उपलक्ष्य में बहुत बड़ा समारोह करने वाले हैं। उसमें आपको यहाँ से ले जाने का यत्न करूंगा।''

''त्रिलोकचन्द और स्नेहलता विवाह की इन घटना को सुनकर स्तब्ध रह गए। पिछली बार जब सूरतसिंह दिल्ली आया था तो उसने साधारण रूप में बताया था कि उसने अपने बेटे का विवाह कर दिया है। अब मथुरासिह के मुख से सारी बात सुन, स्नेहलता ने कहा, ''तब तो ठीक है, जब तुम अपने विवाह के समारोह में हमें बुलाओगे, तब मैं तुमको क्षमा कर दूंगी।''

''माँजी! ऐसा तो होगा ही। मैं तो समझ रहा था कि कान मरोड़कर क्षमा उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले ही मिलने वाली है।"

सभी हँस पड़े। बात बदलकर मथुरासिंह ने पूछा, "गार्गी और रमेश किधर हैं?"

"उन्हें हमने 'दून स्कूल' में भरती करा दिया है। मुस्लिम लीग वालों ने जब जनवरी मास में सिकन्दर सरकार के विरोध में जलसे-जुलूस निकालने आरम्भ किये, तब ही हमने बच्चों को लाहौर से बाहर भेज देना उचित समझ लिया था।

"वे जलसे-जुलूस हिन्दुओं के साथ गृह-युद्ध का आह्वान थे। हालांकि हिन्दुओं ने उनकी चुनौती को स्वीकार नहीं किया परन्तु गृह-युद्ध तो एक पक्षीय भी हो सकता है। वैसा ही हुआ भी। इसका भास मुझे जनवरी मास में ही हो गया था। अतः बच्चों की सुरक्षा को बनाये रखने के लिये अपने विचार से मैंने उनको सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। जून मास में मैंने अपनी पूर्ण चल-सम्पत्ति दिल्ली पहुँचा दी। यह कोठी तभी ले ली थी। इस पर भी मैं हरिद्वार चला गया। वहाँ से प्रथम सितम्बर को मैं यहाँ आया हूँ। सात सितम्बर को यहाँ भी पंजाब वाला युद्ध आरम्भ हो गया। पंजाब के हिन्दू उस गृह-युद्धको बन्द नहीं कर सके थे। दिल्ली के हिन्दुओं ने इसमें भाग लिया। सरकार ने यत्न करके मुसलमानों को अपने घरों से निकाल नगर के बाहर एकत्रित कर दिया। इससे गृह-युद्ध शान्त हो गया।"

मथुरासिंह त्रिलोकचन्द की दूरदर्शिता को जानता था। इस पर उसने पूछा, "आप क्या समझते हैं कि हम कश्मीर वापस ले लेंगे?"

"यदि युद्ध करके हमने लेना चाहा तो हम निस्संदेह ले लेगे। परन्तु इसके लिये हमें युद्ध को समाप्त करने में शीघ्रता करनी चाहिये। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जब पाकिस्तान हारने लगेगा और कश्मीर आक्रमण के विषय पर उसने जो पर्दा रखा हुआ है, वह जब हटने लगेगा तो वह संयुक्त राष्ट्रसंघ में जाना चाहेगा। तब तो संघ के निर्णय पर युद्ध-विराम सन्धि करनी पड़ जायेगी। यह बात कश्मीर वापस लेने में बाधक बन जायेगी।"

किशोर समझ रहा था कि मथुरासिंह ने युद्ध को शीघ्रातिशीघ्र अन्तिम परिणामों पर पहुंचाने कि लिये उपाय बताया है। वह उपाय था, सीधा पाकिस्तान पर आक्रमण।

10

मथुरासिंह त्रिलोकचन्द के कर्जन रोड वाले बंगले पर ठहर गया। वाई. एम. सी. ए. के होस्टल का कमरा उसने अभी छोड़ा नहीं था। अगले दिन वह होस्टल गया तो उसे विदित हुआ कि मिस क्लेरा अल्पाहार के समय उसकी प्रतीक्षा करती रही थी।

वह अपने होस्टल में लगभग ग्यारह बजे पहुँचा था। उससे पूर्व वह गृहमंत्री के पी. ए. को अपना पता आदि दे आया था। वह यह भी कह आया था कि एक सप्ताह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये वह अपने गाँव जा रहा है। अपने कमरे में बैठ, वह अपने गाँव जाने की योजना बनाने लगा। पिछले दिन वह बाजार से बहुत-सा सामान खरीदकर लाया था, वह सब उसने एकत्रित किया और अपने सूट-केस में बन्द कर नीचे ले आया। उसे इस प्रकार आता देख, मैट्रन ने पूछा, "आप कमरा छोड़ रहे है क्या?"

"नहीं, मैं एक सप्ताह के लिये अपने गाँव जा रहा हूँ। फिर मैं नौकरी तलाश करने दिल्ली आऊंगा। उस समय मैं यहीं रहूंगा।"

मैट्रन चुप रही। मथुरासिंह ने टेलीफोन से टैक्सी बुलाई और जब उसमें सामान रखने लगा तो मैट्रन ने फिर पूछा, "यदि मिस क्लैरा पूछें तो उनको क्या बताऊँ?"

"यही, कि एक सप्ताह के लिये मैं अपने गाँव गया हूँ।"

मथुरासिंह वहाँ से चला आया। वह विचार कर रहा था कि निश्चित ही क्लैरा जासूसी का कार्य करती है। उसका विचार बन गया था कि लार्ड गौर्ट ने अपनी पत्नी पर जासूसी करने के लिए उसे नियुक्त किया है।

होस्टल से मथुरासिंह कर्जन रोड गया और फिर स्टेशन पर।

त्रिलोकचन्द के बंगले पर फोन लगा हुआ था। मथुरासिंह के जाने के तीन दिन बाद किसी ने फोन पर त्रिलोकचन्द से पूछा, "यहाँ मथुरासिंह नाम के कोई भूतपूर्व लेफ्टिनेन्ट रहते हैं?"

"हाँ, रहते हैं।"

"सुरक्षा-मंत्री उनसे मिलना चाहते हैं।"

"आज तो वह अपने गाँव गया हुआ है।"

"तार भेजकर बुला दीजिये।"

"अत्यन्त आवश्यक कार्य है क्या?"

"जी, हाँ।"

"अच्छा बात है, मैं तार दे देता हूँ।"

"आपका शुभ नाम क्या है?"

"त्रिलोकचन्द एडवोकेट।"

"ओह!"

"क्यों, क्या बात है?"

"क्या मैं आपसे मिल सकता हूँ?"

"कौन साहब यह कृपा करना चाहते हैं?"

"बलदेवसिंह।"

"आप जब समय दें, मैं मिलने के लिये आ सकता हूँ।"

"नहीं, वकील साहब! मैं समय पाकर आपसे भेंट करूंगा। कल ट्रिब्यून में आपका लेख पढ़ा था। आज वह लेख यहाँ के साथियों में विचाराधीन रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने तो इसलिए कहा था कि आप लोग देश के काम में संलग्न हैं, आपका समय बचाना देश का समय बचाना है।"

"इस पर भी मैं ही आपसे मिलूंगा और यह मुझ पर छोड़िए कि कहाँ और कब मिलना होगा।"

"मैं आपकी प्रतीक्षा करूंगा।"

"इस वार्तालाप के एक-दो दिन बाद त्रिलोकचन्द ने देखा कि एक एंग्लो-इंडियन लड़की उसकी कोठी के पास खड़ी उसका पता पूछ रही है। त्रिलोकचन्द ने उसके मुख से अपना नाम सुना तो वह कमरे से बाहर निकल आया। उसने उससे पूछा, "कहिए, किसको पूछ रही हैं?"

"लाहौर वाले मिस्टर त्रिलोकचन्द एडवोकेट साहब को।"

"कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।"

"मैं। आपसे कमरे में बैठकर बात करना चाहती हूँ।"

"आइए।" वह उसे कोठी के ड्राइंग-रूम में ले गया।

बैठते हुए लड़की ने कहा, "मेरा नाम क्लैरा क्लीवमौंट है। मैं सुरक्षा-मंत्री सरदार बलदेवसिंह की पी. ए. हूँ। मैं आपसे यह जानने के लिए आई हूँ कि क्या आप आज सायं-काल पाँच बजे विंडसर होटल के रूम नम्बर तीस में उनसे मिल सकते हैं?"

"हाँ, मिल सकता हूँ।"

"किन्तु इस भेंट का ज्ञान किसी अन्य को न हो। इसी कारण मंत्री-महोदय ने मौखिकरूपेण मेरे द्वारा यह सन्देश भिजवाया है।"

"मै। आपका आभारी हूँ। कहिए, आप क्या पान करेंगी, चाय अथवा कॉफ़ी?"

"नहीं, मैं कुछ लूंगी नहीं, धन्यवाद। मुझे बहुत काम करने हैं।"

उसके जाने के बाद त्रिलोकचन्द इस गोरखधन्धे के विषय में विचार करने लगा। वह सोचता था कि यही क्लैरा माइकल की मिस्ट्रेस बनी थी। इसी क्लैरा के डर से मथुरासिंह होस्टल छोड़कर भागा है, उसको सन्देह है कि यह उसपर जासूसी करती है। यही क्लैरा स्वयं को सुरक्षा-मंत्री की पी. ए. कहती है। सुरक्षा-मंत्री के लिए गुप्त भेंटों का यह प्रबन्ध करती है। यह क्या झंझट है, वह उस उलझन को सुलझा नहीं सका।

इस पर भी वह सर्तक था। एक बात उसे और भी परेशान कर रही थी। सुरक्षा-मंत्री जानता था कि मथुरासिंह इस कोठी में ठहरा हुआ है। यदि यह लड़की वास्तव में उसकी पी. ए. है तो उसे भी निश्चित रूपेण विदित होगा कि मथुरासिंह यहाँ रहता है। परन्तु उसने मथुरासिंह के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी समस्या पर विचार करता हुआ त्रिलोकचन्द सायं-काल विंडसर होटल में जा पहुँचा। जब उसने कमरा नम्बर तीस का द्वार खटखटाया तो क्लैरा ने द्वार खोला और वकील साहब को खड़ा देख कहने लगी, "आइए!"

भीतर सुरक्षा-मंत्री के अतिरिक्त तीन अन्य व्यक्ति भी बैठे हुए थे। त्रिलोकचन्द ने देखा कि उन तीनों में ब्रिगेडियर जनरल प्रतापसिंह भी बैठे हैं और मेज पर कश्मीर का नक्शा खोलकर रखा हुआ है।

त्रिलोकचन्द को आया देख, नक्शा लपेट दिया गया और सैनिक वार्तालाप बन्द कर, राजनीति पर चर्चा चलने लगी। सुरक्षा-मंत्री ने त्रिलोकचन्द से पूछा, "मथुरासिंह आया या नहीं?"

"अभी नहीं आया। कल का दिया हुआ तार आज पहुँचा होगा। उनके गाँव में तार-घर नहीं है। तार पहुँचाने के लिए मैंने विशिष्ट सन्देश- वाहक का व्यय भी दे दिया था। इस पर भी आज ही तार पहुँचेगा। यदि उसने वहाँ से आज ही प्रस्थान कर दिया तो कल प्रातः काल तक ही वह यहाँ पहुँच पायेगा।

"आते ही उसे मिस क्लैरा से मिलने के लिए कहिए और ये फिर हमारी भेंट का समय मुझसे पूछकर बता देंगी।"

इसके उत्तर में त्रिलोकचन्द ने कुछ नहीं कहा। उत्तर देने के लिए कुछ था भी नहीं। त्रिलोकचन्द क्लैरा के चरित्र में झाँकना चाहता था। इस कारण उसने एक 'स्टंट' खेला। उसने कहा, "मिस क्लैरा! मैंने आपको इससे पूर्व भी कहीं देखा है?"

"यहीं दिल्ली में देखा होगा।"

"यहाँ नहीं। या तो लाहौर में या मरी में। आप कभी वहाँ रही हैं?"

क्लैरा मुख देखती रह गई। वह समझ नहीं सकी कि क्या उत्तर दे। आखिर उसने कहा, "मेरे पिता भारत के गवर्नर-जनरल के स्टेनो हैं और सरकारी काम से उनका पंजाब आना-जाना होता ही है। मैं अधिकतर उनके साथ रहती थी।"

"तुम एक स्टेनो की लड़की हो और इतनी बढ़िया अंगूठी तुम्हारी अंगुली में? निश्चित ही तुम्हारा प्रेमी कोई बहुत धनी व्यक्ति होगा?"

वहाँ पर उपस्थित सभी लोग हँसने लगे। त्रिलोकचन्द यह समझा कि वहाँ पर बैठे सभी लोग यह जानते हैं कि वह किसी बड़े आदमी की मिस्ट्रेस है। कदाचित् सुरक्षा-मंत्री की ही हो। इस प्रकार विचारकर उसने बात बदलते हुए कहा, "आपने कहा है कि मेरा लेख आपके मित्रों में विचार का विषय बना रहा था?"

"हाँ, मित्रों से मेरा अभिप्राय मंत्रि-मंडल के सदस्यों से था। हममें से किसी ने प्रधान-मंत्री को पढ़ने के लिए वह लेख दिया था। पढ़कर वे कहने लगे कि कानून और 'प्रिजुडिस' की दृष्टि से यह लेख ठीक है। परन्तु संसार की प्रगति के पाँव में दोनों बेड़ियाँ हैं। ये हमको उन्नति करने में बाधा उपस्थित करती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रधान-मन्त्री के ऐसा कहने पर एक मन्त्री ने उनसे इसके विकल्प के विषय में पूछा। प्रधान-मंत्री ने वह उदारता और शान्तिप्रियता बताई।

"परन्तु कानून और पूर्वाग्रह, विशेष रूप में किसी भले व्यक्ति की उदारता और शान्ति के विरुद्ध नहीं हो सकते। गृह-मंत्री ने ऐसा कहा तो प्रधान-मंत्री कहने लगे कि कानून और उदारता तो दोनों परस्पर- विरोधी बातें हैं।

"तब सभी चुप हो गए।"

ब्रिगेडियर जनरल प्रतापसिंह ने पूछा, "वकील साहब! इस विषय में आप क्या समझते हैं?"

"मेरी दृष्टि में यह किसी थर्ड-रेट वकील की दलील है। कानून तो सदा उदारता पर ही आधारित होता है। कानून पीड़ित पर उदारता दिखाता है। परन्तु प्रधान-मंत्री जिस उदारता का उल्लेख कर रहे हैं, वह तो आततायी के साथ होती है।

"देखिए, यदि कोई न्यायकर्ता अपराधी के प्रति उदारता का व्यवहार करता है तो वह उस पीड़ित के प्रति जिसके साथ अन्याय हुआ है, अनुदार हो जाता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि कोई थर्ड-रेट वकील ही इस प्रकार का तर्क कर सकता है।"

"परन्तु सब सन्त-महात्मा भी तो यही कहते आए हैं कि क्षमा करना ऐसा सद्गुण है कि वह क्षमा करने वाले की आत्मा को पवित्र कर देता है।"

"हाँ, यह बात तो ठीक है कि क्षमा धर्म का एक लक्षण है। परन्तु क्षमा कौन कर सकता है। वही क्षमा करने का अधिकार रखता है, जिस के साथ अन्याय हुआ हो। यदि महाराज कश्मीर, कश्मीर की प्रजा, जिनके साथ कबाइलियों अथवा पाकिस्तानियों ने अन्याय और अत्याचार किया है, क्षमा करें तो कर दें, परन्तु उन पर हुए अत्याचार को पंडित नेहरू कैसे क्षमा कर सकते हैं?

"एक बात और भी है। क्षमा उसको किया जाता है, जो अपने किए पर पश्चात्ताप करे।

"यदि कोई न्यायकर्त्ता किसी ऐसे अपराधी को क्षमा कर देता है जो अपने किए पर पश्चात्ताप नहीं कर रहा होता तो वह न्यायकर्ता पाप का भागी हो जाता है।

"जब किसी देश का राजा पापी हो और देश उस राजा को हटाए नहीं, तो पूर्ण देश पाप का भागी बन जाता है और वर्षों तक देश को इसका परिणाम भुगतना पड़ता है। इसका प्रमाण है पृथ्वीराज द्वारा अनाधिकारी गौरी को दी गई क्षमा जिस का परिणाम था आठ सौ वर्षों की गुलामी।"

देश के प्रधान-मंत्री के विरुद्ध इतनी बड़ी बात सुन सब मौन रहे। किसी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहस नहीं हुआ कि इस विषय पर बात आगे चला सके।

इस समय क्लैरा ने बात बदलते हुए कहा, "आपने मुझे मरी के नाइट क्लब में देखा होगा?"

त्रिलोकचन्द मुस्कराया और बोला, "हो सकता है। तुम-जैसी सुन्दर लड़की को देखने का वही स्थान उपयुक्त हो सकता है।"

सब हँस पड़े। बलदेवसिंह कहने लगा, "आपका यह शौक अभी छूटा नहीं?"

"सरदार साहब! आपसे तो मैं आयु में कम हूँ।"

"परन्तु मुझे नाइट क्लब में जाने का शौक नहीं है।"

"वह तो इसलिए कि आपका दिन भी रात को ही समान है। नाइट क्लब तो उन भाग्यहीनों के लिये होती है जिनको दिन के समय कठोर परिश्रम करना पड़ता है। जिनको दिन में भी करने के लिए कुछ नहीं उनके लिए नाइट क्लब क्या और डे क्लब क्या?"

सभी की हँसी फूट पड़ी। ब्रिगेडियर जनरल ने घड़ी में समय देखकर कहा, "मेरे प्लेन का समय हो गया है। मुझे जाना चाहिए अब तीसरे दिन मिलेंगे।"

"हम आशा करते है कि आप कोई शुभ समाचार लेकर आयेंगे और बारामूला हमारे अधिकार में आ जायेगा," क्लैरा बोली।

"श्योर।" ब्रिगेडियर ने कहा और सबसे हाथ मिला, वह चल दिया। त्रिलोकचन्द ने उसके साथ द्वार तक चलते-चलते धीरे से कहा, "यदि आप लोगों में तनिक भी बुद्धि होती तो इस लड़की को यहाँ घुसने न देते।"

ब्रिगेडियर घूमकर वकील की आँखों में देखने लगा। त्रिलोकचन्द ने उससे हाथ मिलाया और बोला, "गुड लक। कमाण्डर!"

ब्रिगेडियर को विदा कर त्रिलोकचन्द घूमा तो उसने क्लैरा को अपनी ओर घूरती-सा अनुभव किया। किन्तु उसके देखते ही क्लैरा के माथे की त्योरी पिघल गई और उसके मुख पर मुस्कान खेलने लगी। त्रिलोकचन्द ने द्वार बन्द नहीं किया था। क्लैरा द्वार की ओर जाती हुई बोली, "यदि आप में कुछ भी बुद्धि होती, तो द्वार तुरन्त बन्द कर देते।"

त्रिलोकचन्द समझ गया कि क्लैरा ने उसके कथन को सुन लिया है। उसको इस बात का प्रमाण मिल गया कि उसके कान साँप की भांति पतले हैं। जासूसों का यह एक विशेष गुण होता है।

त्रिलोकचन्द के बैठ जाने पर बातों का सूत्र अपने हाथ में रखने के लिए क्लैरा ने कहा, "आपका कहना है कि प्रधान मंत्री को क्षमा करने का अधिकार नहीं है। परन्तु कानून से राष्ट्रपति को तो यह अधिकार प्राप्त है?"

"नहीं, क्लैरा डियर! राष्ट्रपति को भी क्षमा करने का अधिकार नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता। उसको तो केवल दया व्यक्त करने का अधिकार है। दया और क्षमा में अन्तर है। दया तो अपराधी की दीन-हीन स्थिति को देखकर उसको दण्डित-काल में सुविधायें देने के लिए होती है। क्षमा उसके अपराध को न हुआ मान, उसके दण्ड को वापस लेने को कहते है।

"देखो, मैं एक उदाहरण देता हूँ। एक स्त्री जासूसी करती पकड़ी जाती है। इसका दण्ड तो पाँच वर्ष के कठोर कारावास से लेकर प्राण-दण्ड तक है। उस स्त्री की गोद में नन्हा शिशु है। न्यायकर्त्ता उस शिशु पर दया कर अपराधिनी को प्राणदण्ड न देकर कारावास का दण्ड देता है। इसे दया कहते हैं। या आवेश में आकर पुत्र अपने पिता के मुख पर चपत लगा देता है, किन्तु पीछे उसे अपने अपराध का ज्ञान हो जाता है ओर वह उसके लिए प्रायश्चित करता है, पश्चात्ताप करता है और पुनः वैसा न करने का वचन देता है। पिता अपने पुत्र के पश्चात्ताप और वचन पर विश्वास कर पुत्र को दण्ड नहीं देता वह उसके अपराध को क्षमा कर सकता है।

"पाकिस्तानी न तो क्षमा के पात्र हैं, क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया और उन्होंने पुनः वैसा न करने का वचन भी नहीं दिया। ये दया के पात्र भी नहीं है। उनकी अवस्था दीन-हीन की-सी नहीं है। उनको अपने इस अपराध के कारण दण्ड मिलने में किसी प्रकार का कोई विशेष कष्ट होने वाला नहीं है।

"तो उदारता का क्या अर्थ होता है?"

"क्षमा अथवा दया के लिए स्थिति उत्पन्न हो जाने पर अधिकारी व्यक्ति ही उदारता दिखा सकता है। उदारता का रूप दया भी हो सकता है और क्षमा भी। प्रधान-मंत्री उदारता प्रकट कर सकते हैं किन्तु जब दया या क्षमा की स्थिति उत्पन्न हो जाय। वह स्थिति उत्पन्न नहीं हुई।"

सरदार बलदेवसिंह ने पुनः बात बदलते हुए कहा, "त्रिलोकचन्द जी! आप तो इस लड़की से इस प्रकार घुल-मिल रहे हैं, जैसे मानो आपकी पूर्व समृतियाँ जागृत हो रही हों!"

"हाँ, मुझे यह बिलकुल जानी-पहचानी प्रतीत हो रही है। मैं किसी भी नाइट क्लब का सदस्य नहीं रहा। इस कारण वैसे स्थान पर इसको देखना मेरे लिए सम्भव नहीं। लाहौर में किसी चाय-पार्टी अथवा इसी प्रकार किसी अन्य समारोह में मैंने इसे देखा होगा। लाहौर में मुझे गवर्नरों और कमिश्नरों द्वारा दी जाने वाली पार्टियों में जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा था।"

त्रिलोकचन्द को सुरक्षा-मंत्री की मानसिक अवस्था पर खेद हो रहा था। एकाएक उसने अपनी घड़ी में समय देखा और बोला, "आपको दिल्ली में इस उच्च स्थान पर आसीन देख, बहुत प्रसन्नता हुई है। मैं सदा देश की सेवा के लिए तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ। कभी आवश्यकता हो तो टेलीफोन कर दीजिये। मैं उपस्थित हो जाऊंगा।''

सुरक्षा-मंत्री समझ गया कि त्रिलोकचन्द अब जाना चाहता है। अतः वह भी उठ खड़ा हुआ और क्लैरा से कहने लगा, ''एक घण्टे में तुम कार्यालय में आ जाना। मुझे आज का काम समाप्त करना है।''

इतना कह वकील साहब के साथ ही वह भी चला आया। अन्य दो व्यक्ति वहीं क्लैरा के पास ही बैठे रह गये। होटल से निकलते हुए सुरक्षा-मंत्री ने पूछा, ''यहाँ आप किस प्रकार आये हैं, गाड़ी है आपके पास?''

''हाँ, मेरे पास अपनी गाड़ी है।''

''मुझे मेरे स्थान पर छोड़ दीजिये। मैं यहाँ ब्रिगेडियर की गाड़ी में आया था।''

''चलिये।'' त्रिलोकचन्द ने होटल की पोर्च में खड़े हो, अपनी गाड़ी के ड्राइवर को संकेत से अपने पास बुलाया।

दोनों गाड़ी में बैठे तो त्रिलोकचन्द ने कहा, ''आप इस क्लैरा के पूर्व-इतिहास को जानते हैं?''

''कौन क्लैरा, क्लैरा क्लीवमौंट?''

''जी।''

''वह जो दायीं ओर एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति बैठा था, वह बम्बई का प्रख्यात वकील दस्तगीर था। क्लैरा उसकी मिस्ट्रेस है। बहुत ही मजेदार औरत है, इससे अधिक उसका हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है।''

''परन्तु वह तो कहती थी कि वह आपकी पी. ए. है?''

''जो भी मेरा निजी काम करता है, वह मेरा पी. ए. ही कहा जा सकता है।''

''कुछ भी हो। मैं आपको सचेत करता हूँ कि वह यहाँ पर जासूसी का काम कर रही है। सम्भव है वह पाकिस्तान की ओर से यह कार्य कर रही हो। एक और भी सम्भावना हो सकती है कि गवर्नर-जनरल अथवा कमाण्डर-इन चीफ़ की ओर से वह मंत्रि-मंडल पर जासूसी करती हो।''

सुरक्षा-मंत्री मुख देखता रह गया। कार उसके घर पर पहुँची तो वह उतरकर त्रिलोकचन्द से हाथ मिलाकर कहने लगा, ''आपकी सूचना के लिये धन्यवाद। मैं इसके विषय में जाँच करवाऊंगा।''

''एक समय गृहमंत्री महोदय ने भी इसकी जाँच कराई थी। आप पहले उनसे पता कर लीजिये। बाद में स्वयं जाँच करियेगा। उस जाँच से पूर्व युद्ध-सम्बन्धी वार्तालाप इसके सम्मुख न करें, इतनी प्रार्थना तो हमारी स्वीकार कर लीजिये।''

''मथुरासिंह के आते ही आप मुझे फोन पर सूचित करने का कष्ट कीजियेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

लाला देवीदयाल के देहान्त के बाद उसकी पत्नी मक्खनी अपनी लड़की और लड़के को लेकर अपने भाई के पास रहने के लिए होशियारपुर चली गई थी। अपनी पूर्ण चल सम्पत्ति भी वह वहीं ले गई थी।

मक्खनी के भाई सन्तोषीराम की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। देवीदयाल का देहान्त उसके लिए दैवी घटना बन गई। चान्दी-सोने के आभूषणों के अतिरिक्त मक्खनी के पास चालीस हजार रुपया नकद था। यह सब नकदी और सम्पत्ति उसने अपने भाई के पास रख दी। युद्ध के दिन थे। इस पूंजी से सन्तोषी ने कारोबार आरम्भ कर दिया। उसने अपनी बहिन को कहा था कि लाभ-हानि में दोनों का बराबर हिस्सा रहेगा।

व्यापार में घाटा रहा अथवा सन्तोषीराम की नीयत में खराबी रही कुछ कहा नहीं जा सकता। परन्तु प्रत्यक्ष रूप में व्यापार में घाटा ही बताया गया। 1945 में युद्ध समाप्त होने पर सन्तोषी ने अपनी बहिन मक्खनी को बताया कि व्यापार में इतना घाटा हुआ है कि अब वे दोनों भिखारी हो गए हैं। इन दिनों माँ-बेटी तो जमादारपुर में रहती थीं, रमणीक अपने मामा के पास ही रहता था। रमणीक अब अठारह-उन्नीस वर्ष का युवक हो गया था और उसे जुआ खेलने की आदत पड़ गई थी। इसके साथ ही मद्य-सेवन और चोरी भी उसने सीख लिए थे। फरवरी 1946 में वह चोरी करता हुआ पकड़ा गया और अपराध में उसको दो वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड मिला।

इन घटनाओं से मक्खनी को इतना आघात लगा कि उसको हृदय-रोग हो गया और उसने चारपाई पकड़ ली। यह कष्ट चिरकाल तक नहीं चला। रोग चलते-चलते अपने साथ रोगी को भी ले गया। एक दिन उसने राधा से कहा, "राधा! मथुरासिंह को तार दे दो। मैं अब जा रही हूँ।"

राधा भगवती के पास गई तो उसके नाम से मथुरासिंह को तार दे दिया गया। दो दिन के अन्दर मथुरासिंह आया तो उसी दिन उन दोनों का विवाह कर दिया गया और उसी सायं-काल मक्खनी ने भी उनसे विदा ले ली।

दो दिन घर पर रहकर मथुरासिंह अपनी छावनी को लौट गया। मक्खनी की तेरहवीं के दिन वह पुनः जमादारपुर आया। माँ का क्रियाकर्म करने के लिए रमणीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन दिन के पैरोल पर आया हुआ था। मथुरासिंह से मिलकर वह अपने कुकृत्यों के विषय पर पश्चात्ताप करता रहा। उसी रात मथुरासिंह पुनः छावनी लौट गया। इन दिनों कैबिनेट मिशन आया हुआ था और सुरक्षा के कारण सैनिकों को अवकाश नहीं दिया जा रहा था। इस पर भी मथुरासिंह महीने में एक-आध दिन के लिए गाँव पहुँच ही जाया करता था।

इस बार मथुरासिंह बिना सूचना के घर जा पहुँचा। पिता ने पूछा, "तुमने अपने आने की सूचना नहीं भेजी?"

"पिताजी! परसों सायं-काल छुट्टी मिली। कल चार्ज देता रहा और आज यहाँ आ पहुँचा हूँ।"

"तो पितृ-ऋण उतार आये हो, सेना का कार्य समाप्त कर आये हो?"

"जी।"

"ठीक है, अब घर में रहो। मेरा काम सम्हालो। मैं अब शीघ्र ही हरिद्वार जाना चाहता हूँ। भगवती की लालसा है कि तुम्हारे घर एक लड़का हो जाए तो वह सुख से प्राण-त्याग कर सके। कब से वह इसकी प्रतीक्षा कर रही है।"

"पर पिताजी! दिल्ली के साथ मेरा एक सूत्र अभी बंधा हुआ है। किसी भी समय मुझे काम पर वापस बुलाया जा सकता है।"

"क्यों?"

"कश्मीर में भारत और पाकिस्तान में युद्ध चल रहा है। मुझे कहा गया है कि मैं अपना पता कार्यालय वालों को बताकर रखूँ, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर मुझे बुलाया जा सके।"

"मेरा विचार है कि यह तो रस्मी बात है। वास्तव में सेना से एक बार निकाले जाने पर सदा के लिए ही मुक्ति मिल जाती है।"

मथुरासिंह माँ के चरण-स्पर्श करने गया तो उसने देखा कि राधा वहाँ पर बैठी बच्चे की फ्राक सी रही थी। राधा उठकर खड़ी हो गई। मथुरासिंह जब माँ के चरण-स्पर्श कर चुका तो उसने मथुरासिंह की चरणरज सिर पर धारण की।

मथुरासिंह माँ के पास बैठ नौकरी से अपनी मुक्ति की बात बताने लगा। राधा उठकर अपने कमरे में चली गई। माँ ने उससे कहा, "जाओ, पहले राधा से मिलो, उसको प्रतीक्षा करते हुए बहुत काल व्यतीत हो गया है।"

मथुरासिंह उठकर अपने कमरे में चला गया। वास्तव में उनका मिलन चिर-प्रतीक्षा के बाद हुआ था। वह भीतर गया तो फिर तीसरे प्रहर से पूर्व बाहर लौटकर नहीं आया। जब दोनों भोजन के लिए आए तो भगवती अपने पुत्र एवं पुत्रवधू को प्रफुल्लित देख, सन्तोष अनुभव करती थी। राधा इस समय सातवें मास में थी।

मथुरासिंह वैसे तो त्रिलोकचन्द को कह आया था कि वह एक सप्ताह गाँव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहकर वापस आएगा और अपने भावी जीवन के विषय में वहीं विचार करेगा। उस समय उसको अपने पिता की योजना विदित नहीं थी। किन्तु अब इस योजना को सुनकर, वह सेना-कार्य करने का अपना विचार छोड़ बैठा। इस पर भी एक बार तो उसका दिल्ली जाने का विचार था ही।

जमादार पुर में पहुँचे उसे अभी तीन दिन ही हुए थे कि उसे त्रिलोकचन्द का तार मिला। तुरन्त परिवार वालों की गोष्ठी हुई और मथुरा सिंह के जाने का निश्चय हो गया।

राधा विवश थी। सैनिक की पत्नी के जीवन का तो यह अंग ही होता है। वह आंखें नीची किये बैठी रही। सूरतसिंह ने कहा, "वकील साहब की पत्नी कहती थी कि राधा के दर्शन करने हैं। तुम इसको अपने साथ ले जाओ।"

"हाँ, जाओ।" भगवती ने कहा, "पन्द्रह दिन बाद मैं तुम्हें लेने के लिए आ जाऊंगी।"

इस प्रकार राधा को साथ लेकर उसी सायंकाल मथुरासिंह दिल्ली के लिए चल पड़ा। अगले दिन प्रातः नौ बजे के करीब वे दोनों त्रिलोकचन्द की कोठी पर पहुँच गए।

त्रिलोकचन्द कोठी के बरामदे में बैठा समाचार-पत्र पढ़ रहा था। तांगे से मथुरासिंह और उसकी स्त्री को उतरते देख, वह समझ गया। उनके स्वागत के लिए वह तांगे के पास जा पहुँचा। मथुरासिंह ने नमस्कार किया तो राधा ने पायँ लागूँ कर दिया। तांगे का किराया दे, सब कोठी की ओर चले गए। त्रिलोकचन्द ने अपनी पत्नी को आवाज दी तो वह बाहर आ गई।

मथुरासिंह ने कहा, "माँजी! अब तो क्षमा कर देंगी। मैं अपनी सिफ़ारिश के लिए आपकी बहू को साथ ही ले आया हूँ।"

स्नेहलता राधा को भीतर ले गई। बाहर बैठक में बैठे हुए त्रिलोकचन्द ने मथुरासिंह को पिछले दिन की चाय-पार्टी का पूर्ण वृत्तन्त बता दिया। वह सब सुनकर मथुरासिंह ने पूछा, "आप मुझे क्या करने को कहते हैं?"

"मैं समझता हूँ कि सुरक्षा-मंत्री से मिलने से पूर्व तुम गृहमंत्री से मिलो। उनको कहो कि क्लैरा के विषय में अभी तक जाँच न कराई हो तो कृपया तुरन्त कराएँ। वह बहुत हानिकारक सिद्ध हो सकती है। मेरा अनुभव भी उनको बता सकते हो।"

मथुरासिंह को यह बात उचित प्रतीत हुई। स्नान-भोजनादि से निवृत्त हो उसने गृह मंत्री के पी. ए. को फोन करके बताया, "मैं लेफ्टिनेन्ट मथुरासिंह बोल रहा हूँ।"

"आप तो गाँव गये हुए थे?"

"हाँ, परन्तु मुझको तार देकर बुलाया गया है।"

"किसने बुलाया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुरक्षा-मंत्री ने। किन्तु सुरक्षा-मंत्री की सेवा में उपस्थित होने से पूर्व मैं गृहमंत्री जी से पाँच मिनट का समय चाहता हूँ। एक अत्यावश्यक विषय पर बात करनी है।"

"कहाँ पर आपको सूचित किया जाय?"

"त्रिलोकचन्द के घर का टेलीफोन नम्बर देकर उसने कह दिया, "मैं दिन-भर यहीं मिलूंगा।"

ग्यारह बजे मथुरासिंह को फोन पर बताया गया कि उसके लिए मोटर भेजी जा रही है, वह उसमें चला आए।

मोटर आई और दस मिनट में वह गृह मंत्री के सम्मुख उपस्थित हो गया।

मथुरासिंह ने नमस्कार कर पूछा, "आपसे मैंने निवेदन किया था कि क्लैरा क्लीवमौंट मुझ पर जासूसी करती प्रतीत होती है। यदि मैं यहाँ आता-जाता न होता तो चिन्ता न करता। इस कारण मैं चाहता था कि आपको बताकर ही सुरक्षा-मन्त्री से मिलने के लिए जाऊँ।"

"मेरे पास उसके विषय में पुलिस की यह रिपोर्ट है कि वह गवर्नर जनरल के स्टेनो के रिश्तेदारों में से है और सुरक्षा-मन्त्री की पी. ए. है।"

इस पर मथुरासिंह ने पिछले दिन की चाय-पार्टी और उसमें त्रिलोकचन्द के साथ हुए क्लैरा के वार्त्तालाप का उल्लेख कर दिया।

"इस वार्त्तालाप से कुछ सिद्ध नहीं होता।"

मथुरासिंह चुप रहा। फिर सहसा वह उठा और जाने की स्वीकृति माँगने लगा। गृहमन्त्री ने कहा, "अभी बैठिये।"

वह बैठ गया। गृहमन्त्री ने अपने पी. ए. से कहा कि सुरक्षा-मन्त्री को फोन कर मिलने का समय निश्चित करो। उसको ऐसा कोई संकेत नहीं देना कि मिस्टर सिंह यहाँ बैठे हैं।

पी. ए. बाहर चला गया। गृह मन्त्री अपनी फाइल में से कुछ पत्र पढ़कर नोट्स लेता रहा।

उसे यह समाचार मिला था कि कबाइलियों से बारामूला वापस लेने के लिए घमासान युद्ध हो रहा है। भारतीय सेना ने भी मोर्चा बांध लिया है और गोलाबारी हो रही है।

कुछ समय बाद मथुरासिंह को बताया गया कि सायंकाल चार बजे गृहमंत्री और सुरक्षा-मन्त्री की भेंट के अवसर पर वह उपस्थित हो जाय।

2

मथुरासिंह वहाँ से कोठी पर वापस आया तो त्रिलोकचन्द ने बताया, "क्लैरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का फोन आया था। वह तुम्हारे विषय में पूछ रही थी।''

''आपने क्या कहा उसको?''

''मैंने कहा कि तुम्हारा तार आया है और तुम कल तक पहुँचने वाले हो।''

''भापा! आपने ठीक कहा है। आज सायं-काल सुरक्षा मंत्री और गृह मंत्री की भेंट होने वाली है ओर उस समय मुझे भी उपस्थित रहने के लिए कहा गया है।''

इस समय एक घटना घटी।

त्रिलोकचन्द की लाहौर मॉडल टाउन में एक कोठी थी। यह कोठी उसने 1942 में बनवाई थी और उसको रहने के लिए प्रयोग करने लगे थे। लोअर माल वाली कोठी में उन्होंने अपना दफ्तर बनाया हुआ था। त्रिलोकचन्द का वहाँ एक दीवान साहब से व्यवसायिक सम्बन्ध था। वह दीवान साहब के मुकद्दमें लिया करता था। दीवान साहब की एक रखैल थी, उसका नाम था मिस कुरेशी। उसकी भी त्रिलोकचन्द से मेल-मुलाकात थी। त्रिलोकचन्द का विश्वास था कि वह कोई भली औरत है और सच्चे मन से दीवान साहब से प्रेम करती है।

मथुरासिंह कोठी में अपने कमरे में आराम कर रहा था कि मिस कुरेशी उस समय त्रिलोकचन्द से मिलने के लिए वहाँ आ गई।

उसने बरामदे में लगी घंटी बजाई तो त्रिलोकचन्द ने बाहर देखा। उसे वहाँ देख वह स्तब्ध रह गया। बाहर निकल उसने पूछा, ''मिस कुरेशी! किधर घूम रही हो?''

''इधर किसी काम से जा रही थी कि बाहर कोठी पर आपका नाम लिखा देख अनुमान किया कि कदाचित् मॉडल टाउन वाले वकील साहब होंगे। यह जानने के लिए भीतर आ गई और देखिये, मेरा अनुमान ठीक ही निकला है।''

''आओ, भीतर आ जाओ।''

भीतर जाकर उसने पूछा, ''बहिनजी कहाँ है?''

''भीतर ही हैं।''

''और बच्चे?''

''वे स्कूल में हैं।''

''आपकी लड़की...गार्गी...मैं नाम भूल जाती हूँ। बहुत ही प्यारी है। कब तक लौट आयेगी?''

''मेरे दोनों बच्चे देहरादून के स्कूल में पढ़ते हैं।''

''ओह! यह कोठी आपने किराये पर ले रखी है या मोल ले ली है?''

''अभी तो किराये पर ही है। मैं कोशिश कर रहा हूँ कि मॉडल टाउन वाली कोठी से इसकी अदला-बदली हो जाय। यह कोठी एक मुसलमान की है। जून से मैंने इसे उससे किराये पर ले रखी है। इस समय वह लाहौर में है। मेरी उससे बातचीत चल रही है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मॉडल टाउन वाली कोठी तो इससे बहुत बड़ी थी?"

"तभी तो मैं कुछ रुपया भी माँग रहा हूँ। किन्तु वह कुछ देना नहीं चाहता।"

"तब तो सौदा महंगा रहेगा।"

त्रिलोकचन्द ने बात बदलकर पूछा, "दीवान साहब कहाँ हैं?"

"हम मार्च में यहाँ आ गये थे। नई दिल्ली में एक भाड़े के मकान में रहते थे। एकाएक उन्होंने मुझे छोड़ दिया। मैं समझती हूँ कि वे बूढ़े हो गये हैं।"

"तो अब कहाँ रह रही हो?"

"दस सितम्बर को दिल्ली में भारी झगड़ा हो गया था। दिन-भर मुसलमानों की दुकानें लुटती रहीं। रात को सिर पर सफेद रूमाल बांधे गुण्डों के झुंड-के-झुंड सड़कों पर घूम रहे थे। बहुत से मुसलमान मारे जाने लगे थे। मेरे मन में भय समा गया और मैंने पण्डितजी को फोन कर दिया। वे बेचारे मुझे बचाने के लिए रात के बारह बजे अपनी गाड़ी में आ पहुँचे और मेरी डर से परेशान हालत को देखकर अपनी मोटर में बैठाकर ले गए। तब से मैं उनकी कोठी पर ही रह रही हूँ।"

"किन पण्डितजी की बात कर रही हो?"

"पण्डितजी! मेरा मतलब यहाँ के प्रधान-मंत्री से है। बेचारे फरिश्ता हैं, मोती की तरह बेदाग हैं। मैं तो उनके एहसान के नीचे दबी हुई हूँ। मेरी जान बचाने वाले वे ही हैं।"

मिस कुरेशी की प्रधान-मंत्री तक पहुँच की बात सुन त्रिलोकचन्द चकित रह गया। वह अभी इस पर विचार ही कर रहा था कि कुरेशी ने कहा, "वे मुझ पर बहुत मेहरबान हैं, आपको कभी भी किसी काम की जरूरत पड़े तो बताइये। आप तो मेरे पुराने मेहरबान हैं। आपकी खिदमत कर मुझे निहायत खुशी होगी।"

"मैं जरूर फायदा उठाऊंगा। मिस कुरेशी! तुमने अब हिन्दुस्तान में ही रहने का फैसला कर लिया है या लाहौर वापस जाओगी?"

"मैं तो यहीं की 'सिटीजन' बनकर रहना चाहती हूँ।"

"ठीक ही है।"

"चार बज गए थे। मथुरासिंह गृहमंत्री के घर जाने के लिए तैयार होकर अपने कमरे से निकला और वकील साहब के पास किसी औरत को बात करते देख, चुपचाप कोठी से निकल गया। उसे देख मिस कुरेशी ने कहा, "ये आपके क्या लगते हैं?"

"मेरा एक सम्बन्धी हैं।"

"अच्छा खूबसूरत जवान है।"

त्रिलोकचन्द हँस पड़ा।

"क्यों, हँसी क्यों आई?"

"खूबसूरत नौजवानों को औरतों की नजर से बचना चाहिए। इसलिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो इसे रेशम की थैली में लपेटकर रखिये। दिल्ली तो पैरिस बनने वाला है। यहाँ औरतों के बिना काम नहीं चलेगा।"

"मगर इसकी अपनी पत्नी है और मैं समझता हूं कि...।"

"क्या समझते हो?"

"वह तुमसे अधिक सुन्दर है।"

"तो यह बात है, इसलिए इसकी नजर इधर नहीं पड़ी।"

"हाँ, मैं यही कारण समझता हूँ।"

"तो उन नाजनीन के ही दर्शन करा दीजिए।"

"चाय के समय तक बैठो।"

"इतना कह त्रिलोकचन्द ने घंटी बजाई। नौकर आया तो उसने कहा, "बीबीजी से कहो, कोई मेहमान आए हैं। चाय की तैयारी करें और चाय के लिए राधा के साथ बाहर आ जाएँ।"

स्नेह बाहर आई और कुरेशी को बैठी देख, चकित रह गई। बोली, "तुम? कुरेशी बहिन! तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

"मैं यहीं की सिटिजन बन गई हूँ। अब इस समय तो चाय के लोभ में बैठी हूँ।"

"चाय तो आ रही है। दीवान साहब कहाँ हैं?"

"उन्होंने तो मुझे घर से निकाल दिया है। आजकल एक सरकारी मकान में पनाह ले रखी है।"

चाय आई तो राधा भी बाहर आ गई। कुरेशी ने उसे अपने समीप बैठा लिया और उसके साथ गाँव की बातें करने लगी।

कुरेशी स्नेहलता को अपने दीवान से सम्बन्ध बनने और घनिष्ठ होने तथा फिर बिछोह और अब वर्तमान अवस्था के विषय में बता रही थी।

स्नेहलता भी समझ गई कि यह कुरेशी अब वह नहीं रहीं जो लाहौर मॉडल टाउन में थी। इससे वह चाहती थी कि वह जल्दी चली जाय। परन्तु कुरेशी तो मथुरासिंह के लौट आने की प्रतीक्षा में थी। वह उससे सम्पर्क बनाना चाहती थी।

मथुरासिंह आया तो दोनों पुरुष भीतर वाले कमरे में चले गये। स्नेहलता ने कुरेशी को अपनी न समाप्त होने वाली कहानी सुनाते देखा तो वह उठ पड़ी। उसने कहा, "अच्छा, कुरेशी बहिन! हमको घूमने के लिए जाना है।"

"आप दोनों ने अथवा राधा ने भी?"

"वे तो अपने किसी काम में व्यस्त हैं। हम दोनों ही जायेंगी।"

"तो चलिये, मैं आपको अपनी टैक्सी में ले चलती हूँ।"

"तो क्या अभी तक आपकी टैक्सी बाहर खड़ी है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, क्यों?"

"व्यर्थ ही उसे रोक रखा है। यहाँ तो 'फोन' करने से टैक्सी आ जाती है। आपको बैठे हुए तो दो घंटे से अधिक हो गये हैं?"

"आपसे मिलने की खुशी इन दो-तीन रुपयों से कहीं ज्यादा कीमती है। चलिये, आपको ले चलूँ।"

"नहीं, तुम जाओ। मुझे पहले ही तुम्हारा इतना खर्च कराने का अफसोस हो रहा है।"

कुरेशी अपनी स्थिति स्पष्ट नहीं कर सकी कि उसको किसी प्रकार रुपये-पैसों की कमी नहीं है। उसने कहा, "फिर कभी आप लोगों को मिलने के लिए आऊंगी। राधा बहिन से मिलकर अभी तबियत नहीं भरी।"

"हाँ, यह एक-दो सप्ताह तक यहीं है, तुम कभी भी आ सकती हो।"

बड़ी कठिनाई से कुरेशी से छुटकारा मिला तो राधा को लेकर स्नेह कनॉट प्लेस की सैर को निकली।

मथुरासिंह ने लौटते ही गृहमंत्री से हुई अपनी भेंट का विवरण बताया। उसने वकील साहब को बताया, "मुझे कश्मीर फोर्सेज के कमाण्डर का पी. ए. नियुक्त किया गया है। दो दिन में कमाण्डर कश्मीर से लौटेगा और मुझे उसके साथ जाना होगा। मेरा काम युद्ध-नीति के विषय में उसको सम्मति देना होगा और साथ ही मंत्रि-मंडल की तदर्थ समिति के सम्मुख युद्ध-नीति को स्पष्ट करना भी होगा।

"मेरा लेफ्टिनेन्ट का रैंक पुनः बहाल कर दिया गया है। मेरा वेतन भी वही होगा जो पहले था। अभिप्राय यह कि मेरी सेवाएं निरन्तर चल रही समझी जायेंगी।

"यह सब सुरक्षा-मंत्री की विशेष आज्ञा से हो रहा है। मैंने कहा था कि इस नियुक्ति से कमाण्डर-इन-चीफ़ नाराज हो जायेंगे। उन्होंने कहा कि वह तो पहले से ही नाराज हैं। कई बातें हो गई हैं और अनुमान है कि वह शीघ्र ही त्याग-पत्र देने वाला है।

"मैंने अपनी बात पर फिर बल देते हुए कहा कि वे देख लें। क्योंकि कमाण्डर-इन-चीफ़ मेरी पुनः नियुक्ति को बिलकुल भी पसन्द नहीं करेगा।

"इस पर गृहमंत्री ने बताया कि उन्हें उस घटना का ज्ञान है, जो उस दिन काकटेल पार्टी में हुई थी, जिस दिन कश्मीर विलय का प्रस्ताव स्वीकार किया गया था।

"मैंने कहा कि इस कार्य को करने से पूर्व मैं यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि मैं मिस क्लैरा अथवा किसी अन्य मिस के सम्मुख किसी भी प्रकार की बात करने के लिए बाध्य नहीं किया जाऊंगा। मुझे उसकी भारत के प्रति निष्ठा पर विश्वास नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गृहमंत्री प्रश्न-भरी दृष्टि से सुरक्षा-मंत्री की ओर देखने लगे। सुरक्षा-मंत्री गम्भीर हो कहने लगे, वे इस विषय से उसको पृथक् रखेंगे।

"इस प्रकार मैं आज से पुनः भारत सरकार का वेतनधारी सैनिक अधिकारी बन गया हूँ।

"यह कार्य स्वीकार कर तुमने बहुत अच्छा किया है। परन्तु मैं जानता हूँ कि चिरकाल तक तुम इस कार्य पर रह नहीं सकोगे।"

"मैंने स्वयं को ईश्वरार्पण कर रखा है। इसलिये न तो मुझे यह कार्य करने का किसी प्रकार का हर्ष है, न इसके छूट जाने पर किसी प्रकार का दुःख होगा। अपना कार्य मैं अपनी पूर्ण ईमानदारी और योग्यता के साथ करता जाऊंगा, उसके फल के विषय में मुझे कोई चिन्ता नहीं।"

"सुरक्षा-मंत्री ने क्लैरा के विषय में तुम्हारी शर्त को किस प्रकार स्वीकार कर लिया?"

"मैं समझता हूँ कि वे गृहमंत्री को रुष्ट करना नहीं चाहते। इस कारण उनकी बात माननी पड़ी।"

"कब तक अपने कार्य पर जाओगे?"

"मुझे प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया है।"

"यह बाहर बैठी औरत देखी है?"

"जी।"

"यह प्रधान-मंत्री की कोठी में रहती है।"

"किस लिये?"

"मुसलमान शरणार्थी के रूप में। सुना है कि इसको निस्सहाय समझकर प्रधान-मंत्री ने अपनी कोठी में शरण दे रखी है।"

"परन्तु यहाँ क्या कर रही है यह?"

"यह हमारी लाहौर से परिचित है। आज अचानक मेरी कोठी देखकर मिलने आ गई है।"

"परन्तु यह तो टैक्सी में आई है और टैक्सी बाहर खड़ी कर रखी है।"

त्रिलोकचन्द कुछ विचार करता रहा और फिर कहने लगा, "देश की इस संकटावस्था में मुसलमानों का और विशेषकर इस प्रकार की मुसलमान व अन्य औरतों का मंत्रियों के आगे-पीछे घूमना, बिल्कुल भी सही नहीं।"

"पर हम कर क्या सकते हैं? मैंने अपनी ओर से गृह-मंत्री और सुरक्षा-मंत्री को सचेत कर दिया है। इस प्रकार मैंने अपना कर्तव्य-पालन कर दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3

मथुरासिंह की नियुक्ति के तीन दिन बाद ब्रिगेडियर कमाण्डर दिल्ली आ गया। बारामूला पर भारतीय सेना का अधिकार हो चुका था। और राजधानी में इस समाचार पर भारी प्रसन्नता व्यक्त की जा रही थी। बारामूला पर हुए कबाइली आक्रमण और उनके अत्याचारों तथा लूटमार के समाचार प्रकाशित हो रहे थे।

मथुरासिंह को ब्रिगेडियर की लिखित आज्ञा मिली कि उसको अमुक दिन ढाई बजे के हवाई जहाज से चलने के लिए तैयार रहना चाहिए और नियत समय पर हवाई अड्डे पर पहुँच जाना चाहिए।

स्नेहलता के आग्रह पर राधा का दिल्ली में रहने का निश्चय हुआ। मथुरासिंह की नियुक्ति तथा शीघ्र ही मोर्चे पर जाने की सूचना गाँव में भेज दी गई थी। साथ ही यह भी सूचना दे दी गई थी कि राधा दिल्ली में ही रहेगी। यह आशा की जा रही थी कि मथुरासिंह का दिल्ली में आना-जाना बना रहेगा।

मथुरासिंह श्रीनगर पहुँचा तो पहले दिन यह समाचार मिला कि कबाइली पाकिस्तान की ओर भाग रहे हैं और इस समय उड़ी खाली हो रहा है।

अतः पहले ही दिन मथुरासिंह के समक्ष प्रश्न उपस्थित किया गया कि उड़ी के बाद क्या?

इस प्रश्न का उत्तर निश्चय करने के लिए मथुरासिंह कश्मीर का मानचित्र और आगे के मार्ग का अध्ययन करने लगा। उसने कश्मीर के सैनिकों से भी अनेकानेक प्रश्न किये और अन्त में कहा, "मैं इस क्षेत्र का स्वयं निरीक्षण करना चाहता हूँ।"

कमाण्डर और मथुरासिंह दोनों ही हवाई जहाज में उड़ी और आस-पास के क्षेत्रों में उड़ान भरने लगे। जिस दिन ये उड़ान कर रहे थे कबाइली अपना बोरिया-बिस्तर उठा मुजफ्फराबाद की और लौट रहे थे। कुछ लोग उड़ी से पुंछ की ओर भी जा रहे थे।

सायं-काल ये लोग पुनः श्रीनगर लौटे। तब तक मथुरासिंह ने अपनी योजना बना ली थी। उसने वह योजना कमाण्डर को बताते हुए कहा, "हमें मुजफ्फराबाद तक इनका पीछा करना चाहिए। इस पर भी हमारा बल पुंछ की ओर होना चाहिए। अपना ध्यान हमें पाकिस्तान की ओर करना चाहिए। सारी मुसीबत का स्रोत वहीं है। यदि एक सप्ताह में हम कोहाला और फिर मरी पर अधिकार कर लें और इधर पुंछ और मीरपुर लेकर जेहलम को भय में डाल दें, तो सब-के-सब कबाइली शस्त्र डालकर भाग जायेंगे। उनको शस्त्रास्त्र और खाद्य-सामग्री मरी के मार्ग से मिल रही है। वह बन्द हो जायेगी। तब कबाइलियों का भय मिट जायेगा।"

"परन्तु इसमें तो हम पाकिस्तानियों से युद्ध की स्थिति में हो जायेंगे?"

"वह तो हम पहले से ही हैं। इस पर भी हम पाकिस्तान में प्रवेश नहीं करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तक तो हम छिपे-छिपे युद्ध कर रहे हैं। तब प्रत्यक्ष हो जायेंगे।

"ठीक है, हम दुनिया के समाचार-पत्रों में अपनी सफाई छपवा दें तो कैसा रहे? इससे हम बदनामी से बच नहीं जायेंगे क्या?"

"पाकिस्तान से युद्ध की अवस्था एक राजनीतिक प्रश्न है। ऐसा हम नहीं कर सकते।"

"हम सुझाव तो दे ही सकते हैं। अपने सुझाव से हम उसके लाभों का वर्णन कर दें।"

"क्या लाभ होगा, पाकिस्तान को खुले रूप में युद्ध में घसीट लाने का?"

"सैनिक दृष्टि से तो यह लाभ होगा कि जो युद्ध वर्षों तक चलने वाला है, वह महीनों में समाप्त हो जायेगा। सहस्रों सैनिक मरने से बच जायेंगे और करोड़ों रुपया व्यय होने से बच जायेगा। कश्मीर पर भारत की सुदृढ़ सरकार स्थापित हो जायेगी।

"फिर कभी पाकिस्तान से सन्धि होगी तो उस समय सैनिक दृष्टिकोण से सीमा का निर्धारण किया जा सकेगा। अभी तक तो वकीलों ने ही सीमाएँ निर्धारित की हैं। सैनिक दृष्टि से ये सीमाएँ अव्यवहारिक हैं।"

"तो ऐसा करिये आप एक ड्राफ्ट बनाइये। मैं उसको दिल्ली भेज दूंगा। उसमें यह माँग करिये कि अभी तक हम मुजफ्फराबाद की ओर बढ़ रहे थे। पुंछ और मीरपुर की ओर हमारा अभियान बलशाली होना चाहिए। वहाँ हिन्दू घिरे हुए हैं। वहाँ के निवासियों को बचाने और भागे हुए लोगों को वापस बुलाने से कश्मीर में भारत की स्थिति सुदृढ़ होगी।"

श्रीनगर में बैठकर मथुरासिंह ने कश्मीर की पूर्ण स्थिति पर एक बीस पृष्ठ का ड्राफ्ट तैयार कर दिया। उसमें कश्मीर की दुर्बल स्थिति का वर्णन कर उसमें उसकी भारतवर्ष के लिए आवश्यकता और फिर उसको दृढ़ करने की विधि का उल्लेख भी कर दिया। उन उपायों में वर्तमान युद्ध से लाभ उठाने का सुझाव भी उसने रख दिया।

उक्त सुझाव दिल्ली भेज दिया गया, किन्तु एक सप्ताह तक उसका कोई उत्तर नहीं आया। परिणाम यह हुआ कि आरम्भ में जो सैनिक दबाव भारतीय सेना ने डाल रखा था वह ढीला पड़ गया। निश्चित योजना न होने के कारण किसी ओर भी सेना नहीं बढ़ सकी।

इस समय गिलगित की ओर छुट-पुट पाकिस्तानी हमले होने लगे थे। उस ओर भी सेना का ध्यान गया था किन्तु उत्साह से कार्य नहीं हो सका। इसका कारण था केन्द्र में किसी प्रकार की सुदृढ़ एवं सतर्क नीति का अवलम्बन न किया जाना। कश्मीर घाटी के निवासियों के साथ-साथ सेना में भी एक प्रकार की शिथिलता आने लगी थी। मथुरासिंह इसका कारण नहीं जान पाया था। कश्मीर सेना का सुप्रीम कमाण्डर नई दिल्ली गया हुआ था। उसके कार्यालय का सामान्य कार्य तो मथुरासिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा था, परन्तु उसकी आत्मा इस प्रकार एक क्लर्क का-सा कार्य करने से संतुष्ट नहीं थी। वह या तो मोर्चे पर युद्ध से सम्मिलित होने की इच्छा करता था अथवा वह ऐसे ढंग से युद्ध-संचालन करना चाहता था, जिससे कि अपने पक्ष की शीघ्र विजय होकर युद्ध समाप्त हो जाये।

एक सप्ताह तक वह सेना के संगठन का कार्य करता रहा। इस अवधि में उसने मोर्चे से सेना का रेडियो-सम्बन्ध स्थापित करवा लिया। इस प्रकार उसने तीनों मोर्चों से केन्द्रीय कार्यालय का सम्पर्क इस प्रकार करवा लिया जिससे वह वहाँ की प्रत्येक सूचना से अवगत रहता था। सामान्य आज्ञायें तो वह पत्र द्वारा भेज देता था, परन्तु युद्ध-सम्बन्धी सूचनाएँ और समाचार वह रेडियो द्वारा देता और प्राप्त करता था। इसके अतिरिक्त उसने शत्रु की गतिविधि को जानने के लिए जासूसों का भी एक संगठन तैयार किया। उसके साथ ही रियासत के भीतर और बाहर शत्रु के जासूसों के कार्यों का ज्ञान प्राप्त करने लगा।

अपने विचार से उसने इस एक सप्ताह में पुंछ तथा मीरपुर के मोर्चे पर सेना का भारी जमाव आरम्भ कर दिया था। वह समझ रहा था कि दिल्ली से उसकी योजना के स्वीकार होते ही धावा बोलना होगा और एक ही हल्ले में वह पाकिस्तान की सीमा पर पहुँच जायेंगे।

मथुरासिंह का अनुमान था कि ज्यों ही भारतीय सेनाएँ मीरपुर पहुँचेंगी, पाकिस्तानी सेना इसका प्रतिरोध करने के लिये राज्य की सीमा में घुस आयेगी। एक बार यह सिद्ध हो गया कि पाकिस्तानी सेना कश्मीर राज्य में प्रविष्ट हुई है तो फिर भारत का अधिकार हो जायेगा कि वह पाकिस्तान पर अन्य स्थानों से भी आक्रमण कर दे।

परन्तु इस दिशा में आक्रमण की स्वीकृति नहीं आ रही थी। इस समय एक घटना घटी। मथुरासिंह अपने दो अन्य साथियों के साथ श्रीनगर की डल झील के किनारे की सड़क पर पैदल चल रहा था कि एक औरत सामने से आती-आती इनके सामने आकर खड़ी हो गई।

मथुरासिंह ने पहले तो यह समझा कि उसके साथियों में से किसी की परिचित होगी। परन्तु तुरन्त ही वह पहचान गया कि यह तो वही औरत है जिसे उसने त्रिलोकचन्द की कोठी पर घंटों बातें करते देखा था। इस पर भी वह प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा।

"वह मिस कुरेशी थी। उसने मुस्कराते हुए पूछा, "तो नहीं पहचाना मुझे?"

"पहचाना तो है, परन्तु आप यहाँ कर क्या रही हैं?"

"दो दिन हुए मैं दिल्ली से यहाँ सैर करने के लिए आई हुई हूँ। आते हुए मैं आपकी पत्नी से मिलकर आई थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह के साथी उस औरत को मथुरासिंह की कोई सम्बन्धी समझ कुछ आगे बढ़ गये। मिस कुरेशी मथुरासिंह के साथ-साथ चलने लगी। मथुरासिंह ने कहा, "मुझे आज ही राधा का पत्र मिला है, उसने वहाँ का सारा विवरण लिखा है।"

इतना कहने का मथुरासिंह का अभिप्राय यह था कि वह उससे अधिक घनिष्ठता बढ़ाना नहीं चाहता। परन्तु कुरेशी इतनी-सी बात से हतोत्साह होने वाली नहीं थी। उसने कहा, "तब तो आपको विदित होगा कि आपकी माताजी उसको लेने के लिए आई हुई हैं।"

"मुझे विदित है।"

"मैं आपको बधाई देती हूँ, राधा के घर होने वाली सन्तान के लिये और एक अन्य के घर उत्पन्न होने वाली सन्तान के लिए भी।"

"अन्य किसकी उत्पन्न होने वाली सन्तान के लिये?"

"नाम तो बता सकती हूँ, परन्तु इस रहस्य का ज्ञान किस प्रकार है, यह नहीं बता सकती।"

"यदि कोई रहस्य की बात है, तो मुझे मत बताइये। क्योंकि मैं किसी के रहस्य को रख सकूंगा, इसका वचन मैं नहीं दे सकता।"

"परन्तु वह रहस्य तो आपका ही है।"

"मेरा ऐसा कोई रहस्य नहीं, जिसे छिपाने की मुझे आवश्यकता हो।"

"परन्तु यदि यह बात उसके पति को विदित हो जाय तो वह आपको द्वन्द्व-युद्ध की चुनौती दे सकता है।"

"तो श्रीमतीजी! आप उसके पति को ही क्यों नहीं बतातीं? मुझसे जो कोई भी द्वन्द्व-युद्ध करने का साहस करेगा, वह घाटे में रहेगा।"

"तो क्या आप बहुत ही प्रवीण निशानेबाज हैं।"

"यह बताने की आवश्यकता नहीं। जिसे परीक्षा करनी हो वह कर सकता है।" मिस कुरेशी मुस्कराती हुई मथुरासिंह की ओर देखती रही। सहसा खड़ी होकर वह पूछने लगी, "आप दिल्ली कब जा रहे हैं?"

"शीघ्र अवकाश मिलना सुगम नहीं।"

"अवकाश तो मिल सकता है?" कुरेशी ने पुनः साथ-साथ चलते हुए कहा।

"मै। अभी अवकाश लेना चाहता भी नहीं।"

"तो लेडी गौर्ट को यहाँ आना पड़ेगा।" लेडी गौर्ट का नाम सुन विस्मय में वह कुरेशी की ओर देखने लगा। वह हँस पड़ी। उसने कहा, "वह अब शीघ्र ही इंगलैंड जा रही है। उसकी यह उत्कट इच्छा है कि जाने से पूर्व आपसे भेंट करे।"

"मैं इस बात पर विस्मय कर रहा था कि आप लेडी गौर्ट की 'मेड सर्वेन्ट' कब से बनी हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेड सर्वेंट नहीं जी! मैं तो उसकी सहेली हूँ।"

मथुरासिंह की इच्छा उससे अधिक वार्तालाप करने की नहीं थी। इसी कारण उसने उस पर 'मेड सर्वेंट' वाला व्यंग कसा था। परन्तु कुरेशी तो उससे घनिष्ठता बढ़ाने का निश्चय किये हुए थी। उसने इस व्यंग्य का उत्तर भी हँसकर ही दिया।

मथुरासिंह उससे मुक्ति का कोई उपाय सोच ही रहा था कि वह कहने लगी, "मैं आपके साथियों और आपके मध्य खड़ी रहना नहीं चाहती, वे कदाचित् यह समझ बैठे होंगे कि मैं आपकी कोई बहिन, चाची, ताई हूँ। इस कारण वे आगे-आगे चलने लगे हैं और आप उनके साथ से छूट गए हैं। इस समय तो मैं चलती हूँ। मेरे विचार से वह बात आपके और लेडी गौर्ट के लिए हितकर ही होगी। बताइये, इसके बाद आपसे कहाँ मिलना हो सकता है?"

मथुरासिंह ने मुक्ति पाने के विचार से कह दिया, "कल नीडोज में आपके साथ चाय पीकर मुझे अतीव प्रसन्नता होगी।"

"ठीक है, किस समय?"

"साढ़े चार बजे।"

"बहुत खूब! शायद कल मैं आपकी भेंट किसी अन्य से भी कराने में सफल हो जाऊँ।"

"किससे?"

"यदि कोई रुकावट पैदा न हुई तो एक 'ग्रेट मैन' से, आपकी मुलाकात कराऊंगी। अभी नाम बताने की आवश्यकता नहीं। कल जब मिलेंगे तो आप जान जायेंगे।"

उससे मुक्ति पाने के प्रयास में मथुरासिंह ने उसको हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया। मिस कुरेशी लौटकर अपने मार्ग पर चल पड़ी। मथुरासिंह अपने साथियों में जा मिला। उसके एक साथी ने पूछा, "यह क्या लगती है आपकी?"

"यह लाहौर में एक रईस की रखेल थी। उसने किसी कारण से इसको निकाल दिया है और अब यह कोई नया शिकार देख रही है।"

मथुरासिंह के साथी हँस पड़े।

फिर एक ने कहा, "सिंह! मैं यह भविष्यवाणी करता हूँ कि यह तुमको फाँस लेगी।"

"मुझ पर यदि यह अपना चादू चलाने में सफल हो गई तो समझ लो कि यह बहुत बड़ी जादूगरनी है। मेरा विचार है कि इसमें ऐसी कोई बात नहीं है। इससे कहीं अधिक योग्य जादूगरनियों से मेरा पाला पड़ चुका है। उनके जादू से बचने में जब मुझे सफलता मिली है तो यह तो उनके सम्मुख कुछ भी नहीं है।"

तीनों हँस पड़े। एक ने पूछा, "सिंह! तो क्या वह डोरा डाल गई है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, कल मुझसे चाय पीने का निमन्त्रण लेकर गई है।"

मित्रगण पुनः हँस पड़े।

4

अगले दिन मध्याह्न के समय कश्मीर सेना का सेनाध्यक्ष श्रीनगर आ पहुँचा। मथुरासिंह ने उसकी अनुपस्थिति में किये हुए अपने सब कार्यों का उल्लेख कर दिया।

ब्रिगेडियर जनरल ने सब बात सुनी और बोला, "तुम्हारी योजना चल नहीं पायेगी। कश्मीर के प्राइम मिनिस्टर शेख अब्दुल्ला और भारत के प्रधान-मंत्री दोनों आपकी योजना में रुचि नहीं रखते। उनका कहना है कि किसी देश के साथ युद्ध की घोषणा राजनीतिक प्रश्न है। इसका निश्चय राजनीति के स्तर पर हो सकता है, सैनिक स्तर पर नहीं।

"दिल्ली में कश्मीर के विषय पर इस समय केवल इन दो महापुरुषों की ही चलती है। मैं इन दोनों से पृथक्-पृथक् भी मिला हूँ। शेख साहब दिल्ली गये हुए थे और मैंने दोनों के समक्ष उपस्थित हो आपकी पूर्ण योजना विस्तारपूर्वक और युक्ति-सहित समझाई है। दोनों सुनते रहे। अन्त में भारत के प्रधान-मन्त्री ने कहा कि राजनीति में युक्ति नहीं चलती। इसका रास्ता बहुत टेढ़ा-मेढ़ा है। यह शाही सड़क नहीं। इसलिए समझ लेना चाहिए कि पाकिस्तान के साथ भारत का युद्ध हम पसन्द नहीं करते। इससे दोनों देश नष्ट हो जायेंगे और फिर एक सदी तक तो इनकी हालत सुधरनी कठिन हो जायेगी।

"कुछ देर ठहरकर वे फिर कहने लगे कि हमारा यह निर्णय है कि भारत और पाकिस्तान परस्पर नहीं लड़ेंगे।

"इसके बाद तो मेरे लिए वहाँ कुछ कहने और करने के लिए रह नहीं गया था। दो दिन और ठहरकर मैं चला आया।

"मुझे कुछ ऐसा आभास मिला है कि कश्मीर के विषय पर केन्द्रीय मंत्रि-मण्डल में कुछ बृहत् मतभेद है। मंत्रि-मण्डल दो गुटों में बंटा हुआ है। प्रधान-मंत्री तो इस युद्ध को लोकलाइज्ड करने के लिए कटिबद्ध है और उनसे मतभेद रखते हुए किसी का भी साहस नहीं कि जनता के सामने उनको चुनौती दे सके।

"जब से गांधीजी की हत्या हुई है जनता में पंडितजी की स्थिति सुदृढ़ हो गई है। जान-बूझकर अथवा अनजाने में कुछ लोगों ने ऐसे वक्तव्य दिये हैं, जिनसे यह प्रकट होता है कि महात्मा गांधी की हत्या सरदार वल्लभ भाई पटेल की सहायता तथा संकेत से हुई है। इससे पटेल विरोधी गुट की महिमा बढ़ गई है।

"मैं सुरक्षा-मंत्री के पास जाकर प्रार्थना कर आया हूँ कि या तो मुझे सेना-कार्य से मुक्त कर दिया जाय अथवा कश्मीर अभियान से पृथक् कर दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुरक्षा-मंत्री ने मेरी प्रार्थना पर विचार करने का वचन दिया है।"

इसके बाद गिलगित और फिर चित्तराल को पाकिस्तान से स्वतन्त्र करने की योजना बनने लगी। पुंछ, मीरपुर के मोर्चे से सेनायें वापस कर अब गिलगित का मोर्चा गरम करना आवश्यक समझा गया।

इसी दिन सायंकाल चार बजे मथुरासिंह ने अपने जनरल को बताया, "मैंने साढ़े चार बजे एक स्थान पर चाय-पार्टी पर जाना है। इस कारण दो घण्टे की छुट्टी चाहता हूँ।"

"कहाँ है तुम्हारी चाय-पार्टी?"

"नीडोज होटल में।"

जनरल विस्मय में मुख देखता रह गया। मथुरासिंह इस विस्मय का कारण नहीं समझ सका। झिझकते हुए जनरल ने पूछा, "यदि वह कोई औरत नहीं जिसने तुम्हें चाय पर आमन्त्रित किया है, तो क्या मैं तुम्हारे साथ वहाँ चल सकता हूँ?"

मथुरासिंह ने मुस्कराते हुए पूछा लिया, "यदि निमन्त्रण देने वाली कोई औरत हो तो फिर आप मेरे साथ क्यों नहीं चल सकते? क्या औरतों से आपको घृणा है?"

"नहीं, घृणा की बात नहीं। मैं किसी के व्यक्तिगत मामलों में पैठना नहीं चाहता।"

"मेरा कहना है कि सब औरतों से किसी की प्राइवेट बात नहीं होती। यदि आपको आपत्ति न हो तो आप भी हमारे साथ चाय ले सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपसे परिचय प्राप्त कर उसे अतीव प्रसन्नता होगी।"

"कौन है वह?"

"मिस कुरेशी! मैं उसका पूरा नाम नहीं जानता। दिल्ली में एक बार केवल दर्शन हुए थे और कल यहाँ सड़क पर मिल गई, तो मुझे निमन्त्रण देने लगी। कर्नल अमरसिंह का विचार है कि वह औरत मुझ पर डोरे डाल रही है। मैं इसी बात की परीक्षा के लिए वहाँ जा रहा हूँ।"

"मगर मेरे तुम्हारे साथ जाने से तो उसको डोरे डालने का अवसर मिलेगा ही नहीं।"

"मुझे इससे कोई हानि नहीं होगी। यह उसका काम है कि अपना जाल डालने के लिए साधन और अवसर उपलब्ध करे।"

"मैं मिस कुरेशी को जानता हूँ। यह लड़की मुसलमान शरणार्थिनी के रूप में पंडित नेहरू की कोठी पर रहती थी। अभी तीन दिन पूर्व यह वहीं थी। मैं समझता हूँ कि शेख साहब से परिचय बढ़ाकर वह कश्मीर की सैर करने के लिए आई हुई है।"

"हाँ, हो सकता है। कल उसने मुझसे कहा था कि हो सका तो वह आज एक महापुरुष से मेरी भेंट कराने का यत्न करेगी। सम्भवतया यह महापुरुष शेरे-कश्मीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हो सकते हैं।"

"तब तो तुम्हारे साथ जाने में आनन्द रहेगा। मैं एक अन्य व्यक्ति से मिलने के लिए जा रहा हूँ वह शेरे-कश्मीर के बराबर का तो नहीं है; परन्तु कभी-कभी लोमड़ियां भी शेर को पछाड़ देती हैं। मुझे गृहमंत्री ने उस व्यक्ति से मिलने के लिए कहा है।"

दोनों अपने कार्यालय से एक जीप में बैठ, नीडोज होटल में जा पहुँचे। रिसेप्शन-हॉल में जाकर दोनों अपने मिलने वालों की तलाश करने लगे। मथुरासिंह को अपनी निमंत्रणदात्री नहीं मिली। ब्रिगेडियर सोच ही रहा था कि वह अकेला किसी मेज पर जाकर बैठ जाय, इतने में राज्य का गृहमंत्री एक मेज पर से उठा और उनकी ओर आया। उनके समीप आकर उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि आप मुझे ढूंढ़ रहे हैं?"

"मैं ढूंढ़ नहीं रहा था, मैं तो स्वयं ही आपके पास आने वाला था। मालूम होता है कि किसी ने दिल्ली से आपको लिखा है कि मैं आपसे मिलने के लिए आ रहा हूँ?"

"यह सूचना तो कल ही मिल गया थी।"

इस समय वे उधर जाने लगे, जिस मेज पर गृहमंत्री बैठा था। मथुरासिंह पीछे रह गया। बिग्रेडियर ने घूमकर मथुरासिंह को हाथ के संकेत से अपने पास बुला, राज्य के गृहमंत्री से उसका परिचय कराने की दृष्टि से कहा, "ये हैं लेफ्टिनेन्ट मथुरासिंह, मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी। मेरी अनुपस्थिति में ये ही मेरे स्थान पर कार्य करते हैं। मैं इनको इस लिए साथ लाया हूँ क्योंकि प्रायः ये ही भविष्य में आपसे मिला करेंगे।"

गृहमंत्री ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "आपके विषय में मैंने पहले भी सुना है, आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।"

"इनके विषय में भी क्या भारत के गृहमंत्री ने लिखा है?" ब्रिगेडियर ने उससे पूछा।

"वे लिखा नहीं करते, उनके तो ज़बानी हुक्म आया करते हैं। मगर लेफ्टिनेन्ट मथुरासिंह के मुताल्लिक तो एक और जरिये से पता चला है। क्यों साहब!" मथुरासिंह की ओर देखकर उसने पूछा, "आप किसी मिस कुरेशी नाम की औरत को जानते हैं?"

ब्रिगेडियर हँस पड़ा। उसने कहा, 'तो वह औरत आपसे भी मिली है?"

"हाँ, सरदार साहब का मतलब यह है कि आप रियासत के अन्दरूनी अमनो-अमान के लिये भी मेरी मदद करेंगे।"

इस समय तक वे लोग एक मेज पर बैठ चुके थे और चाय का आर्डर दे दिया गया था। गृहमन्त्री ने आगे कहा, "यह ठीक है कि यहाँ के प्रधानमन्त्री अब हवाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़े पर सवार हुआ महसूस करने लगे हैं। मगर गृहमन्त्री मैं हूँ और हकीकत यह है कि यहाँ का अमनो-अमान मेरे लिए ज़्यादा जरूरी है। मेरी सिफारिश तो सिर्फ मेरा काम है कि जिससे मैं यहाँ रह सकता हूँ। दूसरों की सिफारिश तो बड़े-बड़े नेता कर रहे हैं। एक ग़रीब और शरीफ इन्सान के लिए उसका काम ही सिफारिश हो सकता है।''

''ठीक, इसी काम के लिए मुझे कहा गया है कि मैं आपसे सम्पर्क स्थापित करूँ।''

''ठीक है, मगर नौजवान!'' उसने मथुरासिंह की ओर देखकर कहा, ''मैं समझता हूँ कि तुम यह बात समझते होगे। एक सैनिक अधिकारी के कान होते हैं और जबान नहीं होती। खास-तौर पर औरतों के समाने।

''यह दुनिया के आगाज़ से ही चला आता है कि औरत घोखा देती है तो पता भी नहीं चलता। इसलिए मिस कुरेशी से खबरदार रहना चाहिए। इस समय भी वह यहाँ एक बहुत बड़े लीडर से मुलाकात कर रही है। यह एन मुमकिन है कि कल तुम्हारे साथ हुई गुफ्तगू को मिर्च-मसाले लगाकर उसको सुना रही हो।''

मथुरासिंह समझ गया कि रिसासत में भी भी दो जबरदस्त ताकतें काम कर रही हैं। दोनों की शक्ति का स्रोत दिल्ली में है। अपने स्वभाव से अथवा दिल्ली से खींची जाने वाली डोरी से ये शक्तियाँ एक-दूसरे के विरुद्ध हो रही हैं।

इस समय रियासत जम्मू और कश्मीर के प्रधान-मन्त्री मिस कुरेशी के साथ रिसेप्शन-हॉल में प्रविष्ट हुए। गृहमन्त्री की नज़र सर्वप्रथम उन दोनों पर पड़ी, तो उसने अपने साथियों को सर्तक करते हुए कहा, 'वे देखिये, आ गये। हव्वा और साँप हैं। फरक यह है कि यहाँ हव्वा तो मर्द है और साँप औरत।''

वे दोनों मानो जानते थे कि गृहमन्त्री किसी हिन्दुस्तानी आफिसर से बातें कर रहा है, ठीक उसी स्थान पर चले आये। गृहमन्त्री ने उठते ही हाथ मिलाया और कहने लगा, ''मैं तो मिलने आया था आपसे और मुलाकात हो गई इनसे। ये है कमाण्डर आफ दि इंडियन फोर्सेस इन जम्मू एण्ड कश्मीर। और ये हैं इनके प्राइवेट सेक्रेटरी लेफ्टीनेन्ट मथुरासिंह।''

''ओह!'' प्रधान-मन्त्री ने विस्मय प्रकट किया।

तब तक बैरा ने दो और कुर्सियाँ वहाँ पर लगा दीं और जब सभी अपने-अपने स्थान पर बैठ गए तो मिस कुरेशी ने कहा, ''ये वही शख्स हैं जिनसे मैं आपका तआरुफ कराना चाहती थी।''

प्रधान-मंत्री आज इस 'मूड' में नहीं था कि वह मथुरासिंह के विषय में बात करे। वास्तव में उसका 'मूड' तो उन भारतीय सैनिक अधिकारियों के साथ गृहमंत्री को बैठा देखकर बिगड़ गया था। उसने अपने बिगड़े हुए मूड में ही कहा, ''मैं यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रधान-मन्त्री हूँ, इसलिए रियासत के मुताल्लिक आप लोगों को मुझसे मिलना चाहिए। मैं यह पसन्द नहीं करता कि मेरी पीठ-पीछे कोई भी रियासत के विषय में किसी ग़ैर-मुल्की अफ़सर से बात करे।''

गृहमंत्री बोला, ''मैं आपकी राय को ठीक समझता हूँ। हम सब कश्मीर की हालत को सुधारने के लिए कमरबस्ता हैं। इसको जानते हुए ही मैं आपकी बात की ताईद करता हूँ ।''

''मैं कमाण्डर साहब से भी यही उम्मीद करता हूँ।''

''मगर श्रीमान्! मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि मुझे मेरे आफिसर ने यहाँ यह कहकर भेजा है कि मैंने रियासत को भीतरी और बाहरी विभिन्न शक्तियों से रक्षा करनी है। इसके लिए क्या करना, और क्या नहीं करना चाहिए, यह विचार करना मेरा काम है।''

प्रधान-मंत्री और ब्रिगेडियर जनरल दोनों एक-दूसरे की आँखों में देख रहे थे। एकाएक प्रधान-मंत्री मुस्कराया और बोला, ''पर मैं कोई ग़ैर हूँ क्या? हम दोनों का मकसद एक नहीं है क्या?''

''आप मुझे मूर्ख न समझे, जो आपको कोई गैर समझूँ। मैं आवश्यकता पड़ने पर आपसे हर समय मिल सकता हूँ और मैं इतना तो जानता ही हूँ जितना आपने बिना आवश्यकता के कह दिया है।''

रुष्ट होने की अपेक्षा प्रधान-मंत्री हँस पड़ा। इस समय मिस कुरेशी ने बात बदलकर कहा, ''मैंने लेफ्टिनेन्ट साहब को चाय का निमंत्रण दिया था, इसलिए मैं यह कह सकती हूँ कि ये तो मेरे निमंत्रण पर ही यहाँ आए हैं। क्यों साहब! आप क्या कहते हैं?''

गृहमंत्री कहने लगा, ''इन्होंने मुझे बताया था। पर मैं पूछता हूँ कि रियासत के गृहमन्त्री को तो आपने निमन्त्रण दिया नहीं और एक लेफ्टिनेन्ट को मुझपर तरजीह दे दी। ऐसा क्यों किया गया?''

कुरेशी ने टेढ़ी दृष्टि से प्रधान-मन्त्री की ओर देखते हुए और मुस्कराकर कहा, ''मुझे हकलाने वाले व्यक्ति से बातें करने में लुत्फ नहीं आता।''

''मैं खूबसूरत मर्द हूँ, और कोई वजह नहीं कि कोई खूबसूरत औरत मुझे छोड़कर ऐरा-गैरा लोगों से मिलती फिरे।''

''मर्द की खूबसूरती तो औरत ही जान सकती है।'' कुरेशी ने कह दिया।

''मैं इस मुश्किल का हल पेश करता हूँ। मैं जब मथुरासिंह के साथ चला था तो यह उम्मीद लेकर चला था कि हिन्दुस्तान की एक खूबसूरत औरत से मुलाकात का मौका मिलने वाला है। खूबसूरती में तो मैं भी कुछ कम नहीं।'' ब्रिगेडियर ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरेशी कहने लगी, "मैं आप सबका आपस में तआरुफ करा देना चाहती हूँ।" वास्तव में वह बातचीत में कटुता नहीं आने देना चाहती थी।

"ठीक है, तो मैं आप सबको चाय का निमन्त्रण देता हूँ।" ब्रिगेडियर ने कहा।

"मगर इस समय तो आर्डर मैंने दे दिया है?" गृहमन्त्री ने कह दिया।

"मुझे भी उसमे शामिल किया है या नहीं?" कुरेशी ने पूछा।

"सभी को शामिल किया है।"

सब हँसने लगे।

5

रियासत का गृहमन्त्री मथुरासिंह को बता रहा था, "लैफ्टीनेन्ट सिंह! मैं तुम्हारी बहुत इज्जत करता हूँ। तुमने मुझे ऐसी राह पर डाल दिया है कि जिससे मैं जहाँ एक ओर अपने लिए कुछ कर सकता हूँ, वहाँ दूसरी ओर रियासत के लिए भी कुछ कर सकूंगा।"

ये दोनों गृहमन्त्री के बंगले के एक बन्द कमरे में बैठे थे। उसने आगे कहा, "मुझे इस औरत पर पहले ही सन्देह था, परन्तु आपने जो बात आज बताई है, उससे वह शक यकीन में बदल गया है।"

"वह आज रात यहाँ से भागने का यत्न करेगी। वह चाहेगी कि कहीं से सीमा पार कर सियालकोट पहुँच जाय।"

"परन्तु अपने प्राईम मिनिस्टर साहब इसको कैसा महसूस करेंगे?"

"इस विषय में वे बिलकुल चुप हैं। यह औरत रोज ही मुझसे वस्ल की भीख माँगा करती थी। मैंने उसको बताया कि यदि इस बात के लिये वह प्रधान-मन्त्री से कहे तो न सिर्फ वह उसको खुश कर देगा, साथ में कुछ पुरस्कार भी पा जायेगी। इस पर वह हमेशा ही मुझसे रुष्ट हो जाया करती थी। उसका कहना यह होता था कि प्रधान-मन्त्री ऐसा व्यक्ति नहीं है। एक तो वह बिलकुल नेक और ईमानदार आदमी है, वह रियासत की एक पाई भी अपव्यय करना नहीं चाहता। दूसरे वह पचास साल का बूढ़ा व्यक्ति पच्चीस वर्ष की जवान का मुकाबिला नहीं कर सकता।

"आज मैंने उससे कहा कि एक भारतीय सैनिक-अधिकारी होने के नाते मैं किसी पाकिस्तानी जासूस से भला किस प्रकार सम्बन्ध बना सकता हूँ। मैंने कहा कि मेरे लिए तो देश-भक्ति मज़हब से भी ऊँची बात है।

"इस पर वह पूछने लगी कि मैं उसे जासूस समझता हूँ क्या?

"मिस कुरेशी का वास्तविक नाम सरवर है। जब उसने इस प्रकार कहा तो मैंने कहा, 'सरवर! मैं तुमको एक बात बताता हूँ। वह भी इसलिए कि तुम मुझसे मुहब्बत करती हो। मीरपुर पुंछ के रास्ते से आता हुआ एक फकीर पकड़ा गया है। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झोले में से तीन चिट्ठियाँ निकली हैं। एक सरवर के नाम है, दूसरी सरवर के द्वारा क्लैरा क्लीवमौंट के नाम और तीसरी शेख साहब के नाम।''

''यह सुनकर वह कहने लगी कि क्या वही एक सरवर इस जहान में है? मैंने कहा इसी शक की वजह से तो वह अभी तक बची हुई है। रियासत की खुफिया पुलिस उसके विषय में कुछ नहीं जानती। उनको किसी क्लैरा क्लीवमौंट और उसके सरवर के साथ सम्बन्ध का भी ज्ञान नहीं है। यह तो जब मेरे सामने सारी बाते हुईं तो मैं समझ गया कि कौन क्या है, किन्तु मैंने किसी को कुछ बताया नहीं। इसलिए तुमको बचाने के लिए तो मैंने गृहमन्त्री से कह दिया है कि इस नाम की औरत ढूंढ़ना तो भूसे के ढेर में से सूई ढूंढ़ने के समान होगा।

''मैंने आगे कहा कि मालूम होता है गृहमन्त्री ने चिट्ठियां पढ़ ली हैं, परन्तु उसने मुझे नहीं बताया कि उनमें क्या लिखा है।

''मेरी बात सुनकर वह चुप रही। मुझसे वह कह रही थी कि यदि मैं यहाँ की नौकरी छोड़कर देश से बाहर जाने के लिए तैयार हो जाऊँ तो वह मुझे मालामाल कर सकती है।

''मैंने पूछा, 'पाकिस्तान सरकार की मदद से?' उसने कहा, 'नहीं, गौर्ट एस्टेट का मैनेजर बनवाकर।'

''जानते हैं आप, यह गौर्ट कौन है?'' गृहमन्त्री ने पूछा।

''भारत की नौसेना का एडमिरल है।''

''उससे कुरेशी का क्या सम्बन्ध हो सकता है?''

''मैं समझता हूँ कि क्लैरा का उससे सम्बन्ध है और ये सब भारत पर जासूसी कर, इसको हर प्रकार से हानि पहुँचाने का यत्न कर रहे हैं। वास्तव में इंगलैंड और पाकिस्तान के हित इस समय एक समान हो गये हैं।''

''यह सब अनुमान भी तो हो सकता है?''

''यह ठीक है कि ये सब बातें मैंने उसको अपने मन से कहीं और इस बात का मेरे पास कोई भी प्रमाण नहीं है। मगर उसका आज रात ही यहाँ से भाग जाना सब अनुमानों को प्रमाण में परिणत कर देगा।

''मैं यह चाहता हूँ कि आप दो आदमियों को गुप्त रूप से उसके साथ कर दें और जिस समय वह सीमा पार करने लगे, उसको पकड़कर उसकी तलाशी ले ली जाये। सम्भव है उसमें पर्याप्त प्रमाण प्राप्त हो सके।''

गृहमन्त्री गम्भीर हो गया। उसने फ़ोन उठा, एक विशिष्ट नम्बर पर पूछा, ''रैना है?''

उत्तर मिला, ''बोल रहा हूँ।''

''अपने साथी सप्रु को लेकर फौरन यहाँ आओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने फिर सिंह से कहा, "देखो सिंह! यदि इसके पकड़े जाने के बाद भी इसके पास शक की कोई चीज न निकली तो बहुत हो-हल्ला हो जायेगा।"

"कुछ नहीं होगा। इस गुमनाम औरत की रक्षा के लिए कोई हल्ला नहीं करेगा। और कहीं कुछ दूर का भी प्रमाण मिल गया तो फिर उस औरत का पीछा किया जा सकेगा और फिर सरदार साहब की नजरों में आपकी स्थिति सुदृढ़ हो जायेगी।"

"अच्छी बात है, कल सुबह दस बजे मुझसे मिलियेगा।"

मथुरासिंह ने हाथ मिलाया और चला गया। इस झगड़े में वह अपने कमांडिंग आफ़िसर के कहने पर ही सम्मिलित हुआ था और इस औरत को तो वह क्लैरा से भी अधिक लज्जाविहीन समझता था। परन्तु कश्मीर के प्रधान-मंत्री से उसकी घनिष्ठता देख ब्रिगेडियर जनरल को सन्देह था कि वह किसी विदेशीय षड्यन्त्र के एक सूत्र के रूप में वहाँ पहुँची हुई है। अतः उसके मथुरासिंह के सम्मोहन में होने से वह लाभ उठा कर इस षड्यन्त्र को उजागर कर जासूसों का चक्रव्यूह भेदना चाहता था।

परिणामस्वरूप मथुरासिंह ने कुरेशी से परिचय बढ़ाने में संकोच नहीं किया। उससे एक-दो बार होटल में मिलने के बाद मिस कुरेशी मथुरासिंह को अपने कमरे में ले गई और वहाँ पर वह उस पर अपना सम्मोहन-जाल बिछाने का यत्न करने लगी। एक सीमा तक तो मथुरासिंह ने उसको बढ़ने दिया, परन्तु जब वह सीमोल्लंघन के लिए आमन्त्रित करती तो मथुरासिंह उसको जीवन-मीमाँसा पर उपदेश देने लगता। इस पर भी उसने बात को सर्वथा टूटने नहीं दिया।

द्रुत-गति से वे एक-दूसरे के मन के भावों को जानते जा रहे थे। मथुरासिंह का कहना था कि स्त्री-पुरुष का समागम बहुत ही पवित्र कृत्य है। वह बिना धर्म का सम्बन्ध बनाए, इसको सम्पन्न करने के लिए तैयार नहीं था। तब कुरेशी ने पूछा, "धर्म का सम्बन्ध क्या है?"

"विवाह।"

"तो क्या आपका लेडी गौर्ट से विवाह का सम्बन्ध है?"

"कुरेशी! तुम उससे मेरे सम्बन्ध के विषय में नहीं जानती। वह शादी के सम्बन्ध से भी अधिक पाक है।"

"वह क्या सम्बन्ध है?"

"उसको इस वाणी द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता।"

"परन्तु वह तो बताती थी कि उसके पेट में जो बच्चा है, वह आपका है?"

"यह तो वही जान सकती है। मुझे इस बारे में कोई ज्ञान नहीं है।"

इसी प्रकार के ही अवसरों में एक अवसर पर मथुरासिंह को उसके कमरे में कुरेशी के नाम एक डाक से आया हुआ पत्र दिखाई दिया। मिस कुरेशी ने पत्र पढ़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी मेज पर रख दिया था। इतने में मथुरासिंह आ गया तो वह चाय-पानी का प्रबन्ध करने लग गई। वह जब कमरे से बाहर थी तो मथुरासिंह ने अवसर पाकर लिफाफ़े में से पत्र निकालकर अपनी भीतरी जेब में रख लिया और खाली लिफाफ़ा वहीं पर छोड़ दिया।

उस दिन मथुरासिंह पहले दिन की अपेक्षा अधिक समय तक वहाँ रहा। उसने कुरेशी को अपनी पत्नी के प्रति कर्तव्य के विषय में विस्तार से बताया। कुरेशी उसको अपनी बेबसी और बेकसी की बात बताती रही। मथुरासिंह उस पर कश्मीर के प्रधान-मंत्री के इतना खर्च करने की बात पूछने लगा तो वह उसकी सफाई प्रस्तुत करने लगी। उसका कहना था कि वह उसको एक मजलूम मुसलमान खातून समझकर उस पर दया कर रहा है। मथुरासिंह ने इस पर प्रतिप्रश्न किया, "मगर यहाँ तो और भी मुसलमान औरतें हैं जो तुमसे भी अधिक ज्यादा कठिनाई में हैं?"

"उन्हें भी रियासत की ओर से मदद मिलती है।"

"मगर किसी एक को भी तो इतने आलीशान होटल में स्थान नहीं दिया गया है।"

"कुछ अपने-अपने भाग्य की बात भी तो है।"

उस दिन अपने निवास-स्थान पर जाकर मथुरासिंह ने कुरेशी के कमरे में से लाया हुआ पत्र पढ़ा। उसमें लिखा था—लिफाफ़े पर नाम था सरवर कुरेशी। बहुत-सी बातें उस पत्र में लिखी थीं। प्यार की और डाँट-डपट की भी। बीच में एकाएक यह वाक्य मिला। 'शेख साहब से कहो कि हमारी योजना के मुताबिक अमल करें तो हम जीवन-भर के लिए उनको वहाँ का गवर्नर बना देंगे।' पत्र के नीचे किसी के हस्ताक्षर नहीं थे। जब वह पत्र मथुरासिंह ने ब्रिगेडियर को दिया तो उसने कहा, "इससे तो कुछ भी ज्ञात नहीं होता।"

"ज्ञात तो होता है, किन्तु सिद्ध कुछ नहीं किया जा सकता।"

"इसका लिफ़ाफ़ा भी यदि आप साथ ले आते तो शायद कुछ बात बन जाती।"

"यदि लिफ़ाफ़ा ले आता तो उसे सन्देह हो जाता और वह कुछ भी कर मुझे बदनाम कर सकती थी। मैं स्वयं को जासूस प्रकट करना नहीं चाहता था और उस समय यह भी तो विदित नहीं था कि इस प्रकार की कोई बात अवश्य होगी ही?"

"अब कल क्या करोगे?"

"मैं चिट्ठी के विषय में इंकार कर दूंगा।"

"मैं यह पत्र सरदारजी को भेज रहा हूँ।"

"हाँ, साथ ही वह सब परिस्थिति भी लिख दीजिये जिसमें यह मिला है।"

वे अभी बातचीत कर ही रहे थे कि टेलीफोन-क्लर्क ने आकर कहा, "सर! मिस कुरेशी का फोन आया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों गम्भीर मुद्रा में उठे और फोन सुनने के लिए जा पहुँचे। मथुरासिंह ने रिसीवर उठाकर अपना नाम बताते हुए कहा, "मिस कुरेशी, मैं बोल रहा हूँ सिंह।

"......"

"कौन सा पत्र गुम हो गया है? कैसा पत्र?"

"......"

"नहीं, नहीं मिस कुरेशी! मुझे भला तुम्हारा पत्र लेकर क्या करना था?"

"......"

"कब आया था पत्र?"

"......"

"सायँ साढ़े तीन बजे? क्या लिखा था उसमें?"

"......"

"कुछ नहीं था, तो फिर परेशानी की क्या बात है।"

"......"

"क्या तुम्हारे किसी प्रेमी का था?"

"......"

"ओह!"

"......"

"मैं तो समझता था कि दुनिया में सिर्फ मैं ही तुम्हारा प्रेमी हूँ।"

इस प्रकार बातें होती रहीं। कुरेशी कुछ कहती थी और मथुरासिंह इधर से हूँ-हूँ करता रहा। जब वह अपने प्रेमी के विषय में अपना स्पष्टीकरण दे चुकी तो मथुरासिंह ने कहा, "कुरेशी! मैं तुम्हारी कसम खाकर कहता हूँ कि मुझे उस पत्र का कोई ज्ञान नहीं है। मैंने वह देखा तक नहीं। तुमने पढ़कर कहीं रखा हो और हवा से उड़कर इधर-उधर हो गया हो। मेरे विचार में एक बार फिर भली-प्रकार वहीं देखो। इस समय मैं तो आ नहीं सकता। मैं ब्रिगेडियर साहब के काम पर हूँ, नहीं तो तुरन्त आ जाता।"

"......"

"नहीं, मैं छुट्टी नहीं ले सकता। कुरेशी! मैं झूठ नहीं बोल सकता। और यह सत्य भी प्रकट नहीं कर सकता कि तुम-जैसी युवा और सुन्दर स्त्री के कमरे में मैं रात्रि के समय जा रहा हूँ।"

टेलीफोन बन्द हो गया। ब्रिगेडियर ने मथुरासिंह की पीठ ठोंकी और कहा, "इस चिट्ठी के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने का यत्न करो। प्रयत्न करके यदि वह लिफ़ाफ़ा ला सको तो उत्तम होगा।"

"प्रयास कर तो सकता हूँ। पर इसके बाद उससे सम्बन्ध-विच्छेद हो जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं जानता हूँ कि वह मुझसे कोई काम लेना चाहती है, मगर अभी तक वह उस काम के विषय में बात नहीं कर सकी। अभी वह यह नहीं समझती कि मैं उसके मोह में पूर्णतया फँस गया हूँ, जिससे कि अंधा होकर मैं उसका कार्य करने के लिये उद्यत हो जाऊंगा।''

''कल तनिक होशियारी से रहोगे तो शेष रहस्य भी खुलने की सम्भावना है। यह किसी ऐसे आदमी की ओर से लिखा हुआ पत्र है, जिसमें शेख को गवर्नर बनाने की शक्ति है। उनकी कोई ऐसी योजना है, जिस पर शेख साहब को अमल करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।''

वह पत्र भारत के गृहमंत्री को भेज दिया गया।

दूसरे दिन जब मथुरासिंह मिस कुरेशी से मिलने के लिये गया तो वह उसको अपने कमरे में ले गई। आज वहाँ कश्मीर के प्रधान-मंत्री उपस्थित थे। मथुरासिंह के कमरे में प्रवेश करते ही उसने कहा, ''सुना है, तुम चोरी भी करते हो। यह तो भारतीय सेना के बहुत अपमान का कारण हो सकता है?''

''तो आपको विश्वास हो गया है कि वह पत्र मैंने चुराया है?''

कुरेशी ने कहा, ''पत्र पढ़ते-पढ़ते ही तो आप आ गये थे। मैं पत्र रखकर भीतर कपड़े बदलने के लिए गई थी, और भीतर आते ही हम नीचे चाय पीने के लिये चले गये। फिर ऊपर आये और दो घंटे तक आप यहीं रहे। रात को आठ बजे जब आप गये तो मुझे पत्र की याद आई। मैंने देखा कि लिफ़ाफ़ा तो पड़ा है, पर उसमें से पत्र ग़ायब है।''

''आपने पढ़ते-पढ़ते कहीं फेंक दिया होगा?''

इस पर शेख पुनः बोल उठा, ''मैं कमाण्डर-इन-चीफ़ से तुम्हारी शिकायत करूंगा।''

''क्या शिकायत करेंगे?''

''यही कि तुम चोर हो तुमने कुरेशी के प्रेमी का पत्र चुराया है।''

''वह महबूब अभी जीवित है, अथवा नहीं?''

''जीवित है।''

''तो मैं उससे दरख्वास्त करूंगा कि वह इसको वैसा ही एक पत्र और लिख दे।''

इस पर दोनों हँसने लगे। कुरेशी ने कहा, ''यह तो मैं लिखने ही वाली हूँ।''

''हाँ, उसको लिखना कि वह अपने भावों को उसी प्रकार लिख दे, जिस प्रकार कि उस गुम हुए पत्र में लिखे हुए थे।''

कुरेशी ने चिट्ठी की बात इस प्रकार खत्म की तो मथुरासिंह ने कहा, ''मैं आज एक डिस्पैच लेकर गृहमंत्री के पास गया था। ब्रिगेडियर साहब ने सैनिकों से वस्तुओं का अधिक मूल्य लिये जाने की शिकायत की है। कुछ घटनाएँ और उनका प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी प्रस्तुत किया है। जब मैं आने लगा तो वे मुझे एक पृथक् कमरे में ले गये और कहने लगे कि मैं मिस कुरेशी से सीमा से अधिक घनिष्ठ होता जा रहा हूँ। मैंने उन्हें बताया कि मिस कुरेशी मेरे चाचाजी की परिचित हैं, तो वे कहने लगे कि वे किसी भी औरत से दिल बहलाने के लिये मुझे मना नहीं करते, बशर्ते कि वह भी रजामंद हो, मगर मिस कुरेशी की बात दूसरी है।

"मैंने पूछा कि उसमें तथा दूसरी औरतों में क्या अन्तर है, तो वे कहने लगे कि कुरेशी किसी ग़ैर-मुल्क की तनख्वाहदार जासूस है। मीरपुर से पुंछ को आते हुए एक फ़कीर पकड़ा गया है, जिसके झोले में तीन पत्र मिले हैं। और वे सन्देहात्मक हैं।

मैंने जब पूछा कि क्या सच में वह जासूस है? तो वे कहने लगे कि पत्रों का आशय स्पष्ट तो नहीं है। कई बातें ऐसी हैं, जो वही समझा सकती है। एक पत्र सरवर कुरेशी के नाम है, एक उसकी मार्फ़त क्लैरा क्लीवमौंट के नाम है और तीसरा प्राइम-मिनिस्टर साहब के नाम।

"मिस कुरैशी! इससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि सैनिक होने के नाते मैं किसी विदेशी जासूस से सम्बन्ध नहीं रख सकता। मैं देश-भक्ति को मुहब्बत से ऊँची बात मानता हूँ।"

"मिस्टर सिंह! क्या आप मुझे जासूस समझते हैं? जहान में क्या मैं ही एक सरवर कुरेशी रह गई हूँ।" कुरेशी ने चौंककर कहा।

प्रधान मंत्री कहने लगा, "मैं समझता हूँ कि तुम्हारा यहाँ वाला खत भी उसी हकलाने वाले ने चोरी करवाया है।"

"तो फिर क्या होगा? मैं तो बिलकुल बे-कसूर हूँ।"

"मैं समझता हूँ कि तुम अभी दिल्ली वापस चली जाओ, वहाँ तुम्हारी हिफाजत अच्छी तरह हो जायेगी।

आज उसके मुख पर मथुरासिंह ने घबराहट देखी तो बोला, "कुरेशी! मैं भी दिल्ली जाने वाला हूँ। अगर तुम वहाँ चली आओ तो मैं तुमसे वहाँ मिलूंगा।"

"मैं कुछ समझ नहीं पा रही कि मुझे क्या करना चाहिये।"

शेख साहब बोले, "राजनीतिक हालात ऐसे हैं कि मैं अभी उतना मजबूत नहीं, जितने कि भारत के प्रधान-मंत्री हैं। इससे वहाँ तुम्हारी रक्षा हो सकेगी। यहाँ तो यह होम-मिनिस्टर का बच्चा, मेरा भी लिहाज नहीं करता।"

मथुरासिंह कहने लगा, "आजकल यहाँ ठंड है। सरवर को दिल्ली में निहायत आराम भी रहेगा।"

शेख चुप रहा। उस दिन मथुरासिंह बहाना बनाकर वहाँ से जल्दी खिसक आया और इस औरत को पकड़वाने के विचार से राज्य के गृहमंत्री के पास चला गया।

गृहमंत्री डरता था कि यदि कुरेशी के पास से कोई संदेहात्मक वस्तु न निकली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो शेख उससे रुष्ट हो जायेगा। इससे मथुरासिंह द्वारा उसका नाम बीच में लाने से वह परेशानी अनुभव कर रहा था। ब्रिगेडियर-जनरल भारत सरकार से उसकी गुप्त बातचीत में सहायक हो रहा था। इस कारण उसके प्राइवेट सेक्रेटरी से वह अपनी नाराजगी और भय भी प्रकट नहीं कर सका।

6

मथुरासिंह ने जब उस दिन की अपनी कारगुजारी ब्रिगेडियर को सुनाई तो उसे इसमें मथुरासिंह को भूल प्रतीत हुई। उसने कहा, "तुम रियासत की पुलिस के बजाय सैनिक सहायता से उसको पकड़वा सकते थे?"

"मैं जानता हूँ। मगर मुझे सन्देह है कि वह राज्य के प्रधान-मंत्री की गाड़ी में जायेगी। इसलिए यदि सेना उस गाड़ी को रोककर तलाशी लेने लगेगी तो उससे दिल्ली समेत सारे भारत में धूम-धड़ाका मच जायेगा। मैं ऐसा नहीं चाहता था। सेना ने राजनीतिक बातों में हस्तक्षेप नहीं किया, आप सिद्ध नहीं कर पायेंगे।"

ब्रिगेडियर गम्भीर हो विचार करने लगा। राज्य के गृहमंत्री द्वारा वह मिस कुरेशी के विषय में और अधिक जानने की आशा करता था। परन्तु जब किसी प्रकार की बात सुनने में नहीं आई तो उसने कुरेशी को मन से निकाल दिया।

इस समय गिलगित को पाकिस्तान के हाथ से निकालने के लिए युद्ध हो रहा था। पहाड़ी क्षेत्रों में बहुत बड़ा युद्ध जिसमें कि सहस्रों सैनिक एकदम भाग ले सकें हो नहीं सकता था। एक समय में थोड़े से सैनिक ही भाग ले सकते थे। इस युद्ध में किसी प्रकार शत्रु को घेर लेना अथवा डरा-धमकाकर हथियार डलवा देना, बहुत बड़ी बात समझी जाती थी। स्थानीय जनता की सहायता इसमें आवश्यक थी। किन्तु सेना का तो यह अनुभव था कि ऐसे अवसरों पर स्थानीय जनता शत्रु का साथ देती थी। वह भारत की सेना का हाथ नहीं बंटाती थी। परिणाम यह हो रहा था कि पीछे से घेर लेने की चाल चलना अति कठिन था।

स्वाभाविक रूप से सैनिक-प्रगति बहुत धीमी हो रही थी। सेना का पूर्ण ध्यान गिलगित की ओर था। सोनमर्ग पर छावनी बन चुकी थी। हरिमुख से कृष्णगंगा की ओर बढ़ा जा रहा था। दिल्ली के राजनीतिक नेताओं का यह मत था कि युद्ध को कश्मीर से बाहर नहीं जाने देना चाहिये और जहाँ तक हो सके कश्मीर घाटी को शत्रु से मुक्त करा लेना चाहिये। इससे अधिक के लिये दिल्ली के नेता उत्सुक नहीं थे।

मथुरासिंह को सोनमर्ग भेज दिया गया, जिससे कि वह वहाँ से भली प्रकार युद्ध का संचालन कर सके। एक-एक पहाड़ी लेने में कई-कई सप्ताह लग रहे थे। सबसे बड़ी बाधा तो वहाँ की जनता की पाकिस्तान के पक्ष में रुचि, उपस्थित कर रही थी। इस रुचि बनाने में पाकिस्तान से आये हुए मुल्ला-मौलानाओं का गाँव-गाँव में जाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के विरुद्ध प्रचार करना सहायक सिद्ध हो रहा था।

कश्मीर-प्रवेश के लिये भारत सरकार की ओर से तो पार-पत्र पद्धति चालू कर दी गई थी। किन्तु पाकिस्तान सरकार ने ऐसा कोई नियम नहीं बनाया। इस कारण पाकिस्तान की ओर से लोग सुगमता से छोटे-मोटे रास्तों से पैदल आते-जाते थे। ये लोग यहाँ आकर स्थानीय जनता को भड़काकर भारत के विरुद्ध कर रहे थे। साथ ही भारत के अधीन कश्मीर-क्षेत्र से अन्नादि भी पाकिस्तानी क्षेत्र में ले जाते थे। इस प्रकार ये पाकिस्तानी सेना और जनता को सहायता पहुँचा रहे थे। भारतीय सेना की गतिविधि भी ये लोग पाकिस्तानी सेना को सूचित करते रहते थे।

मथुरासिंह ने इन सब बातों की रोक-थाम का प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया। वह मोर्चे से तीन-चार मील की परिधि के भीतर के गाँव वालों को निकालकर घाटी में रहने के लिए भेज रहा था। बहुत से लोगों को जम्मू की ओर भेजा जा रहा था। इसका परिणाम अच्छा होने लगा। युद्ध में प्रगति होने लगी।

मुजफ्फ़राबाद के मोर्चे पर स्थानीय जनता के धोखा देने के कारण कैप्टन उस्मान के मारे जाने से देश-भर में आतंक फैल गया। इसका प्रभाव उस मोर्चे की सेना पर भी हुआ, जहाँ यह घटना घटित हुई थी। परन्तु गिलगित के मोर्चे पर मथुरासिंह के स्थानीय जनता को युद्ध-क्षेत्र से निकाल देने के कारण निरन्तर प्रगति हो रही थी।

शीत-ऋतु होने के कारण भी युद्ध में प्रगति कठिनाई से होती थी। मथुरासिंह ने एक योजना बनाई, जिससे मौसम साफ़ होते ही पूर्ण गिलगित के क्षेत्र पर अधिकार किया जा सके। मोर्चे के स्थानों पर सेना तथा युद्ध-सामग्री एकत्रित की जा रही थी। मथुरासिंह की योजनानुसार पाँच स्थानों से एक ही समय सेना का अभियान पाँच मार्च को आरम्भ होने वाला था और वह समझता था कि कम-से-कम सैनिक-क्षेत्रों में उसकी कारगुजारी की प्रशंसा होगी। आक्रमण के आठ-दस दिन के भीतर ही वह ऐसा कुछ करने वाला था, जो सेना ने पिछले तीन मास में नहीं किया था।

परन्तु पहली जनवरी को उसको आज्ञा मिली, "मेजर कुलवन्तसिंह को चार्ज देकर हैडक्वार्टर में रिपोर्ट करो।"

मेजर कुलवन्तसिंह के सम्मुख कश्मीर का मानचित्र फैलाकर उसने अपनी योजना समझा दी और उसको चार्ज देकर वह श्रीनगर पहुँच गया।

ब्रिगेडियर-जनरल उसके श्रीनगर पहुँचने से पहले ही दिल्ली के लिए चल चुका था। इस समय तक माधोपुर का पुल तैयार हो गया था। सेना के भारी-से-भारी ट्रक सीधे पठानकोट से श्रीनगर पहँचने लग गये थे। परन्तु पीर पंजाल का मार्ग इस समय बन्द था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह को भी भारत के कमाण्डर-इन-चीफ़ की आज्ञा दिखा दी गई। उस आज्ञा के अनुसार उसे सेना-कार्य से मुक्त कर दिया गया था और अपना वेतन इत्यादि लेने के लिए दिल्ली पहुँचने के लिए लिखा गया था।

मथुरासिंह ने उस अधिकारी से पूछा, "मुझे दिल्ली वापस पहुँचाया जायेगा अथवा नहीं?"

"इसके लिए हम उत्तरदायी तो नहीं है। हाँ, आपके लिए प्राइवेट तौर पर मैं पठानकोट तक एक जीप का प्रबन्ध कर सकता हूँ।"

"कब?"

अधिकारी ने अपना चार्ट देखकर कहा, "पाँच तारीख को प्रातः छः बजे एक जीप जा रही है। उसमें स्थान मिल जायेगा।"

आज दो तारीख थी। अभी दो दिन बीच में थे। मथुरासिंह श्रीनगर के एक साधारण-से होटल में ठहरकर धैर्य से पाँच तारीख की प्रतीक्षा करने लगा। होटल के पलंग पर लेटे-लेटे ही उसने अनुमान लगाया कि यह सब मिस कुरेशी और मिस क्लैरा के कारण हुआ है। इस विचार के उत्पन्न होते ही वह उठा और राज्य के गृहमंत्री से मिलने के लिए चल पड़ा। उसका विचार था कि वहाँ से अवश्य इस परिवर्तन का कारण विदित हो जायेगा।

गृहमंत्री के यहाँ पहुँचकर उसने अपना नाम भीतर भेजा तो उसको तुरन्त बुला लिया गया। यह भेट गृहमंत्रालय में ही हुई। गृहमंत्री ने उठकर हाथ मिलाया और उसको एक पृथक् कमरे में बैठाकर कहने लगा, "मिस्टर सिंह! जानते हो क्या हुआ है?"

"मुझे कुछ विदित नहीं हैं। आपसे आखिरी मुलाकात के बाद मुझे मोर्चे पर भेज दिया गया था। वहाँ से आज ही लौटा हूँ और आते ही मुझे सेना से छुट्टी की आज्ञा मिली है।"

"मैंने अपने दो विश्वस्त व्यक्ति मिस कुरेशी के पीछे कर दिए थे। वह हमारे प्रधान-मंत्री की निजी कार में यहाँ से रात के दस बजे चली और रात के दो बजे काज़ीपुर डाक बगले पर जाकर ठहरी। अगले दिन दस बजे पीर बनिहाल से गुजर कर वह एक बजे ऊधमपुर और वहाँ से चार बजे जम्मू पहुँची। पाँच बजे वहाँ से चली तो रात के आठ बजे कठुआ से एक मील इधर उसकी कार खराब हो गई। उसका पीछा करने वाली गाड़ी उसके पाँच मिनट बाद वहाँ पहुँची। उन्होंने बिगड़ी मोटर की सहायता के लिए गाड़ी खड़ी की तो देखा कि मोटर खाली पड़ी है। जम्मू से तो उसे गाड़ी में बैठते देखा गया था। रात के अंधेरे में गाड़ी बिगड़ी तो वह उतर कर एक ओर को चल दी।

पीछा करने वालों को सन्देह हुआ कि मोटर ड्राइवर आदि उसके लापता होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सहायक हुए हैं और गाड़ी भी बिगड़ी नहीं, प्रत्युत वैसे ही खड़ी कर दी गई है। उन्होंने साम्बा से कठुआ फोन करके वहाँ की पुलिस को पहले ही सर्तक कर दिया था। वास्तव में पीछा करने वालों की गाड़ी दो मील पीछे इसीलिए रह गई थी कि वे टेलीफोन करने लग गए थे।

पीछा करने वालों में एक तो रैना था और दूसरा सप्रू। उनमें से सप्रू वहीं ठहर गया और रैना गाड़ी लेकर आगे निकल गया। प्राइमिनिस्टर की गाड़ी के ड्राइवर ने पूछा, "रैना साहब किधर गए गए हैं?"

"आपकी गाड़ी के लिए पैट्रोल लेने के लिए।"

"हमारे पास पैट्रोल तो है।"

"तो तुमने यह क्यों कहा कि पैट्रोल खत्म हो गया है।"

ड्राइवर विचार करने लगा कि क्या सत्य ही उसने पैट्रोल खत्म होने की बात कही थी। उसने तो केवल यह कहा था कि गाड़ी बिगड़ गई है। सप्रू ने पूछा, "पैट्रोल नहीं चुका तो फिर यहाँ क्यों रुक गए?"

"गाड़ी का स्टीयरिंग जाम हो गया है?"

"ओह! और गाड़ी का मुसाफिर कहाँ जाम हो गया है?"

"आप क्या उस मुसाफिर का पीछा कर रहे थे? उसको तो हम जम्मू डाक बंगले में छोड़ आए हैं।"

"लेकिन साम्बा में तो उसने चाय पी थी।"

इस सूचना से ड्राइवर और एक अन्य कर्मचारी, जो उस मोटर में ही जा रहे थे। आश्चर्य-चकित सप्रू का मुख देखने लगे। आखिर ड्राइवर ने पूछा, "यह मुसाफिर कौन था?"

"यह तो तुमको पता होगा?"

"हमको तो हुक्म हुआ था कि होटल में से एक औरत को लेकर पठानकोट पहुँचाना है।"

"किस का हुकम हुआ था?"

"महाराज का।"

"यह गाड़ी महाराज की है क्या?"

"नहीं, गाड़ी तो प्रधान-मंत्री साहब की है।"

"क्यों, महाराज की अपनी अन्य सब गाड़ियाँ जाम हो गई थीं क्या?"

एकाएक ड्राइवर गाड़ी में सवार हो, उसको स्टॉर्ट करने लगा। सप्रू ने अपनी जेब से पिस्तौल निकाल, निशाना बांध गाड़ी के पिछले पहिये को बर्स्ट कर दिया। ड्राइवर नीचे उतरकर क्रोध में कहने लगा, "यह क्या किया है?"

"रैना के आने के बाद ही तुम यहाँ से जा सकते हो। सप्रू ने उसकी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिस्तौल तानते हुए कहा।

"क्यों?"

"क्योंकि मैं इस जंगल में अकेला रह जाऊंगा।"

दूसरा कर्मचारी हँस पड़ा। इतने में रैना पाँच बन्दूकधारी पुलिस-कर्मचारियों को लेकर वहाँ आ गया। ड्राइवर और कर्मचारी को तो रैना की गाड़ी में कठुआ भेज दिया गया। तीन कान्स्टेबल और सप्रू उस सरकारी गाड़ी में रह गए।

"साम्बा से टेलीफोन आते ही कठुआ से सीमा पार करने वाले आम रास्ते पर पुलिस बैठा दी गई थी। परिणाम यह हुआ कि मिस कुरेशी और दो पाकिस्तानी जासूस पकड़ लिये गए।

"मिस्टर सिंह! एक बात तो यह हुई कि मिस कुरेशी के अटैची कैस में से कुछ चिट्ठियाँ पकड़ी गई। जिससे यह सिद्ध हो गया कि वह पाकिस्तान की जासूस थी और वह हमारे शेख साहब को बरगलाने के यत्न कर रही थी। इस पर भी यह सिद्ध नहीं हो सका कि शेख साहब उसकी बात मानने के लिए तैयार हो गए थे। कुरेशी जम्मू जेल से भाग गई है, और अब उसका पता नहीं है। शेख साहब के खिलाफ़ तो कोई प्रमाण मिल नहीं सका, इससे वे बाल-बाल बच गए हैं। पंडित नेहरू उसकी वकालत करने में सफल हो गए हैं। इधर इस षड्यन्त्र के लिए भाग-दौड़ करने के कारण भारत सरकार की नजरों में मेरा मान बढ़ गया है।

"इस पूर्ण झगड़े के बहस-मुबाहसे में आप और आपके ब्रिगेडियर के नाम आते रहे हैं। ऐसा मालूम होता है कि सरदार साहब आपकी रक्षा न कर सके। मैंने सरदार साहब को आपको सूझ-बूझ की सारी बात बता दी है। वे आपके लिए जरूर कुछ-न-कुछ करेंगे।"

मथुरासिंह कहने लगा कि, "मुझे अफ़सोस तो इस बात का है कि उस औरत से सवाल-जवाब नहीं हो सके। मैं समझता हूँ, बहुत लोगों के राज़ प्रकट हो जाते।"

उसके जाने के विषय में पूछा गया तो मथुरासिंह ने कहा, "तीन दिन बाद मुझे सरकारी जीप ले जाएगी।"

"वैसे आप कब जाना चाहते हैं?"

"मैं तो अभी जाना पसन्द करता हूँ।"

"तो आप जा सकते हैं। पाँच मिनट में आपको एक गाड़ी मिल जायेगी।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद।"

"मैं कुछ ख्वाब देखने लगा हूँ। उनके पूरे होने में आपकी बातें और कयाफ़े मददगार सिद्ध हुए हैं। कभी किसी वक्त मेरे किये से कुछ हो सके तो मैं आपकी मदद के लिए तैयार रहूंगा।"

समय पर मोटर आई और मथुरासिंह विदा हो गया। होटल से अपना किट ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जम्मू के लिए चल दिया।

मथुरासिंह के चले जाने के दस मिनट बाद शेख साहब का व्यक्तिगत नौकर मथुरासिंह को ढूंढ़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा। पहले वह सेना के शिविर में गया था। वहाँ उसे विदित हुआ कि मथुरासिंह चार्ज देकर किसी होटल में ठहर गया है। फोन से पता किया गया कि किस होटल में ठहरा है। सौभाग्य से मथुरासिंह एक ऐसे होटल में ठहरा था, जिसमें टेलीफोन नहीं था। अतः सरकारी गाड़ी में ऐसे होटलों में पता किया जाने लगा। जब कर्मचारी वहाँ पहुँचा तो मथुरासिंह मन्त्रालय की ओर गया बताया गया। वहाँ जांच होने लगी तो पता चला, वह गृहमंत्री के पास है। इस सब देखभाल में दो घंटे से अधिक लग गये। इतने में मथुरासिंह श्रीनगर से निकल चुका था।

प्रधान-मन्त्री के नौकर ने जब गृहमंत्री से उसके विषय में पूछा तो उसने कहा, "वह यहाँ आया था और अब निशात बाग की ओर सैर करने के लिए गया है।"

जिस तेजी से उसकी खोज की जा रही थी, उससे गृहमंत्री को सन्देह हो गया था कि उसे पकड़ने का यत्न हो रहा है। उसने बैरियर पर फोन कर अपने दो आदमियों को मथुरासिंह वाली गाड़ी के साथ जाने के लिए कह दिया। साथ ही उन्हें यह भी कह दिया कि जब तक गाड़ी पठानकोट स्टेशन पर नहीं पहुँच जाती, उसे कहीं खड़ा न किया जाय।

7

मथुरासिंह राधा को दिल्ली छोड़ गया था और भगवती दिल्ली आकर उसको अपने गाँव ले आई थी। त्रिलोकचन्द ने कहा भी था कि दिल्ली में डॉक्टर-हकीम बहुत हैं। इस कारण राधा का वहाँ रहना ही ठीक है, परन्तु भगवती नहीं मानी। उसका कहना था कि वह गाँव में ही सुखी रह सकती है। इस पर भी यदि किसी प्रकार के कोई कष्ट के लक्षण दिखाई देंगे तो वे उसे दिल्ली अथवा अमृतसर ले जायेंगे। राधा की अवस्था दिल्ली की अपेक्षा गाँव में ठीक थी। मथुरासिंह को इस बात की सूचना समय-समय पर दी जाती रही थी। मथुरासिंह को श्रीनगर से चलते समय यह ध्यान में था कि उन्हीं दिनों राधा का प्रसव होने वाला है। इस कारण भी वह वहाँ से जाने के लिए जल्दी कर रहा था। उसने मोटर में बैठकर ड्राइवर से पूछा, "कब तक पठानकोट पहुँचा दोगे?"

"आज सायंकाल हम ऊधमपुम ठहरेंगे और कल ग्यारह बजे पठानकोट।"

इसका अर्थ यह था कि तीसरे दिन वह अपने गाँव पहुँच जायेगा। परन्तु श्रीनगर के चुंगी बैरियर पर उसकी मोटर पहुँची तो दो आदमी उसके पास आए और कहने लगे, "गृहमंत्री की आज्ञा हुई है कि हम आपके साथ चलें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों! किसलिए?"

"मार्ग में आपकी जान का भय है।"

मथुरासिंह को कुछ सन्देह-सा होने लगा तो ड्राइवर ने कहा, "हजूर! ये आदमी अपने ही हैं। इनको साथ ले चलने में किसी प्रकार की हानि नहीं। मुझे हुक्म हुआ कि गाड़ी बिना कहीं रोके मैं आज रात में ही आपको पठानकोट पहुँचा दूँ। ये लोग हमको रास्ता दिलवाते जायेंगे।"

मथुरासिंह इसका अर्थ तो नहीं समझ सका, इस पर भी उसने दोनों में से एक को अपने पास और दूसरे को ड्राइवर के पास बैठा लिया। इस प्रकार रात के बारह बजे वे पठानकोट स्टेशन पर जा पहुँचे।

पठानकोट से प्रातः सात बजे की गाड़ी से अमृतसर और रात की फ्रन्टीयर मेल से वह होशियारपुर तथा प्रातःकाल 9 बजे वह बरौड़ा जा पहुँचा। वहाँ से पैदल ही वह जमादारपुर के लिए चल दिया।

वह पहुँचा तो सूरतसिंह अपनी बैठक में गाँव के लोगों की बधाइयाँ स्वीकार कर रहा था। उसके घर में पोता हुआ था। मथुरासिंह के उस समय आने के समाचार से तो गाँव के सब लोग वहाँ एकत्रित हो गये।

भगवती को पता चला तो वह बाहर आकर मथुरासिंह को अपने साथ भीतर ले गई। राधा खाट पर लेटी हुई थी। उसने उसको आते देख, आखें मूंद लीं और मुस्कराती हुई लेटी रही।

"तो यह बात है।" मथुरासिंह ने कहा।

समीप के खटोले पर कम्बल के टुकड़े के नीचे लेटे हुए बच्चे की ओर संकेत करते हुए भगवती ने कहा, "तुम तो बेटा! इधर देखो। राधा को क्या देखते हो, उसे तो बचपन से देखते आ रहे हो।"

"हाँ, माँ! नये प्राणी का स्वागत करना चाहिए।" मथुरासिंह ने कपड़ा उठा बच्चे का मुख देखा।

माँ ने कहा, "बिलकुल तुम ही हो। मुझे स्मरण है कि पैदा होने के दिन तुम भी ऐसे ही थे।"

"माँ! तुम्हारी साध पूरी हुई। अब तुम दादी बन गई हो। परिवार की परम्परा चली है, भापा भी प्रसन्न होंगे।

"वे तो सुबह से ही बड़ी-बड़ी योजनाएँ बना रहे हैं। कह रहे थे कि तुमको तार दे दें कि तुरन्त चले आओ। तुम्हारे आने पर यहाँ एक बहुत बड़ा यज्ञ करेंगें आस-पास के सभी गाँव वालों को भोज देकर, ग्यारहवें दिन बालक का नामकरण संस्कार करेंगे।"

"देखो माँ! मैं तो बिना तार के ही आ पहुँचा हूँ। अब भापा से कहो कि वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी चाह पूरी कर लें। मैं अब लम्बी छुट्टी लेकर आया हूँ।"

मथुरासिंह एक मास तक घर पर रहा। राधा अब अपने बच्चे को नहलाना-धुलाना, उसे साफ़-सुथरा रखना और उसके खिलाने में अधिक व्यस्त रहने लगी थी। इस कारण मथुरासिंह की सेवा-टहल के लिए उसके पास अवकाश कम था। इस पर भी दिन के समय वह बच्चे को देखने तथा उसे अपनी गोद में खिलाने के लिए भीतर आ जाया करता था और इस प्रकार राधा से भी बातचीत का अवसर मिल जाता।

एक दिन उसने पूछा, "राधा! कष्ट तो बहुत हुआ होगा?"

"आपको कैसे पता चला कि कष्ट हुआ होगा?"

"तुम्हारे उतरे मुख से। तुम्हारे मुख पर अब वह लाली भी नहीं रही।"

"हाँ, दुर्बल तो हो गई हूँ, परन्तु कष्ट कुछ भी नहीं हुआ। इसके आने के दो मास पहले से ही दुर्बलता बढ़ने लगी थी। माताजी कहती रहती थीं, कुछ खाती-पीती रहो, इससे दुर्बलता कुछ कम रहेगी। परन्तु उस समय कुछ अधिक खाया-पीया नहीं जाता था। इस कारण अधिक दुर्बल हो गई हूँ।

"परन्तु ईश्वर की कृपा है कि आप तो पहले से स्वस्थ प्रतीत होते हैं।"

"हाँ, वहाँ खाने-पीने की सुविधा अच्छी थी और काम भी कुछ ऐसा कि खाया-पीया हजम हो जाता था। लोग तो कश्मीर में स्वास्थ्य-लाभ के लिए ही जाते हैं।"

"अब आप कब जा रहे हैं?"

"किसलिए पूछ रही हो?"

"मैं अब आपके साथ ही रहना चाहती हूँ।"

"क्यों, घर में माँ कुछ कष्ट देती हैं क्या?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। आपने कहा था न, आप मुझे देश-विदेश घुमायेंगे।"

"हाँ, मैं समझता हूँ कि अब हम चल सकेंगे। इंगलैंड में नौकरी का वेतन लगभग चालीस हजार रुपया है। भारत के वेतन में भी अब तक तीन हजार जमा हो गया होगा। खर्च तो पूरा हो जायेगा, इस पर भी जब तक यह कुछ बड़ा नहीं हो जाता, तब तक कैसे चल सकोगी?"

"क्यों, इसको साथ नहीं ले जायेंगे क्या?"

"ले जा तो सकते हैं। किन्तु इससे असुविधा ही होगी। भ्रमण का अर्थ यह तो नहीं कि घर से निकल, दूसरे घर में जाकर बैठ जाना। इसके लिए एक सहायिका को हम साथ ले जा नहीं सकते।"

राधा का मन यह बात सुनकर, बुझ-सा गया। मथुरासिंह बोला, "यह कुछ बड़ा हो जाय तब इसे माँ के पास छोड़कर चल देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तब तक कहीं किसी अन्य की सृष्टि हो गई तो?"

"यह बात अपने बस में नहीं है क्या?"

"मेरे बस में तो है, परन्तु..." वह मुस्कराकर उसकी ओर देखने लगी।

"परन्तु क्या तुम समझती हो कि मेरे बस की बात नहीं है?"

"आपके लिए तो बस और बेबस का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।" फिर कुछ विचारकर बोली, "आपके जाने के एक सप्ताह बाद फ्लोरा गौर्ट आपको ढूंढ़ती हुई आई थी।"

"तो वह तुम्हें कुछ बताकर गई है?"

"उसकी कथा सुन, मुझे उस पर दया आई थी। मैं समझती हूँ कि उसे अपने पति को तलाक देकर यहाँ हिन्दुस्तान में आ जाना चाहिए।"

"तुमने उससे कहा क्यों नहीं?"

"कहा तो था। किन्तु वह कहने लगी कि वह भला व्यक्ति दया का पात्र है। उसकी बदनामी के डर से वह ऐसा नहीं कर सकती।"

"मैंने उससे पूछा कि क्या वह संयम से रहता है। उसने बताया कि उसकी तो कई मिस्ट्रेसेज हैं। एक लन्दन में है, एक गौर्ट मैन्शन में और एक हिन्दुस्तान में भी है।

"यह कथा सुनकर तो मैं फ्लोरा को ही अधिक दया की पात्र मानती हूँ।"

"जब तुम सब जान गई हो तो बताओ, अब भी मेरे साथ घूमने के लिए चलने को तैयार हो?"

"तो क्या आप मुझको बिलकुल छोड़ रहे हैं?"

"पहले और अभी तक तो छोड़ा नहीं। मैं तो तुमसे पूछ रहा हूँ कि तुम मुझसे घृणा करने लगी होगी?"

"इस पर राधा ने फ्लोरा की कहानी बताते हुए कहा, 'जब आप विलायत में थे तो वह आपसे विवाह करने की इच्छा करती थी। आपने यह शर्त लगाई थी कि मेरी स्वीकृति के बिना आप दूसरा विवाह नहीं कर सकते और आपने किया भी नहीं।

"उसने तो आपकी मृत्यु का समाचार सुनने पर और अपने भाई की मृत्यु के कारण माता-पिता के दुःखी होने और उनके आग्रह पर विवाह किया था। वह बताती थी कि अविवाहितावस्था में भी वह आपके साथ घूमती रही थी और उसका पति इस बात को जानता था। उसे उसके कुमारी होने पर सन्देह था। इस पर भी उसने विवाह किया। उसने बताया कि आपके साथ उसका सम्बन्ध नहीं बना था। परन्तु उसका पति नहीं मानता था। इस कारण दोनों में तनातनी तो विवाह के कुछ दिनों बाद ही आरम्भ हो गई थी और जब आप जीवित लौट आए और आपने फ्लोरा के विवाह के उपलक्ष्य में उसे तथा उसके पति को दावत दी तो वह एकदम उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूष्ट हो गया। उससे पहले तो उनमें कभी सम्पर्क बनता भी था, परन्तु उस दिन के झगड़े के बाद तो वे एक रात भी एक साथ नहीं रह सके।

"विलियम चाहता था कि वह आपका निमन्त्रण अस्वीकार कर दे। फ्लोरा इसमें कोई कारण नहीं समझती थी। इसलिए वह अपनी माँ को साथ लेकर गई। यही उन दोनों के जीवन को विषमय बना गया।

"तब विलियम भिन्न-भिन्न स्त्रियों से मनोरंजन करने लगा और आप उसको हिन्दुस्तान में मिले तो उसने अपने पति को सब-कुछ बता दिया। लार्ड गौर्ट ने उसको प्रसव को लिए अपने महल में भेज दिया है। जाने से पूर्व वह मुझसे मिली थी और वह सब-कुछ बता गई है।

"मैंने उससे कहा था कि वह निर्धन पति की द्वितीय पत्नी बनकर रहना चाहे तो यहाँ आ सकती है, मैं आपको राजी कर लूंगी।"

"क्या कहा उसने इस बात पर?"

"वह कहती थी, उसका अपने पति से समझौता हो चुका है, यदि वह और सन्तान उत्पन्न नहीं करेगी तो वह लेडी गौर्ट बनकर रह सकती है और उसने इसी प्रकार रहने का निश्चय किया है।"

"तो फिर तुम मुझसे, संयम रखने की आवश्यकता नहीं, ऐसा क्यों कहती हो?"

"मैंने सुना है कि कुछ ऐसी वस्तुएं होती हैं, जिनके प्रयोग करने से सन्तान उत्पन्न होने से रोकी जा सकती है।"

"भ्रमण के दिनों में तुम भी तो उन वस्तुओं का प्रयोग कर सकती हो।"

"पर मुझे तो अभी और सन्तान चाहिये।" राधा ने मुस्कराकर कहा।"

"कितने बच्चे और चाहिएँ।"

"कम-से-कम एक लड़की। यह आपकी माताजी की इच्छा है।"

"और तुम्हारी क्या इच्छा है।"

"एक लड़का और।"

दोनों ही इस पर हंस पड़े।

मथुरासिंह के लड़के का नाम रामसिंह रखा गया। भगवती का मानना था कि वह राम की कृपा का सूचक है।

मथुरासिंह ने अपने घर वालों को बता दिया कि वह सेना से मुक्त हो गया है और अब दिल्ली में उसे अपना वेतन लेने के लिए ही जाना है।

सूरतसिंह ने एक दिन कहा, "यह स्वराज्य-सरकार तो अंग्रेजी सरकार से भी घटिया निकली। कर्नल सैडंर्सन तो मुझ पर कोर्ट मार्शल करने वाला था, वह मुझे क्रान्तिकारी समझ रहा था, परन्तु मेरी युक्ति सुन, उसने मुझे सेना से निकालने का विचार छोड़ दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु अपनी स्वराज्य-सरकार में तो अपना कर्तव्य पालन करते हुए भी तुम सहन नहीं किये गए। तुमने तो देश के शत्रु का रहस्योद्घाटन किया था, किन्तु उलटे तुम को ही देश का शत्रु समझ लिया गया।"

"भापा! देश का शत्रु तो नहीं, हाँ राजनीतिक नेताओं की राजनीति में गलत समझा जाने लगा हूँ। मैंने उनकी राजनीति में हस्तक्षेप नहीं किया था, यह तो उनकी राजनीति ने हमारे सैनिक-कार्य में हस्तक्षेप किया है। वे दोनों कार्यों की सीमा-रेखा पहचान नहीं सके।

"सेना तथा सैनिक-अभियान की रक्षा के लिए, सैनिक क्षेत्रों में पहुँचने वाले जासूसों को भगा देने का हमें अधिकार होता है। भारतीय राजनीतिज्ञों की राजनीति में वे जासूस सहायक हो रहे प्रतीत होते हैं। अतः उन्होंने सैनिक-कार्यों में बाधा डाल, अपनी कुटिल नीतियों को चालू रखना चाहा है।"

सूरतसिंह तो अपने पुत्र के बराबर पढ़ा-लिखा नहीं था और राजनीति और सैनिक कार्यों की सीमा समझ नहीं सका था। मथुरासिंह तो द्वितीय महायुद्ध के दिनों में इंगलैंड के मन्त्रि-मण्डल की इच्छा और 'चीफ्स ऑफ दि आर्मी स्टाफ' में मतभेद होता देख चुका था और दोनों किस प्रकार अपने-अपने क्षेत्र में सीमित रहे थे, यह भी वह जानता था। किन्तु भारत में उसने दोनों क्षेत्रों में कोई सीमा नहीं देखी। भारत के प्रधान-मन्त्री युद्ध में सैनिक-प्रयत्नों में हस्तक्षेप करते थे, मानो सब सैनिक-अधिकारी उसकी राजनीतिक शतरंज के मोहरे हों।

दिल्ली जाकर तो उसके मस्तिष्क में यह बात और भी स्पष्ट हो गई।

8

दिल्ली में इस बार भी मथुरासिंह वकील त्रिलोकचन्द की कोठी पर ही ठहरा। दिल्ली में बहुत परिवर्तन हो चुके थे। कमाण्डर-इन-चीफ़ आकिनलैक जा चुका था। लार्ड गौर्ट अब भारतीय नौसेना का एडमिरल नहीं रहा था। लार्ड माउण्ट बेटन भी गवर्नरी छोड़ने की बात कर रहे थे।

शासन में पण्डित नेहरू के हाथ में एक बहुत बड़ा हथियार आ गया था, जिसका प्रहार वह अपने विरोधियों पर कर रहा था। जिस किसी की भी उसे निन्दा करनी होती, उसे वह अपने कुछ साथियों द्वारा गांधीजी की हत्या में सहयोगी घोषित कर देता था। हिन्दू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विरुद्ध तो ऐसे आरोप वह स्वयं लगाता था। सरदार पटेल के विरुद्ध वह स्वयं कुछ कहने का साहस नहीं करता था। इस पर भी सिखाए गए कुछ लोग थे, जो सरदार पर इस प्रकार का आरोप लगा रहे थे। वे सोशलिस्ट विचार के लोग थे। पण्डित नेहरू इनका खण्डन न कर, पूछने चुप कर जाता था। इससे एक बात तो यह सिद्ध हो गई कि पण्डित नेहरू के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरुद्ध होने का अभिप्राय है गांधी का हत्यारा घोषित होना। सरदार पटेल इसी आशंका से भयभीत रहते थे।

वास्तव में यह एक ओर तो सरदार पटेल और उसके साथियों की मानसिक दुर्बलता थी, जो नेहरू से मौलिक मतभेद रखते हुए भी उसके सहयोगी बने हुए थे। वे जनता के सामने स्वयं को गांधी का हत्यारा कहे जाने के लांछन का प्रतिकार करने में असमर्थ थे। दूसरी और गांधी जी अपने वध से पूर्व पक्षपात करते हुए, अपनी मुस्लिम परस्ती के कारण सदा मुस्लिम प्रेमी नेहरू का समर्थन करते थे, इससे जनता सरदार पटेल की अपेक्षा नेहरू का अधिक मान करती थी। जनता के राज्य में जनता को भ्रम में डाल, बहुत कुछ किया जा सकता था।

गांधी जी की हत्या के बाद पंडित नेहरू और भी अधिक शक्तिशाली बन गए। सरदार पटेल की कांग्रेस-क्षेत्रों में भी कम चलती थी।

कश्मीर का युद्ध भी मत-भेद का विषय बना हुआ था। दिल्ली में यह किंवदन्ति थी कि इस राज्य के विषय को प्रधान-मन्त्री अपनी विशेष रुचि के कारण, किसी को इसमें हस्तक्षेप करना तो दूर रहा, बात तक करने नहीं देते थे। कुछ लोग यह कहते सुने जाते थे कि राज्य के अधिकारी महाराजा हरिसिंह से पंडितजी का निजी द्वेष था। सन् 1946 में महाराजा ने पंडित नेहरू के परम मित्र शेख अब्दुल्ला को अपने राज्य के विरुद्ध आन्दोलन करते हुए बन्दी बनाया तो नेहरूजी राजा के विरुद्ध आन्दोलन करने कश्मीर के लिए चल पड़े और स्वयं पकड़े गए। बाद में महात्मा गांधी और वायसराय के कहने पर उनको जेल से मुक्त कर कश्मीर की सीमा से बाहर निकाल दिया गया था। इस कारण नेहरूजी राजा के घोर शत्रु बन गए। इस शत्रुता का बदला वे कश्मीर के राजा और राज्य से ले रहे थे। कुछ अन्य नेहरू ओर शेख की सूरतें मिला कर उनका रिश्ता बताते थे। कोई कुछ भी कहे सत्य यही है कि नेहरू ने सेना के हाथ बाँध कर उसे लम्बे संघर्ष में झोंक दिया गया था।

जब मथुरासिंह वकील त्रिलोकचन्द के समक्ष उपस्थित हुआ तो उसे इस प्रकार देख, वकील साहब की हंसी निकल आई। उन्होंने पूछा, "मथुरासिंह! बहुत-बहुत बधाई हो। अब तो तुम बाप बन गए हो।"

"जी, नामकरण के अवसर पर आपको निमन्त्रण भेजा था, परन्तु आपके दर्शन नहीं हुए। इस पर पिताजी ने सुख का सांस लिया था। वे आप-जैसे बड़े आदमी की सेवा-शुश्रूषा करने में स्वयं को असमर्थ पा रहे थे। उनका विचार था कि आपको वहाँ जाने और रहने में भारी कष्ट होगा।"

"और तुम्हारा क्या विचार था?"

"मैं समझता हूँ कि माताजी अभी भी नाराज हैं, कि राधा को यहाँ नहीं रहने दिया गया। इसमें आप उनके रोष का समर्थन कर रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माताजी की बात तो तुम उनसे पूछ लेना। हाँ, अपनी बात मैं बता सकता हूँ। मैं अब पुनः कांग्रेस में भरती हो गया हूँ। पहले भी एक समय मैं कांग्रेस में था, तब भी इसकी मुस्लिमपरस्त नीतियों के कारण तथा अनावश्यक अहिंसा और असहयोग पर बल देने के कारण इससे पृथक हो गया था। अब मुझको कहा गया है कि मैं अपने मत के लोग कांग्रेस में निर्माण करूँ और मुख्य रूप में देश की समस्याओं को उनके समक्ष लाने का यत्न करूँ।

"अभी तक तो कांग्रेसी लोग गांधी को देश से ऊंचा समझते थे और गांधी ने पाकिस्तान-निर्माण में भरसक सहयोग दिया था। पाकिस्तान बनने का ही यह परिणाम है कि स्वराज्य प्राप्त होते ही भारत यद्ध में पड़ गया है।

"यदि देश का विभाजन न होता तो यहाँ सिविल वार हो जाती। किन्तु वह हमारे घर की बात होती। अंग्रेज इसमें कहीं हमारे और कहीं मुसलमानों के सहायक होते। इस पर भी यह अन्तर्राष्ट्रीय विषय नहीं बनता। अब यह युद्ध गृह-युद्ध नहीं है। यह किसी पराये देश से युद्ध है। यह अन्तर्राष्ट्रीय विषय है और ज्यों-ज्यों पाकिस्तानी पराजित होते जा रहे हैं, त्यों-त्यों कुछ लोग इस झगड़े को संयुक्त राष्ट्रसंघ में ले जाने की बात करने लगे हैं। पहले तो गवर्नर-जनरल कश्मीर के भारत में विलय को पसन्द नहीं करते थे। जब विलय हो गया तो भारत को कश्मीर के विलय के विषय में यू. एन. ओ. से हस्तक्षेप के लिए, विवश कर रहे हैं। कश्मीर को पाकिस्तान के हवाले करने का यह एक दूसरा ढंग है।"

"भापा! इससे हमको हानी नहीं होगी क्या? वैधानिक रीति से और इतिहास तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भी कश्मीर भारत का अंग है।"

"परन्तु हमारे प्रधान-मन्त्री ऐसा नहीं समझते। वे समझते हैं कि भारत ने कश्मीर पर आक्रमण किया है। भारतीय सेनाएँ वहाँ शान्ति स्थापित करने के लिए गई थीं, अब शान्ति स्थापित हो चुकी है। अब जनमत-संग्रह कर लिया जाये और कश्मीर को पाकिस्तान के हवाले कर दिया जाए।"

"तो वे कर क्यों नहीं देते? क्यों अपने जवानों को गिलगित और मुजफ्फ़राबाद में ग्यारह-ग्यारह हजार फुट की ऊंचाई पर शीत पर ठिठुरने के लिये बैठा रखा है?"

"यदि मन्त्रि-मण्डल और कांग्रेस में पण्डितजी की इस बात का प्रबल विरोध न होता तो वे अब तक ऐसा कर चुके होते। उनके मस्तिष्क में कश्मीर एक स्वतन्त्र, किन्तु भारत का मित्र, राज्य के रूप में है।"

"परन्तु इस प्रकार तो कश्मीर पाकिस्तान में चला जायेगा।"

"वे आशा कर रहे हैं कि पाकिस्तान से मित्रता का व्यवहार बन जायेगा।"

"यह आशा तो बबूल के वृक्ष पर आम फलने के तुल्य है।"

"हाँ, इस पर भी पण्डितजी की ऐसी धारणा है। कम-से-कम कांग्रेसी कार्यकर्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन में उन्होंने ऐसी बात कही है। मैंने उस समय उन पर प्रश्नों की बौछार कर दी थी। उससे वे बहुत घबराये। मैंने मुसलमानी इतिहास-काल से एक के बाद दूसरा और फिर तीसरा-चौथा इस प्रकार अनेकों उदाहरण दिये, तो वे कहने लगे कि मुझे इतिहास का ज्ञान नहीं है। मैंने कह दिया कि मैं उनसे अधिक इतिहास पढ़ा हूँ। और आंखें खोलकर पढ़ा हूँ। इस पर स्वयंसेवकों ने मुझे निकालकर हॉल से बाहर कर दिया। ऐसा श्री टण्डनजी की अध्यक्षता में हुआ। अध्यक्ष पण्डित नेहरू को यह नहीं कह सके कि उनके इतिहास का ज्ञान अपूर्ण है।

''इस मीटिंग के कारण ही मैं तुम्हारे पिताजी के निमन्त्रण पर आ नहीं सका था।''

''भापा! मैं राजनीति की बात तो कह नहीं सकता। हाँ, इतना जानता हूँ कि अधिकांश मनुष्यों को युक्ति से नहीं, अपितु लाठी से हाँका जाता है। राज्य के लिए सार्वजनिक विषयों में दो लाठियाँ हैं, एक जनता और दूसरी सेना।

''आप पण्डितजी को युक्ति और प्रमाण से नहीं समझा सकेंगे। वे बुद्धि से कार्य नहीं किया करते। उनके तो क्या, गाँधी के सभी चेलों के समस्त कार्य संस्कारों के अधीन चलते हैं। अतः या तो आप जन-बल संचित कीजिए अथवा सैन्य-बल।''

''परन्तु सेना पर वह किसी का अधिकार होने नहीं देगा। यहाँ तक कि सुरक्षा-मन्त्री को भी बताये बिना वह अपनी आज्ञाएँ सेना के लिए भेज देता है।''

''तो भापा! मेरी समझ में तो आप कांग्रेस में सम्मिलित होकर समय और शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं।''

''तुम्हारा कहना ठीक है। मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव कर रहा हूँ। पर कुछ नेताओं के कहने पर मैं गया हूँ। वे यह भी अनुभव करते हैं कि मेरे वहाँ जाने से उनका पक्ष प्रबल होता है। इस पर भी वे मेरा समर्थन नहीं कर सकते।''

''क्यों?''

''यह गांधी के चेलों की मानसिक दुर्बलता है।''

मथुरासिंह ने जब स्नेहलता से निमन्त्रण की बात पूछी तो उसने कहा, ''मैं तो तुम्हारे घर आने के लए तैयार बैठी थी। परन्तु ये तुम्हारे भापा, उन दिनों कांग्रेस के अधिवेशन में इतने व्यस्त थे कि दिल्ली से बाहर जा ही न सके।''

''माँजी! राधा कुछ स्वस्थ हो जाये तो उसको ही यहाँ ले आऊंगा और वह पुत्र-समेत आपसे आशीर्वाद प्राप्त कर लेगी।''

''कब तक लाओगे?''

''एक मास तो अभी लग ही जायेगा।''

''ठीक है, मैं भी गाँव की यात्रा के कष्ट से बच जाऊंगी।''

मथुरासिंह अपने कार्यालय में अपना वेतन लेने के लिए गया। वेतन प्राप्त करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अनेकों कठिनाइयां उपस्थित हो गई। नये-नये कानून बन गये थे। उसका तो विचार था कि एक-दो घंटे में चैक लेकर आ जायेगा। अंग्रेजी-काल में सेना-विभाग में तो ऐसा ही होता था, अन्य स्थानों पर भले ही ऐसा न हो सके। परन्तु कुछ ही महीनों के स्वराज्य से, व्यवस्था में बहुत अन्तर उत्पन्न हो गया था।

मथुरासिंह ने देखा कि साधारण-से-साधारण कर्मचारी से लेकर बड़े-से-बड़ा अधिकारी भी ऐसा अनुभव कर रहा है, मानो अपनी जेब से वह धन दे रहा है। इसके अतिरिक्त अब कार्यालयों में चाय-पानी, दावतों-पार्टियों आदि का इतना प्रचलन हो गया था कि इन पार्टियों के कारण कई लोग कार्यालय से अनुपस्थित रहते थे। वे सदा किसी-न-किसी के साथ चाय पीने के लिए गये होते थे।

अपना वेतन लेने में मथुरासिंह को पन्द्रह दिन से अधिक लग गये। इस अवधि में वह गृहमन्त्री से भी मिलने के लिए गया। इस बार उसको उनसे मिलने में भी कठिनाई अनुभव हुई। सरदार को हृदय का रोग लग गया था। यद्यपि वे अभी कार्य कर रहे थे, इस पर भी उनसे मिलने वालों पर प्रतिबन्ध लगने लगे थे।

जिस दिन मथुरासिंह वहाँ पहुंचा तो तीन दिन बाद का समय भेंट के लिए निश्चित हो गया। उसको दिल्ली में किसी प्रकार का काम तो था नहीं, वेतन अभी मिल नहीं रहा था। इस कारण उसको सरदार पटेल से तीन दिन बाद मिलने में किसी प्रकार की असुविधा का भास नहीं हुआ।

इस बार गृह-मंत्री से उसकी भेंट अति ज्ञानवर्द्धक हुई। जब वह उनके पास गया तो गृह-मंत्री ने कहा, "कश्मीर का प्रधान-मंत्री समझता है कि आप उसके कई ऐसे रहस्य जानते हैं कि आपको किसी भी सरकारी अधिकारपूर्ण पदवी पर टिके रहने देना उसके लिए घातक होगा। मैं तो कल आपका नाम पढ़कर आश्चर्य कर रहा था कि कश्मीर से जीवित किस प्रकार आ गये।"

मथुरासिंह गृह-मंत्री के इस वास्तविक स्थिति से अवगत होने पर आश्यर्चचकित रह गया। उसके विस्मय करने की बात यह थी कि यदि गृह-मंत्री इतना कुछ जानते हैं, तो फिर उस व्यक्ति को उतने महत्वपूर्ण पद पर सहन किस प्रकार कर रहे हैं? कश्मीर विवादास्पद क्षेत्र था, वहाँ युद्ध चल रहा था। ऐसी स्थिति में इस प्रकार के भारत-विरोधी व्यक्ति को वहाँ प्रधानमंत्रि के पद पर बने रहने देना तो महान् अपराध था।

मथुरासिंह को चुप देख, गृह-मंत्री पूछने लगे, "आप कुछ परेशान प्रतीत होते हैं?"

"अपने लिए तो नहीं, हाँ मैं देश के विषय में सोच रहा हूँ। शेख साहब को कश्मीर के प्रधान-मंत्री पद पर बनाए रखना अज्ञानतावश की जाने वाली भूल समझी जाय अथवा विचार-समानता में परस्पर सहयोग देने की बात समझी जाय। मेरी-जैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी बुद्धि वाले व्यक्ति की समझ में यह बात समा नहीं रही है।

"मेरे एक संरक्षक हैं लाला त्रिलोकचन्द वकील। वे कभी-कभी महाभारत का एक श्लोक सुनाया करते हैं। उनका कहना है कि जो राजा पापाचार को होता देखता रहता है और उसको रोकने का यत्न नहीं करता, वह भी पाप का भागी होता है।"

"आप ऐसा तो नहीं कह सकते कि मैं इस देश में होने वाले अनाचार को रोकता नहीं। बात यह है कि मैं रोकने में सफल नहीं हो रहा।"

"परन्तु आप इस पूर्ण काण्ड के करने वाले को तो सहयोग दे रहे हैं?"

"हाँ, प्रत्यक्ष-रूप में। भीतर तो हम निरन्तर संघर्ष कर रहे हैं।"

"क्षमा करें। इस डैमोक्रेसी में छिप-छिपकर बात करने का कोई अर्थ नहीं होता? जिनको राज्य-परिवर्तन का अधिकार है, उनको तो विश्वास में लेना ही होगा।"

"हाँ, कोई सैद्धान्तिक मत-भेद हो जाय तब न?"

"देश के किसी भाग को शत्रु के हाथ में दे देना सिद्धान्त की बात है अथवा केवल व्यवहार की?"

"तो क्या कोई भाग दे दिया गया है?"

"मुख से तो नहीं दिया। हाँ, देने का प्रबन्ध हो रहा है। दिल्ली सरकार का व्यवहार और कश्मीर के प्रधान-मंत्री का व्यवहार यह प्रकट करता है कि कश्मीर को पाकिस्तान को देने का प्रबन्ध हो रहा है।"

"जब तक वहाँ मुसलमानों की संख्या अधिक है, तब तक यह भय बना रहेगा।"

"बहु-संख्या और अल्प-संख्या का विचार हम सामूहिक-रूप से करेंगे अथवा राज्य-राज्य, जिला-जिला और गांव-गांव में किया जायेगा। क्या हम कोई ऐसी बात नहीं कर सकते कि जहाँ एक समुदाय के लोग अपनी बहु-संख्या के कारण कष्ट देने लगें, उनको वहाँ से देश-भर में फैला दिया जाय और वहाँ के अल्प-संख्यक समुदाय को बहु-संख्यक बना दिया जाय?"

"यह तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि पूर्ण विलय का निश्चय न हो जाय।"

"तो ऐसा कर लेना चाहिए था। जिसने ऐसा नहीं किया, उसी को तो मैं अयोग्य कह रहा हूँ और उसके द्वारा देश के एक भाग को विदेश में मिला देने की बात कहता हूँ।"

"राजनीति में परिस्थितियाँ प्रबल प्रतीत होती हैं और राजनीतिक पुरुष तो परिस्थितियों के अधीन कार्य करते हैं।"

मथुरासिंह समझ गया कि ये लोग नेता हैं नहीं परिस्थितियों ने इन्हें नेता बना दिया है। वास्तव में नेता तो विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करने के लिए उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। उसने इस विषय पर अधिक वार्तालाप करना उचित न समझ, बात बदलते हुए कहा, "मैं सेना के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य करने के योग्य नहीं हूँ। अतः अब मैं घर पर बैठकर अपनी छोटी-सी जमींदारी का कार्य करूंगा। इस पर भी कभी कोई ऐसा काम हो, जिसके योग्य मुझे समझा जाय, तो आपके संकेत मात्र पर मैं उपस्थित हो सकता हूँ।"

गृह-मंत्री गम्भीर बना बैठा रहा। वह समझ गया कि कदाचित् इस नवयुवक के सम्मुख वे अपने व्यवहार का स्पष्टीकरण प्रस्तुत नहीं कर सके। परन्तु सरकार का एक आवश्यक अंग होने के कारण वे अधिक गहराई में भी जा नहीं सके, इस कारण चुप ही रहे।

जब मथुरासिंह ने उठकर हाथ जोड़ नमस्कार करते हुए विदा माँगी तो गृह-मंत्री ने पूछा, "किसी बात की आवश्यकता हो तो बताइये। धन की अथवा अपने काम में किसी प्रकार की सरकारी सहायता की।"

"इस समय तो सब ईश्वर की कृपा है। मेरी आवश्यकताएँ इतनी कम हैं कि मेरे सामान्य साधन भी उसके लिए पर्याप्त होते हैं।"

9

कलैरा क्लीवमौंट सुरक्षा-मंत्री की पी. ए. नहीं रही थी। इस पर भी वह अभी नई दिल्ली में गवर्नर-जनरल की कोठी में ही रहती थी। यों तो दिल्ली नगर एक विशाल सागर की तरह फैल गया था। सागर में चारों ओर से आकर मिलने वाली नदियां उसको परिपूर्ण कर, उसे किनारों के ऊपर से छलकाने लगी थीं। यह सागर युद्ध-पूर्व की अपनी सीमाओं का उल्लघंन कर अपने साथ लगे क्षेत्रों को प्लावित कर रहा था और इतने बड़े सागर में एक छोटी-सी मछली का पता लग सकना प्रायः असम्भव ही था। यह एक घटना-मात्र ही थी कि कलैरा पर मथुरासिंह की दृष्टि जा पड़ी। दोनों ही इस प्रकार की भेंट की आशा नहीं कर रहे थे। मथुरासिंह को तो उससे भेंट करने की कोई इच्छा भी नहीं थी।

मथुरासिंह को वेतन मिल चुका था और वह अब अपने गाँव जाने की तैयारी कर रहा था। वह नई दिल्ली के एक बुक-स्टाल पर कुछ पुस्तकें खरीदने के लिए पहुँचा तो उसने देखा कि क्लैरा फिक्शन के सैक्शन में खड़ी पुस्तकों का चयन कर रही है। उसने जब क्लैरा को देखा तो एक क्षण तक विचार करता रहा कि वह लौट जाये अथवा भीतर जाकर स्वयं के लिए पुस्तकों का चयन करे। उसने अनुभव किया कि भागने की आवश्यकता नहीं है। वह क्यों उससे डरे? इतना निश्चय कर वह भीतर जाकर 'इतिहास' की पुस्तकों के लिए उपयुक्त कॉर्नर पर पहुँच गया। उसने निश्चय किया था कि वह इतिहास का विशेषरूपेण अध्ययन करेगा। एम. ए. में भी उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास का ही विषय लिया था इस विषय में उसकी विशेष रुचि थी।

मथुरासिंह ने मन में निश्चय कर लिया था कि वह क्लैरा के साथ साधारण परिचय के अतिरिक्त अन्य कुछ प्रकट नहीं करेगा। इस समय उसने दुकान में उसकी विद्यमानता को भुलाकर अपना कार्य करना आरम्भ कर दिया। उसे भारत में मुगल-राज्य पर कुछ पुस्तकें खरीदनी थीं।

अभी एक पुस्तक निकालकर उसने हाथ में ली ही थी कि क्लैरा उसके पास आकर कहने लगी, "मिस्टर सिंह! क्या कर रहे हैं यहाँ?"

विवश, मथुरासिंह को उसकी ओर देख कहना पड़ा, "और आप क्या कर रही हैं?"

"इस दुकान में अथवा दिल्ली में?"

"दिल्ली के विषय में तो मैं जानता हूँ, किन्तु उसमें मेरी अब रुचि नहीं रही। मैं तो दुकान के विषय में पूछ रहा था।"

"आजकल मुझे करने के लिए कुछ काम है नहीं, इसलिए पुस्तकें खरीदने चल पड़ी थी। दिल्ली में तो कोई अच्छा 'बुक-स्टाल' भी नहीं है। कलकत्ता, बम्बई में तो अनेक हैं।"

"हाँ, अभी तक यह क्लर्कों का नगर रहा है। अंग्रेजी सरकार ने इसे सांस्कृतिक केन्द्र नहीं बनने दिया। परन्तु अब चित्र बदल रहा है। अब तो एक दो और बुक-स्टाल भी चालू हो गए हैं।"

"वहाँ तो इससे भी कम पुस्तकें हैं।"

"लेकिन कुछ ही दिनों में वे इस स्टाल से आगे निकल जायेंगे।"

"तब तक तो मैं लन्दन पहुँच जाऊंगी।"

"कब जा रही हो?"

"आप पुस्तकें देख लीजिए, फिर कहीं अन्यत्र बैठकर बातें करेंगे।"

मथुरासिंह ने हाथ में पकड़ी पुस्तक का निरीक्षण किया और उसे उपयुक्त समझ 'काउण्टर' पर जा, मूल्य चुकाया और स्टाल से बाहर आ गया। बाहर निकलकर उसने कहा, "चलो, सामने पार्क में बैठकर बातें करें।"

"क्यों, किसी रैस्टोरेंट में क्यों नहीं?"

"इसलिए कि मैं अब सरकारी आफिसर नहीं हूँ, साधारण सिपाही भी मैं अब नहीं रहा। इससे तुम-जैसी सम्भ्रान्त परिवार की महिला को चाय पर आमन्त्रित नहीं कर सकता।"

"मुझे सब विदित है। किन्तु चाय का निमन्त्रण तो मैं दे रही हूँ।"

"परन्तु मिस क्लीवमौंट! तुम्हारी नौकरी भी तो छूट चुकी है। मैंने सुना है कि तुम्हारी अब सुरक्षा-मंत्री से बनती नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"बनती तो पहले भी नहीं थी। हाँ, नौकरी नौकरी ही है। परन्तु मैं कुछ अपनी भी तो सम्पत्ति रखती हूँ। मेरी नानी का देहान्त हो गया है और उत्तराधिकार में मुझे सात हजार पौंड वार्षिक आय की सम्पत्ति मिली है।"

"इसके लिए मेरी बधाई स्वीकार हो।"

"चलिए, किसी रैस्टोराँ में चलकर बधाई लूंगी।"

पार्क को पार कर, क्लैरा उसको बोल्गा रैस्टोराँ में ले गई। विभाजन के बाद किसी पंजाबी ने लेकर उसका नवीनीकरण कर नया नाम भी रख दिया था। "अच्छा स्थान बनाया है किसी ने।"

"हाँ, किसी मूर्ख ने।"

वे दोनों एक मेज पर जा बैठे। उनके बैठते ही ठंडे पानी के गिलास रखकर बैरा आर्डर लेने के लिए खड़ा हो गया। क्लैरा ने कार्ड देखकर आर्डर दे दिया।

बैरा के जाने पर उसने पूछा, "इतना सुख-सुविधायुक्त स्थान बनाने में क्या मूर्खता समझ रहे हैं आप?"

"मूर्खता तो उसने इसका नाम रखने की है।"

"क्यों 'बोल्गा' नाम में बुराई क्या है?"

"यह नाम विदेशी है। हमारे इतिहास से इसका किंचित भी सम्बन्ध नहीं। न हमारे आचार-विचार से इसका कोई सम्बन्ध रहा है। इससे—अधिक सरल और परिचित नाम तो गंगा, यमुना, गोदावरी और टेम्ज़ हैं।

"यदि हम अंग्रेजी नाम रखते हैं तो वे हमारी मानसिक गुलामी की सूचना देते हैं, किन्तु बोल्गा नाम से तो मूर्खला का ही परिचय मिलता है।"

"सम्भव है इसका मालिक कम्युनिस्ट विचारों वाला व्यक्ति हो।"

"तब तो वह महामूर्ख कहा जायेगा। परन्तु क्लैरा! अधिकांश मानव किसी बहती नदी पर तृण के समान हैं। परिस्थितिवश, वे सागर की ओर बहते चले जा रहे हैं। यह जानते हुए भी कि उस सागर में जाकर वे अस्तित्वहीन हो, नरक भोगेंगे। परन्तु किंकर्तव्यविमूढ़ की भांति वे इस बहाव में बहे चले जा रहे हैं।"

मथुरासिंह को गृहमंत्री का यह कहना कि, परिस्थितियों से विवश होकर वे बहते चले जा रहे हैं, स्मरण हो आया था।

क्लैरा ने भी मुस्कराते हुए उसकी बात स्वीकार करने के लिए कहा, "हाँ, इस देश में तो सब नदी में बहने वाले तृण के समान ही हैं।"

"और उस नदी को बहाने वाले लन्दन में बैठे हैं।" मथुरासिंह ने गम्भीर भाव धारण किये हुए ही कहा।

क्लैरा मुस्कराती हुई बैठी रही। उसने एकाएक बात बदलते हुए कहा, "आपको लेडी-गौर्ट का समाचार मिलता रहता है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''उसका अन्तिम पत्र मुझे नवम्बर 1947 में दिल्ली से भेजा हुआ मिला था। उस समय उसने लिखा था कि उसका विचार गौर्ट मैन्शन में ही प्रसव के लिए जाने का है। भारत से जाने से पूर्व वह एक दिन मेरी पत्नी से मिलने के लिए गई थी और उसको बता गई थी कि वह अपने घर जा रही है।''

''आज मुझे उसका एक पत्र मिला है। उसने गौर्ट-परिवार के उत्तराधिकारी को जन्म दिया है और उस बच्चे का नाम क्लीवमौंट रखा गया है। लार्ड गौर्ट ने बच्चे के नामकरण-संस्कार के अवसर पर एक बहुत बड़ा भोज दिया है और उसमें जहाँ चर्चिल, ईडन, इत्यादि टोडी नेता थे, वहाँ एटली, क्रिप्स आदि सोशलिस्ट भी आमन्त्रित थे। समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि और सेना तथा नेवी के उच्चाधिकारी भी आमन्त्रित थे। युद्ध के बाद इतने बड़े महोत्सव के साथ यह पहला आयोजन था।

''इस पर भी लेडी गौर्ट भारत आने की लालसा में दिन-रात घुलती रहती है।''

''ऐसा उसने लिखा है क्या?''

''हाँ, पत्र में उसने आपका नाम तो नहीं लिखा है, परन्तु मैं जानती हूँ कि वह भारत क्यों आना चाहती है।''

''मुझे तो उसका कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ?''

''कदाचित् अपने पति से समझौते का एक अंग यह भी है कि वह आपसे किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार नहीं करेगी।''

''बात तो वही हुई कि मनुष्य परिस्थितियों के वश एक प्रवाह में बहता चला जा रहा है। विरले ही होते हैं, जो उस प्रवाह के विपरीत जाने का यत्न करते हैं। और ऐसे तो बहुत ही कम होते हैं, जो प्रवाह की दिशा ही बदल कर रख दें। प्रवाह के विपरीत चलने वाले अधिकांश व्यक्ति तो संघर्ष में ही नष्ट हो जाते हैं, इस पर भी प्रवाह को रोकने में अपना सहयोग देने के पुण्य के भागी तो वे माने ही जाते हैं।

''युद्धों में भी यही होता है। जो सैनिक सेना की हरियावल में होते हैं, वे प्रायः मारे जाते हैं और उनका नाम लेने वाला भी कोई नहीं होता। जो बाद में आकर उन प्रथम मृत सैनिकों के शवों पर चलते हुए विजय प्राप्त करते हैं, वे यश के भागी हो जाते हैं। परन्तु मैं जानता हूँ कि वे जो संघर्ष करते हुए मारे जाते हैं, उतने ही पुण्य के भागी होते हैं, जितने कि विजय का यश प्राप्त करने वाले।''

''यह आप किस प्रकार कह सकते हैं?''

क्लैरा अभी पूछ ही रही थी कि बैरा आया और आर्डर की सभी वस्तुओं को मेज पर रखकर चला गया। क्लैरा ने उसके जाने के बाद पेस्ट्री का टुकड़ा उठाते हुए कहा, ''मैं तो इतना जानती हूँ कि मैं अपनी माँ के पेट से पैदा हुई थी और मरने के बाद कब्र में दबा दी जाऊंगी। माँ के पेट में बनने से पहले की बात मैं जानती नहीं। इसी प्रकार मरने के बाद की बात का भी मुझे कोई ज्ञान नहीं है। जो कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं जानती हूँ, वह इस जीवन के जन्म और मरण की सीमा के अन्तर्गत की बात ही है।

"देखिए, इस समय मैं भारत के एक सुन्दर युवक के पार्श्व में बैठी चाय पी रही हूँ। इसका एक सुखप्रद अनुभव मुझे हो रहा है। मैं यह स्वादिष्ट पेस्टरी खा रही हूँ, इससे जिह्वा और उदर की तृप्ति हो रही है। मैं एक गद्देदार सोफ़े पर बहुत ही आराम से बैठी सुख का अनुभव कर रही हूँ। मेरे लिए तो यही सब कुछ है।"

"यह तो मैं भी देख रहा हूँ। मेरे और तुम्हारे विचार में केवल इतना ही अन्तर है कि मैं अपने जीवन को इतना सारहीन नहीं समझता, जितना कि तुम समझती हो। मैं इसको तुम्हारे कथन से कुछ अधिक ही समझता हूँ। यदि इतना ही समझता होता तो मैं सेना में भरती न होता। अपने जीवन को मैं इतने जोखिम में नहीं डालता। यदि मैं बैनगाजी में ही मारा जाता, तो क्या होता? जीवित रहने पर जो कुछ मैंने किया है और आनन्द भोगा है, उससे वंचित रह जाता। क्या यों ही? तुम्हारी जीवन-मीमाँसा को दृष्टि में रखते हुए तो कोई व्यक्ति कोई ऐसा काम करता ही नहीं, जिसमें जीवन के आनन्द में किंचित् भी बाधा पड़ने की सम्भावना हो।

"परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता। सैनिक लोग दनदनाती तोप के सामने सीना तानकर चले जाते हैं। वे जानते हैं कि वे यदि मर गये तो उनको मुक्ति प्राप्त होगी और जीवित बच गए तो जीवन में सुख और यश प्राप्त करेंगे। प्राचीन भारत के एक मीमाँसक ने एक योद्धा को कहा था—

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।

"अर्थात् यदि मारे गये तो स्वर्ग प्राप्त करोगे और यदि जीत गये तो इस पृथ्वी का भोग करोगे।"

"परन्तु इसका प्रमाण क्या है?"

"प्रमाण तो यह है कि नियम पर चलने वाले इस संसार में, सब-कुछ अनियमित मान लेना बुद्धि से सम्भव नहीं है। लोग साहस और भय का कार्य करते हैं। यह देखते हुए भी कि उनका जीवन, सुख, आनन्द सब-कुछ समाप्त हो जायेगा। वे युद्ध और इसी प्रकार के संकटापन्न कार्यों को करने के लिए आगे बढ़ते हैं। यह केवल इसलिए कि मनुष्य के इस सुख, ऐश्वर्य भोग करने वाले शरीर के पीछे एक आत्मा है, जो स्वयं को इस शरीर से अधिक लम्बे काल, अधिक दूर और अधिक मात्रा में सुख, आनन्द भोग करने वाला समझता है। इसी कारण उस दीर्घकालीन सुख और आनन्द के लिए वह इस शरीर के सुख और आनन्द का बलिदान कर देता है।

"यदि मनुष्य केवल शरीर-मात्र होता तो वह सुख-भोग का त्याग कभी न करता। इससे मैं यह समझता हूँ कि मैं शरीर के अतिरिक्त भी कुछ हूँ। वह अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस शरीर के साथ ही समाप्त नहीं हो जाता। वह शरीरान्त के बाद भी विद्यमान रहता है। शरीर के अतिरिक्त का अर्थ यही है। इतना समझते ही मैं समझ जाता हूँ कि धर्म के लिए संघर्ष करता हुआ मैं मारा गया तो स्वर्ग पाऊंगा और धर्म के लिए लड़ता हुआ सफल हो गया तो इस जीवन में सुख का भोग करूंगा।''

चाय बनाते हुए क्लैरा मथुरासिंह का मुख देख रही थी। मथुरासिंह ने प्याला उठा चाय की चुस्की ली तो क्लैरा ने भी चाय पीते हुए कहा, ''मिस्टर सिंह! बात तो आप ठीक ही कहते हैं। परन्तु मैं यह सब उस समय भूल जाती हूँ। जब सुख-भोग को अपने सम्मुख देखती हूँ।''

''सुख-भोग करना अवांछनीय नहीं है। परन्तु इससे भी अधिक आनन्दप्रद वह जीवन है, जिसके विषय में मैं कह रहा हूँ कि वह स्वर्ग है।''

मंत्रमुग्ध-सी क्लैरा ने कहा, ''आज आपकी बातों को सुनकर, मैं अनुभव करती हूँ कि फ्लोरा ठीक ही कहती थी कि आपके कथन में ऐसा सम्मोहन है और आपके कथन का अभिप्राय इतना स्पष्ट होता है कि कुछ उत्तर देते नहीं बनता। उसने आपके साथ छः दिन स्कॉटलैंड की यात्रा का वृत्तान्त सुनाया था। आप किस प्रकार उसके सब प्रलोभनों की अवेहलना करते हुए उसके साथ रहते थे। ज्यों-ज्यों आप उसके अभिसार प्राप्त करने के प्रयत्नों को विफल करते थे, त्यों-त्यों वह आप पर मुग्ध होती जाती थी।

''यही कारण था कि जब आपके जीवित होने का समाचार उसे मिला तो वह प्रसन्नता से उबल पड़ी। विलियम से वह अपने मन के भाव छिपा नहीं सकी। उसके भावों के प्रति अपनी अरुचि प्रकट करने के लिए विलियम ने आपका निमन्त्रण अस्वीकार किया। इस पर दोनों में खाई खुद गई। अब ऐसा प्रतीत होता है कि वह खाई कभी भरी नहीं जा सकती।

''फ्लोरा ने आपसे दिल्ली में अपनी अवस्था बताई थी और आपने उसको एक सन्तान देना स्वीकार कर लिया। उसने इसे ही अपने जीवन का परम सौभाग्य मान लिया।

''फ्लोरा का विचार था कि उसको गर्भवती देख, लार्ड गौर्ट उसको तलाक दे देंगे अथवा उसको घर से निकाल देंगे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। यदि तलाक हो जाता तो वह स्वतन्त्र हो, आपसे विवाह का आग्रह करती। यदि उसे घर से निकाल देता तो वह राधा की अनुमति से आपकी अविवाहित पत्नी बनकर रह सकती थी, परन्तु लार्ड गौर्ट ने उससे समझौता कर लिया प्रतीत होता है और उस समझौते में उसको लेडी गौर्ट की मान-प्रतिष्ठा प्राप्त है और उसकी सन्तान को गौर्ट परिवार का नाम और सम्पत्ति का उत्तराधिकार मिला है। लार्ड गौर्ट को यह सन्तोष प्राप्त हो रहा है कि वह आपको आपकी प्रेमिका से पृथक् रख, आप दोनों को दुःखी कर रहा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह मुस्कराया और बोला, "मैं भी तुमको अपने मन के भाव बताता हूँ। जब मेरा फ्लोरा से विवाह करने का विचार था तो वह सत्य हृदय से था। इस पर भी बिना विवाह के मैं उससे सहवास करना नहीं चाहता था। मैं युद्ध पर जा रहा था, जहाँ जीवित लौटने का विश्वास नहीं किया जा सकता था। दूसरे, मैं पहले राधा को फ्लोरा के अनुकूल करके ही यह विवाह कर सकता था। मैंने इस निश्चय को निभाया इसकी मुझे प्रसन्नता है।

"इसके बाद लन्दन में मेरे मरने का समाचार मिला तो कई कारणों से विवश हो फ्लोरा को विलियम से विवाह करना पड़ गया। पहले उसके व्यवहार पर मुझे बहुत निराशा हुई, परन्तु तुरन्त ही मैंने स्वयं को उसकी परिस्थिति में रखकर विचार किया तो मुझको उसका व्यवहार क्षम्य प्रतीत हुआ। मैंने उसे तथा उसके पति को लंच पर आमन्त्रित किया। यदि विलियम में तनिक भी बुद्धि होती तो वह उस दावत में आता और इस प्रकार वह अपनी पत्नी के भावों का आदर कर उसको अपने समीप ले आता। परन्तु उसने पत्नी का बहिष्कार कर दिया।

"जब बम्बई में फ्लोरा ने मुझे यह बात बताई तो मैंने फ्लोरा को समझाने का यत्न किया था कि वह निष्ठावान पत्नी बनकर अपने पति के प्रेम को जीतने का यत्न करे। उस समय उसने मुझे बताया था कि वह विधवा के समान रहती है।

"जब वह मुझे दिल्ली में मिली और उसने अपनी स्थिति का वर्णन किया तो मैंने उसे एक सन्तान देने का वचन दे दिया। हमारा विचार महीने में एक बार सम्बन्ध बनाने का था और वह भी गर्भ-स्थापना तक ही। ईश्वर की कुछ ऐसी कृपा हुई कि हमें दूसरी बार प्रयत्न ही नहीं करना पड़ा।

"क्लैरा! हमारे देश में सन्तान देने की ऐसी प्रथा पुराने काल में कई परिवारों में थी। इसको नियोग कहते हैं। नियोग द्वारा प्राप्त सन्तान स्त्री के विवाहित पति की ही मानी जाती है। ठीक वही बात फ्लोरा के साथ हो गई। मैं समझता हूँ कि यह प्रबन्ध पूर्ण जीवन-भर चल सकेगा। यदि किसी समय यह न चल सका तो मैं वचनबद्ध हूँ कि फ्लोरा को अपने घर में पत्नी बनाकर रख लूंगा। एक प्रकार का यह कर्तव्यपालन है। इसी विचार से मैंने उससे सम्पर्क बनाया था और अभी भी मेरा यही विचार स्थिर है।"

"परन्तु क्या आपको इस बात का शोक नहीं है कि विलियम ने उसको घर से निकाला नहीं?"

"मुझे न शोक है न हर्ष। मैं फ्लोरा से प्रेम करता हूँ और मेरे प्रेम की यह माँग है कि मैं उसके जीवन को शान्तिपूर्वक चलते देख सन्तोष अनुभव करूँ।"

क्लैरा चकित हो मुख देखती रही। यद्यपि चाय समाप्त हो चुकी थी, किन्तु वे दोनों अनुभव कर रहे थे कि उनकी बात अभी समाप्त नहीं हुई। बैरा बिल लेकर गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मथुरासिंह ने कहा, "मिस क्लीवमौंट! मैं यह जानता हूँ कि तुम, मिस कुरेशी और कदाचित् तुम्हारे साथ अन्य अनेक लड़कियाँ भारत में पाकिस्तान के लिए जासूसी कर रही हैं। इस पर भी मैं दोष लड़कियों का नहीं समझता। दोष तो उनका है, जो वासना को अपने सार्वजनिक कार्यों पर शासन करने की स्वीकृति देते हैं। परन्तु किसी भी दिन आप लोगों का यह कार्य आपके ही विपरीत बैठेगा।"

"हमारे विपरीत कैसे बैठेगा?"

"मैं कुरेशी की बात नहीं कर रहा। तुम अंग्रेज महिला हो, पर तुम्हारा पाकिस्तान को सहायता करना इंगलैंड के हितों के विपरीत जायेगा।"

"आपका यह विचार ग़लत है कि मैं पाकिस्तान की ओर से भारत में जासूसी करती हूँ। यदि आप में कुछ भी समझने की शक्ति हो तो आपको यह समझ जाना चाहिए था कि मैं इंगलैंड की सरकार की ओर से यहाँ कार्य कर रही हूँ इंगलैंड की सरकार को इस समय पाकिस्तान का हित ही अपना हित प्रतीत हो रहा है।"

"इंगलैंड का पाकिस्तान को सहायता करना इस्लामी कट्टरपंथियों का पोषण करेगा जा इंगलैंड सहित समस्त विश्व को अशान्त करेगा।"

दोनों ने वहाँ से विदा ली और अपनी-अपनी दिशा में चल दिये। वास्तव में क्लैरा इंगलैंड के लिए हवाई जहाज की सीट बुक करा चुकी थी। यह बात मथुरासिंह को अगले दिन डाक से आये एक पत्र से विदित हुई। पत्र क्लैरा ने भेजा था।

पत्र में उसने लिखा था—'मिस्टर सिंह! मैं आज रात के हवाई जहाज से लन्दन जा रही हूँ। अपने मन में यहाँ से यह निश्चय करके जा रही हूँ कि वहाँ जाकर मैं सरकारी नौकरी छोड़ दूंगी। मुझे आपके कथन और अपने अनुभव से यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि पाकिस्तान का बना रहना और इसका फलना-फूलना विश्व के हित में नहीं है। परन्तु हमारी सरकार की धारणा इसके विपरीत है। अतः मैं वहाँ जाकर त्याग पत्र दे दूंगी।

'एक बात और है। मैं विवाह कर रही हूँ। आपको समाचार दूंगी, आशा करती हूँ कि आप बधाई तो भेजेंगे ही।'

10

मथुरासिंह अभी दिल्ली में ही था कि उसको इंगलैंड से मिसेज स्टैनले का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। उसने उत्तर लिख दिया कि वह इंगलैंड आने की तैयारी कर रहा है। पासपोर्ट बन गया है, विभिन्न सरकारों से विसा प्राप्त करने का यत्न किया जा रहा है, रुपये का भी प्रबन्ध हो गया है। इंगलैंड पहुँचने की तिथि समय पर सूचित कर देगा।

अपने विदेश भ्रमण की बात मथुरासिंह ने जब वकील साहब से की तो उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, "तुम तो सैनिक हो, देश भक्त हो परन्तु इस देश पर शासन है उन लोगों का, जो शिक्षा और स्वभाव से विदेशीय ही हैं। इससे तुम्हारी सैनिक-सेवा की देश को आवश्यकता नहीं है। इस कारण तुम विदेश-भ्रमण के लिए जा सकते हो।"

राधा को जब विदित हुआ कि फ्लोरा की माँ ने निमन्त्रण दिया है तो उसने पूछा, "क्या फ्लोरा के माता-पिता को आपके साथ उसके सम्बन्ध का ज्ञान नहीं है?"

"इस विषय में मुझे कुछ ज्ञान नहीं। फ्लोरा ने मुझे बताया था कि विलियम से विवाह होने से पूर्व ही उसके पिता और लार्ड गौर्ट को यह विदित था कि मैं जीवित हूँ। जिस जहाज ने मुझको समुद्र में एक नौका में अचेत पड़ा पाया था, वह जहाज स्वर्गीय लार्ड गौर्ट के कमाण्ड में था और मिस्टर स्टैनले भी उसी जहाज में उस समय विद्यमान था। दोनों ने मुझे देखा और पहचाना था, परन्तु इंगलैंड को मेरे जीवित होने की सूचना भेजने से पूर्व उन्होंने फ्लोरा और विलियम का विवाह रचा देना उचित समझा। फ्लोरा और उसकी माँ को विवश किया गया और अपनी माँ के कहने पर उसने विवाह स्वीकार कर लिया। जब उसको यह विदित हुआ कि मैं जीवित हूँ तो उसे बहुत पश्चात्ताप हुआ, परन्तु तब क्या हो सकता था।

"ऐसी अवस्था में मैं समझता हूँ कि स्टैनले और उनकी पत्नी को फ्लोरा ने अपनी सन्तान का परिचय नहीं दिया होगा। लार्ड गौर्ट ने कुछ कह दिया हो तो कहा नहीं जा सकता।

"मैं समझती हूँ कि हमें उनका निमन्त्रण स्वीकार नहीं करना चाहिए। हमें अपने युरोप जाने का समाचार भी उनको नहीं देना चाहिए।"

"ऐसा क्यों?"

"मेरा मन उन पर विश्वास नहीं करता। मुझे दाल में कुछ काला प्रतीत होता है।"

मथुरासिंह को राधा का स्टैनले-दम्पती से भय पर किसी प्रकार का विस्मय नहीं हो रहा था। वास्तव में स्टैनले उसको निमन्त्रण उस समय से, देने लगा था, जब लार्ड गौर्ट का फ्लोरा से झगड़ा हो चुका था। स्टैनले की एक बात उसको लन्दन में ही पता चल गई थी कि उसने अपनी लड़की को उससे पृथक् करने के लिए अफ्रीका में सैनिक-अभियान की तिथि बदलने का षड्यन्त्र किया था। इस षड्यन्त्र से उसके देश की अत्यधिक हानि हुई थी। अतः ऐसे षड्यन्त्रकारी व्यक्ति से जितना भी दूर रहा जाय, उतना ही ठीक है।

मथुरासिंह ने अपने सतर्क मस्तिष्क से तुरन्त योजना बना ली। उसने कहा, "हम इंगलैंड जायेंगे ही नहीं। हम युरोप जाने के विषय में उनको कुछ लिखेंगे भी नहीं और उनको मिले बिना हिन्दुस्तान में लौटकर, उनसे क्षमा माँग लेंगे, कि कारण विशेष से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम उनसे भेंट नहीं कर सके।"

इस प्रकार विदेश जाने की तैयारी होने लगी। मथुरासिंह का लड़का लगभग तीन मास का हुआ तो वे उसे उसकी दादी के पास छोड़, भ्रमण के लिए चल दिये। जब से उनका विवाह हुआ था, मथुरासिंह राधा को अंग्रेजी शिक्षा दे रहा था। साथ ही फ्रेंच भाषा में भी मुख्य-मुख्य वस्तुओं और क्रियाओं के लिए शब्दों का अभ्यास करा रहा था। राधा अब कुछ-कुछ अंग्रेजी समझने लगी थी। कुछ-कुछ बोल भी लेती थी। उसके अंग्रेजी और कुछ फ्रेंच सीख लेने से उनकी यात्रा अधिक आनन्दमय हो गयी।

बम्बई से वे समुद्री जहाज में स्वेज के मार्ग से सईद बंदरगाह पर पहुँचे। वहाँ से वे काहिरा पिरामिड्स आदि देखकर हवाई जहाज से नैपल्ज जा पहुँचे। वहाँ का भ्रमण कर, उन्होंने रोम को प्रस्थान किया। रोम के गिरिजाघर, पुराने किले इत्यादि देख, वे विटिकन नगर देख रहे थे। वे सैंट पीटर्ज का गिरिजाघर देखकर बाहर निकल रहे थे कि क्लैरा उनको एक युवक के साथ भीतर जाती दिखाई दी। राधा ने तो क्लैरा को कभी देखा नहीं था, इससे वह अपने पति के सम्मुख क्लैरा को मुस्काती खड़ी देख, मन में विचार करने लगी, कि यह कोई उसकी अन्य सौत हो सकती है। इससे एक क्षण के लिए उसके मुख पर विशाद के चिन्ह अंकित हो गए, परन्तु तुरन्त ही वह गम्भीर हो गई। इस पर भी उसके मुख पर अंकित भावों को क्लैरा के साथ आने वाले युवक ने भाँप लिया था। किन्तु और किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया था। क्लैरा और मथुरासिंह इस प्रकार अचानक भेंट हो जाने पर एक दूसरे का मुख देखते हुए आश्चर्यचकित-से रह गये थे। आखिर में मथुरासिंह ने कहा, "क्लैरा! क्या मैं तुमको बधाई दे सकता हूँ कि आखिर तुम जीवन का आश्रय पा गई हो?"

"हाँ, परन्तु अभी हमारा विवाह नहीं हुआ है।"

"कब होने वाला है?"

"आज सायंकाल तक बता सकती हूँ। इस समय हम हिज़ होलीनेस पोप से भेंट करने के लिए जा रहे हैं। आप कहाँ ठहरे हुए हैं?"

"मैं होटल दि पैरिस के कमरा नम्बर एक सौ दस में ठहरा हुआ हूँ।"

"मैं आपके पास दोपहर बाद चाय के समय आऊंगी, ठीक है?"

"हाँ, हम आपकी प्रतीक्षा करेंगे।"

क्लैरा अपने भावी पति के साथ गिरिजाघर के अन्दर चली गई। उस दिन पोप वहाँ प्रवचन करने के लिए आया हुआ था।

उसी सायंकाल क्लैरा और उसका भावी पति मथुरासिंह से मिलने के लिए होटल में आये। क्लैरा ने अपने साथ के युवक का परिचय कराते हुए कहा, "ये हैं मोनश्यो ग्युसैप वार्डी। ये लन्दन में इटली के दूतावास में थे। वहीं इनसे मेरा परिचय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। मैं भारत से किसी गुप्त कार्य के निमित्त लन्दन आई हुई थी। वहाँ मेरा इनसे परिचय हुआ और फिर मित्रता हो गई। इनसे विवाह करने के विचार से ही मैं भारत से अपना काम छोड़कर आई हूँ। ये कैथोलिक मतावलम्बी हैं और चाहते हैं कि हमारा विवाह सेंट पीटर के गिरिजाघर में हो। इसी निमित्त हम यहाँ आये हुए हैं। आज हिज होलीनेस से हमारी भेंट हुई है और उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया है। अतः हम अब पति-पत्नी हैं। आज रात के बारह बजे हम लन्दन और वहाँ से स्टैनले मैन्शन में हनीमून मनाने के लिए जा रहे हैं।''

''इसके लिए बहुत-बहुत बधाई। यदि और किसी का निमन्त्रण स्वीकार न किया हो तो रात के डिनर के लिए हमारा निमन्त्रण स्वीकार कर लो।''

''आज तो हम अपने कुछ परिचितों को रॉयल होटल में भोज दे रहे हैं। और आप दोनों को उसके लिए निमन्त्रण देने के लिए आये हैं।

''इस पर भी आपका निमन्त्रण हम अभी से स्वीकार करते हैं और जब आप लन्दन में आयें, उस अवसर पर निमन्त्रित कर दीजियेगा।''

''जैसा आप लोग उचित समझें।'' मथुरासिंह ने कहा। उसने तो लन्दन न जाने का निश्चय किया हुआ था। वह विचार कर रहा था कि क्लैरा फ्लोरा से अवश्य ही उनके आगमन के विषय में कहेगी, तब वह और उसके माता-पिता उनकी प्रतीक्षा करेंगे। उसने अपने इंगलैंड न जाने की बात क्लैरा को बताई नहीं। वह विचार कर रहा था कि पैरिस से न्यूयार्क जाते समय कोई बहाना बना देगा।

मथुरासिंह ने डिनर का समय पूछा और फिर यह भी बता दिया कि उसकी पत्नी शाकाहारी है, इसलिए वह भोजन तो करेगी नहीं। हाँ? उन लोगों को बधाई देने के लिए आयेगी अवश्य।

क्लैरा बोली, ''मैं इनके लिए उबली सब्जियों का प्रबन्ध करा दूंगी। इटली में शाकाहारी खाना बनाने का अपना ढंग है और मैं समझती हूँ कि पूर्वी देशों के रहने वाले लोग उसे पसन्द करेंगे।''

मथुरासिंह ने घंटी बजाई और जब बैरा आया तो उसे चाय लाने के लिए कह दिया। क्लैरा ने उसे पूछा, ''आप लोग कब तक इंगलैंड आने का विचार कर रहे हैं?''

''अभी कुछ निश्चितरूपेण नहीं बताया जा सकता। इटली, जर्मनी, स्वीडन, नार्वे और वहाँ से डेनमार्क, हॉलैंड, बैलजियम तथा फ्रांस होकर ही इंगलैंड आना हो सकेगा। वहाँ से सीधा अमेरिका, कनाडा और यदि हुआ तो मैक्सिको होते हुए न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर से वापस भारत जाने का विचार है।''

''आप रोम में कितने दिन ठहरने वाले हैं?''

''कल ही तो हम यहाँ आये हैं। चार-पाँच दिन तो अभी ठहरेंगे। यहाँ देखने के लिए इतना कुछ है कि कई दिन और भी लग जायें तो आश्चर्य नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय पीते हुए क्लैरा ने पूछा, "आप अभी भारत सरकार की नौकरी में हैं अथवा नहीं?"

"आजकल मैं किसी सरकार की नौकरी में नहीं हूँ।"

"आप किसी सरकार की डिप्लोमैटिक नौकरी में रुचि रखते हैं या नहीं?"

"यदि नौकरी मेरे और मेरे अपने देश के हितों के विरुद्ध न हो तो और वेतन भी अच्छा मिले तो रुचि उत्पन्न हो सकती है।"

"पहली शर्त बहुत कठिन है। आज जो राज्य आपके मित्र हैं, वे कल को शत्रु भी हो सकते हैं। हम डिप्लोमैटिक सर्विस करने वालों के लिए तो वही अपना देश है, जिसकी हम नौकरी करते हैं।"

"नहीं क्लैरा! मैं अभी इतना अन्तर्राष्ट्रीय नहीं हुआ हूँ कि अपने देश को ही भूल जाऊँ।"

"परन्तु आप चर्चिल की नौकरी तो करते रहे हैं। फ्लोरा बताती थी कि आप उसके प्रशंसकों में से थे।"

"मैं उसकी कार्य-शैली को तो प्रशंसक हूँ, परन्तु भारत के प्रति उसके विचारों का नहीं।"

"इसी प्रकार आप किसी अन्य व्यक्ति की कार्य-शैली के प्रशंसक नहीं हो सकते क्या?"

"देखो क्लैरा! उस समय इंगलैंड एक युद्ध लड़ रहा था। उस युद्ध में मेरी दृष्टि में उसका पक्ष न्याय और धर्म का था। उस युद्ध-प्रयास में मैं सहायक हो गया था। मैं तो एक साधारण सैनिक के रूप में भरती हुआ था, परन्तु यह चर्चिल की योग्यता थी कि उन्होंने मुझे किसी उच्च-कार्य के लिए उपयुक्त समझा। मैंने जिस रूप में भी वे चाहते थे, उस युद्ध में सहायता देनी स्वीकार की थी।"

"अब भी एक धर्मयुद्ध में आपको सेवा-कार्य मिल सकता है। देखिये! आपके देश की सरकार ने आपको एक साधारण सैनिक के कार्य के योग्य भी नहीं समझा। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो आपको कमाण्डर-इन-चीफ के पद के योग्य समझ सकते हैं। वे आपको भारत का कमाण्डर-इन-चीफ बना दें तो कैसा रहे?"

"परन्तु वे हैं कौन?"

"वे हिन्दुस्तानी हैं। वे समझते हैं कि भारत की वर्तमान सरकार भारतीय होती हुई भी भारत के हित में कार्य नहीं कर रही। वे वहाँ क्रांति करना चाहते हैं। यदि आप इस प्रयास में सम्मिलित हो जायें तो वेतन तो इस समय कमाण्डर-इन-चीफ के बराबर मिलेगा और सफलता मिल जाने पर आपको कमाण्डर-इन-चीफ बना दिया जायेगा। बताइये, आप क्या कहते हैं?"

"जब तक ऐसे लोगों के विषय में मैं भली भांति जान न लूँ, तब तक मैं किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार का वचन नहीं दे सकता।"

"जब आप इंगलैंड में आयेंगे तो मैं आपको उनसे मिला दूंगी। वहाँ एक शक्तिशाली कमेटी बन चुकी है, योजनाएँ बन रही हैं। यदि आप स्वीकार करें तो इतना कुछ मिल जायेगा और हिटलर जितना साहस बटोरेंगे तो आप भारत के सम्राट् भी बन सकते हैं।"

मथुरासिंह हँस पड़ा। बोला, "और अन्त भी हिटलर जैसा होगा क्या?" फिर कुछ क्षण बाद बोला "मैं सोचता था कि इस विवाह के बाद तुमने जासूसी छोड़ दी होगी।"

"आपने ठीक ही सोचा था। मैं अब जासूसी का कार्य नहीं कर रही। मैं तो किसी उचित उद्देश्य के लिए उचित कार्य करने की प्रेरणा दे रही हूँ।"

"ओह, अच्छी बात है। मैं जब इंगलैंड आऊंगा तो तब समझ लूंगा। उससे यदि अपने देश और जाति का कुछ भी कल्याण होने की सम्भावना समझूंगा तो बिना वेतन और बिना कमाण्डर-इन-चीफ बने भी उसमें सहयोग देना स्वीकार कर लूंगा।"

"आपका कहना उचित है। इस पर भी मैं बताती हूँ कि उनमें से बहुत से लोग आपके विषय में बहुत अच्छी सम्मति रखते हैं।"

चाय समाप्त हुई और रात के भोजन में आने का वचन ले मिस्टर एण्ड मिसेज वार्डी वापस चले गए। उसके जाने पर राधा कहने लगी, "मैंने तो समझा था कि यह कोई आपकी प्रेमिका होगी।"

"और अब क्या समझी हो?"

"केवल परिचित-मात्र।"

"इस पर भी यह अति भयानक स्त्री है। यह बड़े-बड़े लोगों को अपने मोह-जाल में फंसाकर रखने की क्षमता रखती है।"

"आप इंगलैंड तो नहीं जा रहे न?"

"नहीं।"

"तो ठीक है, यह भयानक बनी रहे। हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

रात के भोज पर कोई विशेष बात नहीं हुई। लगभग पच्चीस अतिथि होंगे और सभी परस्पर अपरिचित। सब विभिन्न भाषाएँ बोलते थे।

मथुरासिंह और राधा रोम में प्राचीन इमारतें देखने में संलग्न थे। एक दिन वे म्यूजियम देखकर लौटे तो उनको अपने साथ के कमरे के बाहर बरामदे में बेंत की कुर्सी पर फ्लोरा बैठी दिखाई दी। मथुरासिंह समझ गया कि क्लैरा ने उसको उनके रोम में पहुँचने का समाचार दिया है और वह उनसे मिलने के लिए पहुँची है।

जब मथुरासिंह उस होटल में आया था तो कमरा नम्बर एक सौ ग्यारह में पहले एक परिवार ठहरा हुआ था। दो दिन पूर्व उस परिवार के वहाँ से जाने पर वह कमरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खाली था। अब भ्रमण से लौटने पर उन्होंने देखा कि फ्लोरा उसमें टिकी हुई है। मथुरासिंह को तो विस्मय ही हुआ, किन्तु राधा को विस्मय के साथ-साथ निराशा भी।

फ्लोरा के समीप पहुँच मथुरासिंह ने कहा, "हैलो फ्लोरा! यहाँ क्या कर रही हो?"

फ्लोरा एक पुस्तक पढ़ने में लीन थी। कम-से-कम वह स्वयं को उस में लीन प्रकट कर रही थी। मथुरासिंह और राधा को देखकर वह उछल कर खड़ी हो गई। और कहने लगी, "आश्चर्य! आप यहाँ?"

उसने राधा को अपने दोनों हाथों से पकड़कर गले लगाया और कहने लगी, "मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आइये।" इस प्रकार वह उनको अपने कमरे में ले गई और पूछने लगी, "किस कमरे में ठहरे हैं?"

फ्लोरा ने ऐसा प्रकट किया कि जैसे उनके वहाँ होने का उसे कुछ भी ज्ञान नहीं। परन्तु राधा और मथुरासिंह को उस पर विश्वास नहीं आया।

फ्लोरा के कमरे के भीतर जा वे बैठ गए। मथुरासिंह ने भी उसकी अपने आने के विषय में अनभिज्ञता को सत्य मानकर बात की। उसने कहा, "हमको यहाँ आये आज चौथा दिन है। हमने बहुत स्थान देख लिए हैं। आज हमारा गाइड बता रहा था कि कल तक हम यहाँ से विदा हो सकेंगे।"

"यहाँ से किधर जाने का विचार है?"

"वीनस, नैपल्ज तो हम देख आये हैं।"

"मेरे लिए तो आपका इस प्रकार मिल जाना अत्यन्त हर्ष की बात हो रही है। मैं युरोप-भ्रमण के लिए निकली हुई हूँ। आज दिन के दस बजे यहाँ पहुँची तो इस होटल में और वह भी इसी कमरे में स्थान मिल गया। विचार था कि सायंकाल की चाय के बाद भ्रमण के लिए निकलूंगी। बहुत वर्ष हुए मैंने युरोप का भ्रमण किया था। तब तो मेरे माता-पिता मेरे साथ थे, अब मैं अकेली हूँ। लार्ड गौर्ट तो दक्षिण-अमेरिका भ्रमण के लिये गये हुए हैं।"

"अच्छा, यह तो बताओ, तुम्हें क्लैरा कब मिली थी?"

"जब वह हिन्दुस्तान से लौटी तो लन्दन में दिखाई दी थी। उन दिनों वह मेरे पिता से बहुत हेल-मेल बढ़ा रही थी।"

"तीन दिन पूर्व वह हमको यहाँ मिली थी। उसने ग्युसैप वार्डी नाम के युवक से विवाह कर लिया है। हम उसके वैडिंग-डिनर में सम्मिलित हुए थे।"

"ओह! खैर एक बात तो अच्छी हुई है। अब वह स्थिर जीवन व्यतीत कर सकेगी। मैंने उस युवक को देखा है, अच्छा खुशमिजाज व्यक्ति है।"

"हमें भी वह सुन्दर, स्वस्थ और भले विचारों का ही प्रतीत हुआ था।"

"यह तो मैं नहीं कह सकती। खैर, एक बात तो यह हुई कि आपके साथ कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन ठहरने का अवसर मिलेगा। मैं आपके साथ-साथ चलूंगी। क्यों राधा बहिन! आप क्या कहती हैं?''

राधा हँस पड़ी। उसने कहा, ''दीपक पर उड़ रहे एक शलभ से दूसरा आने वाला शलभ पूछता है उसका आना उसको कैसा लग रहा है?''

इस पर तो तीनों की हँसी फूट पड़ी। राधा आगे बोली, ''शलभ तो स्वयं दीपक की लौ पर मुग्ध हुआ उसका चक्कर काट रहा है। उसके पास ऐसी सूझ-बूझ और समय ही कहाँ है कि वह किसी दूसरे शलभ के व्यवहार के विषय में विचार करे।''

''तो क्या मैं दीपक से पूछूँ कि वह अपने चारों ओर मुझे चक्कर काटने की स्वीकृति देगा?''

''हाँ, यदि चाहो तो पूछ सकती हो?''

''क्यों लैफ्टिनैन्ट सिंह अपने चारों ओर मुझे चक्कर काटने की स्वीकृति देंगे?''

''मुझे क्या आपत्ति हो सकती है, तुम जानों या राधा जाने यह भ्रमण तो राधा के नाम का है।''

''क्यों सिस्टर राधा! क्या मैं आपके साथ युरोप भ्रमण कर सकती हूँ?''

''यह तो शलभ के विचार करने की बात है। कहीं अपने पंख जलाकर उड़ने के अयोग्य हो दीपक की लौ में भस्म न हो जाए।''

''इस सम्भावना पर भी विचार कर लिया जायेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

फ्लोरा स्टैनले जब मथुरासिंह को जबलपुर में मिली थी तो उस समय वह उसके शारीरिक सौन्दर्य और गठन तथा उसके फुटबॉल के खेल में कुशलता को देख उसकी ओर आकर्षित हुई थी। किन्तु जब उसने उसके विचार सुने तो मन में उसके प्रति अपार श्रद्धा और भक्ति भर गई। मथुरासिंह की जीवन-मीमाँसा श्रीमद्भगवद्गीता पर आधारित थी कि आत्मा-शरीर से कुछ भिन्न वस्तु है, शरीर नाशवान् है और आत्मा नित्य है, जैसे मनुष्य फटे-पुराने वस्त्र बदलकर प्रसन्न होता है, वैसे ही आत्मा को नया जन्म पाकर प्रसन्नता होती है; इसमें केवल यह विश्वास होना चाहिए कि फटे-पुराने वस्त्र बदलने पर नवीन वस्त्र पहले से बढ़िया होंगे; यह विश्वास इस जन्म के कर्मों से ही हो सकता है; कर्म ज्ञानयुक्त होने चाहिये; संतुलित तथा विचार युक्त बुद्धि से कार्य का निर्णय करना चाहिये फलाफल का विचार छोड़कर कर्म करना चाहिये; कार्य का उद्देश्य, केवल उसके धर्मयुक्त होने के विचार से ही होना चाहिये; ऐसा कर्म करता हुआ व्यक्ति विश्वास से कह सकता है कि उसका अगले जन्म का शरीर इस जन्म से घटिया नहीं मिलेगा; ऐसा आदमी युद्ध तथा अन्य किसी भी भय के स्थान पर जाने से नहीं डरता।

इन बातों ने फ्लोरा के मन में क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। वह उससे प्रेम करने लगी थी। अपने इस प्रेम का परिचय उसने मथुरासिंह को नई दिल्ली में मेरीना होटल की सीढ़ियों पर उतरते हुए ही दे दिया था।

मथुरासिंह ने उसे प्रेम करने से रोका नहीं, परन्तु प्रेम और विवाह में अन्तर स्पष्ट करते हुए विवाह करना स्वीकार नहीं किया था। बाद में वोनैस में कुछ शर्तों पर उसने विवाह करना स्वीकार कर लिया था और स्कॉटलैंड में भ्रमण करते हुए वह मन से उससे विवाह के लिए तैयार भी हो गया था। साथ ही उससे उसने संयम से रहने के लिए कहा। फ्लोरा मथुरासिंह के संयम को देखकर उससे और भी प्रभावित हो गई थी।

भ्रमण से लौटते ही घटना चक्र बहुत ही द्रुत-गति से बदलता गया। फ्लोरा स्टैनले लन्दन में आई और उसी रात हवाई-आक्रमण में उसका भाई मारा गया। उसका पिता अचेतावस्था में अस्पताल में जा पड़ा और उसका प्रेमी अफ्रीका में युद्ध के मोर्चे पर चला गया। उसके कुछ दिन बाद ही पता चला कि वह भी मारा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मथुरासिंह के मारे जाने के समाचार की पुष्टि हो गई तो उसकी माँ, जो मथुरासिंह से उसके विवाह का समर्थन कर रही थी, उसको विलियम से विवाह करने का आग्रह करने लगी। लार्ड गौर्ट ने अपने पुत्र को फ्लोरा से विवाह करने के लिए उकसाया।

सबसे अधिक दयनीय स्थिति मिस्टर स्टैनले की थी। उसने षड्यन्त्र तो किया था मथुरासिंह को शीघ्रातिशीघ्र मोर्चे पर भेजने के लिए और जिस रात उसको मोर्चे पर भेजा गया उसी रात स्टैनले का इकलौता बेटा जॉन मारा गया। इससे उसके मस्तिष्क को ऐसा आघात लगा कि वह अर्धपागल हो गया।

वह समझने लगा था कि उसने ही अपने पुत्र की हत्या की है। उसने मथुरासिंह को 'कर्मणां गहर्ना गतिः' (कर्मों की गति जटिल है) की व्याख्या करते सुना था। कृत कर्मों को फल अवश्य ही मिलता है, यह भी उसने उसके मुख से सुन रखा था। ऐसा प्रतीत होता है कि कर्म और फल का कोई सम्बन्ध नहीं, परन्तु वास्तव में वे सम्बन्धित होते हैं; इसी सिद्धान्त से उस समय स्टैनले की अन्तरात्मा में यह बात बैठ गई थी कि उसने मथुरासिंह को मरवाने का षड्यन्त्र किया था और परमात्मा ने, उसके दुष्कृत्य के फलस्वरूप, उसके पुत्र को ही मार डाला था।

वह अपने षड्यन्त्र के दोनों भयंकर परिणामों पर काँप उठा था। इंगलैंड की अफरीका के मोर्चे पर भारी पराजय हुई और उसका लड़का मारा गया। तदनन्तर उसको समाचार मिला कि मथुरासिंह भी मारा गया है। इस सूचना के मिलने पर उसने बिखरे हुए घी को बटोरने का यत्न किया। उसने अपनी पत्नी की सहायता से फ्लोरा को विलियम से विवाह करने के लिए राजी कर लिया।

अब विलियम गोर्ट तैयार नहीं होता था। उसको विश्वास हो रहा था कि फ्लोरा और मथुरासिंह का समागम हो चुका है। यद्यपि फ्लोरा उसको बताती थी कि ऐसी कोई बात नहीं है परन्तु विलियम इसे असम्भव मानता था। उसे विदित था कि दोनों व्यक्ति छः दिन तक एक साथ भ्रमण करते रहे हैं और रात को एक ही कमरे में सोते रहे हैं। परन्तु उसकी सब परिचित लड़कियों में फ्लोरा सबसे अधिक सुन्दर थी। फ्लोरा को अपनी माँ की ओर से बहुत सम्पत्ति उत्तराधिकार में भी मिलने वाली थी। साथ ही अब तो उसकी सन्तान ही स्टैलने एस्टेट की भी उत्तराधिकारी होने वाली थी। ये सब प्रलोभन थे और उसका पिता लार्ड गौर्ट भी अपने लड़के का विवाह जानी-पहचानी लड़की के साथ करना चाहता था।

इस समय मथुरासिंह समुद्र में बहता हुआ जीवित पाया गया। मिला भी वह लार्ड गौर्ट हो ही और उसी जहाज में मिस्टर स्टैनले भी विद्यमान था। दोनों ने उसके जीवित मिल जाने के समाचार को तब तक छिपाकर रखा, जब तक कि विलियम और फ्लोरा ने परस्पर विवाह नहीं कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब फ्लोरा को मथुरासिंह के जीवित होने का समाचार मिला तो उसको भारी पश्चात्ताप लगा। उसके भावों को विलियम ने जान लिया। उसने फ्लोरा को बहुत भला-बुरा कहा। फ्लोरा भी न रह सकी और उसके मुख से निकल ही गया, "मैं क्या करूँ, मैं उससे प्रेम करती हूँ।"

"तो तलाक देकर चली जाओ उसी ब्लैकी के पास।"

यदि फ्लोरा की माँ वहाँ न होती तो बात उसी दिन बिगड़ जाती। उसने दोनों में समझौता करा दिया। यह निश्चय हो गया कि भविष्य में फ्लोरा विलियम की निष्ठावान पत्नी बनकर रहेगी।

अगले दिन फ्लोरा और विलियम गौर्ट को मथुरासिंह से लंच का निमन्त्रण मिल गया। फ्लोरा जाना चाहती थी और विलियम तथा मथुरासिंह के परिचय को घनिष्ठता में परिणत करना चाहती थी। परन्तु विलियम ने नाक चढ़ाकर अस्वीकार कर दिया।

फ्लोरा अपनी माँ के साथ मथुरासिंह के निमन्त्रण पर गई। उस रात पति-पत्नी में पुनः झगड़ा हुआ। विलियम ने कठोर शब्दों में उससे कहा, "तुम हरजाई हो, मैं तुमसे सम्बन्ध रखना नहीं चाहता।"

इसके उत्तर में बड़ी सतर्कता से फ्लोरा ने कहा, "तुम मूर्ख और भीरु हो। मेरे हरजाई होने का प्रमाण तो तुम दे नहीं सकोगे, क्योंकि मैं वैसी हूँ नहीं। परन्तु तुम्हारे मूर्ख और भीरु होने का प्रमाण मैं कभी भी और किसी भी व्यक्ति के सम्मुख दे सकती हूँ।"

"तो ऐसा करो, तुम मुझे छोड़ दो।"

"क्या खूब बात की है। यदि चरित्रहीन मैं हूँ तो छोड़ूँ भी मैं ही। तुम्हें मेरे चरित्र पर सन्देह है तो दावा कर दो। कोर्ट में मैं अपनी सफ़ाई दे दूंगी।"

"मैं तो दावा नहीं करूंगा। इस पर भी मैं अब तुम्हारा बैड-शेयर नहीं करूंगा।"

"मत करो। मुझे स्वयं ही तुम्हारी पत्नी होने में लज्जा का भास होता है। इस पर भी मैं कहती हूँ कि मैं स्वेच्छा से तुम्हें छोडूंगी नहीं। इसमें मेरे माता-पिता की बदनामी का प्रश्न है।"

"और मैं यदि तुमको छोड़ने की बात करूँ तो?"

"तब मैं चुनौती दूंगी कि चरित्रहीन मैं नहीं तुम हो।"

विलीयम इस हुँकार से डर गया और उसने आगे कोई बात नहीं चलाई। तो भी फ्लोरा के साथ उसने पति का-सा सम्बन्ध नहीं रखा।

मथुरासिंह जब तक लन्दन में रहा, फ्लोरा अपने गौर्ट मेंशन में ही रही। दोनों में किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार भी नहीं हुआ। इसी बीच विलियम भारतीय नौसेना का एडमिरल बनकर भारत आ गया। यहाँ पर फ्लोरा की नौकरानी की मथुरासिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भेंट हो गई। उसने जब अपनी मालकिन को मथुरासिंह से भेंट के विषय में बताया तो फ्लोरा के मस्तिष्क में पुरानी स्मृतियाँ उभर आईं। उसके मन में मथुरासिंह से मिलने की लालसा जाग उठी। किन्तु किसी को मथुरासिंह के न घर का पता मालूम था और न ही उसकी रेजिमेंट आदि का। इस कारण कुछ पता नहीं किया जा सका।

मथुरासिंह के साथ अन्य एक घटना घटी। जब उसके मरने की सूचना भारत आई तो उसकी फाइल को मृत सैनिकों की फाइल के साथ रख दिया गया। जब वह भारत में लौटकर आया तो उसकी सर्विसफाइल ढूंढ़ी गई, किन्तु वह मिली नहीं तो नई फाइल बना दी गई। उस नई फाइल में उसकी इंगलैंड की नौकरी को कोई उल्लेख नहीं था। मथुरासिंह की सेवाओं की प्रशंसा में लिखा गया इंगलैंड के प्रधान-मंत्री का पत्र भी उसी फाइल में लगा दिया गया था जो मृतकों की फाइलों के साथ रख दी गई थी। अतः जब वह भारत आया तो उसे लेफ्टीनेंट से अधिक पदवी नहीं मिली। फ्लोरा तो ढूंढ़ती थी ब्रिगेडियर सिंह को, किन्तु इस नाम का कोई भी व्यक्ति भारत की सेना में नहीं था।

1945 में अचानक मथुरासिंह और फ्लोरा की बम्बई में भेंट हो गई। तब तक विलियम गौर्ट लार्ड गौर्ट बन गया था और उसकी तीन-तीन मिस्ट्रेसेज़ थीं। फ्लोरा ने जब मथुरासिंह को अपनी सारी कहानी सुनाई तो उसने कह दिया, "फ्लोरा! इसे भाग्य का विधान कहते हैं। मैं तो तुमसे विवाह करने के लिए तैयार था, परन्तु जो कुछ हुआ है उसे पूर्व-जन्मों के कर्मो का फल ही कहा जा सकता है।"

"यह तो ठीक है। परन्तु इस दशा को सुधारा नहीं जा सकता?"

"सुधारा जा सकता है। इसका एक उपाय है। वह यह कि तुम किसी-न-किसी प्रकार से विलियम को तलाक दे दो। तब मैं तुमसे विवाह करने के लिए तैयार हो जाऊंगा।"

"तलाक तो मैं दे दूँ। किन्तु दोनों परिवारों की इससे भारी बदनामी होगी। कम-से-कम मैं तो अपनी माता की अनुमति के बिना तलाक की प्रार्थना नहीं कर सकती। परन्तु क्या हम परस्पर बैसा ही सम्बन्ध नहीं रख सकते जैसा कि विलियम ने अपनी मिस्ट्रेसेज के साथ रखा हुआ है?"

"नहीं, तुम अपने माता-पिता की बदनामी से डरती हो। मैं अपनी होने वाली सन्तान की जीवन-भर की बदनामी से डरता हूँ।"

"यदि मुझसे उत्पन्न होने वाली सन्तान को विलियम अपनी सन्तान स्वीकार करे तो फिर आपका क्या विचार होगा?"

"मुझे विश्वास नहीं कि वह स्वीकार कर लेगा। यदि वह सम्भव हुआ तो फिर यह विचारणीय बात अवश्य बन जायेगी। हमारे देश में पुराने काल में एक प्रथा थी। उसको 'नियोग' कहते थे। ऐसा कोई विवाहित महिला पति की सहमति से केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तान-प्राप्ति के लिए ही कर सकती थी।''

''अच्छी बात है, मैं इस विषय पर विलियम को विवश करूंगी।''

इसके लिए फ्लोरा ने यत्न करके लार्ड गौर्ट की बम्बई में स्थित मिस्ट्रेस का चित्र प्राप्त किया और एक दिन अपने पति को चुनौती देती हुई बोली, ''हमारे विवाह को हुए तीन वर्ष से अधिक अवधि बीत रही है। हमारे अब तक कोई भी सन्तान नहीं हुई। इससे दो परिवारों में उत्तराधिकारी की प्रतीक्षा की जा रही है। मुझे लगता है कि तुम संतान के लायक ही नहीं हो।''

''तुम्हारे चलन को देखते हुए मैं तुमसे पति का-सा भाव नहीं रख सकता।''

''तो मुझको तलाक दे दो।''

''तुम मुझे तलाक दे सकती हो। मैं तो नहीं दूंगा।''

''इस पर भी मेरी अवेहलना की जा रही है।''

''मेरा मन नहीं मानता।''

''तो एक सूरत है, मैं अपने मार्ग पर चलती हूँ और आप तो अपने मार्ग पर चल ही रहे हैं।''

''यदि कोई सन्तान हो गई तो?''

''तो यह दोनों की होगी। सन्तान का सम्बन्ध विवाह से है।''

''यदि वह काले रंग की हुई तो?''

''तो कह देंगे कि हिन्दुस्तान के जलवायु का यह परिणाम है।''

विलियम गम्भीरता से विचार करने लगा। उसने कहा, ''तो तुम्हें मिस्टर सिंह मिल गया है?''

''हाँ, मिल गया है।''

''तो उससे सम्बन्ध बना लिया है?''

''नहीं, वह बिना विवाह के सम्बन्ध बनाने के लिऐ तैयार ही नहीं होता। किन्तु वह यह मानता है कि यदि पति संतान देने के लायक ही न हो तो पत्नि पति की स्वीकृति से किसी अन्य से सन्तान प्राप्त कर सकती है। यह सम्बन्ध केवल सन्तान-प्राप्ति के निमित्त होता है।''

''तो ले लो सन्तान।''

''आप स्वीकृति देते हैं?''

''जैसा तुम्हारे जी में आये करो। मैं अपने मन की बात बताता हूँ। मैं ऐसे तो तुमको तलाक दूंगा नहीं। हाँ, तुम्हारी ऐसी सन्तान हुई, जो कि अन्धे को भी हिन्दुस्तानी की-सी सन्तान दिखाई दे, तो मैं फिर तुमको तलाक दे दूंगा।

''और यदि सन्तान गौरवर्णीय हुई तो?''

''तो क्या करूंगा तब सोचूंगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार की बातचीत हो जाने पर भी न तो फ्लोरा मथुरासिंह के पीछे-पीछे जा सकी और न विलियम ही उसको तलाक दे सका।

फ्लोरा को इसका अवसर तब मिला जब 1947 में मथुरासिंह सरकारी काम से दिल्ली आया। उसको अम्बाला से दिल्ली बुलाया गया था। फ्लोरा और मथुरासिंह मेडन होटल में मिले और दोनों का समागम हो गया। किन्तु पुनः मिलने का अवसर ही नहीं मिला। एक बार के सम्बन्ध से ही सन्तान का बीजारोपण हो गया।

बाद में जब सेना से मुक्ति मिलने के अवसर पर वह वाई. एम. सी. ए. होस्टल में ठहरा हुआ था उस समय पुनः उसकी फ्लोरा से भेंट हुई। क्लैरा को इसका पता चल गया था। किन्तु उसको विस्मय हुआ, जब सन्तान निश्चित समय से पूर्व ही उत्पन्न होने वाली दिखाई दी।

लार्ड गौर्ट दिल्ली आया तो उसको यह समाचार बता दिया गया। इस पर यह निश्चय हुआ कि बच्चा उत्पन्न होने तक, वे दोनों अपना व्यवहार सामान्य रखेंगे।

क्लैरा और फ्लोरा दोनों लन्दन से ही परिचित थीं। भारत में आकर यह परिचय घनिष्ठता में परिणत हो गया। क्लैरा फ्लोरा के मनोभावों को जानती थी। मथुरासिंह के प्रति उसके प्रेम का भी उसको ज्ञान था।

क्लैरा ने पहले तो मथुरासिंह को भी साधारण सैनिक की भांति शिथिल चरित्र का व्यक्ति ही समझा था। परन्तु जब मथुरासिंह का अपने कमाण्डर-इन-चीफ से मतभेद हुआ तो उसको उस पर जासूसी के लिए नियुक्त कर दिया गया। इस कारण वह उससे अपना सम्बन्ध बढ़ाना चाहती थी। जब मथुरासिंह ने क्लैरा से सम्बन्ध बढ़ाने से इन्कार कर दिया तो उसके पीछे मिस कुरेशी को छोड़ दिया गया। मिस कुरेशी ने मथुरासिंह को फंसाना चाहा और उधर मथुरासिंह ने कुरेशी का कश्मीर के प्रधान-मंत्री से सम्बन्ध देखा तो उसे कुछ राजीनतिक चाल दिखाई देने लगी। दोनों में दाँव-पेच चलने लगे। एक दिन वह खुली चिट्ठी वाली घटना हो गई।

अगले दिन मथुरासिंह ने एक नई कहानी सुना दी। उसने बताया कि मीरपुर से आता हुआ एक मुसलमान फ़कीर पकड़ा गया और तलाशी लेने पर उसके झोले से तीन पत्र मिले हैं। उनमें से एक सरवर कुरेशी के नाम है और दूसरा कश्मीर के प्रधान-मंत्री के नाम। दोनों पत्रों के विषय में जाँच हो रही है। इस पर तो मिस कुरेशी घबरा गई और वहाँ से भाग जाने में ही उसने अपना कल्याण समझा। मथुरासिंह ने इसकी सम्भावना पर कश्मीर के गृहमंत्री को सावधान किया और परिणामस्वरूप कुरेशी भागती हुई पकड़ ली गई। उसके सूटकेस में से ऐसे प्रमाण मिल गए, जिससे उसका पाकिस्तान का जासूस होना सिद्ध हो गया।

मिस कुरेशी को पकड़कर दिल्ली भेजा जाने वाला था, किन्तु वह इससे पूर्व जम्मू जेल से ही भागने में सफल हो गई। इस पर राज्य के गृह-मंत्री और प्रधान-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में परस्पर झगड़ा हो गया। इस झगड़े का निपटारा किया भारत सरकार ने मथुरासिंह को सेना से मुक्त कराकर। यह मान लिया गया था कि यह लेफ्टिनेन्ट इतना कुछ जान गया है कि सरकारी उच्च पद पर रहते हुए वह उससे भयंकर परिणाम उत्पन्न कर सकता है। इसलिए उसको अयोग्य घोषित कर, सेना से निकाल दिया गया। प्रधानमन्त्री तो कशमीर में ही उसका कांटा साफ करना चाहता था परन्तु मथुरासिंह कशमीर राज्य की सीमा से बाहर निकलने में कामयाब हो गया था।

इस समय तक फ्लोरा गौर्ट मेन्शन में एक पुत्र को जन्म दे चुकी थी। कई मास बाद रोम में लेडी गौर्ट की मथुरासिंह से भेंट हुई। उस समय तक उसका बच्चा छः मास का हो गया था।

2

"फ्लोरा! तुमने तो बताया था कि तुम्हारे पति के साथ तुम्हारा यह समझौता हुआ हैं कि वह केवल एक ही सन्तान को स्वीकार करेगा, अधिक नहीं?"

"हाँ, यही समझौता हुआ था। किन्तु मैं और सन्तान प्राप्त करने की इच्छा नहीं करती। उस समय तो दो परिवारों के उत्तराधिकारी का प्रश्न था। अब दोनों परिवार बच्चे से खुश हैं। बच्चे की दादी और नानी दोनों ही उससे खेला करती हैं।"

"क्या उन दोनों को पता है कि वह सन्तान किसकी है?"

"मेरे विचार में किसी को भी इसका ज्ञान नहीं। उसका पिता तो जानता है, परन्तु नाना को केवल सन्देह ही है।"

"तो सम्भव है कि दूसरी सन्तान हो जाने पर नाना का सन्देह विश्वास में और पिता का रोष घृणा में बदल जाये और वह तलाक के लिए प्रार्थना कर दे।"

"यही तो मैं चाहती हूँ। तब मैं आपके पास भारत में आकर रहने के लिए स्वतन्त्र हो जाऊंगी। बोलिए, रखेंगे या नहीं?"

"तुम्हारी वर्तमान अवस्था में तो शायद राधा को भी आपत्ति न हो।"

"तब तो आपको कभी भी आपत्ति नहीं होगी।"

इस प्रकार मथुरासिंह और फ्लोरा में बात हो गई। फ्लोरा ने राधा से भी बात खोल दी। उसने कहा, "मैं आप लोगों के साथ घूमूंगी। अमेरिका भी आप लोगों के साथ ही जाने के विषय में मैं विचार कर रही हूँ।"

"परन्तु ऐसा कर सकोगी क्या?"

"यह मेरे कर सकने का प्रश्न नहीं है। आर्थिक दृष्टि से मैं सर्वथा स्वतन्त्र हूँ, मेरे पति में स्वयं इतने दोष हैं कि वह तलाक के लिए प्रार्थना करेगा ही नहीं और यदि कर भी दे तो मैं उसका कच्चा चिट्ठा खोलकर तलाक स्वीकार कर लूंगी। तब मैं राधा बहिन के साथ रह सकूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु हम तो देहात में रहते हैं? वहाँ तो किसी प्रकार की भी सुख-सुविधा प्राप्त नहीं है।"

"धन तो जंगल में भी मंगल कर सकता है परन्तु मैं तो यह पूछ रही हूँ कि राधा बहिन को तो इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है?"

"जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं तो आपके साथ रहने में तटस्थ हूँ अर्थात न नाराज़ हूँ न प्रसन्न हूँ परन्तु राम के पिता और तुम्हारी बात तुम दोनों जानो।"

वे लोग योरुप में घूमते रहे। प्रायः वे दो कमरों का सैट लेकर ही होटलों में ठहरते थे। एक फ्लोरा के लिए और दूसरा मथुरासिंह और राधा के लिए।

एक दिन इन लोगों में इंगलैंड जाने के विषय पर विचार हुआ। मथुरासिंह और राधा दानों को ही फ्लोरा के विचार सुनकर विस्मय हुआ। फ्लोरा उनके इंगलैंड जाने को पसन्द नहीं करती थी। मथुरासिंह ने पूछा, "क्यों क्या बात है वहाँ?"

"मैं समझती हूँ कि मेरे पिता भारत के विपरीत किसी महान् षड़यन्त्र में लीन हैं। अतः किसी प्रकार भी आपका उनके सम्पर्क में आना हितकर नहीं है।"

फ्लोरा के मुख से यह समाचार सुनकर मथुरासिंह को क्लैरा का कथन स्मरण हो आया। उसने कहा था कि वर्तमान समय में उसको कमाण्डर-इन-चीफ़ बना दिया जायेगा। मथुरासिंह ने क्लैरा की बात का किसी प्रकार उल्लेख न करते हुए उससे पूछा, "वह षड्यन्त्र क्या हो सकता है?"

"क्लैरा इसमें सक्रिय भाग ले रही है। भारत के एक महाराजा हैं जो इस पूर्ण योजना के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान कर रहे हैं।"

मथुरासिंह विचार कर रहा था कि वह राजा कौन हो सकता है। क्योंकि अधिकाँश राज्यों पर केन्द्रीय सरकार का अधिकार हो चुका था। केवल एक राज्य बचा था, किन्तु उसके शासन को राजा नहीं, निजाम कहा जाता था। इस कारण मथुरासिंह चाहता था कि वह इस षड्यन्त्र की रूप-रेखा को समझ ले। कदाचित् उससे वह अपने देश की कुछ सहायता कर सके। इसलिए उसने कहा, "मेरी इच्छा तो मिसेज स्टैनले से मिलने की थी?"

"इसके लिए मैं माँ को पेरिस पहुँचने को कह दूंगी। मैं नहीं चाहती कि आप इंगलैंड जायें।"

मथुरासिंह और राधा मुख देखते रह गए। यह बातचीत नारवे की राजधानी औसलोम में हुई थी। पेरिस पहुँचने से पहले फ्लोरा की सम्मति से मथुरासिंह ने वोनैस के लिए एक तार भेज दिया। उसने मिसेज स्टैनले को लिखा कि अनिवार्य कारणवश वह इंगलैंड नहीं आ सकता। यदि अवकाश हो और विशेष असुविधा न हो तो वे पेरिस आकर उन लोगों से भेंट कर जायें।"

तार भेजने के दो दिन बाद मिस्टर एण्ड मिसेज स्टैनले पेरिस आ गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरासिंह ने मिस्टर स्टैलने से मिलने की कोई इच्छा व्यक्त नहीं की थी। इस पर भी वह आया। मथुरासिंह को इस पर आश्चर्य नहीं हुआ। उसे ऐसी आशा पहले से ही थी। कर्नल स्टैनले के उस पत्र को पढ़कर, जो उसको भारत में मिला था और क्लैरा की बातचीत से वह समझ चुका था कि उससे किसी राजनीतिक कार्य में सहयोग की अपेक्षा की जा रही है।

प्रथम मिलन के बाद कर्नल स्टैलने मथुरासिंह को औपेरा दिखाने के बहाने औरतों से पृथक् ले गया। कुछ देर तक तो वे वहाँ बैठे रहे फिर मथुरासिंह से कहा, "मुझे तो यह पसन्द नहीं आ रहा।"

"तो चलो कहीं बैठकर कॉफ़ी पियें।"

मथुरासिंह समझ रहा था कि विषय-विशेष पर बातचीत होने वाली है। वह इसके लिए तैयार था। दोनों औपेरा हाउस से निकलकर समीप ही एक रैस्टारेंट में जा बैठे। कॉफ़ी का आर्डर देकर स्टैलने ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "फ्लोरा आप लोगों को कहाँ मिली।"

रोम से वह हमारे साथ-साथ है। उसने बताया था कि वह युरोप और अमेरिका भ्रमण के लिए घर से निकली थी।"

"परन्तु आप लोगों के साथ-साथ क्यों जा रही है?"

"इसे हमारे पुराने परिचय के कारण ही समझना चाहिए। मैं तो इतने महंगे होटलों में, जहाँ वह हमको ले जाती है, ठहरने का सामर्थ्य नहीं रखता। हमारे होटलों में ठहरने और खाने का बिल प्रायः वह दे देती है।"

"इसका अर्थ तो यही समझना चाहिए, कि वह अभी भी आपके सम्मोहन में फंसी हुई है।"

"हो सकता है मिस्टर स्टैनले! इस विषय में आप उसी से बात करें। अपने मन की बात तो वही बता सकती है।"

"मैंने आपको भारत में एक पत्र भेजा था, उसके उत्तर में आपने लिखा था कि भारत से प्रस्थान करते समय आप इस विषय में लिखेंगे किन्तु उसके बाद आपका कोई पत्र नहीं आया।"

"मैंने युरोप पहुँच कर आपको सही समय की सूचना देनी थी परन्तु पेरिस में पहुँच राधा को यहाँ की शीत के कारण कष्ट हो रहा था अतः आपको तार दे दी थी। हम यहाँ से किसी उष्ण देश को भाग जाना चाहते हैं। इसी कारण इंगलैंड जाने का कार्य-क्रम स्थगित कर दिया गया है।"

"मेरे ख्याल से इन दिनों इंगलैंड का मौसम राधा को बहुत ही सुहावना प्रतीत होगा।"

"मैं उससे बात करूंगा, यदि वह मान गई तो आ जाऊंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमें वहाँ आपकी भारी आवश्यकता है।"

"किस काम के लिए?"

"हम एक सैनिक अभियान चलाना चाहते है। उस अभियान में आपके सहयोग की आवश्यकता है।"

"कर्नल स्टैनले! जब तक मुझे यह विदित न हो जाये कि वह अभियान कैसा है और किस निमित्त चलाया जाने वाला है, तब तक मैं उसमें सहयोग देने का वचन नहीं दे सकता।"

"मैंने तो सुना है कि अब आप भारत सरकार की नौकरी में नहीं हैं?"

"हाँ, यह आपने ठीक ही सुना है।"

"और आपको सेना से अपमानित कर निकाला गया है?"

"अपमानित तो नहीं कहा जा सकता, हाँ सेना में अब वे अधिकारी कार्य नहीं कर सकते, जिनका सरकार से मत-भेद है। कश्मीर-अभियान के विषय में मैंने अपना मत कभी अपने अधिकारियों से छिपाकर नहीं रखा। आरम्भ में तो वह मतभेद साधारण समझ कर मुझे सेना में रख लिया गया। बाद में वही मत-भेद मौलिक प्रतीत होने लगा तो मैं स्वयं वहाँ रहना अवांछनीय समझने लगा और सरकार ने भी मुझे सेना में रखना अनुचित समझ लिया।"

"परन्तु मुझको बताया गया है कि आपकी हत्या करने का यत्न किया गया था?"

"मुझे इसका कोई ज्ञान नहीं है। किसी ने मुझे बताया अवश्य था कि मेरे पीछे हत्यारे लगे हुए हैं परन्तु मैं अभी तक जीवित हूँ। वैसे भी हमारे यहाँ कहावत है न—जा को राखे साइयाँ, मार सके नहिं कोय।"

"परन्तु मुझे यह सब विदित है और मैं समझता हूँ कि आपका भारत में रहना सुरक्षित नहीं।"

"क्या यह सालूम और बेनगाज़ी से भी अधिक अरक्षित है? जिसने वहाँ बचा कर रखा था, वह कहीं भी मेरी रक्षा करेगा। और यदि मेरे मरण का समय आ गया है तो फिर कोई भी शक्ति मेरी रक्षा नहीं कर सकती।"

स्टैनले हँस पड़ा। उसने पूछा, "यदि तुम इतने फैटेलिस्ट हो तो फिर रेल की पटरी पर जाकर लेट जाओ और देखो, वहाँ तुम्हें कौन बचाता है?"

"स्वयं तो मैंने कभी ऐसा करके देखा नहीं। हाँ, दूसरों को मरने का यत्न करते सुना है और चमत्कारिक ढंग से उन्हें बचते भी सुना है। इस पर भी मैं हिन्दू जीवन-मीमाँसा के बारे में बताता हूँ। हम यह मानते हैं कि मनुष्य अपने स्वभाव के अधीन कर्म करता है। स्वभाव पूर्व-जन्म के कर्मो ओर इस जन्म के संस्कारों से बनता है। ये संस्कार कर्मों के परिणाम हैं और कर्मफल के अनुसार कार्य करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर भी मनुष्य में एक वस्तु और है, वह है बद्धि। जन-साधारण में तो बुद्धि भी स्वभाव के अधीन हो जाती है और स्वतन्त्र रूप में कार्य नहीं कर सकती। परन्तु ध्यान, चिन्तन और विवेक से बुद्धि स्वभाव पर नियन्त्रण रखने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेती है, तब मनुष्य स्वभाव को अपने अधीन कर स्वतन्त्र-रूपेण कार्य करता है।

"मैं भी स्वभाववश कार्य करता हूँ। मेरे संस्कार क्षत्रिय-परिवार के हैं। युद्ध में लड़ते हुए मैं सुख का अनुभव करता हूँ। परन्तु ध्यान एवं योग इत्यादि अनेक उपायों से मैंने अपनी बुद्धि को परिष्कृत और शक्तिसम्पन्न करने का प्रयास किया है। इससे बहुत हद तक मैंने अपने स्वभाव पर नियन्त्रण करना सीख लिया है। कोई भी कार्य स्वभाव के अनुकूल होता हुआ भी मैं उसे अपनी बुद्धि से विचार करने के उपरान्त ही करता हूँ।

"मेरी बुद्धि और मेरे संस्कार मुझे आत्महत्या की प्रेरणा नहीं देते। किन्तु ये मुझे धर्म के लिए युद्ध करने की प्रेरणा देते हैं।"

स्टैनले जानता था कि मथुरासिंह को समझाने के लिए सावधानी से युक्ति करने की आवश्यकता है। इसलिए उसने धीरे-धीरे, नपे-तुले शब्दों में कहना आरम्भ किया, "इंगलैंड के कुछ राजनीतिज्ञों का यह मत है कि कांग्रेस और उसके नेताओं के हाथ में, भारत का राज्य धर्म का राज्य नहीं है। कांग्रेस राज्य भारत को घोर विपत्ति में डाल रहा है। इंगलैंड की वर्तमान सरकार ने कांग्रेस को अपना उत्तराधिकारी माना है। जहाँ उसकी उत्तराधिकारी, भारत की सरकार भारत को तबाह करने पर तुली हुई है, वहाँ इंगलैंड को भी समुद्र में डुबो रही है।

"इस कारण इंगलैंड और भारत के कुछ विद्वानों और सैनिक प्रवृति के लोगों ने एक 'भारत बचाओ समिति' का गठन किया है। इस समिति का मत है कि यदि भारत बच गया तो इंगलैण्ड भी बच जायेगा।"

"परन्तु कर्नल स्टैनले! ये राजनीतिक कार्य दो धुरियों पर चलते हैं। एक तो सेना के बल पर और दूसरे जनता के बल पर। दोनों का बल परस्पर मिल जाये तो ही सफलता निश्चित है। आप लोग किस बल के भरोसे कार्य कर रहे हैं?"

"हम तो धन-बल के भरोसे कार्य कर रहे हैं।"

"इसका अभिप्राय तो यही हुआ कि आपकी समिति को आर्थिक सहायता देने वाला कोई राज्य हो सकता है। वर्तमान अवस्था में अमेरिका के अतिरिक्त पृथ्वी पर अन्य ऐसा कोई राज्य नहीं है जो भारत-जैसे विशाल देश में क्रान्ति करने की क्षमता रखता हो।"

"धन तो भारत में ही बहुत है। इतने बड़े देश में धन की कमी नहीं है।"

"यह तो ठीक है, परन्तु धन के शक्ति-युक्त होने के लिए इसका एक स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर एकत्रित होना आवश्यक है।

"देखिए, जैसे वायुमण्डल में अगाध जल भरा होने पर भी वह व्यर्थ होता है, उससे कोई लाभकारी कार्य नहीं हो सकता परन्तु जब वह एकत्रित होकर मेघों का रूप धारण कर लेता है तो बरसता है और उसमें हानि अथवा लाभ करने का सामर्थ्य उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार धन का भी एक स्थान पर एकत्रित होना परमावश्यक है।"

"वह एक स्थान पर ही एकत्रित है। दुनिया के सबसे अधिक धनी दो व्यक्ति हमारी समिति के सदस्य हैं।"

"कौन है वे?"

"यदि आप यह वचन दें कि किसी को बतायेंगे नहीं तो मैं नाम बता सकता हूँ।"

"हाँ, मैं आपके द्वारा दी गई सूचना को गुप्त रखूंगा।"

"एक हैं हैदराबाद के निज़ाम और दूसरे सर आगा खां हैं। दोनों का धन मिलाकर पृथ्वी के किसी भी राज्य से कम नहीं है।"

मथुरासिंह जिस बात की आशा करता था वही बात सामने आ गई। हाँ, सर आगा खाँ का नाम उसके लिए अप्रत्याशित था। उसने कुछ विचार कर कहा, "ये तो दोनों ही व्यक्ति भारतवर्ष में बदनाम हैं। दोनों मुसलमान हैं। इनको न तो सेना का सहयोग प्राप्त हो सकता है और न भारतवर्ष की जनता का।"

"इसी के लिए तो हम आपकी सेवायें चाहते हैं। हम चाहते हैं कि कोई इतिहास और सैनिक-विज्ञान का ज्ञाता हिन्दू भी हमारी समिति में सम्मिलित हो जाये तो दो तीन हिन्दू राजाओं को भी साथ लाकर सफलता की आशा कर सकते हैं।"

"यह बात विचारणीय है और इसके लिए वातावरण बनाने की आवश्यकता है। परन्तु ये तो दोनों व्यक्ति भारत में बदनाम हैं, इनके नाम पर कुछ नहीं किया जा सकता।"

"हमारा विचार तो इनको पर्दे के पीछे छिपाकर रखने का ही है। परन्तु एक मूर्ख तो हिन्दुस्तान का शहंशाह बनने के स्वप्न ले रहा है और दूसरा वहाँ पर अपने मत का प्रसार करने की इच्छा रखता है। इसी कारण हम चाहते हैं कि आप हमारी समिति में सम्मिलित होकर निष्ठावान रहने की शपथ ग्रहण कर लें तो हम यह अपार धन आपके हाथ में रख सकते हैं। यदि इस षड्यन्त्र का नेतृत्व आप अपने हाथ में ले लें तो भारत और पाकिस्तान मिलकर पुनः हिन्दुस्तान बन सकता है। कश्मीर का झगड़ा एक क्षण में समाप्त हो जायेगा और हिन्दुस्तान एक ऐसी शक्ति बन जायेगा जिसका मुकाबला दुनिया में कोई नहीं कर सकेगा।"

"आप लोगों ने अभी तक क्या किया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम अभी तक दो कार्यों में लगे हुए हैं। एक तो अमेरिका और इंगलैंड से शस्त्रास्त्र प्राप्त करना। इस कार्य में हमें सफलता मिल रही है। दस सहस्र मिलियन पौंड का आर्डर हमने इंगलैंड के एक कारखाने को दे दिया है। ये लोग इंगलैंड की सरकार से राय कर रहे हैं। लगभग इतना ही आर्डर हम अमेरिका में देना चाहते हैं। परन्तु इसके लिए एक हिन्दू नेता, राजा या महाराजा की आवश्यकता है।"

"अभी तक आपने भारत में किसी से सम्पर्क नहीं बनाया?"

"भारत में कोई वास्तविक नेता नहीं है। अंग्रेज ने वहाँ सैनिक-प्रतिभा उत्पन्न करने का यत्न नहीं किया। क्योंकि अंग्रेज अधिकारी हिन्दुस्तानियों की सैनिक प्रतिभा से डरते थे। इस कारण जब भी किसी में इस प्रकार की प्रतिभा देखी गई, उसको दबा दिया गया। यही बात तो आपके साथ भी हुई।

"सर आकिनलेक से आपका झगड़ा हुआ और उसने एक क्षण में ही यह निश्चय कर लिया कि आपको न केवल निकाल दिया जाय अपितु आपका सेना से सम्पर्क भी स्थापित न हो पाये।

"यह तो सरदार पटेल ने आपको पुनः कश्मीर अभियान में सम्मिलित कर लिया। आपके विषय में ही वाद-विवाद होने पर आकिनलेक अपने पद से त्याग-पत्र देकर वापस चले आये। आप पर नियन्त्रण रखने के लिए कश्मीर के प्रधान-मंत्री को सर्तक किया गया और फिर आपके पीछे एक पाकिस्तानी जासूस मिस कुरेशी को लगा दिया गया।

"बड़ी कुशलता से आप वहाँ से बचकर निकल आये हैं। हम सभी अंग्रेज लोग जो इस समिति में हैं, आपको इस कार्य के लिए उचित समझते हैं।"

"आप भारत अथवा पाकिस्तान में किस प्रकार का राज्य चाहते हैं?"

"राजनीतिक विषयों में भविष्यवाणी करना असम्भव है। इस पर भी हम चाहते है कि प्रथम वहाँ सैनिक तानाशाही स्थापित हो। इस तानाशाही के काल में वहाँ आर्थिक और तकनीकी उन्नति होनी चाहिए। इसमें बीस वर्ष लग जायेंगे। तदनन्तर वहाँ पर जनतन्त्र स्थापित हो जाय। जनतन्त्र स्थापित होने के पूर्व ही भारत में मुसलमानों की अल्प संख्या को समानान्तर कर दिया जायेगा। तब एक सन्तुलित प्रजातन्त्र सफल हो सकेगा।"

"वहाँ पर कितने सैनिक और असैनिक नेता बन चुके हैं जो इस योजना को चला सकते हैं?"

"यह तो आपको वहाँ जाकर ही पता चलेगा। अभी मैं एक व्यक्ति का नाम बता सकता हूं। वह है 'कासिम रिजवी'। यह एक प्रतिभाशाली वकील है। परन्तु अब वकालत छोड़, हैदराबाद में निजी सेना का संगठन कर रहा है।"

इस सब रहस्योद्घाटन से मथुरासिंह को विस्मय नहीं हुआ। उसको यह सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के मुसलमानों का षड्यन्त्र प्रतीत हुआ। सदा की भांति मूर्ख और अदूरदर्शी ब्रिटिश राजनीतिज्ञ बहुमत से मित्रता न स्थापित कर अल्पमत से मित्रता कर रहे थे। इसका परिणाम बहुमत को हानि पहुँचाना तो हो जाता है, परन्तु इससे न तो ये अपना हित कर सकते थे, न ही ये अपनी योजना में सफलता प्राप्त कर सकते थे।

मथुरासिंह विचार करता था कि इस षड्यन्त्र में इतने दूर तक जाने के बाद वह एकदम इनकार नहीं कर सकता। उसने कहा, ''मिस्टर स्टैनले! आपने अपनी योजना का धुंधला-सा जो चित्र मेरे सम्मुख प्रस्तुत किया है, यह गम्भीर विचार करने की बात है। मैं भारत लौटकर वहाँ की परिस्थिति से अवगत होकर किसी निश्चय पर पहुँच सकता हूँ।

''यदि मैं आपकी इस योजना में सम्मिलित हुआ तो मैं इसका स्पष्ट चित्र बनाने का यत्न करूंगा और फिर इसके लिए अपनी जान की बाजी लगा दूंगा।''

''यह सब कुछ, जो मैंने आपको बताया है, आप इसे किसी को न बताने के लिए वचनबद्ध हैं?''

''हाँ, यह क्षत्रिय का वचन है, आप इस विषय में निश्चिन्त रहें।''

''अब आप लोगों का किधर जाने का विचार है?''

''मेरी इच्छा तो मिसेज स्टैनले के आतिथ्य का आनन्द प्राप्त करना था। परन्तु राधा के स्वास्थ्य का विचार कर मैंने अपना कार्यक्रम बदल दिया है। यहाँ से मैंड्रिड, लिजबन, और अमेरिका के मुख्य-मुख्य स्थानों का भ्रमण कर जापान और वहाँ से भारत। पहले तो यह भी विचार था कि न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया जायेंगे, परन्तु अब विचार बदल गया है।''

''इसका मतलब यह है कि अभी दो महीने तो लगेंगे ही?''

''हाँ, इससे कुछ अधिक काल भी लग सकता है।''

''तो ऐसा करिए, वहाँ जाकर लिखिए, यदि आपकी इच्छा हुई तो मैं रिजवी के नाम पत्र दे दूंगा।''

मथुरासिंह इससे गम्भीर हो गया। मानो वह इस योजना की सफलता और असफलता पर विचार कर रहा हो। मन में तो वह निश्चय कर ही चुका था कि वह इस षड्यन्त्र में सम्मिलित नहीं होगा। इस पर भी वह चुपचाप गम्भीर विचारों में मग्न बैठा रहा।

स्टैनले ने सहसा बात बदलकर पूछा, ''मिस्टर सिंह! एक बात पूछूँ?''

''हाँ, पूछिए।''

''फ्लोरा का तुमसे कैसा सम्बन्ध है?''

''आप तो जानते ही हैं कि एक समय मेरे साथ उसकी मंगनी हुई थी। बाद में मेरे मरने के समाचार से और दो परिवारों को उत्तराधिकारी देने के लिए उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विलियम से विवाह किया था। तब से उसका मेरा परस्पर-मैत्री का ही सम्बन्ध है।"

"मुझे सन्देह है कि क्लीवमौंट तुम्हारा पुत्र है।"

"क्यों है ऐसा सन्देह?"

"इसलिए कि उसकी आँखों में वही प्रभा है, जो तुम्हारी आँखों में है। उसका माथा गौर्ट-परिवार का नहीं है। वह किसी हिन्दुस्तानी का-सा लगता है।"

"मैंने तो लड़के को देखा नहीं, इसलिए मैं कुछ नहीं कह सकता।"

"परन्तु एक बात तो तुम बता सकते हो कि तुम्हारा उसके साथ सम्पर्क रहा है अथवा नहीं?"

"इस बात को फ्लोरा की माता फ्लोरा से पूछकर अच्छी प्रकार जान सकती है। यूरोप में ऐसी कौन लड़की अथवा औरत है जो अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष से सम्बन्ध न रखती हो?"

"फ्लोरा की माँ के विषय में मुझे विश्वास है।"

"मैं गलती मानता हूँ। मेरा मतलब 'मौम' से नहीं है। मैंने तो यूरोप की सामान्य अवस्था का ही वर्णन किया है। आप तो देखते ही है कि यहाँ के स्टेशनों पर, होटलों और न्यूज पेपर स्टाल पर सन्तान-निरोधक उपकरण खुले रूप में बिकते हैं।"

"तो वह तुमसे सम्पर्क रखती है?"

"मैं समझता हूँ कि आप इस विषय में बातचीत मुझसे न कर लार्ड गोर्ट या फ्लोरा से पूछकर उनका विश्वास करें।"

"मैंने एक बार आपकी पत्नी राधा के विषय में आपसे कुछ कहा था। तब वह कुमारी थी। क्या मैं अब यत्न कर सकता हूँ।"

"मैं तो इस विषय में आपको यही सम्मति दूंगा कि आप ऐसा न करिए।"

"क्यों?"

"इसलिए कि उसके पास सदा भरा हुआ पिस्तौल रहता है और वह हिन्दुस्तानी परम्पराओं से भली भांति परिचित है। उसकी उन परम्पराओं पर पूरी निष्ठा भी है।"

"तो क्या आप हिन्दुस्तानी नहीं हैं?"

"हाँ, हूँ क्यों नहीं। हमारी परम्परा तो यही है कि अपने पति के अतिरिक्त स्त्री किसी अन्य को अपना शरीर अर्पण नहीं कर सकती। किन्तु पुरुष विशेष परस्थितियों में एक से अधिक विवाह कर सकता है।"

"मैंने सुना है कि हिन्दुस्तान में भी अब एक-पत्नीत्व का विधान बन रहा है?"

"हाँ, कुछ लोग इसके लिए यत्न कर रहे हैं। परन्तु वे तो एक सामाजिक रीति में सुधार कर रहे हैं। मानव-प्रकृति को वे बदल नहीं सकते और कदाचित् बदलने का यत्न भी नहीं कर रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि ऐसा हुआ तो फिर भारत में भी वही होने लगेगा, जो यूरोप और अमेरिका में हो रहा है। विवाहिता पत्नी तो एक ही होगी, किन्तु अविवाहिता पत्नियाँ अनेक होंगी।"

"स्टैनले ने बात बदलकर कहा, "हम अपने वार्तालाप के विषय से दूर निकल गए हैं।"

"हाँ, किन्तु हमारा मुख्य वार्तालाप तो समाप्त हो चुका है।"

"मुख्य बात तो यही थी कि मैं यह जानने आया था कि हमारे उत्तराधिकारी में विशुद्ध अंग्रेजी रक्त है अथवा उसमें किसी हिन्दुस्तानी के रक्त का समावेश हुआ है।"

"मेरा खयाल है इसके लिए आपको क्लीवमौंट के रक्त का माइक्रोस्कोपिक परीक्षण करना होगा। यदि उसमें आपको तनिक भी हिन्दुस्तानी अंश दिखाई दे तो उसे हिन्दुस्तान भेज दीजियेगा।"

"कहाँ भेज दूँ?"

"उसकी माँ जिसे उसका पिता बताए।"

"आप नहीं जानते?"

"मैं तो कह रहा हूँ कि आज यूरोप में कौन किसका पिता है और कौन किसका पति, यह कहना कठिन है। पिछले युद्ध में पचास लाख युवक मर गए थे और इतनी ही युवतियाँ बिना साथियों के घूम रही हैं। यह ठीक है कि निरोध सामग्री प्राप्य है, परन्तु फिर भी अविवाहित माता-पिता की सन्तानों की संख्या में अपार वृद्धि हुई है।"

3

फ्लोरा और उसकी माँ के मध्य भी क्लीवमौंट के विषय में बातचीत हुई दोनों होटल में फ्लोरा के कमरे में बैठे थे। राधा अपने कमरे में थी। वह विचार-मग्न बैठी थी। उसको अपने पति के जीवन के विषय में भय लग रहा था। वह समझती थी कि फ्लोरा के पिता को सन्देह है कि फ्लोरा का लड़का उसके पति से है। वह इसी विषय में उससे बात करने के लिए आया है और इसी प्रयोजन से उसको औपेरा में लेकर भी गया है। इससे यह विचार कर रही थी कि पति के आते ही वह उसको लेकर कहीं अन्यत्र चल देगी।

उधर फ्लोरा के कमरे में बैठी हुई उसकी माँ उसको समझा रही थी, "फ्लोरा! तुम इस तरह सिंह के साथ घूमती हुइ बदनामी सहेज रही हो।"

"माँ! क्या विलियम से भी अधिक? वह तो अपनी दो रखेलों के साथ अमेरिका में मौज कर रहा है। यह तुम भली-प्रकार जानती हुई भी ऐसी बात कर रही हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु बेटी! वह तो पुरुष है। हम औरतों को तो इस विषय में बहुत सावधान रहना चाहिए।"

"क्यों?"

"वे पशु होते है, इसलिए। तुमको तो विदित ही है कि तुम्हारे पिता का विलियम की माता से सम्बन्ध है, परन्तु मैं तो ऐसा नहीं कर सकती।"

"माँ! मैं मिस्टर सिंह से प्रेम करती हूँ। मेरा उनसे विवाह भी निश्चित हो चुका था। परमात्मा ने उनको जीवित रखा परन्तु पापा ने इस बात को मुझसे छिपाकर रखा और यह बात मुझे तब तक नहीं बताई जब तक कि विलियम से मेरा विवाह नहीं हो गया। न केवल यही अपितु मिस्टर सिंह को जहाज में कैद करवा कर भी रखा, जिससे कि वे पिताजी को देखकर पहचान न लें। यदि मुझे विवाह से पूर्व यह शुभ समाचार विदित हो जाता, तो कभी भी विलियम से विवाह स्वीकार नहीं करती।

"इस पर भी मैं सन्तोष कर रही थी। परन्तु विलियम ने अकारण मेरे साथ दुर्व्यवहार आरम्भ कर दिया। मैं तो उसकी निष्ठावान पत्नी बनी रही और वह मुझे छोड़कर अन्य औरतों के पीछे भागता रहा। कई वर्ष से उसने मुझे छुआ भी नहीं। आखिर मुझसे नहीं रहा गया और मैंने विलियम से तलाक देने के लिए कहा। उसके इन्कार पर मैंने मिस्टर सिंह से सम्बन्ध बनाया और चाहा कि विलियम मुझे तलाक दे दे। उसने तब भी तलाक नहीं दिया। मेरा बच्चा अब छः मास का हो रहा है, विलियम को विदित है कि बच्चा किसका है। इस पर भी वह तलाक के लिए यत्न नहीं करता। क्योंकि वह मुझे सताना चाहता है। बताओ, इसके अतिरिक्त मैं क्या करूं?"

माँ अवाक् बैठी रह गई। वास्तव में वह यह सब-कुछ अनुभव कर रही थी। अब लड़की ने स्वयं अपने मुख से इस रहस्य का उद्घाटन कर दिया था। उसका अपनी लड़की के प्रति अपार स्नेह था और वह उसकी बात में यथार्थता का अनुभव भी करती थी।

इस अवस्था का जब उसकी समझ में कोई उपयुक्त सुझाव नहीं आया तो उसने इस विषय को बदलते हुए फ्लोरा से पूछा, "तुम बोनैस में कब वापस आ रही हो?"

"इस समय तो मैं पहले मिस्टर सिंह के साथ ही अमेरिका जा रही हूँ और यदि सम्भव हुआ तो फिर भारत भी जाऊंगी।"

"मुझे भय है कि विलियम मिस्टर सिंह को द्वन्द्व की चुनौती दे देगा।"

"तो वे लार्ड गौर्ट की हत्या कर देंगे। परन्तु मुझको विश्वास है कि वह कायर चुनौती भी नहीं दे सकेगा।"

माँ समझ गई कि उसकी लड़की अपने पति के विषय में किस प्रकार के विचार रखती है। वह चुप रही। उसने स्वयं को काल के प्रवाह में छोड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टैनले और सिंह अभी लौटकर नहीं आये थे। फ्लोरा राधा को लेकर नोटरी डेम के विख्यात गिरजाघर को देखने के लिए चली गई। मिसेज स्टैनले अब अकेली रह गई तो नदी के किनारे पर बने प्लेटफार्म पर टहलने के लिए चली गई।

मिस्टर सिंह और स्टैनले जब होटल लौटे तो वहाँ किसी को भी न पा रिसेप्शन हाल में जा बैठे।

स्टैनले का पेरिस में जो कार्य था, वह समाप्त हो गया था। अतः वह अगले दिन इंगलैंड लौट जाने की बात करने लगा। फ्लोरा की माँ अपनी लड़की के साथ रहना चाहती थी। उसका अचेतन मन उसको लड़की के साथ रहने की प्रेरणा दे रहा था।

सायं-काल की चाय फ्लोरा के कमरे में ही पी गई। चाय पीते हुए उसकी माँ ने अपने विचार बताते हुए अपने पति को सम्बोधित किया, "डार्लिंग! फ्लोरा अमेरिका-भ्रमण के लिए कह रही है?"

"क्यों, फ्लोरा?"

"हाँ पापा! मेरा मन करता है कि मिस्टर सिंह को अमेरिका की सैर करा दूँ।"

"और क्लीवमौंट?"

"वह अपनी दादी और नानी की देख-देख में संसार में चलना सीख रहा है।"

"परन्तु इस अवस्था में अकेले भ्रमण के लिए जाना उचित प्रतीत नहीं होता।

"पापा! आप तो आज से पचास वर्ष पहले जमाने की-सी बातें कर रहे हैं। वह विक्टोरियन युग था। अब 1948 है। औरतों ने इस अवधि में बहुत-कुछ अधिकार प्राप्त कर लिए हैं और शेष के लिए वे यत्न कर रही हैं।"

"देख लो, अपने किये के लिए तुम ही उत्तरदायी हो। मैं इसमें हस्तक्षेप करना नहीं चाहता।"

"पापा! आपको हस्तक्षेप करना भी नहीं चाहिये। यह विषय मेरे और मेरे पति के बीच का है। इस विषय में हम स्वयं ही निश्चय कर लेंगे।"

उसकी माँ ने पूछा, "क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूँ?"

"हाँ, यदि पापा आपको चलने की अनुमति देते हैं तो आप मेरे साथ चल सकती हैं। यदि हो सका तो हम हिन्दुस्तान भी जायेंगे।"

"हिन्दुस्तान?" विस्मित-सा स्टैनले ने पूछा।

"क्यों, वह क्या बहुत दूर है?"

"नहीं, दूर की बात मैं नहीं कर रहा। मैं तो तुम्हारी माँ की बात कर रहा हूँ। क्या वह भी तुम्हारे साथ जायेगी?"

"हाँ।" मिसेज स्टैनले ने कह दिया।

मथुरासिंह विचार कर रहा था कि स्टैनले से भारत के विरुद्ध किये जाने वाले षड्यन्त्र का ज्ञान तो हुआ, किन्तु भारत के कौन-कौन से व्यक्ति इसमें सम्मिलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं अथवा सहयोग दे रहे हैं, यह पता नहीं चल सका।

वह इस विषय में और जानकारी प्राप्त करने की इच्छा करता था। इस पर भी वह यह नहीं चाहता था कि स्टैनले पर उसकी ओर से इस प्रकार की कोई उत्सुकता प्रकट हो जाय। इस कारण वह चुप था।

अगले दिन प्रातःकाल के अल्पहार से पूर्व ही मथुरासिंह के कमरे में फ्लोरा आई और मथुरासिंह को अपनी पूजा में व्यस्त देख राधा के पास बैठ गई।

राधा ने सोचा उसके पति के ध्यान में विघ्न पड़ेगा, इसलिए फ्लोरा को लेकर वह बाहर बदामदे में आ गई। दोनों के बैठ जाने पर फ्लोरा ने कहा, "मैं मिस्टर सिंह के साथ एक अत्यावश्यक विषय पर विचार करने के लिए भेजी गई हूँ।"

"किसने भेजा है?"

"पापा ने।"

"मैं समझती हूँ कि उनसे तुम्हारे पापा की बात हो चुकी है और वे उन्हें अपने मन की बात बता भी चुके हैं।"

"एक नई स्थिति उत्पन्न हो गई है।"

"तो दस-पन्द्रह मिनट में वे पूजा से निवृत्त हो जायेंगे, तब बात कर लेना।"

"आप क्या समझती हैं, हमारा भ्रमण पर्याप्त नहीं हो गया?"

"फ्लोरा! हमारे जीवन में यह प्रथम और कदाचित् अन्तिम, भ्रमण है। मैं इस अवसर का पूर्ण लाभ उठाना चाहती हूँ।"

"यह अवसर तो फिर भी मिल जायेगा। मैं समझती हूँ कि इस समय मिस्टर सिंह को अपने देश लौट जाना चाहिए। वहाँ वे उसकी कुछ तो सेवा कर सकेंगे।"

राधा चुप रही। रात वह अपने पति के मुख से उसकी स्टैनले से हुई बात का सारांश सुन चुकी थी और अपने पति की इस विषय में अरुचि का ज्ञान भी उसको था। इस पर भी वह स्वयं इस विषय में कुछ कहना नहीं चाहती थी।

मथुरासिंह बाहर आया तो उनको वहीं बात करने के लिए, छोड़ राधा अपने कमरे में चली गई। फ्लोरा को देख सिंह ने पूछा, "फ्लोरा, अभी तो अल्पाहार का समय भी नहीं हुआ, तुम कैसे आ गई?"

"रात क्लैरा और उसके साथ कोई हिन्दुस्तानी सैनिक ऑफिसर यहाँ पहुँचे हैं। उनसे बातचीत कर पापा ने मुझे आपके पास भेजा है।"

"कौन है वह सैनिक अधिकारी?"

"नाम बताने की आज्ञा नहीं है। परन्तु मैं आपसे कोई बात छिपाकर रखना नहीं चाहती। उसका नाम है कैप्टन रहमान खाँ। वह मद्रास रेजिमेंट नम्बर 21 का ऑफिसर है और आजकल अवकाश पर है।"

"क्या चाहते हैं वे लोग?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वह लन्दन में पापा से मिलने के लिए गया था। वहाँ से क्लैरा उसको यहाँ ले आई है। वह कह रहा है कि अभी तक उनके षड्यन्त्र में केवल मुसलमान ही हैं, परन्तु हिन्दु एक भी उसमें आगे आकर नेतृत्व करने के लिए तैयार नहीं है। मिस्टर रहमान का यह कहना है कि यह बगावत हिन्दुस्तान में तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कुछ हिन्दू इसमें सम्मिलित न हो जायें। अतः वे एक प्रस्ताव लेकर आये हैं। वे लोग उस प्रस्ताव के अनुसार आपको हिन्दुस्तान का प्रथम गवर्नर-जनरल बनाने के लिए तैयार हैं। पहले तो आपको कमाण्डर-इन-चीफ़ बनाया जायेगा और प्रथम अवसर मिलते ही आपको गवर्नर-जनरल बना दिया जायेगा।

''आपको वहाँ के हिन्दुओं को इस बगावत के पक्ष में करना होगा और उन हिन्दू-मुसलमानों का एक साझा मोर्चा बनाना होगा जो भारत में कांग्रेस और पाकिस्तान में मुस्लिम लीग के विरुद्ध हैं। वे समझते हैं कि इन दोनों संस्थाओं के लोगों ने ही मिलकर देश का विभाजन करवाया है और दोनों अब इन दो टुकड़ों को लड़ाकर नष्ट कर देना चाहते हैं।''

''और इस राजनीतिक शतरंज में तुम क्या हो?''

''मुझे हिन्दुस्तान की महारानी बनाने का प्रस्ताव किया गया है।''

''और राधा?'' मुसकराकर मथुरासिंह ने पूछा।

''वह मेरी मलिका होगी।'' फ्लोरा ने हँसकर उत्तर दिया।

''तो फ्लोरा! अब तुम हिन्दुस्तान-जैसे विशाल देश की साम्राज्ञी पद के पथ पर प्रयाण करने का प्रयास करने लगी हो?''

''आप क्या समझते हैं कि मैं इस पद के योग्य नहीं हूँ?''

''योग्य तो हो सकती हो। परन्तु योग्यता ही तो सब कुछ नहीं होती। भाग्य भी तो होना चाहिये। मैं समझता हूँ कि पहले किसी ज्योतिषी से अपनी जन्म-पत्री दिखवा लो। तब बात चल सकती है। उसमें यदि फ्लोरा के हिन्दुस्तान की साम्राज्ञी बनने का योग होगा तो मैं समझ लूंगा कि मैं सम्राट् बनने की आशा कर सकता हूँ।''

''डियर!'' फ्लोरा ने गम्भीर होकर कहा, ''मैं समझती हूँ कि भाग्य ने हमको एक स्थिति में ला बैठाया है कि हम हिन्दुस्तान की एक तुच्छ सी सेवा करने के योग्य हो सकते हैं। मैं इसलिये आई हूँ कि आप रहमान खाँ से मिल लें। उससे षड्यन्त्र के विषय में अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त करें और चुपचाप हिन्दुस्तान जाकर यह सब रहस्य अपने गृहमंत्री के सामने रख दें।''

''और फ्लोरा के भारत की साम्राज्ञी बनने की बात?''

''उसके विषय में मैंने एक ज्योतिषी से पूछा है। मेरे भाग्य में एक अविख्यात परन्तु निष्ठावान पत्नी के रूप में मरने की बात लिखी है।''

''तो तुम्हारा क्या कहना है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप रहमान से मिलिए। भारत में इस आन्दोलन को चलाने के लिए वह लन्दन बैंक के नाम दस करोड़ रुपये का ड्राफ्ट लेकर आया है। शेष बात आप स्वयं ही उससे कर लीजिए।"

"अल्पाहार करने के बाद मैं उससे मिलने के लिए जाऊंगा।"

"क्लैरा ने ही आपको इस आयोजन में सम्मिलित करने के लिए मेरे नाम का सुझाव दिया है। उसने मिस्टर रहमान को बताया है कि मैं आप पर असीम प्रभाव रखती हूँ और यदि चाहूँ तो आपको इस कार्य के लिए तैयार कर सकती हूँ। मैं इस बात में हस्तक्षेप करना नहीं चाहती थी, परन्तु मेरे सम्मुख बड़े-बड़े प्रलोभन रखे गए हैं। वे प्रलोभन भी किसी प्रकार का प्रभाव मुझ पर उत्पन्न नहीं कर सके। हाँ, इसमें मैं आप को अपने देश के हित में कुछ भी योगदान देने का अवसर दिला सकने के विचार से आपसे बात करने के लिए चली आई थी।"

"देखो फ्लोरा! यद्यपि मैं भारत की वर्तमान सरकार के व्यवहार से सर्वथा असन्तुष्ट हूँ, तथापि सरकार का विरोध कर देश में क्रांति उत्पन्न करना या ऐसा प्रयास भी करना मैं ठीक नहीं समझता।

"भारत में प्रजातन्त्रात्मक राज्य स्थापित हो रहा है। वहाँ विचार और प्रचार की स्वतन्त्रता है। इस कारण इस सुविधा के रहते भारत में न तो क्रान्ति की आवश्यकता है ओर न ही उसकी सफलता की सम्भावना।"

प्रातः के अल्पाहार के बाद फ्लोरा के कमरे में कैप्टन रहमान से मथुरासिंह की बात हुई। इस वार्तालाप में पाँच व्यक्ति सम्मिलित थे। मथुरासिंह, स्टैनले, क्लैरा, फ्लोरा और कैप्टन रहमान।

कैप्टन रहमान की जन्म-भूमि हैदराबाद राज्यान्तर्गत लातूर नाम का एक स्थान था। पहले वह हैदराबाद स्टेट की सेना में कप्तान था। जर्मन-युद्ध के अवसर पर उसने अपनी सेवायें ब्रिटिश सरकार को दे दी थीं और अभी तक वह भारत की सेना के मद्रास रेजीमेंट में कैप्टन के पद पर नियुक्त था। आजकल वह छः मास की छुट्टी पर अपने गाँव गया हुआ था। वहाँ उसको इस षड्यन्त्र में सम्मिलित कर, लन्दन में एतदर्थ संगठित समिति से बातचीत करने के लिए भेजा गया था।

फ्लोरा के कमरे में बैठते ही रहमान ने अपना आशय वर्णन करते हुए कहा, "भारत में सब राजाओं को निःशेष कर दिया गया है। इसके बाद अब सभी जमींदारियों, बैंकों और व बड़े-बड़े उद्योगों को सरकार अपने अधीन कर लेगी। इस प्रकार भारत के उत्कृष्ट अंग को अकिंचन बनाकर सब कुछ निर्धन, अशिक्षित और अयोग्य व्यक्तियों में बाँट दिया जायेगा। यह तो देश को घोर पतन की ओर ले जाने का मार्ग बनाया जा रहा है।

"हम इसके विरुद्ध यत्न करना चाहते हैं। दुर्भाग्य से इस प्रयास को आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले मुसलमान हैं। परन्तु हम हिन्दुस्तान को सैक्युलर स्टेट बनाना चाहते हैं। साथ ही इन कांग्रेसियों और मुस्लिमलीगियों से भी इसे मुक्ति दिलाने की हमारी योजना है।

"लैफ्टिनेंट मथुरासिंह के विषय में मुझे हिन्दुस्तान में ही बताया गया था। इनका रिकार्ड देखने के लिए मैं दिल्ली गया था, वहाँ इनकी फाइल में सर विंसेंट चर्चिल का पत्र देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ।

"अपनी भारत की समिति ने मुझे यह आदेश दिया है कि लन्दन समिति के पास मैं दस करोड़ रुपया रख दूँ और प्रारम्भिक कार्य करने के लिए मिस्टर सिंह को दस लाख रुपया दिलवा दूँ। ये अपना काम लन्दन से ही आरम्भ कर सकते हैं। इनके तथा कुछ हिन्दू राजाओं के साथ आ जाने से हम भारत के बहुत से हिन्दुओं को अपने साथ जोड़ सकते हैं।"

"मुझसे पूर्व क्या कोई हिन्दू इस कार्य में सम्मिलित हुआ है?"

"मैं कई राजा-महाराजाओं से मिला हूँ। कुछ नेताओं से भी भेंट की है। एक कांग्रेसी नेता ने तो हमें आशीर्वाद दे दिया है।"

"वे क्या मौलाना हैं?"

"नहीं, मौलाना तो हमको सफल होता देख हमारे पीछे लगेगा। मेरा मतलब बुलबुले हिन्द से है। आप समझते हैं, वे हैदराबाद की रहने वाली हैं और हिन्दू-मुसलमान की संयुक्त संस्कृति की समर्थक हैं।"

"मुझे प्रथम तो भारत और पाकिस्तान के उन लोगों से मिलने का अवसर मिलना चाहिए, जो इस योजना में सहयोग दे रहे हैं।"

"हाँ, यह तो ठीक ही है। मैं आपको उन सब लोगों के नाम जो इस प्रयास में सहयोग दे रहे हैं व एक परिचय-पत्र दे देता हूँ। अभी आपको दस लाख रुपए का ड्राफ्ट लन्दन बैंक के नाम दे रहा हूँ, जिससे आप तुरन्त उन लोगों से सम्पर्क स्थापित कर सकें, जिन्होंने इस नौका को पार लगाने का वचन दिया है।"

"जब आप अपनी सैनिक-योजना बना लेंगे तो हम करोड़ों रुपया आपके पास रख देंगे, जिससे युद्ध की घोषणा की जा सके और अभियान आरम्भ हो सके। इसके लिए लन्दन, कराची और हैदराबाद इन स्थानों पर कार्यालय खोले जायेंगे।

कैप्टन रहमान के विश्लेषण से मथुरासिंह किंचित् भी प्रभावित नहीं हुआ। इस पर भी उसने दस लाख रुपये का ड्राफ्ट ले लिया। क्योंकि ड्राफ्ट स्वीकार कर वह स्टैनले और कैप्टन के सम्मुख अपनी इस कार्य के प्रति रुचि का प्रदर्शन करना चाहता था। वह अभी उनके मन में विश्वास जमाने का यत्न कर रहा था, जिससे कि वह अधिक-से-अधिक इस षड्यन्त्र का रहस्य जान सके।

उसी सायंकाल तक मथुरासिंह ने अपने मन में भावी योजना भी बना ली। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन तो लन्दन बैंक से वसूल करना चाहता था। उस दस लाख रुपये को वह इस षड्यन्त्र को विफल करने के लिए ही प्रयोग करना चाहता था।

सांयकाल उसने मिस्टर स्टैनले को अपनी योजना बताते हुए कहा, "मैं अपनी इस यात्रा को एकाएक रोक नहीं सकता। इस पर भी इसको शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करने के लिए मैं कल लिजवन के लिए यहाँ से चल दूंगा। इस प्रकार सभी स्थानों पर शीघ्रता कर, मैं पन्द्रह-बीस दिन में कलकत्ता पहुँच जाऊंगा और वहाँ एक मास में सब प्रमुख व्यक्तियों से मिलकर और कुछ पाकिस्तान तथा भारत के सैनिक-अधिकारियों से बात कर, अपनी योजना बना लूंगा।

"मैं आशा करता हूँ कि एक वर्ष में सेना में बग़ावत की आग सुलगाने में सफलता मिल जायेगी।"

स्टैनले और रहमान बहुत प्रसन्न थे। रहमान ने कहा, "हमारे लन्दन के कार्यालय की अध्यक्षा मिसेज क्लैरा वार्डी हैं। वार्डी स्वयं इस समय कराची में है। वह वहाँ इस योजना के लिए क्षेत्र तैयार कर रहे हैं।

"हमारा ध्येय है हिन्दुस्तान एक होगा और वहाँ सैक्युलर राज्य होगा दोनों देशों के कुछ नेता शासक के सम्मतिदाता होंगे।

"सबको मजहबी स्वतन्त्रता होगी। सबको आर्थिक स्वतन्त्रता होगी और सारे देश में एक कौम बनेगी। इस कौम में मजहबी स्वतन्त्रता होने से शान्ति से सब अपने मजहब और कारोबार में स्वतन्त्र होंगे।"

मथुरासिंह को एक लम्बी सूची दी गई। इसमें भारत और पाकिस्तान के बहुत से उन लोगों के नाम थे, जिनको क्रान्ति के लिए तैयार समझा जा रहा था।

फ्लोरा मध्याहनोत्तर तीन बजे आई और मथुरासिंह के मन की बात जानने के लिए पूछने लगी, "क्या कर रहे हैं अब?"

"वह कैप्टन अभी है या चला गया?"

"वह तो जाने वाला था, परन्तु पापा उसके लिए आज एक नाइट-क्लब का निमन्त्रण लेने के लिए गए हैं। यदि क्लब जाने की स्वीकृति मिल गई तो वह कल यहाँ से लन्दन और वहाँ से न्यूयार्क जाने का विचार कर रहा है। आपके भारत पहुँचने से पूर्व वह वहाँ पहुँच जायेगा और आपसे लातूर में मिलने की आशा करता है।"

"मेरी योजना यह है कि मैं यह ड्राफ्ट तुम्हारे नाम बदल देना चाहता हूँ। तुम इस रुपये को निकलवा लो। हम कल यहाँ से लिजबन के लिए चल देंगे। तुम अपनी माँ को वहाँ से लन्दन वापस भेज देना मैं हिन्दुस्तान लौट जाऊंगा। राधा यदि चाहे तो तुम्हारे साथ अमेरिका जापान के रास्ते भारत आ सकती है और चाहे तो पीछे आराम से वहाँ से ही लौट सकती है। मैं हिन्दुस्तान में जाकर इस षड्यन्त्र को विफल करने का यत्न करूंगा। मैं रहमान से पहले ही वहाँ पहुँच जाना चाहता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्लोरा ने ड्राफ्ट ले लिया और लन्दन अपने खाते में जमा करने के लिए भेज दिया। फ्लोरा को अपनी माँ को लन्दन वापस भेजने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उसने कह दिया कि न्यूयार्क से वापस बोनैस में पहुँच जायेगी। परन्तु राधा को मथुरासिंह से पृथक् करने में कठिनाई हुई। राधा मानती नहीं थी। वह अपने पति के साथ ही भारत लौट जाना चाहती थी। मथुरासिंह के बहुत समझाने पर कि अपने पीछे लगे हुए किसी भी जासूस को वह वंचिका देना चाहता है, राधा मानी। लिज़बन में एक 'पान' हवाई जहाज में सीट मिलते ही राधा और फ्लोरा को वहीं छोड़, मथुरासिंह भारत के लिए चल पड़ा।

राधा का मन डरता था। अपने पति के बिना वह इस विशाल संसार में स्वयं को एकाकी अनुभव करती थी। जब उसने लिज़बन के हवाई अड्डे पर मथुरासिंह को भारत के लिए विदा किया तो उसका हृदय भीतर-ही-भीतर बैठने लगा। फ्लोरा तो प्रसन्न थी। किन्तु हवाई अड्डे से लौटते हुए राधा पीत-मुख, तरल नेत्र, अस्थिर पग उसके साथ-साथ चली आ रही थी। जब वे दोनों टैक्सी में बैठी तो फ्लोरा ने पूछा, ''राधा बहिन! बहुत दुःख हो रहा है उनके जाने पर?''

राधा कुछ नहीं बोली। अपने बैग में से रूमाल निकाल वह आँखें पोछने लगी। फ्लोरा ने उसकी पीठ पर हाथ रख उसे अपने समीप खींच लिया और उसे सान्त्वना देने लगी। उसने समझाया, ''देखो राधा! वे किसी कार्य विशेष से गए हैं। इस कार्य में उनका निजी स्वार्थ नहीं है इसलिए उनके जाने से हमें जो कष्ट होगा, उसे भी हमें उस कार्य के निमित्त ही समझना चाहिये। छोड़ो, अब इस बात को। अब हमें विचार करना है कि भविष्य का भ्रमण हम किस प्रकार करें।''

''मैं,''आखिर राधा ने मुँह खोला, ''उनके वियोग के कारण दुःखी नहीं हूँ। मरना-जीना भी मैं परमात्मा के हाथ में समझती हूँ। इस पर भी घर से इतनी दूर, इस अपरिचित संसार में मैं स्वयं को असहाय पाती हूँ।''

फ्लोरा हंस पड़ी। उसने कहा, ''ऐसा इसलिए अनुभव करती हो क्योंकि इस विषय में अभी तुम छः-सात वर्ष की बालिका-मात्र हो। जैसे किसी मेले में माँ की अंगुली छूट जाने पर बच्चा मेले में दूर भटक जाता है और परेशान होकर रोने लगता है वही स्थिति तुम्हारी भी है। तुमको अभी यह भान नहीं है कि तुम बीस-बाईस वर्ष की युवती हो, एक बच्चे की माँ हो और संसार में घूमने वाली अनेक स्त्रियों से कहीं अधिक बुद्धिमती हो। युवा व्यक्ति संसार में भटकने पर रोया नहीं करते। रोते तो बच्चे ही हैं।''

''तो क्या मैं ठगी नहीं जा सकती?''

''ठगना और ठगा जाना तो एक खेल है। जैसे खेल में कुछ खिलाड़ी जीतते हैं, अनेकों हारते हैं, परन्तु इस जीत या हार के डर से न तो कोई खेलना बन्द करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और न ही कोई हार जाने पर पश्चात्ताप करता है। प्रत्येक हारने वाला खिलाड़ी यही यत्न करता है कि अगली बार अधिक सावधानी और तन्मयता से खेले। यही बात सबकी है। पुरुष भी ठगे जाते हैं और स्त्रियाँ भी। पुरुष स्त्रियों को ठगते हैं और स्त्रियाँ पुरुषों को। ये ठग परस्पर भी एक-दूसरे को धोखा देते हैं। परन्तु राधा बहिन! ठगे जाने के बाद भविष्य में अधिक सावधानी से रहना ही एक उपाय है।"

राधा समझने लगी कि उसका भयभीत होना अकारण है। उसको सब से अधिक डर किसी का उस पर बलात्कार करने का था। उस स्थिति में वह क्या करेगी। किसी भी भारतीय महिला की भांति वह भी यौन-सम्बन्ध को पवित्र सम्बन्ध मानती थी। इसलिए भ्रष्ट किए जाने पर वह क्या करेगी यही उस के सम्मुख समस्या थी। उसने जब इस ओर संकेत किसा तो फ्लोरा ने कहा, "यदि कोई स्त्री किसी मूर्खतावश किसी पुरुष को अग्रसर होने में सहायता न करे तो इस बात की सम्भावना न्यूनतम रह जाती है। इस पर भी पाप तो इस सम्बन्ध के लिए मन से तैयार होने पर ही होता है। यदि कोई बलात्कार करता है और विवशता हो जाती है तो मैं इसको पाप नहीं मानती। इससे दुख तो होता है परन्तु यह पाप नहीं है। इससे कोई भ्रष्ट भी नहीं माना जाता।"

राधा फ्लोरा की बात समझ गई थी। वह अभी विचार ही कर रही थी कि फ्लोरा ने इसका एक और समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा, "मेरे पास सदा भरा हुआ पिस्तौल रहता है। मुझे ऐसे पशु की हत्या करने में किसी प्रकार का संकोच भी नहीं होगा। मेरा पिस्तौल तुम अपने पास रख सकती हो और बलात्कार करने का प्रयत्न करने वाले की हत्या कर देना न तो पाप है न ही अपराध।"

इसके बाद दोनों महिलाएँ एक ही बेडरूम में सोने लगी। दोनों लिज़बन से न्यूयार्क और अमेरिका के विभिन्न स्थानों पर घूम कर जापान और कम्बोडिया आदि स्थानों पर होती हुई जून की पच्चीस को भारत पहुँच गईं।

जब वे पालम हवाई अड्डे पर पहँची तो मथुरासिंह उनके स्वागत के लिए वहाँ पहुँचा हुआ था। उसने उतरते ही राधा से कहा, "राधा! मैं यहाँ पर समय पर पहुँच गया था और स्टैनले इत्यादि का षड्यन्त्र सफल नहीं हो सका।"

4

मथुरासिंह हवाई जहाज से तीन दिन में नई दिल्ली पहुँच गया। उसको इस प्रकार अकेला आते देख लाला त्रिलोकचन्द विस्मित-सा खड़ा रह गया। परन्तु जब मथुरासिंह के स्थिर होने पर उसने उसके मुख से इस षड्यन्त्र का वृत्तान्त सुना तो वह और भी चकित रह गया। उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "कमाल है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस इस्लामी संगठन का। किस प्रकार इस्लाम की वृद्धि के लिए प्रत्येक मुसलमान अपनी निजी सुविधा छोड़कर तन-मन-धन दे डालता है।"

लाला त्रिलोकचन्द ने आगे बताते हुए कहा, "चार-पाँच मास से हैदराबाद में वही कुछ किया जा रहा है जो सन् 1947 के आरम्भ में पंजाब में किया गया था। हिन्दुओं में आतंक उत्पन्न कर उनको हैदराबाद से भगाने का यत्न किया जा रहा है जिससे कि वे हैदराबाद रियासत को मुसलमान बहुसंख्यक क्षेत्र बना दें और तब हमारे डेमोक्रेसी के देवता वहाँ प्लेबिसाइट करा उसे पाकिस्तान का एक अंग घोषित करवा देंगे।"

"मैं समझता हूँ कि ऐसा हो नहीं सकेगा। प्रथम तो आतंक से इतना बड़ा अन्तर पड़ने वाला नहीं। दूसरे भारत की जनता अपनी सरकार को विवश करेगी कि वह अब इतनी भीरुता का व्यवहार न करे।"

"मैं तो यह समझता हूँ कि यदि मन हो तो हैदराबाद में जाकर हिन्दू जनता को संगठित करो और उनके वहाँ से स्वयं भाग जाने की अपेक्षा मुसलमानों को डरा-धमकाकर वहाँ से भाग जाने पर विवश करना चाहिए।"

"ऐसा भी करूंगा। परन्तु जो सूचना मैं लाया हूँ वह एक विभिन्न प्रकार की है। वह षड्यन्त्र भिन्न है। सम्भव है हैदराबाद का झगड़ा उस विशाल षड्यन्त्र का एक अंग-मात्र हो। इस पर भी यह बड़ा षड्यंत्र तो केवल हैदराबाद तक सीमित नहीं है। भारत के मुसलमान, पाकिस्तान के सरकारी तथा सैनिक अधिकारी ओर इंगलैंड के सैनिक अधिकारी तथा कुछ टोडी नेता लोग भी इसमें सम्मिलित हैं। इस विशाल षड्यंत्र में भारत के भूतपूर्व नवाबों व रजवाड़ो को लाने का यत्न किया जाना सम्भव माना जा रहा है।

"मैं भारत के गृहमंत्री से मिलने के बाद ही अपना कार्य-क्रम बनाना चाहूंगा।"

"ठीक है। परन्तु भारत सरकार में भी नेहरू साहब की स्थिति उत्तरोत्तर प्रबल होती जाती है ओर सरदार पटेल की स्थिति दुर्बल पड़ती जाती है। कांग्रेस कमेटी में भी सरदार एक दूसरे दर्जे का नेता रह गया है। सरदार ने कांग्रेस में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने का यत्न किया है, परन्तु हिन्दुओं में तो सड़ांध उत्पन्न हो गई है। बहुत धर्म-कर्म की डुग्गी पीटने वाले भी पदवी और धन के प्रलोभन को सहन नहीं कर सकते। उनके अतिरिक्त जनता में भी नेहरू विरोधी विचार इतना दुर्बल हो गया है कि संसद में कोई उसका विरोधी बनकर अपना अस्तित्व बचा सकेगा अथवा नहीं, यह कहना कठिन है।

"इसलिए इन सब बातों को ध्यान में रखते हए सरदार इस विषय में क्या कर सकेगा और क्या नहीं कर सकता, यह कुछ कहा नहीं जा सकता। फिर भी तुम मिल लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, यह तो बताओ कि तुम राधा को कहाँ और क्यों छोड़ आये हो?"

इस प्रश्न के उत्तर में मथुरासिंह ने अपनी वहाँ की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा, "बिना षड्यन्त्र में सम्मिलित हुए मैं षड्यन्त्रकारियों के नाम और पते जान नहीं सकता था। किन्तु उनका जानना बहुत आवश्यक था। इतना कुछ करने के बाद मैं उनको धोखा देकर वहाँ से आने की योजना बनाना चाहता था। इस कारण राधा को अपनी एक लेडी फ्रेण्ड के साथ अमेरिका भ्रमण करने के लिए छोड़ आया हूँ। वे लोग राधा को छोड़, मेरा अकेले हिन्दुस्तान में आने का विचार स्वप्न में भी नहीं ला सकते। अतः जब मैं उनके विचार से अभी न्यूयार्क में भ्रमण कर रहा होऊंगा। मैं यहाँ गृहमंत्री को उनके षड्यन्त्र का रहस्य बता देना चाहता हूँ। अपने विषय में मैं बाद में निश्चय करूंगा कि मुझको क्या करना चाहिए।"

उसी दिन टेलीफोन पर समय निश्चित कर वह सरदार से मिलने के लिए जा पहुँचा। मथुरासिंह ने कैप्टन रहमान की दी हुई सूची देते हुए अपनी मिस्टर जे. डब्ल्यू. स्टैनले और कैप्टन रहमान से भेंट का पूर्ण वृत्तान्त बता दिया।

सरदार चुपचाप यह सब-कुछ सुनता रहा ओर फिर अन्त में कहने लगा, "मिस्टर सिंह! यह सूची आप मेरे पास छोड़ जाइए। मैं नहीं चाहता कि एक सैनिक अधिकारी जासूसी का कार्य करे। आपसे मैं अधिक की आशा करता हूँ।

"मैं सेना में अब आपको कोई उपयुक्त पदवी भी नहीं दिला सकता। यदि आप कर सकें तो आप हैदराबाद में जाकर अपनी विद्या और अनुभव के ज्ञान से हिन्दुओं में प्रतिक्रिया की भावना तथा शक्ति उत्पन्न करने का यत्न करिये।

"मुझे भय है कि हैदराबाद में भी जनमत का ढोंग न खड़ा कर दिया जाय और उससे पहले कश्मीर की भांति वहाँ से भी हिन्दुओं को भगा राज्य में मुसलमानों की संख्या बढ़ा दी जाय।

"दो मास पूर्व निज़ाम साहब को दिल्ली बुलाया गया था। वे आना नहीं चाहते थे। उनका कहना था कि वे एक स्वतन्त्र शासक हैं। इस कारण अपनी इच्छा से ही किसी अन्य राज्य में आ-जा सकते हैं। बहुत कठिनाई से उनको यहाँ आने के लिए तैयार किया जा सका था।

"निज़ाम साहब तो हमारे साथ सन्धि करने की बात करते रहे और हमारा मित्र बनने का मूल्य माँगते रहे। उनका कहना था कि उनको कारोमंडल सागर-तट का कुछ हिस्सा जो उनकी रियासत के साथ लगता है, दे दिया जाय जिससे वे एक स्वतन्त्र विदेश-नीति अपना सकें। हम कहते रहे कि उनके लिए भारत के साथ मैत्री-सम्बन्ध ही लाभप्रद रहेगा। इसी में उनका कल्याण है।

"बातें अधूरी ही रहीं। किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सका। उनके यहाँ से लौटने के तुरन्त बाद रियासत में लूटपाट और हिन्दुओं को भगाने की योजना चलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी है।

"इस विषय पर हमारे यहाँ मतभेद है। कुछ लोग ऐसे हैं जो यह समझते हैं कि हमें निज़ाम को विश्वास दिलाना चाहिए कि हमारे यहाँ मुसलमानों के लिए भी स्थान है। हमारा इस समुदास के साथ ऐसा व्यवहार रहना चाहिए जिससे निज़ाम साहब को विश्वास हो जाय कि उनको हमारे साथ रहने में ही लाभ है। कुछ ऐसे व्यक्ति हमारे भीतर हैं जो समझते है कि हमारे सैक्युलरिज्म की यह माँग है कि मुसलमान जो कि भारत में अल्पसंख्या में हैं, वे विशेष सुविधाओं के अधिकारी बने रहें। यह नीति है। हिन्दू तो बहुतसंख्या में होते हुए भी देने की स्थिति में हैं। अतः जो मुसलमान माँगें दे देना चाहिए।

"इस विचार के हिन्दुओं का सरकार और देश में भी बोलबाला है। मैं इन दोनों का विरोधी हूँ। मैं समझता हूँ कि देश एक है,अब इसको अखण्ड ही रहना चाहिए। देश में राष्ट्र हिन्दू है हमारा कर्तव्य है कि इस देश को स्वतंत्र और अखण्ड बनाये रखें। इस देश में रहने वाले देश के राष्ट्र का विरोध करते हुए नहीं रह सकते। वे स्वयं जी सकते हैं, उनको प्रत्येक सुख-सुविधा की उपलब्धि हो सकती है, परन्तु यह सब वे राष्ट्र-हितों का विरोध करके प्राप्त नहीं कर सकते।

"सरकार तथा कांग्रेस में मैं अल्प-मत में हूँ। यदि आपको अल्प-मत में रहने का भय न हो तो आपका काम हैदराबाद में है।

"रही इस विशाल षड्यन्त्र की बात। भारत सरकार आपके इस रहस्योद्घाटन के लिए आपकी आभारी रहेगी। वह आपको इसका कोई पुरस्कार नहीं दे सकती। परन्तु समय व हिन्दू धर्म वाली जनता का आशीर्वाद इसका प्रतिकार करेगा।"

इतना कह गृहमंत्री उठ खड़े हुए और बोले, "हैदराबाद के कार्य के लए आपको मैं कुछ आर्थिक सहायता दे सकता हूँ, शेष अपने साधन आपको वहीं निर्माण करने होंगे।"

"धन्यवाद। धन तो उनका ही मेरे पास पहुँच जाएगा।"

"मेरी शुभ कामनाएँ आपके साथ हैं। जयहिन्द।"

केवल तीन-चार मास में ही मथुरासिंह ने गृहमंत्री की ध्वनि में बहुत अन्तर पाया। वह समझ गया कि सरदार के विरोधी विचार के लोग मन्त्रि-मंडल और कांग्रेस में दोनों स्थानों पर बहुसंख्या में है। इसी कारण वह स्वयं को अशक्त पाता है। इस पर भी वह आशा करता था कि जो सूचना उसने गृहमंत्री को दी है उससे वे लाभ उठायेंगे। अपने लिए मथुरासिंह ने यही विचार किया कि उसे हैदराबाद जाकर वहाँ पर कार्य करना चाहिये।

एक दिन दिल्ली में और रुककर वह हैदराबाद चला गया। षड्यन्त्र में कार्य करने वाले सम्भावित व्यक्तियों की सूची की एक प्रति उसने अपने पास रख ली थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस सूची में जितने भी भारतीय थे उनसे निपटने के लिए उसने गृहमंत्री को योग्य समझ अपना ध्यान हैदराबाद और पाकिस्तान की ओर कर दिया। वह मिस्टर वार्डी से मिलना चाहता था। कराची जाने के लिए उसने हैदराबाद द्वारा जाना ही उचित समझा। हैदराबाद की एक सराय में ठहरकर वह इस बात पर विचार करने लगा कि किस-किससे मिले। उसकी सूची में हैदराबाद के तीन व्यक्तियों के नाम थे। उनमें एक सुखवन्तराय होलकर, दूसरा कासिम रिज़वी और तीसरा नरसिंहम् था। मथुरासिंह ने सबसे पहले हिन्दुओं से मिलने का निश्चय कर सुखवन्तराय से मिलने का विचार किया। वह महाराष्ट्र का रहने वाला था, परन्तु दो सौ वर्ष से उसके पूर्वज हैदराबाद राज्य में रह रहे थे। उस्मानिया-परिवार से इस परिवार का अच्छा सम्बन्ध था।

मथुरासिंह ने तांगा किया और सुखवन्तराय के घर पर जा पहुँचा। सौभाग्य से सुखवन्तराय उस समय अपनी बैठक में ही दो अन्य व्यक्तियों से बातें करता हुआ मिल गया। तांगे वाला भी सुखवन्तराय को जानता था। उसने मथुरासिंह को संकेत से ही बता दिया, "वह बैठे हैं होलकर साहब।"

मथुरासिंह के पास कैप्टन रहमान से प्राप्त एक परिचय-पत्र था। उसने पहले वह पत्र दिखाये बिना ही बात करने का निश्चय किया। जब वहाँ बैठे वे दो व्यक्ति चले गए तो मथुरासिंह ने कहा, "मैं युरोप से आया हूँ। मेरा नाम लेफ्टीनेन्ट मथुरासिंह है।"

"हूँ।"

"मुझे आपके पास भेजा गया है।"

"किसने भेजा है?"

"कैप्टन रहमान ने।"

"किस कार्य के लिए भेजा है?"

"आपकी खिदमत के लिए।"

"मेरे पास कोई काम नहीं है, आप किसी अन्य स्थान पर जा सकते हैं।"

उसका रुक्ष व्यवहार देखकर मथुरासिंह ने अपनी जेब से परिचय पत्र निकालकर उसे देते हुए कहा, "क्या आप इसे पढ़ने का कष्ट करेंगे?"

होलकर ने पत्र लिया और साधारण दृष्टि से पढ़कर कहने लगा, "आपने यह पत्र पहले क्यों नहीं दिखाया?"

"मैं आपकी परीक्षा ले रहा था।"

"तो हो गई परीक्षा?"

"हाँ, मैं सन्तुष्ट हो गया हूँ।" पत्र को अपनी जेब में रखते हुए मथुरासिंह ने कहा, "मैं सराय हाफिज अली में ठहरा हुआ हूँ। यदि आपको जरूरत हो अथवा आपको यदि कुछ अधिक जानना हो तो आप वहाँ मिल सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रहमान आ रहा है?"

"उसने इस विषय में कुछ बताया नहीं। कदाचित् वह बता भी नहीं सकता था क्योंकि इंगलैंड में उसको अनेक व्यक्तियों से मिलना है।"

बात करता हुआ मथुरासिंह उठ पड़ा और यशवन्तराय भी उसके साथ ही उठा। उसने कहा, "आप रुकिये। एक बात तो मैं आपसे अभी पूछना चाहता हूँ।"

मथुरासिंह खड़ा रहा तो यशवन्तराय ने उसकी आंखों में देखते हुए पूछा, "आप ऊपर चल सकते हैं क्या?"

"हाँ, यदि कोई मतलब की बात है तो?"

"तो चलिए।"

यशवन्तराय बैठक के एक द्वार की ओर जा, सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। मथुरासिंह उसके पीछे-पीछे जा रहा था। सीढ़ियां चढ़कर दोनों एक कमरे में जा पहुँचे। मथुरासिंह को बैठाकर स्वयं उसके सम्मुख बैठते हुए होलकर ने कहा, "सराय में तो बहुत असुविधा होती होगी!"

"मैं तो सैनिक हूँ, कष्टों की चिन्ता नहीं किया करता। मुझे यहाँ एक मुल्क बनाने और मजहबी आज़ादी कायम करने के लिए योजना बनाने भेजा गया है। उसमें मुझे आपसे सहायता माँगने के लिए कहा गया है।"

"बताइए, आप क्या सहायता चाहते हैं?"

"एक तो यह कि मैं यहाँ गुमनाम रहना चाहता हूँ। आपके नेताओं से मिलकर मैं उनके विचार और साधन जानना चाहता हूँ। उसके बाद योजना बनाने के विषय में विचार किया जा सकता है।"

"नेताओं से मिलने के समय की सूचना मैं आपके पास वहीं सराय में भिजवा दूंगा।"

"मेरे हैदराबाद में रहने के व्यय का प्रबन्ध हो जाना चाहिए।"

"कितना चाहिए आपको?"

"जो उपयुक्त हो सकता है।"

होलकर ने अपनी जेब से कपड़े की एक थैली निकाली और उसमें से सौ-सौ के पांच नोट निकाल कर देते हुए कहा, "पन्द्रह दिन के लिए आपका काम इन से चल जायेगा। आप वहाँ प्रतीक्षा करें, शेष प्रबन्ध भी शीघ्र हो ही जायेगा।

मथुरासिंह का अनुमान ठीक था कि यशवन्त वहाँ मोदी का कार्य कर रहा है। वह वहाँ पर उन लोगों से भी मिलना चाहता था जो कि हिन्दुओं के वहाँ रहने में रुचि रखते हों। तुरन्त उसका ध्यान कांग्रेस की ओर गया। वह किसी हिन्दू होटल अथवा रैस्टोराँ में जाकर कांग्रेस कार्यालय का पता लगाना चाहता था। अतः वह होलकर के घर से निकल चार मीनार की ओर पैदल ही चल दिया। उसे पंजाबी होटल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नाम से एक रैस्टोरां दिखाई दिया। साइन-बोर्ड पढ़ कर वह उसमें जाकर बैठ गया। बैरा आया तो उसने पूछा, ''लस्सी मिलेगी?''

बैरे ने उसके मुख की ओर देख विस्मय प्रकट करते हए कहा, ''लस्सी तो यहाँ पी ही नहीं जाती?''

''क्यों?''

''क्योंकि रिवाज नहीं है।''

''काफी मिलेगी क्या?''

''उसके लिए आपको किसी आन्ध्रियन होटल में जाना होगा।''

''तो क्या मिलेगा यहाँ?''

''चने उड़द की दाल, तन्दूरी रोटियाँ और रोगनजोश।''

''चाय?''

''हाँ, चाय मिल जायेगी।''

''अच्छा, चाय, टोस्ट और मक्खन ले आओ।''

चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर मथुरासिंह देख रहा था कि कोई भला आदमी दिखाई दे तो उससे कुछ बातें करे। जब कोई ऐसा आदमी नहीं दिखाई दिया तो उसने होटल के मालिक से ही बात करने का निश्चय कर लिया। वह उठकर काउण्टर के पीछे कुरसी लगाकर बैठे हए एक सिख महानुभव के पास जाकर खड़ा हो गया सरदार ने जब प्रश्न-भरी दृष्टि में मथुरासिंह की ओर देखा तो मथुरासिंह ने पूछा, ''आप यहाँ के मालिक हैं?''

''नहीं; क्यों, मालिक से आपका क्या काम है?''

''एक बात पूछनी थी।''

''पूछिये।''

''मैं आज ही पंजाब से आया हूँ। मुझे बताया गया है कि यहाँ तो चलते-फिरते हिन्दुओं को मार डालते हैं।''

''यहाँ नगर में तो ऐसी बात नहीं है हाँ, बाहर देहातों में कत्लेआम तक हो गए है।''

''वैसा यहाँ नहीं है क्या?''

''हाँ, कुछ दिन हुए हाई-कोर्ट के पीछे एक हिन्दू के पेट में किसी ने छुरा घोंप दिया था। परन्तु बाद में पता चला चला कि उस व्यक्ति से किसी का व्यक्तिगत द्वेष था।''

''यह कैसे पता चल गया?''

''यह तो कह नहीं सकता। हाँ, समाचार-पत्र में ऐसा ही प्रकाशित हुआ था।''

''देहात वालों की रक्षा का कोई प्रबन्ध हो रहा है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन करेगा उनकी रक्षा का प्रबन्ध? यहाँ रजाकरों को भरती किया जा रहा है। रियासत की ओर से उन्हें बन्दूक, छुरे इत्यादि दिये जा रहे हैं। जिस दिन उन राजकारों का मन करता है वे किसी भी गांव में जा धमकते हैं और पुरुषों को मारकर औरतों को पकड़कर ले आते हैं और फिर उनको यहाँ बेच देते हैं।"

मथुरासिंह को इससे परेशानी होने लगी। उस सिख ने उसकी यह स्थिति देख पूछा, "पर बाबू साहब! आप यहाँ किसलिए आये हैं?"

"मैं जालन्धर के एक व्यापारी का एजेन्ट हूँ।"

"क्या बेचते हैं आप?"

"लोहे के दरवाजे। बहुत खूबसूरत डिजाइन के बनवाते हैं।"

"कहाँ ठहरे है?"

"सराय हाफिज़ अली में।"

"तो वहाँ से तुरन्त चले आइये। यहाँ ईस्टर्न स्टेट होटल है। आप वहाँ रहने लगिये। होटल अंग्रेज का होने से वह अधिक सुरक्षित है।"

"कहाँ पर है यह होटल?"

"लेक के दूसरी ओर सिकन्दराबाद रोड पर।"

अब तक बैरा चाय आदि ले आया था। उसने मथुरासिंह के समीप आ कर कहा, "बाबू साहब! आपकी चाय ठण्डी हो रही है।"

कोई मतलब की बात हाथ न लगने से परेशान-सा मथुरासिंह अपनी मेज पर आकर बैठ गया।

मथुरासिंह जब अपनी मेज पर बैठ गया तो एक लाला टाइप का आदमी मथुरासिंह की बराबर वाली मेज से उठकर काउण्टर के समीप जा सरदार से बात करने लगा। मथुरासिह चाय पी रहा था कि वही व्यक्ति मथुरासिंह के समीप आ बैठते हुए पूछने लगा, "आप आजकल यहाँ किसलिए आये हैं? यहाँ का सारा व्यापार तो ठप्प हो गया है।"

"मेरे मालिकों ने मुझसे कहा कि हैदराबाद में आजकल अशान्ति का साम्राज्य छाया हुआ है। यह सही समय है यहाँ के मार्केट में घुसने का । एक बार यहाँ पाँव जम गये तो शान्ति स्थापित हो जाने पर कारोबार चमक उठेगा।"

"क्या यहाँ कभी शान्ति स्थापित हो भी जायेगी?"

"होगी क्यों नहीं?"

"सुना है कि निज़ाम की मर्जी है हिन्दुओं को मारकर तथा भगाकर राज्य से खत्म कर दिया जाय और उसके स्थान पर पाकिस्तान से मुसलमानों को बुलाकर यहाँ बसा दिया जाय।"

"निज़ाम ऐसा कर सकेगा क्या? क्या भारत सरकार यह सब होने देगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहाँ तो यह अफ़वाह फैल रही है कि निज़ाम को पाकिस्तान से मदद मिल रही है।"

मथुरासिंह परेशानी-सी व्यक्त करता हुआ बोला, "इस बात का यहाँ पर विरोध नहीं हो रहा क्या?"

"कुछ लोग कर तो रहे हैं। मगर एक ओर तो संसार का सबसे धनी राज्य है और दूसरी ओर सौ-सौ-दो-दो सौ रुपयों से चन्दा किया जा रहा है।"

"इसके कर्ता कौन लोग हैं?"

"एक स्वामीजी हैं।"

"उनसे कहाँ भेंट की जा सकती है?"

"क्या करेंगे यह जानकर आप?"

"कुछ नहीं, मुझे उनसे मिलने की आवश्यकता नहीं। मैं तो यह विचार कर रहा था कि मैं अपनी फर्म वालों को लिखूँ कि यहाँ पर शान्ति स्थापित करने के लिए जो लोग यत्न कर रहे हैं, उनकी सहायता के लिए कुछ दें। अगर वहाँ से कुछ मिल जाय तो स्वामीजी को दे दूँ।"

"वे सहायता करेंगे? क्या दे सकेंगे?"

"दो-चार हजार तो हम दे ही सकते हैं। यदि यहाँ से कोई व्यक्ति दिल्ली और पंजाब चला जाय तो वहाँ चन्दे में लाखों एकत्रित हो सकते हैं।"

"तो ऐसा करिए, आप चाय पीकर मेरे पीछे-पीछे चले आइए। मैं आपको स्वामीजी से मिला दूंगा।"

जब तक मथुरासिंह चाय पीता रहा, वह लाला वहाँ गम्भीर बना बैठा रहा जब वह चाय पीकर पैसे चुका, चलने के लिए तैयार हुआ तो लाला उससे पहले होटल से निकल चारमीनार की ओर जाने लगा। मथुरासिंह उससे दस पग पीछे-पीछे जा रहा था।

5

सायंकाल जब मथुरासिंह सराय में लौटा तो वहाँ उसकी प्रतीक्षा की जा रही थी। सराय के मालिक के कमरे में ही उसका प्रतीक्षक बैठा हुआ था। मालिक ने मथुरासिंह को आते देख, उस व्यक्ति को संकेत से कुछ समझाया तो वह व्यक्ति उठकर मथुरासिंह के पीछे-पीछे उसके कमरे पर आ पहुँचा। मथुरासिंह अभी द्वार खोल ही रहा था कि वह व्यक्ति उसके समीप आ कर कहने लगा, "साहब! दो घंटे से आपका इन्तजार कर रहा हूँ।"

"अच्छा? कहिए क्या काम है?"

"होलकर साहब ने कहा है कि मैं रात को खाने के समय आपको रिज़वी साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मकान पर ले जाऊँ।''

''खाना वहीं पर होगा?''

''जी, मेरा ख्याल था कि आपको कह जाऊंगा और फिर समय पर आपको ले चलूंगा। मगर आप यहाँ थे ही नहीं। इन्तजार करते-करते यह वक्त हो गया है। अब तो आधे घंटे में चलने का वक्त भी हो जायेगा।''

''तो ऐसा करिए, अब आप यहीं रहिए। मैं कुछ थक गया हूँ। आधा घंटा आराम कर आपके साथ चल पड़ूंगा।''

''मैं बाहर सराय के मालिक के पास बैठता हूँ।''

''होलकर साहब ने इतमीनान के लिए कुछ सबूत भेजा है?''

''उन्होंने यही कहा है कि वहाँ लीडर लोग आपका इन्तजार कर रहे होंगे।''

''ठीक है, इतना ही काफी है।''

मथुरासिंह कमरे में पड़ी खाट के समीप खड़ा-खड़ा ही बात कर रहा था। उसने आगन्तुक व्यक्ति से कहा, ''यदि आप चाहें तो यहीं कुर्सी पर बैठ सकते हैं। मैं कुछ आराम करूंगा।''

''जी, आप आराम करिए, मैं वहीं आपका इन्तजार करूंगा।''

अपनी उस दिन की कारगुजारी पर मथुरासिंह को सन्तोष था। वह राज्य कांग्रेस की ओर से षड्यन्त्र के विरोध में चल रहे आन्दोलन के केन्द्र तक पहुँच गया था। वे लोग राज्य की जनता में विश्वास उत्पन्न करने का यत्न कर रहे थे। वे चाहते थे कि त्रस्त होकर लोग राज्य को छोड़कर न भागें। राज्य को छोड़ कर हिन्दुओं का भाग जाना, राज्य में भारत की स्थिति का दुर्बल करना था। मथुरासिंह ने उन आन्दोलनकारियों से पूछा, ''आप किस प्रकार से आन्दोलन कर रहे है?''

''पोस्टर लगवाकर; डुग्गी पिटवाकर; एक समाचार-पत्र निकालकर और उसमें भारतीय प्रगति के समाचार छपवाकर। इसी प्रकार के अनेक अन्य कार्यों द्वारा हम अपना आन्दोलन चला रहे हैं।''

''इसका क्या परिणाम हो रहा है?''

''हमारे पास परिणाम मापने के साधन नहीं हैं। इस पर भी हम अपने विचारों का प्रसार कर रहे हैं।''

''मैंने सुना है मुसलमान यहाँ एक प्राइवेट सेना तैयार कर रहे हैं?''

''हाँ, वह तो रजाकार संगठन के नाम से प्रसिद्ध है ही।''

''वे लोग कवायद करते हैं क्या?''

''रात के आठ बजे से रात के दस बजे तक नित्य नगर की गलियों, सड़कों, बाजारों, उद्योगों, पार्कों और कार्यालय के मैदानों में इन लोगों की लैफ्ट-राइट होती रहती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन लोगों को बन्दूक आदि चलाने का अभ्यास भी कराया जाता है क्या?"

"हाँ, शुक्रवार को नमाज के बाद रजाकार जंगल में जाते है और वहाँ चांदमारी करते है।"

"आप भी इसी प्रकार कोई प्राइवेट सेना क्यों नहीं तैयार करते?"

"इसलिए कि यहाँ केवल हिन्दुओं की कोई संस्था बन नही सकती। हमारी सेना में दोनों मजहबों के लोग होने चाहिए और उसमें आज सफलता के लक्षण नहीं है। यदि हम हिन्दुओं की एक सेना तैयार कर भी लें तो इससे साम्प्रदायिक गृह-युद्ध छिड़ जायेगा। इसमें राज्य मुसलमानों का पक्ष लेगा और हिन्दुओं की सेना को यदि तो भारत सरकार से सहायता मिल गई तो ठीक अन्यथा सब-की-सब तबाह हो जायेगी। भारत सरकार इस प्रकार की साम्प्रदायिक बात में सहायता नहीं दे सकेगी ओर हम यहाँ मरने के लिए हिन्दू-सेना बना नहीं सकते।"

इस प्रकार मथुरासिंह देख आया था कि किस प्रकार देश-भक्ति को साम्प्रदायिकता समझा जा रहा है और निष्पक्षता कैसे राष्ट्र-द्रोह का पर्याय हो गई है। परन्तु वह वहाँ अभी तो जानकारी प्राप्त करने गया था। उनको अपना संगठन बनाने की योजना बता नहीं सका। इस पर भी उसने उन लोगों को बता दिया, "इंडियन नेशनल कांग्रेस पाकिस्तान बनने के समय यही बात उन क्षेत्रों में कर रही थी, जहाँ मुसलमान गृह-युद्ध की धमकी देकर हिन्दुओं को आतंकित कर रहे थे और वे उन क्षेत्रों को पाकिस्तान बनाने में सफल हो गए और स्वयं को असाम्प्रदायिक कहने वाले लोग मुख देखते रह गए।"

"तब और अब में बहुत अन्तर है। अब यह पाकिस्तान नहीं बन सकेगा।"

"मैं भी यही आशा करता हूँ, परन्तु यह इसलिए नहीं कि आप किसी प्रकार का आन्दोलन कर रहे हैं। इसमें कुछ अन्य कारण बनने वाले हैं।"

"क्या?"

"वे आपके सामने आने वाले हैं।"

इस पर उन कांग्रेसी नेताओं को कुछ सन्देह हो गया। उनमें से एक ने पूछा, "आप दिल्ली से आये हैं?"

"नहीं, मैं तो लन्दन से आया हूँ।"

"यहाँ की स्थिति देखी है?"

"हाँ, देखी है।"

"क्या देखा है?"

"आज तो पहला दिन है। केवल आपसे ही मिला हूँ। एक होलकर साहब से मिला था। इतने से अभी मैं किसी परिणाम पर नहीं पहुँच सका।"

"क्या हम आपसे कहीं मिल सकते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं स्वयँ आप लोगों से मिलूंगा। आप सराय में मेरे पास मत आइये।"

जब वह वहाँ से लौटने लगा तो वही व्यक्ति, जिनके पीछे-पीछे वह स्वामीजी के निवास-गृह पर पहुँचा था, उसके साथ-साथ चलता हुआ कहने लगा, "आप तो कह रहे थे कि आप जालन्धर की किसी कम्पनी के एजेन्ट हैं?"

"हाँ, ऐजेन्ट तो मैं हूँ ही।"

"तो क्या आपके विलायत से आने की बात ग़लत है?"

"दोनों बातों में आपको कोई विरोधाभास दिखाई देता है?"

वह आदमी विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। एकाएक मथुरासिंह ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि आप अब चले जाइये। मैं स्वयं को आपके साथ दिखाई देना नहीं चाहता।"

यह सुन वह व्यक्ति वहीं खड़ा रहा और मथुरासिंह पैदल ही सराय की ओर चल पड़ा।

उसकी प्रतीक्षा करने वाला व्यक्ति ठीक आठ बजे उसके कमरे में आ गया। मथुरासिंह तब तक कोट-पतलून पहन चुका था। उसने अपने सूटकेस में से पिस्तौल निकाला, उसको खोल उसमें गोलियां भरीं और अपनी पतलून की जेब में रख लिया। साथ ले जाने वाला व्यक्ति उसको जेब में पिस्तौल रखता हुआ देख रहा था। सराय से निकल मथुरासिंह ने उस व्यक्ति से पूछा, "क्या नाम है आपका?"

"मेरा नाम अलीबेग है। मैं रजाकार लश्कर में सूबेदार हूँ। पहले मैं हैदराबाद की फौज में सूबेदार था। इसी वजह से इस लश्कर में भी मुझे सूबेदार ही बनाया गया है।"

"आपकी फौज में कौन-कौन आला अफ़सर हैं?"

"इस लश्कर में हैदराबाद के सिपहसालार मिरजा याकूब है। वह पाकिस्तानी-फौज में सालार रहा है।"

"मैं मिरजा याकूब साहब से मिलना चाहता हूँ।"

"वे भी इस मजलिस में हाजिर होंगे।"

रिजवी के मकान पर पाँच लोग उपस्थित थे। अलीबेग, जो मथुरासिंह को लेने के लिए गया था, वह इस मजलिस में विद्यमान नहीं था। मथुरासिंह के वहाँ पहुँचने पर रिजवी ने उठकर उसका स्वागत किया और उसे अपने पास बैठाया। अन्य लोगों से परिचय कराते हुए उसने कहा, "आपके मुतल्लिक तो हम सब जानते हैं। मिस्टर स्टैनले ने आप का मुकम्मल हवाला हमको लिख कर भेजा है। मेरा नाम कासिम खाँ है। मैं यहाँ की रजाकार लश्कर का सालारे अजीम हूँ। मेरे इस ओर बैठे हुए मिरजा याकूब हैं। ये हैदराबाद शहर के सिपहसालार हैं। उधर कैप्टन रमजान खाँ हैं। ये गुलबर्गा से आये हैं, वहाँ की ब्रिगेड के कप्तान हैं। मेरे सामने ये सादिक हुसैन साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। ये हमारी इस सारी हलचल के दिमाग हैं।''

खाना आया और थालों में सबके सामने परोसा जाने लगा। मथुरासिंह ने कहा दिया, ''मैं गोश्त नहीं खाता। सिर्फ सब्जियाँ और चपाती लूंगा।''

रिजवी मुस्कराया ओर उसने परोसने वाले को कहा, ''पंण्डितजी के सामने दाल भाजी ही रखना।''

जब तक खाना परोसा जाता रहा, सब शान्त बैठे रहे। खाने के समय सब नौकर-चाकर बाहर चले गये। केवल भोजन-कर्त्ता ही कमरे में थे। मथुरासिंह ने अपने वहाँ आने का उद्धेश्य बताते हुए कहा, ''मैं स्टैनले साहब का शगिर्द हूँ। फौजी नीति का सबक मैं उनसे ही सीखा हूँ। वे मुझे पैरिस में मिले थे और बताने लगे कि हिन्दुस्तान में एक इंकलाब पैदा करने की कोशिश की जा रही है। इस इंकलाब का मकसद दोबारा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को एक मुल्क बनाना है। यहाँ एक हकूमत कायम होगी। शुरू में तो यहाँ फौजी डिक्टेटरशिप कायम होगी। मगर बाद में मज़हबी मिल्लत से ऊपर उठकर एक जमहूरियत कायम की जायेगी। इसके लिए बीस साल तक लग सकते हैं। इंगलैंड व अमेरिका की हमदर्दी और रुपया इस तजवीज़ के लिए हासिल हो चुका है पाकिस्तान भी इसमें मददगार होगा और छिपे-छिपे मदद देगा। जब हमारे पाँव कुछ जम जायेंगे तो वह खुल कर हमारी मदद करेगा।

''इस मुहिम की मुकम्मल तजवीज़ बनाने के लिए मुझे यहाँ भेजा गया है। मुझे रिज़वी साहब और होलकर साहब से मिलकर, पाकिस्तान में अलीवर्दी साहब और वार्डी साहब से भी मिलना है जिससे उनसे वाकफियत हासिल की जाय। मैं अपनी स्कीम तैयार करने के लिए इन बातों की वाकफियत चाहता हूँ। एक तो यह कि इस काम के लिए हम कितने सिपाही तैयार कर सकते हैं। उनमें कितने मुसलमान और कितने हिन्दू होंगे? भारत के लोगों से हमारे ताल्लुकात अभी तक बन पाये है या नहीं?

''दूसरे इस सिलसिले में कोई सालम हिन्दुस्तान के लिए कमेटी बनी है या नहीं? यदि बनी है तो उस कमेटी के सदर कौन होंगे? वह कोई पाकिस्तान या भारत की सरकारों के आदमी हैं या उनके अलावा?''

इन सवालों के जवाब में कासिम रिजवी ने एक रहस्योद्घाटन करते हए बताया, ''दो किस्म की मूवमेंट हैं—एक है हैदराबाद की आज़ादी को कायम रखने का बन्दोबस्त करने के लिए। इसके लिए हैदराबाद उन सब अनसरों से खाली कराना है, जो इस मुल्क की आज़ादी के हक में नहीं है। पाकिस्तान से हमने वादा ले लिया है कि वह हैदराबाद की आज़ादी मंजूर कर लेगा। उससे पहले हमको इस रियासत को मजबूत बनाना है। इसके लिए हम अमेरिका और इंगलैंड से असला मंगवा रहे हैं। कुछ स्पिट फायर बाम्बर्स के लिए भी हमारी माँग है। इसके लिये हिज एग्ज़ालटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाइनेस की तरफ़ से एक मिशन इस वक्त लन्दन में बैठा है इस काम के लिए रज़ाकार निज़ाम की तनजीम की गई है।

"दूसरी मूवमेंट वह है, जिसका आप जिकर कर रहे है। जाहिरा तौर पर दोनों का आपस में कोई ताल्लुक नहीं इस पर भी पहली मूवमेंट दूसरी के लिए जम्पिंग ग्राउण्ड तैयार करने के लिए है। दूसरी तजबीज़ की शुरुआत पहली की कामयाबी पर मुनस्सर है।

"पाकिस्तान वालों को यह समझाना है कि वे इस हिन्दुस्तान के साथ मिलकर एक मुल्क बनाने के लिए तैयार हो जायें। इसमें ही उनका फ़ायदा है।"

मथुरासिंह बोला, " ये दोनों किस्म की मूवमेंट एक साथ कैसे चल सकती हैं और उन दोनों का एक-दूसरे से क्या ताल्लुक होगा, यही तो मेरी तजवीज़ों से होने वाला है। कहीं ये दोनों एक-दूसरे के खिलाफ जाने वाली तजवीज़ें तो नहीं हैं?"

"हो या न हो, यह पहली मूवमेंट तो हमने शुरु कर दी है। हम पहले हैदराबाद को इतना मजबूत बना देना चाहते है कि यहाँ के हाकिम हिज एग्ज़ालटेड हाइनेस की पोज़ीशन मुकम्मल हिन्दुस्तान का डिक्टेटर बनने के काबिल हो जाय। हम हैदराबाद वाले तो अब इससे पीछे नहीं लौट सकते। इसलिए आपको अपनी तज़वीज़ में इस बात का लिहाज़ रखना ही होगा।

"इसके लिये आपको कराची जाकर पाकिस्तान को इस बात के लिये तैयार करना होगा कि वे भारत पर यह दबाव डालें के भारत सरकार हैदराबाद को एक आजाद मुल्क मंजूर कर ले।

"इस दबाव के लिये अगर उनको अपनी फौजों को नकलो हरकत देनी पड़े तो भी वे करें। इसके लिए वे कश्मीर में भी खुलकर लड़ने के लिए तैयार रहें।

एक बार हैदराबाद आज़ाद रियासत मान ली गई तो अगला कदम होगा हैदराबाद और पाकिस्तान दोनों की कोशिश से मुल्क में एक सियासी निज़ाम कायम करना।

'लेफ्टिनेन्ट साहब! आप ऐसी स्कीम तैयार करिये कि हिन्दू भी इसमें अपना फायदा सोचने लगें।"

मथुरासिंह बोला, "मैं पाकिस्तान जाना चाहता हूँ, उसके लिए रियासती परवाना राहदारी मिल जाना चाहिये।"

"मिल जायेगा। कल सुबह आप होलकर साहब से कहियेगा। शाम तक परवाना मिल जाएगा।"

मथुरासिंह समझ गया कि समस्त हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज्य स्थापित करने के लिये ही यह सारा षड्यन्त्र किया जा रहा है। इसके साथ ही उसको यह भी पता चल गया कि कई बातों में अंग्रेजों की अपेक्षा मुसलमान अधिक कूटनीतिज्ञ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अंग्रेजों को ये मुसलमान पहले भी उल्लू बनाते रहे हैं और अब भी उनको उल्लू बनाया जा रहा है।

मथुरासिंह इस मजलिस से यह समझ कर बाहर निकला कि इस पाप को बीज रूप में ही दबा देना चाहिये। इसको भस्म कर देना चाहिए। बाद में तो यह बहुत कष्ट देगा। रात-भर वह यही विचार करता रहा कि रियासत की कांग्रेस पार्टी की कार्रवाई क्या होगी। बहुत विचार के उपरान्त वह इस परिणाम पर पहुँचा कि रजाकारों का, उन्हीं के हथियारों और तरीकों से मुकाबला किये बिना न तो हिन्दुओं को त्राण मिलेगा और न ही रजाकारों की उच्छृङ्खलताओं को रोका जा सकेगा।

वह सोचता था कि कांग्रेस के अतिरिक्त अन्य कौन लोग हो सकते है, जिनसे रजाकारों का विरोध कराया जा सकता है।

6

प्रातः का अल्पाहार लेकर मथुरासिंह होलकर के मकान की ओर जा रहा था कि रास्ते में उसने एक मकान को आग लगी हुई देखी। आग लगी हुई थी और कुछ पुलिस वाले वहाँ पर घेरा डाले खड़े थे। वहाँ न तो कोई आग बुझाने वाला दमकल बुलाया गया था और न कोई आदमी उस आग को बुझाने के लिए किसी प्रकार का प्रयत्न कर रहा था। मथुरासिंह ने एक पुलिस अधिकारी से पूछा, "यहाँ रियासत में कोई दमकल नहीं है?"

"यह देखना मेरा क़ाम नहीं है।"

"आप क्या देख रहे हैं?"

"मैं तो यह देख रहा हूँ कि शहर के भूखे-नंगे इस इलाके को लूटना न शुरू कर दें।

जिस मकान को आग लगी थी, उसके आस-पास के मकानों वाले अपना-अपना सामान मकानों से निकाल रहे थे और पुलिस वालों की देख-रेख में रख रहे थे। उनको भय लग रहा था कि उनके घरों को भी आग लग जायेगी।

मथुरासिंह के कुछ अन्तर पर खड़ा एक व्यक्ति आग लगने की घटना का वृत्तान्त सुना रहा था। दस-बारह लोग उसकी कहानी सुन रहे थे। मथुरासिंह भी उसके पास जाकर खड़ा हो गया। वह कह रहा था, "प्रातः चार बजे के लगभग मकान के नीचे बहुत जोर का धमाका हुआ। हम सब लोग नींद से जाग कर नित्यकर्म में लगे हुए थे। धमाके का शब्द सुनकर हम खिड़की से झांकने लगे तो मकान को आग लग रही थी। हम सब यह समझ गए कि बम चला कर मकान को आग लगा दी गई है। अतः मैं, मेरी धर्मपत्नी, बच्चे और पण्डित भूमानन्द पिछवाड़े से कूदकर बाहर आ गये। घर में से हम कुछ भी नहीं निकाल सके। दस मिनट में ही सारे मकान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आग फैल गई थी।''

एक व्यक्ति जो कांग्रेस का कार्यकर्ता-सा प्रतीत होता था और पिछले दिन जब मथुरासिंह की स्वामीजी से बात हो रही थी, उस समय वहाँ उपस्थित था, आग लगने की कथा सुनाने वाले को कहने लगा, ''अब तो आपको हैदराबाद से चले जाना चाहिये।''

''हाँ, मकान जल गया, सब सम्पत्ति भस्म हो गई। अब यहाँ रह कर करूंगा ही क्या?''

''आप लोगों ने भी तो पागल बैल को लाल कपड़ा दिखाना आरम्भ कर दिया था।''

''यह कैसे?''

''आर्य-समाज के मंच से राजनीति का प्रचार करके।''

''क्या राजनीति का प्रचार किया था?''

''आजकल के हालात में वैदिक-धर्म के प्रचार का क्या अर्थ है?''

वह व्यक्ति कुछ नहीं बोला। मथुरासिंह उस व्यक्ति के समीप जाकर पूछने लगा, ''आपका क्या नाम है?''

''अमरनाथ विद्यालंकार।''

''आप यहाँ क्या करते हैं?''

''मैं आर्य-समाज का पुरोहित हूँ।''

''आर्य-समाज कहाँ है?''

''बड़े बाजार में।''

सहसा मथुरासिंह को सन् 1931-32 के सत्याग्रह का स्मरण हो आया। यद्यपि वह सत्याग्रह को किसी भी कार्य के लिए उचित उपाय नहीं समझता था, इस पर भी उसके मन में विचार आया कि कुछ तो ये लोग भी अपनी रक्षा का उपाय कर रहे होंगे। राज्य में अशान्ति फैलने पर इन लोगों पर ही सबसे पहला वार होगा।

यह सोच वह वहाँ से चल पड़ा। उसके मन में प्रकाश हो रहा था और उसे अपना मार्ग सूझता-सा प्रतीत हुआ।

वह होलकर के घर पहुँचा और उससे उसने पासपोर्ट के लिए कहा। होलकर ने पूछा, ''यहाँ की मूवमेंट का वृत्तान्त मिला?''

''हाँ, कुछ मिल गया है। उसे समझा भी है और उसके आधार पर अपनी योजना बनाना चाहता हूँ। उससे पहले पाकिस्तान के कुछ लोगों से मिलकर वहाँ की अवस्था और विचारों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ।''

''ठीक है। पासपोर्ट आज सायंकाल तक मिल जायेगा। कैसे जायेंगे, रेल से या हवाई जहाज से?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो हवाई जहाज से जाना चाहूंगा।"

"इस विषय में मुझको कुछ लोगों से राय करनी होगी।"

"कर लीजिए, किन्तु शाम तक पता चल जाना चाहिए।"

"सायंकाल सात बजे तक आपको आपकी सराय में टिकट और पासपोर्ट दोनों मिल जायेंगे।"

मथुरासिंह जाने लगा तो होलकर ने पूछा, "हिज एग्जाल्टेड हाइनेस से मिलेंगे?"

"मिलूंगा, कराची से लौटकर।"

"बहुत ही शरीफ़ और रहमदिल हाकिम हैं। उनके खयालात बहुत ही पाकीज़ा हैं। किसी ऊंचे-से-ऊंचे कांग्रेसी लीडर का इनके साथ कोई मुकाबला नहीं। ये अपनी रिसासत में हर दिल अज़ीज़ हैं।"

मथुरासिंह मुस्कराता और विस्मय प्रकट करता रहा। जाने से पूर्व उसने पूछा, "उनसे प्राइवेट में भेंट हो सकेगी?"

"हाँ, इसका कुछ प्रबन्ध हो जायेगा।"

"तो फिर मैं पाकिस्तान में जरा हवा का रुख देख आऊँ। फिर इनके खयालात भी जानने की कोशिश करूंगा।"

होलकर के घर से निकलकर मथुरासिंह आर्य-समाज मन्दिर में जा पहुँचा। वहाँ स्वामी भूमानन्द और आर्य-समाज के पुरोहित पण्डित अमरनाथ विद्यालंकार खड़े थे। मथुरासिंह को वहाँ आया देख, ये लोग विस्मय करने लगे। स्वामीजी के पास पहुँच, मथुरासिंह ने पूछा, "यह मकान किस की सम्पत्ति थी?"

"आप किसलिए पूछ रहे हैं?

"मैं अपने निजी कार्यवश कल यहाँ हैदराबाद आया था। कल से ही मैं देख रहा हूँ कि यहाँ विचित्र प्रकार का वातावरण है। रात को गली-गली और बाज़ार-बाज़ार में गणवेश पहने हुए युवकों को कवायद करते देखा तो कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे यहाँ कोई विराट् युद्ध होने वाला है।

"मैं एक सैनिक हूँ। अब रिटायर्ड हो गया हूँ। मैंने युरोप-युद्ध में भाग लिया है और बम्ब से आग लगने के अर्थ मैं भली प्रकार समझता हूँ। इसी कारण पूछ रहा हूँ कि यह किसका मकान था, जिससे मैं यह जान सकूँ कि यहाँ की सेना किसके विरुद्ध है? ऐसा बम्ब तो सेना के शस्त्रागार में ही हो सकता है।"

पुरोहित और स्वामी दोनों ही मथुरासिंह की व्याख्या से बहुत प्रभावित हुए और कहने लगे, "यह मकान आर्य-समाज के प्रधान का था। बम्ब तो निश्चय ही सरकारी शस्त्रागार का होगा, किन्तु वह फेंका किसी रजाकार ने ही होगा।"

"प्रश्न तो यही हुआ कि इस प्रकार का बम्ब रजाकारों के पास कैसे आया?"

"ये रजाकार निजाम साहब की कृपा से ही कार्य कर रहे कहे जायेंगे। अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो दिन पूर्व ही तो रजाकारों ने गुलबर्गा में हिन्दुओं का कत्ले-आम किया है।''

''तो क्या हिन्दू लोग ऐसा नहीं कर सकते?''

''कौन करे?''

''क्या हिन्दुओं का शौर्य समाप्त हो चुका है?''

यह सुनकर वे दोनों मथुरासिंह का मुख देखने लगे। अमरनाथ विद्यालंकार ने कहा, ''श्रीमान् जी। आप तो एक-दो दिन में यहाँ से चल देंगे, और मुसीबत हमारे गले में पड़ जायेगी।''

''क्या मुसीबत पड़ जायेगी?''

''आर्य-समाज के प्रधान के घर में कल दस-बारह लोग एकत्रित हुए थे और हम उस समय इसी विषय पर विचार कर रहे थे। भगवान जाने कैसे रजाकारों को इस बात का समाचार मिला कि उस सभा के कुछ घंटे बाद ही बम्ब चला और सब कुछ स्वाहा हो गया।''

''और आप लोग इतने से ही हतोत्साह हो गये?''

''हमारा विचार है कि कोई कांग्रेसी विचार का हिन्दू उस मीटिंग में था, जो इस विनाश का कारण सिद्ध हुआ है। यदि हम उस समय जागते न होते तो सम्भवतया हम भी सपरिवार उस काण्ड की आहुति हो गए होते।

''कल मैं उन कांग्रेसियों से मिला था। वे समझते हैं कि यह काम भारत सरकार का है कि इन ग़ैर-कानूनी काम करने वालों को दण्ड दे। हम नागरिकों को तो परस्पर मित्रता के भाव में ही रहना चाहिए। इसी में हम अपनी सुरक्षा समझते हैं।

''मैंने उन्हें बताया था कि भारत सरकार इतनी जल्दी कुछ कर नहीं सकेगी। यह भारत के भीतर की बात नहीं है। यह तो देश से बाहर विदेश की-सी बात है। भारत सरकार का इसमें हस्तक्षेप तो एक विदेशी सरकार का हस्तक्षेप माना जायेगा। क्या तब तक यहाँ के हिन्दुओं का कत्ले-आम होता रहेगा? इस पर वे कांग्रेसी बोले, ''क्या करें, हमारी विवशता है।''

''एक बात मैं आप लोगों से कहूँ?'' मथुरासिंह ने गम्भीर होते हुए पुनः कहा, ''यदि दो-तीन सौ हिन्दू नवयुवक भी एकत्रित हो सकें तो मैं हजारों को चने चबवा सकता हूँ। यदि यह संगठन सम्भव हो तो मैं कुछ मास तक अपना काम स्थगित कर, यहाँ के युवकों को प्रशिक्षण दे सकता हूँ।''

दोनों मथुरासिंह का मुख देखने लगे। मथुरासिंह समझ रहा था कि वे लोग भयग्रस्त हैं। कदाचित् इस मुसलिम रियासत में रहने से यहाँ दो सौ लड़ने-मरने वाले युवक मिलने का भी इनको विश्वास नहीं है। इसलिए उनका भय निवारण करने के लिए उसने कहा, ''क्यों, क्या बात है? आप लोग चुप क्यों हो गये हैं?''

''बात यह है कि हमको किसी भी हिन्दू पर विश्वास नहीं रहा। न किसी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने समय देने पर और न ही किसी का अपनी जान को जोखिम में लगा सकने पर।''

''तो यह बात है। देखिए, मैं तो जो कह रहा हूँ वह करने को सदा तैयार हूँ।''

''तो ऐसा कीजिए,'' स्वामी भूमानन्द ने कहा, ''आप गुरुकुल में जाकर वहाँ के अधिष्ठाता से बात करिए।''

''कहाँ है गुरुकुल?''

''आप कहाँ ठहरे हुए हैं?''

''सराय हाफिज अली में।''

''वहाँ तो आपकी जान का भय है। क्या नाम लिखाया है वहाँ?''

''लेफ्टिनेंट मथुरासिंह।''

''आप वह स्थान छोड़ दीजिए।''

''मुझे अपनी जान का भय नहीं है। मैं जब मरूंगा तो दस बीस को लेकर मरूंगा। मेरी जेब में सदा भरा हुआ पिस्तौल रहता है।''

''आप गुरुकुल जाइए।''

''कौन ले जायेगा मुझको?''

स्वामी भूमानन्द ने कहा, ''मैं तैयार हूँ। गुरुकुल यहाँ से ग्यारह मील होगा। बताइये कैसे चलेंगे?''

''कोई सवारी नहीं मिल सकती?''

''सवारी तो मुसलमानों की ही होगी।''

''उससे तो काम नहीं चलेगा। तो पैदल ही चलेंगे।''

इस पर पुरोहित जी कहने लगे, ''देखिए, मैं यत्न करता हूँ। यदि किसी मोटर गाड़ी का प्रबन्ध हो गया तो ठीक रहेगा। नहीं तो आज सायं-काल यहीं आ जाइये और रात को यहीं रहिए। हम प्रातः काल चार बजें यहाँ से चलेंगे। आठ बजे तक वहाँ पहुँच जाएंगे। प्रातः ठंड में चलने में अधिक कष्ट नहीं होगा।''

''तो ऐसा करिये, यदि किसी वाहन का प्रबन्ध हो गया तो आज ही वहाँ जाकर सायं तक वापस आ जाएंगे। यदि प्रबन्ध न हुआ तो मैं सायं-काल यहाँ आ जाऊंगा और कल प्रातः काल चलेंगे।''

''आप कहाँ के रहने वाले हैं?''

''मैं पंजाब में जिला होशियारपुर का रहने वाला हूँ। यहाँ विशेष कार्य से आया था। मेरा कार्य तो आज सायं-काल तक होने वाला है। मैं समझता हूँ कि यदि मैं अपनी जाति और देश की कुछ सेवा कर सकूँ तो मैं स्वयं को धन्य समझूंगा। अकेला तो मैं उन सहस्रों रज़ाकारों से नहीं लड़ सकता। इसीलिए कहता हूँ कि यदि दो सौ नवयुवक मुझे मिल जायें तो मैं उनको ऐसी ट्रेनिंग दे सकता हूँ कि दस सहस्र सशस्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तियों को परेशान कर सकते हैं।''

स्वामी भूमानन्द वहीं बातें करता हुआ खड़ा रहा और विद्यालंकार यह कह कि वह गाड़ी का प्रबन्ध करने जा रहा है, आर्य-समाज मन्दिर से बाहर चला गया।

मथुरासिंह के पंजाबी होने से स्वामीजी उसके साथ खुलकर बातें करने लगे। वे उसको ले कर कार्यालय में जा बैठे और वहाँ की परिस्थिति से अवगत कराने लगे। उन्होंने कहा, ''यहाँ हिन्दू हैं तो बहादुर, परन्तु इन कांग्रेस वालों ने उनके मन में यह बैठा रखा है कि यदि हमने इन रज़ाकारों का सशस्त्र विरोध किया तो भारत सरकार बदनाम हो जायगी। इससे वह यहाँ के निजाम के खिलाफ किसी प्रकार की कार्यवाही करने के योग्य नहीं हो सकेगी।''

''यह मिथ्या धारणा है, वास्तव में वह दुर्बलात्मा हैं अहिंसा का जाप करने वाले गांधी के चेले इसी प्रकार की युक्तियाँ किया करते हैं। मैं तो यह समझता हूँ कि यदि इन रज़ाकारों का हमने डटकर विरोध किया जाए तो ये मुसलमान शोर मचायेंगे और भारत सरकार को हस्तक्षेप करने का बहाना मिल जायेगा।''

''वे कहते हैं कि इससे तो पाकिस्तान सरकार हस्तक्षेप करेगी?''

''मैं भी यही कह रहा हूँ। यदि पाकिस्तान ने यहाँ एक भी सैनिक भेजा तो भारत सरकार यहाँ दस हजार सैनिक भेज देगी। तब भारत और पाकिस्तान में युद्ध छिड़ जायेगा और पाकिस्तान को लेने-के-देने पड़ जायेंगे।''

''परन्तु कश्मीर में तो भारत और पाकिस्तान लड़ ही रहे हैं?''

''प्रत्यक्ष रूप में तो भारत का पाकिस्तान के साथ युद्ध नहीं है। यह कुछ कबाइलियों से ही माना जा रहा है। वास्तव में हम पाकिस्तान के साथ लड़ रहे हैं परन्तु घोषित रूप में नहीं। लेकिन हैदराबाद के विषय में पाकिस्तान से किया जाने वाला युद्ध छिपा नहीं रह सकेगा। मेरे विचार में यह स्थिति बहुत उत्तम रहेगी।''

फिर मथुरासिंह ने संक्षेप में अपना इतिहास बताया। उसमें उसने अपने सेना छोड़ने का कारण नहीं बताया। उसने उतना ही बताया, जितने से स्वामीजी के मन में साहस और उत्साह की वृद्धि हो सके।

गुरुकुल जाना सफल रहा। अधिकारियों और स्वामीजी ने कहा, ''दो-तीन सौ स्वयं-सेवक तो हम एकत्रित कर सकते हैं।''

''तो आप एकत्रित करिए। मैं आज अथवा कल तक हैदराबाद में अपना कार्य पूर्ण कर कुछ दिन के लिए दिल्ली और पंजाब जा रहा हूँ। आठ से दस दिन के बाद मैं स्वयमेव यहाँ आऊंगा और पन्द्रह-पन्द्रह दिन में ट्रेनिंग देकर-स्वयं-सेवकों को तैयार कर दूंगा। आप आश्चर्य करेंगे कि किस प्रकार, दो-तीन सौ प्रशिक्षित युवक, सहस्रों के छक्के छुड़ा सकते हैं।''

बाबू त्रिलोकचन्द के द्वारा अपना पता देकर मथुरासिंह गुरुकुल से चला आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7

कराची में मिस्टर वार्डी से मिलने के लिए मथुरासिंह इंगलैंड के हाई कमिश्नर के कार्यालय में गया। कमिश्नर को उसने कहा, "मैं एक इटैलियन नागरिक मिस्टर ग्युसेप वार्डी से मिलना चाहता हूँ।"

"आप कहाँ से आये हैं?"

"हैदराबाद से।"

"हमारे पास इटैलियन नागरिकों की सूची नहीं होती, इसके लिए आपको स्विस ऐम्बेसी में जाना होगा। हैदराबाद रियासत का भी यहाँ एक कार्यालय है। आप वहाँ से पता कर सकते हैं।"

इस उत्तर से मथुरासिंह को कुछ परेशानी तो हुई, परन्तु इतनी दूर आकर वह अपना कार्य छोड़ने वाला नहीं था। उसने उक्त सूचना के लिए कमिश्नर का धन्यवाद किया और जाने लगा तो कमिश्नर ने ही उससे पूछा, "यदि आप अपना कार्य बतायें तो कदाचित् मैं आपकी सहायता कर सकूँ।"

"लगभग एक मास पूर्व मैं स्काटलैंड के एक कस्बे बोनैस में मिस्टर वार्डी से मिला था। उनसे वहाँ लार्ड गोर्ट के मैंशन में मेरी भेंट हुई थी। वहाँ से वे कराची आए थे। किसी काम से मैं भी इस समय कराची आया हुआ हूँ, इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि मैं उनसे मिलने की इच्छा करता।"

"लार्ड गोर्ट से आपका क्या सम्बन्ध है?"

"वर्तमान लार्ड गोर्ट, जब केवल विलियम मात्र थे, तब मैं कुछ दिन के लिए उनके पड़ोस में, स्टैनले मैंशन में मिसेज स्टैनले का अतिथि बनकर रहा था। वे युद्ध के दिन थे और मैं हिन्दुस्तान सरकार की ओर से सैनिक आयोग पर इंगलैंड में था। स्टैनले मैंशन में मैं छुट्टियाँ मनाने के लिए गया था।"

"हिन्दुस्तानी सेना में आपका क्या रैंक था?"

"हिन्दुस्तानी सेना में तो मैं लेफ्टिनेंट था परन्तु इंगलैंड सरकार की कुछ सेवाओं के कारण वहाँ मुझे ब्रिगेडिसर-शिप मिल गई थी। इसी रैंक पर मैं बेनगाजी के युद्ध में लड़ा भी था। तदनन्तर मुझे लंदन के चीफ्स ऑफ दि स्टाफ में नियुक्त कर दिया गया था।"

"क्या अब भी आप भारतीय सेना में हैं?"

"नहीं, मैं। रिट्रेंचमेंट में आ गया हूँ।"

"आप तो एक प्रतिष्ठित सैनिक-अधिकारी रहे हैं। इस कारण मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ। यदि आप रिसेप्शन-रूम में प्रतीक्षा करें तो मैं स्वयं स्विस ऐम्बेसी से अथवा हैदराबाद ऑफिस से पता करके बता सकता हूँ। क्या नाम बताया है आपने उस व्यक्ति का?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मिस्टर ग्युसेप वार्डी। उनकी पत्नी एक अंग्रेज महिला हैं। उसका नाम है क्लैरा वार्डी। मेरा नाम है मथुरासिंह रिटायर्ड लेफ्टिनेंट।"

एक कागज पर कमिश्नर ने यह सब-कुछ नोट कर लिया और एक क्लर्क को वह कागज देकर उसे इस विषय में पता करने के लिए आदेश दे दिया।

मथुरासिंह कमिश्नर का धन्यवाद कर बाहर रिसेप्शन-रूम में जा बैठा। लगभग आधे घंटे की प्रतीक्षा के परिणामस्वरूप वार्डी से उसकी वहीं पर भेंट हो गई। वार्डी स्वयं वहाँ आया था और इंगलैंड का हाई कमिश्नर उसके साथ था। उसने कहा, "ये हैदराबाद आफिस में मिले हैं।"

वार्डी ने मथुरासिंह का अभिवादन कर उससे मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की। वार्डी ने पूछा, "आपकी श्रीमतीजी भी साथ हैं क्या?"

"नहीं, और आपकी श्रीमती?"

"वे तो लन्दन में हैं।" "तो हम दोनों एक-जैसे ही हैं।"

वार्डी ने कमिश्नर का धन्यवाद किया और मथुरासिंह को लेकर कमीशन से बाहर आ गया। वार्डी वहाँ पर टैक्सी में आया था। अतः दोनों उसी टैक्सी में बेठे तो बात शुरू हो गई, "कहाँ ठहरे हैं आप?"

"मैं सेसिल होटल में ठहरा हूँ।"

"मैं रॉयल में हूँ। पैरिस से कैप्टन रहमान ने मुझे आपके विषय में लिखा था। उनका कहना था कि आप इस कैम्पेन की योजना बनायेंगे और इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए कराची भी आयेंगे। रहमान स्वयं एक सप्ताह तक न्यूयार्क से आने वाला था, परन्तु कुछ ऐसे लक्षण प्रतीत होते हैं कि उसे अमेरिका में एक मास लग जायेगा।"

"मैं भी अमेरिका जा रहा था। परन्तु मैं जब कोई काम हाथ में ले लेता हूँ तो मैं फिर अन्य सब-कुछ भूल जाया करता हूँ। अतः अपनी पत्नी को अकेले अमेरिका की सैर करने के लिए भेज कर मैं वापस चला आया हूँ।

"परन्तु मिस्टर वार्डी! अभी तक तो इस योजना में इतनी गड़बड़ दिखाई दी है कि इसमें पूर्ण असफलता के ही लक्षण दिखाई दे रहे हैं।"

वार्डी हंस पड़ा। उसने कहा, "इस अव्यवस्था को व्यवस्थित करने के लिए ही आप और मैं नियुक्त किये गए हैं। वैसे रहमान तो बहुत ही व्यसनी व्यक्ति है। मुझे ऐसा लगता है कि उसे कोई अमेरिकन लड़की मिल गई होगी और वह काम-काज भूलकर उसके पीछे लग गया होगा।"

मथुरासिंह हँस पड़ा। उसको स्टैनले का उसके लिए नाइट-क्लब का टिकट लेने जाना स्मरण हो आया। इस समय तक वे रायल होटल में जा पहुँचे। कमरे में पहुँच मथुरासिंह ने कहा, "मिस्टर वार्डी! पाकिस्तान सरकार का हमारी योजना में कितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोग है?"

"वे इस योजना में संशोधन चाहते हैं।"

"किस विषय पर संशोधन चाहते हैं?"

"युनाइटेड इंडिया की स्कीम में। कैप्टन रहमान की योजना यह है कि निजाम इस यूनियन के प्रथम डिक्टेटर हों। इसी आश्वासन पर निजाम साहब इस समय दस करोड़ रुपया दे रहे हैं। साथ ही उन्होंने हैदराबाद को स्वतन्त्र रखने के लिए अपनी सेना के साथ एक प्राइवेट आर्मी बनाने का इन्तजाम किया है। इस समय तक दस हजार रजाकार भरती हो चुके हैं।

"परन्तु पाकिस्तान यह चाहता है कि प्रथम डिक्टेटर मिस्टर जिना हों। मिस्टर जिना की अनुपस्थिति में जो कोई भी यहाँ का गवर्नर होगा, वही इस पद पर कार्य करेगा। इसके लिए पाकिस्तान अपनी सेना देगा, उसका पूर्ण खर्चा देगा और एक करोड़ रुपया नकद देगा।"

"और आप क्या चाहते हैं?"

"मैं तो यहाँ आपकी और कैप्टन रहमान की प्रतीक्षा में बैठा हूँ।"

"तो क्या मुझे भी रहमान की प्रतीक्षा में बैठा रहना पड़ेगा?"

"नहीं तो क्या करेंगे?"

"मैं चाहता हूँ कि आप मुझे पाकिस्तान के प्रवक्ता से मिला दें। तदनन्तर मैं भारत के उन लोगों से मिलना चाहता हूँ, जिनके नाम रहमान ने मुझे दिये हैं।"

दो दिन बाद मथुरासिंह की पाकिस्तान के प्रवक्ता के साथ भेंट हो गई। मिस्टर जिना का एक निजी सचिव कर्नल कुरेशी वह प्रवक्ता था। उसने कहा, "गवर्नर जनरल साहब आजकल बीमार हैं। वे इलाज के लिए मरी गये हुए हैं। इसलिए बात तो उनके स्वस्थ हो जाने पर ही होगी। अभी तक उनका ख्याल यह था कि यदि हिन्दू लोग हिन्दुस्तान को यूनाइटेड करना चाहते है तो उनको पहले पण्डित नेहरू को अपदस्थ करना होगा। तब तो इस यूनाइटेड इंडिया में कुछ हिन्दुओं का भाग हो सकता है। अन्यथा भारत पाकिस्तान के अधीन होकर रहेगा। पाकिस्तान का गवर्नर जनरल यूनाइटेड का प्रथम डिक्टेटर होगा।"

"निजाम साहब का क्या होगा?"

"उसको किसी पहाड़ी स्थान पर सैनिटोरियम में रहने के लिए स्थान मिल जायेगा।"

मथुरासिंह मुस्कराया और पूछने लगा, "कायदे आजम साहब से कब तक मुलाकात की उम्मीद की जा सकती है?"

"कह नहीं सकता। मैं आज मरी जा रहा हूँ। तीन-चार दिन तक लौट सकूंगा।"

कुरेशी के चले जाने के बाद मथुरसिंह ने वार्डी को बताया, "भारत का कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हिन्दू इस बात के लिए तैयार नहीं होगा। एक बात मैं और कह देता हूँ कि हैदराबाद के रजाकारों के व्यवहार से हमारी योजना जो यूनाइटेड इंडिया की है, उसमें विघ्न पड़ रहा है। वे हिन्दुओं का कत्लेआम कर रहे हैं। उनकी सम्पत्ति को लूट रहे हैं अथवा आग लगा रहे हैं। हिन्दुओं की स्त्रियों का अपहरण कर उनके साथ बलात्कार कर रहे हैं।''

''मैं तो यह चाहता हूँ, ''वार्डी ने गम्भीर होकर कहा, ''कि यह मूवमेंट और अपनी मूवमेंट पृथक्-पृथक् कर दी जाय।''

''परन्तु इसको आर्थिक सहायता देने वाले तो वही हैं, जिनका एक ओर रजाकारों से सम्बन्ध है और दूसरी ओर कश्मीर पर आक्रमण करने वाले कबाइलियों से।''

वार्डी परेशानी अनुभव करता हुआ मौन बैठा रहा। मथुरासिंह आगे बोला, ''मुझे यह विश्वास हो रहा है कि यह षड्यन्त्र समस्त भारत में इस्लामी राज्य कायम करने के लिए है। यूनाइटेड इंडिया और सैक्युलर स्टेट का नारा केवल धोखेबाजी है। इससे वे अमेरिका और इंगलैंड की सरकार से सहायता पाने की आशा करते हैं। अंग्रेज सदा ही मूर्खों की भांति गलत पक्ष का समर्थन करते रहे हैं। पिछले सत्तर वर्षों से यही हो रहा है। यही कारण है कि ब्रिटिश एम्पायर विनाश को प्राप्त हो रहा है। इस मिथ्या नीति के अवलम्बन से इंगलैंड आगामी बीस वर्ष में अनाथ सा बन जायेगा।''

वार्डी अभी भी चुप ही बैठा रहा। मथुरासिंह ने आगे कहा, ''मुझे दुःख हो रहा है कि क्यों मैंने अपनी पत्नी की संगति छोड़ी। मैं व्यर्थ में इस बेसिर-पैर की योजना के पीछे चल पड़ा।''

''तो अब क्या करेंगे?''

''हैदराबाद जाकर मैं कैप्टन रहमान की प्रतीक्षा करूंगा। उससे मिल कर ही अपनी योजना तैयार कर सकता हूँ। मैं भारत में इस्लामी राज्य का निर्माण ठीक नहीं समझता। हिन्दुओं के लिए भी नहीं और इंग्लैंड तथा अमेरिका के लिए भी नहीं। दुनिया की भलाई के लिए भी यह बात हितकर नहीं होगी।

गम्भीर विचार के पश्चात् वार्डी बोला, ''मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव कर रहा हूँ। मैं तो इस कारण यहाँ बंधा हूँ कि रहमान मेरे पास यहाँ पच्चीस लाख रुपया रख गया है। वह मैं उसे वापस कर इंगलैंड जाना चाहता हूँ। मुझे क्लैरा की याद आ रही है।''

''मैं कल हवाई जहाज से दिल्ली जाना चाहता हूँ। मुझे हिन्दुस्तान में घूमकर जाँच करने की आवश्यकता है, इसलिए कुछ रुपया तो मुझे मिल जाना चाहिए।''

''कितने से काम चल जायेगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कम-से-कम एक लाख रुपया।"

"मिल जायेगा।"

8

वास्तव में मथुरासिंह हिन्दुस्तान में किसी भी ऐसे व्यक्ति से मिलना नहीं चाहता था, जिसका नाम रहमान की सूची में था। वह समझता था कि उनके साथ भारत का गृहमंत्री निपट लेगा। इस पर भी वह गृहमंत्री को मिलकर अपनी जाँच का परिणाम बताना चाहता था। अतः कराची से वह लाहौर के मार्ग से लौटा। रेल से वह लाहौर पहुँचा। वहाँ से वागा सीमा पार कर वह अमृतसर और फिर दिल्ली पहुँच गया। जब वह त्रिलोकचन्द के पास पहुँचा तो उनको यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मथुरासिंह कराची से आ रहा है। मथुरासिंह ने अपना काम और उस पर अपने विचार व्यक्त किये। वकील साहब ने भी उसके विचार का समर्थन करते हुए कहा कि गृहमंत्री से भेंट करनी चाहिए।

इस पर मथुरासिंह बोला, "पिछली बार गृहमंत्री का व्यवहार इतना शीतल था कि मैं वहाँ से निरुत्साहित होकर लौटा था। वह अपने को मंत्रि-मंडल में अल्प संख्या में पाते थे। इसलिए इस विषय में कुछ भी कर सकने में वे स्वयं को अशक्त पा रहे थे।"

"कुछ भी हो, तुम भेंट के लिए यत्न कर अपनी जानकारी और अपना अनुमान उन्हें बता दो। यदि तुम्हारे कार्य में उनकी रुचि न हुई अथवा वे कुछ भी करने के अयोग्य हुए तो तुमसे भेंट ही नहीं करेंगे। यदि भेंट की भी तो चुप रहेंगे।"

मथुरासिंह ने गृहमंत्री के पी. ए. के टेलीफोन किया तो इस बार एक नवीन ध्वनि सुनाई दी। फोन पर पी. ए. ने पूछा, "क्या काम है?"

"श्रीमान् जी! काम आपसे नहीं, मंत्री महोदय से है। आप उनसे पूछ लीजिए। यदि वे न मिलना चाहें तो मुझे फोन करके बता दीजियेगा।

मैं स्वयं भी सायंकाल तक यह जानने का यत्न करूंगा कि भेंट का समय मिला है अथवा नहीं।"

मथुरासिंह अनुभव कर रहा था कि किसी प्रकार की गड़बड़ी है। इससे पूर्व किसी पी. ए. ने नहीं पूछा था कि मिनिस्टर साहब से क्या काम है। वह यह कह सकता था कि प्रार्थी लिखकर दे दे कि वह किस विषय पर बात करना चाहता है। उस लिखे हुए को मंत्री की इच्छा से ही कोई पढ़ सकता था।

परन्तु न तो पी. ए. में इतनी बुद्धि थी कि वह इस प्रकार के पत्र की माँग करता और न ही वह यह समझ रहा था कि इस प्रकार टेलीफोन पर स्पष्टीकरण माँग कर, सरकारी रहस्य को सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिए वह साधन बन रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दुर्व्यवस्था के वातावरण में मथुरासिंह को सायंकाल भेंट का अवसर मिल गया। मथुरासिंह नियत समय पर पहुँचा तो उसको गृहमंत्री के निकट उपस्थित कर दिया गया। गृहमंत्री ने पूछा, ''कहिए लेफ्टिनेन्ट साहब! क्या कर आये हैं कराची में?''

मथुरासिंह समझ गया कि गृहमंत्री पुनः अपनी पुरानी मानसिक अवस्था में लौट आये है। इससे उसने मुस्कराते हुए कहा, ''कैप्टन रहमान की योजना पर पाकिस्तान की प्रतिक्रिया जानना चाहता था। वहाँ मिस्टर जिन्ना के पी. ए. कर्नल कुरेशी से मिला।''

मथुरासिंह ने कर्नल कुरेशी और वार्डी से हुए वार्तालाप का विवरण सुना दिया। गृहमंत्री मुस्कराता हुआ सुनता रहा। जब वे सुना चुका तो गृहमंत्री ने पूछा, ''और मिस कुरेशी से नहीं मिले?''

''वह भी मिली थी। वह आपकी बहुत प्रशंसा करती थी।''

''लेफ्टिनेन्ट मथुरासिंह की नहीं।''

''जी नहीं। आपके बाद वह मौलाना साहब की प्रशंसा करती थी।''

''कश्मीर के प्रधान-मंत्री के विषय में कुछ नहीं कहा?''

''उन्हें, मुझे और भारत के प्रधान-मंत्री को तो वह गालियाँ देती थी।''

''क्या मतलब है आपका?''

''उसका विचार था कि आपने और मौलाना साहब ने उसकी जान बख्शी है। अन्य लोगों ने उसे फंसाने का यत्न किया था।''

''मैं समझा नहीं।''

''वह कहती थी कि यदि आप उसका विरोध नहीं करते तो मौलाना उसका पक्ष नहीं लेते और तब वह जेल से भागने में सफल नहीं होती।''

गृहमंत्री हँसने लगे। मथुरासिंह विस्मय करता था कि भारत के गुप्तचर कितनी फिज़ूल बातों की सूचना लाया करते हैं और तत्व की कोई बात वे बता नहीं पाते। गृहमंत्री ने पूछा, ''तो हमारे युद्ध-विशारद महाशय अब क्या चाहते हैं?''

''मेरी समझ में यह आ रहा है कि कैप्टन रहमान अमेरिका और इंग्लैंड में शस्त्रास्त्र खरीदने के लिए गया हुआ था। वे शस्त्रास्त्र शीघ्र ही हैदराबाद पहुँचने वाले हैं। इंगलैंड ने हैदराबाद के शस्त्र खरीदने का प्रथम आर्डर स्वीकार कर लिया है। अब रहमान वाशिंगटन इसी कार्य के लिए गया हुआ है।

''ज्यों ही शस्त्रास्त्र हैदराबाद में पहुँचे कि वहाँ की सेना समुद्र-तट की ओर बढ़ेगी। तब वे विज़गापट्टम बन्दरगाह पर अधिकार करने का यत्न करेंगे। उन्होंने वहाँ के हिन्दुओं को आतंकित करना आरम्भ कर दिया है, जिससे भारत के सम्भावित आक्रमण के समय वे किसी प्रकार का विघ्न न डाल सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि भारत और हैदराबाद में संघर्ष के समय विज़गापट्टम हैदराबाद के अधिकार में हो गया तो इंगलैंड का समुद्री बेड़ा सिंगापुर से चलकर वहाँ आ जायेगा और वह हैदराबाद को आक्रान्त घोषित कर, उसकी सहायता के लिए भारत की भूमि पर उतर आयेगा। यदि कहीं लन्दन में बनी तदर्थ समिति का दाँव चल गया तो वे अमेरिका को यह विश्वास दिला देंगे कि भारत का एकीकरण हो रहा है, तब वे भी वहाँ पर अपनी टांग अड़ायेंगे।"

"इस सम्भावना को रोकने के लिए आप क्या उपाय बताते हैं?"

"पूर्व इसके कि रियासत में शस्त्रास्त्र पहुँचें, पूर्ण राज्य पर भारत का अधिकार हो जाना चाहिए। यह कार्य इतनी त्वरित गति से होना चाहिए कि इंगलैंड अथवा अमेरिका को कुछ कहने एवं करने का अवसर ही न मिल पाये।"

"यदि पाकिस्तान ने इसे बहाना मान, भारत के साथ युद्ध छेड़ दिया तो?"

"पाकिस्तान भारत के साथ युद्ध नहीं करेगा। वह भारत पर आक्रमण करने की स्थिति में नहीं है। उसकी शक्ति बहुत कम है।"

"यह आप किस प्रकार कहते हैं?"

"यह इसलिए कि यदि भारत पर आक्रमण करना उसके सामर्थ्य की बात होती तो उसने आज तक कभी का आक्रमण कर दिया होता। कश्मीर पर भी वह कबाइलियों से आक्रमण नहीं कराता। अब वह कश्मीर में हार रहा है, वह यह घोषणा कर कि भारत आक्रमण करने वाला है हमारी सीमा में घुस सकता था और अब तक वह भारत का एक बहुत बड़ा भू-भाग आत्मसात कर चुका होता।"

"हम आक्रमण किस बहाने से करें?"

"मैं वहाँ के कुछ हिन्दुओं को संगठित कर गुलबर्गा काण्ड का बदला लेने का विचार कर रहा हूँ। इस बदले का बदला लिया जायेगा और फिर हम भी बदला लेंगे। परिणाम यह होगा कि एक प्रकार का गृह-युद्ध आरम्भ हो जायेगा। तब आप मानवता का नाम लेकर वहाँ पर पुलिस भेज दीजियेगा।

"इससे तो हमारे मंत्रि-मंडल की फूट और भी बढ़ जायेगी।"

"एक बार ऐसा कर दीजिये तो शेष स्वयं ही ठीक हो जायेगा। मुझे पाकिस्तान का इतना डर नहीं, जितना इंगलैंड और अमेरिका का है। आपके दोनों दूतावास बहुत दुर्बल हैं।"

"और?"

"अब मुझे अनुमति दीजिये। मेरी प्रतीक्षा हैदराबाद में हो रही है। मैं यहाँ से चला जाना चाहता हूँ।"

"कौन प्रतीक्षा कर रहा है?"

"कुछ हिन्दू युवक हैं, जो गुलबर्गा-काण्ड का बदला लेना चाहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा जाइये। आपके लिए शस्त्रास्त्र का क्या प्रबन्ध है?"

"हमारे पास शस्त्रास्त्र नहीं हैं। हम तो लाठियों और तलवारों से अपना काम करेंगे।"

गृहमंत्री मुस्कराया और मथुरासिंह नमस्कार कर बाहर निकल आया। उसके दूसरे ही दिन वह हैदराबाद के लिए चल पड़ा।

गृहमंत्री के घर पर पुनः मंत्रियों की गोष्ठियाँ होने लगीं। मथुरासिंह से प्राप्त सूचना के आधार पर विचार-विनिमय होने लगा। गृहमंत्री का कहना था, "लन्दन, हैदराबाद और कराची मिलकर भारत के विपरीत षड्यन्त्र कर रहे हैं। इस कारण हम भारत-भूमि पर एक ऐसा स्वतन्त्र राज्य सहन नहीं कर सकते, जो भारत के विपरीत ही सन्धियाँ करता हो। साथ ही जो चाल पश्चिमी पाकिस्तान में चली गई है, हम उसकी हैदराबाद में पुनरावृत्ति देखना भी नहीं चाहते। हिन्दुओं की मारकाट और उनका हैदराबाद से निष्कासन सहन नहीं किया जा सकता।"

सुरक्षा मंत्री ने कहा, "हैदराबाद के आभ्यान्तरिक विषयों पर हस्तक्षेप करने के लिए कोई बहाना होना चाहिए।"

"बहाना शब्द तो उचित नहीं है। कोई वास्तविक कारण होना चाहिए। वास्तविक कारण यह है कि वहाँ पर हिन्दुओं की निर्मम हत्या हो रही है, उनकी सम्पत्ति लूटी जा रही है और उनकी स्त्रियों का अपहरण कर उनके साथ बलात्कार किया जा रहा है।"

"उनके मामले में हस्तक्षेप करने का तो यह कोई बहाना नहीं है।"

"तो कैसा बहाना चाहिए?"

"यदि वहाँ गृह-युद्ध हो जाय तो हम हस्तक्षेप कर सकते हैं।"

"इस मार-पीट और लूट-खसूट को क्या आप कहते हैं? यह भी तो एक पक्षीय गृह-युद्ध है?"

"गृहयुद्ध एक पक्षीय नहीं होता।"

गृहमंत्री विचारकर बोला, "मैं समझता हूँ कि ऐसा भी हो जायेगा। यद्यपि भले लोगों की ओर से युद्ध किया जाना मैं पसन्द नहीं करता। परन्तु स्थिति ऐसी है कि उसमें अन्य कोई मार्ग रह ही नहीं जाता। जब हमारा कानून ही इस प्रकार की माँग करता हो, तब बताइये उस स्थिति में कोई क्या करेगा?"

"ऐसी स्थिति में तो हम निज़ाम हैदराबाद के कान पकड़कर उसको एक शरारती बालक की भांति स्कूल में भरती कर लेंगे।"

एक सज्जन पूछ बैठे, "पाकिस्तान का क्या होगा?"

"मैं समझता हूँ कि यदि पाकिस्तान ने इस विषय में हस्तक्षेप किया तो हम उससे लड़कर उसे पुनः भारत में सम्मिलित कर लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु यह तो विदेश विभाग के अन्तर्गत है और इस विषय में उसकी सम्मति के बिना कुछ नहीं हो सकता।"

इससे गृहमंत्री का मुख बन्द हो गया।

गृहमंत्री का मुख अधिक समय तक बन्द नहीं रह सका। शस्त्रास्त्र से लदा हुआ एक हवाई जहाज कराची से हैदराबाद जाता हुआ बम्बई में उतरने के लिए विवश किया गया। जहाज के पायलॉट ने बताया कि वह इंगलैंड से आ रहा है। भारत सरकार के अधिकारियों को उसमें लदे माल पर सन्देह हुआ तो उसकी तलाशी ली गई और उसमें गोरिल्ला युद्ध करने के लिए बन्दूकें, कारतूस, हथगोले और इसी प्रकार के अन्य शस्त्रास्त्र पाये गए।

भारत सरकार के पुलिस विभाग ने उस माल को ले जाने वाले से पूछताछ की तो पता चला कि इस जहाज का यह तीसरा चक्कर है। दो बार पहले वह इसी प्रकार का सामान ले जा चुका है। हवाई जहाज वालों का कहना था कि भारत सरकार को उनको रोकने का कोई अधिकार नहीं है।

इस घटना ने मथुरासिंह के समाचार का समर्थन कर दिया और इसे सत्य ही भारत के लिए भय का कारण माना गया तथा सरकार में इस विषय पर विचार-विमर्श होने लगा।

हैदराबाद सरकार ने हवाई जहाज में पकड़े गए सामान को छोड़ने की माँग प्रस्तुत कर दी। इस पर तो भारत सरकार के अधिकारियों में मत-भेद हो गया। एक पक्ष का कहना था कि भारत और हैदराबाद इस समय मित्र हैं, एक मित्र दूसरे मित्र के शस्त्रास्त्र खरीदने में किस प्रकार हस्तक्षेप कर सकता है? दूसरे पक्ष का कथन था कि सामान्य आवश्यकता से अधिक जब कोई पड़ौसी राज्य शस्त्रास्त्र क्रय करने लगे तो उसे अवश्य ही युद्ध की तैयारी माननी चाहिए। इससे हमें यह जानने का अधिकार हो जाता है कि इनके क्रय करने का हैदराबाद का प्रयोजन क्या है।

गृहमंत्री की रीति से सोचने वालों का यह कहना था कि हैदराबाद मित्र-राष्ट्र नहीं है। अमित्र होने से उसे शत्रुता करने के लिए तैयार समझना चाहिए। ऐसे राज्य का सामान्य आवश्यकता से अधिक सैन्य-सामग्री क्रय करना, भय का कारण हो सकता है। बुद्धिमत्ता की यह माँग है कि उसको इस प्रकार शस्त्रास्त्र संग्रह करने के अयोग्य कर दिया जाय।

इस विचार के विरोधीयों ने पूछा, "हैदराबाद में अपनी अमित्रता का प्रदर्शन हमारे साथ कब किया है?"

"निजाम साहब ने भारत के साथ सन्धि करने की रुचि प्रकट नहीं की। भारत और हैदराबाद की जनता अभिन्न है और यदि वहाँ की जनता कष्ट में है तो भारत सरकार उस कष्ट का अनुभव करती है। वहाँ अनेक हत्या-काण्ड हो चुके हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद की सरकार उन हत्याकाण्डों को रोकने का यत्न नहीं करती।"

"यह सब इतनी मामूली बातें हैं कि इसके लिए भारत सरकार किसी भी राज्य से झगड़ा मोल नहीं ले सकती।"

इस प्रकार की चर्चा चल रही थी कि हैदराबाद से समाचार आने लगे कि वहाँ रजाकारों और कुछ हिन्दू गुण्डों में मुठभेड़ हो गई है। दोनों पक्षों के लड़ने वाले हताहत हुए हैं। हैदराबाद नगर में हिन्दू और मुसलमानों में जमकर लड़ाई हुई और रजाकार भाग गए। वे अपने बीस हताहतों को मैदान में ही छोड़ गए।

भारत के समाचार-पत्रों में जब इस प्रकार के समाचार आने लगे तो शान्ति स्थापित करने के लिए, वास्तव में, रजाकारों की सहायता के लिए रिसासत की पुलिस सक्रिय हो गई।

सबसे बड़ा झगड़ा नगर के हिन्दुओं के आक्रमण के समय कासिम रिज़वी के मकान पर हुआ। दोनों और से रिवाल्वर, बन्दूकें और हथगोले चले। इस समाचार से तो भारत में गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गई।

भारत सरकार को विवश होकर हैदराबाद को यह चेतावनी देनी पड़ी कि राज्य में शान्ति स्थापित की जाय, अन्यथा भारत सरकार दुःखी जनता की रक्षा के लिए अपनी पुलिस भेजने पर विवश हो जायेगी। हैदराबाद राज्य ने इसके विपरीत भारत सरकार पर यह आरोप लगाया कि वह अपने एजेन्ट भेजकर राज्य में अशान्ति फैला रही है। उसे अपने एजेन्ट वापस बुला लेने चाहिए।

9

मथुरासिंह दिल्ली से लौटकर हैदराबाद पहुँचने पर सीधा गुरुकुल पहुँचा। स्वामी भूमानन्द तथा गुरुकुल के अधिकारी सन्देह कर रहे थे कि लेफ्टिनेन्ट मथुरासिंह उनको उत्साहित कर चला गया है और वह लौटने वाला नहीं है। इस पर भी वे हैदराबाद में हिन्दुओं की दयनीय दशा देख, स्वयं भी सुरक्षा के निमित कुछ-न-कुछ करने के लिए अपने को विवश पाते थे।

स्वामी भूमानन्द समस्त राज्य और उसके पड़ोसी बम्बई प्रदेश के मुख्य-मुख्य स्थानों का दौरा करके वापस लौटे थे। उन्हें लगभग दस हजार रुपया और चार सौ के लगभग स्वयंसेवकों की सूची प्राप्त हुई थी। कुरद्वार के समीप एक मराठा जमींदारी थी। वहाँ से उनको पाँच राफइल और कई सौ कारतूस भी मिले। बम्बई से यह विश्वास मिला था कि रुपया व्यय करने पर अच्छी प्रकार की राइफलें मिल सकती हैं। स्वामीजी के विचार से उनके दौरे का परिणाम आशाजनक रहा था।

वे जब गुरुकुल पहुँचे तो मथुरासिंह अभी भी दिल्ली अथवा पंजाब से वापस नहीं पहुँचा था। इससे उन्होंने यह मान लिया कि कदाचित् अब वह नहीं आयेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अतः वह किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में थे जो स्वयंसेवकों को शस्त्रास्त्र चलाने की शिक्षा दे सके। स्वामीजी अपने साथ कुछ लठैत लाए थे। उनके वहाँ पहुचते ही स्वयं सेवक भी आने आरम्भ हो गए थे।

ठीक पन्द्रह दिन अनुपस्थित रहकर एक दिन सहसा मथुरासिंह वहाँ पहुँच गया। अपने साथ वह बम्बई के एक बैंक के नाम पचास-पचास हजार के दो ड्राफ्ट भी लाया था। वह रुपया उसने स्वामीजी को दिया तो कुछ और बन्दूकें खरीदने का निश्चय किया गया।

मथुरासिंह की शिक्षा का आधार गुरिल्ला-युद्ध था। उसने दस-दस स्वयं-सेवकों की मण्डलियों को कूदना-फांदना और एकाएक छापे मारना, भाग लगाना, पेड़ पर चढ़ना और तैरना इत्यादि शिक्षा देनी आरम्भ कर दीं। वास्तव में पाँच दिन से अधिक की शिक्षा के लिए समय ही नहीं था। एक दिन में छः-सात से अधिक मण्डलियों को शिक्षा नहीं दी जा सकती थी, क्योंकि समय का अभाव था।

पहला जत्था बीस मई को तैयार किया गया। सबसे पहले हैदराबाद नगर में ही इसकी परीक्षा की गई। मथुरासिंह उनके साथ था। तीस स्वयंसेवकों की तीन टोलियाँ तैयार की गई और चार मीनार के पीछे वाली मसजिद में कवायद का अभ्यास करने वाले रजाकारों पर आक्रमण करने का कार्य-क्रम बनाया गया। दो सौ रज़ाकार हाथों में लाठियाँ लिए, कवायद कर रहे थे। रात के ठीक सवा दस बजे मथुरासिंह दस स्वयंसेवकों के साथ इन कवायद करने वालों का मार्ग रोककर खड़ा हो गया। रजाकार खड़े हो पूछने लगे कि उनको क्यों रोका जा रहा है तो मथुरासिंह ने चार्ज की आज्ञा दे दी। दो सौ की तुलना में दस तो कुछ भी नहीं होते। परन्तु यह मथुरासिंह की शिक्षा और आक्रमण का ढंग था कि जिसने उन दो सौ रजाकारों को परेशान कर दिया। वे लोग इन स्वयं-सेवकों को घेर लेने का यत्न ही कर रहे थे कि बगल से दूसरी मंडली ने आक्रमण कर दिया। इससे रजाकारों का ध्यान बँट गया। उनमें से बहुत से ऐसे थे जो अनिश्चित मन थे कि किनके साथ लड़ें। इस समय तीसरी मण्डली ने हल्ला बोल दिया। वे यह नहीं समझ सके कि और कितनी मण्डलियां आने वाली हैं। रज़ाकार कप्तान ने रिट्रीट की आज्ञा तो दे दी परन्तु इससे पहले ही रज़ाकार भागने आरम्भ हो गए थे। पाँच मिनट में मैदान साफ़ हो गया। मथुरासिंह ने डिस्पर्स की आज्ञा दे दी। ये लोग जिधर से आये थे उसी दिशा में विलीन हो गए। पन्द्रह घायल रज़ाकार वहाँ पड़े रह गये। मथुरासिंह ने अपने बीस स्वयं-सेवकों को पुनः एकत्रित किया और पन्द्रह मिनट में कचहरी सड़क पर कवायद करने वाले रजाकारों पर छोड़ दिया। वहाँ तो तीन मर भी गए और शेष भाग खड़े हुए। इसके बाद वे अपने छिपने के स्थान पर चले गये। तीन-चार को कुछ चोटें भी आई थीं।

क्रोध में आकर रात को रज़ाकारों ने एक हिन्दू के घर में आग लगा दी। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदले में अगले दिन मुसलमानों के एक गांव में आग लगाकर मुसलमानों के बीस घरों को भस्मसात कर दिया गया।

दो दिन के बाद सरकारी पुलिस ने गुरुकुल पर अधिकार कर लिया। आर्य-समाजी सत्याग्रह के दिनों में यह गुरुकुल सत्याग्रहियों का कैम्प बना रहा था। इस कारण रज़ाकारों पर इस आक्रमण से सरकार का सन्देह गुरुकुल पर जाना स्वाभाविक था।

इसके तीन दिन बाद रिज़्वी के गाँव लातूर पर आक्रमण कर दिया गया। वहाँ तो कुछ थोड़े-से स्वयं-सेवकों ने ही जनता के सहयोग से रिज़्वी साहब के मकान पर हल्ला बोल दिया। दो सौ के लगभग रज़ाकार वहाँ रहते थे। जब आक्रमण हुआ तो युद्ध डटकर हुआ। सौ के लगभग रज़ाकार काम आये। जनता के भी दस व्यक्ति इस युद्ध में खेत रहे। यहाँ तो दोनों ओर से गोली चली।

इससे तो पूर्ण रियासत के मुसलमानों में आतंक छा गया। रियासत की पुलिस खुलकर रज़ाकारों की सहायता करने लगी। कांग्रेस कमेटी दोनों सम्प्रदायों की संयुक्त शान्ति सभा बनाने का यत्न करने लगी। परन्तु पूर्ण रियासत में जनता के मुख को खून लग जाने की बात हो गई। नित्य ही चलते-फिरते हिन्दू तथा मुसलमानों के पेट में छुरे घोंपे जाने लगे।

हैदराबाद में तो दुकानें बन्द हो गयीं। इक्का-दुक्का लोगों का घर से निकलना बन्द हो गया। गाँवों में मुसलमानों की आबादी कम थी, वे त्रसित रहने लगे। हिन्दू संगठित होकर निज़ाम को गद्दी छोड़ने के नारे लगाने लगे।

रज़ाकारों ने सिकन्दराबाद में अपना अड्डा बना लिया। हिन्दू स्वयं सेवकों ने गुलबर्गा को अपना केन्द्र बनाया। वहाँ एक मकान में रहत हुए मथुरासिंह स्वयं-सेवकों को गोरिल्ला-युद्ध का अभ्यास कराने लगा।

जून की पाँच तारीख थी। मथुरासिंह सिकन्दराबाद पर धावा बोलने की योजना पर विचार कर रहा था। तीन हज़ार रज़ाकार वहाँ कैम्प डाले बैठे थे। मथुरासिंह चाहता था कि छापा डालकर अधिक-से-अधिक हानि पहुँचाई जाए और हो सके तो कुछ रज़ाकारों को बन्दी भी बना लिया जाए।

सिकन्दराबाद का नक्शा सामने रख उसने स्वयं-सेवकों के कप्तान को अपनी योजना समझाई। योजना यह थी कि रात के दस बजे जब अन्धेरा हो जाय तो हैदराबाद की ओर से लोग छिप-छिपाकर ताल के किनारे घुस जाएँ और वहाँ की चौकी पर धावा बोल दें। चौकी को आग लगाकर जितने भी रज़ाकार पकड़े जा सकें, पकड़ लिए जाएं! इस बार आक्रमण करने वालों के पास तीस बन्दूकें और प्रत्येक बन्दूक के साथ पच्चीस कारतूस थे।

ये लोग दिन में अपने छिपने वाले स्थानों पर एकत्रित हो गए । रात साढ़े नौ बजे वे नियत स्थानों पर पहुँचे और ठीक दस बजे वे अन्धेरे-अन्धेरे में चल पड़े। दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगरों के संगम पर एक स्थान था जिसे बौर्डर कहते थे। वहाँ पर प्रकाश अन्य स्थानों की अपेक्षा बहुत कम था। रात को दस बजे के अन्धेरे में वे लोग वहाँ से चले तो सामने लगभग सौ रज़ाकार कन्धों पर बन्दूक रखे आते दिखाई दिये। स्वयं-सेवकों ने उनके निकल जाने के लिए मार्ग छोड़ दिया। वे दो पंक्तियों में सड़क के किनारे-किनारे हो गये।

रज़ाकारों को बीच में गुजरते हुए सन्देह हो गया कि इस स्थान पर इतने लोग क्यों एकत्रित हो रहे हैं। उनके कप्तान ने हाल्ट की आज्ञा दी तो सब खड़े हो गये। स्वयं-सेवकों की संख्या तो अधिक थीं किन्तु उनके पास बन्दूकें कम थीं। इस कारण उन्होंने सामने से मुकाबिला करने का यत्न नहीं किया।

रज़ाकार समझे कि वह मुसलमानों का मजमा है और किसी हिन्दू मोहल्ले को लूटने के लिए जा रहा है। इससे वे अपनी योजना से उसका सम्बन्ध न समझ आगे चलते गये। परन्तु जब उनमें कइयों के पास बन्दूकें देखीं और उनको पंक्तिबद्ध खड़ा देखा तो कप्तान ने पूछा, "तुम कौन लोग हो और यहाँ क्यों खड़े हो?"

स्वयं-सेवकों के कप्तान ने समझा कि वह इस समय लाभ की अवस्था में है। इसलिए उत्तर देने की अपेक्षा उसने सीटी बजा दी और दोनों ओर से स्वयं सेवकों ने लाठी चार्ज कर दिया। रज़ाकारों ने बन्दूकों के कुन्दों से लड़ना आरम्भ कर किया। दस मिनट में युद्ध समाप्त हो गया भागते हुए रज़ाकारों पर गोली चलाई गई। एक सौ में से पचास के लगभग रज़ाकार हताहत हुए। सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि रज़ाकारों का कप्तान घायल होकर बन्दी बना लिया गया। इस युद्ध में स्वयं-सेवकों के हाथ पन्द्रह बन्दूकें आईं।

स्वयं-सेवकों का कप्तान समझता था कि गुरिल्ला युद्ध में छापे की महिमा है अब और छापा नहीं डाला जा सकता खुला आक्रमण अभी सम्भव नहीं। छापा जितना अचानक किया जाए सफलता की आशा उतनी ही अधिक होती है। इससे उसने कैदियों को लेकर वापस हो जाने की आज्ञा दे दी। कप्तान को तो गुलबर्गा पहुँचा दिया गया और शेष कैदी रज़ाकारों के बेंत लगाकर पिटाई की गई। अत्यन्त भयभीत कर उन्हें मुक्त कर दिया गया।

बन्दूकें केन्द्रीय कार्यालय में पहुँचा दी गई। रज़ाकारों के कप्तान को जब मथुरासिंह के सामने उपस्थित किया गया तो दोनों एक-दूसरे का मुख देखते रह गए। रज़ाकारों के कप्तान ने मथुरासिंह को पहचाना और बोला, "आप! और यहाँ?"

"ओह, कैप्टन रहमान! आओ दोस्त, बैठ जाओ।' मथुरासिंह ने सामने रखी कुर्सी की ओर संकेत कर दिया।

रहमान ने बैठते हुए कहा, "यह क्या कलाबाज़ी है?"

"कलाबाज़ी नहीं कप्तान साहब! मैं तो युनाइटेड इंडिया के लिए ही यत्न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूँ। परन्तु जनाब ने फरमाया था कि युनाइटेड और सैक्युलर हिन्दुस्तान बनाने के लिए योजना बना रहे हैं। क्या हिन्दुओं का कत्ले-आम कर सैक्युलर राज्य बनेगा?''

''तुम वार्डी से भी एक लाख रुपया ले आए हो?''

''हाँ, वह आप वाला दस लाख अभी मिला नहीं। आप वाला ड्राफ्ट मैं लेडी गौर्ट को दे आया था। उसने वसूल किया है या नहीं, मुझे पता नहीं। क्योंकि उसने मुझे अभी रुपया नहीं भेजा।''

''मैं आप से पृथक् में बातचीत करना चाहता हूँ। आप इन सबको कमरे से बाहर नहीं कर सकते क्या?''

''इनसे कोई बात छिपी हुई नहीं है और अब मैं चोरी रखना चाहता भी नहीं। आप जो कुछ कहना चाहते हैं इनके सामने ही कह दें तो ठीक रहेगा।

''मैं यही बताना चाहता हूँ कि लार्ड गौर्ट ने लेडी गौर्ट को तलाक देने के लिए प्रार्थना दे दी है।''

''यह क्या कोई बड़ी लुकाव-छिपाव की बात है?''

''नहीं, मैं तो यह कहना चाहता था कि आपने मेरे साथ धोखा किया है, हमारे काम के साथ दगा किया है। इससे हम परस्पर द्वन्द्व कर लें तो ठीक नहीं रहेगा क्या?''

''देखो रहमान! तुमने इन रज़ाकारों के साथ मिलकर उस कार्य को जिसके लिए पार्टी बनाई थी, बहुत हानि पहुँचाई है। तुम स्वयं दगा-बाज हो। इससे तुम को तो फांसी मिलनी ही चाहिए। द्वन्द्व तो इज़्जतदार आदमियों के साथ लड़ा जाता है। वह तुम हो नहीं।''

''इस पर भी मैं कहता हूँ कि मैं तुमको फांसी लटकाऊंगा नहीं। न ही गोली मार कर खत्म करूंगा। मैं अपने हाथ तुम्हारे गंदे खून से रंगना नहीं चाहता। मैं तुमको भारतीय सेना के पास भेज दूंगा। वहाँ तुम्हारे साथ न्याय होगा।'

''कब भेजोगे?''

''जब हैदराबाद का भारत में विलय हो जायेगा।''

''यह विलय सम्भव है क्या?''

''उसके लिए मैं यत्न कर रहा हूँ। विचार और इरादा तो यही था कि पाकिस्तान भी भारत के साथ मिल सके परन्तु भारत सरकार अभी स्वयं को बच्चा समझती है और इस कारण इतना बड़ा ग्रास निगलने की उसमें ताकत नहीं है।''

''तो मुझे कहाँ रखोगे?''

''तुमको एक सलाह देना चाहता हूँ।''

''हाँ, कहो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि रिज़वी साहब निज़ाम साहब को यह राय दें कि वे दिल्ली की सरकार से संधि कर ले तो ठीक है। नहीं तो हम सारी रियासत को मुसलमानों से खाली करा देंगे।"

रहमान हँस पड़ा। मथुरासिंह ने बात जारी रखते हुए कहा, "मैं नहीं जानता कि तुम रज़ाकार लोग निज़ाम के साथ क्या सम्बन्ध रखते हो, हाँ यदि तुम्हारा कुछ रसूख है तो एक चिट्ठी रिज़वी को लिख दो कि वह ऐसी नसीहत निज़ाम को कर दे। वरना मुसलमानों के बिना यह रियासत उसके रहने के लायक नहीं रह जायेगी।"

"बात यह है कि मैं तो सिर्फ कप्तान हूँ। रिज़वी साहब कमाण्डर-इन-चीफ़ हैं। मेरा कोई ज्यादा रसूख भी नहीं। आप खुद ही उनसे बात कर लें तो ठीक रहेगा।"

"तो उसे भी बन्दी बनाकर लाना पड़ेगा?"

"हाँ।"

इस पर भी रिज़वी पकड़ा नहीं गया। जब लातूर में उसके घर पर छापा मारा गया तो वह वहाँ पर नहीं मिला। कुछ औरतें ही उस मकान से निकलीं। उनको हैदराबाद भेज दिया गया। रिज़वी स्वयं तो कभी मैदान में आता नहीं था। इस कारण वह पकड़ा नहीं जा सका।

हैदराबाद में ताल के किनारे वाली सड़क पर मारे गये छापे को 'जमकर युद्ध' का नाम दिया गया। भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के समाचार-पत्रों में यह समाचार बहुत बढ़ा-चढ़ा कर छापा गया। हिन्दुस्तानी पत्रों ने तो लिखा कि भारत के इस बीमार अंग को काट देना चहिए। इसका नाम मिटाकर इसे भारत के साथ मिला देना चाहिए।

पाकिस्तान के समाचार-पत्रों ने लिखा कि यह शरारत भारत सरकार की है। उसके एजेन्ट हैदराबाद के शान्त वातावरण में गड़बड़ी फैला रहे हैं।

इस प्रकार की एक और घटना हो जाती तो मुसलमान हैदराबाद से भागना आरम्भ कर देते। मुसलमानों में हैदराबाद के निज़ाम और उसकी सेना पर विश्वास कम हो रहा था।

परन्तु भाग्य में कुछ और ही लिखा था। 10 जून को रात के दस बजे भारतीय सेना हैदराबाद में दाखिल हो राजधानी की ओर चल पड़ी। तीन ओर से सीमा को पार किया गया। इसे रियासत की दुर्व्यवस्था को ठीक करने के लिए 'पुलिस एक्शन' का नाम दिया गया।

यह सूचना पाते ही मथुरासिंह ने अपने स्वयं-सेवकों को यह सूचना भेज दी कि वे भारतीय सेना के पहुँचने तक व्यवस्था रखने का यत्न करें। किसी प्रकार की लूट-पाट न होने दें। यत्न यह किया जाय कि भारतीय सेना का विरोध करने वाले विरोध न कर सकें। सड़कों, पुलों और सरकारी इमारतों को किसी प्रकार का नुकसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न पहुँचाया जा सके। साथ ही मुख्य-मुख्य रज़ाकार भारतीय सेना के हाथ में पड़ सकें। वे भागने न पायें।

इस आज्ञा के अनुरूप स्वयं-सेवक हैदराबाद में शान्ति स्थापित करने में वहाँ के कांग्रेसी कार्य-कत्ताओं को सहयोग देते रहे। रिज़वी साहब एयरोड्राम को जाते हुए पकड़ लिए गये। कैप्टन रहमान को भारतीय सेना के कमाण्डर के हाथ सौंप दिया गया।

आक्रमण के दूसरे दिन ही हैदराबाद में शान्ति स्थापित हो गई। निज़ाम साहब का महल घेर लिया गया और वहाँ भारतीय सेना का अधिकार हो गया।

उसी दिन मथुरासिंह ने स्वयं-सेवकों को विसंयोजित कर दिया और मार्ग मिलते ही वह दिल्ली जा पहुँचा।

बिना किसी पूर्व-सूचना के वह बीस जून को लाला त्रिलोकचन्द के बंगले में पहुँचा। वहाँ राधा और फ़्लोरा के कई पत्र आये हुए थे। उनका अन्तिम पत्र टोकियो से आया हुआ था। उस पत्र में लिखित कार्यक्रम के अनुसार उसको बीस जून को सेगांव में होना चाहिए था।

10

त्रिलोकचन्द की इच्छा थी कि मथुरासिंह गृहमंत्री से मिलकर अपने कार्य का वृत्तान्त बताये। परन्तु मथुरासिंह इसको उचित नहीं समझता था। प्रथम तो जो कुछ वह वहाँ करके आया था, सब-का-सब वह अपनी योजना ओर उत्तरदायित्व के आधार पर कर आया था। उसका श्रेय अथवा दोष वह सरकार को देना नहीं चाहता था। वह जानता था कि कांग्रेस सर्कल में स्वयं-सेवकों द्वारा हैदराबाद में किये गए कार्य की निन्दा करने वाले कम नहीं थे। उसका अनुमान था कि भारत के केन्द्रीय मंत्रि-मंडल में भी स्वयं-सेवकों के कार्य की निन्दा करने वाले हो सकते हैं। इसलिए वह अपने कार्य के साथ गृहमंत्री का किसी प्रकार का भी सम्बन्ध नहीं मानता था।

उसका अपना अनुमान और गृहमंत्री से न मिलने का निश्चय तो रेलगाड़ी में आते हुए कुछ कांग्रेसी नेताओं के मुख से सुनी बातों से बना था। वह हैदराबाद से बम्बई की ओर आ रहा था। वादी स्टेशन पर उसे प्रातः ग्यारह बजे गाड़ी मिली। जब वे प्रथम श्रेणी के डिब्बे में चढ़ा तो दो खद्दरधारी वहाँ पहले से विराजमान थे।

प्रथम श्रेणी में बैठने वाले खद्दरधारी महानुभव निश्चित ही कोई नेता होंगे, ऐसा अनुमान सहज ही लगाया जा सकता था। मथुरासिंह ने ऊपर का बर्थ खाली देख इस पर अधिकार कर लिया और नीचे की एक बर्थ पर बैठ गया। उन दोनों में से एक व्यक्ति हैदराबाद की अवस्था का वर्णन कर रहा था। वह कह रहा था, "उत्तर प्रदेश की गवर्नर श्रीमती सरोजिनी नायडू के विषय में यह समाचार प्रकाशित हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि जब उनको हैदराबाद में पुलिस ऐक्शन का समाचार मिला तो वे रो पड़ीं।''

''दूसरे सज्जन ने पूछा, ''क्यों?''

''वे हैदराबाद की रहने वाली हैं, ऐसा लगता है कि उस समय उनका स्वदेश-प्रेम जागृत हुआ होगा। यह भी समाचार है कि उनके मुख से उस समय निकला कि यह तो निपट अन्याय हो गया है।

''किसके साथ अन्याय हो गया है?''

''इस विषय में तो कुछ प्रकाशित नहीं हुआ। इस पर भी यह अनुमान लगाना तो सहज ही है कि उनको स्वतन्त्र हैदराबाद अधिक भला लग रहा होगा।''

''हाँ, यह तो है ही। दिल्ली में कश्मीर अभियान के समय उच्चस्तरीय लोगों में यह बात विख्यात थी कि पण्डित नेहरू कश्मीर को अपने बड़ों की जन्म-भूमि मान उस विषय में किसी अन्य मिनिस्टर का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते। एक साहब तो यह कह रहे थे कि कश्मीर के जनमत से उनका आशय ही यह है कि कश्मीर अब स्वतंत्र देश की स्थिति में फले-फूले और उन्नति करे।''

''यदि वास्तव में ऐसा है तो यह सोच कितनी निकृष्ट है।''

''क्यों? ऐसा क्या है?''

''इस तरह तो देश का प्रत्एक नेता अपने जन्म स्थान या अपने प्रदेश को स्वतन्त्र देखना चाहेगा। नेता भारत का हो, अन्न खाए भारत का, सोचे कश्मीर का या हैदराबाद का। यह बात जँचती नहीं।

''इस पर भी यह वास्तविकता है। जब महाराज कश्मीर में राज्य का भारत के साथ विलय कर दिया तो उसकी फाइल गृहमंत्री के पास चली जानी चाहिए थी। परन्तु उसके विषय में सब बातचीत विदेश मंत्रालय ही करता रहा है।''

''परन्तु हैदराबाद में तो सुना है कि गृहमंत्री की चल रही है। यदि यह कार्यवाही विदेश-मंत्रालय के अधीन होती तो इसका नाम पुलिस-ऐक्शन न होता। तब यह कश्मीर की भांति सैनिक अभियान होता। दूसरे, दिल्ली में यह किंवदन्ती फैल रही है कि जिस रात भारतीय सेना हैदराबाद की सीमा में घुसी, उसी रात पंडित नेहरू को मौलाना आज़ाद ने सूचना दी कि हैदराबाद में पुलिस-ऐक्शन की सूचना पाते ही पाकिस्तान दिल्ली पर हवाई जहाजों से गोलाबारी करेगा और दिल्ली-जैसा शानदार नगर और भारत की राजधानी तबाह हो जायेगी।''

''परंतु पण्डितजी तो इस प्रकार की धमकियों में नहीं आये न?''

''नहीं, ऐसी बात नहीं है। अफवाह तो यह है कि उसी समय पंडितज़ी ने सरदार पटेल को टेलीफोन किया कि अभी यह पुलिस-ऐक्शन रोक दिया जाय। इस पर सरदार पटेल ने कहा कि इस समय तक तो भारतीय सेनायें रियासत में दस मील भीतर घुस चुकी होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इससे पण्डितजी को भारी विस्मय हुआ। अभियान रात के बारह बजे आरम्भ होने वाला था और उस समय साढ़े ग्यारह ही बजे थे। पण्डितजी ने अपना विस्मय प्रकट किया तो सरदार ने कहा कि उन्हें नौ बजे यह सूचना मिली कि हैदराबाद में सेनाओं के जमाव की सूचना फैलती जा रही है, इस कारण विलम्ब करने से विरोध कठोर हो जाता, अतः उन्होंने अभियान के समय में परिवर्तन कर दिया था। दस बजे वे लोग शिविरों से चल पड़े थे।

"तब कहा जाता है कि पण्डितजी ने कहा कि सेनाओं को वापस बुला लिया जाय। परन्तु पटेलजी ने इनकार कर दिया। उनका कहना था कि इस प्रकार की कार्यावाही से सेना में निरुत्साह का संचार होगा।"

"सुना है कि पण्डितजी और पटेल में यह विषय भी वैमनस्य का एक अन्य कारण बन गया है। दिल्ली के जानकार क्षेत्रों में यह बात फैल रही है कि हैदराबाद में हिन्दु-मुसलमानों में परस्पर झगड़े का दोष सरदार पटेल पर लगाया जा रहा है। जहाँ पटेलजी रज़ाकारों को इसके लिए दोषी मानते हैं, वहाँ ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जो इस पूर्ण झगड़े की जड़ आर्य-समाज को मानते हैं।"

मथुरासिंह इस वार्त्तालाप को सुन अपने मन में यह निश्चय कर रहा था कि वह पटेलजी से अपना सम्पर्क नहीं बनायेगा। इससे कदाचित् उनकी स्थिति और भी दुर्बल हो जाय। वह मन में विचार करता था कि उसके कार्य के लिए सरदार साहब अथवा भारत सरकार की न तो एक पैसे-भर की सहायता थी और न ही उनकी योजना का यह कोई अंग था।

मथुरासिंह ने जब इस स्थिति का वर्णन त्रिलोकचन्द से किया तो वह मान गया कि सरदार साहब यदि उचित समझेंगे तो स्वयं मिलने का प्रबन्ध करेंगे।

इस कारण वकील साहब ने बात बदलकर कहा, "अब क्या कार्यक्रम है तुम्हारा?"

"मैं राधा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उसका टोकियो से अन्तिम पत्र आया है। अतः शीघ्र ही उसका कोई-न-कोई समाचार आने वाला है।"

दूसरे दिन उसको केबल मिल गया कि वह पचीस को दिल्ली पहुँच रही है। मथुरासिंह ने त्रिलोकचन्द को केबल दिखाया तो उसने पूछ ही लिया, "यह फ्लोरा हिन्दुस्तान में क्या करने आ रही है?" वह फ्लोरा और मथुरासिंह के सम्बन्ध की बात जानता था।

"वैसे तो राधा को छोड़ने ही आ रही थी परन्तु अब मैं समझता हूँ कि वह अपना शेष जीवन यहाँ व्यतीत करेगी। सुना है कि उसके पति ने उससे तलाक की स्वीकृति की प्रार्थना की हुई है।"

"किससे सुना है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैप्टन रहमान ने यह बात बताई थी परन्तु ठीक-ठाक बात तो फ्लोरा के यहाँ आने पर पता चलेगी।"

"उसका तुम्हारे यहाँ आकर रहना भारी बदनामी का कारण हो सकता है।"

"जो कुछ भी हो, मैं इस विषय में कुछ नहीं कर रहा। उसने अपना कार्यक्रम मेरे कहने पर नहीं बनाया है।"

"परन्तु तुम उसके साथ रहोगे क्या? राधा का उसके साथ होना यह प्रकट करता है कि उसने तुम्हारे साथ रहने के लिए राधा को मना लिया है।"

"राधा कभी भी अस्वीकार नहीं करेगी। उसके मन में फ्लोरा के लिए स्नेह और सहानुभूति है।"

स्नेहलता वहाँ बैठी दोनों की बातें सुन रही थी। वकील साहब ने उसकी ओर देखकर पूछा, "तुम राधा के ऐसे व्यवहार को पसन्द करती हो क्या?"

"मैं मानती हूँ कि राधा अत्यन्त सहनशील, स्नेहमयी और श्रेष्ठ व्यवहार वाली है। वह मथुरा की खुशी में ही खुश होती है।"

"परन्तु इसमें तो मथुरा के ही छिन जाने का डर है।"

"तब राधा का इसमें कोई दोष नहीं होगा। यदि ऐसा हुआ तो यह मथुरासिंह की नालायकी समझी जायेगी। मेरा अभी तक का यही अनुमान है कि राधा को असन्तोष नहीं होगा। विलायत जाने से पहले फ्लोरा राधा से मिलने के लिए आई थी और उनकी बातचीत से मेरा यह अनुमान है कि वे दोनों परस्पर प्रेम-भाव से रह सकेंगी।"

"एक और निर्धन माता की लड़की राधा है जो सर्वथा अशिक्षित भी है और दूसरी और फ्लोरा-जैसी चतुर अंग्रेज औरत है। लाखों रुपयों की स्वामिनी और युरोप की उपज।"

"क्यों मथुरासिंह!" स्नेहलता ने मुस्कराते हुए पूछा, "है हिम्मत धन-वैभव के प्रलोभन को ठुकराने की?"

"माताजी! एक ओर प्रेम है और दूसरी और सहानुभूति। मैं समझता हूँ कि दोनों का अपना-अपना स्थान है। ये एक-दूसरे का स्थान ग्रहण अथवा नैष्ट नहीं कर सकेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

फ्लोरा और राधा जहाज से उतरीं तो मथुरासिंह ने दूर से ही उनको देखा और उनके स्वागत में रूमाल हिलाया। फ्लोरा और राधा ने देखा तो उन्होंने भी हाथ उठा उसके अभिनन्दन को सहर्ष स्वीकार किया।

माल छुड़ाने तथा अपना टिकट दिखाने के लिए वे काउण्टर पर खड़ी थीं। मथुरासिंह उनके पास जाकर खड़ा हो गया। राधा ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया तो मथुरासिंह ने प्रसन्नता से कहा, "राधा! मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि तुम्हें बीच में ही छोड़कर मेरा यहाँ आने का प्रयोजन सफल सिद्ध हुआ है।"

"तब तो हमें अपना कष्ट भूल जाना चाहिए।"

"क्यों, बहुत कष्ट हुआ है?"

फ्लोरा अमेरिका और जापान से अपने साथ बहुत-सी वस्तुएँ खरीद कर लाई थी। उन सबकी चुंगी चुकाने में समय लग रहा था। राधा कुछ नहीं लाई थी। उसके सूटकेस में पहनने के वस्त्रों के अतिरिक्त कुछ नहीं था। परन्तु फ्लोरा के पास दस ट्रंक थे, जिन पर हज़ारों रुपया तो हवाई जहाज़ का भाड़ा लग गया था और दस सहस्त्र रुपयों से अधिक चुंगी लगी। यद्यपि फ्लोरा ने सारे सामान की सूची बना रखी थी तथापि उसके सारे ट्रंक खोले गये और समान देखा गया तब चुंगी ली गई। इस कार्य में एक घंटे से अधिक समय लग गया।

जब सब माल देख चुंगी चुकाकर उसको, 'क्लियरेंस' दिया गया तो सब सामान टैक्सी पर लदवा और एक अन्य टैक्सी पर बैठ वे लोग कर्ज़न रोड की ओर चल पड़े। मार्ग में मथुरा ने कहा, "फ्लोरा! बहुत सामान खरीद लाई हो?"

"जी, मैंने अपना शेष जीवन यहाँ बिताने का निश्चय किया है।"

"तलाक मिल गया है?"

"नहीं, नियाग्रा में मुझे एक परिचित व्यक्ति मिल गया था। उसने बताया था कि मुझ पर असति का आरोप लगाया गया है और इस आधार पर तलाक माँगा गया है। मेरे नाम सम्मन जारी हो गए होंगे। मैंने निश्चय किया है कि मैं उन 'सम्मनों' का उत्तर देने के लिए कोर्ट में उपस्थित नहीं होऊँगी। अतः एक-तरफा तलाक स्वीकार हो जायेगा।

"इस निश्चय के आधार पर ही मैंने राधा बहिन के साथ निश्चय किया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आपके गाँव में चलकर रहूंगी। वहाँ एक बहुत ही विशाल और सुन्दर मैन्शन बनवाऊँगी। वह इतना सुन्दर और सुखप्रद होगा कि आप स्विटज़रलैंड के बढ़िया-से-बढ़िया होटल को भी भूल जायेंगे।''

''मुझे ऐसा लग रहा है कि लार्ड गौर्ट आकर तुमको वापस ले जायेंगे।''

''कैसे कहते हैं आप?''

''मेरा मन कहता है। यह युक्ति का विषय नहीं। इतना तो कहा जा सकता है कि लड़का होने पर तलाक मिल सकता था, किन्तु उस समय उसने लिया नहीं। अब क्या आवश्यकता आ पड़ी है?''

''आपने क्लीवमौंट को देखा है?''

''नहीं, तुम्हारे पापा ने बताया था कि उसका रूप-रंग मुझसे मिलता है।''

''परन्तु गौर्ट जानता था कि सन्तान के रंग-रूप के आधार पर की गई तलाक की अनेक प्रार्थनायें अस्वीकार हो गई हैं।''

''तो अब उसने यह प्रार्थना क्यों की है?''

''मेरा विचार है कि पापा ने उसे कुछ सिखाया होगा।''

''उनको इससे क्या लाभ हो सकता है?''

''कुछ कहा नहीं जा सकता। पापा बड़े ही षड्यन्त्रकारी जीव हैं। भगवान जाने उनके मस्तिष्क में क्या-क्या योजनाएँ बनती रहती हैं।''

''तब भी मैं समझता हूँ कि इतना सामान उठाकर लाने से तो यही अच्छा होता कि पहले तलाक का फैसला हो जाता, तब यहाँ मकान बनवा लिया जाता। कितना रुपया खर्च कर आई हो?''

''यह घर चलकर बताऊँगी। वास्तव में मैं समझ नहीं पा रही थी कि रुपया कहाँ खर्च करूँ। विवाह के समय मुझे जो नानी की सम्पत्ति मिली है, वह दस हजार पौंड वार्षिक का लाभ दे रही है। एक पैसा भी मुझे उसमें से व्यय करने का अवसर नहीं आया। यह भ्रमण मेरे जीवन में पहला ही अवसर है, जब कि उस सम्पत्ति में से मैंने व्यय किया है। इस पूर्ण यात्रा में भी मैं अभी उसका अंश-भर भी व्यय नहीं कर पाई।''

दो दिन तक वे लोग दिल्ली में रहे और फिर जमादारपुर पहुँच गए। फ्लोरा और राधा वहाँ लाला देवीदयाल के मकान पर रहने लगी। सूरतसिंह को राधा के साथ फ्लोरा के आने पर विस्मय हुआ। इससे अधिक विस्मय उसको तब हुआ, जब उसको यह पता चला कि मथुरासिंह राधा को इस औरत के साथ छोड़कर बहुत पहले भारत लौट आया था। उसने भगवती को इस विषय में पता करने के लिए कहा तो उसने कह दिया, ''क्या लाभ होगा पता करने से?''

''मुझे यह लड़की चरित्रहीन प्रतीत होती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो मथुरासिंह के जबलपुर वाले शिक्षक की पुत्री है।"

"यह तो मैं भी देख रहा हूँ। हमने इसको मथुरासिंह के साथ दिल्ली में उसके युद्ध पर यूरोप जाने से पहले देखा था। फिर इसको मथुरासिंह के साथ बम्बई में देखा, जब हम तीर्थ-यांत्रा के लिए जा रहे थे।

"परन्तु अब इसका यहाँ आकर रहना तो मुझे भला प्रतीत नहीं हो रहा। राधा भी पसन्द नहीं करती होगी। मैं उसका इस लड़की से उद्धार करना चाहता हूँ।"

"मैंने राधा से पूछा था कि वह यहाँ कितने दिन तक रहने के लिए आई है। राधा का कहना था कि वह शेष जीवन-भर यहीं रहेगी। मैं इसका अर्थ समझकर आगे कुछ नहीं बोली। राधा के मुख पर मुझे किसी प्रकार का मलाल नहीं दिखाई दिया।"

"तुमको यह पूछना चाहिये था कि उसके साथ उसका कैसा सम्बन्ध है?"

"बिना पूछे ही उसने बता दिया था कि फ्लोरा बहुत ही स्नेहमयी है।"

"मथुरा आज कह रहा था कि मन्दिर की बगिया के पार वाला खुला स्थान फ्लोरा को मकान बनाने के लिए दे दिया जाये। वह भूमि चार एकड़ है। मैंने पूछा था कि वह उस पर क्या करेगी तो उसने कहा कि वह उस पर मकान बनायेगी।"

"मुझे तो राधा के लिए चिन्ता होने लगी है। वह बहुत धनवान मालूम होती है। अच्छी-खासी सुन्दर भी है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पढ़ी-लिखी होने से राधा को ठगने में सफल हो सकती है। उसके हितों की रक्षा करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

"तो आप ही मथुरा से बात कर लीजिए। एक ही तो बेटा है, दुनिया घूम चुका है, अब वह स्वयं पिता बन चुका है, मैं उससे क्या तर्क करूँ?"

विवश सूरतसिंह ने ही अपने लड़के से इस विषय में स्पष्ट बात बताने को कहा तो मथुरासिंह ने जबलपुर से आरम्भ कर उस दिन तक की सारी बात बताते हुए कहा, "रोम से यह मेरे साथ मेरी द्वितीय पत्नी के रूप में रह रही है। इसको अब छः मास से अधिक हो गए हैं।"

"तो तुम इससे मुहब्बत करते हो"

"भापा! मैं मुहब्बत के अर्थ नहीं समझता। मैं कर्तव्य के अर्थ जानता हूँ। मेरे लिए इसने बहुत कुछ सहन किया है, इस कारण मैं इस को अपना संरक्षण दे रहा हूँ।"

"तो तुम इसको वह अधिकार नहीं दे रहे जो राधा को पत्नी के रूप में देते हो?"

"वह अधिकार तो इसको दिल्ली से ही प्राप्त हो चुका था। इसका लड़का मेरी ही सन्तान है। उस समय मेरा राधा से विवाह हो चुका था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो तुम बहुत बड़ा पाप कर बैठे हो?"

"यों तो मैं इसको पाप नहीं मानता। मेरे साथ इसका विवाह होने ही वाला था। मेरी मृत्यु के समाचार और इसके भाई की मृत्यु ने इसको विलियम से विवाह कर लेने पर विवश कर दिया था। परन्तु जबसे इसको और इसके पति को मेरे जीवित होने का पता चला है, तबसे ये पति-पत्नी के रूप में नहीं रहे।"

"इस बात का तुम्हें विश्वास है?"

"अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है।"

"परन्तु विवाह उसका दूसरे के साथ ही हुआ है।"

"भापा! यह समाज का नियम है। जो सब मनुष्यों के लिए सामान्य रूप में मान्य है। परन्तु परिस्थितियों के अधीन इनमें अन्तर आ जाता है।"

"तो यह अपने पति को तलाक क्यों नहीं दे देती?"

"वास्तविक रूप में तो दे ही आई है। केवल लिखत-पढ़त नहीं हुई। यह तो अब इसके पति को करना चाहिए, जिससे इसकी सन्तान उसके बाप-दादाओं की सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी न बन सके।"

युक्ति में मथुरासिंह की बात ठीक ही प्रतीत होती थी। परन्तु संसार में दो पत्नियों वाले पति की अवस्था प्रायः शोभनीय नहीं लगती। इससे वह चिन्तित था। अन्त में उसने अपने लड़के से कहा, "बेटा! मैं तो एक सरलचित्त ग्रामीण आदमी हूँ। संसार का ज्ञान भी मुझको बहुत कम है। मैं तो केवल तुम्हारे सुख और चित्त की शान्ति की बात कर रहा हूँ। हाँ, राधा की माँ ने मरते समय राधा का हाथ तुम्हारे हाथ में दिया था। मैं इसका साक्षी हूँ। इसलिए उसके विषय में मुझे चिन्ता होना स्वाभाविक है।"

"भापा! मेरा मन कहता है कि फ्लोरा सदा यहाँ नहीं रहेगी। क्यों और कब चली जायेगी, यह मैं कुछ नहीं जानता। वह यहाँ रहे या न रहे, मैं राधा को सब प्रकार से प्रसन्न रखूंगा।"

"मैं समझता हूँ कि यदि राधा से समय-समय पर माँ पूछती रहे जिससे उसके किसी प्रकार के कष्ट का मुझे ज्ञान रहे तो मैं उसके निवारण का यत्न करता रहूंगा।"

"मैं उसको यह मकान बनाने की स्वीकृती दे दूँ।"

"इस समय तो वह सब प्रकार से मेरी पत्नी के रूप में ही है। इस लिए उसकी तुच्छ-सी-इच्छा की पूर्ति करना मेरा कर्तव्य हो जाता है। उसने आपकी भूमि का मूल्य देने का प्रस्ताव किया है। यदि आप चाहें तो बता दें। मैं समझता हूँ कि उसे भूमि का उचित मूल्य देने में न तो आपत्ति होगी और न ही कष्ट होगा।"

बात यहीं समाप्त हो गई। सूरतसिंह ने फ्लोरा से भूमि का मूल्य नहीं लिया। गाँव में बसने वाले किसी से भी भूमि का मूल्य नहीं लिया गया था। फ्लोरा ने दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से वास्तुकला विशेषज्ञ बुलवाये। उनसे मकान का नक्शा बनवाया और फिर दिल्ली की एक फर्म को मकान बनाने का ठेका दे दिया।

छः मास में मकान बनकर तैयार हो गया। अगले छः मास में उस में रहने योग्य सामग्री भी लग गई। मकान के बाहर बाग बन गया। तब गृह-प्रवेश उत्सव मनाया गया।

"इस अवसर पर एक घटना घटी। मिस्टर और मिसेज़ स्टैनले भारत आये और सीधे जमादारपुर आ धमके। गृह-प्रवेश समारोह के अवसर पर लाला त्रिलोकचन्द भी अपनी पत्नी के साथ वहाँ आया हुआ था। उन दिनों कचहरियों में अवकाश था। वे लोग फ्लोरा के आग्रह को टाल नहीं सके। लाला त्रिलोकचन्द का यह कार्य-क्रम था कि कुछ दिन जमादारपुर ठहरकर स्नेह को वहाँ छोड़, वह अपने दोनों लड़कों, रमेश और रघुनाथ तथा मथुरासिंह को साथ लेकर कुछ दिन के लिए मनाली जायेंगे। स्नेह तथा गार्गी राधा के साथ रहेंगी। मिस्टर एण्ड मिसेज़ स्टैनले के वहाँ आने पर इस कार्य-क्रम में बाधा आ गई।

गृह-प्रवेश समारोह हो चुका था। फ्लोरा के मकान में ही वकील साहब का परिवार टिका हुआ था। फ्लोरा मथुरासिंह के माता-पिता से भी कह रही थी कि वे भी अपना पुराना मकान छोड़, उस नये मकान में आ जायें। परन्तु वे अभी मान नहीं रहे थे।

राधा के भाई रमणीक ने भीतर आकर फ्लोरा को स्टैनले का कार्ड दिया तो वह स्तब्ध रह गई। त्रिलोकचन्द ने उसके मुख पर परेशानी देखी, तो वह उसके समीप आकर पूछने लगा, "क्यों क्या हुआ है फ्लोरा?"

स्टैनले का कार्ड उसके हाथ में देते हुए वह बोली, "मैं इसे अपशकुन मान रही हूँ।"

"क्यों, ये तो तुम्हारे माता-पिता हैं?"

"मुझे यह तो विदित था कि ये भारत आये हुए हैं परन्तु मेरा पता इनको कहाँ से मिला और फिर ये यहाँ आये क्यों, यह समझ न आने वाली बात है।"

"इस पर भी अब तो इनका स्वागत करना चाहिए। वे तुम्हारे पिता हैं। कहो तो मैं उनको भीतर ले आऊँ?"

"हाँ चाचाजी! आप मेरी सहायता कर दीजिए।"

त्रिलोकचन्द बाहर आ गया और मिस्टर स्टैनले से मिलकर पूछने लगा, "आप फ्लोरा के पापा है।"

"हाँ, और यह उसकी माँ है।"

"मैं मथुरासिंह का चाचा हूँ, आईये।"

मकान के बाहर ही मोटर में उनका सामान लदा हुआ था। त्रिलोकचन्द ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौकीदार से कहा, "सामान उतारो। मोटर को गैरेज़ में बन्द करवा कर सामान भीतर ले आओ।"

स्टैनले विलायत से ही अपनी कार साथ लाया था। कार तो वह स्वयं चला रहा था किन्तु साथ में क्लीनर रखा हुआ था। क्लीनर निश्चित स्थान पर मोटर को ले गया और स्टैनले-दम्पती वकील साहब के साथ भीतर चले गए।

मथुरासिंह ने स्टैनले-दम्पती को देखा तो लपककर उनके स्वागत के लिए आगे बढ़ा। उसने नमस्कार किया, हाथ मिलाया और फिर बोला, "तो आखिर आप लोगों ने हमें पकड़ ही लिया है?"

स्टैनले हँसता हुआ बैठकघर में जा पहुँचा। मथुरासिंह ने सबसे उन का परिचय कराया और उनको वहाँ पर बैठे हुए लोगों का परिचय दिया।

स्टैनले ने फ्लोरा के समीप बैठते हुए कहा, "मिस्टर सिंह! एक का परिचय तो तुमने कराया ही नहीं। यह तुम्हारी क्या हैं?" यह कहकर उसने फ्लोरा की ओर देखा।

मथुरासिंह ने सतर्क उत्तर देते हुए कहा, "यह मेरे गुरू श्री जे0 डब्ल्यू0 स्टैनले की प्रिय पुत्री फ्लोरा है। मेरी द्वितीय पत्नी। मैंने इसको कहा है कि यह अपना भारतीय नाम रख ले, परन्तु इसको इसकी आवश्यकता अनुभव नहीं हो रही।"

"ओह! "स्टैनले ने बात बदलकर कहा," उसने हाथ जोड़ फ्लोरा की ओर देखते हुए कहा, तुम्हारी दो सुन्दर पत्नियों से मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है।"

त्रिलोकचन्द कहने लगा, "हम तो समझे थे कि आप यहाँ से नौ हज़ार मील की दूरी पर बैठे हैं। अन्यथा आपको पहले ही निमन्त्रण देते। फ्लोरा ने यह मकान अपने रहने के लिए बनवाया है और आज से यह इसमें रहने के लिए आई है।"

फ्लोरा ने अपनी माँ से पूछा, मौम! स्नानादि तो करोगी न?"

"हाँ।"

"आओ, ये बातें तो बाद में आराम से हो जायेंगी।"

स्टैनले-दम्पती उठकर मकान के एक कक्ष में चले गए। वहाँ उनके लिए रहने का प्रबन्ध कर दिया गया था और उनका सामान उस कक्ष में रख दिया गया था। उनकी सेवा के लिए एक नौकर को छोड़, फ्लोरा बैठक की ओर चली गई।

2

कश्मीर का युद्ध कछुए की चाल से चलता रहा। पण्डित नेहरू की दोगली नीति इस मन्द गति के लिए उत्तरदायी थी। एक तो उन्होंने पाकिस्तान को आक्रान्ता घोषित नहीं किया और न ही ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होने दी जिससे कि झुँझलाकर पाकिस्तान युद्ध की घोषणा कर दे। दूसरे यह कि युद्ध को पाकिस्तान की सीमा की ओर नहीं जाने दिया और इसके क्षेत्र को सीमित रखा गया। यह क्षेत्र ऐसा था जहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान के लिए लड़ना सुगम था और भारत के लिए अति कठिन।

इन दोनों नीतियों के कारण भारत को अपार क्षति उठानी पड़ रही थी। यदि पाकिस्तान से किसी भी प्रकार से युद्ध की घोषणा हो जाती तो कश्मीर का युद्ध दो-तीन सप्ताह में ही समाप्त हो जाता। अब लगभग एक करोड़ रुपया प्रतिदिन व्यय हो रहा था और इतना धन और जन की क्षति को सहन कर भी परिणाम कुछ नहीं निकल रहा था।

इसके साथ शस्त्रास्त्र-प्राप्ति के लिए पाकिस्तान अमेरिका से सन्धि करने का यत्न करने लगा था। यह स्पष्ट नहीं था कि अमेरिका यह शस्त्रास्त्र कश्मीर में भारत के साथ लड़ने के लिए देगा अथवा किसी अन्य प्रयोजन के लिए। इस पर भी पाकिस्तान के हाथ शस्त्रास्त्र का आ जाना भारत के लिए भय का कारण बन गया।

पण्डित नेहरू अपनी भूल समझ कर भी अनजान बने रहे। भूल यह थी कि विलम्बित राजनीतिक निर्णयों से युद्ध की घोषणा करने के बाद भी, राजनीतिक नेताओं का सैनिक अभियान में हस्तक्षेप। राजनीतिक निर्णय ग़लत थे अथवा ठीक, यह विचार करना सैनिक अधिकारियों का काम नहीं था। परन्तु जब एक बार यह निश्चय हो गया कि कश्मीर से आक्रमणकारियों को निकालना है तो उसके निकालने की योजना बनाना सैनिक अधिकारियों का काम था। सेना के अभियान पर दिल्ली में बैठे नेहरूवादी राजनीतिज्ञ अपनी टांग अड़ाते थे।

परिणाम यह हुआ कि युद्ध चलता-चलता रुक गया। सैनिक-अधिकारियों ने अपनी कठिनाइयाँ बतायी और उन कठिनाइयों के दूर करने के उपाय बताये। किन्तु राजनीतिज्ञों को वे स्वीकार नहीं थे। युद्ध की गति अवरुद्ध हो गई। इस कारण नेहरू की नीति के अनुसार योजनाबद्ध हो नई दिल्ली ने राष्ट्र-संघ की शरण ली।

यों तो लार्ड माउण्ट बेटन युद्धारम्भ से कुछ दिन पीछे ही यू0 एन0 ओ0 में मामला ले जाना चाहते थे। ऐसा वचन वे लाहौर में जिना साहब को दे भी आये थे। इस पर भी भारत के अरबों रुपए लुटवाकर यह विषय यू0 एन0 ओ0 में गया और प्रथम जनवरी 1949 को युद्ध बन्द हुआ।

युद्ध-विराम सन्धि हुई और एक-तिहाई से अधिक कश्मीर का भाग पाकिस्तान के हाथ में रहा। राष्ट्र-संघ के निरीक्षक सीमा पर बैठ गये और राष्ट्र-संघ में बातचीत होने लगी।

युद्ध के बाद शान्ति का वातावरण बनने लगा। कश्मीर में रंग-रेलियां खेली जाने लगीं। कश्मीर के उस क्षेत्र को जो पाकिस्तान के हाथ में था, विस्मृत किया जाने लगा। भारत में एक कश्मीर रक्षा समिति बनाई गई। इस समिति में कांग्रेस के प्रमुख नेता सम्मिलित किये गए और पण्डित नेहरू की एक निकटस्थ सहयोगिन उसकी अध्यक्षा बन गई। इस समिति का कार्य यह हो गया कि कश्मीर में शेख अब्दुल्ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के शासन को स्थायी बनाया जाय। दूसरा कार्य था कश्मीर का भारत के साथ विलय, जो, कश्मीर की जनता की इच्छा पर छोड़ दिया गया।

समय-कुसमय पण्डित नेहरू घोषणा करते रहे कि कश्मीर में शान्ति स्थापित होने के बाद जनमत संग्रह किया जायेगा कि वे भारत के साथ राज्य का विलय चाहते हैं अथवा पाकिस्तान के साथ। इन घोषणाओं का प्रभाव राष्ट्र-संघ की सुरक्षा समिति के सदस्यों पर होता रहा।

प्रथम तो भारत ने सुरक्षा समिति में मिथ्या आधारों पर आवेदन किया। इस आवेदन में सैनिक अधिकारियों के बार-बार कहने पर भी कि उस क्षेत्र पर जिसका वैधानिक रूप में भारत के साथ विलय हो चुका है, यह पाकिस्तान का आक्रमण है, भारत सरकार ने यह लिखा कि कश्मीर में आभ्यान्तरिक हिन्दू-मुसलमानों का झगड़ा था और पाकिस्तान ने उसमें अनधिकार हस्तक्षेप किया है। इस मिथ्या आधार से भारत ही आक्रमणकारी प्रकट होने लगा। पाकिस्तान ने राष्ट्र संध में उत्तर दिया कि कश्मीर की जनता राज्य का विलय पाकिस्तान के साथ चाहती है। वह वहाँ के शासन से झगड़ा कर रही थी। भारत ने अनधिकार हस्तक्षेप कर अपनी सेनाएँ भेजी और वहाँ की प्रजा को अपने तानाशाह शासक से स्वतन्त्र होने में बाधा उत्पन्न की है।

पाकिस्तान सरकार ने, अपने दावे के प्रमाण में, भारत के प्रधान मन्त्री की, सेना भेजने के समय रेडियो पर घोषणा का तथा बाद में बीसियों स्थानों पर दिए गए वक्तव्यों का उल्लेख कर दिया। इससे तो भारत सरकार को लेने के देने पड़ गए।

इंगलैंड तो पहले ही पाकिस्तान का पक्ष ले रहा था। भारत का, राष्ट्रसंघ में, जो व्यवहार था उससे अमेरिका भी पाकिस्तान के पक्ष में हो गया। एक प्रकार से राष्ट्रसंध भारत के विरुद्ध हो गया।

इस पर एक बात और हुई। भारत के प्रधान-मन्त्री अमेरिका भ्रमण के लिए गए। अपने व्याख्यानों में वहाँ स्थान-स्थान पर कहते रहे कि वे कम्युनिज़्म के सिद्धान्तों को ठीक समझते हैं, वे मार्क्सवादी हैं।

इस समय तक रूस ने प्रजातन्त्रात्मक देशों पर अपने दाँत रखने आरम्भ कर दिये थे। अमेरिका द्वितीय विश्वयुद्ध के काल से अपने को प्रजातन्त्र देशों का संरक्षक घोषित किये हुए था। इस कारण भारत के प्रधान-मन्त्री के वक्तव्यों से अमेरिका का जनमानस भी भारत के विरुद्ध हो गया।

ये सब घटनायें जब तक होती रहीं, मथुरासिंह तथा उसी प्रकार के अन्य लोग भौंचक्के हो भारत सरकार की गतिविधियों को देखते रहे। मथुरासिंह प्रायः जमादारपुर और दिल्ली में रहता था। राधा और फ्लोरा को लेकर वह भारत के प्रमुख-प्रमुख स्थानों का भ्रमण भी कर चुका था।

दिल्ली में वह लाला त्रिलोकचन्द के बंगले पर ही ठहरा करता था। त्रिलोकचन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब नवस्थापित सुप्रीमकोर्ट में वकालत करने लगा था। मथुरासिंह जब-जब वहाँ जाता, दोनों में देश-विदेश की सैनिक तथा राजनीतिक गतिविधियों पर वार्त्तालाप होता था। त्रिलोकचन्द को मथुरासिंह की सूझ-बूझ भरी बातें विशेषकर, सैनिक विषयों में उसकी नीति कुशलता और उसकी समस्याओं को सुनने में रुचि, बनी रहती थी। मथुरासिंह भी देश की राजनीतिक परिस्थितियों पर वकील साहब के विचार सुनने के लिए उत्सुक रहता था। परिणामस्वरूप जब-जब भी रात के भोजन के अवसर पर बैठे हुए इस विषय पर वार्त्तालाप आरम्भ होता तो रात के बारह और कभी-कभी तो एक तक बज जाया करता था। घर की महिलायें तंग आ जाती थीं। परन्तु ये दोनों व्यक्ति बातें करते-करते अघाते नहीं थे।

त्रिलोकचन्द बहुत कम मुकदमें लिया करता था और जो मुकदमा ले लेता उसमें वह अवश्य सफल होता था। वकालत करने के अतिरिक्त वह देश के प्रमुख पत्रों में अपने लेख लिखा करता था। इससे वह जानकार क्षेत्रों में एक विचारक के रूप में विख्यात था।

यह सन् 1949 का आरम्भ था। मथुरासिंह भारत के पूर्वी भाग का भ्रमण करके आया था और गाँव जाने से पूर्व दिल्ली में टिका हुआ था। लाला त्रिलोकचन्द के घर पर सुप्रीमकोर्ट के एक जज महोदय तथा कुछ प्रमुख वकील रात के भोजन के लिए आमंत्रित थे। सब के एकत्रित होने पर सामान्य रूप में त्रिलोकचन्द ने मथुरासिंह का परिचय करा दिया। उसने बताया, "ये हैं मेरे अतिथि और स्नेहपात्र लेफ्टीनेंट मथुरासिंह। ये विगत विश्वयुद्ध में इंगलैंड के चीफ्स आफ दि आर्मी स्टाफ के सदस्य रहे हैं।"

"और आजकल भारत में क्या हैं?" जस्टिस महोदय ने पूछा।

"डिसमिस्ड सैनिक अधिकारी।"

"क्यों?"

"क्योंकि इन्होंने कश्मीर के प्रधान मंत्री के घर में छुपे हुए एक पाकिस्तानी जासूस को पकड़कर प्रकट कर दिया था।"

"इस पर तो इन्हें पुरस्कार और पदोन्नति प्राप्त होनी चाहिये थी?"

"हाँ, यदि देश में राज्य बुद्धिमानों का होता तो। यहाँ अक्ल की कोई बात नहीं। इस कारण योग्य व्यक्ति शासन से बाहर किए जा रहे हैं।"

"हाँ!" जज महोदय ने स्वीकारोक्ति में कहा, "ऐसा सुनने में आया है कि राष्ट्र-संघ में दिया जाने वाला वास्तविक आवेदन अपने देश के एक विख्यात वैधानिक ने तैयार किया था। उसमें उसने कश्मीर का भारत के साथ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक सम्बन्ध बता कर कश्मीर के महाराज के कश्मीर को भारत में विलीन करने की प्रार्थना का उल्लेख किया था। साथ ही उस आवेदन-पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में यह भी लिखा गया था कि पाकिस्तान ने कश्मीर को बलपूर्वक पाकिस्तान में मिलाने के लिए सीमा-प्रान्त के कबाइलियों को शस्त्रास्त्र देकर तथा सैनिक अफसरों की सहायता से आक्रमण कराया था।

"उसमें यह भी उल्लेख था कि इस लम्बे काल में पाकिस्तान की सेनाएँ भारत की सेनाओं से खुले तौर पर लड़ती रही हैं।

"अतः उस भूमि से जो वैधानिकतया भारत में विलय हो चुकी है, पाकिस्तान को अपनी सेनाएं हटा लेने के लिए कहा जाए।

"परन्तु नेहरू जी के आदेश पर भारत सरकार ने उस आवेदन-पत्र को रद्द करके एक दूसरा आवेदन-पत्र बनाकर भेजा है। उसमें लिखा है कि कश्मीर में हिन्दू-मुसलमानों का झगड़ा था, उस झगड़े में बहुत से मुसलमान मारे गये। उनकी रक्षा के लिए राज्य की सेनाएँ अशक्त सिद्ध हुई। इसलिए राजा कश्मीर ने भारत से सहायता माँगी। भारत सरकार कश्मीर को भारत का अंग घोषित किए बिना राज्य के आभ्यन्तरिक विषय में हस्तक्षेप करना उपयुक्त नहीं समझती थी। इस कारण अस्थायी विलय स्वीकार किया गया। इसके विषय में अन्तिम निर्णय राज्य में जनमत संग्रह के बाद किये जाने की घोषणा की गई है।

"अब पाकिस्तानी सेनाओं को जो विद्रोहियों की सहायता के लिए राज्य में बैठी हैं, बाहर जाने के लिए कहा जाय जिससे कि राज्य में शान्ति स्थापित की जा सके।

" अंग्रेज भारत में कश्मीर के विलय का विरोध करने वाले हैं, इसी कारण ऐसा प्रतीत होता है कि त्रुटिपूर्ण आवेदन-पत्र किसी अंग्रेज़ नीतिज्ञ के कहने पर प्रधानमंत्री के सलाहकारों ने लिखा था। जिस पर इंगलैंड की सरकार सुगमता से आक्षेप कर सके।"

मथुरासिंह बोला," यह किसी भी सही बुद्धि वाले को सहज ही समझ आ सकता है कि भारत के गवर्नर-जनरल कश्मीर का पाकिस्तान के हाथ में जाने में रुचि प्रकट करते थे। इंगलैंड की वर्तमान नीति यह है कि भारत राज्य को अधिक-से-अधिक दुर्बल बनाकर रखा जाय जिससे कि यह सदा इंगलैंड की सहायता का प्रत्याशी रहे और उस सहायता के लिए इंगलैंड सदा भारत में अपना दबदबा बनाये रखे।"

जस्टिस साहब ने पूछा, "इस झगड़े से निकलने के लिए आप क्या उपाय ठीक समझते हैं?"

"मैं तो यह समझता हूं कि राज्य के तीन प्रमुख अंग होते हैं। राजा, प्रजा और सेना। प्रजा के हित में राजा और सेना दोनों संलग्न रहते हैं। राजा निर्णय करता है परन्तु सेना को प्रजा तथा देश की रक्षा करनी होती है। इससे राजा सेना की सम्मति के बिना अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय नहीं कर सकता। यदि सेना की सम्मति के बिना अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय होने लगे तो राजनीतिज्ञों के निर्णय कभी ऐसे भी हो सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जिनका पालन सेना नहीं कर सकती। ऐसी अवस्था में देश दास हो जाता है।

"यही बात यहाँ हो रही है। जो अपने मित्र हैं अथवा मित्र बन सकते हैं, उनके साथ झगड़ा किया जा रहा है। जो शताब्दियों से अपने शत्रु रहे हैं, उनसे मित्रता स्थापित करने का यत्न किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में सेना कुछ भी सहायता नहीं कर सकती। इससे देश को भारी हानि पहुँचेगी।"

एक वकील ने पूछा, "परन्तु सेना युद्ध भी जारी रख सकती है?"

"युद्ध तो मिथ्या राजनीति के परिणाम होते हैं। वे मिथ्या राजनीति में कारण नहीं होते। इस कारण मैंने कहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय विषयों की राजनीति पर सैनिक दृष्टिकोण की ऐनक होनी चाहिए। बिना सैनिक दृष्टि रखे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अन्धी होती है।"

"अब वर्तमान झमेले में से निकलने का मार्ग क्या हो सकता है?"

"देश को सैनिक दृष्टि से सुदृढ़ किया जाय। यहाँ कम-से-कम बीस लाख सेना, बहुत बड़ी नौ-सेना तथा वायु सेना की आवश्यकता है।"

"इतना कुछ तो देश कर नहीं सकता।"

"मैं ऐसा नहीं समझता। इस पर भी यदि यह मान लिया जाय कि आपका कहना ठीक है तो हम को अपने मित्र बनाने चाहिए और उनसे शस्त्रास्त्र की सहायता लेनी चाहिए।"

"वही तो पण्डित जवाहरलाल कर रहे हैं। अमेरिका इंगलैंड का मित्र है। इससे वह हमारी सहायता नहीं करेगा। उसके मुकाबले में रूस ही एक आश्रय दिखाई देता है। इसलिए पण्डितजी रूस से प्रेम प्रकट कर रहे।"

"यदि यह बात थी तो वे रूस जाते, अमेरिका क्यों गये?"

"वहाँ भी जायेंगे।"

"सहायता तो युद्ध-काल में चाहिये थी। यदि उस समय रूस को पाकिस्तान के विरुद्ध सहायता के लिए तैयार किया जा सकता तो पाकिस्तान पर सीधा आक्रमण किया जा सकता था। हमने गवर्नन-जनरल, एडमिरल और कमाण्डर-इन-चीफ तो बना रखे थे अंग्रेज़ और विचार कर रहे थे रूस की सहायता का। यह दोगली नीति नहीं चल सकेगी।

"देखिए, दुनिया का मानचित्र देखकर कोई महामूर्ख ही होगा जो यह कहेगा कि रूस अथवा चीन के कम्युनिस्ट कभी भी हमारी किसी विषय में सहायता करेंगे।

"रूस और चीन भारत को कम्युनिस्ट बनाने का यत्न तो कर सकते है, परन्तु भारत की सहायता कर, इसको अपने पाँव पर खड़ा करने में उनकी रुचि नहीं हो सकती। कारण स्पष्ट है। भारत में संसदीय प्रजा-तंत्र स्थापित हो चुका है। प्रजातंत्र में विचार-स्वतंत्रता एक अनिवार्य वस्तु है, जबकि कम्युनिस्ट ढांचे में यह एक दूषित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात है। यहाँ राजनीतिक दल हैं, जो एक दूसरे के दोषों को खोजने में लगे रहते हैं, जबकि रूस तथा चीन में एक ही राजनीतिक दल है। वहाँ किसी दूसरे दल को सहन नहीं किया जाता। यहाँ लोग इस बात पर विचार तथा उसका प्रचार भी कर सकते हैं कि यहाँ का संसदीय ढांचा ठीक है अथवा ग़लत है। वहाँ के एकदलीय ढांचे की कोई आलोचना भी नहीं कर सकता। यहाँ मंत्रियों का निर्वाचन वयस्क मताधिकार के आधार पर है, वहाँ मंत्रियों की नियुक्ति होती है, उनका निर्वाचन नहीं होता। नियुक्ति करने वाला प्रथम मंत्री (फर्स्ट सेक्रेटरी) है, जो केन्द्रीय समिति से निर्वाचित होता है, परन्तु जहाँ उनका सचिवालय पर अधिकार होता है, वहाँ प्रेजिडियम की नियुक्ति भी वही करता है और केंन्द्रीय समिति के निर्माण में इन दोनों का बहुत भारी प्रभाव रहता है। परिणाम यह होता है कि प्रथम मंत्री किसी भी तरह एक बार निर्वाचित हुआ तो देश की पूर्ण व्यवस्था एवं गतिविधि पर उसका एकाधिकार हो जाता है और उसको बदलना सुगम नहीं होता।

"इस प्रकार भारत के विधान और रूस के विधान में आकाश-पाताल का अन्तर है। इसी कारण मैं मानता हूँ कि रूस, इस स्थिति में भारत की सहायता तब तक नहीं करेगा जब तक उसका अपना कोई स्वार्थ सिद्ध न हो।"

सब उपस्थितगण मथुरासिंह की जानकारी एवं उसके विश्लेषण पर विस्मय करते थे।

3

द्वितीय युद्धकाल में मित्र-राष्ट्रों की नीति का संचालन अमेरिका करता रहा था। मित्र-राष्ट्र थे इंगलैंड, चीन और अमेरिका। मित्र फ्रांस भी था, परन्तु उसका नीति-संचालन तो दूर रहा, युद्ध के जीतने में भी कुछ उल्लेखनीय योगदान नहीं था। इंगलैंड के उपनिवेश इंगलैंड के अन्तर्गत ही माने जाते थे।

रूस जो मानवता का शत्रु था परन्तु जर्मनी द्वारा शत्रु घोषित किए जाने पर मित्र मान लिया गया था। अमेरिकन राजनीतिज्ञ युरोपीय राजनीतिक दलों का ज्ञान नहीं रखते थे अतः वे रूस की भयंकर विचारधारा और आचरण से अनभिज्ञ होने के कारण, उस की उन्नति और रूसी-साम्राज्य-निर्माण में अपरोक्ष रूप से सहायक हो गये। अमेरिका के युद्धनीति-संचालकों ने तीन महान् भूलें कीं। एक तो उन्होंने इंगलैंड को बालकान में मोर्चा खोलने नहीं दिया। परिणाम स्वरूप पूर्वी युरोप के स्वतन्त्र राज्य रूस की दया पर रह गये। दूसरे, अमेरिका ने जापान के विरुद्ध चीन की सहायता के लिए यह शर्त रख दी कि वह मंगोल के कम्युनिस्टों से सुलह कर उनको अपने मन्त्रिमण्डल में स्थान दे। तीसरी भूल 1945 में अपनी सेनाओं को बर्लिन तक बढ़ जाने से रोके रखा और रुस की सेनाओं को दूर से आकर बर्लिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हावी होने का अवसर दिया।

इन तीनों दूषित नीतियों का परिणाम 1949-50 में प्रकट होने लगे। रूस ने पोलैंड यूगोस्लाविया, हंगरी, आस्ट्रिया, रूमानिया, बलगारिया को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। चीन में कम्युनिस्ट राज्य स्थापित हो गया और मित्र-राष्ट्र चीन के नेता च्यांग काई-शेक को फार्मोसा में भागकर जान बचानी पड़ी। इन सबसे भी भयंकर परिणाम यह हुआ कि जर्मनी के दो टुकड़े हो गये। बर्लिन पूर्वी जर्मनी में आ गया और वह रूस के अधीन हो गया। फिर जर्मनी के एक बहुत बड़े क्षेत्र को रूस को देकर बर्लिन का कुछ भाग वापस लिया गया। बर्लिन के भी दो भाग हो गए। पूर्वी और पश्चिमी। पूर्वी बर्लिन रूस के अधीन ही रहा।

अमेरिका की भूलों के कारण दो थे। एक तो युरोप की राजनीति से अनभिज्ञता और दूसरे इसकी अपनी राजनीति का शुद्ध भोगौलिक आधार पर होना। द्वित्तीय विश्वयुद्ध से पहले युरोप की राजनीति जन-जन के विचारों से पृथक होकर सर्वथा धर्मनिरपेक्ष हो गई थी। अमेरिका इस विषय में युरोप का अनुकरण करने लगा था। अमेरिका भी शुद्ध भौगोलिक राजनीति में विश्वास रखता था। इसकी राजनीति में देश के भीतर और बाहर की जनता के विचारों का कोई महत्व नहीं था।

अतः अमेरिकन राजनीतिज्ञ कम्युनिस्ट विचारधारा को समझ ही नहीं सके। परिणामस्वरूप इन अनभिज्ञ नीतिज्ञों के हाथ में युरोप और एशिया लाल रंगा जाने लगा। सन् 1946 में ही यह होने लगा था। इस समय चीन में कम्युनिस्ट और राष्ट्रवादियों में झगड़ा हो गया और अमेरिकन अधिकारियों ने अनजाने में अथवा जान-बूझ कर चीनी कम्युनिस्ट नेताओं की सहायता कर दी। च्यांग काई शेक को चीन की भूमि छोड़कर फारमोसा द्वीप पर आश्रय लेना पड़ा। अब अमेरिका कुछ सचेत हुआ।

जब रूस ने कोरिया पर आक्रमण कर उसको अपने अधीन करने का यत्न किया। अमेरिका की आंख तब पूर्ण रूप से खुली। अमेरिका ने आधा कोरिया रूसी पंजे में जाने से बचा लिया।

कहावत है, "अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।" यही भूल भारत के राज्याधिकारी करने लगे थे। यहाँ स्वयं को मिथ्या धर्म निरपेक्ष दिखाने के लिए उन समुदायों का पक्ष लिया जाने लगा जो राष्ट्र के विरोधी थे। देश के मुसलमान, जिनकी निष्ठा देश के बाहर के राज्यों में थी, देश के राष्ट्रीय अधिकारों में बराबर का भाग लेने लगे। इस कारण देश का विभाजन मानना पड़ा और कश्मीर का युद्ध हुआ। देश की राजनीति को शुद्ध भौगोलिक आधारों पर टिकाने का यत्न किया जाने लगा। देश में पैदा होने मात्र से किसी भी व्यक्ति को राष्ट्र का अंग माना जाने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत विभाजन के बाद भी यही नीति चालू रही। इसके साथ ही एक बात और हो गई यह कि एक अर्द्ध-कम्युनिस्ट नेता देश का प्रधान-मन्त्री बन गया। वह विचारों से तो पूर्णरूपेण कम्युनिस्ट था किन्तु उनकी क्रूरता से रहित था।

परिणाम यह हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय नीति इसी धुरी पर चलने लगी। हमारे सम्बन्ध संसार मे कम्युनिस्ट राज्यों से घनिष्ठ होने लगे। मित्र बनने लगे एशिया के मुसलमान राज्य। वह इस कारण कि मुस्लिम और कम्युनिस्ट विचारों वाले देश उन समुदायों को अपना जताते थे जो इन्ही से समीप का सम्बन्ध रखते थे।

इसके विपरीत एशिया के उन राष्ट्रों से जिनकी भारत राष्ट्र की संस्कृति के साथ समानता और सहानुभूति थी उनसे तटस्थता का व्यवहार होने लगा। देश के भीतर भी वे लोग फलने और फूलने लगे जिनकी निष्ठा देश में बाहर के आचार-विचार और राज्यों से थी।

सबसे बड़ी बात यह हुई कि देश में मिथ्या प्रचार द्वारा गांधीजी की असफलता को सफलता का नाम ले-लेकर देशवासियों को मिथ्या पथ-गामी बनाया गया।

सन् 1950 में चीन में कम्युनिस्ट राज्य स्थापित हुआ तो भारत सरकार ने बधाईयां गाईं। कम्युनिस्ट चीन के साथ मैत्री का सम्बन्ध बनाकर फारमोसा सरकार को कम्युनिस्ट सरकार के अधीन हो जाने की शुभ सम्मति तक दी जाने लगी।

कम्युनिस्ट चीन की दृष्टि तिब्बत पर पड़ी तो भारत ने कम्युनिस्ट चीन का पक्ष लिया और तिब्बत के दलाई लामा को चीन के अधीन रहने की शुभ सम्मति दे दी। दलाई लामा भारत में आश्रय पाने के विचार से आ रहा था। उसको वापस जाकर चीन के अधीन रहने के लिए कहा गया।

चीन ने दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने दक्षिणी कोरिया की सहायता करने का निश्चय किया तो भारत सरकार बगलें झाँकने लगी। तिब्बत पर तो कभी किसी काल में चीन का दावा रहा भी हो सकता था परन्तु कोरिया पर तो कभी भी चीन की छाया नहीं पड़ी थी। इस पर भी चीन ने वहाँ आक्रमण किया। भारत चीन का पक्ष तो नहीं ले सका, क्योंकि उसे इसमें कोई युक्ति नहीं सूझी परन्तु राष्ट्रसंघ की सहायता के लिए भी तैयार नहीं हो सका।

भारत के कुछ नेताओं ने चीन की तिब्बत में आक्रमण-नीति की आलोचना की तो पण्डित जवाहरलाल ने उनको साम्प्रदायिक और प्रति-क्रियावादी का नाम दे दिया। जिस किसी ने भी चीन की निन्दा की उसी को देशद्रोही का पद प्रदान किया गया।

कश्मीर में युद्ध-विराम सन्धि की गई तो हमारी सरकार का ध्यान कम्युनिस्ट देशों की ओर जाने लगा। उन देशों के गुणानुवाद गाये जाने लगे और फिर देश में कम्युनिज़्म को सार रूप में लाने के लिए यह घोषणा कर दी गई कि देश में सोशलिस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज की स्थापना की जायेगी। परिणामस्वरूप सरकार देश के उद्योग-धन्धों की मालिक बनने लगी।

सरकार का उद्योग-धन्धों में शक्ति, ध्यान और समय व्यतीत होने लगा तो सरकार के मौलिक कार्यों में ढील होने लगी। सरकार के मौलिक कार्य थे देश में शान्ति-व्यवस्था, विदेश में भले राज्यों तथा राष्ट्रों से मैत्री और सुरक्षा-सम्बन्ध तथा शक्ति-संचय। इन तीनों कार्यों में प्रमाद और विकृत-दिशा स्वीकार की जाने लगी। परिणाम यह हुआ कि देश में गुंडा-गर्दी बढ़ने लगी। पर-राष्ट्र सम्बन्धों में धोखेबाज चीन हमारा परम मित्र हो गया और हम प्रजातन्त्रात्मक देशें से दूर हटकर कम्युनिस्ट देशों के समीप होने लगे।

इस सब समय सेना में भी परिवर्तन होने लगा। सेना कम की जाने लगी। सैनिक-सामग्री के निर्माण से ध्यान हटाकर सुख-सामान और श्रृङ्गार-प्रसाधन सामग्री निर्मित होने लगी। जिनसे सैनिक-सहायता की आशा थी, उनसे झगड़ा किया जाने लगा और उनसे विरोध बढ़ने लगा। जिन्होंने अपने मित्रों और पड़ोसियों के साथ सदा विश्वासघात किया था, उनसे मित्रता और सहयोग होने लगा।

ऐसे समय में स्टैनले भारत भ्रमण के लिए आया। स्टैनले-दम्पती के इंगलैंड से चलने के समय क्लैरा वार्डी ने बताया था कि फ्लोरा मिस्टर सिंह के साथ ही रह रही है और उसके गांव में ही अपने लिये एक सुख-सुविधा से सम्पन्न मकान बनवा रही है।

क्लैरा और फ्लोरा में परस्पर पत्र-व्यवहार चलता था।

क्लैरा ने जहाँ स्टैनले को फ्लोरा को ढूंढ़ निकालने का सूत्र दिया था, वहाँ उसने फ्लोरा को भी पत्र द्वारा सूचित कर दिया था कि उसके माता-पिता भारत आ रहे हैं।

इस पर भी फ्लोरा का विचार था कि वे अपनी पथ-भ्रष्टा लड़की से मिलने के लिए नहीं आएंगे। जब वे आ गये तो उसको इससे विस्मय ही हुआ। वह समझ नहीं सकी कि वे केवल पैतृक स्नेहवश आये हैं अथवा किसी अन्य उद्देश्य से।

त्रिलोकचन्द भी फ्लोरा द्वारा अपनी माता के साथ होने वाले व्यवहार को देखने की लालसा रखता था।

जब स्टैनले-दम्पती स्नानादि से निवृत्त हो रहे थे, मथुरासिंह फ्लोरा से कह रहा था, "मैं समझता हूँ कि ये तुमको वापस इंगलैंड ले जाने के लिए आये हैं।"

"आपका यह अनुमान कैसे बना है?"

"लार्ड गौर्ट के तलाक का नोटिस अभी तक नहीं मिला। मेरा अनुमान है कि उसकी तो तलाक की इच्छा रही होगी, परन्तु तुम्हारे माता-पिता के समझाने पर उसने प्रार्थना नहीं की होगी। अब वे तुमको वापस ले जाकर उससे तुम्हारी संधि कराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विचार करते हैं।''

''मुझे भी कुछ ऐसा ही सन्देह हो रहा है। परन्तु इसमें आप मुझे क्या सम्मति देते है?''

''अपने विचार मैंने तुमको पहले ही बता रखे हैं। डेढ़-दो वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी उनमें परिवर्तन का मैं कोई कारण नहीं देख पा रहा।

''मेरा अभिप्राय यह है कि तुम यदि चाहो तो यहाँ रह सकती हो। चाहे तो स्वेच्छा से रहो, चाहे विवश होकर। अब तो यह तुम्हारा अपना मकान है। भला मैं तुमको यहाँ रहने से किस प्रकार मना कर सकता हूँ। तुम चाहो तो इस मकान में भी वैसे ही रह सकती हो, जैसे गौर्ट मेन्शन में।''

''मैं रहने की बात नहीं पूछ रही। मैं तो यह जानना चाहती हूँ कि आपके साथ इतने काल तक रहकर वहाँ कैसे रह सकूंगी?''

''यह तो तुम्हारे और लार्ड गौर्ट के विचार करने की बात है।''

त्रिलोकचन्द उनका वार्त्तालाप सुन रहा था। उसने बात बदलने के लिये कहा, ''मथुरासिंह! यह किबल अज़ मर्ज़ वावेला नहीं क्या? मैं समझता हूँ कि स्टैनले-जैसा व्यक्ति मियाँ-बीवी के झगड़े में मगज़पच्ची करने की अपेक्षा राज्यों के झगड़ों में अधिक रुचि रखता होगा।''

त्रिलोकचन्द के कथन ने दोनों का मुख बन्द कर दिया।

त्रिलोकचन्द तो वहाँ से मनाली जाने के लिए ठहरा हुआ था। उसके बच्चों और पत्नी ने भी साथ ही जाने का निश्चय कर लिया था। मथुरासिंह अभी मन में निश्चय नहीं कर सका था। राधा जाना चाहती थी। फ्लोरा की इच्छा जाने की नहीं बन रही थी और मथुरासिंह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि किसकी इच्छा का समर्थन करे।

4

स्टैनले ने फ्लोरा से पृथक में बात की। उस समय केवल फ्लोरा की माँ सामने बैठी थी। स्टैनले ने कहा, ''फ्लोरा! मेरी सम्मति है कि तुम अभी भी वापस चली चलो तो तुम्हारा पति तुम्हें अपने पैतृक मैन्शन में मालिक बन रहने की स्वीकृति दे देगा।''

''पापा! क्या उस मैन्शन में अधिक आकर्षण है? क्या यह मकान उससे कम सुविधाजनक है?''

''वास्तव में यह मैन्शन बहुत सुन्दर और सुख-सुविधाजनक है। परन्तु स्त्री की जो मान-प्रतिष्ठा अपने पति के घर में होती है, वह कहीं अन्यत्र नहीं हो सकती।''

''यह ठीक है पापा! परन्तु पति कहाँ है? यहाँ अथवा बोनैस में?''

''जहाँ विवाह हुआ हो?''

''विवाह किसको कहते है। रजिस्टर में हस्ताक्षर करने के अथवा परस्पर प्रेममय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन व्यतीत करने को?"

"मान-प्रतिष्ठा का सम्बन्ध तो रजिस्टर में हस्ताक्षर करने से ही है। आज तो इंगलैंड में जीवन का सम्बन्ध मान-प्रतिष्ठा से नहीं रहा। पिछले युद्ध में बीस लाख से अधिक अंग्रेज़ युवक मारे गये हैं। इतनी ही स्त्रियाँ बिना पुरुषों के हैं। उनको दूसरों से साझे में ही पुरुष मिल सकते हैं। अतः अधिकांश स्त्रियाँ ऐसी हैं जो जब मिल सकें, दूसरों के पतियों पर ही निर्भर कर सकती हैं।"

"इसी कारण समझ लीजिए कि मुझको अपना पति उस देश का ढूंढ़ना पड़ा है, जहाँ कानून से भी पुरुष दो अथवा दो से भी अधिक पत्नियाँ रख सकता है।"

"परन्तु यहाँ भी तो कानून बन रहा है कि एक पुरुष एक समय में एक ही पत्नी रख सकता है।"

"तब यहाँ भी योरुप की भांति रजिस्टर पर हस्ताक्षर तो एक के साथ करने होंगे और सम्बन्ध एक से अधिक के साथ।"

"वह तो अपवाद की बात होगी।"

"आप मेरी अवस्था को अपवाद मानते हैं अथवा नियमित जीवन? मैं इस अपवाद को नियमित करने के लिए आई थी। चाहिये तो यह था कि विलियम मुझको तलाक दे देता और मैं यहाँ विवाह कर लेती, परन्तु उसने ऐसा क्यों नहीं किया? मुझको इसी में आश्चर्य हो रहा है।"

"वह तो तलाक देने के लिए तैयार बैठा था, मैंने ही उसे अब तक रोके रखा है।"

"क्यों ?"

"हमारे ग्राण्डसन की माँ को तलाक मिले, यह मुझे पसन्द नहीं।"

"परन्तु क्या आप क्लीवमौंट को अपना ग्राण्डसन मानते हैं?"

"क्यों, क्या वह हमारी लड़की का लड़का नहीं हैं?"

"पर पापा! जहाँ आपने मेरा विवाह किया है... नहीं, नहीं! जहाँ आपने मुझे विवाहने का षड़यन्त्र किया था, वहाँ से तो आपको यह पोता मिला नहीं है?"

"यह हमारे विचार का विषय नहीं है। यह तुम्हारे और तुम्हारे पति के विचार करने का विषय है। हमारा उससे सम्बन्ध तुम्हारे द्वारा ही है, इसी से कहता हूँ कि तुम निर्मल यश वाली बनी रहो तो वह ग्राण्डसन भी संसार में सिर ऊँचा कर घूम सकेगा। अन्यथा उसका सिर संसार के सम्मुख झुका रहेगा। और कोई भी यह कहकर कि उसकी माँ अपने पति को छोड़कर भाग गई थी, उसका जीवन विषाक्त कर सकता है।

"यह बात मैंने विलियम को कही तो वह तलाक के लिए प्रार्थना-पत्र देता-देता रुक गया है। उसने तलाक का विचार छोड़ दिया है। वह चाहता है कि यदि तुम बोनैस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रहो और वहाँ अपना जीवन मान-प्रतिष्ठा का कर सको तथा अपने प्रेमी से ऐसा सम्बन्ध रखो, जैसे आज योरुप में अनेक स्त्रियाँ रख रही हैं अर्थात् बदनाम हुए बिना, तो वह आपत्ति नहीं करेगा।''

''परन्तु पापा! मुझे पुनः गर्भ ठहर गया है।''

''इसका प्रबन्ध हो सकता है। तुम प्रसव के बाद वहाँ चली आओ। और दो-ढाई वर्ष तक तुम्हारे वहाँ से अनुपस्थित रहने की बात नौकरों और परिचितों को तो समझाई जा सकती है।''

''मुझे आप इस विषय पर मिस्टर सिंह से विचार कर लेने दीजिए।''

''हाँ, कर लो।''

मिसेज़ स्टैनले कहने लगी, ''कहो तो मैं उसे समझाऊँ?''

''पहले तो मैं स्वयं ही बात करूंगी।''

अभी फ्लोरा मथुरासिंह को अपने पापा का दृष्टिकोण नहीं बात पाई थी कि स्टैनले की मथुरासिंह से अन्य विषय पर बात हो गई। उसी सायंकाल स्टैनले, त्रिलोकचन्द और मथुरासिंह मन्दिर देखने के लिए चले गये। इस मन्दिर में कुछ भी विशेषता नहीं थी। भारत में सहस्त्रों-लाखों शिवमन्दिरों की भांति यह भी एक था। मथुरासिंह और त्रिलोकसिंह को तो उसमें कुछ भी विशेषता प्रतीत नहीं हुई। परन्तु स्टैनले वहाँ पर स्थापित लिंग का अर्थ पूछने लगा। त्रिलोकचन्द ने समझाया कि परमात्मा की मूर्ति बन नहीं सकती थी इसी कारण उसकी मूर्ति अमूर्त पत्थर की बना दी है।''

''मैंने तो सुना था कि यह 'फैलस' है और भारत में इसका पूजन किया जाता है।''

''हो सकता है।'' त्रिलोकचन्द का कहना था, ''यह शक्तिमान की शक्ति का चिह्न है। इसका पूजन इस कारण नहीं किया जाता कि यह सन्तानोत्पत्ति का यन्त्र है अपितु इस कारण किया जाता है कि यह शक्ति का पुंज है। हम हिन्दू लोग शक्ति के उपासक हैं और इसको शक्ति का यह चिह्न मानकर ही इसका पूजन करते हैं। शक्तिमान है परमात्मा। अतः यह चिह्न परमात्मा का मान लिया गया है।''

''परन्तु आपके महात्मा गांधी तो शक्ति के उपासक नहीं थे। वे तो शान्ति के उपासक थे। शान्ति भी वह, जो शक्ति से प्राप्त नहीं होती अपितु शान्तिमय प्रेरणा से।''

''हो सकता है, परन्तु महात्मा गांधी हिन्दू-मत के प्रतीक तो नहीं, वे तो टाल्सटाय और थारू की जीवन-मीमाँसा को मानने वाले थे। उन्होंने अपने विचार 'गीता' की एक सर्वमान्य हिन्दू पुस्तक से जोड़ने का लंगड़ा प्रयत्न किया था, उसमें वे सफल नहीं हो सके। अल्प-संख्या में ही हिन्दू उनका अनुकरण करने वाले रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सन् 1921 में भारत के बहुसंख्यक लोग गांधीजी के पद-चिह्नों पर चलने के लिए तैयार थे, परन्तु वे समझते थे कि उनकी अहिंसा अन्त में हिंसा में परिणत होने वाली है किन्तु चौरा-चौरी की घटना के बाद तो उनका नाम ही रह गया था। उनके विचारों और उनके कार्य-क्रम मानने वाले तो मुट्ठी-भर लोग ही इतने विशाल देश में रह गए थे। 1930 में नमक सत्याग्रह में बीस हज़ार के लगभग व्यक्ति जेलों में गए थे। 1932 में दस हज़ार से कम गए और 1942 में दस-बारह हज़ार को पकड़ लेने से ही आन्दोलन शान्त हो गया था।"

"इस पर भी वे नेता तो थे। उनके मुकाबले में अन्य कोई विख्यात नेता यहाँ नहीं था।

"हाँ, मिस्टर स्टैनले! आप ठीक कहते हैं कि उनके मुकाबले का कोई नेता नहीं था। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि देश उनके पीछे चलता था। अधिक-से-अधिक यह कहा जा सकता है कि एक विशाल संख्या में भारतवासी नेता-विहीन थे। वे गांधी को पसन्द नहीं करते थे, परन्तु अन्य कोई उनका नेतृत्व करने वाला नहीं था।"

"ऐसा क्यों?"

"इसलिए कि जब कभी जनता किसी अन्य को, जिसके विचार गांधी के विचारों से विभिन्न हों, नेता मानने लगती तो गांधी जी अंग्रेज सरकार के साथ मिलकर उसे देश और जाति का घातक घोषित करवा देते थे। उसको क्रांतिकारी, बमबाज़ अथवा साम्प्रदायिक का नाम दे देते और देश के अधिकांश समाचार-पत्र जो लाखों की सम्पत्ति लगाकर बैठे थे और सरकार तथा धनियों के विज्ञापनों पर जीवित थे, इस अनर्गल प्रलाप में सम्मिलित हो जाते थे। परिणाम यह होता कि जन-साधारण किंकर्तव्य-विमूढ़-सा देखता रह जाता था।"

"परन्तु हिन्दुस्तान की सरकार क्यों इस प्रकार के कार्य में गांधीजी की सहायक हो जाती थी?"

"सरकार उनकी सहायक नहीं मानी जा सकती। सरकार तो भारतीय क्रांतिकारी नेताओं का भयंकर विरोध अपने से अधिक गांधी तथा उनके कुनबे के लोगों से ही किया जाता देख प्रसन्न होती थी। अंग्रेज़ गांधी को एक सुविधाजनक विरोधी मानते थे। गांधीजी अंग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित देशवासियों को सान्त्वना दे उनमें अंग्रेजों के लिए सहानुभूति तथा शुभ-कामना उत्पन्न करते रहते थे।"

स्टैनले समझा अथवा नहीं, किन्तु उसने बात बदलते हुए कहा, "मथुरासिंह! तुम इस प्रकार व्यर्थ बैठकर अपने शरीर और मस्तिष्क को जंग लगा रहे हो। तुमको मैदान में आना चाहिए।"

"मैदान में? किस मैदान में?"

"राजनीतिक क्षेत्र में?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन ए स्कौंड्रल्ज़ गेम? नहीं कर्नल स्टैनले! एक सैनिक प्रवृति का मनुष्य इस प्रकार का व्यवहार अपना नहीं सकता। मैं तो किसी अन्य प्रकार से समाज की सेवा करना चाहता हूँ।"

"किस प्रकार से?"

"मैं यहाँ मिलिटरी साइंस का एक स्कूल खोलना चाहता हूँ।"

स्टैनले हंस पड़ा। उसने कहा, "सरकार इसकी स्वीकृति नहीं देगी।

"मैं भी कुछ ऐसी ही आशा करता हूँ। परन्तु मैं स्वयं को किसी अन्य कार्य के योग्य भी नहीं समझता।"

"तो तुम इंगलैंड आ जाओ। वहाँ मैं तुम्हारे लिए तुम्हारी रुचि का कार्य ढूंढ़ दूंगा।"

"जैसे निज़ाम हैदराबाद के लिए ढूंढ़ दिया था?"

"सर आगा खाँ और कैप्टन रहमान ने हमें धोखा दिया है। हमको उन्होंने बेवकूफ बनाया। इस पर भी निज़ाम का दस लाख तो तुमको मिला ही था। पन्द्रह लाख वार्डी को मिल गया और बीस लाख मुझे।"

"वह रुपया लेकर मुझे प्रसन्नता नहीं हुई। इसी कारण उसमें से एक पैसा भी मैंने अपने पर व्यय नहीं किया। वह सब रुपया फ्लोरा के पास रखा है।"

"तुम अब आओ तो अधिक विश्वस्त और ईमानदारी की बात बताऊँगा।"

परन्तु ऐसे लोग आपके पास ही क्यों पहुँचते हैं?"

"इसलिए कि सब देशों के दूतवासों से मैं सम्बन्ध बनाये रखता हूँ। लार्ड गौर्ट को भी मैंने एक काम दिलवाया है।"

"क्या?"

"वह मास्को में अंग्रेजी दूत बनकर जा रहा है।"

"ओह!"

"तुम्हारे लिए भी मैं यत्न कर सकता हूँ।"

"विचार कर बताऊँगा।"

फ्लोरा के विषय में स्टैनले ने कोई बात नहीं की।

5

रात को राधा की उपस्थिति में फ्लोरा ने मथुरासिंह को अपने पिता का प्रस्ताव बताया। सब बात सुनकर मथुरासिंह ने कहा, "मैं समझ रहा था कि पापा के भारत आने का मुख्य उद्देश्य ही यह है।"

"हाँ, आपने आज यह भविष्यवाणी की थी। मैं उनकी एक बात से प्रभावित हुई हूँ। वह है क्लीवमौंट के भावी मानयुक्त जीवन-यापन के विषय पर। जब मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान स्वतन्त्रता को बनाए रखने का वचन है तो मैं समझती हूँ कि लड़के तथा विलियम के मानयुक्त जीवन के लिए मुझे भी कुछ त्याग करना चाहिए।''

''अब आप बताइये कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं सर्वथा आपके अधीन ही हूँ।''

''फ्लोरा! मैंने अपने विचार स्पष्ट शब्दों में तुम्हें उसी समय बता दिये थे जब मैंने इस विषय में भविष्यवाणी की थी। पुनः मैं उन विचारों को दोहराता हूँ। मैं समझता हूँ कि हमारा परस्पर-प्रेम है। परन्तु प्रेम के साथ शारीरिक सम्बन्ध आवश्यक नहीं मानता। यह सम्बन्ध तो केवल इस कारण बन गया है कि अपने पति से त्यक्त मेरी प्रेमिका इस विषय में केवल मेरे आश्रय ही रहना चाहती थी।

''इस पर भी इन भावनाओं का परस्पर सम्बन्ध नहीं। समाज ने तुम्हारा विवाह वहाँ कर दिया है जहाँ तुम्हारा प्रेम नहीं। विवाहित जीवन के प्रारम्भिक दिनों में तुमने विवाह और प्रेम को पृथक-पृथक रखने का यत्न किया था। वह तो तुम्हारे मूर्ख पति ने नहीं चलने दिया। अतः उसके व्यवहार से उत्पन्न विषमता का समाधान तुमने निकाला और मैंने इसमें सहयोग दिया। यदि तुम्हारा विवाहित जीवन पुनः वैसा चल सकता है जैसे इस जीवन के प्रारम्भिक दिनों में था तो मुझको बहुत प्रसन्नता होगी।''

''आप पापा के कहने का अर्थ नहीं समझे। उनका कहना है कि आज इंगलैंड और युरोप के कुछ अन्य देशों में युद्ध के कारण युवा पुरूषों की संख्या युवा स्त्रियों की अपेक्षा कम हो गई है। अतः सामाजिक विवाहित जीवन का ढांचा वैसा-का-वैसा ही रखकर जैसा युद्ध के पूर्वकाल में था, स्त्री-पुरूषों को परस्पर सम्बंधों में कुछ सीमा तक स्वतन्त्रता प्राप्त हो रही है और मैं इस स्वतंत्रता का भोग कर सकूंगी। इस पर भी मैं विचार करती हूँ कि उस स्वतंत्रता का प्रयोग सीमित क्षेत्र में ही होना चाहिए।''

''अब बताइए, आप क्या कहते हैं? क्या मैं अपना जीवन इन दो सीमाओं में चला सकूंगी? एक सीमा तो लार्ड गौर्ट और क्लीवमौंट गौर्ट के मानयुक्त जीवन से सम्बन्ध रखती है और दूसरी आप से सम्बन्ध की सीमा है।''

इस पर राधा ने कहा, ''बहिन फ्लोरा! क्या अपने लड़के और अपने पिता की मान-प्रतिष्ठा के लिये तुम इस सम्बन्ध का बलिदान नहीं कर सकती? इतने महान् उद्देश्य के लिए तो यह एक बहुत ही तुच्छ त्याग है। हम हिन्दुओं में तो ऐसी अनेक महिलायें होंगी जो इस प्रकार का त्याग स्वेच्छा से कर गर्व का अनुभव करती हैं।''

''मैंने सुना है। उस दिन कल्याण की विधवा पत्नी अपनी जीवन- कथा में यही कुछ तो बता रही थी। मैंने भी यत्न किया था परन्तु सफल नहीं हुई। साथ ही मेरे विषय में मुझको एक सुविधा थी। वह है परिस्थितियों से मेरी और आपकी अनुकूलन की शक्ति।''

मथुरासिंह ने हंसते हुए कहा, ''अनुकूलन शक्ति नहीं कह सकते। यह सबके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए और सभी परिस्थितियों के अनुकूल नहीं हो सकती। इसके अनुकूलन में भी सीमायें हैं। वे मैंने बता दी हैं। तुमसे मेरा प्रेम उन दिनों हुआ था जब हम स्कॉटलैंड की यात्रा कर रहे थे। यह प्रेम और फिर तुम्हारी शारीरिक आवश्यकताओं की अपूर्ति, साथ ही तुम्हारी इच्छा कि पूर्ति केवल एक ही स्थान से हो, ये सब बातें थी जिसके कारण तुम यहाँ पहुँच सकी हो।''

''नई परिस्थिति में भी यही अनुकूलन आपसे चाहती हूँ।''

मथुरासिंह ने इसका आश्वासन दिया तो उसने कह दिया, ''मैं कल पापा से कह रही हूँ कि मैं बोनैस जाने के लिये तैयार हूँ। इस पर भी मेरा एक घर यहाँ भी रहेगा, कभी-कभी मैं यहाँ आकर रहूंगी। साथ ही आपके कभी वहाँ सपत्नीक आने में मुझे प्रसन्नता होगी।''

मथुरासिंह ने इस विषय में कुछ नहीं कहा। इसमें उसके ऊपर कोई प्रतिबन्ध भी नहीं था।

अगले दिन स्टैनले को फ्लोरा के निर्णय का ज्ञान हुआ तो उसने कहा, ''मैं विलियम से बात करके तुमको लिखूंगा। तुम्हारी भावी सन्तान के विषय में भी उससे बात कर लूंगा। मेरा विचार है कि तुम प्रसव यहीं कराओ और सन्तान को भी यहीं सिंह के पास छोड़ जाओ। बाद में उसके कुछ बड़ा हो जाने पर उसको अपने पास बुला लेना।''

इस प्रकार फ्लोरा से निश्चय कर स्टैनले ने जमादारपुर से जाने का विचार किया। त्रिलोकचन्द ने उसको मनाली चलकर रहने का निमंत्रण दिया। परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया। तीन दिन और वहाँ रहकर उसने अपनी मोटर निकाली। मथुरासिंह तथा घर के अन्य प्राणी इस दम्पती को विदा करने के लिए मोटर के पास खड़े थे। मोटर स्टार्ट करने से पूर्व स्टैनले ने कहा, ''यदि भारत के किसी मित्र-देश में दूतावास का कोई कार्य मिले तो आपको स्वीकार होगा?''

''हाँ, जब तक वह देश भारत का मित्र रहेगा।''

''हाँ, यह तो उचित ही है। मैं समझता हूँ कि आप जैसे योग्य व्यक्ति की सेवाओं का अपने देश के हित में प्रयोग कराने में मैं सफल हो जाऊँगा।''

मथुरासिंह मुस्कराकर चुप रहा। वह समझ रहा था कि हैदराबाद वाला काम भी स्टैनले ने अपने देश और भारत के हित में ही समझा होगा। एक बात तो वह समझा ही कि अधिकांश अंग्रेजों की भांति स्टैनले भी मुसलमानों के चकमें में फंस सकता है। इस पर भी वह स्टैनले के इंगलैंड के सरकारी क्षेत्रों में प्रभाव से चकित था।

स्टैनले गया तो मनाली की तैयारी होने लगी। फ्लोरा ने अपने न जा सकने का कारण बताया, ''मुझको अपने पेट में बच्चे का विश्वास हो रहा है। इससे मैं पैदल अथवा टट्टू पर जाने से डरती हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुन राधा ने कह दिया, "मैं भी नहीं जाऊँगी।"

मथुरासिंह अकेला ही त्रिलोकचन्द के परिवार के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। मार्ग में तथा मनाली में भी त्रिलोकचन्द से अनेकानेक विषयों पर वार्त्तालाप होता रहा। फ्लोरा और राधा के विषय से लेकर देश-विदेश तक, धर्म-समाज के विषय से लेकर मोक्ष और ब्रह्म के विषय तक बातें होती थी। जहाँ वकील साहब के प्रत्येक विषय का ज्ञान इस वार्त्तालाप को विस्तार देता रहता था वहाँ मथुरासिंह की युक्तियाँ और जीवन-मीमाँसा इसमें रंग भरती रहती थी।

त्रिलोकचन्द कहता, "मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि कम्युनिज़्म एक बार तो पूर्ण पृथ्वी पर छा जायेगा।"

"आपको ऐसा किस आधार पर प्रतीत हो रहा है? क्या मानव में वह सूझ-बूझ नहीं रही सिसे वह अपने हित की बात भी नहीं जान सकता?"

"हाँ, मानव-बुद्धि पर मलीनता छा गई है। इसके दो कारण हैं। एक तो परमात्मा के अस्तित्व से ही अविश्वास और दूसरे पुनर्जन्म में अविश्वास। परिणाम यह हुआ है कि मनुष्य को अपने कर्मों पर किसी के द्रष्टा होने का विश्वास नहीं रहा, साथ ही वह समझने लगा है कि इस जन्म में अपने कर्मफलों से बच जाने के बाद वे कर्मफल स्वयमेंव निःशेष हो जायेंगे और उनका परिणाम उसको भुगतना नहीं पड़ेगा।

"मन की इस अवस्था में मनुष्य इन्द्रिय-भोगों के पीछे भागते हैं। उन भोगों की उप्लब्धि के लिए प्रत्येक प्रकार के अनाचार करने के लिए वे तैयार हो जाते हैं और फिर उस अनाचार के दण्ड से बचने के लिए लुकाव-छिपाव, अनृतभाषण और पाशविक बल प्रयोग होता है। इन सबसे बुद्धि मलिन होती है। मन का स्वभाव बिगड़ता है और अधिक बुरे काम करने की प्रेरणा मिलती है।

"कम्युनिस्ट और फ्रायड जीवन-मीमाँसाओं ने तो बहुत से सामाजिक प्रतिबन्धों को ही उठवा देने का आयोजन कर लिया है। जीवन में नियम और नियंत्रण अब समाज द्वारा अनिच्छित वस्तु मान ली गई। इसमें सीमा केवल अपने-अपने शारीरिक बल अथवा सामर्थ्य की रह गई है।

"इस कारण कम्युनिज़्म और फ्रायडिज़्म मोक्षदायी माने जाने लगे हैं। मलिन-बुद्धि वाले मनुष्य इसमें अपना अहित नहीं देख पाते। कारण यह कि वे शरीर के अतिरिक्त अपने में किसी अन्य पदार्थ के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते।"

"भापा! यदि यह सत्य है कि मानव में चेतन आत्मा है और वह प्रकृति अर्थात् शरीर से भिन्न है तो कभी-न-कभी वह अपने अस्तित्व को अनुभव करेगा और फिर अपने मन और इन्द्रियों पर अधिकार को स्थापित करेगा। तब इस जड़वाद का विरोध आरम्भ होगा और कम्युज़्मि तथा फ्रायडिज़्म विलीन होने लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं समझता हूँ कि भारत का ईश्वरवाद और पुनर्जन्म का सिद्धान्त इनको परास्त किये बिना नहीं रहेगा।"

कभी फ्लोरा तथा राधा के विषय में बात होती तो त्रिलोकचन्द राधा के कुशाग्र मन और सहनशक्ति की प्रशंसा करने लगता। उसने एक दिन कहा, "बहुत अद्भुत है राधा का व्यवहार। बहुत कम, अर्थात् लाखों से एक ऐसी स्त्री होगी जो अपनी सौत से इस प्रकार का व्यवहार रख सकती है जैसा कि राधा का है।"

"मैं समझता हूँ कि यह राधा के पूर्वजन्म के पुण्य-कर्मों के कारण ही है।"

"हाँ।" स्नेहलता ने कहा, "साथ ही मैं समझती हूँ कि तुम भी कोई पूर्व-जन्म के अति पुण्यकर्मी हो जो तुमको राधा-जैसी पत्नी मिल गई है। मैं तो कई बार चिन्तन करती हूँ कि यदि वकील साहब वही कुछ करें जो तुम कर रहे हो तो क्या मैं राधा की भांति इनको क्षमा कर देती? मेरा मन तो कहता है कि मैं उससे अत्यन्त दुःख अनुभव करती और कदाचित जीवन-भर के लिए इनसे लड़ पड़ती।"

"तो चाची! आप मेरे व्यवहार को उचित नहीं समझतीं?"

"यह मैं बता नहीं सकती कि किस प्रकार का मानती हूँ। हाँ, मेरे मन में उसकी प्रतिक्रिया कुछ अच्छी नहीं हुई।"

मथुरासिंह गम्भीर हो विचार करने लगा। स्नेहलता के लिए उसके मन में भारी आदर था और उसके ऐसे विचार सुन वह स्तब्ध रह गया। उसे परेशान देख त्रिलोकचन्द ने कहा, "मथुरासिंह! यह तुम्हारे व्यवहार की निन्दा नहीं कर रही।"

स्नेहलता और मथुरासिंह दोनों ही हँस पड़े। हँसते हुए मथुरासिंह ने पूछ लिया, "चाचाजी, तो क्या चाचीजी मेरे व्यवहार की प्रशंसा कर रही हैं?"

"प्रशंसा भी नहीं कही जा सकती। इसके विचार तो इसके अपने मन की संकुचित अवस्था के ही परिचायक हैं। बिना तुम्हारे व्यवहार को अच्छा या बुरा कहे इसने अपने मन की सीमाओं का ही प्रदर्शन किया है। यह स्वयं इस प्रकार का व्यवहार सहन नहीं कर सकती। यह इसके मन की सीमा का उल्लेख है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि किसी स्कूल-कॉलेज में न पढ़ी राधा, स्नेह से जो कि ग्रेजुएट है, अधिक कुशाग्र बुद्धि वाली है।"

तब स्कूल-कॉलेजों की पढ़ाई पर बात होने लगी। बीस दिन का मनाली का प्रवास बहुत सुख और आनन्दमय रहा। जब तक ये जमादारपुर लौटे, स्टैनले का लन्दन से एक पत्र आ चुका था। पत्र का एक अंश फ्लोरा के लिए था और दूसरा मथुरासिंह के लिए। स्टैनले ने फ्लोरा को लिखा था कि जैसा वह चाहती है, वैसा ही प्रबन्ध हो जायेगा। विलियम का कहना तो यह था कि फ्लोरा को किसी लन्दन के अस्पताल में प्रसव कराना चाहिए। लन्दन में प्रसव करने से बात अधिक सुविधाजनक हो जायेगी। यदि वह बच्चा विलियम को पसन्द हुआ तो बोनैस में चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जायेगा और यदि पसन्द नहीं हुआ तो अपने बाप के पास भारत भेज दिया जायेगा। फ्लोरा अस्पताल से बोनैस चली जायेगी। जीवन सामान्य रूप में चलेगा। जैसा कि दोनों परिवारों की मान-प्रतिष्ठा के अनुरूप होगा।

फ्लोरा बौनेस में रह सकेगी और कभी भारत में आना चाहेगी तो उसकी भी सुविधा मिल जायेगी। वैसे विलियम यह आशा करता है कि फ्लोरा को अधिक समय तक इंगलैंड में ही रहना चाहिए।

स्टैनले ने यह भी लिखा था कि तार द्वारा फ्लोरा अपने लन्दन पहुँचने की सूचना दे। विलियम उसको सीधा अस्पताल में ले जायेगा और वहाँ से वही उसको सीधे बोनैस में अपने मैन्शन में ले जायेगा।

उसको बहुत समझाया गया है ओर वह मान गया है कि कम-से-कम दिखावे के लिए ही सही वह, बोनैस में रहा करेगा।

मथुरासिंह के लिए मिस्टर स्टैनले ने लिखा था कि अपने देश के विदेश मन्त्री से बात-चीत हुई है। इसके उपरान्त वह यह मान गया है कि वह मथुरासिंह को अपने देश के किसी दूतावास में सैनिक सहचारी (अटैची) के रूप में नियुक्त कर देगा। स्टैनले ने विदेश-मन्त्री को मथुरासिंह का नाम और पता दे दिया है। उसकी नियुक्ति का पत्र इंगलैंड के सरकारी विदेश-विभाग के द्वारा उसको मिल जायेगा।

त्रिलोकचन्द को जब इस नियुक्ति के विषय में बताया गया तो उसका कहना था कि मथुरासिंह को यह सेवा स्वीकार कर लेनी चाहिए। इससे उसकी जानकारी में वृद्धि होगी। क्या जाने किसी समय उनका ज्ञान और अनुभव भारत के लिए उपकारी सिद्ध हो जायें।

फ्लोरा इस समय छठे मास में थी और उसने अपने पिता का प्रस्ताव स्वीकार कर लेना ही उचित समझा। उसने केबल द्वारा अपने पिता को सूचित कर दिया कि वह सितम्बर की दस तारीख को मध्याह्नोत्तर तीन बजे बी0 ओ0 ए0 सी0 के हवाई जहाज़ से लन्दन पहुँच रही है।

फ्लोरा के दिल्ली से जाने के तीन दिन बाद ब्रिटिश विदेश-विभाग के महासचिव का एक पत्र मथुरासिंह को मिला। उसमें लिखा था—मथुरासिंह की युद्धकाल में इंगलैंड के लिए की गई सेवाओं का विचार कर उसे ब्रिटिश विदेश-विभाग में एक सैनिक सहचारी के रूप में नियुक्त किया जाता है। वेतन एक सहस्त्र पौंड वार्षिक होगा तथा प्रथम श्रेणी के भत्ते दिये जायेंगे। यदि वापसी डाक द्वारा वह अपनी स्वीकृति भेज दे तो उसकी नियुक्ति का पत्र और सेवा-स्थान के विषय में लिखकर भेज दिया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काहिरा में अंग्रेज़ी राजदूत, मिस्टर स्टिलवैल के सैनिक अटैची के रूप में कार्य करते हुए मथुरासिंह को एक वर्ष से अधिक हो गया था। राधा पहले तो उसके साथ ही थी, बाद में वह अपने दूसरे बच्चे के प्रसव के लिए भारत लौट गई।

एक वर्ष की अवधि में मिस्र और इंगलैंड में भारी परिवर्तन हुए थे। युद्धोपरान्त बनी मज़दूर-सरकार ने जहाँ हिन्दुस्तान को स्वतन्त्रता दी थी, वहाँ लंका तथा बर्मा को भी स्वतन्त्र कर दिया था। मिस्र के साथ भी अंग्रेज़ी सम्बन्धों में अधिक उदारता का व्यवहार हो रहा था। 1937 की संधि अनुसार अब इंगलैंड की सरकार मिस्र के आभ्यान्तरिक विषयों पर हस्तक्षेप नहीं करती थी। परन्तु जब से इंगलैंड में पुनः टोरी सरकार बनी, मिस्र में स्थित अंग्रेज़ी राजदूत भी चोरी-चोरी मिस्र की सरकार के संगठन और विघटन में हस्तक्षेप करने लगा।

अंग्रेज़ राजदूत जैकार्ड स्टिलवैल वहाँ था तो टोरी सरकार का ही प्रतिनिधि परन्तु विचारों से कम्यूनिस्ट था। उसने एक दिन मथुरासिंह को समझाया कि स्वेज़ पर सैनिक-शक्ति बढ़ानी चाहिए। उसने कहा, ''हमको भय है यह नहर हमारे हाथ से निकल जायेगी। शक्ति को बढ़ाने के लिए बहाना, इसको बढ़ाने की सीमा और उसकी सम्भव-प्रतिक्रियाओं का अध्ययन कर, प्रधान-मंत्री को एक रिपोर्ट तैयार करके भेजनी है।''

मथुरासिंह ने स्वेज़ नहर का निरीक्षण किया। वहाँ की सैनिक-शक्ति देखी और उसका अध्ययन किया और एक वक्तव्य तैयार कर राजदूत के हाथ में दे दिया। उक्त वक्तव्य तैयार करने में मथुरासिंह को दो मास लगे। परन्तु जब राजदूत ने वह वक्तव्य पढ़ा तो वह अपने सैनिक सहचारी के ज्ञान और समस्या के सुझाव को पढ़कर, आश्चर्य प्रकट करने लगा। मथुरासिंह को बुलाकर उसने उसके वक्तव्य पर प्रश्न किये। उसका प्रथम प्रश्न था, ''इतिहास के विषय में तो हमें कुछ नहीं लिखना चाहिए। हमें तो वर्तमान अवस्था में सरकार की इच्छाओं को पूर्ण करने में क्या करना चाहिए, इस पर अपनी सम्मति देनी है।''

मथुरासिंह का कहना था, ''देखिए, राजनीति इतिहास की सन्तान है। सैनिक अभियान है राजनीति की प्रतिक्रिया। इतिहास को एक ओर रखकर, आप राजनीति नहीं चला सकते और राजनीति का निश्चय किये बिना सैनिक कार्यवाही नहीं की जा सकती। इसी कारण मैं सैनिक-कार्यवाही के विषय में जब तक उसकी पृष्ठभूमि न समझा लूँ, तब तक योजना नहीं बता सकता।''

''आप विदेश-मंत्री को मूर्ख समझते हैं क्या?''

''जी नहीं। उनको मैं अत्यन्त व्यस्त व्यक्ति मानता हूँ और उनके काम को हलका करने के लिए योजना को पूर्ण पृष्ठभूमि के साथ लिख देना उचित समझता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ।''

राजदूत निरुत्तर हो गया। उसने बात बदलकर कहा, ''तो आप यह समझते हैं कि पहले मिस्र के प्रधान-मंत्री के मन में रूस का भय उत्पन्न कर दिया जाय?''

''आपने ही तो कहा था कि सैनिक-शक्ति संचय का बहाना बनाया जाय। मैंने बहाना बनाने की अपेक्षा वास्तविक कारण का वर्णन कर देना ही उचित समझा है।''

''वास्तविक कारण यह है कि पूर्वी युरोपीय और उत्तरी अफरीका के देशों के लिये कम्युनिस्ट-भय एक सत्य है। यह इन देशों के अधिकारियों के मस्तिष्क में बैठा देना चाहिए और इस भय के निवारण में उनकी सहायतार्थ स्वेज़ पर सैनिक-शक्ति का संचय एक अनिवार्य कार्य सिद्ध करना चाहिए।''

''हम स्वेज़ को एक राजनीतिक मोर्चा बनाना नहीं चाहते।''

''तो इसे क्या सिद्ध करना चाहते हैं?''

''व्यापार के लिए आवश्यक मार्ग।''

''आपका कथन यथार्थ है। परन्तु राजनीति का एक आवश्यक कार्य व्यापार की वृद्धि और रक्षा करना है।''

इस प्रकार सतर्क उत्तर सुन राजदूत मथुरासिंह का मुख देखता रहा। आखिर में उसने कहा, ''मुझे भय है कि आपकी रिपोर्ट में बहुत काट-छाँट करनी पड़ेगी।''

''मुझको बताइये आप क्या काट-छाँट करना चाहते हैं, मैं कर दूंगा।''

मिस्टर स्टिलवैल ने लाल पेंसिल से लाइनें और परिच्छेद-के-परिच्छेद काटने आरम्भ किये। पैंतालीस फुलस्केप पर लिखी रिपोर्ट को काट-छाँट कर पाँच पृष्ट का कर दिया।''

मथुरासिंह ने तदनुसार रिपोर्ट को तैयार कर टाइप करवा पुनः हस्ताक्षरों के लिए राजदूत के पास भेज दिया। अपनी रिपोर्ट की एक प्रति उसने अपने पास रखी हुई थी। वह भी उसके साथ लगा दी और लिख दिया– व्याख्या के लिए संलग्न विस्तृत रिपोर्ट पढ़ी जा सकती है।

मथुरासिंह की रिपोर्ट में इस क्षेत्र के लिए रूस तथा कम्युनिस्ट विचारधारा का भय विस्तार से लिखा गया था। इस भय के प्रचार की उपयोगिता और साधनों के विषय में लिखा था और फिर मिस्र सरकार को कम्युनिस्टों को 'बैन' करने की प्रेरणा के विषय में लिखा था। उसने अंग्रेजी चौकी को भी सुदृढ़ करने के विषय पर अपनी रिपोर्ट लिखी थी।

मथुरासिंह का विचार था कि स्वेज़ के साथ-साथ अदन को मज़बूत करना चाहिए। सैनिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए वहाँ अंग्रेज़ नागरिकों की संख्या बढ़ानी चाहिए। बिना प्रजा के समर्थन के सैनिक-संस्थान सुदृढ़ नहीं हो सकते।

विवश मिस्टर स्टिलवैल को दोनों रिपोर्टों को भेजना पड़ा। वह देख रहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उसकी काट-छांट के बाद बनी रिपोर्ट तो बिना सिर-पैर की थी।

इंगलैंड के प्रधान मंत्री ने रिपोर्ट का स्वागत किया। इस रिपोर्ट के लिए मिस्र में स्थित राजदूत को लिखा गया कि सरकार व्याख्या के साथ लिखी गई रिपोर्ट के लिये धन्यवाद देती है।

जैकार्ड स्टिलवैल समझ गया कि मथुरासिंह की रिपोर्ट प्राइवेट थी। इस कारण व्याख्या-सहित लिखने में हानि नहीं थी। परन्तु उसकी अन्तरात्मा में कम्युनिस्टों के प्रति सहानुभूति थी। वह उनको इतना भयंकर नहीं समझता था। इस कारण वह एक विशुद्ध सैनिक रिपोर्ट में कम्युनिस्टों के भय के विषय में लिखना उचित नहीं मानता था।

मथुरासिंह को भी कुछ इसी प्रकार का सन्देह हो गया था। राजदूत ने रिपोर्ट में से जो अंश कटवाए थे, मथुरासिंह के विचार से वे ही रिपोर्ट के अत्यावश्यक अंग थे।

परन्तु यह बात और भी स्पष्ट हो गई, जब राजदूत ने एक और डिस्पैच तैयार करने के लिये मथुरासिंह को कहा। उसको कहा गया कि वह यह लिखे कि सैनिक दृष्टिकोण से इज़राइल के साथ संधि में क्या-क्या लाभ और हानियाँ होंगी।

इस माँग के साथ ही स्टिलवैल ने कहा, ''रूस इज़राइल को अपना शत्रु मानता है। टर्की, मिस्र और अन्य मुसलमान देश भी इज़राइल का गठन पसन्द नहीं करते। अतः इज़राइल के सन्धि करने से इंगलैंड की स्थिति पश्चिमी एशिया में दुर्बल हो जायेगी।

मथुरासिंह समझ गया कि विचार का यह ढंग गलत है। इस कारण उसने कहा, ''मुझे सैनिक-दृष्टि से अपनी रिपोर्ट लिख लेने दीजिए। उसको आप देख लीजियेगा कदाचित् आपको मेरा दृष्टिकोण पसन्द आ जाय।''

इस प्रकार मथुरासिंह जहाँ यह समझने लगा था कि ब्रिटिश सिंह बूढ़ा हो गया है और ठीक ढंग से विचार भी नहीं कर सकता, वहाँ वह यह भी समझ रहा था कि कम्युनिस्टों का आतंक अंग्रेजी दिमाग़ पर इतना छा गया है कि वे उस आतंक के निवारण का ढंग भी नहीं सोच सकते। अंग्रेज़ नीतिज्ञों को इसी बात में कल्याण दिखाई देने लगा था कि बिना विरोध कम्युनिज़्म के काले बादल संसार में छा जाने देने चाहियें।

इस पर भी उसने इज़राइल से सन्धि के सैनिक लाभों पर एक रिपोर्ट तैयार कर दी। इस सन्धि में राजनीतिक उलझनों का भी उल्लेख कर दिया, परन्तु उसने लिखा कि राजनीतिक उलझन को सुलझाने के लिए जहाँ स्वयं शक्तिशाली होने की आवश्यकता है, वहाँ प्रचार-कार्य उग्र करना चाहिए।

इस नोट में उसने पहली बार लिखा– ''पैन इस्लामिक स्टेट कम्युनिस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंटरनेशनल से कम भयानक नहीं होगी। उसने यह भी लिखा कि एक ऐसा समय आ सकता है, जब ये दोनों संगठन एक हो जावें और पूर्ण भूमण्डल को त्रस्त कर दासता में बांध दें। दोनों के आधार-भूत विचार एक ही दिशा में चलते हैं। इज़राइल, कम्युनिस्ट और संयुक्त इस्लामिक स्टेट में अंकुश का काम कर सकता है। यह सुदृढ़ होना चाहिए। अतः भूमण्डल के सब स्वतन्त्र राज्यों को इसको सुदृढ़ करने का यत्न करना चाहिए, यह उसके साथ सैनिक-सन्धि करने से ही हो सकता है।"

इस रिपोर्ट पर तो स्टिलवैल आग-बबूला हो गया। उसने मिस्टर सिंह की रिपोर्ट को अपनी मेज़ की दराज़ में रख स्वयं एक रिपोर्ट लिखकर भेज दी। कुछ दिन के बाद लगभग बीस प्रश्नों के साथ रिपोर्ट वापस आ गई। उसमें मुख्य प्रश्न यह था कि रूस क्यों इज़राइल राज्य के निर्माण को पसन्द नहीं करेगा? अरब राज्यों के लोग इज़राइल से क्यों नाराज़ हैं? इज़राइल राज्य का जिस उद्देश्य से निर्माण किया गया था, उस उद्देश्य की पूर्ति हुई है या नहीं? भविष्य में होने वाले संघर्ष में इज़राइल किस पक्ष की ओर झुकने वाला है?

इन सब प्रश्नों का समाधान मथुरासिंह की रिपोर्ट में निहित था। परन्तु उसके निष्कर्षों को स्टिलवैल पसन्द नहीं करता था। अतः उसने यत्न किया कि मथुरासिंह की व्यख्या और वस्तुस्थिति के साथ अपने निष्कर्ष लिखकर भेज दे। उसने अपना नया लिखा हुआ नोट मथुरासिंह को दिखाया तो मथुरासिंह ने अपना मत बताते हुए कहा, "आपने एतिहासिक तथ्य और वस्तुस्थिति तो लिखी नहीं। इनका एक ही परिणाम माना जायेगा कि भावी भूमण्डल के स्वतन्त्र राज्यों की रक्षा के लिए कम्युनिज़्म तथा अरब राज्यों के संगठनों को एक नहीं होने देना। इसके लिए इज़राइल सहायक हो सकता है परन्तु इज़राइल को सुदृढ़ करने के लिए इससे सैनिक-संधियाँ करनी चाहिएँ। वे आपने पसन्द नहीं किये।"

विक्षुब्ध हो स्टिलवैल ने मथुरासिंह वाला नोट भेज दिया। साथ ही उसने लिखा निष्कर्षों से वह सहमत नहीं। निष्कर्ष वही ठीक हैं, जो उसने अपने पहले नोट में लिखे थे।

इसका परिणाम यह हुआ कि मथुरासिंह को लन्दन बुला लिया गया। यह आज्ञा मिस्टर स्टिलवैल ने मथुरासिंह को दिखाई तो मथुरासिंह ने पूछा, "मुझे कब जाना होगा?"

"जितनी जल्दी जा सको।"

7

लन्दन पहुंचकर मथुरासिंह विदेश-मंत्री के सम्मुख उपस्थित हुआ तो उसने मथुरासिंह को डाँटना आरम्भ कर दिया। उसका कहना था, "राजदूत के सहचारी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्त्तव्य राजदूत के शरीर, मन और बुद्धि से साथ-साथ चलना होता है। मुझे यह जानकर बहुत खेद हुआ है कि आप अपने राजदूत के विचार का समर्थन नहीं करते।"

"मैं समझता हूँ कि आपको किसी ने ग़लत सूचना दी है। मैंने जो कुछ भी कहा अथवा लिखा है, उनकी आज्ञा और कथन के आधार पर ही किया है। यदि उनको अपने विचारों के विपरीत प्रतीत हुआ था तो उनको अधिकार था कि उसको पैंसिल से काटकर उसके स्थान पर अपना मत लिख देते।

"मैं तो अपने व्यवहार को कुछ इस प्रकार समझता हूँ कि जैसे कि मनुष्य में मस्तिष्क होता हैं वह विचारकर एक मार्ग बताता है और मनुष्य उस विचारित मार्ग पर चलना नहीं चाहता तो वह मस्तिष्क से विद्रोह कर अपना मार्ग स्वीकार कर लेता है। यदि मस्तिष्क द्वारा विचार किया मार्ग स्वीकार होता है, तो मनुष्य उस पर चलता है।"

"मिस्टर सिंह! आपको मस्तिष्क बनाकर वहाँ नहीं भेजा गया था। मस्तिष्क तो मिस्टर जैकार्ड स्टिलवैल था।"

"तब तो मुझसे भूल हो गई है। मैं तो यह समझा था कि वे दूतावास में आत्मा हैं। विभिन्न विषयों के हम सब सहचारी उस दूतावास के मस्तिष्क हैं। दूतावास के हाथ-पांव भी होते हैं। खैर! मुझे अब बताया नहीं गया कि मुझे विचार का कार्य नहीं करना है। मुझे अब बता दिया जाये कि मुझे शरीर के किस अंग के कार्य का निर्वाह करना होगा। मैं वही करूंगा।"

विदेश-मंत्री समझ रहा था कि यह व्यक्ति अति सुलझे हुए मस्तिष्क का है। उसके पास इस मिलिटरी सहचारी की बात का उत्तर नहीं है परन्तु स्टिलवैल उसका अपना व्यक्ति था और यह राजदूत का स्थान तो एक प्रकार से पुरस्कार का पद माना जाता है। जिस किसी आदमी को रिश्तेदारी, मित्रता अथवा किसी एहसान का बदला देना होता था, उसको किसी विदेश में राजदूत बनाकर भेज दिया जाता है।

विदेश-मंत्री के तो मन में था कि मथुरासिंह को नौकरी से पृथक् कर उसे भारत वापस भेज दे। परन्तु उसके द्वारा तैयार की गई स्वेज़ और इज़राइल पर टिप्पणी की प्रधान-मंत्री ने भूरि-भूरि प्रसंशा की थी।

राजदूत और मथुरासिंह के विचारों में मतभेद होने का परिणाम यह हुआ कि इस बार भी मथुरासिंह की विशेष प्रतिभा प्रधान मंत्री को आकर्षित करने वाली सिद्ध हुई। जब विदेश-मंत्री ने कहा, "मैं इस सैनिक सहचारी को वापस बुला रहा हूँ।" तो प्रधान-मंत्री ने कहा, "ठीक है, यहाँ आने पर उसे मेरे पास भेज देना।"

इस प्रकार मथुरासिंह प्रधान-मंत्री के पास जा पहुंचा। प्रधान-मंत्री ने उसको सामने बैठाकर पूछा, "हमारे मिस्र के राजदूत से आपकी पटी क्यों नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो यही समझ रहा था कि बहुत मज़े में पट रही है। यह तो मुझे विदेश-मंत्री के मुख से विदित हुआ है कि वे मेरे विपरीत कुछ लिखते रहे हैं।

"यह ठीक है उनके और मेरे मध्य अनेक विषयों पर मतभेद थे। परन्तु मैंने सदा अपना मत युक्ति तथा प्रमाण-सहित उनके समक्ष रखा है। वे जब-जब भी मेरे मत से सहमत नहीं होते रहे, अपना पृथक मत लिखकर भेजते रहे हैं। मुझको न तो इसमें कोई आपत्ति हो सकती थी और न मैंने कभी आपत्ति प्रकट की है।"

"यह तो मैं सब समझ गया था। जो बात मैं समझना चाहता हूँ वह यह है कि इस मतभेद का कारण क्या है?"

"इस विषय में मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मिस्टर स्टिलवैल के विचार कम्युनिज़्म की ओर झुकते हैं। ऐसे व्यक्ति को कम्युनिस्ट शब्दकोष में 'फैलो ट्रेवलर' कहते हैं। मेरे और उनके विचारों में यहाँ सैद्धान्तिक मतभेद है। इस पर भी मैंने उनको अपने विचार बताकर कभी यह हठ नहीं किया कि वे ही यहाँ भेजे जायें।"

"मैं भी कुछ इसी प्रकार समझ रहा था। फैलो ट्रेवलर अनजाने में ही भूमण्डल में कम्युनिज़्म के प्रचार में सहायक होता रहता है। कम-से-कम उसको इस पाशविक विचार-शैली के प्रसार में कोई दोष प्रतीत नहीं होता।

"तो आप भी मेरे विचार का समर्थन ही करते हैं?"

"हाँ।"

"धन्यवाद।"

"तब आप वहाँ किस प्रकार काम कर सकेंगे? हमारे विदेश-मंत्री भी ऐसे व्यक्तियों से मेल-जोल ओर मित्रता रखते हैं जिनको हम वामपंथी कहते है।"

"वे तो मुझे छुट्टी देने वाले प्रतीत होते हैं। इससे तो अब काम कर सकने के विषय में सोचने की आवश्यकता ही नहीं रही। मैं तो विस्मय कर रहा था कि मुझे श्रीमान् के पास भेजा ही क्यों गया है?"

"इस कारण कि मैंने आपसे मिलने की इच्छा प्रकट की थी। मेरी यह इच्छा युद्ध के दिनों में आपकी युक्तियों का स्मरण आने पर उत्पन्न हुई थी। मैं देख रहा हूँ कि आपका मस्तिष्क वैसा ही सजग और सतर्क है।

"मैं इंगलैंड के लिए आपसे कुछ-न-कुछ काम लेता, परन्तु मैं राजनीति से पृथक हो रहा हूँ।"

"क्यों?"

"इस कारण कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मेरे दल के बहुसंख्यक सदस्य, मेरे सहयोगी मुझे रूढ़िवादी मानने लगे हैं। अभी कुछ ही दिन पूर्व मेरा एक सहयोगी मुझसे कह रहा था कि युद्ध के बाद इतनी द्रुत गति से परिवर्तन हो रहे हैं कि मेरा वृद्ध मस्तिष्क युग के साथ-साथ भाग नहीं सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी यह धारणा अभी भी वैसी ही है जैसी कि पहले थी, कि अमेरिका हमें मिथ्या मार्ग पर ले जा रहा है। वहाँ के लोग उद्योग-धंधों में तथा विषय-वासना में इतने लीन हैं कि उनको संसार की गति में तात्विक एकमयता दृष्टिगोचर नहीं होती।

"मेरी योजना थी कि हम स्वतन्त्र रूप से शक्ति-सम्पन्न हों। तब अमेरिका हमारा अनुगामी होगा। हमको उसके द्वारा प्रदर्शित मिथ्या मार्ग पर चलने की आवश्यकता नहीं होगी। जब से मैं पुनः प्रधान-मंत्री पद पर नियुक्त हुआ हूँ, मैं तब से ही एटम बम का विकास करने के लिए कह रहा हूँ। मज़दूर-दल तो इसका विरोध करता ही है। साथ ही हमारे दल के लोग भी इसके खर्चे की बात सुन कानों में उंगलियाँ देने लगते हैं।"

"मैं समझता हूँ कि इंगलैंड तो वही कहानी दोहराने का यत्न कर रहा है, जो उसने 1922-36 तक की थी।"

"मैं इस राजनीति से ऊब गया हूँ और अब इस झंझट से पृथक होना चाहता हूँ। मिस्टर स्टैनले ने आपकी कथा भी सुनाई है। उससे मैं समझता हूँ कि आपको भी ब्रिटिश-काल का वृद्ध मस्तिष्क वाला सिपाही मान, हटा दिया गया था।"

"हमारे यहाँ भी तो कहानी वही है, केवल पृष्ठभूमि में थोड़ी विभिन्नता है। दृश्य भिन्न हैं वार्त्तालाप भिन्न हैं। मुझे भी जब वहाँ से छुट्टी मिली थी तो इसी कारण से कि जनता सरलचित्त है और घटनावश नेता वे लोग बन गए हैं, जिनका झुकाव कम्युनिज़्म की ओर है। हमने भी अपने देश में उस ओर ही जाने की दौड़ लगा रखी है।"

"आश्चर्य की बात तो यह है कि लोग कम्युनिज़्म की भयंकरता को समझते क्यों नहीं?"

"यह मानव-प्रकृति है। प्रत्येक चोर जब चोरी करने के लिये जाता है तो वह यह जानता है कि यदि वह पकड़ा गया तो कठोर दण्ड का भागी बनेगा। परन्तु स्वयं को वह इतना चतुर मानता है कि अपने न पकड़े जाने का विश्वास करता है।

"यही बात भोले स्वभाव के वाम-पन्थियों की होती है। वे उस पथ की ऊपरी चमक-दमक से आकर्षित हो उस ओर चल पड़ते हैं। उनको यह विदित भी होता है कि इस मार्ग पर भयानक गड्ढे हैं। जिनमें गिरकर वे चूर-चूर हो सकते हैं। परन्तु मूर्खों की भाति वे स्वयं को इतना चतुर मानते हैं कि वे तो उन गड्ढों से कूदकर निकल सकते हैं।

"हमारी भारत सरकार यही बात कर रही है।"

"आप एक काम करिये। मेरे त्याग-पत्र के बाद सर एन्थनी ईडन यहाँ के प्रधान-मंत्री बनने वाले हैं। आप उनसे मिल लीजिए। कदाचित् वे आपकी सेवाओं से लाभ उठाना चाहें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनके पास बिना परिचय-पत्र के जाना मेरे लिए सुगम नहीं होगा।"

"उनसे आप मिले तो हैं।"

"इस पर भी कभी मैंने किसी से नौकरी पाने के लिए अपने हाथ नहीं पसारे।"

"मैं आज उनसे आपके विषय में बात करूंगा। कल प्रातःकाल के अल्पाहार के बाद टेलिफोन करके मिलने का समय निश्चित कर लीजिए।"

"बहुत अच्छा।"

मथुरासिंह समझ रहा था कि उसे अपने देश वापस जाने की तैयारी करनी चाहिए। अतः वह अपने होटल में पहुँच, लौटने से पूर्व फ्लोरा को पत्र लिखने के विषय में विचार करने लगा। उसके साथ उसका पत्र-व्यवहार तो होता था, परन्तु जब से वह भारत से इंगलैंड आई थी, न तो उन दोनों की कभी भेंट हुई थी और न ही भेंट की इच्छा व्यक्त की गई थी। अब भी मथुरासिंह का विचार था कि लन्दन छोड़ने से एक दिन पूर्व एक पत्र और वह फ्लोरा को लिख देगा। जिससे उसका सुख समाचार जाने के समय ही मिल सकें। वह विदेश-विभाग से अपनी सेवा से मुक्त किये जाने के पत्र की प्रतीक्षा में था। उसका मन मिस्टर ईडन से मिलने के लिए भी तैयार नहीं था।

अगले दिन उसको सेवा से मुक्ति का पत्र और अवशिष्ट वेतन मिल गया। इस प्रकार सतर्कता से काम होने पर वह प्रसन्न था। उसने अपने कमरे से होटल के कार्यालय से टेलिफोन का सम्बन्ध जोड़ हवाई जहाज़ की सीट बुक कराने का यत्न ही किया था कि होटल के क्लर्क ने कहा,

"मिस्टर सिंह बोल रहे हैं?"

"हाँ।"

"आपके लिये टेलिफोन हैं, सुनिए।"

मथुरासिंह सुनने लगा। टेलिफोन एन्थनी ईडन ने किया था। उसने पूछा, "मिस्टर सिंह बोल रहे हैं?"

"जी।"

"मुझे हमारे प्रधान-मंत्री ने बताया है कि आपको विदेश-मंत्रालय से मुक्ति मिल गई है।"

"जी, अभी-अभी मुझे मुक्ति पत्र-प्राप्त हुआ है।"

"मेरी इच्छा है आज सायंकाल चार बजे आप मेरे फ्लैट में चाय-पान के लिए पधारिये। आपसे मुझे एक आवश्यक परामर्श करना है।"

"मैं हवाई जहाज़ की एजेंसी से भारत के लिए सीट रिज़र्व कराना चाहता था?"

"यह कार्य आप मुझसे मिलने के बाद करिएगा।"

"अच्छी बात है, मैं समय पर उपस्थित हो जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धन्यवाद।"

8

शाम को चाय पर ईडन ने पूछ लिया, "भारत में जाकर क्या करेंगे? वहाँ आपको नौकरी नहीं मिल सकती।"

"मैं नौकरी का इच्छुक नहीं। मैं तो मानव-समाज की और वह भी विशेष रूप में भारत के मानव-समाज की, सेवा के भाव से जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। सरकारी सेवा में और सरकारी सेवा के बिना भी मेरा उद्देश्य सदा यह रहा है कि मैं जन-जन के कल्याण के लिये संलग्न रहूँ।"

"यह ठीक हो सकता है। यह आप जानिये आपका मन जाने। मैं तो केवल यह कह रहा हूँ कि जन-सेवा का जो अवसर आपको इस राज्य में मिल सकता है वह कहीं अन्यत्र नहीं मिल सकता।"

"हाँ, यदि अधिकारी-वर्ग उस अवसर को प्राप्त करने दें तो। देखिये मैं हिन्दुस्तानी सेना-कार्य से इस कारण पृथक किया गया था कि अपना कार्य करते हुए मैं कुछ राज्याधिकारियों की निजी इच्छाओं का विरोध कर रहा था। यहाँ भी यही हुआ है। कल मैं मिस्टर चर्चिल से मिला था और उनसे जो वार्त्तालाप हुआ है, इसके आधार पर अब मैं निश्चितरूपेण कह सकता हूँ कि यहाँ भी ठीक यही हुआ है, जो मेरे साथ भारत में हुआ था। किसी सैनिक-सन्धि के विषय पर जब मुझसे पूछा गया तो मैंने अपनी सम्मति लिखकर भेजी। उस सम्मति को मेरे बॉस मिस्र के राजदूत ने पसन्द नहीं किया। इस पर विदेश-मन्त्री ने मुझे वहाँ से वापस बुला लिया और आज कार्यभार से भी मुक्त कर दिया है।"

"मैं आपको एक अन्य कार्य दे सकता हूँ। उसके लिए आपको सीधा मुझसे ही सम्पर्क रखना होगा। बताइये कर सकेंगे?"

"जब तक काम का ज्ञान न हो, तब तक मैं निश्चय से कुछ नहीं कह सकता।"

"यथाशीध्र मैं इंगलैंड का प्रधान-मंत्री बनने वाला हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे व्यक्तिगत प्रतिनिधि के रूप में कार्य करें। इसमें आपको कुछ मित्र और कुछ अमित्र राष्ट्रों को मेरे सन्देश पहुँचाने तथा उनके उत्तर लाने के लिए घूमना पड़ेगा। वे उत्तर मेरी विदेश नीति मे सहायक होंगे। बताइये, कर सकेंगे?"

"भारतीय नागरिक होने के नाते मैं आपका प्रतिनिधि बन सकता हूँ क्या?"

"क्या हानि है इसमें?"

"यह तो आपके विचार करने की बात है। क्या आप अपने देश वासियों के सम्मुख अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण कर सकेंगे?"

"आप कॉमन वैल्थ कन्ट्री के नागरिक होने के कारण यह गुप्त कार्य कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेंगे। वैसे भी मन्त्रिमण्डल के अतिरिक्त अन्य किसी को इस विषय का ज्ञान नहीं हो सकता। आप अपने कार्य के लिए न तो किसी की सहायता लेंगे और न किसी को बतायेंगे। आपको मेरे समक्ष शपथ लेनी होगी कि आप उन रहस्यों को, जो आपको अपने कार्य की अवधि में विदित होते रहेंगे, मेरी स्वीकृति के बिना किसी अन्य व्यक्ति को नहीं बतायेंगे।''

''आप कम-से-कम मुझे 'ट्रायल' के रूप में नियुक्त कर सकते हैं। मैं यत्न करूंगा कि अपनी पूर्ण योग्यता और सामर्थ्य से कार्य करूँ।''

इस कार्य को मथुरासिंह राजदूत के सैनिक-सहकारी से अधिक महत्व का समझता था। इससे उसको अनेक राष्ट्रों की विदेश-नीति में झाँकने का अवसर प्राप्त हो रहा था। वह मन में संकल्प कर रहा था कि इस कार्य को भी वह सदा की भाँति ईमानदारी से करने का यत्न करेगा।

जब मथुरासिंह ने अपनी स्वीकृति दे दी तो ईडन ने कहा, ''यदि यह बात है तो आप अभी अपना भारत जाने का कार्यक्रम स्थगित कीजिए। आपको यहाँ लन्दन में एक निवास-स्थान बनाना पड़ेगा। ''

मथुरासिंह अपने भाग्य की सराहना करता था कि उसको सदा ऐसी स्थिति में रहने का अवसर मिलता रहा है। वह अति प्रसन्न अपने होटल में लौट आया और इंगलैंड के मन्त्रि-मण्डल में परिवर्तनों की प्रतीक्षा करता रहा।

इस समय उसको काहिरा से लौटकर आया हुआ फ्लोरा का एक पत्र मिला। राधा और लाला त्रिलोकचन्द के पत्र भी इसी प्रकार काहिरा से होकर यहाँ उसको मिले। उसने सबको उनके पत्रों के उत्तर दिये और अपने लन्दन होटल का पता लिख दिया।

पत्र लिखने के तीसरे दिन उसको क्लैरा और कार्ल माइकल मिलने आ पहुँचे। प्रातः अपने पूजा-पाठ से निवृत्त हो, वह ब्रेकफास्ट के लिए कपड़े बदल रहा था कि उसका द्वार खटखटाया गया। उसने द्वार खोला तो इन दोनों को वहाँ खड़ा देख, चकित रह गया।

''हैलो, मिस्टर सिंह!'' हाथ मिलाते हुए माइकल ने कहा, ''तुम कितने भी छिपकर बैठो, हम तुम को ढूंढ़ ही निकालेंगे।''

माइकल से मिलने के बाद उसने क्लैरा का मिसेज़ वार्डी के नाम से अभिवादन किया और उसका सुख-समाचार पूछा।

इस पर दोनों हँसने लगे। मथुरासिंह विस्मय प्रकट करता हुआ उनके मुखों को एक-एक कर देखने लगा। माइकल ने हँसने का कारण बताते हुए कहा, ''मिस्टर सिंह! ये अब मिसेज़ वार्डी नहीं, मिसेज़ माइकल हैं।''

''तो मैं किस को बधाई दूँ, क्लैरा को अथवा कार्ल को?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दोनों को।" क्लैरा का कहना था।

जब वे लोग बैठ गए तो क्लैरा ने अपनी कहानी बताते हुए कहा, "वार्डी तो महाबदमाश निकला। उसने कराची में ही एक मुसलमान लड़की से शादी करली है। मैंने उससे कहा कि वह मुझे अपने विवाह के प्रमाण दे, जिससे मैं उसको तलाक दे सकूँ तो उसने न केवल अपनी शादी के सर्टिफिकेट की नकल भेज दी, अपितु अपने इस्लाम-ग्रहण करने की सूचना भी भेज दी। उसके आधार पर मैंने तलाक की प्रार्थना की और वह स्वीकार हो गई तो मैं माइकल को ढूंढ़ने पेरिस की ओर चल दी। मेरा प्रयत्न सफल हुआ।

"एक सप्ताह के लिए हम दोनों लेडी गौर्ट के अतिथि थे। वहीं हमें विदित हुआ कि आप इस होटल में ठहरे हैं।"

"माइकल ने बात बदल कर पूछा, "क्या कर रहे हो यहाँ?"

"एक सरकारी कार्य के लिए मैं यहाँ ठहरा हुआ हूँ। राधा को मैंने लिखा है कि यदि वह यहाँ आना चाहे तो मैं कोई उपयुक्त मकान भाड़े पर लेने का यत्न करूँ।"

"मकान का क्या करेंगे? मैं आपको एक साफ-सुथरा और बहुत सस्ता होटल बताती हूँ, जहाँ आप अपनी पत्नी के साथ आनन्द से रह सकेंगे।"

"कितना भाड़ा देना होगा?"

"मेरा खयाल है कि कमरों के सैट और फरनीचर के लिए प्रतिमास दस पौंड और लगभग इतना ही खाने का व्यय हो जायेगा।"

"इतना तो मैं दे सकता हूँ।"

"मैं निश्चय करके आपको बता दूंगी, सब-कुछ महीने के हिसाब से देना होगा।"

"हाँ तो कर दो, यहाँ तो मैं अकेला ही एक पौंड प्रतिदिन के हिसाब से व्यय कर रहा हूँ।"

माइकल बोला, "फ्लोरा तुमसे मिलने के लिए आने का विचार कर रही है। आजकल विलियम अपने घर पर ही है। इस कारण वह उसको बताए बिना नहीं आ सकती।"

"ठीक है, अपने पति से पूछे बिना उसको नहीं आना चाहिए।"

"परन्तु मिस्टर सिंह, वह तो आपको अपना पति मानती है। अभी तक भी उसका विलियम से तो एक उदार-हृदय मित्र का-सा ही सम्बन्ध है।"

"उनका परस्पर पति-पत्नी सम्बन्ध न बन पाने में कुछ तो मुझे फ्लोरा का भी दोष प्रतीत होता है।"

"मैं समझती हूँ यह दोष फ्लोरा का नहीं, अपितु आपका है।"

"ज़रा समझाओ तो मेरा क्या दोष हो सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप इतने सुन्दर, वक्ता और आकर्षक हैं कि कोई भी स्त्री आपके सम्मोहन में फंसे बिना रह नहीं सकती।"

"इसमें मेरा क्या दोष? यह शरीर मेरा बनाया हुआ तो है नहीं।"

"ठीक है। पर जब शरीर के साथ आपका ज्ञान, संयम और सद्व्यवहार मिल जाते हैं तो आप फिर इतने सम्मोहक हो जाते हैं कि स्त्री के लिये स्वयं को रोक सकना कठिन हो जाता है।"

"तो यह दोष है?"

"आपके विचार से यह गुण होगा, परन्तु औरतों के विचार से जो आपके सम्पर्क में आती हैं, यह दोष ही मानना पड़ेगा।"

मथुरासिंह ने हँसते हुए कहा, "अपना स्वभाव तो अब मैं बदल नहीं सकता। यह तो मेरे जन्म-काल से ही मेरे साथ लगा हुआ है। मेरी माताजी बताया करती हैं कि बाल्यकाल में भी मेरा हँसना और मुस्कराहट इसी प्रकार की होती थी, जैसी कि अब है। हाँ, शरीर को विकृत किया जा सकता है।"

"भगवान् के लिए ऐसा मत कर देना। अन्यथा राधा के साथ आप घोर अन्याय कर बैठेंगे।"

क्लैरा और माइकल के जाने पर मथुरासिंह फ्लोरा के साथ अपने व्यवहार के विषय में विचार करने लगा। उसी कायंकाल क्लैरा का फोन आया कि वैस्टएण्ड में स्विस होटल में तीस नम्बर कमरा उसके लिए निश्चत कर दिया गया है। वह तुरन्त आकर देख ले और पसन्द कर ले। पसन्द आने पर एक मास का भाड़ा अग्रिम देकर उसे अपने नाम बुक करा ले।

मथुरासिंह उसी समय टैक्सी में बैठ, स्विस होटल पहुँच गया। कमरों का सैट देखकर उसने उसे पसन्द किया और भाड़ा अग्रिम देकर अपना नाम लिखवा दिया। क्लैरा और माइकल भी उसी होटल में ठहरे हुए थे। मथुरासिंह को पता चला कि माइकल क्लैरा के द्वारा लन्दन में किसी सरकारी नौकरी के लिए यत्न कर रहा है। इसी कारण वह वहाँ टिका हुआ है।

मथुरासिंह को भारत से राधा का पत्र आया कि वह उसके पास आकर रहने के लिए उत्सुक है, परन्तु राम और श्याम को छोड़कर आया भी नहीं जा सकता। सबसे बड़ी बात तो यह कि मथुरासिंह की माँ भी राम को छोड़ना नहीं चाहती। राधा को इस समस्या का कोई सुझाव नहीं मिल रहा है। उसने मथुरासिंह से ही मार्ग निकालने के लिये लिखा।

आखिर चिर-प्रतीक्षित समाचार मिला कि सर विंसेंट चर्चिल ने प्रधान-मन्त्री पद से त्याग-पत्र दे दिया है। समाचार में यह भी था कि वे पार्लियामेंट के सदस्य तो रहेंगे, किन्तु सक्रिय राजनीति में किसी प्रकार का भाग नहीं लेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी दिन फ्लोरा और गौर्ट उससे मिलने के लिए आये। दोनों को एक साथ आया देख मथुरासिंह चकित रह गया। इस घटना की वह कभी स्वप्न में भी आशा नहीं करता था। उनका कार्ड मिलने पर वह कमरे से निकल रिसेप्शन हॉल में चला आया। विलियम 1947 से, जब मथुरासिंह ने उसको अंतिम बार देखा था, अब बहुत बूढ़ा हो गया प्रतीत होता था। मथुरासिंह ने बढ़कर हाथ मिलाया और बोला, ''लार्ड गौर्ट! आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। आप क्या बीमार रहे हैं। बहुत दुर्बल प्रतीत हो रहे हैं?''

''हाँ, मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। सागर की सीलन भरी हवा मुझे अनुकूल नहीं रही और उससे मुझे श्वास रोग का दौरा पड़ने लगा है।''

''यह तो वास्तव में चिन्ता का विषय है। इसके लिए तो इंडियन सिस्टम से चिकित्सा अधिक लाभकारी होगी। आपको भारत जाकर किसी कविराज की चिकित्सा करानी चाहिए।''

विलियम ने फ्लोरा से पूछा, ''क्यों फ्लोरा! यह ठीक रहेगा?''

फ्लोरा ने कहा, ''मैं समझती हूँ कि मिस्टर सिंह ठीक कहते हैं।''

''आप कब तक भारत जा रहे हैं, मैंने सुना है कि आपको सरकारी सेवा-कार्य से तो मुक्ति मिल गई है?''

''हाँ, किन्तु अभी लन्दन से बाहर जाने की स्वीकृति मुझे नहीं मिली अन्यथा मैं भारत पहुँच चुका होता।''

''ऐसा क्यों?''

''इस विषय में मुझे भी विदित नहीं है।''

''यह तो आपके साथ अन्याय हो रहा है।''

''नहीं, मुझे यहाँ रहने के समय का वेतन, भत्ता आदि सब दिया जा रहा है।''

''आज तो प्रधान-मन्त्री ने त्याग-पत्र दे दिया है।''

''हाँ, मैंने भी पढ़ा था।''

''अब तो आपको छुट्टी मिल जायेगी। मैं आपको बोनैस में आकर कुछ दिन ठहरने का निमन्त्रण देता हूँ।'' विलियम ने कहा।

''धन्यवाद। मैं चाहता तो हूँ कि आपके निमन्त्रण का लाभ उठाऊँ, परन्तु विदेश-मन्त्री की स्वीकृति के बिना मैं लन्दन से बाहर नहीं जा सकता।''

''तो क्या आप सरकार के बन्दी हैं?'' विस्मय में फ्लोरा ने पूछा।

''बन्दी तो नहीं। हाँ, जैसे सरकारी कर्मचारी बिना अधिकारियों की स्वीकृति के नगर से बाहर नहीं जा सकते, वही बात मेरे साथ है।''

लार्ड गौर्ट ने कहा, ''आज रात्रि का भोजन आप हमारे होटल में करिये।''

''मैं अवश्य उपस्थित होऊँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनों ने सायंकाल की चाय पी और अभी वे बातें ही कर रहे थे कि सायंकाल के समाचार-पत्र से विदित हुआ कि ईडन को देश का प्रधान- मन्त्री नियुक्त कर दिया गया है।

अगले दिन ईडन ने मंत्रि-मण्डल की घोषणा कर दी। उसी सायंकाल उसने मथुरासिंह को बुलाकर उसको नियुक्ति-पत्र दे दिया। मथुरासिंह को उसने एक पी० ए० भी जो स्टैनो-टाइपिस्ट था, दे दिया। उसके साथ ही उसको एक परिचय पत्र भी दिया गया।

मथुरासिंह ने प्रधान-मंत्री के सचिव को अपना स्विस होटल का पता दे दिया। मथुरासिंह को कहा गया कि वह अपने लिए आदेशों की प्रतिक्षा करें।

एक दिन फ्लोरा उससे अकेली मिलने के लिए आई। उसने कहा, "विलियम के साथ मेरा समझौता हो चुका है। मैं उसके प्रति निष्ठावान बनकर रहूंगी। इसके प्रतिदान में वह मेरे लड़के और लड़की को अपनी सन्तान घोषित कर उन्हें उत्तराधिकारी मानेगा। अपनी सन्तान के भावी सुख-सुविधा और मान का ध्यान कर मैं यह त्याग करने के लिए तैयार हो गई हूँ।"

"तो इस समय तुम अकेली क्यों आई हो?"

"मैं अकेली नहीं आई। विलियम बाहर अपनी मोटर में बैठा हुआ घड़ी में मिनट गिन रहा है। उसने ही मुझको यह कहकर भेजा है कि उसका वह निमंत्रण दिखावे का था। अपने हृदय से तो वह आपका बोनैस में आना पसन्द नहीं करता।"

"मेरी इच्छा दोनों बच्चों को देखने की हो रही थी, इसी कारण मैंने विलियम का निमंत्रण स्वीकार किया था।"

"आप वहाँ मत आइये। मैं कभी उनको लन्दन लाऊँगी तो आपसे मिला दूंगी।"

"चलो, तुमको बाहर छोड़ आऊँ। मैं नहीं चाहता कि व्यर्थ में भी उसे तुम्हारे वचन भंग करने का सन्देह हो जाए।"

दोनों उठकर चल पड़े। रिसैप्शन-हॉल को पार करते हुए मथुरासिंह ने पूछ लिया, "अपने पति के साथ सन्बन्धों में तुम्हारा सुधार हुआ है?"

"किंचित्मात्र भी नहीं। वह बीमार है। अब तो उसने अपनी रखेलों को भी अवकाश दे दिया है।"

"यह तो बहुत ही चिंताजनक स्थिति है।"

9

मथुरासिंह का भूमण्डल के राज्यों का भ्रमण आरम्भ हुआ। चर्चिल व ईडन को उसके इतिहास के ज्ञान और उसकी विवेचना तथा सैनिक-नीति के ज्ञान पर बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास था। इसी विश्वास के कारण मथुरासिंह को इस गुह्य कार्य पर नियुक्त किया था।

मथुरासिंह इस कार्य के निमित्त भारत भी आया। यू0 के0 दूतावास के कमिश्नर के द्वारा भारत के प्रधान-मंत्री से जो भारत के विदेश-मंत्री भी थे, प्राइवेट भेंट का प्रबन्ध हो गया। अभिवादन के बाद जब दोनों बैठे और मथुरासिंह ने अपना प्रमाण-पत्र दिखाया तो प्रधान-मंत्री ने कह दिया, ''मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि मैंने आपको कहीं देखा है?''

''जी, कुछ वर्ष पूर्व मिस कुरेशी के विषय में मैं आपके सम्मुख उपस्थित हुआ था। मेरा पूरा नाम लेफ्टीनेंट मथुरासिंह है।''

''ओह, परन्तु आप इतने महत्वपूर्ण गुप्त कार्य पर किस प्रकार नियुक्त हो गये हैं।''

''यह तो सर विंसेंट चर्चिल का चुनाव है। क्यों और कैसे, यह वे ही बता सकते हैं। मैंने उनको स्पष्ट बता दिया था कि मैं भारतीय नागरिक हूँ।''

''उनका कहना था कि मैं ब्रिटिश एम्पायर का नागरिक हूँ और उनको मेरी ईमानदारी पर विश्वास है। मेरी योग्यता की तो वे परीक्षा ले ही चुके हैं।''

इसके बाद प्रधान-मंत्री से मथुरासिंह का जो वार्त्तालाप हुआ, उसको मथुरासिंह ने इंगलैंड के प्रधान-मंत्री को इस प्रकार लिखकर भेज दिया–

''मैंने पंडितजी को बताया है कि मैं पीकिंग से होकर आया हूँ और पीकिंग सरकार से यह निश्चय करके आया हूँ कि यदि वह हाँगकांग पर इंगलैंड का स्वत्व माने तो इंगलैंड की सरकार उसकी सरकार को स्वीकार कर लेगी और उनसे व्यापारिक सम्बन्ध बना लेगी।''

''यह सुनकर पण्डितजी ने बहुत प्रसन्नता व्यक्त की। इस प्रसन्नता के प्रदर्शन पर मैंने पण्डितजी से कहा कि उनके विषय में इंगलैंड सरकार को इस बात का पता चला है कि भारत भी चीन की कम्युनिस्ट सरकार को मान्यता देने जा रहा है। इस पर इंगलैंड की सरकार का यह आग्रह है कि चीन के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भारत के जो अधिकार हैं, उनकी रक्षा और आदर का आश्वासन उन्हें चीन सरकार से ले लेना चाहिये।''

''पण्डितजी ने इस पर भारत के अधिकारों के विषय में प्रश्न किया। मैंने बताया कि उदाहरण के रूप में भारत के तिब्बत पर कुछ अधिकार हैं, उनको गिनाकर उन्हें चीन से उनके आदर का आश्वासन लेना चाहिए। आश्वासन मिलने के बाद ही उनको चीन की सरकार को मान्यता देनी चाहिए।''

''इस पर पण्डितजी कहने लगे कि तिब्बत पर भारत का अधिकार तो ब्रिटिश तानाशाही का सूचक था। वह ब्रिटेन की साम्राज्यवादी वृत्ति का नमूना था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उन्हें समझाया कि ब्रिटिश सरकार का तो यह कहना है कि भारत में तो ब्रिटिश साम्राज्य था, परन्तु तिब्बत में यह नहीं था और न ही इसकी स्थापना का किसी के मन में विचार था।"

"वे पूछने लगे कि फिर ब्रिटिश रेजिमेंट वहाँ किसलिए बैठाई गई थी। मैंने बता दिया कि वह ल्हासा सरकार की रक्षा के लिए थी। वे कहने लगे कि वे इसे ब्रिटिश सरकार का ऐक्स्ट्रा टैरिटोरियल अधिकार जताना समझते हैं। ये साम्राज्यवाद के ही सूचक हैं।

"मैंने बताया कि इंगलैंड की सरकार ने तिब्बत पर इस रेजिमेंट के बल कभी कोई दबाव नहीं डाला। यह तो चीन की विस्तार-प्रवृति को व भारत की ओर दृष्टि करने से रोकने के लिये है।"

"वे कहने लगे कि वे इस प्रकार का विचार नहीं रखते कि जो भूमि अपने देश की सीमा के बाहर है, उसके विषय में चीन के साथ सन्धि-वार्ता करें। मैंने चेताया कि चीन ने कभी भी संधियों का मान नहीं किया। उसने प्रायः सभी देशों के साथ सन्धियाँ करके उन्हें भंग किया है। अब चीन में कम्युनिस्ट राज्य स्थापित हो गया है। इससे तो रहा-सहा विश्वास भी समाप्त हो गया है।"

"इस पर वे मुझसे पूछने लगे कि कम्युनिज़्म में क्या खराबी है? मैंने उन्हें बताया कि यह अवसरवादी विचारधारा है, अपने लक्ष्य-सिद्धि के लिये ये प्रत्येक प्रकार का उचितानुचित कार्य करने के लिए तैयार रहते हैं। वे कहने लगे कि वे इसको बुरी बात नहीं मानते।"

"मैंने बात बदलते हुए कहा कि भारत सरकार ने 1950 में तिब्बत और चीन में यह समझौता कराया था कि चीन तिब्बत के भीतरी मामलों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगा। परन्तु हमें यह विदित हुआ है कि अब चीन वहाँ पर अपना एक राजनीतिक प्रतिनिधि नियुक्त करना चाहता हैं।"

"इस पर पण्डितजी कहने लगे कि वे तिब्बत को चीन का एक प्रान्त ही मानते हैं। दलाई लामा को वे वहाँ का धार्मिक गुरू मानते हैं। वह न तो राजनीतिक विषयों का ज्ञाता है और न ही उसको इन विषयों में हस्तक्षेप करना चाहिये।"

"मैंने बताया कि सैकड़ों वर्षों से वहाँ के लोग सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इंगलैंड की सरकार का यह मत है कि किसी एक देश को दूसरे देश वालों के रहन-सहन के ढंग में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।"

"उन्होंने इसका उत्तर दिया कि वे इस सिद्धान्त को अटल नहीं मानते। हम एक देश को शेष देशों से पृथक कर विचार नहीं कर सकते। आज के एटम युग में सारी दुनिया एक है। किसी एक देश का पिछड़ा रहना पूर्ण भूमण्डल के लिए कठिनाई का कारण हो सकता है। तिब्बत तकनीकी ज्ञान में पिछड़ा हुआ है। मैंने कहा कि उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो सब बराबर हो ही नहीं सकते। उसके ज्ञान के लिये तो साधनों की आवश्यकता है। साधन सब देशों में समान नहीं होते। इस कारण स्वाभाविक रूप में ही जिनके पास साधन होंगे, वे अन्यों की अपेक्षा कुछ उन्नत रहेंगे ही और दूसरे लोग पिछड़े हुए और फिर कोई देश एक कला में उन्नत हो सकेगा और कोई दूसरी अन्य दूसरी कला में। जैसे तिब्बत अध्यात्मज्ञान में उन्नत है तो उसी में उसे उन्नति करने की स्वीकृति रहनी चाहिए।''

''इस पर पण्डितजी आवेश में आकर बोल उठे, यह सब व्यर्थ की बात है। अध्यात्मज्ञान कोई ज्ञान नहीं होता। अध्यात्मज्ञानी होने से क्या कोई एटम बम का मुकाबला कर सकता हैं।''

''इसके बाद भेंट समाप्त हो गई। जब मैं उठा तो पंडितजी पूछने लगे कि क्या मुझको भारत में कोई कार्य नहीं मिला था, जो मैं इस प्रकार विदेशी सरकार की नौकरी करने लगा हूँ।''

''मैंने कहा, अभी तो आप कह रहे थे कि एक देश को वे दूसरे देश से पृथक् नहीं मानते। आप तो कह रहे थे कि इस एटम के युग में सारी दुनिया एक है तो फिर देश-विदेश में अन्तर ही क्यों किया जाय और मैं तो मानवता के नाते यह सेवा कर रहा हूँ। भारत को मेरी सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। इंगलैंड को मुझ-जैसे प्राणी की आवश्यकता अनुभव हुई है। उन्होंने मुझे इस काम पर नियुक्त किया है।''

''पंडितजी कहने लगे कि इस प्रकार विशिष्ट दूत नियुक्त करने में उनका विश्वास नहीं। इस पर मैंने उन्हें स्मरण दिलाया कि उनका भी तो एक विशेष प्रतिनिधि कृष्णा मेनन नाम से लन्दन में नियुक्त है?''

''यह सुनकर तो पंडितजी ने हाथ जोड़कर मुझे विदा होने का संकेत कर दिया।''

10

इसके एक वर्ष बाद, इससे भी अधिक आवश्यक और रुचिकर वार्त्तालाप पीकिंग में चाऊ-एन-लाई से हुई। इस समय तक पीकिंग ने तिब्बत पर अपना पूर्ण अधिकार जमा लिया था और दलाई लामा के राज्य-कर्मचारियों को पदच्युत कर, उनके स्थान पर अपने देश के अधिकारी नियुक्त करने आरम्भ कर दिये थे। आक्साई चिन में एक सड़क जो चीन से सिंकियांग को तिब्बत से जोड़ती थी, बन चुकी थी। मथुरासिंह की जब उस समय चीन के प्रधान-मंत्री से भेंट हुई तो उसने खड़े-खड़े ही पूछा, ''क्या सन्देश है।''

बिना बैठे ही इस प्रकार प्रश्न किये जाने पर भी मथुरासिंह ने भी खड़े-खड़े उसके उत्तर में कहा, ''हमारे प्रधान-मंत्री का कहना है कि इंगलैंड और चीन मित्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश हैं। इस कारण मित्रता के नाते हम यह आवश्यक समझते हैं कि कुछ सूचनायें, जो हमें अन्य स्त्रोतों से विदित हैं सीधी आपसे ही विदित की जायें।''

मथुरासिंह की बात का अनुवाद एक दुभाषिये ने किया। इस प्रकार बात करने से वार्तालाप की गति बहुत मन्द थी। इसमें एक सुविधा यह थी कि दोनों पक्ष सोच-विचारकर बात करते थे। मथुरासिंह के प्रश्न के उत्तर में उसने कहा, ''हम सूचना देने के लिए तैयार हैं।''

''भारत के साथ आपकी पंचशील नाम से एक सन्धि हुई है?''

''हाँ, हुई तो है।'' चाऊ-एन-लाई ने कहा।

''इसका क्या यह अभिप्राय है कि यदि आप लोगों में कोई मतभेद हुआ तो वह परस्पर वार्तालाप से दूर हो जायेगा?''

''हाँ''

''अपने आक्साई चिन में जो एक सौ मील लम्बी सड़क बनाई है वह क्या भारत से पूछ करके बनाई है?''

''हम आक्साई चिन को भारत का क्षेत्र नहीं मानते। इस विषय में भारत सरकार ने एक हलका-सा-विरोध-पत्र दिया था, हमने उसका उत्तर दे दिया है। उसके बाद भारत सरकार ने कुछ नहीं लिखा। इससे हमारा विचार है कि उनको हमारा कहना मान्य है।''

''भारत सरकार का विचार है कि उन्होंने विरोध-पत्र भेजा है और पंचशील के सिद्धान्त के अनुसार परस्पर बातचीत से इस विषय को तय करने का निमन्त्रण दिया है। आपने इसमें कोई पहल नही की।''

''बात यह है कि हमने इस क्षेत्र को अपना समझकर सड़क बना ली है। भारत सरकार के विरोध-पत्र के उत्तर में हमने यह बात लिख भी दी है। वे चुप हैं। उनका अपना राजदूत यहाँ रहता है। उसके द्वारा उन्होंने हमें कुछ भी तो नहीं कहा।''

''तिब्बत के दलाई लामा के विषय में आपका क्या विचार है?''

''वह तो सामन्त-काल का अवशेष है। हम उसे निःशेष करने का विचार रखते हैं।''

''समझा-बुझाकर अथवा बलपूर्वक?''

''समझाने से समझता कौन है?''

''परन्तु चीन ने तो पंचशील का व्रत लिया हुआ है?''

''वह नीति है, हमारा क्रीड (सिद्धान्त) नहीं।''

''चीन का क्रीड क्या है?''

''कम्युनिज़्म! अर्थात् डिक्टेटर-शिप ऑफ दि प्रोलिटेरियेट। परिश्रम अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार और पारिश्रमिक अपनी आवश्यकता के अनुसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा रक्त-रंजित क्रान्ति की अनिवार्यता और उसकी तैयारी। इन तीन वादों के लिए हम प्रत्येक बात कह सकते हैं, कर सकते हैं और करा सकते हैं।''

''नैतिकता और सद्व्यवहार का क्या होगा?''

''उक्त तीनों बातों के लिए जो कुछ भी किया जाय वही नैतिकता, मानवता और सद्व्यवहार है।''

''इस प्रकार सिद्धान्त के प्रतिपादन के बाद कोई सिद्धान्तात्मक बात पूछने के लिये रहती नहीं थी। मथुरासिंह ने छुट्टी माँगी तो चाऊ-एन-लाई ने कहा, ''आप तो हिन्दुस्तानी हैं न?''

''मैं तो स्वतन्त्र संसार का नागरिक हूँ।''

चाऊ-एन-लाई चुप रहा तो मथुरासिंह ने फिर कहा, ''ब्रिटिश सरकार आपके पंचशील के समझौते का समाचार पढ़कर अति प्रसन्न थी। परन्तु जब आपकी इस व्याख्या से मैं उसको अवगत करूंगा तो उन्हें बहुत निराशा होगी''

''राजनीति में आशाएँ और अभिलाषाएँ मिथ्या होती हैं। इसमें केवल एक ही सत्य है वह है शक्ति और चीन सरकार इसमें विश्वास करती है।''

इस बार मथुरासिंह भारत के विदेश-मंत्री से मिलने के लिए गया तो उसके पास भारत सरकार ने अपना एक सचिव भेज दिया। मथुरासिंह ने उससे कोई गुह्य बात नहीं की। केवल एक बात के विषय में विस्मय प्रकट करते हुए कहा, ''आपने भारत के एक क्षेत्र आक्साई चिन में चीन द्वारा सड़क-निर्माण की बात अपनी संसद में क्यों उपस्थित नहीं की?''

''क्योंकि वह संसद के कार्य-क्षेत्र में नहीं आती थी।''

''परन्तु आपके विधान में तो मंत्रि-मंडल की सीमायें हैं परन्तु संसद एक प्रभुता-सम्पन्न संस्था है। अतः किसी भी बात को मंत्रि-मंडल संसद से छिपाकर नहीं रख सकता। इस सड़क का प्रश्न अब विख्यात होने वाला है, तब इस लुकाव-छिपाव के लिए जनता सरकार को दोषी ठहराएगी।''

''मुझे इस विषय में सम्मति प्रकट करने का अधिकार नहीं है।''

''क्या आपकी सरकार तिब्बत के साथ होने वाले अत्याचार के प्रतिकार में तिब्बत की सहायता करेगी?''

''इस विषय में मैं कुछ कहने की सामर्थ्य नहीं रखता।''

मथुरासिंह उठ पड़ा और अपने निवास-स्थान पर आकर इंगलैंड के प्रधान-मंत्री को अपनी रिपोर्ट लिखकर भेज दी। उसमें उसने यह भी लिखा, ''यदि आप उचित समझें तो आक्साई चिन की सड़क-निर्माण का समाचार भारतीय जनता तक पहुँचा देना चाहिए।

''इससे भारत का और सामान्य रूप से स्वतन्त्र संसार का कल्याण होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार में एक प्रबल मत कम्युनिज़्म के पक्ष में होता जा रहा है और कम्युनिस्टों की भारत-विरोधी कार्रवाइयों को भारत सरकार जनता से छिपाकर रखती हुई इस मत के निर्माण में सहायक हो रही है। इससे भारत की जनता के साथ खेली जाने वाली छलना प्रकट हो जाएगी।''

''परिणाम-स्वरूप हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा समाप्त हो जायेगा। चीन भारत के शत्रु के रूप में जनता के समक्ष आयेगा। तब या तो भारत सरकार अपना व्यवहार बदलेगी अन्यथा भारत में कम्युनिज़्म-विरोधी जनमत बनेगा और इस सरकार का अन्त दृष्टिगोचर होने लगेगा। कम्युनिस्टों की संसार-विरोधी गतिविधियों पर भी अंकुश लगेगा।''

इस बात का निर्णय करने में समय लग रहा था कि उक्त समाचार प्रकाशित किया जाये अथवा नहीं।

इस समय एक अन्य घटना घटी। मिस्र के राष्ट्रपति नासर ने स्वेज पर अधिकार कर, अंग्रेज़ कम्पनी को विदा कर दिया। स्वेज का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया। इसके पूर्व मिस्र और इंगलैंड के मध्य एक सन्धि के अनुसार स्वेज़ की रक्षा के लिये स्थित अंग्रेज़ी सेना को वापस बुला लिया गया था। इस सन्धि के समय मथुरासिंह लन्दन में था और इस प्रश्न पर कन्ज़र्वेटिव पार्टी में जो उस समय सत्तारूढ़ दल था, मथुरासिंह का भाषण हुआ था। उसमें मथुरासिंह ने स्वेज़ के विषय में अपना मत देते हुए कहा था, ''इसमें प्रश्न अधिकार का आता है, अधिकार का स्त्रोत क्या है? क्या देश में पैदा होने मात्र से कोई उस देश में विद्यमान सम्पत्ति का अधिकारी हो जाता है? यदि इस बात को आधार मान लिया जायेगा तो निरन्तर युद्ध ही होते रहेंगे। ये रुक नहीं सकेंगे। प्राकृतिक मूल्यवान वस्तुएँ सब देशों में समान-रूपेण विद्यमान नहीं, किसी देश में तेल अधिक है, तो किसी में लोहा। कोई भी देश ऐसा नहीं, जिसमें सब पदार्थ प्रचुर मात्रा में विद्यमान हों और कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं, जो भूमण्डल के सब देशों में समान रूप से मिलता हो। इससे अस्तिमान (हैव नाट्ज़) में संघर्ष होगा और युद्ध होंगे।

''अतः प्राकृतिक धन-दौलत पर अधिकार उसका मानना पड़ेगा, जो उस प्राकृतिक साधन को मानव-समाज के लिए उपयोगी बनाता है। स्वेज़ कैनाल इसी प्रकार की एक वस्तु है। वहाँ एक भूमि का टुकड़ा था, जो दो सागरों को पृथक्-पृथक करता था। वहाँ इस नहर के बनने से ही दो सागर मिले और सागरों के मिलने से एटलांटिक महाँसागर से हिन्द महाँसागर में जाने के लिये महीनों का मार्ग दिनों का रह गया। इससे दोनों सागरों के तट पर स्थित देशों के व्यापार में उन्नति हुई। अतः यह एक मानव-कल्याण की वस्तु मानी गई। नहर का निर्माण एक कम्पनी ने किया था, अतः उसका स्वामित्व उस कम्पनी के पास है। उस कम्पनी से मिस्र की सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण स्वामित्व छीन ले कि वह उसके राज्य में है, कुछ अर्थ नहीं रखता।

"आज स्वेज़ पर मिस्र का अधिकार यदि इसलिए मान लिया जाय कि वह मिस्र की सीमा के अन्तर्गत है, तो कल को हाँगकांग पर चीन का अधिकार मानना भी अनिवार्य हो जायेगा।"

"राज्य और व्यापार ये दोनों भिन्न-भिन्न बातें है। राज्य तो किसी देश में रहने वाली जनता के प्रतिनिधियों के अधिकार में हो सकता है, परन्तु उद्योग-धंधें तथा प्राकृतिक साधनों को मानव-कल्याण के योग्य बनाने वालों के अधीन रखना ही पड़ेगा।"

"निष्कर्ष यह है कि मिस्र पर राज्य मिस्र की प्रजा के प्रतिनिधियों का हो सकता है। परन्तु स्वेज़ कैनाल तो उनकी होगी, जिन्होंने इसको लोक-कल्याण के लिए निर्माण किया है और वे लोक-कल्याणार्थ इसके प्रयोग का वचन देते हैं।"

"यदि ब्रिटिश सरकार ने इसमें शिथिलता दिखाई तो मिस्र सरकार स्वेज़ कम्पनी की पूर्ण सम्पत्ति को हड़प कर लेगी। और इसको सबके लिए समानरूपेण उपयोगी नहीं रहने देगी। ऐसा वह स्वेच्छा से करे चाहे राजनीतिक बलप्रयोग से करे।"

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि अंग्रेज़ी सेना को स्वेज़ से हटा लेने से कुछ ही समय बाद मिस्र की सरकार उस पर अधिकार कर लेगी और वह सरकार दुर्बल होने के कारण, स्वेज़ नहर को मानव-कल्याण के लिए खुली रखने में समर्थ नहीं होगी। तब इस क्षेत्र में युद्ध होगा। इस समय की थोड़ी-सी कठोरता का पालन करना भविष्य में होने वाले अनेक भयंकर परिणामों का निरोधक ही सिद्ध होगा।"

मथुरासिंह का भाषण इतना विशद और सरल भाषा में था कि इसमें किसी ने कोई आपत्ति नहीं उठाई। परन्तु ब्रिटिश संसद में वाम पंथियों के हंगामे के कारण फैसला सेना को हटाने का हुआ। ज्योंही स्वेज़ से ब्रिटिश सेना हटी, मिश्र सरकार ने उसका राष्ट्रीयकरण कर उसे अपने अधिकार में कर लिया। तब ब्रिटिश सरकार उसको रोक नहीं सकी। मिश्र ने उस पर अधिकार करते ही इज़राइल देश के जहाजों का प्रवेश बन्द कर दिया।

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद हंगरी ने रूस से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया तो रूस ने वहाँ अपनी सेनायें भेजकर संगीन की नोकों से पुनः अपना अधिकार जमा लिया। इससे प्रोत्साहित होकर इंगलैंड, फ्रांस और इजराइल ने भी संगीन की नोकों से स्वेज पर अपना अधिकार जमाने का आयोजन किया।

रूस ने इस बात का विरोध किया तो भारत और अमेरिका ने भी इंगलैंड, फ्रांस और इजराइल का विरोध कर दिया।

रूस के इस विरोध का आधार तो स्वतन्त्र प्रजातान्त्रिक देशों में परस्पर फूट डलवाना था। भारत के विरोध का आधार समाजवादी सिद्धांत का समर्थन करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि सरकार किसी भी उद्योग-धन्धे का राष्ट्रीयकरण कर सकती है और अमेरिका का आधार कोरी मूर्खता और विश्वव्यापी युद्ध से भयभीत होने के कारण था।

जब स्वतन्त्र देशों में एक मिथ्या बात में भी तानाशाही का समर्थन किया तो इंगर्लंड, फ्रांस इत्यादि को आक्रमण वापस लेना पड़ा।

इसके कुछ ही दिनों बाद इंगलैंड के प्रधान-मंत्री को त्याग-पत्र देना पड़ गया और मथुरासिंह को, जो उसका निजी प्रतिनिधि था, कार्य से अवकाश मिल गया और वह भारत वापस लौटने का विचार करने लगा।

राधा इस समय उसके साथ ही लन्दन में थी।

11

"अब क्या हो रहा है?" राधा ने अपने पति से पूछा।

राधा बाजार से कुछ खरीद करके आई थी कि मथुरासिंह प्रधान-मंत्रि की सेवा से मुक्ति पा अपना हिसाब-किताब देख रहा था।"

"जीवन ने पुनः पलटा खाया है और मैं उसका लेखा-जोखा देख रहा हूँ।"

"प्रधान-मन्त्री के त्याग-पत्र के बाद तो ऐसी आशा की ही जा सकती थी। अब क्या करियेगा, प्रश्न तो यही है?"

"अभी तक तो मैं अपनी इच्छा से कार्य स्वीकार करता रहा हूँ। अब अपनी पत्नी की इच्छा से कार्य-क्रम बनाने का विचार है।"

"कौन-सी पत्नी, विवाहित अथवा अविवाहित?"

दोनों हंस पड़े। मथुरासिंह ने गम्भीर होकर कहा, "अब तो केवल एक ही है। अविवाहिता को तो अब सन्मार्ग दिखाई देने लग गया है।"

"इससे पूर्व उसको कौनसा मार्ग दिखाई दे रहा था। उसने कुछ दोष था क्या?"

मथुरसिंह उसके कथन का अभिप्राय समझने के लिए उसके मुख पर देखने लगा। राधा ने आगे कहा, "फ्लोरा मुझे दर्जी की दुकान पर दिखाई दी थी। वहाँ से वह मुझे रेस्टोरेंट में ले गई। एक घण्टे तक हम वहाँ बैठे रहे। उसने मुझको बताया था कि ईडन साहब को त्याग-पत्र देना पड़ा है इससे वह सोच रही थी कि आपको कार्य से मुक्त कर दिया जायेगा। ईडन के स्थान पर मैकमिलन प्रधान-मन्त्री बन रहा है, वह आपके विचारों का विरोधी है। इससे उसके निजी प्रतिनिधि तो आप रह नहीं सकते।"

इस पर मथुरासिंह कहने लगा, "मैं अब किसी भी राजनीतिज्ञ का गुप्त अथवा सार्वजनिक, कैसा भी हो प्रतिनिधि बनने का विचार नहीं रखता। मैं अब राज्य-कार्य करूंगा ही नहीं।"

"यही विचार हम दोनों का था। इसी कारण तो पूछ रही हूँ कि अब क्या करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विचार है।''

''अब जमादारपुर जाकर राधा रानी की सेवा करूंगा।''

''यह तो बहुत ही तुच्छ कार्य है। भूमण्डल-भर के राज्यों में अपनी युक्तियाँ और ज्ञान की धाक जमाने वाले का अन्त पत्नी के आंचल में कुछ शोभा की बात नहीं।''

''तो क्या किया जाय। संसार में यह कहावत चरितार्थ है–'मूरख-मूरख राज करत हैं, पण्डित फिरत भिखारी'।''

''परन्तु आप भिखारी कब से हुए हैं।''

''धन-सम्पदा के विचार से तो नहीं। वह तो मैंने अभी-अभी गणना की है। चार वर्ष के इस सेवा-काल में मेरा बैंक-बैलेंस दस सहस्र से बढ़कर पचास सहस्र हो गया है। इतना कुछ होने पर तो इस विषय में भिखारी नहीं माना जा सकता। हाँ, अब सेवा-कार्य माँग रहा हूँ इसके लिये भिखारी बन गया हूँ।

''किससे माँग रहे हैं।''

''कहा तो है कि राधा रानी से।''

''मैं तो नहीं परन्तु फ्लोरा आपको सेवा-कार्य देने की योजना बना रही है।''

''होगा, परन्तु मैं तो राधा की सेवा का प्रार्थी हूँ।''

''पर कठिनाई यह है कि आपकी राधा के पास आपके गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार सेवा-कार्य नहीं है। यदि तो वह किसी देश की सेनापति होती तो आपको ब्रिगेडियर जनरल बना देती और यदि वह किसी देश की गवर्नर-जनरल होती तो आपको अपना सैनिक ए. डी. सी. बना लेती। उसके पास तो एक ही काम है–रसोइये का। उसके योग्य आप नहीं हैं।''

''एक काम तो तुम्हारे पास है ही?''

''क्या?''

''राम और श्याम की ट्यूटर-शिप का।''

''ओह, उधर तो ध्यान नही नहीं गया था। परन्तु उनकी संरक्षिका तो माताजी हैं। इस कार्य के लिये तो माताजी को ही प्रार्थना-पत्र देना होगा।''

''उनसे भी प्रार्थना करूंगा। परन्तु तुम्हारी अनुमति के बिना तो माताजी भी नहीं मानेंगी।''

''पर आप फ्लोरा की योजना को सुन क्यों नहीं लेते?''

''क्या योजना है उसकी?''

''स्पष्ट शब्दों में तो उसने कुछ बताया नहीं। परन्तु कहती थी कि कार्य उसकी रुचि का है परन्तु आपकी रुचि के विरुद्ध नहीं।''

''मैं समझता हूँ कि उसकी अभिरुचि के अनुसार एक कार्य उसका पहले किया था और उसके दो सन्तान उत्पन्न हो गईं। अब मैं केवल अपनी रुचि का कार्य ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूंगा।''

''मेरा विचार है कि उस कार्य में तो अब उसकी भी अभिरुचि नहीं है। अब लार्ड गौर्ट से उसकी अच्छी पट रही प्रतीत होती है। साथ ही वह यह भी कह रही थी कि एक लड़का और एक लड़की पर्याप्त हैं।''

''तो और क्या काम हो सकता है, उसके पास?''

''वह आपसे मिलने के लिये आने वाली है।''

उसी दिन रात को भोजन के समय लार्ड और लेडी गौर्ट उनसे मिलने के लिये आए। अब प्रायः फ्लोरा के साथ विलियम आता ही था, बहुत कम अवसरों पर फ्लोरा अकेली आती थी। उनके आने पर उनको भी खाने का निमन्त्रण दे दिया गया। भोजन होता रहा और मथुरासिंह के भावी कार्यक्रम के विषय में बातचीत होती रही। इस वार्तालाप में प्रमुख भाग विलियम ले रहा था। विलियम ने पूछ लिया, ''अब आपका क्या कार्यक्रम है?''

''अभी तो मैं भारत जाऊंगा। पिछले पाँच वर्षों में मैं बहुत भ्रमण करता रहा हूँ। अब कुछ काल तक आराम से एक स्थान पर ठहरने का विचार है।''

''यह आपकी प्रकृति के विपरीत है। अतः ऐसा तो आप कर नहीं सकेंगे। और फिर यदि एक ही स्थान पर रहना है तो भारत क्या और इंगलैंड क्या?''

''भारत को अधिमान देने का कारण यह है कि वह मेरी मातृभूमि है। वहाँ मेरे माता-पिता और दो बच्चे हैं। माता-पिता को तो मैं भारत से बाहर आने के लिये कह भी नहीं सकता। उस भूमि से उनका अगाध मोह है। बच्चे वहाँ स्कूल में पढ़ते हैं। एक तीसरी कक्षा में है और दूसरा पहली में। उनको मैं उनकी मातृभाषा के माध्यम से ही शिक्षा दिलवाना चाहता हूँ।''

''उसमें क्या विशेषता है?''

''विशेषतायें हैं। एक तो वह भाषा उनके कानों में माँ के दूध के साथ गई है। इस कारण जो कुछ वे सरलता से उस भाषा के माध्यम से सीख सकेंगे, वह वे अन्य भाषा में नहीं समझ सकते। दूसरे, उस भाषा में और विशेष-रूप से उस भाषा की जननी संस्कृत में ऐसा साहित्य है, जो दुनिया की किसी भी अन्य भाषा में उपलब्ध नहीं। मैं उनको उससे वंचित करना नहीं चाहता।''

फ्लोरा ने बीच में दखल देते हुए कहा, ''यहाँ पर भी तो दो ब्रैट्स (बच्चे) हैं, उनके विषय में भी तो आपको विचार करना चाहिये। वे भी कुछ उसी आयु के हैं, जितने कि भारत वाले।''

''वे तो मिस्टर विलियम के संरक्षण में हैं, इनको उनके भले-बुरे का चिन्तन करना चाहिये और कर रहे हैं। मेरा उनके बारे में सोचना भी मेरे अधिकार के बाहर है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी सृष्टि... ।" मथुरासिंह इससे आगे नहीं बोला। इस प्रकार की बात पहले कभी हुई नहीं थी। वास्तव में विलियम के सम्मुख तो बच्चों के विषय में कभी चर्चा हुई ही नहीं थी। विलियम के अतिरिक्त फ्लोरा बहुत ही कम मिलती थी।

मथुरासिंह को कुछ कहते-कहते चुप होता देख विलियम ने कहा, "मिस्टर सिंह! दुनिया के सामने चाहे कुछ कहा जाय, पर आप और मुझमें तो कुछ छिपा हुआ नहीं है। समाज की रीती अनुसार मैंने उनको गौर्ट-परिवार की छत्रछाया और नाम प्राप्त करने की स्वीकृति दे दी है। परन्तु मैं देख रहा हूं कि वे दोनों मुझसे और अंग्रेज समाज से विलक्षणता ग्रहण करते जा रहे हैं। यह कैसे है, इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता। कुछ दिन पूर्व उनका ट्यूटर बता रहा था कि किचन के लिए चिकन तैयार की जाती देख एमिली रोने लगी। बहुत पूछने पर उसने बताया कि जब रसोइया मुर्गे की गर्दन मरोड़ रहा था तो वह क्वेक-क्वेक कर चिल्ला रहा था और फड़फड़ा रहा था। वह उसे नहीं देख सकी। वहाँ से भागकर वह अपने बैड-रूम में आ रोने लग गई।

"ट्यूटर ने उसे बहुत समझाया कि वे तो मारने के लिए बनी हैं, परन्तु इससे उसका समाधान नहीं हुआ और दो दिन तक वह खिन्न रही। मैं समझता हूँ कि उसमें महात्मा बुद्ध की आत्मा प्रविष्ट हो गई है। क्लीवमौंट की सहानुभूति भी उसके साथ रही है। उसकी माँ ने एमिली की तनिक ताड़ना की तो वह माँ से लड़ने लगा। कहता था कि इस प्रकार के अच्छे भावों को कुचलकर माँ अच्छा कार्य नहीं कर रही है।

"फ्लोरा का कहना है कि वे दोनों बच्चे भीरु हो रहे हैं। मैं समझता हूँ कि उनमें भारतीय मन पनप रहा है। बहुत विचार-विनिमय के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यदि उनकी शिक्षा-दीक्षा की बागडोर किसी हिन्दुस्तानी के हाथ में हो तो अच्छा है। अब आप सरकारी सेवा से मुक्त हुए हैं तो अब आपको यह कार्य करना चाहिए।"

फ्लोरा ने पुनः बातों का सूत्र अपने हाथों में लेते हुए कहा, "वे आपके उनसे सम्बन्ध के विषय में नही जानते और हमारी यही इच्छा है कि वे न जान सकें तो उचित होगा। उससे लाभ तो नहीं हाँ, हानि की संभावना अवश्य है।

"आप उनके ट्यूटर बन सकते हैं। बताइये कर सकेंगे यह कार्य? मैं और विशेष रूप में गौर्ट-परिवार आपका आभारी रहेगा। हम दोनों को आशा है कि आप उनमें शौर्य का संचार तो कर ही सकेंगे।"

"फ्लोरा! मैं आप दोनों की बात अस्वीकार नहीं कर सकता। परन्तु इस कार्य में कई भय हैं। उनका विचार कर लेना चाहिए। उनको मेरे व फ्लोरा सम्बन्धों का ज्ञान हो सकता है। इससे उनमें क्या प्रतिक्रिया होगी कहा नहीं जा सकता। इससे भी अधिक उनकी शिक्षा जो मैं दे सकता हूँ बहुत यत्न करने पर भी भारतीयता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंजित होगी। लार्ड अपने परिवार के उत्तराधिकारियों में इन गुणों की विद्यमानता पसन्द करेंगे क्या? फिर मैं अपना अधिकांश शेष जीवन भारत में व्यतीत करना चाहता हूँ। इससे उनका भी भारत से अधिक प्रेम (अटेचमेंट) हो जायेगा।''

फ्लोरा कुछ नहीं बोली। कदाचित् उसके मन में भी इसी प्रकार के विचार की आशा थी और वह चाहती भी यही थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि उसका मथुरासिंह के साथ प्रेम का आरम्भ भावात्मक ही था। वह उसके विचारों को सुनकर और आचरण देखकर ही उस पर मुग्ध हुई थी। अतः वह अपने बच्चों का वैसे ही बन जाने में लाभ समझती थी।

इस पर भी वह चुप थी, क्योंकि वह उनको विलियम को दे चुकी थी। इस कारण उनके विषय में विलियम की रुचि के विपरीत कुछ भी करना नहीं चाहती थी। विलियम कुछ देर तक विचारमग्न रहा। अन्त में उसने कहा, 'मैं तो 'कोस्मोपोलिटन' (अन्तरदेशीय) विचारों वाला हूँ। मुझे इन बातों में किसी प्रकार का भय नहीं प्रतीत होता।

''हमने विचार किया है कि दो-चार दिन में हम दोनों बच्चों को लेकर आपके पास आयें और उनको आपके पास छोड़ जाएँ। मैं आपको उनके ट्यूटर होने का अधिकार-पत्र दे दूंगा। यह इस कारण आवश्यक है कि इंटर-नेशनल परिस्थिति में उनका टाइटल हमारी पारिवारिक सम्पत्ति पर बना रहे।''

मथुरासिंह इन्कार नहीं कर सका। वह राधा के बच्चों का ट्यूटर बन उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करना चाहता था। उनके साथ ही फ्लोरा के बच्चों को रखने में उसको भला ही लग रहा था।

12

समय बीतते-बीतते सन् 1956 से 1963 आ गया। फ्लोरा के दोनों बच्चों को राधा के दोनों बच्चों के साथ रहते हुए सात वर्ष हो गए थे। इन चार वर्षों में चारों की शिक्षा-दीक्षा समान ही चल रही थी। मथुरासिंह अधिकांश में जमादारपुर और दिल्ली में ही रहता था। इन बच्चों की साधारण शिक्षा के लिए उसने एक शिक्षक रखा हुआ था जो सदा उनके साथ रहता था। स्वयं वह उनको इतिहास और धर्म की शिक्षा दिया करता था।

उन बच्चों को लेकर मथुरासिंह प्रायः सब स्वतन्त्र देशों में घूमा था जिससे कि उनके ज्ञान में वृद्धि हो सके। उसके भ्रमण का व्यय फ्लोरा देती थी। इसके अतिरिक्त फ्लोरा राधा के लिए भेंट की वस्तुएं भेजती रहती थी। अपना जमादारपुर वाला मकान उसने उनको रहने के लिए दे रखा था। वर्ष में एक बार वे बोनैस जाते थे और विलियम और फ्लोरा से उनकी भेंट हो जाती थी। कभी राम और श्याम भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके साथ जाते थे। चारों बच्चों के लिए राधा और मथुरासिंह माताजी और पिताजी थे और विलियम तथा फ्लोरा पापा और मामा।

क्लीवमौंट और राम पन्द्रह वर्ष के थे। वे दिल्ली में ठहरे हुए थे। मथुरासिंह ने नई दिल्ली में एक कोठी बनवा ली थी और जब भी वे वहाँ जाते तो उसी में रहते।

क्लीवमौंट समाचार-पत्र पढ़ रहा था। उसमें अमेरिका के राष्ट्रपति मिस्टर केनेडी का वक्तव्य छपा था। उसमें उसने कहा था कि यदि चीन ने भारत की सीमा पर पुनः किसी प्रकार की गड़बड़ फैलाई तो इससे अमेरिका इस संघर्ष में खिंच आएगा।

क्लीवमैंट कहने लगा, "पिताजी! देखिये यह केनेडी ने क्या कह दिया है?"

"क्या कह दिया?" मथुरासिंह ने अपनी पुस्तक पर से ध्यान हटा पूछा। वह बताने लगा, "कहा है कि यदि चीन ने भारत से किसी प्रकार की छेड़-छाड़ की तो अमेरिका भारत के साथ हुए अपने वचनों का पालन करेगा।"

"इसमें क्या विचित्रता है?"

"आप क्या इसे विचित्र और महान् बात नहीं समझते?"

"विचित्र तो उस बात को कहते हैं, जिसे साधारण बुद्धि से न होने वाली माना जाय और वह बात हो जाय और महान् मैं इसको तब समझूँ जब अवसर मिलने पर इसका पालन हो जाय।"

"पिताजी! तो क्या इतने बड़े अधिकारी का कथन असत्य हो सकता है?"

"मैंने तुम्हें एक बात बताई थी कि सब शुभ अभिलाषाओं के होने पर भी कभी विपरीत परिस्थितियाँ प्रबल सिद्ध हो सकती हैं।

"इस छोटे-से भूमण्डल पर जिसकी प्रदक्षिणा एक जेट प्लेन में बैठकर तुम दो दिन में कर सकते हो, रॉकेट में बैठा व्यक्ति जिसके एक दिन में बीस चक्कर लगा सकता है, परस्पर-सहानुभूति न रखना विचित्र होता। केनेडी साहब का युद्ध रोकने का यह प्रयास तो कुछ विचित्र नहीं प्रतीत हुआ। हाँ भारत के प्रधान-मंत्री का अभी तक भी यह कहना अवश्य विचित्र है कि भारत तटस्थता की नीति में विश्वास करता है। कोई भी नेक व्यक्ति भलाई से तटस्थता नहीं रख सकता।"

"पिताजी! भारत अमेरिका और इंगलैंड से शस्त्रास्त्र ले रहा है, फिर भी तटस्थता का क्या अभिप्राय है?"

"यह एक प्रकार से अपनी भीरुता का प्रदर्शन है। कबूतर के विषय में तुमने सुना होगा कि बिल्ली जब उस पर झपटने के लिए आती है तो वह बिल्ली को देखकर अपनी आँखें मूँद लेता है। कहावत यह है कि वह मन में यह समझने लगता है कि बिल्ली उसको दिखाई नहीं दे रही है तो झपटेगी ही कैसे।"

"तो क्या भारत के प्रधान-मन्त्री केवल पिजन (कबूतर) हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शान्ति की देवी के कन्धे पर बैठे हुए कबूतर। क्लीवमैंट! जितने युद्ध इन शान्ति के देवताओं ने किये हैं, उतने सैनिकों के करने से नहीं हुए। सैनिक तो सदा दुष्टों का दमन कर शान्ति स्थापित करते हैं और ये शान्ति के दूत अपनी दुर्बलता, विक्षिप्तता और भीरुता के कारण नये-नये युद्धों की नींव रख देते हैं।"

क्लीवमैंट और राम अपने पिता की बात ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। इतिहास तो वे मथुरासिंह से ही पढ़ते थे, परन्तु अपनी अविकसित बुद्धि अल्पायु तथा सीमित अनुभव के कारण उस इतिहास की विवेचना नहीं कर पा रहे थे।

उनके मुख पर विस्मय देखकर मथुरासिंह ने समझाते हुए कहा, "युरोप का प्रथम युद्ध तो अंग्रेजों की लोभी प्रवृत्ति का परिणाम था। लूट का माल दूसरों के साथ बाँटकर ही पच सकता है। एक तो तब अंग्रेज अपने लोभ के कारण लूट को किसी के साथ बाँट कर खाने को तैयार नहीं हुआ और दूसरे यह बँटवारा किसके साथ हो, और किसके साथ न हो, वे समझ नहीं सके।

"अंग्रेज को उपनिवेशों की आय से मोटा होते देख जर्मन के मुख से लार टपकने लगी और युद्ध हो गया।

"युद्ध होने के बाद भी अंग्रेजों की समझ में बात नहीं आई कि यह युद्ध क्यों हुआ। उन्होंने समझा कि युद्ध इस कारण हुआ कि जर्मनी शक्तिशाली हो गया था। अतः उसने जर्मनी को पुनः शक्ति संचय करने से रोकने के लिए उस पर प्रतिबन्ध लगाये। परन्तु उन प्रतिबन्धों के पीछे अपनी शान्तिप्रियता प्रकट करने के लिए अपनी शक्ति को भी कम करना आरम्भ कर दिया। अपने शस्त्रास्त्रों को तोड़-फोड़ दिया और नवीन शस्त्र बनाने बन्द कर दिये।

"जर्मनी ने युद्ध के बाद दम लेकर पुनः शस्त्रास्त्र निर्माण करने आरम्भ कर दिये। पहले तो छिप-छिपाकर फिर प्रकट-रूपेण। जर्मनी को ऐसा करते देखते हुए भी इंगलैंड की सरकार ने अपनी शान्तिप्रियता को व्यक्त करने के लिए स्वयं को दुर्बल बनाए रखा। इंगलैंड और फ्रांस दुर्बल रह गये और जर्मनी आगे निकल गया। सबसे बड़ी बात यह हो गई कि इन दोनों देशों की जनता शान्तिप्रियता का अर्थ दुर्बल रहना समझने लगी। परिणामस्वरूप इस शान्तिप्रियता को जर्मनी ने भीरुता समझा और द्वितीय विश्व युद्ध हो गया।

"द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका और इंगलैंड ने यह समझा कि कम्युनिज़्म के पृथ्वी पर प्रचार का कारण जनता में भूख और आवश्यक वस्तुओं का अभाव है। उनका विचार था कि यदि गरीबों की आवश्यकताएँ पूर्ण कर दी जायें तो लोग कम्युनिस्ट नहीं बनेंगे और विरोधी पक्ष अर्थात् कम्युनिज़्म दुर्बल रहेगा। परन्तु कई वर्ष तक व्यर्थ में अन्न अथवा वस्त्रादि बाँटने पर भी कम्युनिज़्म की आँधी रुकी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अतः अब वे समझते हैं कि कम्युनिज़्म के प्रसार में अभाव इतना कारण नहीं है, जितना कि मिथ्या दृष्टिकोण है। अब वे भी अपने प्रचार-कार्य में लगे हुए हैं। प्रचार के पीछे सैनिक-शक्ति का प्रयोग भी इनकी समझ में आने लगा है।

"अतः अमेरिका और रूस में शक्ति-संचय की होड़ लगी हुई है। दोनों यह समझ भी रहे हैं कि सैनिक-शस्त्रास्त्र निर्माण की होड़ तो दोनों को नष्ट कर देगी। साथ ही आधुनिक ढंग के बने शस्त्रास्त्र तो किसी को भी लाभ नहीं पहुँचा सकते। और दोनों देश एटम बम परीक्षण के विषय में सन्धि करने के लिये तैयार हो गए हैं। इस सन्धि के एक अंश पर तो हस्ताक्षर भी हो गये हैं।

"जो भूल इंगलैंड के प्रधान-मन्त्री बाल्डविन और चैम्बरलेन ने की थी, वही भूल और उससे कहीं अधिक मात्रा में भारत के प्रधान-मन्त्री ने भी की है। ये अनेक बातों में गांधीजी से मतभेद रखते हुए भी अहिंसा के विषय में उनके अनन्य भक्त बने रहे।

"मन से वे कितने अहिंसाप्रिय हैं, यह तो समय उनकी पोल खोलेगा। गांधी जी जिस तरह मुसलमानों की हिंसा पर आँखे मूँदते थे और हिन्दुओं को शांति का उपदेश देते थे उसी तरह पंडित नेहरू कम्युनिस्टों की हिंसात्मक कार्यवाहियों को तो आंखें मूँदकर अनदेखी करते रहे हैं परन्तु अमेरिका तथा अन्य स्वतन्त्र देशों में शक्ति-संचय की अथवा किसी भी हिंसात्मक कार्य की ताड़ना करते रहे हैं। हमारे प्रधान-मन्त्री के 'हीरो' तो स्टालिन, चाऊ-एन-लाई और माओ-त्से-तुंग रहे हैं। परन्तु वह अमेरिका के एटम बम के परीक्षणों के सदा निन्दक रहे हैं।

"परिणाम यह है कि जहाँ पंडितजी ऐसा तो अनुभव करते प्रतीत होते थे कि भारत को खतरा इन कम्युनिस्टों से ही है, परन्तु उनके मन में विश्वास दिलाने के लिए कि भारत उनका विरोधी नहीं, अपनी शान्तिप्रियता की घोषनाएँ ही केवल नहीं करते रहे, अपितु अपने देश को सैनिक तैयारी से भी वंचित करते रहे हैं।

"स्वराज्य-काल के पन्द्रह-सोलह वर्ष में भारत की छोटी-सी सेना के हाथों में भी आधुनिक और स्वचलित शस्त्रास्त्र नहीं दिये जा सके। स्वराज्य सरकार डरती थी कि कहीं चीन को यह पता चल गया कि भारत अपनी सेना के लिये स्वचलित शस्त्रास्त्र बना रहा है, तो दोनों देशों में मित्रता के सम्बन्ध नहीं रहेंगे। यह है कबूतर की भांति आंखें मूंदने की बात।"

"पर पिताजी! क्या चीन अब भी आक्रमण करेगा?"

"जब तक चीन को यह विश्वास नहीं हो जाता कि हम अकेले अथवा अपने मित्रों के साथ मिलकर चीन और उसके मित्रों को परास्त कर सकते हैं, तब तक कभी भी आक्रमण हो सकता है। चीन ने पाकिस्तान के साथ सन्धि कर, भारत पर भारी विजय प्राप्त की है। पाकिस्तान सैनिक दृष्टि से प्रबल नहीं है और वह कदाचित् चीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की दुर्बलता का कारण होगा। इस पर भी एक लाभ है, जो उसको चीन के साथ मिलने से प्राप्त हो गया है।

"पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति सुदृढ़ है और चीन इसका लाभ उठा सकता है। साथ ही पाकिस्तान एक इस्लामी राज्य है और भारत के करोड़ों मुसलमान उसके सहायक हो सकते है। कुछ कम्युनिस्ट भी हैं, जो हिन्दुस्तान के युद्ध-प्रयास में विध्न डाल सकते हैं। यह सब स्थिति एक कबूतर की प्रवृत्ति वाली सरकार की उत्पन्न की हुई है।

"सरकार ने आंखें नहीं खोलीं। वह यह समझती रही है कि आंखें मूंद लेने से भय वाली वस्तु रहती ही नहीं है।"

"तो अब क्या होगा?" रामसिंह ने अगला प्रश्न किया।

"वही होगा जो सदा होता रहा है। देखो राम! चीन का आक्रमण कोई एक या दो वर्ष की नीति और कार्य का परिणाम नहीं था, उसमें कारण भारत सरकार की पिछले सोलह वर्ष की अकर्मण्यता अथवा मिथ्या धारणाओं का समुच्चय था। मैं तो यह कहूंगा कि महात्मा गांधी की अव्यवहारिक शान्ति की अफीम जो वे 1921 से निरन्तर भारतीयों को खिला रहे थे, वह भी इसमें कारण थी।

"राज्य वीरों की सम्पत्ति है। भीरुओं की नहीं। वीर उसको कहते हैं जो किसी लोक-हित के लिए प्रत्येक प्रकार का त्याग और तपस्या की क्षमता रखता है और जो न केवल शक्तिशाली होता है, अपितु अपनी शक्ति-सम्पन्नता का प्रमाण भी दे सकता है। जब तक राष्ट्र की बागडोर वीरों के हाथ नहीं आती देश की सेना अपना रक्त बहाकर देश की स्वतन्त्रता को बहाल करेगी और फिर देश की भीरू और मूर्ख जनता शान्ति और मानवाधिकार का नाम लेकर सैनिकों की निन्दा करेगी, उनको हत्यारा कहेगी। उनको नृशंस मानवता-विहीन की पदवी देगी और इस प्रकार अगले युद्ध की नींव रखेगी।"

■■■

Central Library
167972
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167972

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9193 GOR-Y आगत संख्या 167972

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL K
Access No.
Class No.
Cat No.
Tag etc.
E.A.R.
Recomm. b
Data Ent. b
Checked

श्री गुरुदत्त की कुछ पुनःमुद्रित रचनाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

8-12-1894 से 8-4-1989

शिक्षा : एम. एस.सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठिभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना स्व. गुरुदत्त की ही विशेषता थी।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग दिल्ली-110 005
फोन : 23553624, 23551344
ई-मेल : hindisahityasadan@gmail.com
indiabooks@rediffmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar